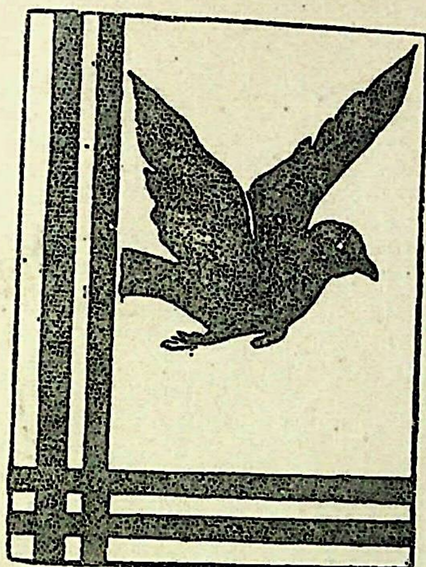
भारत यात्रा

(गंगाप्रसाद आर्य)


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी......
पु०सं०...1902
भारती पुस्तकालय



भारत यात्रा

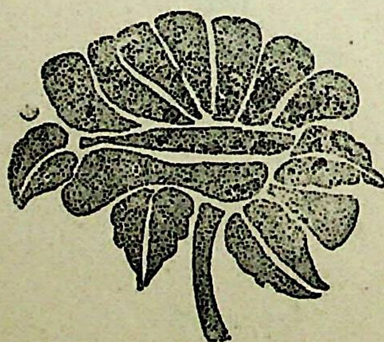


लेखक
गंगा प्रसाद आर्य

प्रथम संस्करण] १, नवम्बर १९७० मूल्य १५)
१०००

प्रकाशक :
भारत यात्रा प्रकाशन,
मोतीगंज हापुड़, मेरठ (उ० प्र०)

सजिल्द एवं सचित्र प्रथम हिन्दी संस्करण



मुद्रक :
शीला प्रिंटर्स
सुभाषनगर, मेरठ (उ० प्र०)

"देहली से बद्रीनाथ की यात्रा"

नगर	प्रान्त	वाया	दूरी कि० मी०	पृ० स० दर्शनीय	अन्य नगरों की पृ. स.
देहली	राजधानी	गाजियाबाद, मेरठ, खतौली, मुजफ्फरनगर, रुड़की	१७४	१	९१, ८८, —, ८७, ११७,
हरिद्वार	उत्तर प्रदेश	ऋषिकेश, देवप्रयाग, मलेठा, श्री नगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, चमोली पीपल कोठी, जोशीमठ, गोविन्द द्वार	३२४	११	६ से २० तक उत्तराखंड की यात्रा में
...					
बद्रीनाथ			४९८	६—१४	

नोट :—१. ऋषिकेश पहला गेट सुबह ५ बजे चलता है जिससे आप रात तक पहुंच सकते हैं।
२. बद्रीनाथ वापसी के समय गोविन्द घाट से हेम कुण्ड को रास्ता है वहाँ पर दर्शन करके वापिस गोविन्दघाट से अपने रास्ते को वापिस आना।

देहली से "द्वारका जी" की यात्रा सड़क द्वारा

देहली से	राजस्थान	सोहना, फिरोजपुर, अलवर	३२७	१	१८५, १५७, १९७,
जयपुर ,,	,, ,,	ब्यावर, ककरौली	१३८	२०६	१९६, —
अजमेर ,,	,, ,,	टोडगढ़, नाथ द्वारा	२९०	१९३	—, २२८,
उदयपुर ,,	,, ,,	रत्नपुर, हिम्मतनगर	२५१	१९८	—, २५२,
अहमदाबाद,,	गुजरात	बगोदरा, धधुंका, सुरेन्द्रनगर, चोटीला	२५६	२२९	—, २३०, २५३. —,
राजकोट ,,	,,	धराल	८८	२४९	
जामनगर ,,		सीका, सलाया, काम्भालिया, भाटिया	१५०	२३४	——
द्वारका जी,,			——	२३५	
			१५००		

देहली से जगन्नाथपुरी की यात्रा सड़क द्वारा

नगर का नाम	प्रान्त	बाया	दूरी कि० मी०	पृ० स० दर्शनीय	अन्य नगरों का पृ. स. दर्शनीय
देहली से	राजधानी	वल्लभगढ़, पलवल, होडल,	१४६	१	१८३, १८२, १८४
मथुरा ,,	उत्तर प्रदेश		५४	१०१	—
आगरा ,,	,, ,,	धौलपुर, मुरैना,	११९	२६	२१३, २७९,
ग्वालियर,,	मध्य प्रदेश	देवरा, दतिया,	१०१	१२६	—, २६७,
झाँसी ,,	उत्तर प्रदेश	टैवाहाट, ललितपुर,	१९८	४६	—, ४७,
सागर ,,	मध्य प्रदेश	करेली, नरसिभापुर, लखना, डोन,	३५७	२८९	२७१, —, —, —,
नागपुर ,,	महाराष्ट्र	भाद्रा, सोनी, राजनांदगांव,	२४०	३०३	—, २६८,
भिलाई ,,	मध्य प्रदेश	रायपुर, धोरारी, सरायपल्ली, बारगढ़	३०३	२७९	२८१, —, —, —,
सम्बलपुर,, (हीराकुण्ड में)		रामपुर, ननकापासी, अंगुल ढेका, नाल, कटक	२८७	३८४	—, —, —, ३७९, ३७६,
भुवनेश्वर,,	उड़ीसा	——	३७	३७७	——
पुरी ,,	,,	——	—	३७९	——
			१८४२		

देहली से रामेश्वर की यात्रा सड़क द्वारा

नगर का नाम	प्रान्त	बाया	दूरी कि० मी०	पृ० स० दर्शनीय	अन्य नगरों का पृ. स. दर्शनीय
देहली से	राजधानी	वल्लभगढ़, पलवल, होडल,	१४६	१	१८३, १८२, १८४
मथुरा ,,	उत्तर प्रदेश	—	५४	१०१	—
आगरा ,,	,, ,,	धौलपुर, मुरैना,	११९	२६	२१३, २७९,
ग्वालियर ,,	मध्य प्रदेश	देवरा, दतिया,	१०१	२६१	—, २६७,
झाँसी ,,	उत्तर प्रदेश	ललितपुर, पालीगोना	१९८	४६	४७, —,

नगर का नाम	प्रान्त	वाया	दूरी कि० मी०	पृ० स० दृ०	अन्य नगरो की पृ. सं. दर्शनीय
सागर से	मध्य प्रदेश	डोंगी, करेली, नर्सिमापुर, लखनाडोन, सिम्रोनी, मानसर, कामठी	३५२	२८९	—, २७१, —, —, —, —, —,
नागपुर ,,	महाराष्ट्र	हिन्गाघाट, करनजी, पन्धार, कावरा, बोरी, अटिलावाद, गुरी हाटनुर, नैरेड़ोकोन्डा	३२६	३०३	——
निजामाबाद,,		पिचपल्ली, केमारेड्डी, वाडिग्रारम, मेदचल, सिकद्राबाद	१५०		——
हैदराबाद ,,	आन्ध्र प्रदेश	फरुखनगर, जवचेरला, काथाकोटा, कूरनूल, गूटी	३२१	३७२	——
अनन्तपुर ,,	आन्ध्र प्रदेश	पेनुकोन्डा, चीक बालापुर,	२०३	३३४	——
बंगलौर ,,	मैसूर	होसर, कृष्णगिरी, धर्मपुर, ओमालर सेलम,	४३२	३३१	—, —, —, —, ३५९
मदुराई ,,	मद्रास	माना मदुरई, परमागुडी, रामनाथ-पुरम	१६३	३५७	----
रामेश्वरम्, ,	,,			३५८	
			२५६५		

देहली से कुशीनगर वाराणसी की यात्रा

देहली से	राज्य				
गोलागोकरनाथ	उत्तर प्रदेश	हापुड़, मुरादाबाद, वरेली, शाहपुर	३३६	१	९६, १०३, ७७, ११२,
लखनऊ ,,	,,	लखीमपुर, सीतापुर,	१९५	१११	११०, ११३,
अयोध्या ,,	,,	बारावंकी, फैजाबाद	१५०	१०८	७६, ५९
गोरखपुर ,,	,,	वस्ती	१२५	५९	७४,
कुशीनगर ,,	,,		५०	३८	
वाराणसी ,,			१६४	५२	
			१०२९	८१	

आमुख

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा तथा जनता की प्रेरणा से यह अनोखा ग्रन्थ 'भारत यात्रा' आपके हाथों में है। इस प्रकार का कोई ग्रन्थ अभी तक देखने में नही आया। इस ग्रन्थ को तैयार करने में अनेक सहयोगियों का काफी लम्बा समय लगा है। इस ग्रन्थ की व्यवहारिकता इसी से प्रगट है कि मुझे सम्पूर्ण भारत की यात्रा करने में जो व्यावहारिक कठिनाईयाँ अनुभव हुई उन्हीं का निराकरण करने का विचार प्रथम मेरे मन में आया।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा उनका उल्लेख न करके मैं इस ग्रन्थ के सहायक मण्डल, अन्य सहयोगियों तथा स्थान २ से अमूल्य सुझाव भेजने वाले महानुभावों के प्रति प्रशंसा का भाव रखता हूँ तथा उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापन करना अपना परम कर्तव्य समझता हूं।

यहां यह स्पष्ट करना भी अत्यन्त आवश्यक है कि यह पुस्तक किसी आर्थिक लाभ को दृष्टि में रखकर प्रकाशित नही की गई है, अपितु इसका उद्देश्य सामान्य मूल्य पर समस्त भारत की यात्रा में रुचि रखने वाले बन्धुओं को तत्सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध कराना है। पुस्तक की कुछ विशेषतायें इस प्रकार हैं :—

१. समस्त दर्शनीय स्थलों का धार्मिक, ऐतिहासिक तथा व्यापारिक महत्व संक्षेप में समझाया गया है।

२. प्रत्येक दर्शनीय स्थल में प्राप्त होने वाली सवारियों धर्मशालाओं, होटलों रैस्ट हाऊसों तथा बैंकों की जानकारी करा दी गई है। जहाँ टेलीफोन हैं उनके नम्बर भी दिये गये हैं।

३. प्रत्येक स्थान के सभी महत्व पूर्ण स्थलों जैसे—मन्दिर, विश्वविद्यालय, बांध, गुरुकुल, अनाथालय, गोशाला आदि का ब्यौरा संक्षेप में दिया गया है।

४. दिल्ली से प्रत्येक राज्य की राजधानी तथा प्रमुख स्थानों की दूरी दर्शाई गई है।

५. सड़क द्वारा समस्त भारत की यात्रा करने का एक विशिष्ट कार्य क्रम सुझाया गया है जिसके अनुसार किसी भी स्थान से आरम्भ करने पर यात्रा ८० दिन में समाप्त हो जाती हैं। इस कार्यक्रम में प्रत्येक स्थान से चलने का समय, पहुंचने का समय, विश्राम का समय आदि भली भांति समझाया गया है।

६. इसी प्रकार एक कार्यक्रम रेल द्वारा ५० दिन में यात्रा करने का भी सुझाया गया हैं। इसमें ट्रेन का नम्बर, छूटने का समय आदि दिखाया गया है। विशेषता यह है कि इसमें चारों धाम सहित भारत के समस्त दर्शनीय स्थलों को बिना

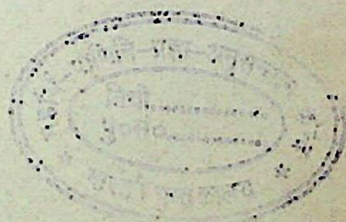
किसी कठिनाई के कम से कम समय में तथा कम से कम खर्च करके देखने का प्राविधान किया गया है।

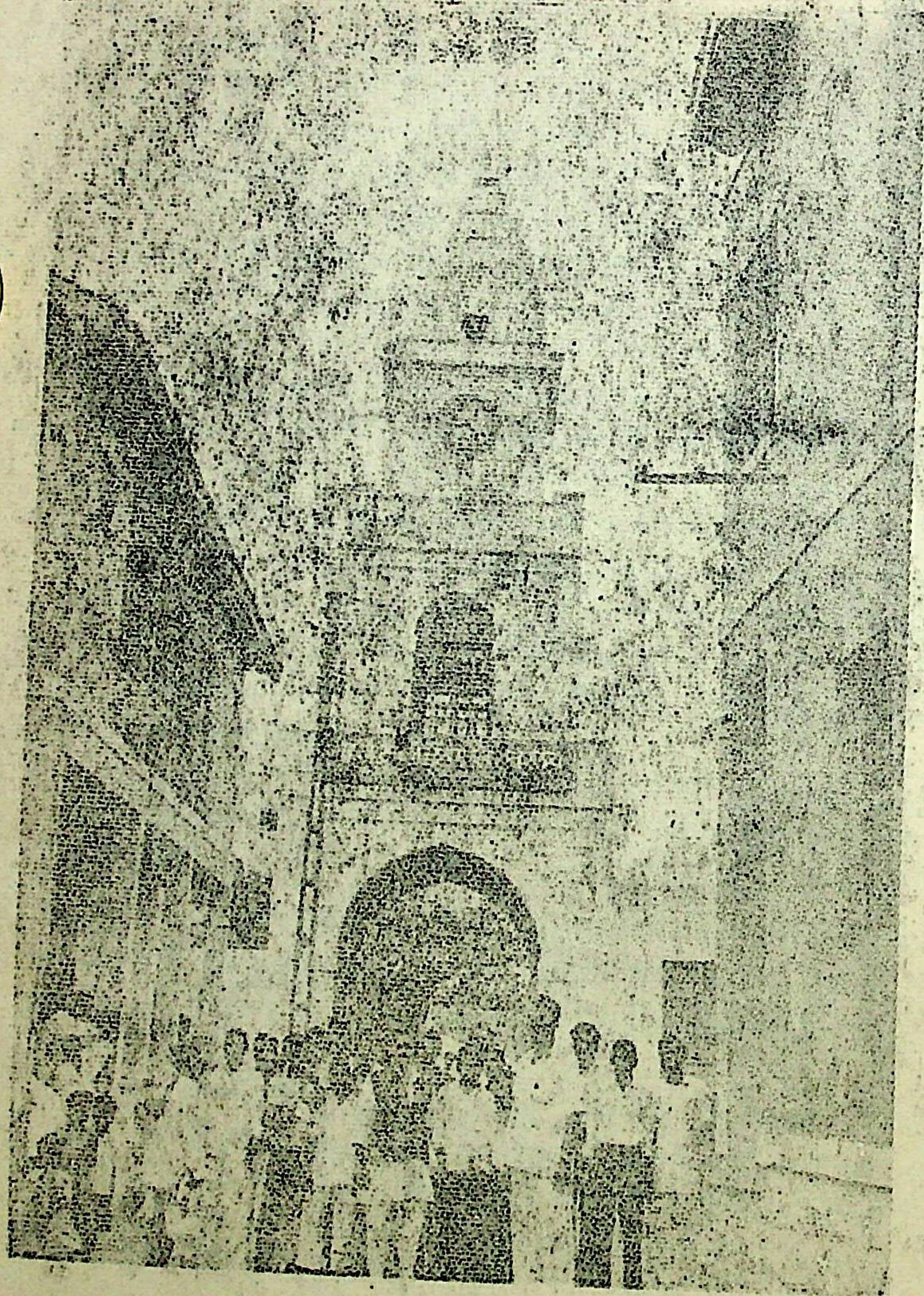
७. पुस्तक को आकर्षक तथा अधिक सूचनात्मक बनाने के दृष्टिकोण से इसमें कुछ रोचक सामग्री का भी समावेश 'खण्ड ब' में किया गया है। मुख्य रूप से देश भक्तों, क्रांतिकारियों सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक महापुरुषों की संक्षिप्त जीवनियां संक्षेप में दी गई हैं। अमर शहीद ऊधमसिंह की जीवनी पर विशेष प्रकाश डाला गया है। सौर जगत के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई है।

सामान्य पाठकों की जानकारी के लिये इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं, भारत के महत्व पूर्ण पुलों, अजायब घरों, तथा विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थलों की सूचियां अलग से दी गई हैं।

अन्त में सभी सहयोगियों एवं पुस्तक के प्रेरणा स्रोत अपने ज्येष्ठ भ्राता लाला बाबूराम सिमरौली वालों के प्रति एक बार फिर धन्यवाद-ज्ञापन करता हुआ मैं आप से निवेदन करता हूँ कि पुस्तक के सम्बन्ध में अपनी निष्पक्ष सम्मति तथा अमूल्य सुझावों से मुझे अवगत करायें इसके लिए सुझाव पत्र संलग्न प्रेषित है ताकि पुस्तक के दूसरे संस्करण में दोषों की पुनरावृत्ति न हो और यह संस्करण और भी अधिक आपकी सेवा कर सके।

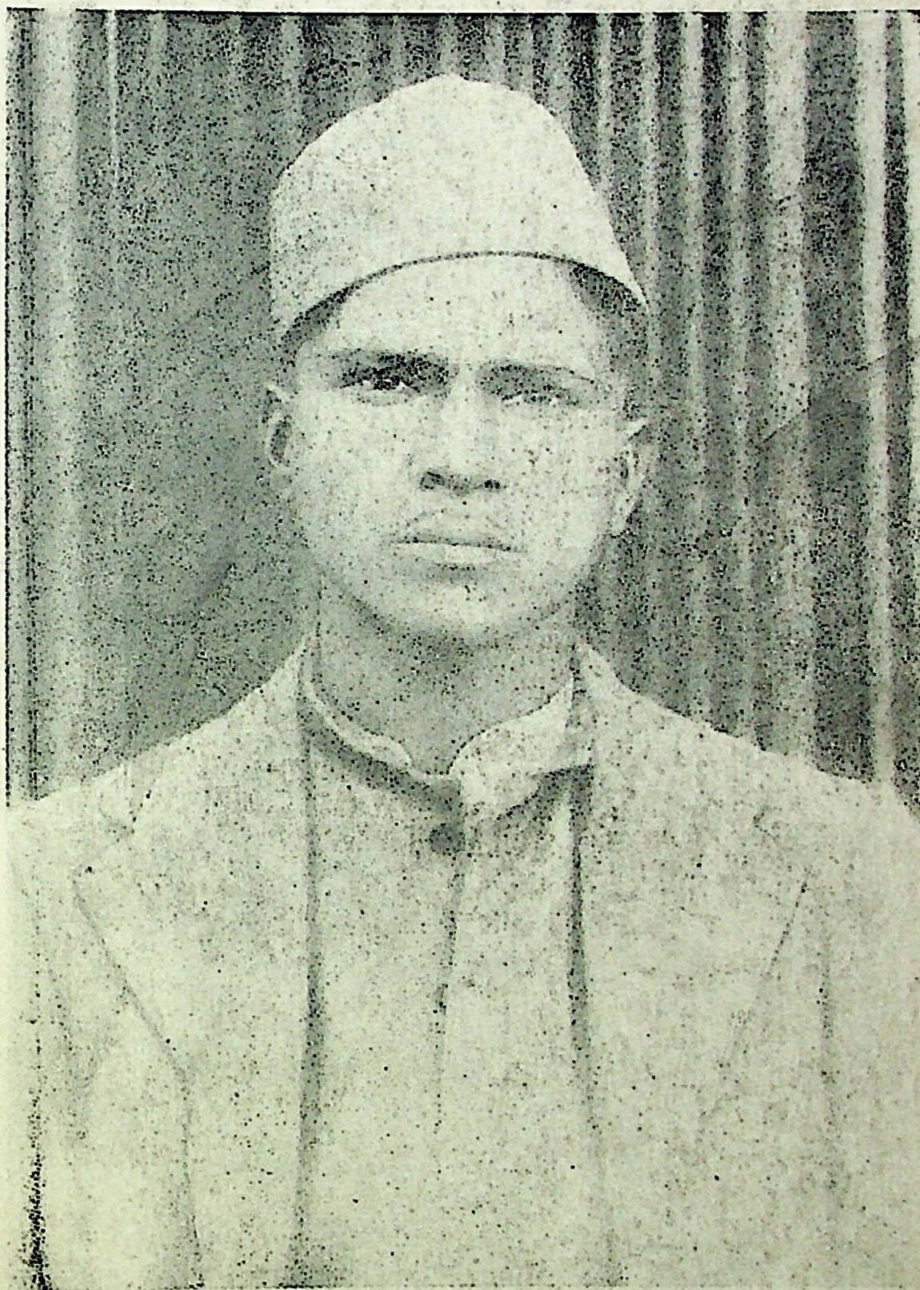
विनीत :
गंगा प्रसाद आर्य
२० मोती गंज हापुड़





महर्षि दयानन्द स्मारक आश्रम टंकारा (गुजरात)
का प्रवेश द्वार

जमुना प्रसाद की पुण्य स्मृति में

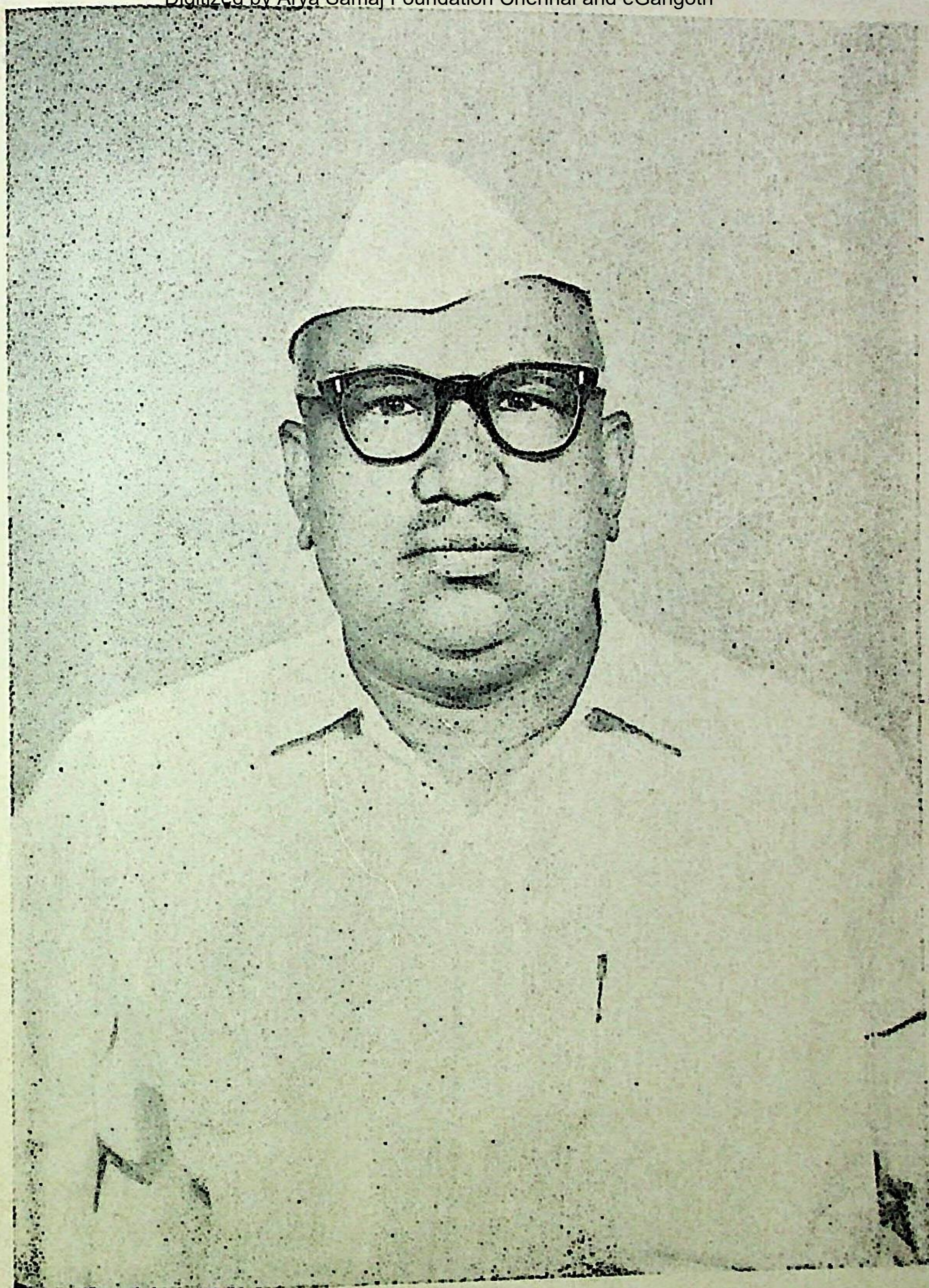


(स्वर्गीय जमुना प्रसाद का जन्म सन् १९२८ ई० में सिमरौली ग्राम में हुआ था। उनका विवाह ३० जनवरी १९४९ में हुआ और ८ अगस्त १९५० को हापुड़ में श्री चण्डी मन्दिर निर्माण के अवसर पर शहीद हो गये।)



प्रेरणा स्रोत

प्रकाशक के ज्येष्ठ भ्राता श्रीबाबूराम जी



गंगा प्रसाद आर्य



श्रीमती कैलाशवती (पत्नी) गंगा प्रसाद आर्य

लेखक परिचय

इस पुस्तक के प्रकाशक ला० गंगा प्रसाद आर्य सिमरौली वाले एक मूक जन-सेवकों में से है, जो बिना किसी प्रकाशन की इच्छा के सामाजिक कार्यों में निरन्तर लगे रहते हैं, तथा कोई भी छोटा-बड़ा सामाजिक दोष या अत्याचार जिण्हें उद्वेलित करके बलिदानपथ पर अग्रसर कर देता है।

आपका जन्म मेरठ जिले के रोहटा नामक ग्राम में १८ जनवरी १९२५ को हुआ था। उसी समय कुछ घरेलू कारणों से उनके माता-पिता को उसी जिले के सिमरौली ग्राम में स्थानान्तरित होना पड़ा। वहीं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हुई, तथा जीविका की खोज में उनके पिता ला० भगवानदास जी हापुड़ आये। बचपन से ही उनके हृदय में स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति एक आकर्षण था। विद्यार्थी काल में ही सुभाषचन्द्र बोस के आगमन पर उनके भाषण से प्रेरणा पाकर अन्य सहयोगियों के साथ सन् १९३९ में "नौजवान वीर दल" की स्थापना की। १९४२ में अंग्रेजी भाषा के प्रति विद्रोह प्रदर्शित करते हुए पढ़ाई त्याग दी। तथा उसी समय से क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लिया। हापुड़ नगर में ११ अगस्त १९४२ को गोली काँड होने के पश्चात 'बाल कांग्रेस कमेटी' की स्थापना की तथा उनकी प्रधानता में एक शहीद मेला सम्पन्न किया गया। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस मेले को नगर के वयोवृद्ध कांग्रसी नेताओं का समर्थम प्राप्त नहीं था। यह संगठन भारत के स्वाधीन होने तक सुचारु रूप से कार्य करता रहा १९४७ में जो विस्थापित पुरुषार्थी हापुड़ आये उनकी सहायता के लिये एक शिविर की भी आपने स्थापना की।

स्पष्ट वक्ता होने के कारण नगर काँग्रेसियों से पटरी नहीं बैठ सकी। तथा इसलिये १९५० में समाजवादी सेवा दल में सम्मलित हो गये और उसके संयोजक मनोनीत किये गये। १९५७ में हिन्दी रक्षा समिति की स्थापना की गई और लाला गंगा प्रसाद आर्य उसके मंत्री नियुक्त किये गये। इसी कार्य के सम्बन्ध में पंजाब का दौरा करते हुए फिरोजपुर, अम्बाला, चण्डीगढ़, रोहतक आदि स्थानों पर गये तथा नयागाँव पहुंचने पर हिन्दी आन्दोलन के अमर शहीद श्री सुमेर सिंह के दाह संस्कार में २७ अगस्त १९५७ को भाग लिया। उनकी पवित्र अस्थियां लाला गंगा प्रसाद के ही आवाहन पर विभिन्न नगरों में प्रदर्शन करने के लिये घुमाई गई।

तात्पर्य यह है कि हापुड़ नगर का ऐसा कोई भी सामाजिक कार्य नहीं रहा जो उनके सक्रिय सहयोग के बिना सम्पन्न हुआ हो। १९६६ के अन्त में जब देशभर में गोरक्षा आन्दोलन की धारा प्रभावित हुई तो वे फिर चुप न बैठे रह सके और ५ नवम्बर १९६६ को हापुड़ में भी प्रचंड रूप से आन्दोलन छेड़ दिया। अनेक सत्याग्रही जेल गये और अन्त में उन्होंने भी १४ दिसम्बर १९६६ को जेल यात्रा की। २६ मार्च १९६७ को "गोभक्तों का कुम्भ" नामक एक पुस्तक का संपादन व प्रकाशन किया। प्रस्तुत ग्रन्थ भी उनके सामाजिक पक्ष को ही प्रकाश में लाता है। पुस्तक प्रकाशन उनका व्यवसाय नहीं है। यह ग्रन्थ केवल जनता की सुविधा के लिये प्रकाशित किया गया है।

आचार्य भगवानदेव शर्मा टंकारा
(गुजरात)

तारीख
२-१०-७०

सहयोगी गण

श्री दीनबन्धु गर्ग एम० ए० बी० टी० अध्यापक
श्री धर्मवीर अग्रवाल एम० ए० एल० टी
श्री जगन्नाथ प्रसाद कंसल एम० ए० एल० टी० अध्यापक
श्री बालक राम शास्त्री प्रधानाचार्य
डाक्टर मुरली मोहन होम्योपैथ
श्री आनन्द स्वरूप सिंहल बी० ए०
श्री प्रेम 'निर्मल'
चौधरी सरजीत सिंह
श्री इन्दर सैन जैन
श्री शान्ति प्रसाद जी
चौधरी दलीप सिंह राठौर
श्री शिव कुमार शर्मा बी० ए० बी० एड० प्रधानाचार्य
श्री चन्द्रभान आर्य,
सरदार परमजीत सिंह
श्री अजय कुमार आर्य
श्री विनोद कुमार जैन
श्री विजय कुमार आर्य
श्री नन्द किशोर अग्रवाल
प्रोफेसर मदन लाल एम० एससी०
श्री प्रेम चन्द्र एम० एससी०
श्री कृष्ण कुमार गर्ग एम० ए० उपप्रधानाचार्य
श्री देवी कृष्ण गोयल उपप्रधानाचार्य
सरदार हरबन्स सिंह धनी
श्री कैलाश चन्द्र बंसल दौराने वाले
श्री जगदीश प्रसाद आर्य
श्री राम पालआर्य एम० एससी०



आर्य समाज के देखने योग्य स्थान

विवरण	नगर	प्रान्त
महर्षि की कार्य एवं निर्वाण भूमि (उनकी भस्मी उनकी आज्ञानुसार खेत में बिखेरी गई)।	अजमेर	राजस्थान
महर्षि का जन्म स्थल, दयानन्द स्मारक, शिवालय	टंकारा (मोखी)	गुजरात
गुरु विरजानन्द की कुटी।	मथुरा	उ० प्र०
प्रथम आर्य समाज की स्थापना का स्थान	बम्बई	महाराष्ट्र
दयानन्द भवन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय, नई दिल्ली दीवान हाल, श्रद्धानन्द भवन स्मारक	दिल्ली	राजधानी
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, भजन नरायन स्वामी	लखनऊ	उ० प्र०
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भवन, गुरुदत्त भवन,	जालन्धर	पंजाब
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा भवन	जालन्धर	पंजाब
गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी	हरिद्वार	उ० प्र०
,, ,, वृदावन	मथुरा	,,
,, महाविद्यालय	ज्वालापुर	,,
कन्या गुरुकुल	बड़ौदा	गुजरात
,, ,,	देहरादून	उ० प्र०
,, ,, महाविद्यालय	हाथरस	,,
चित्रावली ऋषि जी का जीवन चित्र, बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा	कलकत्ता	प० बंगाल
जहाँ महर्षि स्वामि दयानन्द जी को जहर दिया	जोधपुर	राजस्थान
आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य समाज,	पोरबन्दर	गुजरात

बौद्ध तीर्थ स्थान

नगर	प्रान्त	जिला	नगर	प्रान्त	जिला
साँची	मध्य प्रदेश	रायसैन	बौद्ध गया	बिहार	पटना
सारनाथ	उत्तर प्रदेश	बनारस	कुशी नगर	उत्तर प्रदेश	देवरिया
कलकत्ता	प० बंगाल	कलकत्ता			

सनातन धर्म तीर्थ यात्रा (स्थान)

नगर	प्रान्त	जिला	नगर	प्रान्त	जिला
बद्रीनाथ	उ० प्र०	चमोली	द्वारका जी	गुजरात	जामनगर
रामेश्वरम्	तमिलनाडू	रामेश्वरम्	जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	पुरी
केदारनाथ	उ० प्र०	चमोली	गंगोत्री	उ० प्र०	उ० काशी

जमुनोत्री	उ० प्र०	उ० काशी	हरिद्वार	उ० प्र०	सहारनपुर
मथुरा	,,	मथुरा	चित्रकूट	,,	बाँदा
इलाहाबाद	,,	इलाहाबाद	बनारस	,,	बनारस
अयोध्या	,,	फैजाबाद	गोलागोकरनाथ	,,	लखीमपुर खीरी
वृन्दावन	,,	मथुरा	विन्धाचल देवी	,,	लखीमपुरखीरी
शाकुम्भरी देवी	,,	सहारन पुर	कालका देवी	देहली	—
गुड़गाँवा	हरियाणा	गुड़गाँव	कन्याकुमारी	तमिलनाडु	कन्याकुमारी
मीनाक्षी	तमिलनाडु	मदुराई	श्री नाथ द्वारा	राजस्थान	उदयपुर
पुष्करराज	राजस्थान	अजमेर	सोमनाथ	गुजरात	जूनागढ़
गयाजी	बिहार	पटना	बैंजनाथ धाम	बिहार	संथालपरगना
गंगा सागर	प० बंगाल	कलकत्ता	अमरनाथ	ज० क०	पहलगाँव
वैश्नव देवी	ज० क०	जम्मू			

———

जैन धर्म के मुख्य तीर्थ स्थान

नगर	जिला	प्रान्त	नगर	जिला	प्रान्त
मथुरा	मथुरा	उत्तर प्रदेश	पटना	पटना	विहार
हस्तिनापुर	मेरठ	,,	सोनगिर	,,	,,
अयोध्या	फैजाबाद	,,	शिखर जी	,,	,,
अहिक्षेत्र	बरेली	,,	राजगृह	,,	,,
इलाहाबाद	इलाहाबाद	,,	पावा जी	,,	,,
बनारस	बनारस	,,	सिद्धवर कूट	इन्दौर	मध्य प्रदेश
कुण्डलपुर	दमोह	मध्य प्रदेश	उज्जैन	,,	,,
खजुराहों	छत्तरपुर	,,	श्री बीना जी	भागलपुर	बिहार
अजमेर	अजमेर	राजस्थान	द्रोणागिरी	सागर	मध्य प्रदेश
आबू पर्वत	सिरोही	,,	श्रवण बेलगोला	हस्सन	मैसूर
महाबीर जी	सवाई माधोपुर	,,	सिंहपुरी	बनारस	उत्तर प्रदेश
सवाई माधोपुर	,,	,,	चदेरी	गुना	मध्य प्रदेश
जयपुर	,,	,,	तिजारा	अलवर	राजस्थान
आरा	शाहाबाद	बिहार	गिरनार जी	जूनागढ़	गुजरात

सिक्खों के तीर्थ स्थान व गुरुद्वारे

नगर	जिला	नगर	जिला
श्री तरन तारन साहब	अमृतसर	श्री फतेहगढ़ साहब	पटियाला
,, अमृतसर साहब	,,	,, ज्योति स्वरूप साहब	,,
,, गोविन्द बाल साहब	,,	,, दूखनिवास साहब	,,
,, खंडूर साहब	,,	,, दम दमा साहब	भटिंडा
,, सुल्तान पुर (बाबे दी बेर)	कपूरथला	,, लकखी जंगल	,,
,, करतार साहब	जालन्धर	,, मुकतेसर साहब	फिरोजपुर
,, आलमगीर साहब	लुधियाना	,, पट्ठा साहब	रोपड़
,, रेरु साहब	,,	,, कोठ कपूरा	भटिंडा
,, कटाहना साहब	,,	,, पटना साहब	पटना
,, माछीवाड़ा	,,	,, हेम कुण्ड साहब	चमोली
,, चम्कौर साहब	रोपड़	,, हजूर साहब (सच खण्ड)	नांदेड़
,, कीर्तपुर साहब	,,	,, बौली साहब	अम्बाला
,, आनन्दपुर साहब	,,	,, छहरटा साहब	अमृतसर
		,, बाबा बकाला साहब	,,



श्री स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश

आदरणीय भाई गंगा प्रसाद जी आर्य (हापुड़) द्वारा लिखित "भारत यात्रा" नामक पुस्तक देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस पुस्तक के लिखने और प्रकाशित कराने में श्री आर्य जी को जितना परिश्रम करना पड़ा, उसे देखकर मैं इनके लगन और निष्ठा की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक इस देश की लाखों की जनता के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

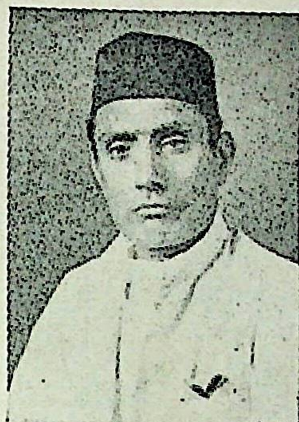
मेरी हार्दिक शुभकामनायें भाई गंगा प्रसाद जी आर्य और उनके मिशन के साथ हमेशा बनी रहेगी।

नई दिल्ली : २ अक्टूबर १९७०

—अग्निवेश

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक

मन्दिर रोड (दिल्ली)



श्री ला० रामगोपाल शाल वाले



राम गोपाल शाल वाले
संसद सदस्य (लोक सभा)

दूरभाष : कार्यालय : २६४१२६
निवास : २१३१६४
दुकान : २६६२६०

चाँदनी चौक, दिल्ली

दिनांक ३ अक्तूबर, ७०

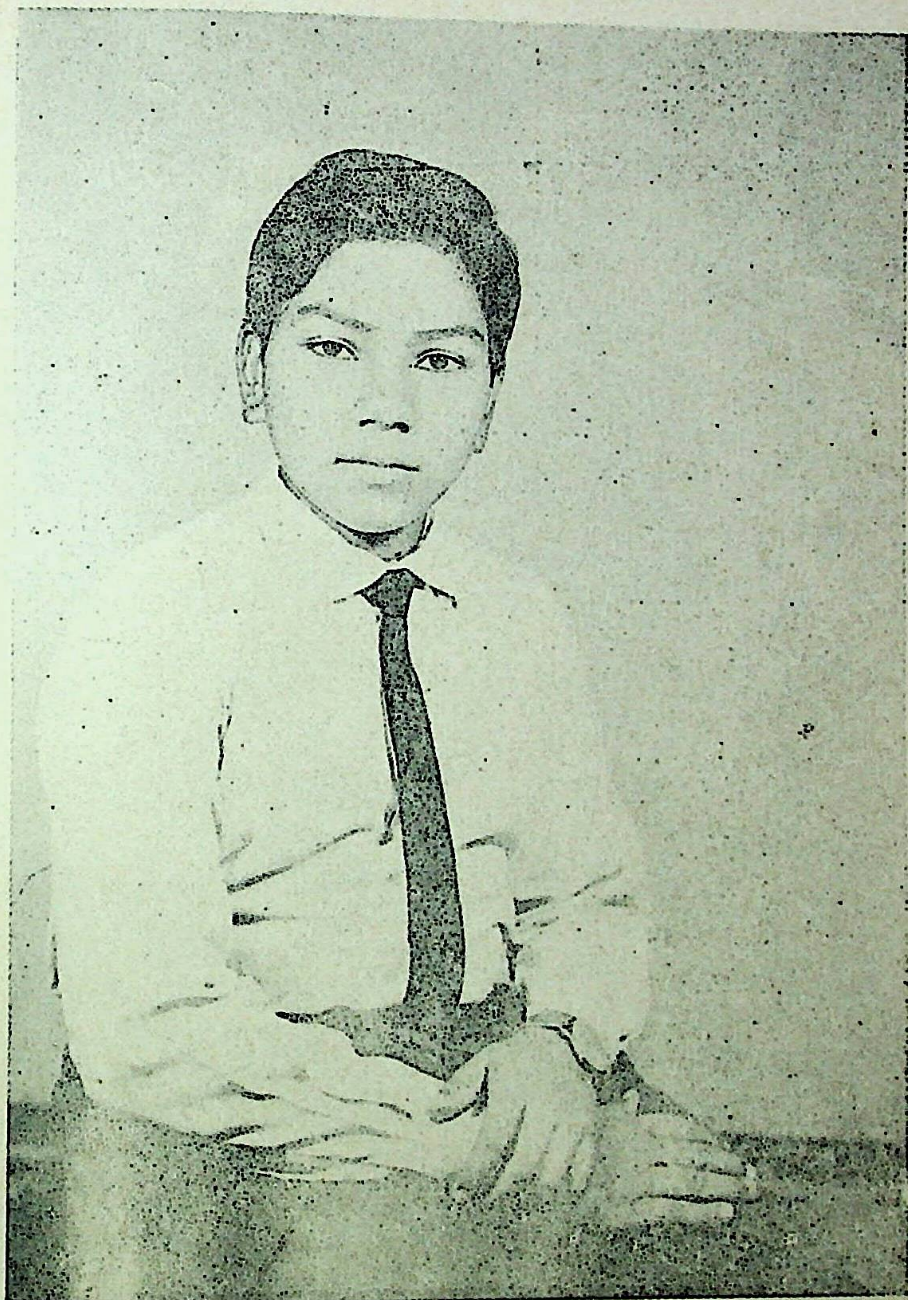
श्रीयुत गंगा प्रसाद जी आर्य ने "भारत-यात्रा" ग्रन्थ तैयार करके एक बहुत बड़ा और उपयोगी कार्य किया है जिसके लिये मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं। यह अपने ढंग का अनूठा प्रयास है जो अब तक नहीं किया गया।

यह ग्रन्थ देशाटन करने वालों के लिये मार्ग-दर्शक का कार्य करेगा और इस ग्रन्थ को साथ रखने से वे लोग अनेक कठिनाईयों और दिक्कतों से बच जायेंगे जो अनभिज्ञता के कारण उन्हें उठानी पड़ती हैं। श्री आर्य जी ने सपरिवार समस्त भारत में देशाटन किया है और उन्हें जो कठिनाईयां हुई थीउन्हीं को लक्ष्य में रखकर यह ग्रन्थ जन-साधारण के लाभार्थ तैयार कराया गया है।

इस ग्रन्थ में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक महान् व्यक्तियों नेताओं आदि के परिचय देकर ग्रन्थ की उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया गया है।

मुझे आशा है कि जनता इस ग्रन्थ का यथेष्ट आदर करके प्रकाशकों को प्रोत्साहित करेगी। इस उपयोगी ग्रन्थ का प्रत्येक घर में रखना जरूरी है। इसमें कोई सुझाव देना वान्छनीय हो तो प्रकाशकों को दे दिया जाय।

(रामगोपाल शालवाले)
संसद - सदस्य



विजय कुमार आर्य सुपुत्र गंगा प्रसाद आर्य

भारत के विश्वविख्यात गौ भक्त सन्त



स्वामी रामचन्द्र वीर

卐ॐ卐

अखिल भारतीय आदर्श हिन्दू संघ

संस्थापक

श्रीमक्त शिरोमणि मृत्युंजय महात्मा रामचन्द्र वीर महाराज

केन्द्रीय कार्यालय
विराटनगर (जयपुर : राजस्थान)

उद्देश्य

- अनीश्वरवाद का मूलोच्छेद.
- आदर्श हिन्दू राष्ट्र की भावना का प्रचार.
- विधर्मियों का हिन्दूकरण.
- हिन्दू युवतियों के चरित्र की रक्षा के लिये आन्दोलन.
- हिन्दू इतिहास की खोज और प्रकाशन.
- धर्मवीरों की वृद्धि.
- अन्ध विश्वासों का उन्मूलन.
- धर्म के नाम पर पशुहत्या जैसे पापाचरणों का विरोध.
- हिन्दू जाति के विविध सम्प्रदायों में हिन्दू संस्कृति का संचार.
- गौ रक्षा का पुनरुद्धार और गो वंश का विकास.

हापुड़ के सुप्रसिद्ध लाला श्री गंगा प्रसाद जी आर्य ने भारत यात्रा नाम की सुन्दर विशाल ग्रंथ लिख कर भारतीय हिन्दू जनता की प्रशंसनीय सेवा करके अपने अनुपम उत्साह एवं कर्तव्य परायणता का आदर्श प्रस्तुत किया है। भगवान इन्हें सुयश प्रदान करें।

स्वामी रामचन्द्र वीर

आश्विन शुक्ला ४
सं० २०२७ विक्रमाब्द



पैड

दफ़तर यू० पी० सिख मिशन हापुड़ ।

सम्बन्धित :–शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी,
श्री अमृतसर जी

ब्लोक

सिख मिशन हापुड़ का केन्द्रीय स्थान गुरुद्वारा श्री गुरु नानक दरबार

मैंने "भारत यात्रा" पुस्तक का अवलोकन किया है। इसमें भारत के सभी धर्मों तीर्थ स्थानों, महापुरुषों तथा क्रान्तिकारियों का पूर्ण विवरण है। यह ग्रन्थ हर दृष्टि से पूर्ण उपयोगी है। मैं इसकी सफलता के लिये ईश्वर से कामना करता हूं।

ज्ञानी फौजासिंह इन्चार्ज
गुरु नानक सिक्ख मिशन
शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक
कमेटी अमृतसर

फोन : २७७९४७

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्

(All India Digamber Jain Parishad)

२०४, दरीबा कलाँ,

दिल्ली ३—१०—१९७०

सेवा में,

श्री गंगा प्रसाद जी आर्य, हापुड़ (मेरठ)

मान्यवर,

जयहिन्द ।

यह जानकर अत्यन्त प्रशंसा हुई, कि आपने "भारत यात्रा पुस्तक" तैयार कराई है । इसमें आपने जो परिश्रम एवं धन व्यय किया है, इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं । आपने भारत में सभी धर्मों के तीर्थों की यात्रा की और इस पुस्तक में उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी देने का प्रयत्न किया । आज संगठन का युग है । "भारत यात्रा पुस्तक" से हिन्दू जाति के प्रत्येक धर्म वालों को पूरा-पूरा सहयोग प्रदान होगा ।

"भारत यात्रा पुस्तक" हिन्दू जाति में आपसी संगठन लाने के लिये एक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ।

भवदीय
भगतराम जैन
मन्त्री
अ० भा० दिगम्बर जैन परिषद्
२०४, दरीवा कलाँ, दिल्ली-६

❀ओ३म्❀ प० सं० ८०६ ११-१०-६८

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्म दानं विशिष्यते
सर्वे दानों में विद्या दान श्रेष्ठ है ।

गुरुकुल महा विद्यालय

ततारपुर डा० बाबूगढ़ छावनी जि० मेरठ (उ० प्र०)

सं०............ दिनांक ५ अक्टूबर ७०

माननीय श्री गंगा प्रसाद जी आर्य द्वारा प्रकाशित भारत यात्रा ग्रन्थ' मैंने आद्योपान्त पढ़ा । भारतवर्ष की यात्रा के पश्चात् अपने अनुभवों के आधार पर प्रकाशित उनका यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी प्रतीत हुआ ।

इस ग्रन्थ के अध्ययन से जहाँ हमें यात्रा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होगा वहाँ भारतवर्ष का सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं ऐतिहासिक परिचय भी मिलेगा ।

यह ग्रन्थ प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगा इस विश्वास के साथ ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में यह ग्रन्थ रत्न अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करे ।

विनीत
घनश्याम सिंह आर्य
प्रधानाचार्य,
गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर
डा० बाबूगढ़ छावनी, मेरठ (उ० प्र०)

चित्र सूची

उड़ीसा

बिहार

नगर का नाम	जिला	पृ०सं०	नगर का नाम	जिला	पृ०सं०
काशी नगर	चौबीसपरगना	४२७	सन्दकफु	दार्जिलिंग	४३४
खरदहा	,,	,,	फालुत	,,	,,
गेरिया	,,	,,	गूम मोनेस्ट्री	,,	,,
गौरीपुर	,,	,,	सन्चल झील	,,	,,
गोचरन	,,	,,	मज्जीतर ससपेंशनपुल	,,	,,
ठाकुर नगर	,,	,,	ब्यूरोइन्ट	,,	,,
डायमण्ड हार्बर	,,	४२८	दीविलेज आफ गरुवाउन	,,	,,
दक्षिणेश्वर	,,	,,	रियांग	,,	,,
नारायणपुर	,,	,,	सिगला	,,	,,
नैहाटो	,,	,,	वै. आ. री. वु. ए. न.	,,	,,
पनिहाटी	,,	४२९	कालिम्पोंग	,,	४३५
बाटा नगर	,,	,,	कुर्सियांग	,,	,,
बारूईपुर	,,	,,	त्रिस्टा ब्रिज	,,	,,
बारकपुर	,,	,,	सिल्ली गुड़ी	,,	,,
वजबज	,,	,,	कल्याणी	नदिया	४३६
बरासत	,,	४३०	कृष्ण नगर	,,	,,
बसीर हाट	,,	,,	चकदाह	,,	४३७
बोगांव	,,	,,	देवा ग्राम	,,	,,
मध्यम ग्राम	,,	,,	नवा द्वीप	,,	,,
मथुरापुर	,,	,,	प्लासी	,,	,,
रायपुर	,,	४३१	रानाघाट	,,	,,
शंकरपुर	,,	,,	शान्तिपुर	,,	४३८
श्याम नगर	,,	,,	बामून पुकुर	,,	,,
सोडेपुर	,,	,,	पश्चिमी दीनानपुर	,,	,,
सोनारपुर	,,	,,	पुरुलिय	पुरुलिया	,,
रहड़ा	,,	,,	झालदा	,,	,,
इच्छापुर	,,	४३२	रघुनाथपुर	,,	४३९
खड़दह	,,	,,	बर्दवान	बर्दवान	,,
जलपाईगुड़ी	जलपाईगुड़ी	,,	आसनसोल	,,	,,
वीर पाड़ा	,,	,,	कटवा	,,	४४०
बानर हाट	,,	४३३	कालना	,,	,,
कल्याणी	थाना	,,	चितरंजन	,,	,,
दार्जिलिंग	दार्जिलिंग	,,	दुर्गापुर	,,	,,
टोगलू	,,	४३४	बर्नपुर	,,	,,

नगर का नाम	जिला	पृ० सं०	नगर का नाम	जिला	पृ० सं०
बराकर	„	४४१	हुगली	हुगली	४४८
रानी गंज	„	„	चन्दर नगर	„	„
अहमदपुर	वीरभूम	„	चिनसूरा	„	„
इलमबाजार	„	„	तारकेश्वर	„	„
किरनाहार	„	४४२	पण्डुआ	„	„
चतरा	„	„	बंस बेरिया	„	४४९
तारापीठ रोड	„	„		**आसाम**	
दुब्राजपुर	„	„	भुवनबावा	कछार	४५०
नलहाटी	„	„	सिलचर	„	„
बोलपुर	„	४४३	कामरूप	कामरूप	४५१
मोल्लारपुर	„	„	गोहाटी	„	„
रामपुर हाट	„	„	नलवाड़ी	कामरूप	४५२
लोहापुर	„	„	रंगिया	„	„
लाबपुर	„	„	कामख्या गुड़ी	„	४५३
सूरी	„	४४४	बरपेटा	„	„
सैंथिया	„	„	पाठशाला	„	„
बांकुरा	बांकुरा	„	कोकड़ा झाड़	गोवालपाड़ा	४५४
विष्णुपुर	„	„	धुबड़ी	„	„
सोनामुखी	„	४४५	डिबरूगढ़	डिबरूगढ़	„
मालदा	मालदा	„	रेहाबाड़ी	„	४५५
पाँडू	„	„	तिनसुकिया	तिनसुकिया	„
मुर्शिदाबाद	मुर्शिदाबाद	„	राँगपाड़ा	दारंग	„
खगड़ा	„	४४६	खारूपेटियाघाट	„	४५६
जियागंज	„	„	तेजपुर	„	„
धुलियन	„	„	टांगला	„	„
बेलडंगा	„	„	नौगांग	नौगांग	„
बरहमपुर	„	„	होजाई	„	४५७
सालार	„	४४७	हैबरगांव	„	„
खड़गपुर	मिदनापुर	„	इम्फाल	„	„
झारग्राम	„	„	डिगबोई	लखीमपुर	४५८
बेलदा बाजार	„	„	सिवसा॰	सिवसागर	„
महिषादल	„	„	गोलाघाट	„	„
मिदनापुर	„	„	जोरहाट	„	„
हावड़ा	हावड़ा	४४८	नाजिरा	„	४५९

खण्ड ब

विषय सूची

भूल सुधार

१. पेज १९ के न० ११ पर बद्रीनाथ की जगह केदारनाथ है।

२. पेज न० ३७ पर जिला एटा में गंजडुंडवारा है।

३. पेज न० ३७ पर लखीमपुर की जगह लखीमपुर खीरी जिला है।

४. पेज न० ४६ पर यहां झांसी की रानी लक्ष्मीवाई सन् १८५७ के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ी थी।

५. पेज न० ६३ पर पखना स्टेशन से संकिसा ११ कि० मी० है।

६. पेज न० ८३ पर चन्द्रपुर में टैक्सी की सवारी नहीं मिलती।

७. पेज न० ८६ पर विंध्याचल में रोड व लाईन दोनों है।

८. पेज न० ८७ पर मुजफ्फरपुर से शुक्रताल ३० कि० मी० दूर है।

९. पेज न० १०१ पर शुक्ल पक्ष नहीं कृष्ण पक्ष है।

१०. पेज न० १२२ पर नजीबाबाद, हापुड़, फैजाबाद, जौनपुर है।

११. पेज न० १४९ पर दीनानगर—दीनाननगर है।

१२. पेज न० १८८ पर वेरी में रेल व्यवस्था नहीं है।

१३. भारत की यात्रा के रेल चार्ट में मथुरा से वृन्दावन व बृजयात्रा भी कर सकते हो।

१४. भारत की यात्रा रेल चार्ट में फतहपुर के आगे सीकरी और लगालें।

१५. पेज न० १२४ पर धर्मशाला में जालन्धर को जोगेन्द्र नगर लाईन करलें।

		गलत	सही
१६.	पेज न० ३१ पर	वेकवर	बेकर
१७.	पेज न० ३७ पर	सिकन्द्र	सिकन्दरा
१८.	पेज न० ४४ पर	कालपी के बाद परासन जोड़लें।	
१९.	पेज न० ६१ पर	फतहपुर	फतहगढ़
२०.	पेज न० १५६ पर	बस्ती पठाना	बस्सी पठाना
२१.	पेज न० १८७ पर	गलौर	गन्नौर
२२.	पेज न० १९९ पर	:कलोरा	इकलेरा
२३.	पेज न० २०० पर	छपावड़ौत	छिपाबड़ौत
२४.	पेज न० २०६ पर	चमू	चोमू
२५.	पेज न० ३४७ पर	पदमारामा	पदमानाभा
२६.	पेज न० ३७४ पर	सिंहाचलम	सिकन्द्राबाद
२७.	पेज न० ४०८ पर	बबैरागनिया	बैरागनिया
२८.	पेज न० १७० पर	चन्द्रपूर्णी	चिन्त पूर्णी
२९.	पेज न० २३८ पर	वैरावल	पैरावल

भारत यात्रा ग्रन्थ शुद्धि पत्र

आदरणीय बन्धुवर,

ग्रन्थ सम्बन्धी कोई भी त्रुटि अथवा सुझाव-साथ वाले कार्ड पर बिना टिकट भी भेज सकते हैं।

भवदीय—

प्रकाशक—

श्रीमान जी· निम्नलिखित सुझाव भारत यात्रा ग्रन्थ के लिए भेज रहा हूं।

सं०	पृ० सं०	सुझाव

भेजने वाले के हस्ताक्षर

२०

नगर से यात्रा प्रारम्भ करनी हो तो कृपया उपरोक्त चार्ट में खाना न०

२१

यात्रा प्रारम्भ कर दें। जब इस खाने के अन्तिम हापुड़ तक पहुंच जाये

१५–१२	३० मिनट	२७२	
००–२०	२ घन्टे	२६७	
७–०५	१५ घन्टे		
१०–१०) ७–४०)	१२ घंटे गाड़ी बदलने पर १२ घंटे ठहरना	२६८	
३–५५)	१० घन्टे		
१६–२०)	११ घन्टे		
८–४०	३३ घन्टे		
२३–४५	४ घन्टे		
१६–०५	१५ घन्टे		
१२–०५	६७ घन्टे	३०७	
१२–५०	२४ घन्टे	३०६	
१५–२१	२४ घन्टे	२५१	
३–०६	२४ घन्टे	२४१	वृन्दावन ब्रजयात्रा
८–५६	४८ घन्टे	१६६	४९–५० वाँ दिन आगरा, फतहपुर
		१०१	देखते हुए हापुड़ वापिस आ जायें

ा नगर छाँटकर वही से यात्रा प्रारम्भ कर दें।

से यात्रा करे।

दिल्ली

सजी सांवरी दुल्हन दिल्ली,
भारत की रजधानी है.
बिड़ला, जामा, लालक़िला,
गुरुद्वारा अमर कहानी है.

दिल्ली—दिल्ली नगर एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर है। इसका प्राचीन नाम इन्द्रप्रस्थ है। यह स्वतन्त्र भारत की राजधानी है और प्राचीन काल से अनेक शासकों की राजधानी रही है। इस नगर का महत्व केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं वरन् धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा वैदेशिक दृष्टि से भी अपार है। जन-संख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से भी यह नगर भारत में विशाल है और अपना ए महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

स्थिति—यह नगर जमुना नदी के दाहिने किनारे पर है नई दिल्ली व प्राचीन दिल्ली में बहुत बड़े रेलवे जंकशन हैं। यहां से चारों तरफ को रेलें जाती हैं।

यहाँ यात्रियों की सवारी के लिए रिक्शा, तांगे, टैक्सी, स्कूटर, तथा नगर बस (डी० टी० यू०) उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के विश्राम के लिए बहुत सुविधायें प्राप्त हैं जैसे—

धर्मशालायें—ला० छज्जूमल की धर्मशाला (स्टेशन के पास), ला० लक्ष्मी-नारायन जी की धर्मशाला (फतेहपुरी बाजार में), मारवाड़ी धर्मशाला, (जोगी वाड़ा नई सड़क पर), पन्नालाल माधव प्रसाद जी की धर्मशाला (सीताराम बाजार में), छव्वन लाल जी की धर्मशाला (तेलीवाड़े में), सेठ जानकी दास की धर्मशाला (फव्वारा चाँदनी चौक में), लक्ष्मी नारायन मन्दिर धर्मशाला, (बिरला मन्दिर के पास मन्दिर रोड, नई दिल्ली)

होटल—अशोका होटल (५० B चाणक्यपुरी फोन न० ७०३११, नई दिल्ली),

सैन्ट्रल कार्ट होटल (N ब्लाक क्नाट सर्कस नई दिल्ली, फोन न० ४७००६, ४७००७, ४७००८ ४७००६, ४७०१०), होटल एयर लाईन्स (अपोजिट नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने, फोन न० २६५३६१, २६५३६२, २६५३६३), अलका होटल (क्नाट सर्कस, नई दिल्ली फोन न० ४२२५१), होटल एम्बेसड्डर (सुजान सिंह पार्क नई दिल्ली फोन न० ६१६४६१), होटल भगीरथ पैलेस (भगीरथ पैलेस आपोजिट रेड फोर्ट, देहली-६, फोन न० २७६२२३), होटल बरोड़वे (आसफ अलीरोड, फोन न० २७३८२१ नई दिल्ली), होटल डिपलोमेट (सरदार पटेल रोड फोन न० ३७२००३), होटल फ्लोरा (दयानन्द रोड दरयागंज देहली-६ फोन न० २७३६३४), होटल गरोव्ज (३/१७ आसफ अली रोड, फोन न० २७१६८१, नई दिल्ली १), होटल इम्पीरीयल (जनपथ, नई दिल्ली फोन न० ४६८११), होटल जनपथ (जनपथ नई दिल्ली फोन न० ४६८८१), होटल प्रेजीडेन्ट (आसफअली रोड, दिल्लीगेट फोन न० २७३००० नई दिल्ली), होटल राजदूत (मथुरा रोड, फोन न० ७०३६१ नई दिल्ली-१४), होटल रणजीत, (महाराजा रणजीत सिंह रोड, फोन न० २७७६८१ नई दिल्ली), होटल टूरिस्ट (रामनगर, रेलवे स्टेशन के पास, नई दिल्ली-५५ फोन न० २६३६४१), होटल विक्रम (रिंग रोड, फोन न० ६२५६३६, नई दिल्ली), लोधी होटल (लाजपतराय मार्ग, फोन न० ६१६४२२, नई दिल्ली-३) भारत होटल (फतेहपुरी पर, दिल्ली-६), ताज महल होटल (फतेहपुरी पर, दिल्ली-६), दिल्ली गुजराती समाज (राज निवास मार्ग, दिल्ली-१), अलंकार होटल (ब्लाक-१०, कनाट सर्कस, फोन न० ४२२५१), आगरा होटल (१६ दरियागंज, दिल्ली, फोन न० २७८०४१), शर्मा होटल (नावल्टी सिनेमा के पीछे, दिल्ली-६)।

दर्शनीय स्थल—दिल्ली नगर में अनेकों स्थल दर्शनीय हैं जिनमें से प्रमुख-प्रमुख निम्नलिखित हैं:—

धार्मिक स्थान—आर्य समाज दीवान हाल एवम् हिन्दू महा सभा (भगीरथ पैलेस मोती सिनेमा के पीछे), लाल मन्दिर (लाल किले के सामने), जामामस्जिद (लाल किले के सामने), बिरला मन्दिर (लक्ष्मीनारायण मन्दिर) (मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली), बावड़ी गन्धक, जगमाता मन्दिर, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद।

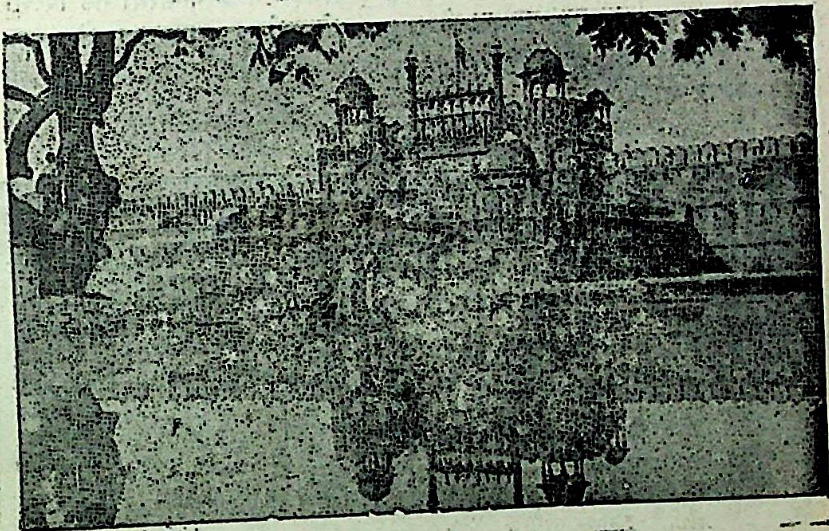
समाधियां—राजघाट-महात्मा गांधी जी की समाधि (महात्मा गांधी मार्ग दिल्ली), शान्तिवन-श्री जवाहर लाल नेहरू जी की समाधि (महात्मा गांधी मार्ग दिल्ली) तथा विजय घाट-श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की समाधि (महात्मा गांधी मार्ग, दिल्ली)।

मकबरे—हुमायूं का मकबरा (मथुरा मार्ग, नई दिल्ली), सफदरजंग का मक़बरा (महरौली मार्ग, नई दिल्ली)।

उद्यान बिहार-स्थल एवम् पुस्तकालय—बुद्ध जयन्ती पार्क (अपररिजमार्ग, नई दिल्ली) ताल कटोरा गार्डन (मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली), कुदसिया बाग, (कश्मीरीगेट

के बाहर दिल्ली), (लेडी हार्डिग लायब्रेरी, फव्वारा दिल्ली) लोधी-पार्क (लोधी मार्ग, नई दिल्ली) इण्डिया गेट (राजपथ मार्ग, नई दिल्ली) अनारकली आर्यसमाज (मन्दिर मार्ग) दिल्ली पब्लिक पुस्तकालय (स्टेशन के सामने, दिल्ली), रोशनारा बाग (सब्जी मंडी दिल्ली)।

संग्रहालय—राष्ट्रीय संग्रहालय, (जनपथ मार्ग, नई दिल्ली), शिल्पकला-संग्रहालय (लाल किले के अन्दर), भारतीय युद्ध स्मारक संग्रहालय (लाल किले के अन्दर), गांधी स्मारक संग्रहालय, (नेहरू मार्ग), नेहरू स्मारक संग्रहालय (तीन मूर्ति मार्ग पर, नई दिल्ली), हस्तकला संग्रहालय (थापर भवन, जनपथ, नई दिल्ली), राष्ट्रीय नव कलावीथि (जयपुर भवन नयी दिल्ली), गुड़िया घर, नेहरू भवन, (बहादुर शाह-जफर मार्ग, दिल्ली)।



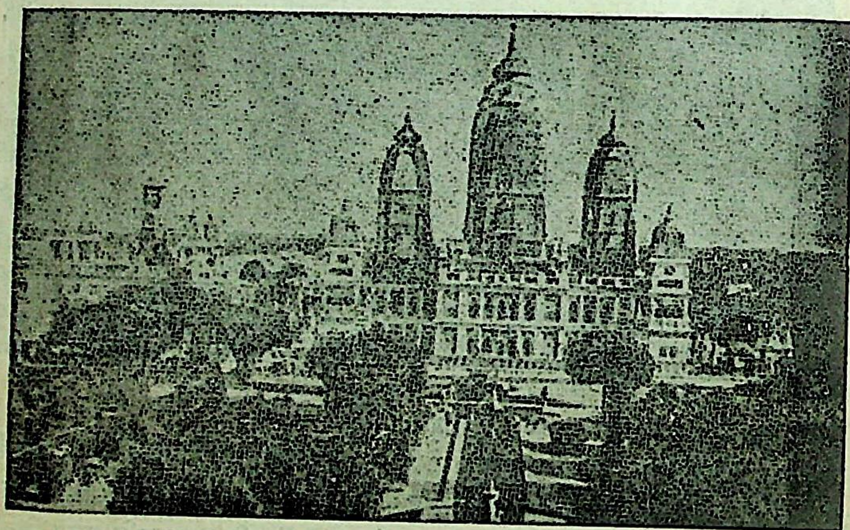
लाल किला

दर्शनीयस्थान—ओखला, मथुरामार्ग पर। कुतुबमीनार, महरौली मार्ग, दिल्ली। पुराना किला और चिड़िया घर (मथुरामार्ग पर दिल्ली)। कोटला फिरोजशाह, बहादुर जफर मार्ग पर। जंतर-मंतर, पालियामेन्ट स्ट्रीट, नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन, केन्द्रीय सचिवालय, संसद भवन, राजपथ रोड़ नई दिल्ली,। हौजखास, महरौली मार्ग पर नई दिल्ली। तुगलकाबाद का किला, बदरपुर मार्ग पर दिल्ली। लाल किला चांदनी चौक दिल्ली। भूल भुलैया नई दिल्ली । गांधी दर्शन, महात्मा गांधी मार्ग पर। तीन मूर्ति भवन, तीन मूर्ति मार्ग पर। बिजली द्वारा दाह क्रिया भवन, महात्मा गांधी मार्ग पर। समाचार पत्रों के कार्यालय नई दिल्ली में। रेडियो स्टेशन, आकाशवाणी भवन, पालियामेन्ट स्ट्रीट नई दिल्ली में। हनुमान मन्दिर, कनाट पैलेस रीगल सिनेमें के पीछे, राज्य सभा, नई दिल्ली में। कांग्रेस कार्यालय नई दिल्ली में। कनाटपैलेस, नई दिल्ली

श्रद्धा नन्द बलिदान भवन, श्रद्धा नन्द बाजार में। लोक सभा चर्च मार्ग नई दिल्ली में। सफदरजंग हवाई अड्डा, सफदर जंग मार्ग पर, नई दिल्ली। पालम हवाई अड्डा, गुड़गांव रोड पर नई दिल्ली। शीशगंज गुरू द्वारा, चाँदनी चौक दिल्ली-६ श्रद्धानन्द स्मारक चांदनी चौक। म्यूटिनी मैमोरियल, सब्जीमंडी। सूर्यकुंड-बदरपुरमार्ग। शेरशाह मंडल, शेरशाह मार्ग। सुप्रीम कोट, मथुरा मार्ग पर। अजायब घर, नई दिल्ली में। तीस हजारी कोर्ट, बिरला हाउस, दिल्ली विश्व विद्यालय, पटौदी हाउस, आर्य अनाथालय, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा, आशफ अली रोड (दयानन्द भवन. आशफ अलीरोड) अशोक स्तम्भ। राष्ट्रपति गार्डन,(केवल फरवरी में खुलता है)।

प्रयोगशाला—राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्था नई दिल्ली, प्रकाशन तथा सूचना निर्देशालय (भारतीय भाषा एकांश सहित), भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक अभिलेखन केन्द्र तथा राष्ट्रीय सागर विज्ञान संस्था नई दिल्ली में।

मुख्य बाजार तथा विक्रय केन्द्र—चाँदनी चौक, खारी बावड़ी, श्रद्धानंद बाजार, कश्मीरी गेट, सदर बाजार, कनाट पैलेस, हौजकाजी, गोलमार्केट, करौल बाग, सुपर बाजार आदि।



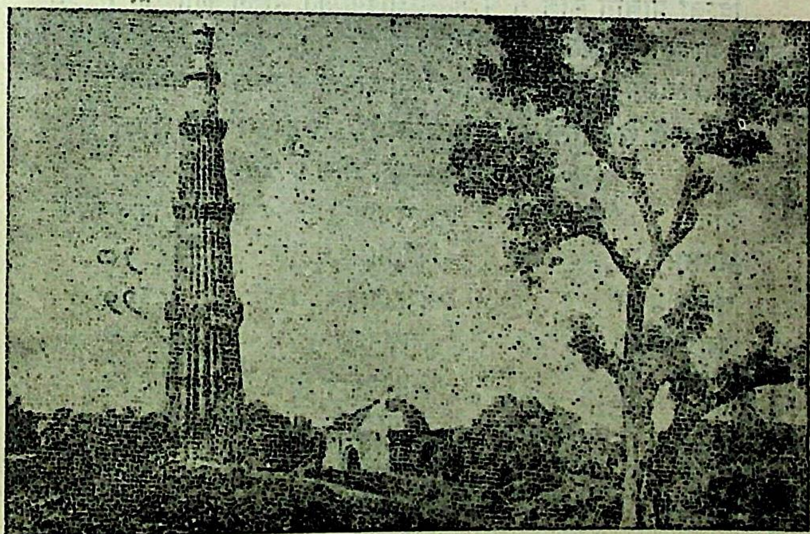
बिड़ला मन्दिर

उत्पादित वस्तुयें—दिल्ली सभी वस्तुओं का व्यापारिक केन्द्र है। समस्त भारत में यहां से लगभग सभी वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है। यहां पर गेहूँ चना, जौ, ज्वार, बाजरा तथा अलसी आदि सभी गल्ले की प्रसिद्ध मंडिया है।

बैंक—इलाहवाद बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, रिर्जव बैंक ऑफ इण्डिया, यूनाईटिड कामर्शियल बैंक, सब्जी मंडी, सदर बाजार

में, ओरियन्टल वैंक ऑफ कामर्स, वैंक ऑफ बीकानेर वैंक ऑफ इण्डिया, वैंक ऑफ जयपुर खारीवावली में, वैंक ऑफ वड़ौदा, सैन्ट्रल वैंक ऑफ इण्डिया, चावड़ी बाजार, सदर बाजार, अजमेरीगेट पर, चारटर्ड वैंक ऑफ इन्डिया, इन्डिया, देवकरन नानजी बैंक, गडोंदिया बैंक, चाँदनी चौक, खारी बावरी करौल बाग में, ग्राडलैज बैंक लिमिटेड, हिन्दुस्तान कार्मशियल बैंक इण्डियन ओवर सिज बैंक लि०, लक्ष्मी बैंक लि०, लक्ष्मी कामर्शियल बैंक लि०, मरकेन्टीयल बैंक ऑफ इण्डिया लि०, नारंग बैंक ऑफ इण्डिया लि०, सब्जी मन्डी, न्यूबैंक ऑफ इण्डिया, न्यू सिटीजन बैंक ऑफ इण्डिया, पलाई सैन्ट्रल बैंक लि०, पंजाब का-आपरेटिव बैंक लि०, प्रभात बैंक लि० चादनी चौक, ट्रेडर्स बैंक लि०, बैंक ऑफ पटियाला, चांदनी चौक, आईडियल बैंक लि० फतेहपुरी, कार्मशियल बैंक ऑफ इण्डिया, हिमपुर बैंक लि०, नेशनल सिटी बैंक लि०, देहली प्रो० को-आपरेटिव बैंक लि०, आदि सभी बैंक हैं।

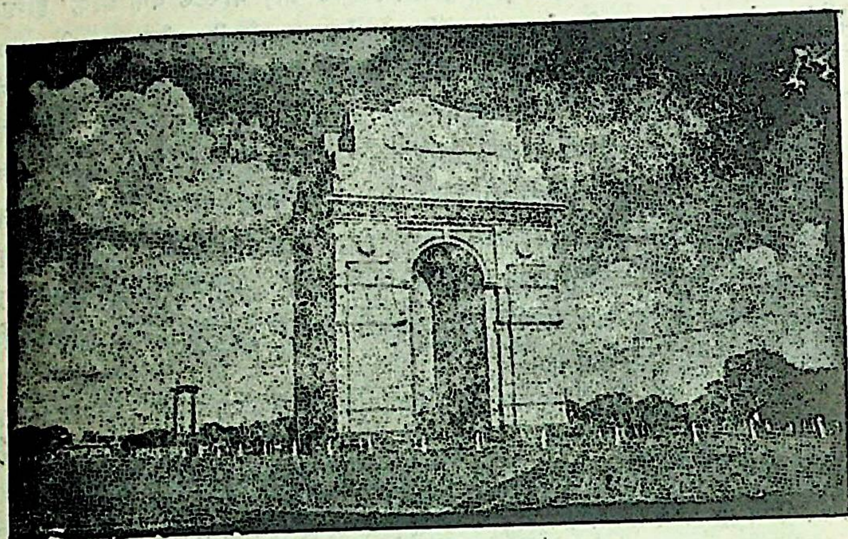
संक्षिप्त परिचय—महरौली में दिल्ली के निकट जो कुतुब मीनार स्थित है उसका वास्तविक नाम "आचार्य वाराह मीहर की वेधशाला" था। इसमें २८ मंदिर थे जो नक्षत्रों के अनुसार बने थे। सात ग्रहों के सात रोशनदान थे। यह विक्रमादित्य संवत के काल में बनी थी जिसका जन्म सन् ५०५ ई० में चन्द्र गुप्त द्वितीय के काल में हुआ था। ग्राम कालपी में इसके सात ग्रहों के सात स्तम्भ थे। वर्तमान युग में इनमें से दो उतार दिये गये हैं।



कुतुब मीनार (आचार्य वाराह मीहर की वेधशाला)

दिल्ली पुरानी भी है और नई भी। वास्तव में ये दोनों विभिन्न नगर ही हैं। दिल्ली नगर का भीतरी भाग पुरानी दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध है और अजमेरी गेट

से बाहर का दक्षिणी भाग नई दिल्ली कहलाता है, परन्तु अब ये दोनों नगर परस्पर इस प्रकार मिल गये हैं कि एक ही नगर प्रतीत होता है।



इंडिया गेट

दिल्ली प्राचीन काल से अनेक साम्राज्यों का शासन केन्द्र रही है और अब भी अपनी प्राचीन मर्यादा, कीर्ति और गौरव को बनाये हुए यह सुन्दर नगर विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक स्वतन्त्र गणराज्य भारत की आकर्षक राजधानी है।

दिल्ली से प्रान्तों की राजधानियों की दूरी किलो मीटर में
(१०० कि० मी० = ६२ मील के लगभग)

प्रान्त	राजधानी	कि० मी०
आसाम	शिलांग	१९७०
आन्ध्र प्रदेश	हैदराबाद	१६७३
उत्तर प्रदेश	लखनऊ	४८८
उड़ीसा	भुवनेश्वर	१९१५
केरल	त्रिवेन्द्रम	३०११
गोवा	पाना जी	२१७४
गुजरात	अहमदाबाद	९३४
जम्मू एण्ड कश्मीर	श्री नगर	८७८.५
पंजाब	चंडीगढ़	२४०
प० बंगाल	कलकत्ता	१४३७
पंडिचेरी	पंडिचेरी	२३८२

प्रान्त	राजधानी	कि० मी०
तमिलनाडु	मद्रास	२१८८
मध्य प्रदेश	भोपाल	७०३
महाराष्ट्र	बम्बई	१५४२
मैसूर	बंगलौर	१९६५
नैपाल	काठमांडू	१२२५
विहार	पटना	९८८
राजस्थान	जयपुर	२८९
हरियाणा	अभी राजधानी नहीं बनी	
हिमाचलप्रदेश	शिमला	४००

दिल्ली से प्रमुख नगरों की दूरी किलो मीटर में

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अकोला	१२३५	जींद	१२८	मुरादाबाद	१६०
आबूरोड	७४९	जलगांव	११२०	मदुरा	२६८०
अलवर	१५८	झांसी	४१२	मारवाड़	७२९
अलीगढ़	१०६	टूंडला	२०४	मनमाड	१२८०
अयोध्या	६२१	द्वारका जी	१२६४	महसाना	८६६
अम्बाला	१९८	नागपुर	१०९२	मुगल सराय	७७६
अजमेर	३७८	नासिकरोड	१३५३	मिरज	१८१२
अमृतसर	४४७	नैनी	६३५	महावीर जी	२६३
आगरा	१९९	जगन्नाथ पुरी	१९३६	रतलाम	७५२
आसनसोल	१२३७	पूना	१५९९	रत्नगढ़	३२९
इटारसी	७९५	पोरवन्दर	१२१८	हैदराबाद	१६७७
इन्दौर	८५६	फर्रुखाबाद	३४८	राजकोट	१०४६
इलाहबाद	६२७	फैजाबाद	६१४	रामेश्वरम्	२८५४
उज्जैन	८८७	फिरोजपुर	६८५	रायचूर	१९५९
उदयपुर	६७९	फिरोजाबाद	२२१	रिवाड़ी	८३
कोट कपूरा	३४०	बड़ौदा	९९७	रोहतक	७०
कुचामन	५५०	बरेली	२५१	लक्सर	२३३
कानपुर	४३५	बीकानेर	४६३	लोहारु	१७४
कटनी	८२७	बैरावल	१२२९	लुधियाना	३७४
कल्यान	१४८७	बद्रीनाथ	४९८	ब्यावर	४९६
काजीपेट	१५३७	बाड़ी	१८५१	वाराणसी	७६०

केला देवी	२०६	बाराबंकी	५१५	वरधा	११७०
कोटा	५४८	बयाना	२२०	विजयवाड़ा	१७५६
खंडवा	६७२	बीना	५६७	शाहगंज	७१६
गया जी	६८०	बुरहानपुर	१०४८	सहारनपुर	१६६
ग्वालियर	३१५	भटिंडा	२६८	सूरत	१०६८
गुड़गाँव	३२	भुसावल	१०६६	सिकंदराबाद	१६६८
गढ़मुक्तेश्वर	८६	भरत पुर	१७६	सवाईमाधोपुर	३६१
चित्तौड़गढ़	५६४	मथुरा	१४३	हरिद्वार	२६१
जबल पुर	६१८	मेरठ	६८	होशंगाबाद	७७७
जोधपुर	६२५	मुजफ्फरनगर	१२२	हरदा	८७०
जौनपुर	७२५	मिर्जापुर	७१७	होटगी	१७१७
				हापुड़	५७

———

उत्तर प्रदेश

गंगा यमुना, औं, सरस्वती,
बहती हैं कल-कल स्वर में.
तुङ्ग हिमालय रक्षा करता,
बन कर प्रहरी उत्तर में.

श्री बद्रीनाथ धाम

विश्व के धार्मिक देशों में भारत वर्ष का स्थान सर्वोपरि है। अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष में रहने वाले विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों के अनेक महत्वपूर्ण एवं दर्शनीय धार्मिक तीर्थ-स्थान भारतदेश की धार्मिकता को अक्षुण्य बनाये हुए हैं। इन्हीं कारणों से वर्तमान समय में भारतवर्ष एक धर्म प्रधान देश माना जाता है। इस देश की धार्मिकता को चार चाँद लगाने वाले तीर्थ स्थानों में चार धाम (१) श्री जगन्नाथ धाम (२) श्री रामेश्वरम् (३) श्री द्वारिका धाम एवं (४) श्री बद्रीनाथ धाम हैं। अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार लोग इन धामों की यात्रा करते हैं। पूर्व तीन धामों की यात्रा करने के बाद कुछ लोग चौथे श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा करते हैं। पूर्व तीन धामों की यात्रा, इस चौथे धाम की अपेक्षा, रेलमार्ग होने के कारण सुगम है, परन्तु अब चौथे धाम तक मोटर मार्ग बन जाने से इस की यात्रा भी सुगम हो गई है। पुराणों के आधार पर इस चौथे धाम की यात्रा हरिद्वार से आरम्भ होती हैं। इसी कारण इसे मायापुरी, मायाक्षेत्र, गंगाद्वार एवं स्वर्ग द्वार भी कहा जाता है।

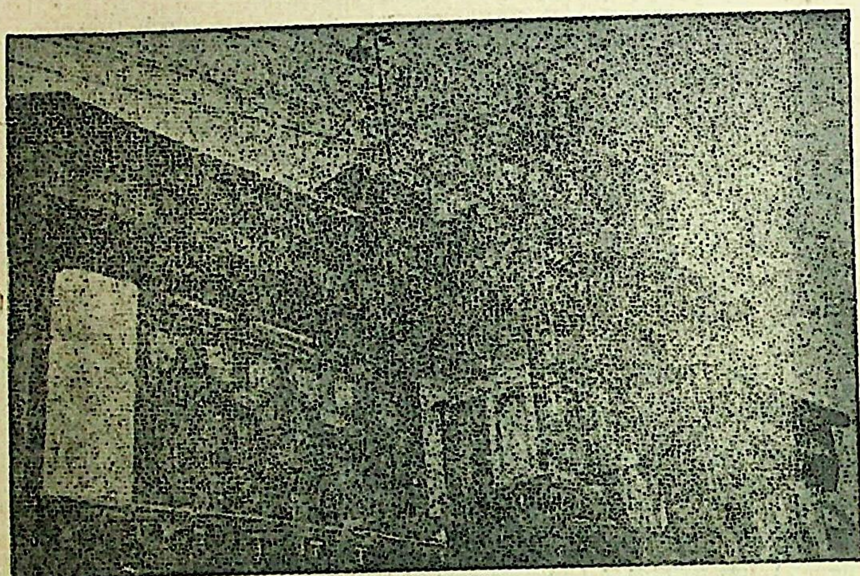
श्री बद्रीनाथ का महात्म

उत्तराखण्ड की यात्रा में श्री बद्रीनाथ की यात्रा एक महत्वपूर्ण यात्रा है। यह धाम विशाल पर्वत शृंखलाओं के बीच भगवती अलकनन्दा के तट पर समतल स्थल पर एक छोटे से कस्बे के रूप में बसा हुआ है। वहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही सुन्दर एवं हृदयग्राही है। बद्रीनाथ पुरी में बद्री विशाल का प्राचीन मन्दिर है। जिसका मुख्य द्वार ४५ फिट ऊंचा है जो अत्यन्त ही रमणीक एवं दर्शनीय है। मन्दिर में प्रवेश करते ही चित्त को एक अनोखी शांति प्राप्त होती है। व्यक्ति का मन अन्य सांसारिक समस्याओं की ओर न जाकर आध्यात्मिकता की ओर आकृष्ट होने लगता

है। बद्रीधाम का विशाल मन्दिर अन्य और मन्दिरों में अपना अलग ही माहात्म्य रखता है।

पट खुलने तथा यात्रा का समय

श्री बद्रीनारायण धाम के पट प्राय; वैसाख सुदी पंचमी से पूर्णिमा के अन्दर ही खुल जाते हैं अर्थात १५ मई से ४ या ६ दिन आगे या पीछे खुलते हैं। उसी समय इस पवित्र धाम की यात्रा करने का उचित अवसर होता है।



श्री बद्रीनाथ जी का मन्दिर

यात्रा का उपयोगी सामान

श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा मोटर मार्ग बन जाने से सुगम हो गई है परन्तु फिर भी इस यात्रा पर जाने वालों के लिए नीचे लिखा सामान अपनेसाथ ले जाना चाहिए—

दो ऊनी कम्बल ओढ़ने विछाने के लिए, पहनने वाले वस्त्र व तौलिया आदि, एक जोड़ी ऊनी पट्टी, पांव पर लपेटने के लिए, एक लम्बी बांस की लाठी लोहे के वल्लम वाली, एक जोड़ी जूता मुलायम रवड़ के तलों का, छाता, मोमी कपड़ा, लालटेन व मोमवत्ती, साबुन दोनो तरह के, एक छोटी बाल्टी, लोटा व गिलास, कुछ सूखे मेवें, कुछ आवश्यक औषधियां।

बोझा उठाने वाले कुलियों की मजदूरी

(१) २० किलो तक २ रु० ५० पैसे प्रति दिन या २५ पैसे प्रति मील।
(२) ३० किलो तक ३ रु० प्रतिदिन या ३१ पैसे प्रति मील।

कंडी की मजदूरी

(१) ५० किलो तक ५ रु० ५० पैसे प्रति कंडी की सवारी प्रति दिन।

(२) ५० किलो से अधिक वजन होने पर ६ रु० ५० पैसे प्रति कंडी।

डांडी की मजदूरी

६ कुली वाली का ३ रु० प्रति कुली प्रति दिन और ४ कुली वाली का ४ रु० प्रति कुली प्रति दिन, किन्तु डांडी छोड़ कर ५० किलो से अधिक वजन न हो। इससे ऊपर प्रति १० किलो तक २ रु० डांडी प्रति दिन अधिक लगेगा, यात्री का १० किलो तक सामान सवारी के साथ मुफ्त जायेगा।

घोड़े की मजदूरी

एक खच्चर या घोड़ा जो दो मन सामान ले जायेगा ७ रु० प्रति दिन या ७५ पैसे प्रति मील की दर से, प्रत्येक पड़ाव १० मील का होता है।

श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा—(हरिद्वार से आरम्भ)

हरिद्वार:—श्री बद्रीनाथ की यात्रा हरिद्वार से आरम्भ होती है। हरिद्वार में ही उत्तराखण्ड की यात्रा निर्विघ्नता से समाप्त होने के लिये प्रार्थना करके यात्रा के लिये प्रस्थान करना चाहिए।

स्थित:—हरिद्वार उर्फ मायापुरी उत्तर प्रदेश के सहारन पुर जिले में एन० आर रेलवे की लक्सर से देहरादून लाइन पर लक्सर से २८ किलो मीटर की दूरी पर है।

इस पवित्र स्थान पर ठहरने के लिये ये धर्मशालायें हैं:—

सूरज मल शिव प्रसाद झुंझनू वालों की धर्मशाला (अपर बाजार), कपूरथला की धर्मशाला, सदासुख गम्भीर चन्द्र बीकानेर वालों की धर्मशाला, पंचायती धर्मशाला (स्टेशन के पास), करोड़ी मल की धर्मशाला, खुशी राम राम गोपाल की धर्मशाला विनायक मिश्र की धर्मशाला, जयराम दास की धर्मशाला, भोला गिरी की धर्मशाला, गौरी सूरजमल रूईया की धर्मशाला (कनखल), मोती लाल बन्शी लाल नृसिंह भवन (राम जी, घाट पर), मुरली मल की धर्मशाला (रेलवे रोड पर), मुरली धर की धर्मशाला, चन्डी याँ राम बेड़ा मल सिन्धी की धर्मशाला, भीखा मल मुसद्दी लाल की धर्मशाला, देवी [illegible]त दयाल सुख दयाल की धर्मशाला (नृसिहं भवन के पास), रावल पिण्डी वालों की धर्मशाला, आर्य भवन।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, हर की पैड़ी, चण्डी मन्दिर, मन्सा देवी का मन्दिर, भीम गोड़ा, बिरला मन्दिर, गुरुकुल विश्व विद्यालय, शिवजी का मन्दिर, कनखल में दक्ष प्रजापति का मन्दिर, सती कुण्ड, विश्वेश्वर महादेव का मन्दिर, नील धारा, गऊ घाट, कुशावर्त घाट, श्रवण नाथ जी का मन्दिर, विष्णु घाट, सप्त धारा, मुनी की रेती, गुरुकुल महा विद्यालय ज्वाला पुर, कन्या गुरुकुल कनखल, आर्य वान प्रस्थाश्रम, हैवी इलैक्ट्रिक का कारखाना आदि हैं। स्वर्ग आश्रम, इसमें ही महेश आश्रम है।

बैंक—स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, ओरियन्टल बैंक, बरेली कारपोरेशन बैंक।

उत्पादित वस्तुयें—मूंजी, धान,वासमती।

ऋषिकेश—(हरिद्वार से ऋषिकेश २५ कि० मी०)

स्थित—ऋषिकेश उत्तर प्रदेश के जिला देहरादून में एन० आर० रेलवे की हरिद्वार ऋषिकेश लाइन पर हरिद्वार से २५ कि० मी० व देहरादून से २७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है और गंगा जी का प्रथम स्नान स्थल माना जाता है।

विश्राम स्थल—ऋषिकेश में ठहरने के लिये निम्न धर्मशालायें हैं—(१) खुर्जा वालों की धर्मशाला (२) बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला (३) रामकृष्ण व्रज मोहन लाल कानपुर वालों की धर्मशाला (४) रघुनाथ जी की धर्मशाला, (५) बाबा काली कमली वालों की नई बिल्डिंग।

दर्शनीय स्थल—ऋषिकेश में आर्य समाज मन्दिर, स्वर्ग आश्रम, गीता भवन भरत जी का मन्दिर, परमार्थ निकेतन, रघुनाथ जी का मन्दिर, त्रिवेणी घाट, साधू समाज मन्दिर, योग निकेतन, शिवानन्द आश्रम आदि देखने योग्य हैं लक्ष्मन झूले वाला पुल तो अत्यन्त ही सुन्दर है।

बैंक—ऋषिकेश में स्टेट बैंक, नेशनल बैंक आफ लाहौर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—आलू, अदरक, ऊन, रायदाना, लकड़ी, सोपस्टोन, जड़ी-बूटी आदि वस्तुयें उत्पन्न होती हैं।

देवप्रयाग—(ऋषिकेश से देव प्रयाग ७१ कि० मी० है)

स्थित—देव प्रयाग समुद्र सतह से १७०० फीट की ऊँचाई पर अलकनन्दा और भगीरथी जी के संगम पर बसा हुआ है। यह एक छोटा सा कस्बा है यहाँ प्रायः सभी आवश्यक वस्तुयें मिल जाती हैं। देव प्रयाग के लिये ऋषिकेश से लक्ष्मन झूला होती हुई एक सड़क जाती है और यहीं सड़क श्री बद्रीनाथ को जाती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला, वन विश्राम आश्रम व सार्वजनिक निरीक्षण भवन ठहरने के स्थान हैं। संगम पर हरि-कुण्ड में स्नान व दान आदि किया जाता है।

दर्शनीय स्थल—यहां श्री रघुनाथ जी की श्याम वर्ण की विशाल दर्शनीय मूर्ति है। स्थान अत्यन्त रमणीक है। तथा संगम की शोभा अत्यन्त हृदय-ग्राही एवं मनोरंजक प्रतीत होती है। गंगोत्री से आनेवाली धारा और अलकनन्दा से आने वाली धारा का संगम दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त प्टेश्वरी, देवी, आदेश्वरी देवी, धनेश्वर, बालेश्वर, वेदशाला, भरत मन्दिर, तथा भगवान राम जी की तपस्या का स्थान भी देखने योग्य है।

रुद्रप्रयाग—(देव प्रयाग से रुद्रप्रयाग ६० कि०मी० है)

स्थित—रुद्रप्रयाग जिला चमोली में देवप्रयाग से ६० कि० मी० और ऋषिकेश १३५ कि० मी० की दूरी पर, समुद्रतल से २००० फुट की ऊंचाई पर, मन्दाकिनी और अलकनन्दा के संगम पर बसा हुआ है। यहीं से एक रास्ता श्री बद्रीनाथ जी को

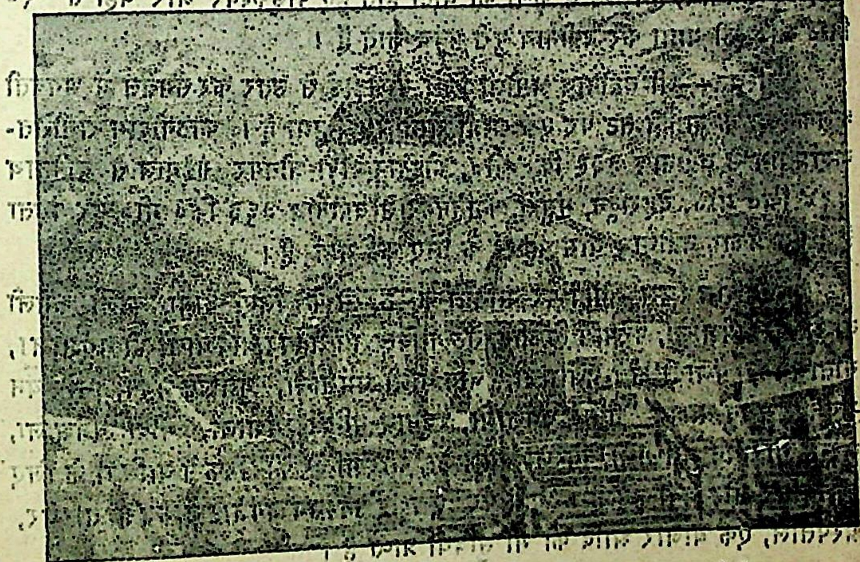
चला गया है और दूसरा रास्ता श्री केदारनाथ जी को चला गया है। रूद्रप्रयाग से बद्रीनाथ १४२ कि० मी० और केदारनाथ ७७ कि० मी० की दूरी पर हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला, डाक बंगला व बद्रीनाथ कमेटी मन्दिर की धर्मशालाएं हैं जिसमें हजारों यात्री ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—रूद्रप्रयाग में मन्दाकिनी अलकनन्दा से मिलती है, रूद्रनाथ जी का मन्दिर है, यहां पर मन्दाकिनी और अलकनन्दा का संगम है जो देखने योग्य है।

श्री केदारनाथ जी की यात्रा (रूद्रप्रयाग से केदारनाथ ७७ कि० मी० है)

स्थिति—श्री केदारनाथ जी जिला चमोली में समुद्रतल से ११,७५३ फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां पर पुरी केदारनाथ जी का मन्दिर है जो पाण्डवों का बनवाया हुआ है। केदार नाथ में शीत अधिक होने के कारण यात्री सुबह को केदार-नाथ जाकर शाम को नीचे रामबाड़ा वापिस आजाते हैं।



श्री केदारनाथ जी का मन्दिर

यात्रा का मार्ग—श्री केदारनाथ जी की यात्रा रूद्रप्रयाग से इस प्रकार आरम्भ होती है—रूद्रप्रयाग से ५ मील पर छतौली, छतौली से २ मील मठ, मठ से १ मील रामपुर, रामपुर से ४ मील पर अगस्तमुनि, अगस्तमुनि से आधा मील पर छोटा नारायण का मन्दिर, इससे आगे १½ मील पर सौड़ी, सौड़ी से २ मील चन्द्रपुरी, चन्द्रपुरी से २½ मील पर भीरी, भीरी से ३½ मील कुण्ड, कुण्ड से २½ मील पर शिवजी का मन्दिर है यहां से २ मील पर ऊखीमठ है। यहां से एक रास्ता

बद्रीनाथ को जाता है। ऊखीमठ से नाला, नारायण कोटी, व्योग चट्टी, मैखड़ा, फाटा, रामपुर, त्रियुगीनारायण, सोमद्वारा, गौरी कुण्ड भीम सेन शिला और रामबाड़ा होते हुए केदारनाथ पहुंच जाते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर पांडवों का बनवाया हुआ पुरी के केदारनाथ जी का सुन्दर मन्दिर देखने योग्य है। यहां से आधे मील नीचे वृद्ध बद्री का प्राचीन स्थान है। केदारनाथ जी के मन्दिर में यात्री पूजा करके पिण्डी का आलिंगन करते हैं।

श्री बद्रीनाथयात्रा का मार्ग—रूद्रप्रयाग से १४२ कि मी० श्री बद्रीनाथ धाम है जो यात्री केदारनाथ जाकर बद्रीनाथ जाते हैं उनको केदारनाथ से वापिस ऊखीमठ लौटना पड़ता है और एक मार्ग ऊखीमठ से कन्या चट्टी, ग्वालियर बगड़ पोथीवासा, वनिया कुण्ड, चोपता चट्टी, तुगंनाथ, पांगरवासा, मण्डल चट्टी, गोपेश्वर होता हुआ ज़िला चमोली पहुंच जाता है यहां से बद्रीनाथ ७७ कि० मी० शेष रह जाता है। चमोली से बद्रीनाथ तक बस जाती है। जो यात्री पैदल जाना चाहते हैं वे चमोली से जोशीमठ, विष्णुप्रयाग, हेमकुण्ड व फूलों की घाटी होते हुए पांडुकेश्वर और यहां से २० कि० मी० की यात्रा कर बद्रीनाथ पुरी पहुंच जाते हैं।

स्थित—श्री बद्रीनाथ चमोली जिले में चढ़ाई से उतर कर समतल में भगवती अलकनन्दा के दाहिने तट पर एक कस्वा जैसा बसा हुआ है। काठगोदाम रानीखेत-कर्णप्रयाग से बद्रीनाथ ३३९ कि० मी०, कोटद्वार-पौड़ी-श्रीनगर गढ़वाल से बद्रीनाथ ३१४ कि० मी०, देहरादून, मंसूरी, कीर्तिनगर से बद्रीनाथ ३६३ कि० मी० दूर पड़ता है। इस प्रकार बद्रीनाथ धाम पहुंचने के लिए कई मार्ग हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए बावा काली कमली वालों की धर्मशाला, परमार्थ निकेतन, सेठ गोविन्ददास अहमदाबाद वालों की धर्मशाला, गीताभवन, पंजाबी क्षेत्र धर्मशाला, चांद वाली धर्मशाला, गुजरात भवन, नारायन भवन, भजन आश्रम, नैपाल धर्मशाला, रघुनाथ मन्दिर धर्मशाला, मोदी धर्मशाला, लक्ष्मी नारायन धर्मशाला, बिरला धर्मशाला, और मन्दिर की तरफ से यात्रियों के लिए किराये पर सीट बनी हुई है। यहां पर एक इंसपेक्शन बगंला, डाकघर, तारघर, अस्पताल, एक बाजार आदि की भी सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—श्री बद्रीनाथ पुरी में श्री बद्री विशाल का प्राचीन मन्दिर है जिसका ४५ फीट ऊंचा मुख्य द्वार है, अत्यन्त सुन्दर देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त ५ कुण्ड, लक्ष्मी जी का मन्दिर, गोपाल जी का मन्दिर, पंचतीर्थ ऋषि गंगा नारद कुण्ड, गीता मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

खुलने का समय—बद्रीनाथ जी मार्ग ६ माह बन्द रहता है और ६ माह खुला रहता है। लगभग ६ मई को खुल जाता है और दीपावली पर बन्द हो जाता है :

बैंक—श्री बद्रीनाथ में पंजाब नेशनल बैंक है।

मन्दिर दर्शन—श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर में सामने ही बद्रीविशाल श्यामल

स्वरूप में बहुमूल्य वस्त्राभूषण एवं विचित्र मुकुट धारण किये सुशोभित हो रहे हैं। उनके दाहिने ओर कुवरे और गणेश जी, बाईं ओर श्री लक्ष्मी जी तथा नर नारायण हैं। मन्दिर के पीछे एक धर्मशिला है। बाईं ओर कुण्ड है, पूर्व के मैदान में गरूड़ की पाषाण मूर्ति है। मन्दिर के नीचे तप्त कुण्ड है, पास ही में प्रहलाद धारा नाम की गुनगुने पानी की धारा है, उसके पास शीतल धारा है, वहां पर नारदकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड, गौरी कुण्ड, व सूर्यकुण्ड, व गर्म जल के कुण्ड हैं। समस्त पुरी देखने योग्य है।

मन्दिर प्रबन्ध—मन्दिर श्री बद्रीनाथ की पूजा आदि स्वामी शंकराचार्य की इच्छानुसार दक्षिण भारत के नम्बूद्री जाति के ब्राह्मण किया करते है जिन्हे रावल कहते हैं। सन् १८९९ ई० में मन्दिर की पूजा व प्रबन्ध का भार सरकार ने रावल को सौंपा। ये रावल मन्दिर की पूजा के योग्य सिद्ध नहीं हुए अत; हिन्दू जनता ने निरंतर आन्दोलन करके सन् १९३९ में 'श्री बद्रीनाथ मन्दिर कानून' बनवाया। मन्दिर के प्रवन्ध के लिए १२ व्यक्तियों की एक कमैटी तय कर दी गई। उसका अध्यक्ष उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से मनोनीत होता है और सदस्यगण: उ० प्र० विधान सभा व विधान परिषद के टिहरी गढ़वाल की जिला परिषद के और अन्य सरकार द्वारा मनोनीत होते है।

अन्य—श्री बद्रीनाथ मन्दिर में बद्रीनाथ जी की वर्तमान मूर्ति पौराणिक काल की वही प्राचीन मूर्ति है जिसको नारद जी पूजते थे। मन्दिर पर जो सोने का कलश है वह इन्दौर की प्रसिद्ध रानी अहिल्याबाई का चढ़ाया हुआ बतलाते हैं। मंदिर के प्रसाद वितरण में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं माना जाता है।

संक्षिप्त परिचय—बद्रीनाथ जी के अन्दर पट बन्द होने के बाद ६ महीने तक दीपक जलता रहता है। पट खुलने पर प्रत्येक यात्री को दर्शन होते है। तथा दीपक जला मिलता है।

हेमकुण्ड—गोविंद घाट से पुल पार करके १५ कि० मी० आगे घांगरिया स्थान है। यहां से एक मार्ग फूलों की घाटी को चला गया है और दूसरा ५ कि मी० की चढ़ाई चढ़ने पर १५२०० फीट की ऊंचाई पर हेमकुण्ड नाम का सिक्खों का तीर्थ स्थान है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए डाक बंगला है।

दर्शनीय स्थल—हेमकुण्ड सिक्खों का एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। यहां गुरू गोविंद सिंह जी ने पूर्व जन्म में तपस्या की थी। यहां पर चारों ओर बर्फ के सुन्दर पहाड़ है, स्वर्गीय स्थान है, देखने योग्य है। एक बार हेमकुण्ड (बर्फ के सरोवर) में स्नान करने के पश्चात बहुत आनन्द प्राप्त होता है।

विशेष—कहते है कि अत्याचारी मुस्लिम राजा औरगंजेब जब भारत पर

राज्य कर रहा था तो उसे यहां कुछ ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त हुई और उसने ही दूसरा जन्म लेकर (सिक्ख) पंथ चलाया।

यमुनोत्री गंगोत्री यात्रा—(ऋषिकेश से देव प्रयाग होकर यमुनोत्री १५२ मील है)

देव प्रयाग से अलकनन्दा भागीरिथी को पार करके किनारे-किनारे यमुनोत्री को मार्ग जाता है। देव प्रयाग से खर्सोड़ा, कोटेश्वर होते हुए टिहरी गढ़वाल पहुंचते हैं।

टिहरी गढ़वाल

स्थित—यह भगीरथी और भिलंगना के संगम पर समुद्रतल से २६०० फिट की ऊँचाई पर महराजा साहब सुदर्शन शाह जी द्वारा बसाई हुई अत्यन्त रमणीक राजधानी है। यहां श्री बद्रीनाथ जी और श्री केदरनाथ जी के विशाल मन्दिर हैं। यह पहाड़ी और बर्फीला क्षेत्र है।

विश्राम स्थल—टिहरीगढ़वाल में गीताभवन यात्रियों के ठहरने का अच्छा स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, बद्रीनाथ मन्दिर, केदारनाथ मन्दिर, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, रघुनाथ मन्दिर, सत्येश्वर महादेव का मन्दिर, राजराजेश्वरी मन्दिर, काली माता का मन्दिर, शीतला देवी का मन्दिर, मट्टूका महादेव का मन्दिर एवं अन्य अनेकों प्राचीन मन्दिर देखने योग्य हैं।

विशेष—भागीरिथी और भिलंगना के संगम पर स्वामी रामतीर्थ ने तपस्या की थी सन्यास लिया था और फिर जल समाधि लेकर अपना शरीर त्याग दिया था। इसलिये इस स्थान पर स्वामी रामतीर्थ का स्मारक 'वेदान्त विद्यालय' के रूप में बनाया जा रहा है जो सन् १९७३ तक बन कर तैयार हो जायगा। अभी छोटे स्मारक के रूप में एक स्तूप "दीप स्तम्भ" है।

यमुनोत्री

स्थित—टिहरी से धरासू और धरासू से गंगानी होते हुए यमुनोत्री पहुंचते हैं। टिहरी से धरासू ४३ कि० मी०, धरासू से गंगानी ७७ कि० मी० और गंगानी से यमुनोत्री ३७ कि० मी० की दूरी पर है यमुनोत्री समुद्रतल से १०,००० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां पर यमुना जी का मन्दिर है।

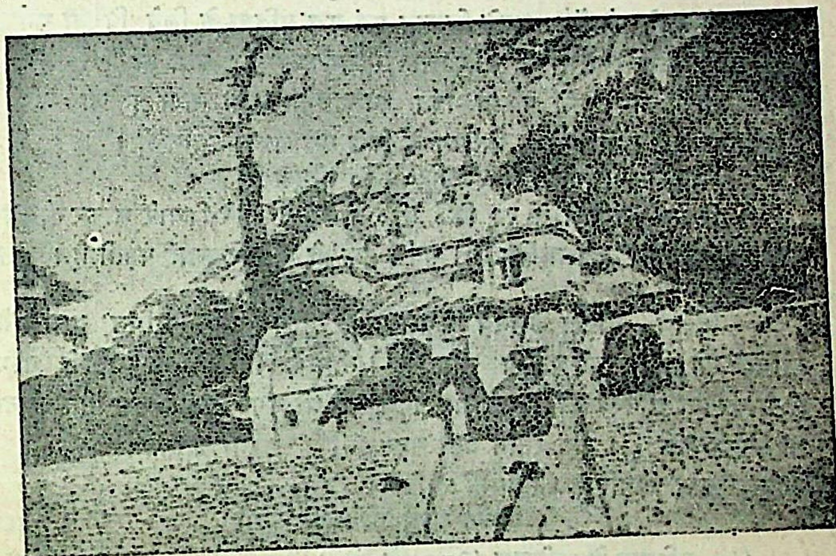
विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये यहां चुनुभाई माधोलाल जी अहमदाबाद निवासी जी की धर्मशाला और लाला रघुनन्दन जी मुरादाबाद वालों की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर ईश्वर की विचित्रता का ध्यान सहसा हो जाता है, कि एक ओर यमुना मय्या की शीतल धारा बह रही है और दूसरी ओर गर्म जल के स्रोत बहते हैं। यहां यमुना जी का मन्दिर है। यह अत्यन्त रमणीक एवं दर्शनीय स्थान है।

गंगोत्री—(यमुनोत्री से गंगोत्री १६० कि० मी० है)

स्थित—उत्तर प्रदेश के उत्तर काशी जिले में यमुनोत्री से १६० कि० मी० और हरिद्वार से २१० कि० मी० की दूरी पर गंगोत्री स्थित है। हरिद्वार से सीधा मोटर मार्ग है। उत्तर काशी से तो गंगोत्री केवल ५ कि० मी० ही है।

विश्राम स्थल—यहा पर यात्रियों के विश्राम के लिये बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला है।



गंगोत्री मन्दिर

दर्शनीय स्थल—यहां पर भागीरथी जी का विशाल मन्दिर, पास में गौरी कुण्ड व देवदार का जंगल देखने योग्य हैं। भागारथी मन्दिर में गंगाजी, यमुना जी, सरस्वती जी, लक्ष्मी जी, पार्वती जो एवं अन्नपूर्णा जी की सुन्दर देखने योग्य मूर्तियाँ हैं। पुरी से कुछ नीचे केदार गंगा का संगम है और वहाँ से एक फर्लांग नीचे पर्याप्त ऊँचाई से गंगा जी शिवलिंग पर गिरती हैं जो अत्यन्त ही सुन्दर दृश्य है।

उत्तरकाशी—(गंगोत्री से उत्तर काशी ५ कि० मी० है)

स्थित—उत्तर काशी उत्तर प्रदेश का स्वंय एक ज़िला है। नकोरी चोटी से १० कि० मी० की दूरी पर और गँगोत्री से ५ कि० मी० की दूरी पर यह सुप्रसिद्ध तथा प्राचीन स्थान उत्तरकाशी स्थित है। इस स्थान पर रेलवे का आना जाना नहीं है। यहां केवल बसों का ही मार्ग है। इस स्थल की पैदल यात्रा भी बहुत से यात्री करते हैं।

विश्राम स्थल—उत्तर काशी में कई धर्मशालायें हैं उनमें बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला एवं टिहरी रियासत की धर्मशाला मुख्य हैं। यहां कई क्षेत्र भी यात्रियों के ठहरने के लिये बने हुए हैं।

दर्शनीय स्थल—उत्तर काशी में आर्यसमाज मन्दिर, विश्वनाथ जी का मन्दिर, एकादश रुद्र जी का मन्दिर व अन्य अनेकों सुन्दर मन्दिर हैं। देवासुर संग्राम के समय की छूटी हुई शक्ति अति दर्शनीय है। यहां पर अनेकों पक्के घाट हैं। प्रकृति के सौंदर्य से ओत-प्रोत यहां पर डोडी ताल, गंगोत्री, गोमुख, हरसित तथा यमुनोत्री इत्यादि रमणीक स्थान दर्शनीय हैं।

विशेष—अतीत काल में गंगा तथा यमुना के उद्गम स्थान उत्तर काशी में तीर्थ यात्री आते रहे हैं। उनके विश्राम एवं सुख सुविधा के लिये विरला धर्मशालायें तथा काली कमली वालों की धर्मशालायें स्थान-स्थान पर बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर काशी में पर्यटन भवन का निर्माण हो गया है जो भलि-भांति सुविधाजनक है। यात्रियों के विश्राम के लिये एक अच्छा स्थान है।

गौमुख—(गंगोत्री से २६ कि० मी० गौमुख है)

स्थित—गंगोत्री से २६ कि० मी० गंगा के किनारे-किनारे जाकर गौमुख पहुंच जाते हैं। यह एक बर्फीला क्षेत्र है। सर्वत्र बर्फ ही बर्फ दिखलाई पड़ती है। शीत यहां सबसे अधिक है।

विशेष—गौमुख के लिये केवल पूर्ण स्वस्थ एवं समुचित साधनों से पूर्ण यात्रियों को ही जाना चाहिये साथ में दो तीन के लिये भोजन व ऊनी वस्त्रों का होना अत्यन्त आवश्यक है। यहां पर पहुंच कर श्री गंगा जी का जल पान करना एक महत्वपूर्ण बात है। यहां स्नान बड़ी सावधानी से करना चाहिये। यहां पर रात्रि को न ठहर कर वापिस आ जाना चाहिये।

यात्रा मार्ग की मील सूची

(१) हरिद्वार से बद्रीनाथ (२८८ कि मी०)

	स्थान	दूरी (कि० मी०)	यात्रा का साधन
(१)	हरिद्वार	०	रेल व बस दोनों जाती हैं।
(२)	ऋषिकेश	२२	बस द्वारा
(३)	देव प्रयाग	६९	,,
(४)	श्री नगर	२८	,,
(५)	रुद्र प्रयाग	२७	,,
(६)	कर्ण प्रयाग	३४	,,
(७)	नन्द प्रयाग	२०	,,
(८)	चमोली	१०	,,
(९)	पीपल कोटी	१३	,,
(१०)	जोशी मठ	३५	,,
(११)	पांडुकेश्वर	१३	,,
(१२)	बद्रीनाथ	१७	,,
		२८८	

(२) हरिद्वार से केदारनाथ—(२४० कि० मी०)

	स्थान	दूरी	यात्रा का साधन
(१)	हरिद्वार	०	——
(२)	ऋषिकेश	२४	बस द्वारा
(३)	देव प्रयाग	७१	,,
(४)	श्री नगर	३१	,,
(५)	रुद्र प्रयाग	२९	,,
(६)	अगस्त मुनि	१८	,,
(७)	कुण्ड चट्टी	१६	,,
(८)	गुप्त काशी	४	,,
(९)	नाला चट्टी	२	,,
(१०)	गौरी कुण्ड	३४	पैदल
(११)	बद्रीनाथ	११	,,
		२४०	

(३) केदारनाथ से बद्रीनाथ—(१८० कि० मी०)

	स्थान	दूरी	यात्रा का साधन
(१)	केदारनाथ	०	——
(२)	नालाचट्टी	४६	पैदल
(३)	ऊखीमठ	४	बस द्वारा
(४)	तुन्गनाथ	२४	,,
(५)	चमोली	२८	,,
(६)	पीपल कोटी	१३	,,
(७)	जोशीमठ	३४	,,
(८)	पांडुकेश्वर	१३	,,
(९)	बद्रीनाथ	१८	,,
		१८०	

(४) हरिद्वार से यमुनोत्री—(२६१ कि० मी०)

(१)	हरिद्वार	०	——
(२)	ऋषिकेश	२४	बस व रेल द्वारा
(३)	देव प्रयाग	७१	बस द्वारा
(४)	खरसोला	१६	,,
(५)	टिहरी	३९	,,
(६)	धरासू	३८	,,

(७) डंडाल गाँव	२८	वस द्वारा
(८) गंगानी	७	"
(९) खरसाली	३३	"
(१०) यमुनोत्री	५	"
	२६१	

(५) यमुनोत्री से गंगोत्री—(१५९ कि० मी०

(१) यमुनोत्री	०	पैदल मार्ग
(२) गंगानी	३७	"
(३) सिमली	३	वस द्वारा
(४) नाकोरी	१८	"
(५) उत्तर काशी	१६	"
(६) झाला	६१	"
(७) गंगोत्री	२४	पैदल
	१५९	

जिला अलीगढ़

(अलीगढ़, अतरोली, खैर, नरोरा, विजयगढ़, सासनी, हरदुआगंज, हाथरस)

अलीगढ़—उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० की दिल्ली मुगलसराय लाईन पर देहली से १२६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां शहर में टैक्सी, तागें रक्षा आदि सभी सवारी मिलती है। यहाँ पर मंगलवार को वाजार वन्द रहता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए शंकर धर्मशाला मदार गैट पर जानकी वाई की धर्मशाला दूवे का पाड़ा में, मलूक चन्द की धर्मशाला स्टेशन के पास तथा सेठ रामनारायण की धर्मशाला नगर में है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, संसार भर में प्रसिद्ध तालों की फैक्ट्रियां, धर्म समाज संस्कृत पाठशाला, मुस्लिम विश्वविद्यालय, कासिमपुर पावर हाऊस, पंचायती गौशाला देखने योग्य हैं। इनके अतिरिक्त अलीगढ़ से २० कि० मी० की दूरी पर साधु आश्रम है। वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी का नहर के किनारे सुन्दर आश्रम है। यहां ब्रह्मचारियों को गुरुकुल पद्धति से शिक्षा दी जाती है। यह आश्रम नहर के किनारे पर वसा हुआ है। स्वामी ध्रुवानन्द जी इसी आश्रम की देन थे, आश्रम देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहां पर मटर अलसी सरसों गेहूँ मूंग अरहर उड़द मक्का

बाजरा गुड़ की पैदावार होती है। यहां पर एक सूती कपड़े की मिल है। यहां के ताले, चाकू, तांबे पीतल के वर्तन, दरियां वहुत प्रसिद्ध है।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक, इलाहवाद बैंक, यूनाइटिड कामर्सियल बैंक, व सैंण्ट्रल बैंक हैं।

अतरौली—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में अतरौली उत्तर रेलवे की अलीगढ़ चन्दौसी लाइन पर अलीगढ़ से २९ मील है। यहां शहर में आने-जाने के लिये तांगे व रक्षा की सवारी मिलती हैं। यहाँ आर्य समाज के अच्छे विद्वान पैदा हुए हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए अग्रवाल लोहियों की धर्मशाला व्रह्मपुरी में, एक धर्मशाला खत्री पाड़ी में, ठठेरों की धर्मशाला बाजार में व बारह सैनी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां के दो आर्य समाज मन्दिर एक वेद मन्दिर के नाम से खत्री पाड़ा में और दूसरा आर्य समाज मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध हैं सुन्दर गौशाला है इस नगर के पास छलेश्वर एक गाँव है जहां ऋषि दयानन्द के कर कमलों से स्थापित किया गया आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूँ चना जौ ज्वार बाजरा मक्का की पैदावार होती है तथा यहां के पीतल के वर्तन वहुत प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहां पर यूनियन बैंक हैं।

विशेष—अतरौली में हिन्द साहित्य के विद्वान डा० नरेन्द्र वहुत प्रसिद्ध हैं आपके पिता पं० राजेन्द्र जी आर्य माने हुए आर्य समाज के विद्वान थे।

खैर—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में खैर अलीगढ़ से २५ कि० मी० की री पर एक तहसील व मण्डी के रूप में स्थित है। यहां के लिए रेल नहीं जाती। अलीगढ़ से बसें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए अग्रवाल धर्मशाला गौतम धर्मशाला व जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दाऊजी का मन्दिर नदी के किनारे ला० विष्णु दयाल जी का हनुमान जी व रामजी का मन्दिर 'श्री राष्ट्रीय श्याम गौशाला तथा यहाँ से ३ मील की दूरी पर एक बड़ा मन्दिर जिसमें दाऊ जी व गौतम की विशाल मूर्ति है यहां पर मेला भी लगता है जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूँ चना जौ की अधिक पैदावार होती है।

नरोरा—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में नरोरा राजघाट से ४ मील दूर है। राजघाट तक रेल जाती है वहां से तांगा रक्षा आदि सवारी जाती हैं। यह कलकत्ती नरौरा या राजघाट नरौरा के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह गंगा नदी के किनारे पर बसा हुआ है।

विश्राम स्थल—यहां पर अड्डे के पास एक धर्मशाला यात्रियों को ठहरने के लिए है और २) ५० किराये के हिसाव से सरकारी बंगले भी हैं ये पहले बुक कराने पड़ते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का बांध, स्नान करने के घाट, नदी पर बना नया पुल जो बदायुं को जाता है, रात को प्रतिदिन होने वाली रोशनी तथा अनेकों सुन्दर दृश्य देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूँ चना जौ बाजरा मक्का आदि की पैदावार होती है।

विजय गढ़—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में विजयगढ़ एक छोटे से कस्बे के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये रेल नहीं जाती। मोटर व तांगे जाते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये कस्बे में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ से एक मील दूर वृजहद नामक गाँव है जिसमें दाऊ जी महाराज का मन्दिर देखने योग्य है। उस मन्दिर में श्री दाऊ जी महाराज की बहुत विशाल एवं प्राचीन मूर्ति है जो पास के ताल से निकली थी। कहते हैं कि श्री दाऊ जी जिनको श्रायवश, हथेली में बाल हो गये थे, वे यहाँ आकर गिरे थे।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, चना, जौ, बाजरा और सरसों की पैदावार होती है।

सासनी—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में सासनी उत्तर रेलवे की देहली मुगल सराय लाईन पर देहली से १४७ कि० मी० व अलीगढ़ से २१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्षा व तांगे की सवारी मिलतीं है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिए शहर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, खण्डेलवाल ग्लास वर्कस तथा गौशाला देखने योग्य हैं। यहां का आर्य समाज कन्या गुरूकुल भी देखने योग्य है। इस गुरूकुल में देश के विभिन्न प्रान्तों की कन्याएं शिक्षा ग्रहण करने आती हैं। माता लक्ष्मी देवी तथा श्री नरदेव स्नातक संसद सदस्य की सेवाएं इस संस्था के लिए वरदान स्वरूप रही हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर दाले, मटर, गल्ला आदि की पैदावार होती है। यहाँ के बेर बहुत प्रसिद्ध हैं तथा यहां कांच का मुख्य केन्द्र है।

हरदुआगंज—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हरदुआगंज उत्तर रेलवे की अलीगढ़ बरेली लाईन पर अलीगढ़ से १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में सभी सवारियां मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए मिट्ठनलाल पूसामल की धर्मशाला व मारवाड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर ताला उद्योग, एशिया का सबसे बड़ा आंखो का अस्पताल, आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, श्री दाऊ जी का मन्दिर, महाकाली का मन्दिर, यहां से ५ कि० मी० दूर साधु आश्रम के नाम से प्रसिद्ध आर्य समाज मंदिर और विद्यालय तथा गौशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु--यहां पर गुड़, खांड कपास, गुड़, मटर, गेहूँ, मक्का, रूई, बाजरा आदि की पैदावार होती है।

हाथरस—उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में हाथरस उत्तर रेलवे की आगरा कटिहार लाईन पर आगरे से ५६ कि० मी० व अलीगढ़ से २० मील की दूरी पर एक नगर के रूप में स्थित है। यहां शहर में सभी सवारियां मिलती है। यहाँ के कवि काका हाथरसी बहुत प्रसिद्ध हैं। रविवार की छुट्टी रहती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिए यहाँ लक्ष्मीनारारायण की धर्मशाला सिटी स्टेशन के पास व महेश्वरी धर्मशाला नयागंज में है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मंदिर व किराने की बड़ी मण्डी देखने योग्य है'

उत्पादित्य वस्तु--यहां पर दाल तुवर व अन्य दालें, मटर, गेहूँ, चना, जौ, अरहर, सरसो, मूंग, मोठ, बाजरा, देसी घी, चाकू, सूती कपड़ा की पैदावार होती है तथा यह धार्मिक किताबों का बहुत बड़ा केन्द्र है।

बैंक--यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक व इलाहबाद बैंक है।

जिला अलमोड़ा

(अलमोड़ा, कटारमल, दाराहट, बैजनाथ, रानीखेत)

अलमोड़ा—उत्तर प्रदेश प्रान्त में अलमोड़ा स्वयं एक जिला है। यह काठगोदाम से ८८ कि० मी० की दूरी पर समुद्र सतह से ५२०० फुट की ऊंचाई पर एक पहाड़ी क्षेत्र के रूप में स्थित है। यहां के लिए काठगोदाम स्टेशन से छोटी बसें जाती है। यह १६ वीं शताब्दी में चंद्र नरेशों का मुख्य नगर था। यहां रविवार को बाजार बन्द रहता है।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये टूरिस्ट होटल, अशोका होटल, मानसरोवर होटल, न्यू हिमालय होटल, रंजना होटल, एम्बैसेडर होटल, व ग्रांड होटल हैं।

दर्शनीय स्थल--यहां पर आर्य समाज मंदिर, आर्य अनाथालय, श्री हेमकुण्ड गुरूद्वारा, वगर से ८ मील दूर कषाय, पर्वत पर कौशिक देवी का मंदिर देखने योग्य हैं। इनके अतिरिक्त कुछ स्थल और भी है जैसे सीमा टौला, कालीमठ, मेटीला, चटाई आदि भी देखने योग्य हैं। यह स्थान सूर्य निकलने व सूर्य छिपने के लिए प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तु--यहां पर आलू, अदरक, लकड़ी, लीसा, मोम शहद, हर्र-बहेड़ा, चाय, शिलाजीत, ऊन, जड़ी, बूटियां अधिक पैदा होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, नैनीताल बैंक, अलमोड़ा को-ओपरेटिव बैंक हैं।

कटार मल—उत्तर प्रदेश के अलमोड़ा जिले में कटारमल अलमोड़ा से ९ मील पश्चिम की ओर स्थित है। अलमोड़ा से ७ मील कोसी तक मोटर द्वारा जाते हैं। वहां से पहाड़ पर चढ़ कर कटारमल पहुंचते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर सूर्य मंदिर, जिसमें सूर्य भगवान की मूर्ति ३ फुट ८ इंच ऊंची तथा २ फुट चोड़ी कमल के आसन पर बैठे हुये हैं, देखने योग्य हैं इसके अतिरिक्त प्रधान मंदिर, सूर्यमंदिर का मण्डल जो काफी बड़ा है जिसमें शिव-पार्वती, लक्ष्मीनारायण और नृसिंह आदि की मूर्तियां हैं सभी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर आलू, गेहूँ, जौ आदि की पैदावार होती है।

दाराहट—उत्तर प्रदेश के जिला अलमोड़ा में दाराहट रानीखेत से १३ मील उत्तर की ओर स्थित है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये यहां पर कई होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर मंदिरों के तीन समूह, कचहरी, गूजर देव का मंदिर जो कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है देखने योग्य हैं। अधिकतर मंदिरों में प्रतिमाएं नहीं हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूँ, आलू, जौ, चना सरसों की पैदावार होती है।

बैजनाथ—अलमोड़ा जिले में बैजनाथ अलमोड़ा से ४१ मील है। अलमोड़ा से गरूड़ नगर तक बसे जाती है और वहां से बैजनाथ थोड़ी ही दूर रह जाता है। रक्षा सवारी वहां जाती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में कई धर्मशालायें व कई होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बैजनाथ जी का मुख्य मंदिर जो बैजनाथ सरोवर तट पर है देखने योग्य है। बैजनाथ के मुख्य मंदिर में पार्वती की सुन्दर प्रतिमाएं स्थापित हैं। पार्वती की मूर्ति के आस-पास शिवपार्वती, लक्ष्मी-नारायण, गणेश, सूर्य, आदि की छोटी प्रतिमाएं स्थापित हैं जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर आलू, गेहूँ चना आदि की पैदावार होती है।

रानीखेत—उत्तर प्रदेश के अलमोड़ा जिले में रानीखेत हलद्वानी से ३५ मील की दूरी पर एक पहाड़ी क्षेत्र के रूप में स्थित हैं। यहां रेलवे का प्रवन्ध नहीं है। हलद्वानी व काठगोदाम से यहां के लिए बसें व टैक्सी चलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए टुरिस्ट होटल, हिमालय होटल, अशोक होटल, एवरेस्ट होटल, जनता होटल, स्नोव्यू होटल आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चीड़ के जंगल, फलों के बाग, गोल्फकोर्स, चारों ओर पहाड़ तथा प्राकृतिक दृश्यों के अतिरिक्त बहुत से और स्थान भी देखने योग्य

हैं जैसे—यहां से ६ मील दूर चोभाटिया जहाँ पर सरकारी फलों का बाग है, ८ मील दूर भालूडेम जो मछली पकड़ने का स्थान है, ५ मील ताराखेत जहां गांधी कुटी है, ६ मील दरमोती जो जंगल का क्षेत्र है, ४ मील कालिका जहां काली मंदिर व तालाब है, ३७ मील नैनीताल जो प्रसिद्ध पहाड़ी स्टेशन हैं, २९ मील अलमोड़ा जो पहाड़ी क्षेत्र है, ४८ मील कसौली जहाँ वर्फ के दृश्य देखने योग्य हैं, ७१ मील वागेश्वर जो पिकनिक स्थान है, ८ मील विलेस जहाँ पार्क है, ८ मील मझखल्ली जहां हिमालय के दृश्य है, १० मील सोनी जहां पार्क है, १४ मील खेरना जो मछली पकड़ने की जगह है, १४ मील दाराहट जहां पुराना मन्दिर है, ३३ मील भिकियासेन जो मछली पकड़ने का स्थान है, ३५ कि० मी० शीतलखेत जो पार्क है, ४० कि० मी० सिआही देवी जहां हिमालय के सुन्दर दृश्य हैं, ३० कि० मी० भागोनखान जहां छोटे बाग है, २३कि० मी० मनीला जहाँ हिमालय के सुन्दर दृश्य देखने योग्य है। ये सभी स्थल दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर आलू, अदरक, लीसा, मोम, शहद, लकड़ी, वहेड़ा चाय, शिलाजीत की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर दुर्गा शाह मोहन लालशाह गवर्नमैंट स्टेट बैंक व नैनीताल कोओपरेटिव वैंक हैं।

जिला आजमगढ़

(आजमगढ़, मऊनाथभंजन)

आजमगढ़—उत्तर प्रदेश प्रान्त में आजमगढ़ स्वयं एक जिला है। यह एन. ई. आर. की बलिया-शाहगंज लाइन पर बलिया से १२३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये मारवाड़ी धर्मशाला कटरे में अग्रवाल धर्मशाला व पुरानी तहसील के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, शिवजी का मन्दिर व श्री कृष्ण गौशाला व सनातन धर्म संस्कृत कालिज देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहाँ पर तिलहन, गुड़, खण्डसारी, चीनी, शक्कर, सन, दालें, वस्त्र उद्योग आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

विशेष—यह गल्ले की एक बड़ी मण्डी है। यहाँ खादी का काम अधिक होता है। यहां पर बाजार रविवार को बन्द रहता है।

मऊनाथभंजन—उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में मऊनाथभंजन एन० ई० आर० की भटनी-परहज लाइन पर स्थित है। यह नगर रामसा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहाँ की साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से चार फर्लांग पर एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर छोटे-बड़े पचासों मन्दिर, आर्यसमाज मन्दिर, दारुल उलूम मदरसा, तथा श्री गौशाला मऊ देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहाँ पर अलसी, सन, गुड़, दालें आदि की अधिक पैदावार होती है तथा यहाँ खादी का भी अधिक काम होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक और पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जिला आगरा

(आगरा, फिरोजाबाद, टूडला)

आगरा—उत्तर प्रदेश प्रान्त में आगरा स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० की देहली बम्बई लाईन पर देहली से १६७ कि० मी० पर स्थित है। यह नगर जमुना नदी के किनारे पर बसा है। इसकी नीव महाराज उग्रसैन ने रखी थी जिसके कारण इसका नाम आगरा पड़ा। यहाँ सभी सवारियाँ उपलब्ध हैं। यहां पर वेलन गंज बाजार रविवार को बन्द रहता है। सिवों का बाजार, किनारी बाजार, राज मण्डी सोमवार को बन्द रहती हैं और सदर बाजार मंगलवार को बन्द रहता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए ला० राम किशन दास की धर्मशाला सरावगी फोर्ट स्टेशन के पार, रायबहादुर विश्म्वर नाथ की धर्मशाला सिटी स्टेशन के पास, उत्तम जैन दिगम्वर धर्मशाला राजा की मण्डी स्टेशन के पास अग्रवाल पंचायती धर्मशाला, आनन्दबाई की धर्मशाला वेलन गंज में, बंशीधर राम-प्रसाद टोपी वालों की फोर्ट स्टेशन के पास, और जैन धर्मशाला वेलन गंज जमुना किनारे पर हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से होटल है जैसे आगरा होटल, लारिज होटल, कैन्टोमैन्ट, ग्राउण्ड होटल, गोर्वधन होटल आदि।

दर्शनीय स्थल—ऐतिहासिक दृष्टि से यह नगर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर पांच है। यहां पर ताज महल, फतहपुर सीकरी, पागल खाना, इमाम वाड़ा, जमुना जी का किनारा, जूतों का बाजार, चमड़े का सामान, सिकन्द्रा की मस्जिद, एतमातडुदौला का मकबरा, लाल किला, दयाल बाग, सिक्खों का गुरू-द्वारा, श्री मद्दयानन्द अनाथालय, आगरा विश्वविद्यालय, शीतल नाथ जी का मन्दिर तथा लगभग २० जैन मन्दिर हैं जो सभी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गुड़, खाण्ड, तुवर, मटर, मूंग, चौंला, बाजरा, ज्वार, उड़द, चना, दाल, जीरा, सूती ऊनी कपड़ा, खद्दर, व खेल का सामान तथा चमड़े की वस्तुएं आदि की अधिक पैदावार होती है। संगमरमर की भी सुन्दर वस्तुएं बनती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, सैण्ट्रल बैंक, इलाहबाद बैंक, यूनाइटिड कामर्शियल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, हिन्दुस्तान कामर्शियल बैंक, नेशनल बैंक ऑफ लाहौर आदि बैंक हैं।

फिरोजाबाद—उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में फिरोजाबाद एन० आर० की दिल्ली मुगल सराय लाइन पर देहली से २२१ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां सभी सवारियां उपलब्ध होती है। यहाँ छुट्टी का दिन मंगलवार है।

विश्राम स्थल—यहां पर ला० कुन्जीलाल गिरधारीलाल की धर्मशाला, वैश्यों की धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, मूलचन्द की धर्मशाला, आगरा गेट, लोटनलाल की धर्मशाला हनुमान रोड चोवान धर्मशाला, जट्मल-प्यारे लाल की धर्मशाला मोतीलाल रोड पर, राजा प्यारे लाल की धर्मशाला कोटला रोड पर और दिगम्बर जैन धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, कांच का सामान, मोती सजावट का काम दर्शनीय है। डी० ए० वी० कॉलिज, यहाँ एक अद्भूत ऐतिहासिक जैन मन्दिर जिसमें धर्मशाला व पुस्तकालय भी हैं, पंचायती मन्दिर जिसमें हीरों की एक आठ अंगुल प्रमाण तथा एक प्रतिमा श्री चन्द्रगुप्त स्वामी की स्फटिक मणि से निर्मित विराजमान है। यहाँ पर लगभग ४८ श्वेताम्बर दिगम्बर जैन मन्दिर थे जो निश्चय ही जैन संस्कृति की महत्ता के द्योतक थे, शीतल नाथ का मन्दिर, श्री गऊ जीव रक्षनी सभा आदि वस्तुएं देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर सरसों, अरहर, मटर, की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहबाद बैक, रानी वाला बैंक, कामर्शियल सिन्डी केट बैंक, हिन्द कॉमर्स बैंक, व यू० पी० इन्डस्ट्रीज बैंक है।

टुण्डला—उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में टूण्डला एन० आर० की दिल्ली कानपुर लाईन पर स्थित है। यहां से आगरा २४ कि० मी० रह जाता है और आगरे के लिये रेल जाती है। सभी सवारियां यहां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए एक धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—यहां का सबसे बड़ा रेलवे का जंकशन है जो देखने के योग्य है। इस के अतिरिक्त आर्य समाज मन्दिर व अन्य मन्दिर भी देखने योग्य हैं।

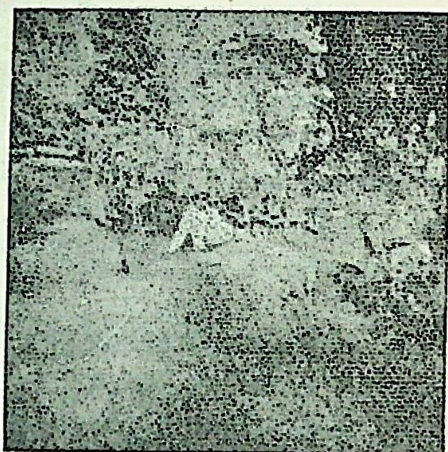
उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूँ, चना, मटर, लाही, अरहर की पैदावार होती है।

जिला इलाहाबाद

(इलाहाबाद नैंनी फूलपुर श्रगवेरपुर)

इलाहाबाद—उत्तर प्रदेश प्रान्य में इलाहबाद स्वयं एक जिला है। यह देहली मुगलसराय लाईन पर देहली से ६२७ कि० मी० की दूरी पर गंगा यमुना

सरस्वती नदी के सुन्दर संगम पर बसा हुआ है। यह संगम त्रिवेणी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां सिटी बस, रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि सवारी मिलती हैं।



(आनन्द भवन बाग)

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए लक्ष्मीबाई की धर्मशाला चौक में, हलवाई वाली धर्मशाला, जैन धर्मशाला, बिहारी लाल कुंजीलाल सिहांनियां की धर्मशाला जंकशन के पास, तेजपाल गोकुल दास की धर्मशाला यमुना पुल के पास, बाबू वंशीधर गोपाल रस्तौगी की धर्मशाला दारागंज, चमेली देवी की धर्मशाला, कैलाश होटल, दुलारी देवी की धर्मशाला घंटाघर के पास, वृद्ध सैन की धर्मशाला, बारनैट होटल १४ एम० जी० मार्ग फोन नं० २२३१, रायल होटल २४, साउथ रोड़ सिविल लाईन फोन नं०२५२०, ३८४८, २८७३, जैन धर्मशाला स्टेशन से २ कि मी० दूर चौक पर अन्नकूट होटल चौक फोन नं० ८५०७३, अशोक होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट, फोन नं० ३३६२, डीव्टी रैस्टोरेन्ट एण्ड होटल फोन नं० ३४६०, नान किंग बार एण्ड रैस्टोरेन्ट फोन नं० ३७६० प्रभात होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट कर्मल गंज फोन नं० २१४६, प्रभात होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट फोन नं० ३२०५, फिनारो होटल रैस्टोरेण्ट फोन नं० २४५२, बंगाल होटल फो० नं० ३५३६, मटठ रैस्टोरेन्ट फोन नं० ४१७३, मुस्ताक अहमद मुस्लिम होटल फोन नं० २५८५, राक्सी होटल फोन नं० २८६१, राज होटल एण्ड रैस्टोरेण्ट फोन नं० ३६८४, लक्ष्मी होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट फोन नं० २०५६, सिन्ध बाम्बे होटल फोन नं० ३१०४ स्टैन्डर्ड होटल फौन नं० ८५२८, आदि आदि धर्मशालाएं एवं होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, संगम त्रिवेणी, आनन्द भवन, हनुमान जी का मन्दिर, प्रयाग (दारागंज) हाईकोर्ट, संग्रहालय, विश्व विद्यालय, बाजार सिविल लाइन चौक, खुसरू पार्क, जैन मन्दिर, किला, अक्षय वट नाम का वृक्ष इसी वृक्ष के नीचे भगवान आदिनाथ ने तप किया था, दस्तकारी का अच्छा काम, गऊशाला, तथा पास में ही दुर्वा ा आश्रम, लाक्षाग्रह, सीता मढ़ी, ऋषियन, राजापुर आदि तीर्थ स्थान हैं। ये सभी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूँ, चना, जौ, सरसों, सूती व ऊनी कपड़ा तथा कांच का सामान तैयार होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, व यूनाइटिड कार्मशियल बैंक हैं।

विशेष—यहाँ पर रविवार को बाजार बन्द रहता है और कटरा मंगलवार को बन्द रहता है। यहा पर ६ वर्ष बाद अर्ध कुम्भ का मेला लगता है और १२ वर्ष बाद कुम्भ का मेला होता है। लगभग ४० लाख यात्री यहां आते है। यहां पर 'कला प्रेस' द्वारा आर्य समाज के महान लेखक पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने राष्ट्र को सुन्दर साहित्य तैयार करके दिया है। यहाँ पर ५ संस्कृत पाठशालाएं भी हैं, धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला, महानिर्वाण वेद विद्यालय, सौदामिनी संस्कृत विद्यालय, सरयू पारीण ब्राह्मण संस्कृत पाठशाला और शिव शर्मा संस्कृत पाठशाला।

नैनी—उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में नैनी उत्तर रेलवे की दिल्ली मुगल सराय लाईन पर इलाहबाद से ८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ तांगे, रिक्शा, व टैक्सी आदि मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये विहारीलाल कुन्जीलाल सिंहानियाँ की धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, सैण्ट्रल जेल, कांच का कारखाना, आयुर्वेदिक दवाओं का विशाल निर्माण केन्द्र, शुगर मिल आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूं, चना, जौ, बाजरा, मक्का की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक व स्टेट बैंक हैं।

फूलपुर—उत्तर प्रदेश के इलाहबाद जिले में फूलपुर एन० ई० आर की इलाहाबाद जौनपुर लाईन पर इलाहबाद से ३७ कि० मी० दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए एक धर्मशाला नगर में तथा एक धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनी स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व गऊशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर चीनी, शक्कर, खाड़, गुड़, सन आदि की पैदावार होती है।

शृंगवेरपुर—उत्तर प्रदेश के इलाहबाद जिले में यह इलाहबाद से ४६ कि० मी० की दूरी पर, रामचौरा रोड स्टेशन से ५ कि० मी० पर स्थित है। यहां रक्शा व तांगा सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर राम मन्दिर तथा यह भगवान राम का वनवास स्थल है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहा पर गेहं, जौं, चना, बाजरा, ज्वार आदि की पैदावार होती है।

विशेष—यहीं पर भगवान राम ने वनवास जाते हुए निषाद राज का आग्रह मानकर रात्रि में विश्राम किया था।

जिला इटावा

(इटावा, अजीतमल, औरैया, जसवन्त नगर, फफूंद, बेकबर, भर्थना)

इटावा—उत्तर प्रदेश प्रान्त में इटावा स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० की दिल्ली मुगलसराय लाईन पर देहली से २९६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये सभी सवारियां है। यहां रविवार को बाजार बन्द रहता है। यह एक अच्छी मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए बद्रीदास की धर्मशाला पुराना शहर, डिप्टी शादीलाल जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, मुसम्मात चम्पा की धर्मशाला रायगंज में, जैन धर्मशाला गाड़ीपुरा, ख्यालीराम की धर्मशाला पक्का बाग, शीतल प्रसाद की धर्मशाला बाजार में, पुरवियों की धर्मशाला स्टेशन पर हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मंदिर, श्रीमती विचार सभा संस्कृत पाठशाला, श्री राम संस्कृत आयुर्वेदिक विद्यालय, मुरलीधर संस्कृत पाठशाला, श्रीराम पाठशाला वसुविद्यालय संस्कृत पाठशाला देखने योग्य है।

उत्पादितवस्तु—यहाँ पर धान, चावल, दाले, घी, सरसों तिलहन, मटर, मूंगफली, गुड़, सूती कपड़ा, लकड़ी का सामान तथा खादी के काम की अधिकताहै तथा पैदावार है। यह एक व्यापारिक केन्द्र है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहबाद बैंक और जिला सहकारी बैंक हैं।

अजीतमल—उत्तर प्रदेश के जिला इटावा में अजीतमल, इटावा-कानपुर रोड पर इटावा से ४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के लिये इटावा से रोड-वेज की बसें चलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये शहर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गोबर का प्रसिद्ध गैस प्लान्ट, आर्यसमाज मन्दिर, शाही तालाब, पी० डब्लू० डी० का बंगला, तीन पुराने मन्दिर जिनमें प्राचीन मूर्ति हैं, सर्पयज्ञ यहां से कुछ ही दूरी पर राजा परिक्षत ने किया था, रेशम विभाग जिसमें रेशम कीड़े तैयार करते हैं, दो गेट जो पुराने समय के हैं देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, चना, जौं, ज्वार, बाजरा, तम्बाकू आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया है।

औरैया—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में औरैया एन० आर० की देहली मुगल-

सराय लाईन पर फंफूद रेलवे स्टेशन से २१ कि० मी० की दूरी पर है। यहां रेलवे लाईन नहीं जाती। यहाँ रेलवे आउट ऐजेन्सी है। यहां रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है। एक संस्कृत पाठशाला भी है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर तिलहन, चावल, गल्ला, मूंग, गुड़, लाही, तेल, सरसों, घी, कपास, अरहर, उड़द, मटर, की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व इलाहाबाद बैंक हैं।

जसवन्त नगर—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में जसवन्त नगर देहली मुगलसराय लाईन पर देहली से २८० कि० मी० की दूरी पर एक छोटे से कस्बे के रूप में स्थित है। रक्षा तांगा आदि सवारी यहां चलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिवजी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहुं, मटर, लाही, अरहर, धान, बाजरा, ज्वार, गुड़, उड़द, मूंग, घी आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

फफूद—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में फफूंद एन० आर० की फफूद-इटावा लाईन पर इटावा से ५७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। फफूद कस्बा स्टेशन से ८ कि० मी० की दूरी पर हैं। वहां रक्षा व तांगा चलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूं, चना, जो, मक्का की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव बैंक है।

बेकर—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में बेकर इटावा-कानपुर रोड़वेज लाईन इटावा से २४ कि० मी० व भर्थना से १३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां तांगा, रिक्शा चलती हैं। यहां लकड़ी का मुख्य काम होता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में एक सराय है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शिवजी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहुं, चना, जौ, मकई की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर एक जिला सहकारी बैंक है।

भर्थना—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में भर्थना देहली-मुगलसराय लाईन पर देहली से ३१६ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सब सवारियां मिलती है।

विश्राम स्थाल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए महेश्वरी धर्मशाला, सेठ प्रभुदयाल की धर्मशाला, व बालू गंज में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहुं, चना, मटर, अरहर, लाही, अगटी, ज्वार, बाजरा, मूंग, उड़द, चावल आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

'जिला उन्नाव'

(उन्नाव, बागंरमऊ)

उन्नाव—उत्तर प्रदेश प्रान्त में उन्नाव स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० की कानपुर-लखनऊ लाईन पर कानपुर से १८ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल-यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए ला० सोहनलाल अग्रवाल की धर्मशाला है।

दर्शनीनीय स्थल—यहां पर ७३ वर्ष पुराना आर्य समाज मन्दिर सिद्धनाथ जी का मन्दिर, कल्याणी देवी का मन्दिर, गोकुल बाबा का मन्दिर, गौशाला, खत्री, संस्कृत पाठशाला व शिव प्रसाद पाण्डे संस्कृत पाठशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर सेला चावल, खल की पैदावार होती है। वस्त्र का उद्योग भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, हिन्दुस्तान कार्मशियल बैंक व उन्नाव कार्मशियल बैंक है।

बागर मऊ—उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में बांगरमऊ उत्तर रेलवे की बाला मऊ कानपुर लाईन पर बालामऊ से ५१ कि० मी० दूर तथा कानपुर से ६७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। रक्षा तांगा यहां की मुख्य सवारी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिए यहाँ पर दो धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर श्री राज राजेश्वरी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर मटर, अरहर, चना, जौ, गेहूं, लाही, मूंगफली, उड़द, तिल्ली, बाजरा, मक्का, ज्वार आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक है।

'जिला ऐटा'

(ऐटा, अलीगंज, कासगंज, गैजडजवारा, शोरो)

ऐटा--उत्तर प्रदेश प्रान्त में ऐटा स्वयं एक जिला है। यह उत्तर रेलवे की

टूंडला-ऐटा ब्रांच लाईन पर टूंडला से ७४ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए सुमेरसिंह की धर्मशाला फरूखाबाद वालों की धर्मशाला, जैन धर्मशाला, भुंजियों की धर्मशाला, कहारों की धर्मशाला, नाईयों की धर्मशाला व अग्रवाल धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, कैलाश मन्दिर, जैन मन्दिर, चौरासी खम्वे की यज्ञशाला, गोपाल गौशाला, आर्य गुरुकुल जो आर्य पद्धति से निःशुल्क चलाया जा रहा है। इस गुरूकुल की यज्ञशाला आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर देशी घी, गुड़, धान, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, तिलहन, गेहुं, जौ, चना, मटर, अरहर, व दालों की पैदावार होती है।

बैंक—यहा पर लक्ष्मी एटा बैंक सैण्ट्रल गैंक व ऐटा डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव गैंक हैं।

विशेष—यहां पर एक सनातन धर्म संस्कृत विद्यालय भी है।

अलीगंज—उत्तर प्रदेश के ऐटा जिले में अलीगंज पूर्वोत्तर रेलवे की मुरादाबावद रामनगर लाईन पर मुरादावाद से ४० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए अग्रवाल धर्मशाला, वैश्य धर्मशाला और आर्यसमाज मन्दिर है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर संस्कृत पाठशाला, जैन मन्दिर, किला, विश्व जैन मिशन पुस्तकालय, डी० ए० वी० इण्टर कालिज देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर तम्बाकू, गेहूँ, जौ, चना, मक्का, अरहर, वाजरा पैदा होता है।

कासगंज—उत्तर प्रदेश के ऐटा जिले में कासगंज एन० ई० आर० की आगरा फोर्ट-कटिहार लाईन पर आगरा फोर्ट से १६८ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां टैक्सी, तांगा, रिक्शा आदि।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को टहरने के लिए जैन धर्मशाला बाजार में व प० कल्याण चन्द की धर्मशाला शोरों दरवाजे पर है।

दर्शनीय स्थल—यहा पर आर्य समाज मन्दिर, गुरूद्वारा, रेलवे का पुल, प्राचीन मन्दिर व गौशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर खाण्ड देसी, गुड़, बूरा, शीरा, गेहूँ, मक्का, चना, कपास, मूंगफली, दाल, लाही, मटर, लकड़ी का काम, खादी काम व तरबूज की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक व पंजाव नेशनल गैंक हैं।

गंजडुडवारा—उत्तर प्रदेश के ऐटा जिले में गंजडुडवारा ऐन० ई० आर० की आगरा फोर्ट-कटिहार लाईन पर आगरा फोर्ट से २०१ कि० मी० और कासगंज

से ३५ कि० मी० की दूरी पर एक गल्ले की मण्डी के रूप में स्थित है। यहां तांगा, रिक्शा आदि।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए सनातन धर्म सभा, धर्मशाला, पंचायती बाग धर्मशाला, सेठ मुरलीधर रामचन्द्र की धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, सनातन धर्म सभा मन्दिर, पंचायती बाग मन्दिर, बन खण्डी मन्दिर, स्वर्ण कारों का मन्दिर. ६ कि० मी० दूर गंगा की धारा सूकर क्षेत्र में श्री वाराह जी भगवान का प्रधान मन्दिर, गौरक्षनी व विद्या प्रचारिणी गौशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूँ, बाजरा, चना, मक्का, जौ, मटर, अरहर, सरसों, तारामीरा, उड़द, मूंग, तिल्ली, सफ़ेद, मूंगफली, कपास, गूड़, खण्ड, शीरा, शक्कर आदि पैदा होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

शोरों—उत्तर प्रदेश के ऐटा जिले में शोरों कासगंज बरेली लाईन पर कासगंज से १३ कि० मी० की दूरी पर गंगा जी के किनारे पर बसा हुआ है। यहाँ सुन्दर घाट बने हुए है और यहां के पानी में यह विशेषता है कि मुर्दे की हड्डी को ३ दिन में गला देता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए पन्ना लाल की धर्मशाला गंगा घाट पर जयपुर वालों की धर्मशाला, जलेसर वालों की धर्मशाला, सुन्हार की धर्मशाला, बम्बई वालों की धर्मशाला, जीवराज वालों की धर्मशाला, ला० गोकल मल आगरे वालों की धर्मशाला, व दाल मोठ आगरे वालो की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां के सुन्दर घाट, आर्य समाज मन्दिर, गुरुद्वारा, लक्ष्मीबाई पार्क, सन्त तुलसीदास इन्टर कालिज, वराह विद्यालय, श्री मेहता विद्यालय, श्री राम कुमारी सामवेद विद्यालय, सूर्यकुण्ड मोतियाहाल, श्री गंगा जी का मन्दिर, श्री बराह मान का मन्दिर, सुकरक्षेत्र हरकी पौड़ी, सोमेश्वर का मन्दिर, रघुनाथ जी जी का मन्दिर, भूतेश्वर का मन्दिर, भैरों नाथ जी का मन्दिर, कपिल मुनि देव की गुफा, द्वारकाधीश का मन्दिर, सीताराम जी का मन्दिर, भद्रकाली काली का मन्दिर, ग्राम देवी का मन्दिर, दुधाधारी का स्थान, योगेश्वर का मन्दिर, नव दुर्गाजी का मन्दिर, लहेश्वरी जी का मन्दिर, महाप्रभु अखाड़ा, तुलसी पार्क अखाड़ा, अखाड़ा नाहर गढ़, तुलसीदास पाठशाला, नर सिंह पाठशाला व गौशाला आदि आदि देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर, गेहूँ, चना, जौ, मक्का, सरसों आदि की पैदावार होती है।

"जिला कानपुर"

(कानपुर, पूखराया, बिठूर रूरा, सिकन्दरा)

कानपुर—उत्तर प्रदेश प्रान्त में कानपुर स्वयं एक विशाल जिला है।

यह एन० आर० की देहली-मुगलसराय लाईन पर देहली से ४३५ कि मी० की दूरी पर उत्तरप्रदेश के एक सबसे बड़े औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थित हैं। यहाँ सभी सवारियाँ उपलब्ध होतीं हैं।

विश्राम स्थल— यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए अयोध्या प्रसाद रामलाल कत्थे वालों की धर्मशाला धनकुटी कलक्टर गंज में, मच्छली भवन धर्मशाला नयागंज, सेठ लक्ष्मण दास की धर्मशाला लाठी मुहाल, तुलसी दास शिवप्रसाद की धर्मशाला स्टेशन के पास, पीली कोठी चढ़ाई मुहाल, वैनीमाधव की धर्मशाला मूलगंज, अनन्तराम की धर्मशाला पीलखाना, गोकुल प्रसाद ओमर वैश्य की धर्मशाला सरसैया घाट, सैण्ट्रल धर्मशाला सेंट्रल स्टेशन के पास, सीताराम की धर्मशाला लोही बादशाही नाका, गणेश प्रशाद दलाल की धर्मशाला कस्तूरबा गाँधी रोड़, जैन धर्मशाला ओरियन्टल होटल एन्ड रेस्टोरेन्ट टेलीफोन नं० ६५४२५, कानपुर लक्जरी होटल फोन नं० ६०२६२, ६७०९३, कानपुर होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६२४२६, खन्ना होटल फोन नं० ६४१४५, खंय्याम होटल फोन नं० ६८१४४, ग्रेन्ड इण्डिया होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६१४५७, ग्रेंड काश्मीरी होटल फोन नं ६८६८७, ग्यान विष्णु होटल फोन नं० ६७७९२, ग्यान वैष्णव होटल फोन नं० ८६०८, दलीपसिंह पब्लिक हिन्दू सिक्ख होटल ६२०३१, दुशमेश होटल फोन नं० ६५२४४, दीपक होटल फोन नं० ६१४७३, नटराज होटल फोन नं० ६२४३१, नटराज होटल फोन नं० ६९७६५, नवभारत होटल ६७०७९, न्यू हिन्दू भारत होटल ६१७६९, पंजाब नेशनल होटल व रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६४१२३, पार्क न्यू होटल फोन नं० ६६४९१, प्रिसवार होटल फोन नं० ६८४१६, वेंलेव्यू होटल फोन नं० ६२१६४, माडर्न होटल फोन नं० ६५८९०, मानसरोवर होटल फोन० नं० ६६३६६, मैंजिस्टिक होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६६३७४, वलेरियोज होटल फोन नं० ६२३८३, शर्मा होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६३५२९, साधना होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६७५५६, सिक्ख-हिन्दू अपना होटल फोन नं० ६८३५६, हिमाचल होटल फोन नं० ६५३५५, हिमालय होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० ६८३८५, कीनर होटल फोन नं० ६३३१८ आदि धर्मशालाएं व होटल हैं।

दर्शनीय स्थिल—यहां पर चार आर्य समाज मन्दिर है एक स्टेशन रोड पर, दूसरा गोविन्द नगर में तीसरा लाजपत नगर में और चौथा गांधी नगर मे। दूसरे आर्य समाज की ओर से एक आर्य कन्या पाठशाला भी चलरही है, ये देखने योग्य हैं। इन के अतिरिक्त कांच का मन्दिर, द्वारकाधीश का मन्दिर, मोती झील, कमला मन्दिर, जुगल किशोर का, गंगा तट, जैन मन्दिर, शुगरमिल, विश्वविद्यालय आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर किराना, दाल अरहर, दाल चना, दाल मूंग, दाल उड़द, चना, अरहर, उड़द, मूंग, चावल तेल, मूंगफली, लाही, अलसी, गुड़,

शक्कर, रेशमी ऊनी कपड़े तथा जूट का मिल हैं आदि वस्तुओं की पैदावार होती है।

बैंक— यहाँ पर लगभग एसी प्रसिद्ध बैंकों की शाखाएं हैं।

विशेष—यहाँ छुट्टी का दिन रविवार है। यहां का डी० ए० वी० कालिज देखने योग्य है इस कालिज ने अनेकों क्रान्ति कारियों को जन्म दिया है। यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में संस्कृत पाठशालाएँ है जिनमें से मुख्य ये है— बल्देव सहाय संस्कृत महाविद्यालय नया गंज, रामाधीन रामचरण शुक्ल संस्कृत पाठशाला चौक सर्राफा, महाराज कल्लूमल संस्कृत पाठशाला चावल मण्डी, गंगा विष्णु संस्कृत विद्यालय रंजीत पुरवा, संस्कृत पाठशाला नमा गंज, संस्कृत पाठशला सिरकी मोहाल, श्री राम पाठशाला चटाई मोहाल, निर्वाणाश्रम कालेश्वर संस्कृत पाठशाला अमरोधा, संस्कृत विद्यालय असगहा आदि और भी अनेकों पाठशालाएं हैं। यहां पर चमड़े का काम बहुत प्रसिद्ध है।

पुखरायां—उत्तरप्रदेश के कानपुर जिले में पुखरायां सी० आर० की झाँसी कानपुर लाईन पर झाँसी से १६२ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहाँ रिक्शा, ताँगा आदि की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रीयों को ठहरने के लिये जोगेश्वर प्रसाद गोयल की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थलः—यहाँ पर मण्डी, आर्यसमाज मन्दिर व गौशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, बाजरा, मूंग, मटर, अलसी, लाही, पैदा होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

बिठूर—उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में विठूर कानपुर से १५ मील की दूरी पर उत्तर पश्चिम गंगा के किनारे बसा हुआ है। यह स्थान कानपुर जिले का ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। रानी लक्ष्मीबाई व पेश्वा बाजीराव यहां बहुत दिनों तक रहे। यहां प्राचीन काल के ताँबे के यन्त्र और बाण प्राप्त हुए थे। यहाँ रिक्शा, ताँगा आदि सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बाल्मीकी आश्रम, देखने योग्य है तथा कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाला मेला भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, चना, चो ज्वार, बाजरा की पैदावार होती है।

रूरा—उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में रूरा उत्तर रेलवे की देहली-मुगलसराय लाईन पर देहली से ३९१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला नगर में और एक स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिवजी का व हनुमान जी का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर लाही व अन्य जिन्स पैदा होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया है।

सिकन्दर—उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में सिकन्दरा कानपुर से ९५ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ रेल नहीं जाती। बसे जाती हैं। यह यमुना नदी के किनारे पर है। यहाँ रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर रामजानकी का मन्दिर, शिवाजी का मन्दिर, श्री बाबा पाराश्वर की मूर्ति जो बहुत पुरानी है जिन्होंने जिन्दा समाधि ली थी, यमुना नदी के किनारे देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ; चना, जौ, सरसों की पैदावार होती है।

"जिला लखीमपुर खीरी"

(तिकोनिया)

तिकोनिया—उत्तर प्रदेश के जिला लखीमपुर में तिकोनिया एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये शिवलाल जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर देवी जी का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर लकड़ी का काम तथा चीनी की मिल हैं।

"जिला पौढ़ी गढ़वाल"

(पौढ़ी गढ़वाल, कण्वाश्रम, कोटद्वार, दुगड्डा)

पौढ़ी गढ़वाल—उत्तर प्रदेश प्रान्त में पौढ़ीगढ़वाल स्वयं एक जिला है। यहाँ रेल नहीं जाती हैं। बसें व स्थानीय सवारियाँ चलती हैं। यहाँ छुट्टी का दिन रविवा र है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय तथा पहाड़ी क्षेत्रों के दृश्य देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चावल की पैदावार होती है।

कण्वाश्रम—उत्तरप्रदेश के पौढ़ीगढ़वाल जिले में कण्वाश्रम जो आजकल चौकीघाट के नाम से प्रसिद्ध है स्थित है। धार्मिक स्थानों के रूप में इसका बड़ा महत्व है।

कण्वाश्रम में नन्दागिरि तक का विस्तृत परम पुनीत क्षेत्र ही सम्पूर्ण सांसारिक योग और मोक्ष का देने वाला बद्रीनाथ मण्डल कहा गया है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये शहर में होटल हैं।

कोटद्वार—उत्तर प्रदेश के पौढ़ीगढ़वाल जिले में कोटद्वार पहाड़ों के आँचल में बसा हुआ है। यहाँ से पहाड़ी मार्ग आरम्भ हो जाता है। लगभग सभी सवारियाँ यहाँ मिल जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, कण्वऋषि आश्रम यहाँ से ८ कि० मी० दूर, सिद्ध बलि का मन्दिर, यहाँ से ८ कि० मी० की दूरी पर मालिनी जन्तु विहार देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तेजपात, लौंग, शिलाजीत, मुश्क, मोम, शहद, कुटू, चौलाई, घईफूल, त्रिफला, धूप, हल्दी, मिर्च लाल, तिल, उड़द, सरसों, कैम्फर आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

दुगड्डा—उत्तर प्रदेश के पौढ़ी गढ़वाल जिले में दुगड्डा कोटद्वार से १५ कि० मी० की दूरी पर एक पहाड़ी क्षेत्र में एक मण्डी के रूप में स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये नगर पालिका की धर्मशाला व धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर दुर्गा देवी का मन्दिर, सिद्धबलि का मन्दिर, आर्य समाज का मन्दिर व गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूँ की और चावल की पैदावार होती है।

बैंक—कोटद्वार के बैंकों से यहाँ कार्य होता है।

"जिला गोरखपुर"

(गोरखपुर चौरी-चौरा)

गोरखपुर—उत्तर प्रदेश प्रान्त में गोरखपुर स्वयं एक जिला है। यह एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन आगरे से ७६२ कि० मी० की दूरी पर एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये महावीर प्रसाद प्रोद्दार की धर्मशाला उर्दू बाजार में, हरवंश राम भगवानदास की धर्मशाला हरवंश रोड पर, अग्रवाल भवन, मारवाड़ी धर्मशाला, राधेश्याम की धर्मशाला, गीता प्रैस, अतिथि भवन, इनके अतिरिक्त गणेश होटल गोलघर फोन नं० ५७५, स्टैण्डर्ड होटल, एण्ड-रैस्टोरैन्ट फोन नं० ४३१, राजस्थान होटल, अशोक होटल व प्रकाश होटल, गोलघर फोन नं० ७५६, डिलाइट होटल फोन नं० ४२९, कैलास होटल फोन नं० ९०४,

दिल्ली होटल एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन नं० १३९४, पंजाब होटल फोन नं० ७७८, वोविस होटल फोन नं० १९४, वाम्वे होटलवार २५८ आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का गीता प्रैस वहुत प्रसिद्ध है जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त आर्य समाज मन्दिर, गुरुकुल, आर्य अनाथालय, गोरखनाथ जी का मन्दिर, विष्णु मन्दिर, रामगढ़ ताल, गीता धर्मशालायें व गार्डन, विन्द वासिनी पार्क, ऐरोड्रम, गोरखपुर छावनी, आयु आरोग्य भवन, खाद का कारखाना व जूट के कारखाने देखने योन्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर लाही, तिल्ली, मटर, अलसी, अरहर, जूट, वस्त्र उद्योग, खाद, चीनी का मिल आदि वस्तुओं की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाव नेशनल बैंक, इलाहावाद बैंक, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक, हिन्दुस्तान कोमर्शियल बैंक व यूनाइटिड कोमर्शियल बैंक हैं।

विशेष—यहाँ का गोलघर रविवार को और उर्दू बाजार मंगलवार को वन्द रहता है. यहाँ की श्री गोपाल मण्डली गौशाला देखने योग्य है। यहाँ पर अनेकों संस्कृत पाठशालायें हैं जैसे—रानी गोरखपुर संस्कृत पाठशाला, भाटपार, शाक द्वीपी रामेश्वर पाठशाला भागलपुर, सांगवेद विद्यालय भटनी, श्री नाथ संस्कृत पाठशाला हाटा, ब्रह्मचर्या आश्रम पाठशाला सलेमपुर, अनाथ पालिनी संस्कृत पाठशाला वेरिया में, दुग्धेश्वर नाथ संस्कृत पाठशाला रुद्रपुर में, महानिर्वाण संस्कृत पाठशाला कसिया में, राधाकृष्ण संस्कृत विद्यालय फाजिल नगर में, ब्रह्मचर्याश्रम रागपुर में है।

चोरी चोरा—उत्तर प्रदेश के जिला गोरखपुर में चोरी-चोरा पूर्वोत्तर रेलवे की गोरखपुर देवरिया लाईन पर गोरखपुर से २४ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये जीवितराम वैद्यनाथ की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मण्डी, आर्य समाज मन्दिर, शहीद स्मारक। सन २२ में थाना जलाया गया था। तथा यहाँ से ५ कि० मी० की दूरी पर देवी का स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गुड़, गल्ला, दाल हरड़, तिल्ली, तुवर आदि पैदा होती है।

बैंक—यहाँ पर गोरखपुर वाले बैंकों से काम होता है।

"जिला गाजीपुर"

(गाजीपुर, जमानियां, युसुफपुर)

गाजीपुर—उत्तर प्रदेश प्रान्त में गाजीपुर स्वयं एक जिला है। यह एम० आई० आर० की छपरा-बनारस कैण्ट लाईन पर छपरा से १६१ कि० मी० की

दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियां मिलती हैं। वहाँ छुट्टी का दिन रविवार होता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये सोमारूराम बलदेव राम जी की धर्मशाला गंगा किनारे बाजार में है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर, यहाँ से १५ कि० मी० दूर बहुत सुन्दर मन्दिर है यहाँ भारत वर्ष के प्रत्येक स्थान से लोग देखने आते हैं, शहर में एक प्रसिद्ध मन्दिर है, अफीम का कारखाना और गोपाल कृष्ण गौशाला देखने योग्य है। यहाँ पर एक विक्टोरिया संस्कृत पाठशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अलसी, तिलहन, सब्जी, गुड़ की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर डिस्टीक को-आपरेटिव बैंक, स्टेट बैंक व इलाहबाद बैंक है।

जमानियां—उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में जमानियां पूर्व रेलवे की मुगलसराय हावड़ा लाईन पर मुगलसराय से ४५ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। सभी सवारियाँ यहां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर भगवान परशुराम जी का मन्दिर, स्टेशन से ६ कि० मी० दूर जमदग्नि ऋषि का आश्रम देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अलसी, सरसों, मसूर, चना, अरहर, मंगरैला, काला जीरा, सौंप, पोस्त, अण्डी, लाही, बाजरा, धान, चावल, आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर बनारस स्टेट बैंक है तथा गाजीपुर के बैंकों से भी काम होता है।

युसुफपुर—उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में युसुफपुर एन० ई० आर० की छपरा-वाराणसी लाईन पर छपरा से १११ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। रिक्शा व तांगा वहाँ की मुख्य सवारी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह मण्डी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गुड़, तिलहन, चना, बाजरा की पैदावार होती है।

बैंक—गाजीपुर के बैंकों से यहाँ काम चलता है।

"जिला गौंडा"

[गौंडा, तुलसीपुर, नवाबगंज, बलरामपुर, श्री वस्ती (सादित्यपुर)]

गौंडा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में गौंडा स्वयं एक बहुत बड़ा जिला है। यह एन० ई० आर० रेलवे की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ६०८ कि० मी०

की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों, के ठहरने के लिये श्री रामेश्वर प्रसाद किशोरी लाल जी की धर्मशाला, पंचायती धर्मशाला, लोहिया धर्मशाला स्टेशन पर, इसके अतिरिक्त एक धर्मशाला स्टेशन से ५ कि० मी० की दूरी पर पुराने बाजार में आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं जिनमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं। तथा शंकर होटल सुन्दर दास बड़गाँव टेलीफोन न० १७२।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य हैं। जैसे:---"सहेट-महेट" (यहाँ पर महात्मा बुद्ध जी काफी समय तक रहे थे और यहाँ के खण्डहरों को देखने के लिये विदेशों से बौद्ध धर्म के अनुयाई काफी संख्या में एकत्र होकर इस दर्शनीय स्थल की शोभा बढ़ाते हैं। "देवी पाटन" तुलसीपुर के राजा चौहल का बनवाया हुआ पाटेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर देखने योग्य हैं यहां पर हर साल मेला लगता है। "तिर्रेमनोरमा" यहीं से मनोरमा नदी निकलती है यहाँ पर महान विद्वान उद्दालक ऋषि निवास करते थे। श्री राम गौशाला अत्यन्त ही सुन्दर बनी हुई है। संस्कृत सांगवेद विद्यालय बड़गांव आदि स्थल दर्शनीय व मनोरंजनय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गल्ले की प्रसिद्ध मन्डी है। इस नगर में लकड़ी का काम, जूट का उद्योग व खादी का काम बहुत अच्छा होता है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार गेहूँ, चना, मक्का, मटर, अरहर अलसी, गुड़, ज्वार, सरसों, जूट आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये निम्नलिखित बैंकों की ब्रांच उपलब्ध है। जैसे :--स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, हिन्दुस्तान कॉमर्स बैंक, बलराम पुर सैन्ट्रल, को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

तुलसीपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में गौंडा जिले का प्रसिद्ध शहर है। यह एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-गोरखपुर लाईन पर गौंडा से ५७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत बड़ी-२ व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई है जिनमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं इनमें मुख्य महारानी बलरामपुर वाली की धर्मशाला देवी पाटन में, राम जानकी मन्दिर जी की धर्मशाला, आर्य समाज मन्दिर धर्मशाला, ला० बिहारी लाल राम फकीरे की धर्मशाला व ला० लक्ष्मन साह जी की धर्मशाला आदि प्रमुख हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जैसे :—पाटेश्वरी देवी जी का मन्दिर पाटन में, यहाँ हर चैत्र नवरात्रि को मेला लगता है। राम जानकी मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, शुगर मिल व श्री पाटेश्वरी देवी गौशाला आदि स्थान देखने योग्य व मनोरंजनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में प्रसिद्ध अनाज की मन्डी है। यहाँ पर लकड़ी का काम बहुत अच्छा होता है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज धान, चावल, मक्का, गेहूँ, गुड़, कुट्टू के बीज, राई, सौंफ, चना, लाल मिर्च, तुवर, मसूर, जौं, उड़द, तिलहन, अण्डी, अलसी, खल, सरसों आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये बैंकों की आवश्यकता होती है। इस शहर में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, यहाँ का प्रमुख बैंक है।

नवाबगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में गौंडा जिले के एन० ई० आर० रेलवे की मनकापुर-कटरा लाईन पर मनकापुर से २२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये ताँगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से २ फर्लांग पर एक बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है जिसमें यात्रियों को सभी सुविधायें प्राप्त होती है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जैसे :—आर्य समाज मन्दिर, श्री सरजू गौशाला इनके अतिरिक्त शुगर मिल भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अनाज की छोटी सी मंडी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज जूट, तेल, सरसों, खल, अलसी, अरहर, दाल अरहर, आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर कोई बैंक नहीं है। मनकापुर के बैंकों द्वारा काम किया जाता है।

बलरामपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में गौंडा जिले के एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-गोरखपुर लाईन पर गौंडा से २७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये बहुत बड़ी-२ व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई हैं। जिनमें से प्रमुख भगवती प्रसाद वैश्य की धर्मशाला चौक बाजार में. मंगलराम वैश्य की धर्मशाला रामलीला मैदान में, धर्माद कमेटी की धर्मशाला, महारानी देवेन्द्र कुंवरि की धर्मशाला स्टेशन के पास आदि हैं। जिनमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय है। जैसे :—रियासत बलरामपुर का बनवाया हुआ साज सज्जा से युक्त 'विशाल भवन' देखने योग्य हैं। महारानी लाल कुंवरि महाविद्यालय, डी० ए० वी० कालिज, राप्ती नदी का पुल, विजलेश्वरी देवी का मन्दिर, जो विशाल पत्थर का बना हुआ है, पाटन देवी का स्थल १४ कि० मी० दूर, इसके अतिरिक्त बलरामपुर से २० कि० मी० पश्चिम में श्रावस्ती नामक स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध जी ने ११ वर्ष वहीं रहकर तप किया था व उत्तर के तुलसीपुर कस्बे में देवी पाटन-पाटेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर है जहाँ राजा कर्ण प्रतिदिन सोना दान में दिया करते थे। इसके अतिरिक्त श्री हनुमान गौशाला अत्यन्त सुन्दर बनी हुई है आदि स्थल व मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह अनाज की प्रथम मंडी है। यहाँ पर लकड़ी का काम बहुत अच्छा होता है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, चना, अलसी, लाही, धान, मक्का, उड़द, जौं, मसूर, ज्वार, तिल, राई आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये बैंकों की आवश्यकता पड़ती है। इस नगर में मुख्य स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया व पंजाब नेशनल बैंक आदि हैं।

श्रावस्ती—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में गोंडा जिले का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ पर रेल नहीं जाती इसका रेलवे स्टेशन से बलरामपुर है जो कि बलरामपुर स्टेशन ११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ आने-जाने के लिये बलरामपुर से ताँगे, रिक्शा की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल- यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये मन्दिर के पास ही बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है जिसमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

विशेष—यहाँ पर भगवान रामचन्द्र ने अपने पुत्र लव को इस स्थान का अधिकारी बनाया था। इसका प्राचीन नाम सादित्यपुर है जो अब श्रावस्ती के नाम से पुकारा जाता है इसके विषय में बहुत चर्चा देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध जी ने भी ११ वर्ष यहीं पर रहकर तप किया था। इसलिये इसकी बड़ी महानता है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान देखने को मिलते हैं। जैसे—भगवान बुद्ध जी की "तपोभूमि", बौद्ध जी का प्राचीन व विशाल मन्दिर, श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, स्तूप इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध चेतवन भी यहीं पर है। आदि स्थान मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौं, मकई आदि अनाज का अधिक उत्पादन पाया जाता है।

बैंक—कोई नहीं। बलरामपुर के बैंकों द्वारा काम होता है।

जिला "जौनपुर"

जौनपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में जौनपुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० रेलवे की इलाहाबाद कानपुर लाईन पर इलाहाबाद से ११५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर व्यापारियों के विश्राम करने के लिए बहुत बड़ी-बड़ी व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई हैं। जिनमें प्रमुख श्री नारायन दास परमेश्वरी दास जी की धर्मशाला स्टेशन के पास व दूसरी पंचायती धर्मशाला बाजार में आदि है जिनमें यात्रियों कोहर प्रकार की सुविधा प्राप्त होती है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय है। जैसे—आर्य समाज मन्दिर, घण्टाघर, गोमती नदी का पुल व प्रिंजापोल पासु अनाथालय गौशाला आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ हर अनाज की बहुत बड़ी प्रसिद्ध मण्डी है। यहाँ के खरबूजे बहुत प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र की मुख्य उपज सरसों, गुड़, चीनी, उड़द, धनिया, सौंफ, आलू, लहसन, प्याज आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये बैंकों की आवश्यकता पड़ती है जिनमें प्रमुख बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, बैंक ऑफ बिहार लि० आदि हैं।

जिला "जालौन"

(जालौन, ऊरई, कालपी, कोंच)

जालौन—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में जालौन स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० रेलवे झांसी-कानपुर लाईन पर स्थित है। यहाँ पर रेल नहीं जाती। ऊरई से बसों द्वारा जाना होता है। यह ऊरई से २० कि० मी० की दूरी पर है। शहर में आने जाने के लिये तांगे, रिक्शा की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए बस स्टैण्ड से २ फर्लांग पर बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में बहुत से ऐसे धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं इनमें हनुमान जी का मन्दिर व देवी जी का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अनाज की बहुत बड़ी प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, चना, मसूर, मटर, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, अलसी, सन, घी आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—ऊरई में है।

ऊरई—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में जालौन जिले के सी० आर० रेलवे की झाँसी-कानपुर लाईन पर झाँसी से ११४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए ताँगा, रिक्शा की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, श्री गौशाला व अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गल्ले की काफी बड़ी व प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौं, ज्वार, वाजरा, मूंग, सरसों, तारा-मीरा, मटर सफेद, धनिया; अलसी, अण्डी आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिए बैंकों की ब्राँच उपलब्ध है जिनमें प्रमुख स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, इलाहाबाद बैंक आदि हैं।

कालपी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में जालौन जिले के सी० आर० रेलवे की झाँसी-कानपुर लाईन पर झाँसी से १५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के विश्राम करने के लिए बहुत बड़ी-बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जिनमें प्रमुख इस प्रकार है। सेठ काशी राम जी की धर्मशाला हरमन गंज में, सेठ मुन्ना लाल खद्दर वालों की धर्मशाला स्टेशन के पास, लाला डालचन्द सूरज प्रसाद जी की धर्मशाला, श्री वास्तव जी की धर्मशाला गणेश गंज में, माल गोदाम के पीछे आदि हैं। जिनमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

विशेष—यह स्थान महर्षि वेद व्यास जी की जन्म भूमि है व प्रसिद्ध आश्रम भी है इसके अतिरिक्त इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने अपना नृसिंह भगवान का भयंकर रूप बनाकर भक्त प्रहलाद की रक्षा हिरण्यकश्यप से की थी।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जैसे "जमुना जी का किनारा" (जिसमें २७० सीढ़ियाँ हैं), अकबर लोदी का मकबरा (जिसको चौरासी गुम्वद भी कहते हैं) जिला जालौन गौशाला समिति, महारानी झाँसी का किला, महर्षि वेद व्यास जी का मन्दिर, वेद व्यास जी की जन्म भूमि, नृसिंह टीला, व्यास टीला आदि हैं इनके अतिरिक्त कुछ अन्य स्थान भी बहुत दर्शनीय हैं। जैसे "बबीना" कालपी हमीरपुर रोड पर कालपी से १६ कि० मी० दूर दक्षिण पूर्व में।

परासन—वेत्रवती नदी के उत्तरी तट पर बबीना से १६ कि० मी० दूर दक्षिण में, यहाँ एक मन्दिर में महर्षि पराशर की विशाल मूर्ति है। "बेरी" परासन

से १६ कि० मी० पूर्व में व बबीना से १६ कि० मी० दक्षिण पूर्व में स्थित है। "जर-बेला" बेरी से ६ कि० मी० उत्तर में, यहाँ मार्कन्डेय मुनि का मन्दिर अति सुन्दर बना हुआ है। आदि स्थान दर्शनीय व मनोरंजनय है।

उत्पादित वस्तुयें—यह अनाज की प्रसिद्ध मण्डी है। यहाँ की मुख्य उपज बाजरा, सरसों, लाही, गेहूँ, चना, ज्वार, मूंग, उड़द, तुवर, मटर, जौं, मसूर, अलसी, धनिया, तिल, सन बीज आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर इलाहाबाद बैंक, व स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

कौंच—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में जालौन जिले के सी० आर० रेलवे की झाँसी-कानपुर लाईन पर स्थित है। यहाँ रेल नहीं जाती। एट से रिक्शा, ताँगों के द्वारा जाना पड़ता है। एट से १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थान—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई हैं। जिसमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थान—इस नगर में कई छोटे-२ मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह गल्ले की प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज धनिया, गेहूँ, चना, ज्वार, सरसों, तिल, तुवर, अलसी, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की प्रमुख ब्रांच स्थापित है।

जिला झांसी

(झांसी, चिरगांव, मऊरानीपुर, ललितपुर)

झांसी—झांसी स्वयं उत्तर प्रदेश का जिला है जो सी. आर. रेलवे की दिल्ली, बम्बई लाईन पर देहली से ४१२ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है यहाँ रेलवे जंक्शन भी है तथा यातायात के लिये रिक्शा, ताँगे, टैक्सी तथा 'नगर बस सेवा, का प्रबन्ध है यह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म स्थान है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के विश्राम करने के लिये अशोक होटल प्रो. प्रा. सिविल लाइन्स फोन न० ७६१, झाँसी होटल एक्ट रोड पर फोन न० ७६२, नव-भारत होटल सदर बाजार फोन न० १००६, प्रकाश होटल १०६७ सिविल लाइन्स फोन न० ६६४, सेन्ट्रल होटल ७०४ सिविल लाईन्स फोन न० ५०६, गोपाल धर्मशाला तथा दूसरी स्टेशन से ५ कि० मी० दूर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—झांसी का किला, घोड़ा पार्क, गणेश मन्दिर, शिव मन्दिर, आर्य अनाथालय, तीन आर्यसमाज मन्दिर, बाजार छावनी, आर्य कन्या महा विद्यालय, जैन मन्दिर, गौशाला समिति तथा दो मन्दिर यहां के दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चना, तुवर, अण्डी, ज्वार, अलसी, तिल्ली, सरसों, उड़द, मक्का, ऊनी कालीन कम्बल आदि की उत्पत्ति अधिक होती है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहावाद बैंक, डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक हैं।

चिरगाँव—यह उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में सी. आर. रेलवे की झाँसी कानपुर लाइन पर झाँसी से ३२ कि० मीटर की दूरी पर स्थित है यहाँ आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे का प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के लिये तालाब के पास श्री पुरोहित जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ स्टेशन के पास श्री शोती आश्रम चौपरा के पास, श्री तुलसी आश्रम, प्राचीन स्थान किला व बावरी आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, मसूर, मूंग, मूंग की दाल, तुवर, जौं, तिल, अलसी, ज्वार, सनबीज आदि का उत्पादन, यहाँ अधिक है तथा यहाँ मण्डी भी है।

बैंक—यहां सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया प्रमुख बैंक है।

मऊरानी पुर—यह नगर उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में सी. आर. रेलवे को झाँसी-मनिक पुर लाइन पर झाँसी से ६५ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है यहाँ यातायात के लिये ताँगे और रिक्शा का प्रबन्ध है। यहाँ मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के लिये डेंगरे की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, कमला सागर बाँध, लगभग ८ कि० मी० की दूरी पर अत्यन्त प्राचीन केदारेश्वर (शिव मन्दिर) अत्यन्त अनुपम एवं दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, ज्वार, जौं, महुआ, तिल, अलसी, अण्डी, मूंग, कत्था, जीरा, धनिया, मोम, घी, सिंगाड़ा, महुआ बीज, आलू, आदि का उत्पादन यहाँ अधिक होता है।

बैंक—यहाँ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया है।

ललित पुर—यह नगर उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में सी. आर. रेलवे की दिल्ली बम्बई लाइन पर दिल्ली से ५०१ किलो मी० की दूरी पर स्थित है। शहर की नगर पालिका वहुत अच्छी है यहाँ गोविन्द सागर बाँध व एरोड्रम भी है और एक मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल– आर्य समाज मन्दिर, सीता पाथ (जो कि सीता के चरणों का अवशेष प्रतीत करता है), नरसिंह मन्दिर (जो तालाब के किनारे है), जैन समाज मन्दिर, नगरपालिका समिति, गोविन्द सागर बांध व एरोड्रम, घंटाघर (जो शहर की रौनकता है), देवगढ़, पपौरी जी, नील कण्ठ (पाली) चन्देरी, जीरा खोह, मन्दिर ललितेश्वरी देवी आदि के पवित्र मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, जौं, मसूर, बीड़ी पत्ता, मक्का, तिल, ज्वार, सरसों, महुआ बीज, फूल, दालें, तेल आदि का उत्पादन यहाँ अधिक पाया जाता है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सेन्ट्रल बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जिला देहरादून

(देहरादून, कालसी, चकरौता, मंसूरी, लाखा मण्डल)

देहरादून—यह नगर स्वयं उत्तर प्रदेश का एक विशाल जिला है यह एन. आर. रेलवे की लक्सर- देहरादून लाइन पर लक्सर से ७९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सहस्त्र धारा एक सुन्दर झरना है इस गंधक वाले पानी में स्नान करने से चरम रोग दूर हो जाते हैं यह स्थान पहाड़ियों के मध्य है। देहरादून से मंसूरी के लिये रोडवेज की बस, टैक्सी, कार जातीं हैं। यहाँ शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे, टैक्सी तथा सिटी बस का पूर्ण रूप से प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के विश्राम के लिये विक्टोरिया होटल, एफ. एस. खण्डारी रतन होटल फोन न० ४०२९, ओरियन्टल होटल फोन न० ४२५६, कनाट होटल कनाट प्लेस फोन न० ३१६४, दून व्यू होटल फोन न० ४,४२, पार्क व्यू होटल फोन न० ३२३१, सहगल जे० एल० होटल फोन न० ५१२२, होटल इन्डिया-बार फोन न० ५५०५, प्रिन्स होटल फोन न० ३८३८, होटल संगम फोन न० ५१५३ रीजेन्ट होटल फोन न० ३५१८, हरिद्वार रोड पर जैन धर्मशाला, रेलवे रोड पर अग्रवाल धर्मशाला, व्हाइट हाउस होटल, क्वालिटी होटल आदि अनेकों प्रबन्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पहाड़ों के दृश्य देखने योग्य हैं यथा:—सहस्त्रधारा, वन अनुसन्धान संस्थान एवं महा विद्यालय (एशिया में प्रथम श्रेणी का), कलई के पहाड़, कन्या गुरुकुल (इस गुरकुल की प्रगति में आचार्य रामदेव जी का बड़ा हाथ रहा), आर्य समाज मन्दिर, पल्टन बाजार, श्री गुरु राम दास जी का गुरुद्वारा, देहरादून से ५ कि० मी० की दूरी पर टपकेश्वर के नाम से शंकर जी का एक मन्दिर है शिव रात्रि के दिन प्रतिवर्ष यहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है, पिकनिक के लिये एक सुन्दर स्थान है, गोरखा मिलट्री की बड़ी छावनी आदि यहाँ अनेकों दर्शनीय स्थल हैं। देहरादून का डी०ए०वी० कालिज देखने योग्य है तथा संस्कृत पाठशाला, प्रथम सनातनधर्म संस्कृत पाठशाला पुराने नाले पर, द्वितीय लक्ष्मण सं० पाठशाला आनन्द चौक पर, तृतीय सं० पाठशाला राजपुर रोड पर है। इसके अतिरिक्त भारतीय पेट्रोलियम संस्था, देहरादून की प्रयोगशाला तथा तपोवन वैदिक आश्रम जो देहरादून से ५ कि० मीटर दूर रायपुर रोड पर है जो बहुत ही सुन्दर बना हुआ है, यहाँ हथियार बनाने की फैक्टरी भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल बासमती, मोठ, हल्दी, कुट्टु, चौलाई, कालाजीरा, गुड़, शक्कर, लोभिया, बाँस बल्ली, स्पेशल चाय आदि का उत्पादन यहाँ अधिक होता है तथा चावल का मुख्य केन्द्र है।

बैंक—स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक, इलाहाबाद बैंक, डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक, हिमाचल प्रदेश स्टेट को-आपरेटिव बैंक, नेशनल बैंक ऑफ लाहौर आदि यहां पर बैंक हैं।

कालसी—यह स्थान देहरादून जिले के उत्तर भाग में यमुना के किनारे स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने-जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से ऐतिहासिक स्थान देखने को मिलते हैं। जैसे:—यहाँ पर एक छोटे शिलाखण्ड पर अशोक के लेख उत्कीर्ण हैं। और उन लेखों की भाषा पाई जाती है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्थान अशोक के समय में इस क्षेत्र में मुख्य केन्द्र था। आदि स्थान दर्शनीय व मनोरंजक हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ आलू, चावल, गेहूँ, जौं आदि की अधिक पैदावार पाई जाती है।

चकरौता—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में देहरादून ज़िले के पहाड़ी इलाके में स्थित है यहाँ के लिये देहरादून से बसों द्वारा जाना पड़ता है।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने-जाने वाले यात्रियों के लिये सदर बाजार में लाला किशोरी लाल जी की धर्मशाला बहुत सुन्दर बनी हुई है जिसमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा मिलती है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य हैं जैसे:—आर्य समाज मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, गुरु सिंह सभा, कम्पनी गार्डन इसके अतिरिक्त ३ कि० मी० दूर पानी के झरने आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र में आलू, गेहूं, चावल, जौं, आदि वस्तुओं की अधिक पैदावार पाई जाती है।

बैंक—यहां पर इच्छारम एण्ड सन्स बैंकर्स आदि बैंक हैं।

मंसूरी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में देहरादून जिले के एन. आर. रेलवे की लक्सर देहरादून लाइन पर देहरादून से ३५ कि० मी० आगे जाकर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है यहां पर रेलवे मार्ग नहीं है। देहरादून से बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने और पहाड़ों पर चढ़ने के लिये डांडी, टट्टू व रिक्शा की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने-जाने वाले यात्रियों व मुसाफिरों के ठहरने के लिये बहुत सुन्दर-सुन्दर धर्मशाला व होटल उपलब्ध हैं जिनमें प्रमुख आर्य समाज की धर्मशाला, सनातन धर्मशाला, गुरुद्वारा धर्मशाला, इसके अतिरिक्त और भी कई धर्मशाला हैं।

होटल:—सैवोय होटल, रौनक होटल, टान होटल, देमकन होटल, काश्मीर होटल, मिनर्वा होटल, गणेश होटल फोन न० ६१२, ग्रीन रेस्टोरैन्ट फोन न० २८१

दून व्यू होटल फोन न० ५६६, नवीन होटल फोन न० ५७३, नाज रैस्टोरैन्ट फोन न० ३०६, नीलम रेस्टोरैन्ट (कुलरी) फोन न० ६४०, नीलम रैस्टोरैन्ट (रॉक्सी) फोन न० ५६८, प्लाजा होटल फोन न० ५५०, ब्राडवे होटल फोन न० २४३, ब्रेस्टवुड होटल आदि ठहरने के और भी कई स्थान हैं। जिनमें यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधा मिलती है। हापुड़ मिष्टान भंडार लंडोरा बाजार में प्रसिद्ध है।

विशेष—यह प्रकृति सौंन्दर्य की प्रतिभा स्वरूप मंसूरी "पर्वतीय रानी" के नाम से विख्यात है।

दर्शनीय स्थल—यहां बहुत से धार्मिक व प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं। 'केम्पटी फाल्स' (झरने के अच्छे दृश्य हैं) ८ कि० मी० दूर, 'होसी फाल्स' (यह पिकनिक का व घूमने का प्रसिद्ध स्थान है) ६ कि० मी० दूर, 'भट्टा फाल्स' (यह पिकनिक का अच्छा स्थान है) १० कि० मी० दूर, 'विनोग गार्डन' ३ कि० मी० दूर, 'पार्क' ७ कि० मीटर, 'गन पहाड़ी' (सुन्दर पहाड़ी देखने योग्य) २ किलो मीटर दूर, 'लाल टीवा' ५ किलो मीटर, सहस्त्र धारा, अलवर वैली, इसके अतिरिक्त शहर में लाल डिब्बा, किताव घर, लंडौरा बाजार, झरना, सनातन धर्म मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आदि दर्शनीय स्थान देखने योग्य हैं। यह शहर स्वास्थ्य के लिये भी बहुत लाभदायक है।

कुछ उपरोक्त दर्शनीय स्थानों का संक्षिप्त परिचय

बिनोग गार्डन—यह बहुत अच्छा गार्डन है घूमने-फिरने व स्वास्थ्य के लिये बहुत ही सुन्दर स्थान है।

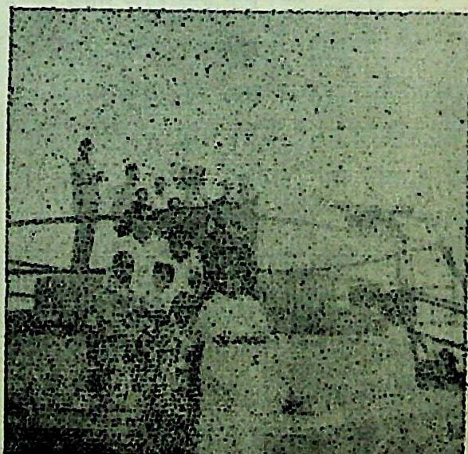
म्यूनिसिपल गार्डन—यहाँ नाना प्रकार के फलों के वृक्ष लगे हैं।

पार्क—यह भ्रमण के लिये सबसे उत्तम स्थान है और माल रोड से ५ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां से देहरादून का दृश्य देखने को मिलता है।

लाल डिब्बा—यह समुद्र से ८००० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां जाने के लिये मुलिंगार होटल से मार्ग जाता है।

पारी डिब्बा—यह मंसूरी का सबसे ऊंचा स्थान है जो कि ८५७० फीट ऊँचा है। यहां से बहुत दूर-दूर तक की पहाड़ियां दिखाई पड़ती हैं।

गन हिल (तोप डिब्बा)—इसी स्थान पर पहले एक तोप रखी रहती थी जो दोपहर ठीक बारह बजे का समय बतलाने के लिये छोड़ी जाती थी।



(मंसूरी) का लाल डिब्बा

उत्पादित वस्तुयें—यहां पहाड़ी इलाका होने के कारण गल्ले की पैदावार अधिक नहीं होती फिर भी आलू, गेहूं, चना, जौं आदि का अधिक उत्पादन है यहां गल्ले की मंडी भी है।

बैंक—यहां पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये अलग २ बैंकों की शाखायें स्थापित हैं। जिनमें प्रमुख स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहबाद बैंक, आदि हैं।

लाखा मण्डल—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में देहरादून जिले के पहाड़ी इलाके में स्थित है और देहरादून से ८० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलें नहीं जातीं। यहां जाने के लिये देहरादून से बसों द्वारा ५८ किलो मीटर चकरौता और चकरौता से २२ किलो मीटर दूर जाने पर लाखा मण्डल आता है शहर में घूमने-फिरने व आने जाने के लिये रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस स्थान पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सुन्दर-२ होटल बने हुये हैं जिनमें यात्री व घूमने फिरने वालों को हर प्रकार की सुविधा मिलती है।

दर्शनीय स्थल—यह स्थान देहरादून जिले के जौनसार ५२ परगने में है। यह नगर मूर्तियों का भण्डार है। जनश्रुति है कि यहां लाखों मूर्ति मिलने के कारण ही इस स्थान का नाम लाखा मण्डल पड़ गया। यह स्थान यमुना नदी के किनारे बसा हुआ बहुत मनोहर लगता है। यहां पर कुछ महत्वपूर्ण शिला लेख भी पाये जाते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार आलू, गेहूं, चना, ज्वार व मक्का आदि है।

जिला देवरिया

(देवरिया, कुशी नगर, पडरौना, हाटा)

देवरिया—उत्तर प्रदेश में देवरिया स्वयं एक जिला है। यह एन. ई. आर. रेलवे की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ८११ कि० मी० और गोरखपुर से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। और नगर में आने जाने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये बड़ी-बड़ी धर्मशालायें बनी हुई हैं जैसे—नलगढ़िया की धर्मशाला मोती लाल रोड पर स्टेशन के पास ही है, (इसी धर्मशाला में भोजन खाने के लिये मारवाड़ी होटल भी है) लखी राम राम लाल जी की धर्मशाला भरौली बाजार में, राम कुमार दीना राम की धर्मशाला गडुल पार में, पुरानी धर्मशाला मालवी रोड पर, आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बाबा राघव दास का आश्रम सरयू नदी के तट पर, आर्य समाज मन्दिर, श्री घनश्याम दास वैदिक विद्यालय गुरुकुल, देवर द्ववा बाबा का आश्रम, शुगर मिल, जूट के बहुत बड़े-बड़े कारखाने आदि दर्शनीय स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौं सरसों, जूट आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर इलाहाबाद बैंक, सेन्ट्रल बैंक, स्टेट बैंक, कसिया सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि हैं।

कुशीनगर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के देवरिया जिले में एन० ई० आर० रेलवे की गोरखपुर लाईन पर देवरिया से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर बसों द्वारा जाया जाता है। नगर में आने-जाने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये चायना धर्मशाला, बिरला धर्मशाला, वर्मा धर्मशाला, यथा कुआं धर्मशाला, (रामा घाट में १½ कि० मी०) आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बिरला मन्दिर, टूरिस्ट बंगला, वर्मा का मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर, महात्मा बुद्ध जी का निर्वाण स्थल (बौद्ध जी के मन्दिर में २७ फुट लम्बी मूर्ति लेटी हुई है जो १८७६ में मिली थी) जो अति सुन्दर है, रामा घाट १½ कि० मी० दूर (जहां बुद्ध जी का अन्तिम संस्कार किया गया था रामा घाट में ही विष्णु मती नदी है) ऐसे ही अनेकों दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा आदि की पैदावार अधिक होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया है।

पडरौना—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के देवरिया जिले में एन० ई० आर० रेलवे की सीवान-गोरखपुर लाईन पर गोरखपुर से ७१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर नगर में आने जाने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये ढ़ेड राज द्वारिका दास जी की धर्मशाला, अग्रवाल विवाह भवन चौराहेपर, मारवाड़ी धर्मशाला स्टेशन से ३ फर्लांग की दूरी पर है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर दुर्गा जी का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, गंगा राम का मन्दिर, तथा प्रिंजा पोल गौशाला आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर हल्दी, मक्का, ज्वार, गन्ना, गेहूं, अलसी, अंडी, सरसों, धनिया, आदि वस्तुयें अधिक पैदा होती हैं। यह एक प्रसिद्ध मंडी है। यहां के बने फूल के बर्तन बहुत प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, हिन्दू कामंशियल बैंक आदि हैं।

हाटा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के देवरिया जिले में गोरखपुर-कसिया रोड पर स्थित है। यहां रेलवे मार्ग नहीं है गोरखपुर से बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में आने जाने के लिये तांगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गुलावी सेठ का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा आदि की अधिक पैदावार होती है। यहाँ गल्ले की मन्डी है।

जिला नैनीताल

(नैनीताल, काशीपुर, काठ गोदाम, खटीमा, टनकपुर, रुद्रपुर, रामनगर, हल्द्वानी)

नैनीताल—उत्तर प्रदेश प्रान्त में नैनीताल स्वयं एक जिला है यह एन० ई० रेलवे की वरेली-काठ गोदाम लाइन पर स्थित है। और काठगोदाम से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है काठगोदाम से वसों या टैक्सी द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने व पहाड़ों पर जाने के लिये, रिक्शा, घोड़े व डांडी आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालायें व होटल काफी सुन्दर वने हुए हैं जैसे—सेवा सिमिति की धर्मशाला, नन्दा देवी की धर्मशाला मल्ली ताल में, रामलीला कमैटी की धर्मशाला मल्ली ताल में, दुर्गा शाह की धर्म शाला आदि।

होटल—अल्का होटल, अशोक होटल, भारत होटल, सेन्ट्रल होटल, ऐवरेस्ट होटल, कारोनेशन होटल, एम्पायर होटल, हिमालय होटल, इण्डिया होटल, मान-सरोवर होटल, रिपब्लिक होटल, नटराज होटल, अरोमा होटल, एम्वेसेडर होटल, अजन्ता होटल, केपिटल होटल, धर्मवीर पापुलर होटल, नैनी होटल, पंजाब होटल, प्रकाश सिहं ज्योति होटल, पूरन लाल शाह प्रो० भारत होटल, वेल्वेडिपर होटल, मेट्रोपोल होटल, मेरोनों होटल आदि होटल ठहरने के लिगे बहुत अच्छे हैं।

दर्शनीय स्थल—चीना का चोरी (हिमालय के अच्छे दृश्य देखने को मिलते हैं) ५ कि० मी० दूर, लेरिया कान्ता (झील के अच्छे दृश्य मिलते हैं) ५ कि० मी०, स्नोव्यू (हिमालय की मनोरमा देखने को मिलती है) २ कि० मी०, लैंडसएण्ड (खुरपा-ताल के दृश्य) ४ किलो मीटर, डोरोथीस सीट (एक यादगार स्मारक देखने योग्य) ४ कि० मी०, हनुमान गढ़ी (पहाड़ों पर हनुमान जी का मन्दिर देखने योग्य) ३ कि० मी०, किलवुरी (पिकनिक का एक अच्छा स्थान है) ८ कि० मी०, भौवाली ११ कि० मी०, भीम ताल (झील का दृश्य देखने योग्य) २२ कि० मी०, न्यूकिचिपा तालाव (झील का दृश्य देखने को मिलता है) २५ कि० मी०, सेट तालाब (झील का दृश्य देखने योग्य) २२ कि० मी०, खुरपा ताल (मछली पकड़ने का अच्छा स्थान) ५ कि० मी०, राम गढ़ २५ कि० मी०, मुक्टेश्वर ५० कि० मी०, ज्यूलीकोट ५० कि० मी०, कंची का मन्दिर, चायनापिक, पंखान देवी का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, नैना देवी का मन्दिर आदि देखने योग्य है।

विशेष—उत्तर प्रदेश का यह प्रसिद्ध शीतल स्थान है चारों ओर पहाड़ों के सुन्दर व मनोहर दृश्य मन को आकर्षित कर लेते हैं। यहां पर नैनीताल में ताल के तट पर नैना देवी का मन्दिर है वहीं शिव मन्दिर भी है। ताल के दूसरी ओर पाषणी देवी का मन्दिर है जो बहुत ही सुन्दर है। ये दोनों देवी के मन्दिर इस नगर में बहुत पूज्य माने जाते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह पहाड़ी इलाका होने के कारण ज्यादा पैदावार नहीं होती। फिर भी आलू, फल यहां की मुख्य पैदावार है।

बैंक—यहां पर इलाहाबाद बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, नैनीताल बैंक, दुर्गाशाह मोहन लाल शाह बैंक, हल्द्वानी सैन्ट्रल कोआपरेटिव बैंक, आदि प्रमुख बैंकों की शाखायें उपलब्ध हैं।

काशीपुर—यह उत्तर प्रदेश के नैनीताल जिले में एन० ई० आर० रेलवे की लालकुआं-मुरादाबाद लाईन पर लालकुआँ से ५८ कि० मी० दूरी पर स्थित है। नगर में अ ने जाने के लिए रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए किशन चन्द जी की धर्मशाला, अग्रवाल भवन धर्मशाला, शहर में और भी बहुत सी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, द्रोण सागर, देवी मन्दिर, दूर चेती, रानी भोवानी गोशाला, शुगर मिल देखने योग्य स्थान है। छपाई का काम बहुत अच्छा होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार गेहूं, चना, जौ, मक्का, मिर्चे, धनियाँ, मसूर, सरसों, गन्ना, चावल, चीनी, आदि है यह एक प्रसिद्ध गल्ले की मंडी है।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बरेली बैंक, नैनीताल बैंक।

काठगोदाम—यह उत्तर प्रदेश के नैनीताल जिले में एन० ई० आर० रेलवे की बरेली-काठगोदाम लाईन पर बरेली से १०५ कि० मी० दूरी पर स्थित है। नगर में आने जाने के लिए, रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला है व ६ कि० मी० दूर हल्द्वानी में आर्य समाज मन्दिर व धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ लकड़ी की बहुत बड़ी मंडी है। चारों तरफ लकड़ी ही लकड़ी दिखाई देती है। यह रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। स्टेशन भी काफी सुन्दर बना हुआ है। आस पास में लकड़ी के बहुत बड़े-२ जंगल है। यही से नैनीताल की चढ़ाई शुरू होती है। यहाँ इमारती लकड़ी का बहुत बड़ा व्यापार होता है। और कोई खास चीज देखने योग्य नहीं है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की प्रमुख पैदावार गेहूं, चावल, चना, जौ, लकड़ी आदि है।

बैंक—हल्द्वानी के बैंकों से काम होता है।

खटीमा—यह उत्तर प्रदेश के नैनीताल जिले में एन० ई० आर० रेलवे की सीतापुर-बुढ़वल रोड़ पर पीलीभीत व टनकपुर स्टेशनों के मध्य में स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए सनातन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जलविद्युत विभाग जो खटीमा से ५ कि० मी० दूर नानक सागर बांध, आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की प्रमुख उपज धान, चावल, लकड़ी आदि यह गल्ले की प्रमुख मंडी है।

बैंक—यहाँ को-आपरेटिव बैंक, तथा अन्य टनकपुर के बैंकों से काम होता है।

टनकपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में नैनीताल जिले के एन० ई० आर० रेलवे लाईन पर पीलीभीत-टनकपुर लाईन पर पीलीभीत से ६३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए, तांगा, रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास ही धर्मशाला, व नगर में धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य समाज मन्दिर, शिवजी का मन्दिर आदि स्थल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की प्रमुख उपज, गुड़, शक्कर, खांड, घी, हल्दी, लाल मिर्च, कत्था, सुहागा, जड़ी बूटियां, इलायची, आलू, शहद, लकड़ी आदि की अधिक पैदावार है यह प्रमुख मन्डी भी है।

बैंक—यहां पर बरेली कार्पोरेशन बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया आदि बैंक है।

रुद्रपुर यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में नैनीताल जिले के एन० ई० आर० रेलवे पर लालकुआं-मुरादाबाद लाईन पर रामपुर से ६० कि० मी० दूरी पर स्थित है। इसका स्टेशन रामपुर है। रामपुर से बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में आने जाने के लिए रिक्षा, तांगे उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए अग्रवाल धर्मशाला, किशोरी लाल धर्मशाला और अरोरा रेस्टोरेन्ट फोन न० ११० आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ नगर में रुद्रपुर महाविद्यालय, आर्य समाज मन्दिर, हरि जी का मन्दिर, लक्ष्मी नारायन जी का मन्दिर, यू० पी० एग्रीकलचर यूनिवर्सिटी, दुर्गा जी का मन्दिर आदि स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य पैदावार, गेहूँ, चना, जौ, लाही, मक्का, गुड़, धान, चावल, तारामीरा, मसूर आदि उत्पादन व प्रमुख मंडी है।

बैंक—इस शहर में स्टेट बैंक आफ इण्डिया बैंक प्रमुख है।

रामनगर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में नैनीताल जिले के एन० ई० आर० रेलवे की लालकुआं-मुरादाबाद लाईन पर लालकुआं से ७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में धर्मशाला व होटल हैं। स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर व कई दर्शनीय मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख उपज लाही, लकड़ी, मिर्च, धान, चावल, रामदान, कुट्टू, कत्था, शहद, सुहागा, छड़ीला, आदि उत्पादन व प्रमुख मंडी हैं।

बैंक—इस नगर में स्टेट बैंक आफ इण्डिया, नैनीताल बैंक आदि प्रमुख बैंक है।

हल्द्वानी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में नैनीताल जिले के एन० ई० आर० रेलवे की कासगंज-काठगोदाम लाईन पर बदांयू से १४१ कि० मी० व बरेली से १०९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, तागां, टैक्सी आदि सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए आर्य समाज धर्मशाला व अन्य धर्मशालायें हैं। और यात्रियों को शुद्ध भोजन के लिए मारवाड़ी धावा है और होटल कैलाश व्यू फोन न० २२२ है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, गौशाला, शिवजी का मन्दिर व चीनी की कुलिया बहुत सुन्दर बनती है आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख उपज जड़ी, बूटियां, शहद, मोम, चावल, मिर्च, लकड़ी आदि का उत्पादन व मंडी है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, नैनीताल बैंक, बरेली कार्पोरेशन बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला प्रतापगढ़

(प्रतापगढ़)

प्रतापगढ़—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में प्रतापगढ़ एक स्वयं जिला हैं। यह एन० ई० आर रेलवे की इलाहबाद, फैजाबाद लाईन पर इलाहाबाद से ५९ कि० मी की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए राम कुमार जी की धर्मशाला मन्दिर के पास, बाबू लाल फूल चन्द जी की धर्मशाला चौक में, अग्रवाल धर्मशाला स्टेशन से २ कि० मी० दूर, सफाखाने के पास धर्मशाला, रेलवे स्टेशन के पास धर्मशाला, आदि धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर, लक्ष्मी नारायन जी का मन्दिर, बेला देवी का स्थान, शान्ति नाथ भगवान का मन्दिर, (शहर से ३/४ कि० मी० दूर जो ९ फुट ऊँची पदमासन प्रतिमा अतिशय युक्त है)। अनाथालय, और बहुत बड़े-बड़े जैन मन्दिर आदि बहुत सुन्दर बने हुए हैं। जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की प्रमुख उपज गेहूँ, गुड़, चना सन, सरसों, मटर, तुवर, महुआ आदि की पैदावार अधिक है। यहां गल्ले की मन्डी हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, हिन्दुस्तान कोर्मिशियल बैंक, डिस्टीक कोआ-रेपटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला पिथौरागढ़

(पिथौरागढ़)

पिथौरागढ़—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में पिथौरागढ़ स्वयं एक जिला है। यह एन० ई० आर० रेलवे की पीलीभीत-टनकपुर लाईन पर पीली भीत से ६७ कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी उप-लब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला व होटल बने हुए हैं। जैसे नवीन होटल के० सी० पाण्डेय फो० न० ७४ हिमानी होटल एण्डरेस्टो-रैन्ट प्रो० प्रा० रमेश चन्द फोन न० ६१ आदि प्रमुख हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई छोटे-बड़े मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर की प्रमुख पैदावार पहाड़ी घी, जड़ी बूटियाँ, मोम, शहद आदि उत्पादन व मण्डी हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया नैनीताल बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला पीलीभीत

(पीलीभीत, बीसलपुर)

पीलीभीत—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में पीलीभीत स्वयं एक जिला है। यह एन० ई० आर रेलवे की लखनऊ बरेली लाईन पर लखनऊ से २६२ कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, ताँगे आदि सवारी उप-लब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहा शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए मूलचन्द जी की धर्म-शाला स्टेशन से १ फर्लांग पर, मदारी लाल राधे श्याम जी की धर्मशाला बाजार, में आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर पिंजरापोल सोसाईटी गौशाला, शुगर मिल अन्य कई छोटे-बड़े मन्दिर दर्शनीय है जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर की प्रमुख उपज राबगलावट, धान, चावल, गेहूँ, चना, मसूर, गुड़, खाँड, लकड़ी, चीनी, आदि की पैदावार अधिक है यह प्रसिद्ध मंडी भी हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, बरेली कारपोरेशन बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

बिसलपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के पीलीभीत जिले में एन० ई० रेलवे की पीलीभीत-शाहजहाँपुर लाईन पर पीलीभीत से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए हरनाम दास जी की धर्मशाला आदि बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर, अग्रवाल सभा हाउस जो बहुत ही सुन्दर बना हुआ है और अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर व श्री राम गौशाला आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित्य वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख पैदावार गेहूँ, चना, जौ, लकड़ी, खाँड देशी, धान, चावल, गुड़' राव, रेशमी कपड़ों के मिल आदि वस्तुयें पैदा होती है। लकड़ी का काम वहुत अच्छा होता है। यह मंडी भी हैं।

बैंक—बरेली कोरपोरेशन वैंक, वैंक आफ जयपुर आदि बैंक है।

जिला फतहपुर
(फतहपुर, बिन्दकी)

फतहपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फतहपुर स्वयं एक जिला है। यह एन० इ० आर रेलवे की दिल्ली-मुगल सराय लाईन पर दिल्ली से ५११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, गौशाला व अन्य छोटे-छोटे मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहा की मुख्य पैदावार गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, आदि उत्पादन है। यहां गल्ले की मन्डी हैं।

बैंक—यहा इलाहाबाद बैंक, पंजाब नेशनल वैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, डिस्ट्रिक कोआपटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

बिन्दकी—यह उत्तर प्रदेश के प्रान्त में फतहपुर जिले के एन० ई० आर० रेलवे की दिल्ली मुगल-सराय लाईन पर दिल्ली से ४७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालायें बनी हुई हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख पैदावार गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा है यहां एक छोटी सी मंडी है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, हनुमान मन्दिर, श्री नन्द कृष्ण गौशाला आदि स्थान दर्शनीय हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, इलाहाबाद बैंक, सैन्ट्रल बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला फैजाबाद

(फैजाबाद, अयोध्या, फतेहगंज)

फैजाबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फैजावाद स्वयं एक जिला है। यह ए० ० आर० रेलवे की लखनऊ-मुगल सराय लाईन पर लखनऊ से १३९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी रिक्शा, तांगा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों को ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालाएं हैं। जैसे—श्याम सुन्दर जी की धर्मशाला सीटी स्टेशन के पास, रामदेव दामोदर दास जी की धर्मशाला, ददू मल जी जी धर्मशाला, यशोदा जी की धर्मशाला, मारवाड़ी धर्मशाला, स्टेशन के पास धर्मशाला है, रकाब गंज में धर्मशाला, गूदड़ी वाजार में धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

होटल—अवध होटल, राजहंस होटल आदि प्रमुख होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, नवाब सिराजुद्दौला का मकवरा, वहुवेगम (नवाव सिराजुद्दौला की वेगम) का मकबरा गुलाव बाड़ी में, मुख्तार घाट, मिलेट्री मन्दिर, जैन मन्दिर, यहाँ से ६ कि० मी की दूरी पर अयोध्या का तीर्थ स्थान है। आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख पैदावार अलसी, पोस्त डोडा, तेल, दालें, तुवर, जूट, वेझड़, मटर, गेहूँ उड़द, सरसों आदि का उत्पादन व प्रसिद्ध मण्डी है। वस्त्र उद्योग का काम व चीनी का प्रमुख उद्योग है।

बैंक—यहां इलाहावाद बैंक, अयोध्या बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, यू० पी० को आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

अयोध्या—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फैजाबाद जिले के एन० आर० रेलवे की लखनऊ-मुगल सराय लाईन पर लखनऊ से १३५ कि मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विशेष—यह नगर भारत वर्ष का एक प्रमुख तीर्थ स्थान है। यह सुन्दर नगरी भगवान श्री रामचन्द्र जी की जन्म भूमि है व प्रमुख राजधानी है। यही एक सरयू नदी है जहाँ से भगवान राम वनवास के लिए पार गये थे। यह नगर बहुत ही सुन्दर है। जो भगवान राम की लीला को याद दिलाता है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों को ठहरने के लिये धर्मशालायें व होटल इत्यादि का प्रबन्ध है। जैसे—हरनारायन जी की धर्मशाला रायगंज में, लाला पन्ना लाल जी की धर्मशाला नवाब गंज में, महन्त सुखराय जी की धर्मशाला नया घाट पर, गोंडा वालों की धर्मशाला वासुदेव घाट पर, कवरसी दास जी बम्बई वालों की धर्मशाला स्वर्ग द्वार घाट पर, कन्हैया लाल जी की धर्मशाला रायगंज में, छंगामल जी कानपुर वालों की धर्मशाला राय गंज में, रूसी वाली रानी की धर्मशाला

रायगंज में, डिप्टी महादेव प्रसाद की धर्मशाला रायगंज में, हरि सिंह जी की धर्मशाला मलिका मूर्ति के पास बाजार में, जैन धर्मशाला कटरा में, आदि आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं ।

होटल—राम होटल, मन्नाराम होटल, आदि प्रमुख होटल हैं ।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में बहुत से तीर्थ मन्दिर व स्थल देखने योग्य हैं। जैसे—हनुमान जी का मन्दिर (जिसमें हनुमान जी की विशाल मूर्ति है जो देखने योग्य हैं) राम जन्म स्थान (यहाँ श्री राम का विशाल भवन है और दर्शकों के मन राम के गीत में रम जाते हैं। उस स्थान पर २४ घन्टे कीर्तन होता रहता है) लक्ष्मी नारायण मन्दिर, बिरला मन्दिर, तुलसी उद्यान, कौशल्या भवन, हनुमान गढ़ी, स्वर्ग द्वारा, लक्ष्मण घाट, (जहां पर लक्ष्मण जी की ५ फीट ऊंची विशाल मूर्ति है।) सरयू नदी (जो यात्री वहां जाता है वहां शीतल जल में स्नान अवश्य करके आता है सरसूना, आर्य समाज मन्दिर, कनक भवन, राम कोट, दर्शनेश्वर मन्दिर, मणि पर्वत, दातून कुण्ड, नागेश्वर महादेव का मन्दिर, रामचन्द्र जी का मन्दिर, ५ दिगम्बर जैन मन्दिर (जो आदिनाथ भगवान, अजित नाथ भगवान, अभिनन्दन भगवान' सुमतिनाथ भगवान, व अनन्तनाथ भगवान की इन पांचों तीर्थंकारो की जन्म भूमि हैं यहां पर बावा झुन झुन वाला का मन्दिर है। जो लगभग ४० गज सुरंग के अन्दर स्थित है। प्राचीन काल के चरण चिन्ह है अब केवल अनन्त नाथ व अजित नाथ भगवान के मन्दिरों में ही चरण चिन्ह मिलते हैं) बावा मनिराम की छावनी, विद्या कुण्ड, महाराज ताप्ती जी की बड़ी छावनी, राम दल अखाड़ा, हनुमान अखाड़ा, गुरूकुल, (स्वामी सत्या नन्द जी की महान सेवाओं से इस गुरुकुल ने काफी प्रगति की है। इस गुरुकुल ने देश को अच्छे और त्यागी विद्वान दिये हैं) अयोध्या बाजार, अयोध्या फैजाबाद गौशाला, संस्कृत पाठशालायें, आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—इस नगर की प्रमुख उपज गेहूँ, चना, जौ, सरसों बाजरा, तेल आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—फैजाबाद के बैंकों से काम होता है।

फतेहगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के फैजाबाद जिले के एन० आर० ई० रेलवे पर स्थित है। यहां रेल नहीं जाती। बसों द्वारा जाना पड़ता है। शहर में आने जाने के लिये ताँगे, रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये रामदेव दामोदर दास जी की धर्मशाला ददद्‌ू मल जी की धर्मशाला गुडडी बाजार, श्याम सुन्दर जी की धर्मशाला रोड गंज में, यशोदा देवी जी की धर्मशाला गुडडी बाजार में आदि धर्मशालायें है।

दर्शनीय स्थल—शहर में मिलिट्री मन्दिर, हनुमान गढ़ी जी का मन्दिर, श्री राम जानकी मन्दिर, गूलाब बाड़ी, मकबरा, मुख्तार घाट, रोहानी वाटर वर्क्स, आर्य समाज मन्दिर, आदि चीजें देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि हैं।

बैंक—फैजाबाद के बैंकों से काम होता है।

जिला फर्रुखाबाद

(फर्रुखाबाद, कम्पिल, कन्नौज, कायम गंज, फतहपुर, बेवर, संकिसा)

फर्रुखाबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फर्रुखाबाद स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० रेलवे की शिकोहाबाद-फर्रुखाबाद लाईन पर शिकोहाबाद से १०७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए टैक्सी, ताँगे, रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ शहर में यात्रियों को ठहरने के लिए ला० सुन्दर लाल जी की धर्मशाला, कलकत्ते वालों की धर्मशाला, दूला रामजी की स्टेशन के पास धर्म शाला श्याम सुन्दर जी की धर्मशाला स्टेशन रोड पर, भोलानाथ जी की धर्मशाला सर्राफा बाजार, लक्ष्मी नारायन जी की धर्मशाला चौक बाजार में, जुग्गीलाल जी की धर्मशाला डाकखाने के पास आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ शहर में आर्य समाज मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर ३ हैं। सूती कपड़ों के मिल, रेशमी सूती कपड़े की छपाई का काम आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मुख्य उपज आलू, तम्बाकू, मूंगफली, शकर-गन्दी, गेहूं, जौ, चना, सरसों, अरहर, तिल, मटर, ज्वार, बाजरा, कपास, मूंग, उड़द, अलसी, राई, अण्डी, लिहाफ व छींट का प्रमुख उद्योग आदि उत्पादन व प्रमुख मंडी हैं।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैण्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, बरेली कार्पोरेशन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बरेली बैंक, डिस्ट्रिक सैन्ट्रल बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं।

कम्पिल—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के फर्रुखाबाद जिले में एक प्रमुख तीर्थ स्थान है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में रामेश्वर नाथ जी का मन्दिर, कामेश्वर नाथ जी का मन्दिर, व जैन मन्दिर (यह जैनियों का प्रमुख तीर्थ स्थान हैं यहां विमल नाथ भगवान जी के चार कल्याणक हुए हैं। किसी समय में यह एक महान नगर था आदि स्थल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ से गेहूं, चना, ज्वार आदि की मुख्य पैदावार हैं।

बैंक—इस शहर में कोई बैंक नहीं हैं।

कन्नौज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फर्रुखाबाद जिले के एन० ई० आर० रेलवे की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ३३४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगें आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये लाला कुंज विहारी लाल जी की धर्मशाला अजय पाल शहर में, राय साहब शंकर सहाय गुप्त जी की धर्मशाला अजयपाल शहर में, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर की स्टेशन के पास धर्मशाला आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में दो दिगम्बर जैन मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर, विष्णु मन्दिर, रेलवे स्टेशन आदि स्थान देखने योग्य हैं।

विशेष—इस नगर और इसके जनपद का प्राचीन नाम "कान्यकुब्ज" था उस समय कन्नौज में अनेक संघा राम थे जिनमें १००० भिक्षु रहते थे। इस नगर में २०० देव मन्दिर थे। कन्नौज ने कला की काफी उन्नति की है। यह इत्र-तेल का मुख्य केन्द्र है। सारे भारत में इत्र-तेल की सप्लाई होती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की प्रमुख उपज गेहूँ, चना, जौं, ज्वार, बाजरा आदि है।

बैंक—बरेली कार्पोरेशन बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

कायमगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के फर्रुखाबाद जिले में एन० ई० आर रेलवे की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से २४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये श्वेताम्बर दिगम्बर जैन धर्मशाला, लाला बाबूराम जी की धर्मशाला, लाला परमानन्द जी की धर्मशाला आर्य समाज मन्दिर जी की धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में भगवान रामचन्द्र जी का प्राचीन मन्दिर (जो भगवान रामेश्वर नाथ के नाम से प्रसिद्ध है), श्री कपिल मुनि जी का आश्रम, द्रोपदी कुण्ड (जो पाँडवों के जमाने का है), श्वेताम्बर दिगम्बर जैन मन्दिर, विज्ञान मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, श्री भगवन्ती गौशाला, भूतपूर्व डा० जाकिर हुसैन के पूर्वजों का निवासस्थान आदि देखने योग्य हैं।

नोट—कायमगंज स्टेशन से कपिलपुरी तीर्थ स्थान १० कि० मी० दूरी पर है।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख पैदावार तम्बाकू, आलू, शीरा, बाजरा, मक्का, अरहर, मटर, आदि उत्पादन व मंडी भी है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

फतहगढ़—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के फर्रुखाबाद जिले में एन० ई० आर रेलवे की शिकोहाबाद-फर्रुखाबाद लाईन पर फर्रुखाबाद मंडी से ५ कि० मी० की

दूरी पर स्थित है। शहर में टैक्सी, रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—कम्पिल, स्टेशन से ३ मील दूर यह एक प्राचीन तीर्थ स्थान है। यहां कपिल मुनि का आश्रम है। यह राजा द्रुपद्र की राजधानी थी। "संकिसा, परवना स्टेशन से ६ कि० मी० की दूरी पर बौद्ध-तीर्थ स्थान हैं। जहाँ बौद्ध जी का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर को देखने के लिए बहुत दूर-दूर से यात्री लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। "तिर्वा, यहाँ अन्नपूर्णा देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा, मूंग, सरसों आदि उत्पादन हैं।

बेंक—फर्रुखाबाद के बैंकों से काम होता है।

बेवर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में एन० ई० आर रेलवे की शिकोहाबाद-फर्रुखाबाद लाईन पर शिकोहाबाद से ७२ कि० मी० व मैनपुरी मंडी से २७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा व तांगे की सवारी मिलती है। रेल नहीं जाती, बसों द्वारा जाया जाता है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये वैश्य धर्मशाला जी० टी० रोड पर, ब्राह्मणों की धर्मशाला इटावा रोड पर आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीथ स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर की प्रमुख उपज गन्ना, मटर, आलू आदि हैं।

बेंक—कोई नहीं।

संकिसा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में फर्रुखाबाद जिले के एस० सी० आर रेलवे की फर्रूखाबाद परवना मार्ग पर परवना स्टेशन से ११ कि० मी० दूर दक्षिण पश्चिम काली नदी के किनारे पर बसा हुआ है। शहर में आने-जाने के लिए ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए मन्दिर के पास धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर के चीनी यात्री हुएन साँग ने इसका प्राचीन नाम कपित्थ भी लिखा है। संकिसा एक ऊँचे टीले पर एक छोटे से गाँव के रूप में बसा हुआ है यह टीला काफी दूर तक फैला हुआ है और यह किला भी कहलाता है किले के भीतर ईटों के एक टीले पर बिसहरी देवी का मन्दिर है इसके पास अशोक स्तम्भ का प्रसिद्ध शीर्ष है जिस पर हाथी की विशाल मूर्ति बनी हुई हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर की प्रमुख उपज मक्का, ज्वार, बाजरा, आलू, तम्बाकू, गेहूं, चना आदि उत्पादन हैं।

बेंक—बैंक कोई नहीं है।

जिला बिजनौर

(बिजनौर, किर्तपुर, चांदपुर, धामपुर, नगीना, नजीबाबाद,)
(नहटौर, बड़ापुर, हल्दौर)

बिजनौर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक वहुत बड़ा जिला है। यह एन० आर रेलवे की मुरादावाद-नजीवावाद लाईन पर मुरादावाद से १२४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगे आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए वहुत सी धर्मशालायें वनी हुई है जिसमें यात्री बड़े आराम से विश्राम कर सकता है। जैसे—रानी बीवी कुवीर-हल्दीर स्टेट की धर्मशाला डाकघर के सामने, लाला अशरफी लाल जी धर्मशाला स्टेशन के सामने, जैन धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, आदि प्रमुख धर्मशालायें अच्छी वनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर जिसके अन्तर्गत कई विद्यालय है। नेहरू स्पोर्टस स्टेडियम, माहत्मा विदुर जी की कुटी (नगर से १० कि० मी० दूर दारा नगर ग्राम में है) महर्षिकण्व का आश्रम (जो नगर से १० कि० मी० पश्चिम की ओर रावली ग्राम में बना हुआ है) शुगर मिल, और अन्य कई मन्दिर दर्शनीय है जो देखने योग्य हैं।

विशेष—इस नगर को परम धार्मिक परोपकारी महारजा वेणु ने वसाया था।

उत्पादित वस्तुयें—यह उत्तर प्रदेश की प्रमुख मंडियों में से है। इस नगर की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, शीरा, खाँड़, जौ, तिल, सरसों आदि हैं।

बैंक—यहां के प्रमुख वैंक पंजाव नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, मर्चेन्टस सैन्ट्रल कोपरेटिव बैंक, डिस्ट्रिक कोआपरेटिव बैंक, हैं।

किर्तपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन० आर० रेलवे की मुरादाबाद-नजीवावाद लाईन पर स्थित है। यहाँ ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला वनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यह एक छोटा सा कस्वा है। फिर भी इसमें आर्य समाज मन्दिर व शिवजी का मन्दिर अत्यन्त दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मण्डी है। यहाँ की मुख्य पैदावार गुड़, खांड, राब, मूंगफली, बान, रस्सी, अदरक आदि हैं।

बैंक—यहां पंजाव नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

चांदपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन० आर रेलवे की मुरादावाद-नजीबावाद लाईन पर मुरादाबाद से ८९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें वनी हुई हैं। स्टेशन के पास भी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में आर्य समाज मन्दिर, गौशाला नया गांव चांदपुर, अन्य कई छोटे-२ मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यह एक छोटी सी मंडी है, खांड का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, मूंगफली, खांड, गल्ला, आदि है। खद्दर का काम अच्छा होता है।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशनल बैंक, डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव सैन्ट्रल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

धामपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में विजनौर जिले के एन० ई० आर० रेलवे की मुगल सराय-अमृतसर लाईन पर मुगल सराय से ६०९ कि० मी० व रामपुर से ८७ कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं। जैसे—राम गढ़ियों की धर्मशाला, बिहारी मल, सूरज मल जी की धर्मशाला, लाला केदार नाथ जी की धर्मशाला, लोहियान की धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर स्टेशन के पास, जैन मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, शुगर मिल, ठाकुर द्वारे आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यह एक प्रमुख मण्डी है। यहाँ लकड़ी व खद्दर का काम अधिक होता है। यहाँ की प्रमुख पैदावार गुड़, खाण्डसारी, दानाकेशर, राव, चावल आदि हैं।

बैंक—इस नगर के प्रमुख बैंक सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, डिस्ट्रिक्ट सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि हैं।

नगीना—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में विजनौर जिले के एन० आर० रेलवे की मुगल सराय-अमृतसर लाईन पर मुगल सराय से ७२० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास धर्मशाला है और अन्य कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में आर्य समाज मन्दिर, गौशाला आदि कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

नोट—यहाँ से बढ़ापुर १३ कि० मी० दूरी पर है। जहां पर पहुंचने के लिए ७ दरिया पार करके जाना पड़ता है।

उत्पादित वस्तुएं—यह एक छोटी सी मन्डी व पुराना कस्बा है। यहां लकड़ी का काम अधिक होता है। यहां की मुख्य पैदावार गुड़, मूंजी, चावल, खांड, ढेंचासीड (खाद के लिए) धान आदि हैं।

बैंक—यहां पंजाब नेशनल बैंक, बरेली बैंक, डिस्ट्रिक सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक, आदि यहां के प्रमुख बैंक हैं।

नजीबाबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन. ई. आर. रेलवे की मुगल सराय-अमृतसर लाईन पर मुगल सराय से ७४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा' तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें हैं। जैसे—अग्रवाल धर्मशाला, महेश्वरी धर्मशाला, वर्मा धर्मशाला, लोहिया धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में मुक्तेश्वर महादेव जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, आदि देखने योग्य स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मण्डी है। यहां की मुख्य उपज गुड़, शक्कर, चीनी, कत्था, मोम, बहेड़ा, चिरायता, वांस, किराना, सब्जी आदि है। यहां लकड़ी का काम काफी मात्रा में होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, बरेली बैंक, डिस्ट्रिक सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि यहां के प्रमुख बैंक हैं।

नहटौर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन. ई. आर. रेलवे पर धामपुर से १३ कि० मी०, हल्दौर से ११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। धामपुर से बस द्वारा जाना पड़ता है। रेल नहीं जाती है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं। जैसे—हाथी वाला मन्दिर जी की धर्मशाला, जैन धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में हाथी वाला मन्दिर, जैन मन्दिर, (जिसमें एक पिटारे में रखी हुई २७ प्रतिमायें निकली थी) आदि अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मण्डी है। यहां सूत व कपड़े का काम अधिक होता है। यहां की प्रमुख पैदावार गुड़, राव, खांड, सीरा, खद्दर आदि हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

बढ़ापुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन० ई० आर० रेलवे की मुगल सराय-अमृतसर लाईन पर मुगल सराय से ७३३ कि० मी० दूर व नगीना से १३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगीना ही इसका स्टेशन है। नगीना से ७ दरिया पार करके जाना पड़ता है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत अच्छी धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में पार्श्वनाथ जी का किला (जो शहर से १३ कि० मी० की दूरी पर है) यहां से भगवान की प्राचीन प्रतिमा निकली थी जो बिजनौर के मन्दिर में स्थित है। मोरध्वज का किला जो १८ कि० मी० की दूरी पर है आदि स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मन्डी है। यहां की मुख्य पैदावार गुड़, खांड, चावल, गेहूं, चना, जौं आदि है।

बैंक—नगीना के बैंकों से काम होता है।

हल्दौर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बिजनौर जिले के एन. ई. आर. रेलवे की मुरादाबाद-नजीबाबाद लाईन पर मुरादाबाद से १०७ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं। स्टेशन के पास धर्मशाला, शहर में धर्मशाला, आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में बाबा मंशादास जी का मन्दिर विशेषकर दर्शनीय है। भाद्रपद शुक्ला दोज को प्रति वर्ष बहुत बड़ा मेला १० दिन तक लगा रहता है। किसी जमाने में यह एक रियासत थी।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मंडी है व पुराना कस्बा है। यहां की मुख्य उपज राब, गुड़, बट्टा, खांसडारी, सीरा, मूंगफली, आलू आदि हैं।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशनल बैंक, डिस्ट्रिक सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला बलिया
(बलिया, रसड़ा)

बलिया—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बलिया स्वयं एक जिला है यह एन० ई० आर रेलवे की छपरा-वाराणसी कैन्ट लाईन पर छपरा से ६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं। जैसे धार्मिक हिन्दू धर्मशाला स्टेशन से १ फर्लांग पर, पुरानी धर्मशाला स्टेशन से १ फलाँग पर, व राजकमल होटल, आदि प्रमुख धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, शहीद स्मारक, गंगाजी, भैरो जी का स्थान, श्री लोकमान्य तिलक गौशाला, अनाथालय छात्रावास, अन्य कई मन्दिर व स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मन्डी है। यहां की मुख्य पैदावार खांड देशी, गुड़, घी, तिलहन, अरहर आदि हैं।

बैंक—यहां सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, परना सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

रसड़ा—यह उत्तर प्रदेश में वलिया जिले के एन० ई० आर० रेलवे की वलिया-शाहगज लाईन पर वलिया से ३३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों को ठहरने के लिये सरजू प्रसाद जी की धर्मशाला स्टेशन के सामने आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, नाथ जी का मन्दिर, रामलीला रंग भूमि, लक्ष्मणेश्वर गेट, क्षतेश्वर महादेव का मन्दिर, (अति प्राचीन कलात्मक श्री विष्णु भगवान जी का मन्दिर एवं जिसमें दूसरे अवतारों की झांकी हैं, यह स्थान सरयू नदी के तट पर है रसड़ा से ८ कि० मी० दक्षिण में है) क्षतेश्वर जी की लक्ष्मन जी ने स्थापना की थी। माहात्मा लेखराम जी आर्य पथिक की स्मृति में आर्य निवास और आर्य समाज मन्दिर इसके पास में ही है। आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—इस नगर की मुख्य उपज अलसी, सरसों, गुड़ आदि हैं। यह एक छोटी सी मन्डी है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

'जिला बाँदा
(बांदा, अतर्रा, करवी, चित्रकूट)

बांदा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक जिला है यह सी० आर० रेलवे की झाँसी-मनिकपुर लाईन पर झाँसी से १९२ कि० मी० दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, टैक्सी, ताँगे आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए शिखर चन्द जी की धर्म-शाला बड़े बाजार में, मन्नू लाल अवस्थी की धर्मशाला, आदि प्रमुख है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, कलिंजर में एक वहुत बड़ा भव्य किला है। यहा से ५० कि. मी. की दूरी पर चित्रकूट तीर्थ स्थान है। व गौशाला आदि देखने योग्य स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां एक छोटी सी मण्डी है। यहा की मुख्य उपज गेहूं, चना, तिल, अलसी, धान, चावल, जौ, ज्वार, मूंग, अण्डी तुवर आदि की प्रमुख पैदावार हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक ऑफ इडिया, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, इलाहावाद बैंक, डिस्ट्रिक कोआपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

अतर्रा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बाँदा जिले के सी० आर० रेलवे की झाँसी मनिकपुर लाईन पर झाँसी से २२४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए बाजार में धर्मशालायें वनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां शिवजी का मन्दिर, मन्नू लाल संस्कृत पाठलाला हनुमान जी का मन्दिर देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—यह एक छोटा सा कस्वा है यहाँ एक छोटी सी मण्डी है । यहां की मुख्य पैदावार धान, चावल, मसूर, तिल, तुवर, गुड़ आदि हैं ।

बैंक—यहां स्टेट वेंक आफ इण्डिया प्रमुख हैं ।

करवी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में वाँदा जिले के सी० आर रेलवे की झांसी मनिकपुर लाईन पर झाँसी से २६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें वनी हुई है । जैसे श्री भैरो प्रसाद बद्री प्रसाद जी की धर्मशाला, स्टेशन से १ फर्लांग पर, स्टेशन के पास धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं ।

दर्शनीय स्थल--इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, चित्रकूट पर्वत (करवी से ८ कि० मी० दूरी पर है । वहां उस पर्वत की परिक्रमा करते है । यहा कई मन्दिर भी है । पहाड़ी दृश्य वड़े मनोरम व दर्शनीय हैं । यह भारत का वहुत वड़ा तीर्थ स्थान है । जयदेव वेष्णव संस्कृत कालेज, राम वाग संस्कृत पाठशाला, गौशाला आदि देखने योग्य स्थान हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—यह एक छोटी सी मंण्डी है । फिर भी अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है । यहां की मुख्य पैदावर गेहूं, चना, जौ, चावल, धान, सनवीज, तुवर, मसूर, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, अल्सी, अण्डी, महुआ, फूल, गुल्ली, बीड़ी पत्ता आदि हैं ।

बैंक—यहा स्टेट वेंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया आदि प्रमुख वेंक हैं ।

चित्रकूट—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में वाँदा जिले के सी० आर० रेलवे की झांसी- मनिकपुर लाईन पर झाँसी से २५२ कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती हैं ।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सुन्दर-सुन्दर धर्मशालायें वनी हुई हैं । जैसे साधु राम तुला राम जी की धर्मशाला सीतापुर बाजार में, सेठ गोवर्धन दास तुम सर वालों की धर्मशाला रामघाट पर, श्री भैरों प्रसाद बद्री दास अग्रवाल की धर्मशाला, आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर भरत जी का मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, तुलसी दास जी की गुफा, रामघाट, हनुमान सहस्त्र धारा जिसमें ३६० सीढ़ियां है औरन दी पार करके जाना पड़ता है) पुरानी लढ़सा मन्दिर (जिसमें प्रमुख व सुन्दर ११ अखाड़े हैं), ऋषि कुमार विद्यालय पीली कोठी, चित्रकूट पर्वत (जिसकी सब लोग प्ररिक्रमा करते हैं परिक्रमा करने के लिए ३) रुपये फी आदमी लगता हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की प्रमुख पैदावार गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, आदि का अधिक उत्पादन हैं ।

बैंक—करवी के बैंको से काम होता हैं ।

विशेष—यह भारतवर्ष का एक प्रमुख तीर्थ स्थान है । यहा तुलसी दास जी ने चन्दन घिसा और श्री राम जी ने तिलक लगवाया था इसके बारे में एक दोहा भी प्रचलित है । जो तुलसी दास जी ने स्वयं उसे स्वर्ण अक्षरों में लिखा हैं ।

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीड़ ।
तुलसीदास चन्दन घिसे तिलक देत रघुवीर ।।

जिला बुलन्दशहर

(बुलन्दशहर, अनूपशहर, खुर्जा, गुलावटी, डिबाई, दन्कौर, दादरी) (शिकारपुर, सिकन्द्राबाद, स्याना)

बुलन्दशहर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्दशहर स्वयं एक जिला है । यह एन० आर० रेलवे की खुर्जा मेरठ लाईन पर खुर्जा से २३ कि० मी० दूरी पर स्थित है । शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, टैक्सी व ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई है । जैसे राम नाथ जी की धर्मशाला खूर्जा अड्डे पर, ला० छज्जू मल जी की धर्मशाला, मुकुट लाल हकीम जी की धर्मशाला, छोटेलाल जी की धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, शुगर मिल, दी पंचायती गौशाला व राजे बाबू पार्क आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक प्रमुख मण्डी है । यहां की मुख्य पैदावार गुड़, चीनी, तुवर, जई, कपास, जूट, तिलहन आदि का अधिक उत्पादन होता हैं ।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया आदि मुख्य बैंक हैं ।

अनूपशहर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्दशहर जिले के एन० आर० रेलवे की हनुमानगढ़-सादुलपुर लाईन पर हनुमान गढ़ से १३४ कि० मी० व डिबाई से २० कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में आने-जाने के लिए डिवाई से बसों व ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई है । जैसे सेठ गौरीशंकर खुर्जा वालों की धर्मशाला, तेली वालों की धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं ।

विशेष—यह एक हिन्दूओं का तीर्थ स्थान है । और गंगा के किनारे पर बसा हुआ है । यहाँ महर्षि दयानन्द जी का दो बार आगमन हुआ था । यहाँ जो भी नर-नारी आते हैं वे विना स्नान किये नहीं जाते । यहाँ सबसे सुन्दर गंगा घाट बना हुआ है ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से स्थान व मन्दिर दर्शनीय हैं। जैसे—नर्वदेश्वर शिवजी का मन्दिर, श्री गिरधारी जी का मन्दिर, चमुण्डा देवी का मन्दिर, बिहारी जी का मन्दिर, स्वामी दीनदयाल जी का मन्दिर, श्री सिंह भिवानी का मंदिर आर्य समाज मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, स्वामी निर्वाण नन्द जी का आश्रम, गौशाला, राम स्वरूप आर्य कन्या इन्टर कालिज, गंगा घाट आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर एक छोटी सी मण्डी है। यहाँ की मुख्य पैदावार गेहुं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, आदि का उत्पादन अधिक हैं।

बैंक—इस शहर में कोई बैंक नहीं हैं। बुलन्दशहर के बैंकों से काम होता है।

खुर्जा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्दशहर जिले के एन० आर० ई० रेलवे की दिल्ली-मुगल सराय लाईन पर दिल्ली से ८३ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, टैक्सी, ताँगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें बनी हुई है। जिनमें से मुख्य सेठ मुरारी लाल जी की धर्मशाला और दूसरी सेठ मुन्शीलाल जी की धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, मेवा राम का कमरा, राधा कृष्ण मन्दिर, श्री राम मन्दिर, गंगा जी का मन्दिर, हनुमान मन्दिर, लक्ष्मी नारायन जी का मन्दिर, गौशाला क्राकरी का कारखाना, जावित्र ऋषि स्मारक मन्दिर (खुर्जा से ३० कि० मी० दक्षिण से यमुना तट पर जावरा गांव में है) आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह घी की बहुत बड़ी मंडी है गवर्नमैन्ट क्राकरी का अधिक काम होता है। यहां की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, सरसों, मक्का, बाजरा, रूई, मटर, गेहूं, चना, अरहर, जौ, दालें, घी आदि उत्पादित वस्तुयें हैं।

संस्कृत पाठशालायें—यहाँ एन० आर० संस्कृत कालिज, श्री राधा कृष्ण संस्कृत महा विद्यालय, लक्ष्मण दास आयुर्वेदिक विद्यालय आदि प्रमुख संस्कृत पाठशालायें हैं। जिनमें संस्कृत की उच्च शिक्षा दी जाती हैं।

बैंक—यहाँ पर सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

गुलावठी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्दशहर जिले के एन० आर० ई० रेलवे की खुर्जा-मेरठ लाईन पर मेरठ से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी की सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर मुसाफिरों के ठहरने के लिए अग्रवाल धर्मशाला मंडी के सामने प्रमुख हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, व देवी जी का मन्दिर आदि देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—यह गल्ले की बहुत बड़ी मंडी है यहाँ की मुख्य उपज, गुड़, देशी घी, तुवर, गेहूं, लाहा, रुई, मटर, आदि का अधिक उत्पादन हैं ।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डियां, इलाहाबाद बैंक, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं ।

डिबाई—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में 'बुलन्दशहर' जिले के एन० आर० ई० रेलवे की अलीगढ़-बरेली लाईन पर अलीगढ़ से ४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । यहां पर रेल नहीं जाती । अलीगढ़ व बूलन्दशहर से बसों द्वारा प्रस्थान करना पड़ता हैं । शहर में आने जाने के लिये रिक्शा-तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये धर्माथ धर्मशाला बहुत बड़ी व सुन्दर बनी हुई है जिसमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से स्थान दर्शनीय हैं । जिनमें आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई छोटे २ मन्दिर अति सुन्दर हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—यहां गल्ले की मन्डी भी हैं । इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूं, दाल, जौ, तुवर, कपास, सरसों, मसूर, चना, सौंफ, मेथी, खाण्ड, घी, आदि का अधिक उत्पादन पाया जाता हैं ।

बैंक—यहां पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए यहाँ स्टेट बैंक आँफ इण्डिया की प्रमुख शाखा प्रर्याप्त हैं ।

दनकौर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बूलन्दशहर जिले के एन० आर० ई० रेलवे की देहली-आगरा लाईन पर देहली से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है । कानपुर शहर में आते जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं ।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए बाजार में धर्मशाला बनी हुई है ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर द्रोण मन्दिर (जो गुरू द्रोणाचार्य जी का बनवाया हुआ है जो जीर्ण अवस्था में एक बहुत बड़ा विशाल मन्दिर हैं जो जमुना जी के किनारे पर बना हुआ है ।) गुरूकुल संस्कृत, महा विद्यालय, बिहारी डिग्री कालिज, गौशाला आदि अन्य कई छोटे २ मन्दिर देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक उत्तर प्रदेश की बहुत बड़ी प्रमुख मण्डी है । यहाँ की मुख्य पैदावार गुड़, गेहूँ, जौ, सरसों, अरहर, चना, मेथी, मटर, मसूर, रूई, मक्का ज्वार, बाजरा, दालें, सन आदि हैं ।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आँफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं ।

दादरी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बूलन्दशहर जिले के एन० आर० ई०

रेलवे की दिल्ली-मुगल सराय लाईन पर दिल्ली से ३६ कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर रेलवे स्टेशन से २ कि० मी० दूर है। शहर में आने जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, तांगे की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए अग्रवाल धर्मशाला, चौक बाजार में प्रमुख धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, देवी जी का मन्दिर आदि प्रमुख मन्दिर देखने योग्य हैं शहर में अन्य कई छोटे २ मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी गल्ले की मण्डी है। यहाँ की प्रमुख उपज गुड़, शक्कर, मटर गेहूं, जौ, सरसों, आदि का अधिक उत्पादन हैं।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक आँफ इण्डिया प्रमुख बैंक है।

शिकारपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्दशहर जिले के एन० आर० ई० रेलवे की कृष्ण नगर-शिकार पुर लाईन पर कृष्ण नगर से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास धर्मशाला व शहर में कई धर्मशाला हैं। जिनमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐति हासिक स्थान देखने योग्य हैं जैसे-लक्ष्मी नारायण मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, व अन्य और छोटे-२ मन्दिर आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य उपज गुड़, गेहूँ, सरसों, मटर, अरहर, कपास आदि हैं।

बैंक—यहाँ बुलन्दशहर के बैंकों से काम होता है।

सिकन्द्राबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बुलन्द शहर जिले के एन० आर० लाईन पर दनकौर रेलवे स्टेशन से ७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे मार्ग नहीं है इसका रेलवे स्टेशन दनकौर है। बुलन्द शहर, गुलावठी खुर्जा दादरी से बसों द्वारा जाना पड़ता है। शहर में घूमने के लिये टैक्सी रिक्शा, तांगे की सवारियां लब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं जिनमें से प्रमुख चैम्बर की धर्मशाला तहसील के सामने, लाला सुन्दर लाल खिच्चू मल जी की धर्मशाला तहसील के सामने, हरि शाह जी की धर्मशाला कबाड़ी बाजार में आदि जिनमें यात्रियों को पूरी सुविधा मिलती है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, गुरुकुल महा विद्यालय (दनकौर रेलवे स्टेशन के पास) आदि अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मण्डी है। यहां की मुख्य उपज गुड़, मटर, जई, गेहूं दालें जौं आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

स्याना—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के बुलन्द शहर जिले में स्थित है। यह बुलन्दशहर से ३० कि० मी० व गढ़ मुक्तेश्वर से २० कि० मी० दूरी पर बस द्वारा जाया जाता है। शहर में आने-जाने के लिये ताँगे रिक्शा की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में मुसाफिरों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं जिनमें से मुख्य अग्रवाल धर्मशाला व रस्तौगी धर्मशाला आदि सबसे अच्छी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आयुर्वेदिक कॉलिज, आर्यसमाज मन्दिर व अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं जो बहुत पूज्य माने जाते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक गुड़ की प्रसिद्ध मण्डी है यहां की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, खांड, मूंगफली, गल्ला, तिलहन आदि है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक मुख्य बैंक है।

जिला बस्ती

(बस्ती, उस्का बाजार, खलीलाबाद, महाराज गंज)

बस्ती—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक जिला है यह एन० ई० आर० रेलवे की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ६९७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा व ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं जिनमें यात्री लोग २-३ दिन तक बड़े आराम से विश्राम कर सकते हैं और विश्राम व्यवस्था के कष्ट को दूर कर सकते हैं जिनमें से मुख्य श्री बद्री दास गौरी दत्त जी की धर्मशाला पक्के बाजार में, जमुना प्रसाद देव नारायण जी की धर्मशाला रेलवे स्टेशन के पास, राम दत्त जी की धर्मशाला, तीर्थ चन्द जी की धर्मशाला, मारवाड़ी धर्मशाला गाँधी नगर में, स्टेशन से तीन मील की दूरी पर और भी कई धर्मशालायें बहुत सुन्दर बनी हुई हैं जिनमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधायें मिलती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शहीद स्मारक, आर्य समाज मन्दिर, राम कृपाल जी का मन्दिर, शुगर मिल आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय हैं।

विशेष—गौतम बुद्ध जी की जन्म स्थली यहाँ से करीब १४० कि० मी० दूर 'लुम्बनी' उपवन स्थान पर है, संत कबीर की निर्वाण स्थली 'मगहर' में है। इसी जिले में 'मखौड़ा' नामक एक स्थान है जहाँ महाराज दशरथ ने पुत्रेष्ठि यज्ञ किया था यहीं पर पांच नदियों का संगम होता है। और यह जिला नैपाल राज्य की सीमा से लगा हुआ है।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक उत्तर प्रदेश की प्रमुख मण्डियों में से है। यहां की मुख्य उपज़ गेहूं जौं, सरसों, अलसी, रुई, गुड़, चीनी,जूट आदि है।

बैंक—यहां पर सेन्ट्रल बैंक, स्टेट बैंक, नारंग बैंक, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक, सेन्ट्रल को आपरेटिव बैंकर्स यूनियन आदि प्रमुख बैंक हैं।

उस्काबाजार—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बस्ती जिले के एन. ई. आर. रेलवे की गोरखपुर गौंडा लाईन पर गोरखपुर से ६३ कि० मी की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला बाजार में व दूसरी स्टेशन के पास धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर के करीब कुंडा नदी है। जो २ कि० मी० आगे चलकर राप्ती नदी से मिलकर गोरखपुर की बड़ी-बड़ी नदियों से मिल जाती है। शहर में अन्य कई छोटे बड़े मन्दिर आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मण्डी है। यहां की मुख्य पैदावार अलसी, सरसों, अरहर, गेहूं चना, भूसा, मूंगफली आदि है।

बैंक—यहाँ पर कोई बैंक नहीं है आनन्द नगर या गोरखपुर के बैंकों से काम होता है।

खलीलाबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रन्त में बस्ती जिले के एन. ई. आर. रेलवे की वस्ती गोरखपुर लाईन पर वस्ती से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने व घूमने के लिये रिक्शा व ताँगे की सवारीयाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई हैं जिनमें से प्रमुख हीरालाल जी की धर्मशाला कालिज के पास, जैन धर्मशाला आदि जिनमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा मिलती है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, शुगर मिल आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बैलों की पैठ बड़ी जोर की लगती है जिसमें हर नसल का बैल देखने को मिलता है जो सारे उत्तर प्रदेश में पहले स्थान पर है। यह एक गल्ले की प्रमुख मंडियों में से है। यहां कपड़े का उद्योग अधिक होता है। यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना जौ, मटर, अलसी, राई, सौफ, आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रमुख बैंक हैं।

महाराजगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बस्ती जिले के एन० ई० रेलवे की दरोंदा-महाराजगंज लाईन पर दरोंदा से ७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे सवारियां की उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिए बहुत बड़ी-बड़ी धर्मशालायें बनी हुई हैं। जिनमें से प्रमुख 'पंचायती धर्मशाला' सबसे अच्छी बनी हुई है जिसमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर 'पन्डूर घाट' शहर से ६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है जहाँ पाँडवों का राक्षसों से घमासान (भयकर) युद्ध हुआ था आदि अन्य कई छोटे छोटे मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मंडी है। यहां गेहूं, चना, जौं, अलसी, मटर आदि की प्रमुख व अधिक पैदावार है।

बैंक—यहां कोई बैंक नहीं है।

जिला बाराबंकी
(बाराबंकी, रुदौली)

बाराबंकी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बारावंकी स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० रेलवे की मुगलसराय-लखनऊ लाईन पर मुगलसराय से ३१३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, टैक्सी, तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये बहुत सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई हैं जिसमें यात्री लोग २—३ दिन तक ठहर सकते हैं। इनमें से मुख्य वच्चू छीपी जी की धर्मशाला, गुलेराम जी की धर्मशाला घंटाघर से १ फर्लांग पर, बुढ़वल स्टेशन के पास रामनगर शहर में एक धर्मशाला, बम्बई वाली वड़ी धर्मशाला सदर बाजार में, विश्राम सदन धर्मशाला जयसाल मार्केट में, रसीले होटल, खान होटल आदि यहां के प्रमुख होटल है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, नागेश्वर नाथ जी का मन्दिर, हनुमान गढ़ी, लोधेश्वर महादेव जी का विख्यात मन्दिर (बारावंकी से ३ कि० मी० दूरी पर) महादेव नामक स्थान में है। यहाँ जाने के लिए बुढ़वल के चौराहे पर उतरना पड़ता है यहाँ से बस सीधी महादेव जी के मन्दिर पर ही उतारती है। 'कल्पवृक्ष' अति प्राचीन नामक वृक्ष, गनेशपुर से ३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां जाने के लिये बुढ़वल उतरना पड़ता हैं। इस दर्शनीय वृक्ष को देखने के लिए दूर-२ से नर नारी काफी संख्या में पहुंचते हैं। 'पारजात नामक वृक्ष' जो अति प्राचीन है यह गौंडा रोड पर रामनगर के पास बारावंकी से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। जो बहुत ही दर्शनीय व मनोहर है। शुगर मिल, श्री गोपाल गोशाला, जूट के कारखाने आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध मंडियों में से है। यहां चीनी के मिल, जुट के कारखाने, लकड़ी का काम, कपड़े की मिलें आदि प्रमुख उद्योग हैं। यहां की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, मूंगफली, सरसों, अलसी, तुवर, गेहूं, चना, जौं, पोस्त दाना, आलू आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहां पर गडोंदिया बैंक, हिन्दुस्तान कामर्स बैंक, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक यूनियन, उत्तर प्रदेश को-आपरेटिव बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

रुदौली—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बारावंकी जिले के एन० आर० रेलवे की फैजाबाद-बारावंकी लाईन पर फैजाबाद से ३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये लाला पुरुषोत्तम दास जी की धर्मशाला, विशनुदेई जी की धर्मशाला, आदि प्रमुख धर्मशालयें हैं। जिनमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त होती है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चौधरी इरसाद मंजिल का इमामवाड़ा, (जो लखनऊ के इमामवाड़े की तरह बना हुआ है) आदि अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी मंडी है। यहां की मुख्य उपज दालें, तुवर, तीसी, पोस्ता, महुआ, सीड, उड़द, सरसों, आदि वस्तुओं का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

बैंक—यहां का प्रमुख स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया बैंक हैं।

जिला बरेली

(बरेली, अहिक्षेत्र)

बरेली—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बरेली स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० ई० रेलवे की अलीगढ़-बरेली लाईन पर अलीगढ़ से १६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये वहुत बड़ी २ व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई है जिसमें से प्रमुख सेठ चुन्नी लाल जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, श्री कन्यालाल रामचरण लाल जी की धर्मशाला मानराय के कटरे में, राम किशन जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, लाला हरसहाय मल जी की धर्मशाला कुहाड़ी पीर पर, श्री जस्सा जी की धर्मशाला, सेठ कुड़ी लाल जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, हकीम राय जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, इस धर्मशाला के दरवाजे पर यात्रियों के भोजन करने के लिए वैष्णों होटल बहुत सुन्दर बना हुआ है। आदि प्रमुख धर्मशालायें व होटल बने हुए हैं जिसमें यात्रियों को आप पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, भगवान शंकर जी का मन्दिर, कम्पनी बाग, भगवान पार्श्वनाथ जी का मन्दिर, आयुर्वेदिक संघ, राम नगर का प्रसिद्ध किला, लक्ष्मी नारायण का मन्दिर, श्री अलखनाथ जी का मन्दिर, गंगा मन्दिर, शिशु सदन, श्मशान घाट (यहां पर सुख देवा नन्द जी का अन्तिम संस्कार हुआ था इनके फूल राजकुमारी अमृतकौर, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी लाये थे, और श्रद्धांजलि अर्पित की थी) 'पागल खाना' (यह स्थान सारे भारतवर्ष में इसी

के नाम से विख्यात है यहां पर पागल आदमियों का इलाज करने की उचित व्यवस्था है। 'शुगर मिल आदि प्रमुख स्थान देखने व मनोरंजनय है।

उत्पादित वस्तु—यह एक उत्तर प्रदेश प्रान्त की प्रमुख मण्डियों में से एक है यहां का मुख्य उद्योग दियासलाई के कारखाने, (जिसमें माचिसे बनाई जाती है जो सारे भारत को सप्लाई की जाती हैं। यहां पर फर्नीचर, वस्त्र उद्योग, चीनी, उद्योग आदि का व्यापार अच्छा व सुन्दर ढंग से होता है। यहां की मुख्य पैदावार खांड, शीरा, राब, गुड़, मटर, कसारी, दाल मटर, मसूर, बूरा, मूंगफली, लाही, दाल कंसारी, छोटी मसूर, अरहर, पोस्त दाना, अलसी, सरसों, तिल, चावल आदि का अधिक उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहां पर इलाहबाद बैंक, बैंक ऑफ जयपुर, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बरेली कारपोरेशन बैंक, गडोंदिया बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बरेली बैंक, परमार्थ बैंक, को-आपरेटिव बैंक, यू० पी० को-आपरेटिव बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं।

अहिक्षेत्र—(अहिच्छत्र) यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के बरेली जिले में एक छोटे से गांव के रूप में बसा हुआ है। यहां रेल नहीं जाती, इसका रेलवे स्टेशन रेवती बहोड़ा खेड़ा हैं। शहर में आने जाने के लिए ताँगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये दिगम्बर जैन धर्मशाला बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को प्रत्येक प्रकार की सुविधाए प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर पाण्डवों का अति प्राचीन किला, भगवान पार्श्वनाथ जी का मन्दिर, (इसी स्थान पर भगवान पार्श्वनाथ जी को उपसर्ग व ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।) चैत में बहुत भारी मेला भरता हैं। जिसे देखने के लिए बाहर से नर नारी काफी संख्या में एकत्र होते हैं। और इस मेले की शोभा बढ़ाते हैं आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहाँ की मुख्य पैदावार गेहूं. जो, चना, ज्वार, बाजरा, अरहर, उड़द आदि हैं।

बैंक—यहां पर कोई बैंक नहीं हैं।

जिला बदायूं
(बदायूं, उझानी, बिल्सी)

बदायूं—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बदायूं स्वयं एक जिला है। यह एन० ई० आर० रेलवे की कासगंज काठगोदाम लाईन पर कासगंज से ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशाला बनी हुई है। जैसे—स्टेशन की धर्मशाला, रस्तौगी धर्मशाला, राय साहब जी की धर्मशाला

व गौशाला के पास धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालाएं हैं जिनमें यात्रियों को हर तरह की सुविधा प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, गुरूकुल, सूर्यकुंड, राजा महीपाल जी का किला (जिस पर अब मुसलमानों की जामा मस्जिद बनी हुई) लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर, श्री काम धेनु गौशाल, आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक वहुत बड़ी मण्डी है यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना जौ, मटर, सरसों, अरहर, मूंगफली, उड़द, बाजरा आदि का अधिक उत्पादन है। यहां सूती कपड़ का मिल व उद्योग होता हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, बरेली कारपोरेशन बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

उझानी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बदायूं जिले के कासगंज बरेली लाईन पर कासगंज से ५१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई हैं। जिसमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, श्री धमार्थ कामधेनु गौशाला व अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक गल्ले की वहुत बड़ी मण्डी है। यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौ, मटर, मूंग, उड़द, मक्का, तिल, मूंगफली, लाही, बाजरा, देशी घी, तेल, गुड़, खांड, सीरा आदि का अधिक उत्पादन है। लकड़ी का काम भी अच्छा होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, बरेली कारपोरेशन आदि प्रमुख बैंक हैं।

बिलसी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के बदायूं जिले में स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई है। जिनमें से बारहसैनी धर्मशला, जैन धर्मशाला, महेश्वरी धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें है। जिनमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिव मन्दिर भवन, हनुमान गढ़ी, रघुनाथ जी का मंदिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, गौशाला, जैन मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, आदि प्रमुख मन्दिर व दर्शनीय स्थान व मनोरंजनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक गल्ले की काफी बड़ी मण्डी है। यहां की मुख्य उपज गुड़, चना, जौ, गेहूं, तुवर, मटर, देशी घी, सरसों, आलू, अमचूर, मूंगफली आदि चीजों का अधिक उत्पादन हैं।

बैंक—यहाँ का प्रमुख बैंक स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।



जिला बहराइच

(बहराइच, नानपारा, मटेरा, रुपेडिहा)

बहराइच—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बहराइच स्वयं एक बहुत बड़ा जिला है। यह एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-नैपालगंज लाईन पर गौंडा से ५८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, टैक्सी, तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत बड़ी-२ व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई हैं जिनमें से प्रमुख धर्मशालायें बंशीधर मातादीन जी की धर्मशाला, रामेश्वर लाल विशेश्वर जी की धर्मशाला छावनी के चौराहे पर, हीरा सिंह जी की धर्मशाला छावनी बाजार में, पंचायती धर्मशाला गुदड़ी बाजार में, डालमियां धर्मशाला ब्राह्मणी पुरा मौहल्ले में, मारवाड़ी धर्मशाला घंटाघर के पास बाजार में, बिरला धर्मशाला बाजार के बाहर, छोटे लाल जी की धर्मशाला, जैन धर्मशाला, हलवाईयों की धर्मशाला आदि है जिसमें यात्री को हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, अनारकली झील, सिक्खों का गुरुद्वारा, गोवर्धन गौशाला, सैय्यद सालार की दरगाह, चितौरा झील ८ कि० मी० दूर, सुहैल नगर ८ कि० मी० दूर, आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं। यहां हर वर्ष वार्षिक समारोह मनाया जाता है और नाना प्रकार की प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह उत्तर प्रदेश की प्रमुख मन्डी है। यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौं, मक्का, तुवर, दालें, लाही, अलसी, सरसों, धान, चावल, तेल, खल, आटा, मैदा, सूजी, जूट, आदि का अधिक उत्पादन है। यहां लकड़ी का व्यापार बहुत अच्छा होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

नानपारा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बहराइच जिले के एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-नैपाल गंज लाईन पर गौंडा से ९६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सुन्दर-सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई हैं। जिनमें से प्रमुख सेठ बंशीधर प्रहलाद राय जी की डालमिया स्टेशन बाजार में, गुप्ता धर्मशाला आदि हैं। जिनमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, श्री मारवाड़ी मन्दिर स्टेशन बाजार में, व श्री जंगली नाथ गौशाला, आदि दर्शनीय व मनोरंजनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां एक छोटी सी गल्ले की मन्डी है। यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, धान, चावल, मटर, सरसों, मसूर, मक्का, अरहर, लाही आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है। यहां लकड़ी का काम भी बहुत अच्छा होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया प्रमुख बैंक है।

मटेरा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बहराइच जिले के एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-नैपाल गंज लाईन पर गोंडा से ८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये तांगे, रिक्शा की सवारी विशेष मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत अच्छी धर्मशाला वनी हुई है। जिसमें यात्रीजन ३-४ दिन तक विश्राम कर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान जी का मन्दिर, शिवजी का मन्दिर बहुत सुन्दर वने हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटे से गाँव के रूप में बसा हुआ है यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौं, ज्वार, मक्का आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहां पर कोई बैंक नहीं है। बहराइंच के बैंकों द्वारा काम होता है।

रुपेडिहा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में वहराइंच जिले के एन० ई० आर० रेलवे की गौंडा-नैपाल गंज रोड पर स्थित है। यहां रेल नहीं जाती इसका स्टेशन नैपाल गंज रोड है। शहर में आने जाने के लिये तांगे की सवारी विशेष मिलती है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये वाजार में धर्मशाला व सराय वहुत सुन्दर वनी हुई है। जिनमें यात्री जन रात्रि को विश्राम कर सकते हैं। और आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में कई छोटे-२ मन्दिर हैं जो वहाँ वहुत पूज्य माने जाते हैं।

उत्पादित वस्तुये—यह एक छोटा सा कस्बा है। यहां पर गल्ले की एक छोटी सी मन्डी है। यहां की मुख्य उपज मक्का, अरहर, मसूर, खेसाड़ी, धान, चावल, तिलहन आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन है। यहां पर लकड़ी का काम वहुत अच्छा होता है।

बैंक—यहां कोई बैंक नहीं हैं। बहराइच के वैंकों द्वारा काम होता है।

जिला बनारस

(बनारस, चन्द्र पुरी, मुगल सराय, सारनाथ, सैयदराजा, सिंह पुर)

बनारस (वाराणसी)—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक बहुत बड़ा जिला है। यह एन० आर० रेलवे की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से १७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने व घूमने के लिये रिक्शा, तांगे सिटीवस व टैक्सी की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सुन्दर-सुन्दर धर्मशलायें बनी हुई हैं। जिनमें से प्रमुख श्री कृष्ण धर्मशाला बनारस कैन्ट स्टेशन पर, श्री राधा कृष्ण शिवदत्त राम जी की धर्मशाला ज्ञान वापी में, श्री लक्ष्मी राम जी की धर्मशाला, सुखलाल साहब लखनऊ वालों की धर्मशाला, श्री मोती लाल भगीरथ मल जी की धर्मशाला बुलानाला पर, रेवा बाई की धर्मशाला (गुजरातियों के लिये) टाउन हाल के पास, श्री बैजनाथ दुद्रवा वालों की धर्मशाला बुला नाला पर, बागला धर्म० होज कटोरा पर, सत्य नारायण जी की धर्म० बाँस के फाटक पर, मथुरा साहब की धर्म० बड़ा गणेश में, जय पुरिया स्मृति भवन गुदौलिया में, पार्वती देवी जी की धर्म० गो मठ मणिकार्णिका में, कानपुर वालों की धर्म० बुलानाला पर, आदि धर्म शालायें हैं जिनमें यात्रियों को सभी सुविधायें मिलती हैं।

होटल—इन्दिरा होटल नीची बाग फोन न० ६६३५८, क्वालिटी होटल हौज कटोरा फोन न० ६३११९, दी रैस्टोरेन्ट गोदौलियां -१ फोन न० ६३८५४, न्यूलाइट होटल इंग्लिश लाईन-२ फोन न० ६४४३९, पैलेस होटल गोदौलिया फोन न० ६२५ ४८, ब्लूफाक्स रैस्टोरेन्ट हौज कटोरा फोन न० ६४३८२, क्लार्कस होटल डाकघर फोन न० ६५३९२, टूरिस्ट बंगला क्वाइन वाक्स फोन न० ६७११८, गिन्नार होटल फोन न० ६५४१७, बोल्गा होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट लहुराबीर-१ फोन न० ६२ ९७ सरदार होटल दशाश्वमेघ रोड फोन न० ६५८३८, होटल डी पेरिस बनारस कैंट-२ होटल नट इन्द्रा कैन्ट-२ फोन न० ६२६८६ आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, सारनाथ का मन्दिर, मान मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, भारत मां का मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, तुलसी मानस मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय (स्थापना १९१६ ई०), वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय (स्थापना १९५८ ई०), विश्व हिन्दू परिषद, काशी विद्यापीठ, स्याल्दा जैन महा विद्यालय, मनिकर्णिका घाट, क्वीस कालेज, पंचायती मन्दिर, सन्मति निकेतन (जिसमें एक दिगम्बर जैन मन्दिर और एक बोर्डिगं हाउस है), दयानन्द कालिज व गुरुकुल (ये दोनों शिक्षा संस्थायें आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे हैं), काशी जीव दया गौशाला, जौहरी जी चैताल्य (जिसके अन्दर मन्दिर में हीरे की प्रतिमा दर्शनीय है, आदि और भी स्थान देखने योग्य हैं।

विशेष—यह एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। यहीं पर सुपाश्वनाथ जी व पार्श्व नाथ जी का जन्म हुआ था। ३ मन्दिर भटनी घाट पर बने हुए हैं जो बहुत सुन्दर व विशाल हैं। यहाँ पर सूती कपड़े का काम पीतल के नक्काशी बर्तन व सिल्क के कढ़े वस्त्रों का एक प्रसिद्ध स्थान है। राजा हरीशचन्द्र व अन्य घाट पक्के बने हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक बहुत बड़ी मण्डी है यहां की मुख्य उपज धान, खेसाड़ी, दालें, गुड़, तेल, खांड, किराना, घी आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर इलाहाबाद बैंक, बैंक ऑफ बिहार, सेन्ट्रल बैंक, स्टेट बैंक, हिन्दुस्तान कामर्स बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कार्मशियल बैंक, यूनाइटेड बैंक

ऑफ इण्डिया, बनारस स्टेट बैंक, डिस्ट्रिक्ट को-ऑपरेटिव बैंक, यू० पी० को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

चन्द्रपुरी (चन्द्रावती)—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के बनारस जिले में स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये टैक्सी रिक्शा व ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये गंगा के किनारे एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है जिनमें यात्री जन रात्रि को विश्राम कर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यह चन्द्र प्रभु जी की जन्म भूमि है। और छोटे से गांव के रूप में बसा हुआ है फिर भी अपने स्थान पर काफी महानता रखता है गंगा के किनारे पर एक सुन्दर दिगम्बर जैन मन्दिर बना हुआ है। जिसके दर्शन के लिये काफी दूर-२ से नर-नारी आते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज धान, खेसाड़ी, दालें, गुड़, तेल, खांड, घी आदि का अधिक उत्पादन है।

मुगल सराय—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बनारस जिले के एन० आर० रेलवे की दिल्ली हावड़ालाईन पर दिल्ली से ७८० कि० मी० दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए सिटीबस, टैक्सी रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध है। यहां का स्टेशन बहुत बड़ा है। और यू० पी० का बार्डर है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए राम जी दास जेठि I जी की धर्मशाला, स्टेशन से २ फर्लांग पर आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं। जिसमें यात्रियां को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, मसाले के खिलौने बनाने का कारखाना, (जिसमें हर प्रकार के मसाले के खिलौने बनते है) आदि अन्य छोटे-छोटे कई मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनक हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक छोटी सी गल्ले की मण्डी है। यहां की मुख्य उपज चावल, तिहलन, धान, गुड, आदि का उत्पादन अधिक होता हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ बनारस आदि प्रमुख बैंक हैं।

सारनाथ—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बनारस जिले के एन० ई० आर० रेलवे की भटनी-वाराणसी लाईन पर भटनी से १५५ कि० मी० व बनारस से ८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये सिटीबस, टैक्सी रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बिरला मन्दिर के पास एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बुद्ध मन्दिर, म्यूजियम, आर्य समाज मन्दिर, धमेख-स्तूप, सारनाथ जी का मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, बिड़ला मन्दिर, आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य हैं।

विशेष—यह स्थान बौद्ध तीर्थों में बड़ा महत्व पूर्ण स्थान रखता है। यहां पर बौद्ध जी ने जीवन काल में कुछ दिन तक यहीं पर निवास किया था। बौद्ध गया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद सबसे पहले बुद्ध जी ने मृगदाव, सारनाथ में आकर अपना धर्मोपदेश दिया था।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि का अधिक उत्पादन हैं।

बैंक—बनारस के बैंकों से काम होता है।

सैयद राजा—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में बनारस जिले के ई० आर० रेलवे की हावड़ा-मुगल सराय लाईन पर हावड़ा से ६३७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में बहुत बड़ी धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिवजी का मन्दिर, व अन्य कई छोटे-छोटे मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौ, ज्वार, अलसी, सरसों, बाजरा, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है। यहां अनाज की छोटी सी मण्डी है।

बैंक—वाराणासी के बैंकों द्वारा काम होता है।

सिंहपुरी—(सिंहपुर) यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के बनारस जिले में जैनियों का प्रमुख तीर्थ स्थान है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जैन मन्दिर (यहा पर भगवान की मूल नालक प्रतिमा बहुत सुन्दर विराजमान है। बौद्ध जी का विशाल मन्दिर, अजायब घर आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय है। यहीं पर श्रेयांस नाथ जी भगवान का जन्म हुआ था।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा मक्का, आदि हैं।

बैंक— वाराणासी के बैंकों द्वारा काम होता हैं।

जिला मैनपुरी
(मैनपुरी, शिकोहाबाद)

मैनपुरी—यह उत्तर प्रदेश में मैनपूरी स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० रेलवे की शिकोहाबाद फर्रुखाबाद लाईन पर शिकोहाबाद से ५८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए सावित्री धर्मशला, स्टेशन से सात फर्लांग पर, जैन धर्मशाला, व नारायण धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालायें है। जिनमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गौशाला, आर्य समाज मन्दिर, दिगम्वर जैन मन्दिर, व बिजली घर आदि प्रमुख देखने योग्य स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली के तेल का मिल है। और लकड़ी का काम भी बहुत अच्छा होता है। यहां पर अनाज की काफी बड़ी प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, धान, चावल, मूंगफली, मक्का, चना, बाजरा, दालें, घी, जीरा आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया सैन्ट्रल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

शिकोहाबाद—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में मैनपुरी जिले के एन० आर० रेलवे की दिल्ली-मुगल सराय लाईन पर दिल्ली से २४१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगे, की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए बाजार में एक बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्री को हर प्रकार की सुविधा मिलती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर, शिवजी का मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, श्री गौशाला, क्षेवटेश्व में दिगम्बर जैन मन्दिर (जो शहर से १६ कि० मी० कच्चा पुल पार करने के बाद आता है। उसमें अजित नाथ भगवान की विशाल मूर्ति देखने योग्य है। यहां पर ताँगे की सवारी द्वारा जाया जा सकता है। आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अनाज की बहुत बड़ी मण्डी है। और कांच का बहुत बड़ा कारखाना है। जिसमें कांच का सामान बनता है जो सारे भारत में प्रसिद्ध है। यहां की मुख्य उपज मटर, अरहर, सरसों, सरसों का तेल, खल, घी, दाल, आदि का उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ इण्डिया व सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला मिर्जापुर
(मिर्जापुर, चुनार, विध्ह्याचल)

मिर्जापुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में मिर्जापुर स्वयं एक जिला हैं। यह एन० आर० रेलवे की दिल्ली मुगल सरायलाईन पर दिल्ली से ७१९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने आने के लिए टैक्सी रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें बनी हुई है। जिसमें से प्रमुख बीजाराम भाड़ा मल जी की धर्मशाला स्टेशन के पास बेनी मल माधव प्रसाद जी की धर्मशाला सिनेमा के पास, तेल वालों की धर्मशाला

गोल हटी बाजार में, मुस्लिम धर्मशाला गोल हट्टी बाजार में, श्री राम सिन्धी होटल स्टेशन रोड, फोन नं० ३८५, आदि प्रमुख धर्मशालायें व होटल है जिनमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधाए प्राप्त होती हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, विंध्याचल माँ का मन्दिर, काली का मन्दिर पहाड़ पर, नगर पालिका भवन घाट, गौपाल कृष्ण गौशाला, आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर सूती कपड़े का काम बहुत अच्छा होता है । यहां सूती-रेशमी कपड़े के बहुत बड़े २ मिल हैं । यहां चमड़ा, ताँबे के बर्तन व दरी, गलीचे, कम्बल बहुत प्रसिद्ध है इस क्षेत्र की मुख्य उपज बीड़ी पत्ता धान, चावल, आदि हैं । यहां पर लाख व बर्तनों की मण्डी हैं ।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक सैन्ट्रल बैंक आँफ इण्डिया, डिस्ट्रिक को आपरेटिव बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं ।

चुनार—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के मिर्जापुर जिले में एक छोटे से कस्बे के रूप में बसा हुआ है । शहर में आने जाने के लिए ताँगे, रिक्शा, टैक्सी, की सवारी उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के लिए शहर में बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है । जिसमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त होती हैं ।

दर्शनीय स्थल—यह स्थान राजा 'भृत हरि' की तपो भूमि है । यहां के किले में विक्रमादित्य जी का बनवाया हुआ 'भृत हरि जी' का प्रसिद्ध मन्दिर है । 'भृतहरि की समाधि, यहां से कुछ ही दूरी पर वल्लव सम्प्रदाय जी का प्रसिद्ध 'कूप मन्दिर' है । 'विट्ठल नाथ जी की गद्दी' आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुये—इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, मक्का आदि का अधिक उत्पादन है । यहां मिट्टी के खिलोने बहुत अच्छे बनते हैं ।

बैंक—यहाँ कोई बैंक नहीं है ।

विंध्याचल—यह उत्तार प्रदेश प्रान्त में मिर्जापुर जिले के एन० आर० ई० रेलवे की इलाहबाद-मिर्जापुर रोड पर इलाहाबाद से १०५ कि० मी० व मिर्जापुर से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । यहा रेलवे स्टेशन नहीं है । मिर्जापुर से बसों द्वारा जाया जाता है ।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिऐ शिव नारायण बलदेव दास सिंहानियां जी की धर्मशाला, चुनमुन मिश्र की धर्मशाला, सारस्वत छत्रियों की धर्मशाला, आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं । जिसमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देवी जी का मन्दिर, सिमेंट का कारखाना, आदि प्रमुख स्थान देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुएं—इस क्षेत्र की मूख्य उपज गेहूँ, चना, जौ, ज्वार. बाजरा, का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां कोई बैंक नहीं है।

जिला मुजफ्फर नगर
(मुजफ्फरनगर, शुक्रताल, शामली)

मुजफ्फरनगर—उत्तर प्रदेश में मुजफ्फर नगर एक प्रसिद्ध जिला है यह दिल्ली से १२१ कि० मी० की दूरी पर वसा हुआ है। यहां से २० कि० मी० की दूरी पर शुक्रताल एक तीर्थ स्थान है। यहां शहर में यातायात के लिए रिक्श', तांगा टैक्सी आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं। यह दिल्ली-सहारनपुर लाईन पर स्थित है।

विश्राम स्थल—बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिर इस शहर में एक प्रसिद्ध धर्मशाला (राय वहादुर टुकनिशा) नाम की है जो कि अखाडा घाट रोड पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अनुपम होटल भोपा रोड, फोन ३४१, मामा रैस्टोरेन्ट प्रकाश टाकीस फोन नं० ६७५ आदि है।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में बहुत से दर्शनीय स्थान हैं जिनमें से चरथावल रोड पर मोतीझील बहुत ही प्रसिद्ध है। यहां गऊशाला कम्पनी वागदेखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुये—मुजफ्फरनगर में मुख्य रूप से गुड़, शक्कर, सोठिया (गिदोड़ा) चाक आदि का उत्पादन होता है। इस शहर में चीनी का भी अधिक उत्पादन होता हैं। यहां पर ऊनी कालीन, कम्बल आदि भी बुने जाते हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक आँफ बीकानेर आदि की ब्रांचे स्थित हैं जो कि व्यापार की दृष्टि से अत्यंधिक सुविधा जनक हैं।

शुक्रताल—(शुक्रताल) जिला मुजफ्फर नगर का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यह मुजफ्फर नगर से लगभग ३० कि० मी० की दूरी पर वसा हुआ है। रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा पूर्ण रूप से उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये इस शहर में मुजफ्फर नगर वालों की धर्मशाला (आश्रम के सामने) है।

दर्शनीय स्थलः—इस शहर में वहुत से दर्शनीय धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान है। शुक्रताल में एक गुरूकुल विद्यालय हैं। जोकि प्राचीनतम उदाहरण उपस्थित करता है। यहाँ छत्री, भडियाँ कुंड, पिकनिक वैली, साखिया सागर, वीरा वत्रा प्रकाश मण्डल, डन्डी आश्रम दुर्गा जी मन्दिर, सुकदेव जी मन्दिर, तात्या टोपे मेमोरियल, शिवपुरी नेशनल पार्क, बढ़ (सुकदेव जी ने जहाँ राजा परीक्षत को कथा सुनाई थी) आदि महत्वपूर्ण स्थल हैं। यहाँ कार्तिक की पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला लगता है,

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मुख्य रूप से गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, आलू आदि का उत्पादन अत्याधिक मात्रा में होता है।

बैंक—यहां पर कोई बैंक नहीं है।

शामली—यह जिला मुजफ्फर नगर का एक प्रसिद्ध शहर है जो कि दिल्ली शाहदरा-सहारनपुर (छोटी लाइन) पर स्थित है। यह दिल्ली से लगभग ८७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। बाहर से आने जाने वाले व्यक्तियों एवं शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शामली में विश्राम के लिए भी सुविधा उपलब्ध है। यह छोटी लाईन के स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। एक वैश्य धर्मशाला ठाकुर द्वारे के पास भी स्थित है जोकि बहुत अच्छी है। यहाँ पर ठहरने के लिए एक विश्व कर्मी हाल है।

दर्शनीय स्थल—हनुमान मन्दिर, पुस्तकालय, वाचनालय, शुगर मिल जमुना की नहर, आर्य समाज मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ एक 'आर्य समाज' नाम की प्रेस है जोकि साहित्य प्रकाशन का कार्य करती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गुड़, खाण्ड शक्कर, अरहर आदि का मुख्य उत्पादन होता है। यहाँ एक मन्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा के लिए स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, तथा पंजाब नेशनल बैंक की भी शाखा स्थापित है।

जिला मेरठ

(मेरठ, किरठल, किला परीक्षित गढ़, खरखौदा, गढ़मुक्तेश्वर, गंगोल, गाजियाबाद, छपरौली, दौराला, पिलखुवा, पुरा, प्रतापुर, बड़ौत, बिनौली, बागपत, ब्रजघाट, बक्सर, मोदीनगर, मवाना, सरधना, हापुड़, हस्तिनापुर, बरनावा)

मेरठ—उत्तर प्रदेश प्रान्त में मेरठ स्वयं एक जिला है। यह एन० आर० रेलवे की दिल्ली-सहारनपुर लाईन पर दिल्ली से ६५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ की छावनी बहुत बड़ी व मशहूर है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, सिटी बस, रिक्शा, तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिए अनेक सुन्दर होटल तथा बड़ी-२ धर्मशालायें बनी हुई हैं जैसे—कन्हैया लाल जी की धर्मशाला देहली रोड पर, जैन धर्मशाला घंटाघर पर, मुकन्दी लाल की धर्मशाला घंटा घर पर, बनारसी आश्रम बुढ़ाना गेट, जैन धर्मशाला ढ़ोलकी मौहल्ले में, अग्रवाल धर्मशाला दालमंडी में, पंडित प्रसादी लाल की धर्मशाला लिसाड़ी गेट पर, रस्तौगी धर्मशाला न्यू कौतवाली के पीछे, सेठों की धर्मशाला सराय लाल दास (सेठों की गली) मौहल्ले में स्थित हैं। धर्मशालाओं के आस-पास लगभग सभी सुविधायें भी उपलब्ध हैं और विजयवार हौटल, कुइन्सवार होटल, वोल्गा होटल, कुमार होटल, जयहिन्द होटल,

नीलम होटल, पाल होटल, नाज होटल एण्ड रैस्टोरैन्ट, रामा होटल, नवीन होटल, जहाँगीर होटल, आदि प्रमुख होटल हैं जिनमें यात्रियों के विश्राम करने का बहुत अच्छा प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अशोक स्मारक, सैनिकों की छावनी, कम्पनी बाग, भैंसाली ग्राउण्ड, गोल भट्टा, बच्चा पार्क, सूरज कुण्ड, आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर. हनुमान मन्दिर, चण्डी देवी का मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, महांकाली देवी का मन्दिर, जैन मन्दिर, मन्सा देवी का मन्दिर (यह मन्दिर सर्व श्रेष्ठ है। इस मन्दिर में हर रविवार को बड़ी संख्या में नर नारी दर्शन करने आते हैं), सरस्वती मन्दिर, मेरठ विश्वविद्यालय (जिसकी स्थापना १९६६ में हुई), शुगर मिल, फ्लौर मिल, मेडिकल कालिज, घंटाघर, नगरपालिका भवन, डंडी स्वामी आश्रम गढ़रोड, बेगम पुल व लेडीज पार्क आदि बहुत से दर्शनीय तथा मनोरंजक स्थान हैं।

विशेष—यह एक प्राचीन नगर है। इसका प्राचीन नाम मेराष्ट्र नगर था। मेरठ शहर के आठ गेट थे जो प्रसिद्ध हैं तथा आज भी मौजूद हैं जैसे—बुढ़ाना गेट, शाहपीर गेट, शौराव गेट, बागपत गेट, कम्बोह गेट, देहली गेट, लिसाड़ी गेट, खैर-नगर गेट आदि हैं। मेरठ शहर, प्राचीन काल में राजा रावण की ससुराल थी, और यहां से ७ कि० मी० की दूरी पर एक गगोल नामक ग्राम में महर्षि वाल्मिकि जी का आश्रम है। इसी आश्रम पर इन्होंने रामायण का लेखन किया था जो वाल्मिकि रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।

यहां पर दुर्गा देवी जी का मन्दिर है। जो गोल मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका निर्माण लगभग ४, ५ साल पहले फिल्म डायरेक्टर देवी शर्मा जी ने कराया था। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि इस मन्दिर में दुर्गा देवी जी की मूर्ति बहुत विशाल और उच्च कोटि की है। जिसके दर्शन करने के लिये असंख्य नर नारी आते हैं।

उत्पादित वस्तुएं—इस नगर में गेहूँ, जौं, चना, मटर, सरसों, उड़द, मूंग, मसूर, गुड़, शक्कर, खांड, चीनी, खद्दर का काम हैं। यहां खद्दर का काम बहुत अच्छे ढंग से होता हैं तथा यहां की कैचियां बहुत प्रसिद्ध हैं। दरियाँ, गत्ता, खेल का सामान तथा बीड़ी भी यहाँ बनती हैं। यहाँ पर बहुत बड़ी मन्डी भी है और यह यू० पी० का सबसे बड़ा जिला है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, सिन्डीकेट बैंक, यूनियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, लक्ष्मी कॉमर्शियल बैंक, हिन्दू क० म० बैंक, हीरा बुलियन बैंक, इण्डियन बैंक, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक, सैन्ट्रल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

किरठल—यह उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास स्थित है। यहाँ पर रेलवे लाईन नहीं है, अतः मेरठ से ही रिक्शा, तांगे आदि के द्वारा जाने के साधन उप-लब्ध हैं तथा यह शामली से १८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के निवास करने के लिये केवल अग्रवाल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य महाविद्यालय दर्शनीय है जिसका प्रवन्ध अति सुचारु रूप से हो रहा है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूं, चना, ईख, बाजरा आदि परिमित रूप से उत्पन्न होती हैं।

किला परीक्षितगढ़—यह उत्तर प्रदेश में स्थित मेरठ से २५ कि. मी. दूर है। मेरठ से आने जाने के लिये मोटर, वस, टैक्सी की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर विश्राम करने के लिये सागर धर्मशाला सुभाष चौक में स्थित है तथा द्वितीय जगन्नाथ जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, निहालदे का कुआँ, गन्धार तालाब तथा वाग में गुफा जिसकी सुरंग श्रृंगरिष पर गई है, यह सब देखने योग्य है। इनके अतिरिक्त यहां पर राजा परीक्षित ने राज्य किया था अतः उनके द्वारा निर्मित किले के अवशेष खंडहर विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, जौं और खांड का उत्पादन अधिक होता है।

गढ़मुक्तेश्वर—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे के दिल्ली और मुरादावाद की लाईन पर दिल्ली से ८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर स्टेशन से ५ कि. मी. है। स्टेशन से आने जाने के लिये रिक्शा, टैक्सी व तांगे की सवारी मिलती हैं। लाखों आदमी यहां पर इकट्ठा होता है। यह गंगा नदी के किनारे पर वसा हुआ है तथा हर वर्ष कार्तिक की पूर्णमासी को ७ दिन का गंगा स्नान का मेला लगता है। वृजघाट पर रेल का तथा सड़क का पक्का पुल है।

विश्राम स्थल—यहां पर गुलाब सिंह जौहरी वालों के द्वारा निर्मित धर्मशाला है तथा असौड़ा हाउस है।

दर्शनीय स्थल—यहां का नक्का कुआँ (जो कि मुक्तेश्वर नाथ द्वारा निर्मित है), गंगा मन्दिर, महादेवी जी का मन्दिर, श्री कृष्ण का पंचायती मन्दिर, श्री राम मन्दिर, दाऊ जी का मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, दुर्गा जी का मन्दिर तथा वाजार में स्थित गौरी शंकर मन्दिर और महादेव जी का मन्दिर आदि दर्शनीय हैं। यहाँ पर भागीरथी संस्कृत महाविद्यालय भी प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गुड़, खाँड, मक्का, मटर आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया ही यहां पर प्रमुख बैंक हैं।

गंगोल—यह प्रतापुर से ५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है अपितु प्रतापुर से तांगे और रिक्शे ही प्राप्त होते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर लाला चन्सारे वाले तथा महात्मा जी के द्वारा निर्मित तीन धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यह प्राचीन काल से प्रचलित तीर्थ स्थान हैं। यहाँ पर एक मन्दिर है जहां विश्वामित्र जी ने यज्ञ किया था। तथा वहाँ खोदने पर राख ही राख निकलती है। यहां का तालाब भी प्रसिद्ध है जहां मनुष्य स्नान करते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, जौं, बाजरा, ज्वार आदि की उत्पत्ति अत्यधिक पाई जाती है।

गाजियाबाद—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित है। यह एन० आर० रेलवे की दिल्ली और मुगलसराय लाईन पर दिल्ली से २० कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर एक रेलवे जंक्शन स्टेशन भी है तथा तांगा, टैक्सी, रिक्शा, बस आदि का भी पूर्णरूपेण प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक विश्राम स्थल बने हुए हैं यथा—जैन धर्मशाला, भौंदूमल की धर्मशाला, वैश्य धर्मशाला, चैम्बर धर्मशाला, लाला गोपीचन्द की धर्मशाला, मुलतान सेवा समिति की धर्मशाला, लाला चमचूमल की धर्मशाला, कम्यूनिटि हाल इत्यादि।

दर्शनीय स्थल—यहां पर इंजिनियरिंग की बहुत बड़ी-२ फैक्टरियां हैं, दास कम्पनी जिसमें बिजली के मीटर बनते हैं, जैन मन्दिर, घन्टा घर, आर्य समाज मंदिर जो राइट गंज में है इस पवित्र मन्दिर की स्थापना महर्षि दयानन्द ने अपने कर कमलों द्वारा की थी, आर्य समाज मन्दिर दयानन्द नगर, भारत नगर, आर्य नगर, गाँधी नगर में भी है, इनके अतिरिक्त आर्य सन्यास आश्रम जो कि दयानन्द नगर में है तथा साधना मन्दिर आदि अनेकों दर्शनीय स्थल हैं। यहां की वैदिक संस्कृत पाठ-शालाएं भी प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मटर, दाल, गुड़, शक्कर, चीनी, सरसों, तेल सरसों, तुवर, दाल तुवर, गेहूँ आदि की उपज यहाँ पर अधिक मात्रा में होती है। यह इंजन व मशीनरी सामान का प्रमुख केन्द्र हैं। साबुन व वनस्पति घी का भी यह प्रमुख केन्द्र है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, ओरियन्टल बैंक आफ कॉमर्स आदि बैंक हैं।

छपरौली—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में मेरठ से ३६ कि० मी० दूर मेरठ और सहारनपुर के मध्य में स्थित है। यहां पर शहर में आने जाने के लिये रिक्शा और तांगों की पूर्ण व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहां नगर में केवल एक ही धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर और गौशाला दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना; गन्ना, कपास तथा सरसों की उत्पत्ति यहां पर अधिक पाई जाती है।

दौराला—यह नगर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में मेरठ से १४ कि० मी० दूर सहारनपुर-दिल्ली रोड़ पर स्थित है। नगर में आने जाने के लिये तांगा आदि की सवारी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के आवास करने के लिये एक धर्मशाला, आर्य समाज तथा मिल में रैस्ट हाऊस निर्मित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, दो शिवालय मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, सुगर मिल तथा डिस्टीलरी आदि अपनी पृथक ही विशेषता रखते हैं। यहाँ की टाफी व मिठाई अत्यधिक प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, आलू, तम्बाकु और चीनी की उत्पत्ति यहां पर अधिक मात्रा में पाई जाती है।

बैंक—यहाँ पर जनता की सुविधा के लिये स्टेट बैंक का प्रबन्ध है।

पिलखुवा—यह नगर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे की दिल्ली-मुरादाबाद लाईन पर देहली से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यातायात के लिये रिक्शा, ताँगे की पूर्ण व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहाँ केवल अधौडी वालों की धर्मशाला ही यात्रियों के ठहरने के लिये बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा कपड़े और सूत का व्यापार ही देखने योग्य हैं। यह सूती कपड़े व खद्दर का मुख्य केन्द्र है यहाँ पर हाथ से कागज बनाने का काम प्राचीन समय से होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ खद्दर का कार्य, गेहूं, चना, जौं, बाजरा, सरसों, अलसी का उत्पादन अधिक होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक, यूनियन बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

पुरा—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में जानी से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेल नहीं जाती अपितु जानी से रिक्शा, तांगों से आने जाने के पर्याप्त साधन हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये केवल एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शिवजी का बहुत बड़ा मन्दिर हैं जिसका निर्माण परशुराम जी के कर कमलों द्वारा हुआ। यह एक छोटा सा कस्बा है जहाँ पर फागुन की शिवरात्री व सावन की शिवरात्री को साल में दो बार मेला अवश्य लगता है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, जौ, बाजरा आदि की उत्पत्ति अधिक होती हैं।

प्रतापुर—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे की देहली-मेरठ रोड पर मेरठ से ८ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ पर आने जाने के लिये मेरठ से ताँगे, रिक्शा, व सिटी बस का पर्याप्त प्रबन्ध हैं।

विश्राम स्थल––यहाँ यात्रियों के विश्राम करने के लिये केवल एक रैस्ट हाऊस का प्रबन्ध है ।

दर्शनीय स्थल––यहाँ पर फैक्ट्री का एरिया है जहाँ अनेक प्रकार के कारखाने हैं जैसे कोका कोला व फैन्टा की फैक्ट्री है जो देखने योग्य है । यहीं से ६ कि० मी० की दूरी पर स्थित गगोल नामक ग्राम व तीर्थस्थान है ।

उत्पादित वस्तुयें––गेहूं, चना, जौं, बाजरा, ज्वार, अलसी का उत्पादन यहाँ अधिक होता हैं ।

बड़ौत––यह नगर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे की छोटी लाईन पर शाहदरा-सहारनपुर की लाईन पर दिल्ली से ४८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में यातायात के लिये तांगे, रिक्शा तथा टैक्सी का प्रबन्ध है ।

विश्राम स्थल––यहां पर ठाकुर जी द्वारा निर्मित धर्मशाला और मुसद्दीलाल की धर्मशाला तथा अतिथि भवन आदि यात्रियों के विश्राम के लिये बनी हुई है ।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, जनता वैदिक कालेज, छोटा जैन मन्दिर, बड़ा जैन मन्दिर तथा अन्य दर्शनीय स्थल यहां पर देखने के लिये मिलते हैं ।

उत्पादित वस्तुयें––यहां एक मंडी है तथा गेहूं, चना, जौं, बाजरा, गुड़, ज्वार आदि का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है ।

बैंक––यहां स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं ।

बिनौली—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में मेरठ से ३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तागों का पूर्णरूपेण प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल––यहां ठहरने के लिये जैन धर्मशाला, न्यादरमल जैन धर्मशाला, तथा शेरसिंह की धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने के लिये प्रबन्ध हैं ।

दर्शनीय स्थल––यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, ३ जैन मन्दिर, दो सनातन धर्म मन्दिर और एक देवी का मन्दिर भी दर्शनीय है । यहाँ से ३ कि० मी० दूर बरनावा में पांचों पाँडवों की एक पुरानी गुफा और लाक्षा गृह है । यहां नदी का किनारा है तथा १ जेन मन्दिर और चार ठाकुर द्वारे भी हैं । बाल्मीकि ऋषि जी का तपस्याश्रम तथा सीता जी का मन्दिर और एक गौशाला भी यहाँ पर हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा, गुड़, अलसी आदि अधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं ।

खरखौदा––यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हापुड़-मेरठ रोड पर हापुड़ से ११ कि० मी० तथा मेरठ से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में आने-जाने के लिये तांगे और रिक्शा का पूर्ण प्रबन्ध है ।

विश्राम स्थल––यहाँ पर यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है ।

दर्शनीय स्थल––यह एक छोटा सा कस्बा है फिर भी यहाँ पर बाबा बुद्ध दास जी की महान आत्मा, बाबा कव्वा सयाह, आनन्द निकेतन स्वामी आत्मा रामतीर्थ,

पाँडवों की गऊओं की खड़क थी इसलिये इसका नाम बिगड़कर खरखौदा पड़ गया, इत्यादि अनुपम स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, जौं, बाजरा, भिन्डी आदि का उत्पादन अधिक होता है।

बागपत—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित है जो एन. आर. रेलवे की शाहदरा बड़ौत की छोटी लाईन पर शाहदरा से ४० कि० मी० की दूरी पर है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा व ताँगों का पूरा प्रबन्ध है। यहाँ के खरबूजे अत्यधिक प्रसिद्ध है जिनकी अपनी पृथक विशेषता है।

विश्राम स्थल—यहाँ एक जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, शुगर मिल, जमुना का किनारा, तथा जमुना के किनारे पुख्ता घात पर एक विशाल मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—गुड़, गेहूं, चना आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

बृजघाट—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन. आर. रेलवे की दिल्ली-मुरादाबाद लाईन पर दिल्ली से ८७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा व तांगों का पर्याप्त मात्रा में प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये अनेकों आवास गृहों का प्रबन्ध है यथा:—गंगा शरण आलू वालों की धर्मशाला, दिल्ली वालों की धर्मशाला, श्री नानक चन्द्र घी वालों की धर्मशाला, लाला बिच्चूमल घी वालों की धर्मशाला, श्री अयोध्या प्रसाद चन्द्र किरन जौहरी की धर्मशाला, लाला जगन्नाथ देहली वालों की धर्मशाला, राम पत देहली वालों की धर्मशाला आदि धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ गंगा घाट पर स्नान किया जाता है तथा पूर्णिमा व अमावस्या को मेला लगता है क्योंकि यह बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है इसके अतिरिक्त यहां फुलौरी बाबा नाव वाले, डंडी स्वामी, साधु आश्रम, बामनाश्रम आदि अनेक महत्वपूर्ण स्थल दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गेहूं, चना ज्वार, बाजरा आदि अधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं।

बक्सर—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में दिल्ली-मुरादाबाद लाईन पर दिल्ली से ७२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां भी यातायात के लिये तांगों पूर्ण प्रबन्ध है। यहां का शुगर मिल बहुत बड़ा है जो सिम्भावली मिल के नाम से प्रसिद्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर आर्यसमाज का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर चीनी का मिल काफी बड़ा है जो कि दर्शनीय एवं प्रसिद्ध है तथा यहां आर्यसमाज व गौशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा आदि अधिक उत्पन्न होते हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आॅफ इण्डिया व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

मोदीनगर—यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन. आर. रेलवे की दिल्ली-सहारन पुर लाईन पर दिल्ली से ४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है तथा शहर में आने-जाने व घूमने के लिये रिक्शा व तांगे व टैक्सी पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर सेठ आनन्द स्वरूप की धर्मशाला जो कि रेलवे रोड पर है और इसके अतिरिक्त अवलोक होटल व मूनलाइट होटल आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यह एक औद्योगिक नगर है अतः यहाँ मोदी पोन फैक्ट्री आदि अनेकों फैक्ट्रियां यहाँ पर हैं तथा शुगर मिल व लक्ष्मी नारायण मन्दिर जो दिल्ली के बिरला मन्दिर की कुछ समानता करता है वह अति अनुपम एवं दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ के उत्पादन में चीनी, साबुन, आदि प्रमुख हैं। यहाँ मण्डी भी है तथा बड़ें-बड़े कारखाने हैं। सूती कपड़े, रेशमी कपड़े तथा वनस्पति घी भी यहां के प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आॅफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक व इलाहाबाद बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

सवाना—यह उत्तर प्रदेश मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे की दिल्ली और सहारनपुर लाईन पर मेरठ रेलवे स्टेशन से २५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। मेरठ से बसों द्वारा यहां आया जाया जाता है। शहर में आने जाने के लिये तांगे व रिक्शा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर मन्डी में पंचायती धर्मशाला है तथा दूसरी रस्तोगी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर गौशाला, चीनी का मिल, गुड़ की मन्डी, जैन मन्दिर, तथा आर्य समाज मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गुड़ (भेली), गुड़ खुरपापाड़, शक्कर, गल्ला आदि का उत्पादन अधिक होता है क्योंकि यहाँ गुड़ की मन्डी है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आॅफ इण्डिया एवं पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंक हैं।

सरधना—यह नगर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में एन० आर० रेलवे की दौराला से ११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहाँ बसों द्वारा जाया जाता है और नगर में आने-जाने के लिये रिक्शा एवं ताँगों का सुचारु रूप से प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें हैं यथाः—जैन धर्मशाला तारनो मुहल्ले में, तगाओं के मोहल्ले में बाबू प्यारे लाल जी की धर्मशाला, चौकड़ा बाजार में श्वेताम्बरी धर्मशाला, गंज में गंगा राम भट्टे वालों की धर्मशाला तथा देवी गंज में अग्रवाल धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का ईसाइयों का चर्च जो भारत में प्रसिद्ध है, जैन मन्दिर एवं आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर खद्दर का काम, गुड़ (भेली,बाल्टी), शक्कर, खाँड, गेहूं, मटर, अरहर आदि का विशेष रूप से उत्पादन होता है।

हापुड़—यह नगर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हापुड़ जंक्शन एन० आर० रेलवे की दिल्ली-मुरादाबाद की लाईन पर दिल्ली से ५७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर यातायात के लिये रिक्शा, ताँगा व टैक्सी का प्रबन्ध है।

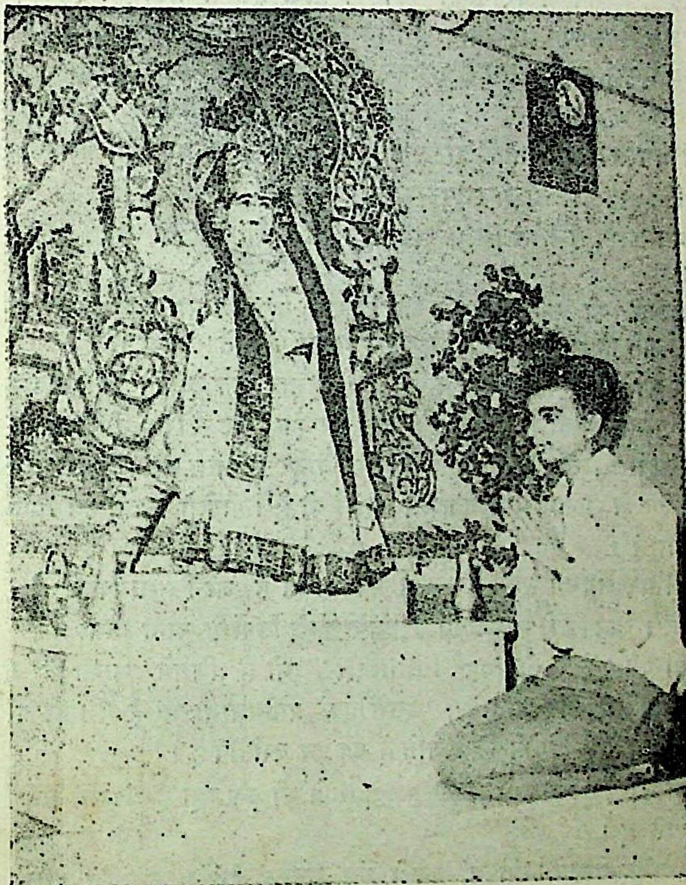
विशेष—यहाँ श्री सरस्वती कॉलिज हापुड़ 'ए' ग्रेड कॉलिज है स्नातकोत्तर कक्षायें प्रायः सभी प्रमुख विषयों में हैं विज्ञान की प्रयोगशालायें एवं भूगोल विषय में, "हिमालय अनुसंधान" पर इसका विशेष स्थान है।



(श्री सरस्वती कॉलिज छात्रावास की चार दीवारी जिसका शिलान्यास श्री मती प्रकाशवती (धर्मपत्नी स्व० श्री जमुना प्रसाद) कर रही हैं)

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के लिये अनेक धर्मशालायें हैं यथा:—रेलवे रोड पर प० छज्जू मल की धर्मशाला, मेरठ गेट पर अग्रवाल धर्मशाला, धर्मशाला एवं मन्दिर रामकटोरी देवी की रेलवे रोड पर, दिगम्बर जैन धर्मशाला कसेरठ बाजार, चण्डी रोड पर स्थित चण्डी मन्दिर धर्मशाला, रेलवे रोड पर जीवन लाल की धर्मशाला, पक्का बाग के पास जानकी देवी की धर्मशाला, मोती गंज में केला देवी की धर्मशाला, तहसील के समीप माहेश्वरी मन्दिर आदि धर्मशालाये हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेकों दर्शनीय स्थल हैं यथा:—आर्य समाज मन्दिर, गुरुकुल विद्यालय ततारपुर में, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, शहीद स्मारक (अगस्त १९४२ को श्री रामस्वरूप जी, श्री अंगन लाल जी, श्री माँगे लाल जी, श्री गिरधारी लाल जी) जैन मन्दिर, चैम्बर ऑफ कामर्स (भारत का प्रमुख व्यापार केन्द्र, गल्ला तथा सट्टे का केन्द्र है), यहां खत्ती (जो अक्सर घर-२ में हैं), सिक्खों का गुरुद्वारा, ९ कोल्ड स्टोर (जहाँ आलू भरे जाते हैं इसलिये आलू का मुख्य केन्द्र है), महेश्वरी मन्दिर, गाँधी आश्रम, श्री चण्डी मन्दिर जो अति भव्य एवं विशाल मन्दिर



दुर्गा मन्दिर (हापुड़)

है, महावीर दल भवन, सनातन धर्मसभा का मन्दिर, भैरो मन्दिर, देवी मन्दिर, अत्यधिक प्राचीन वलदेव जी का मन्दिर, कलक्टर गंज में हनुमान जी का मन्दिर, गिरधारी नगर गढ़ रोड पर स्थित बाबू राम चरन जनता राजकीय चिकित्सालय, श्री पंचायती गौशाला, चण्डी संस्कृत पाठ० आदि इनके अतिरिक्त एशिया की सबसे बड़ी व भारत में प्रथम अमेरिका के सहयोग से निर्मित अनाज की सबसे बड़ी टंकी (साइलो)

है और यहाँ गाँधी स्मृति पुस्तकालय व हिन्दी साहित्य परिषद् भी है यहां के कवि 'प्रेम निर्मल' खूब प्रसिद्ध हैं।

साइलों का वर्णन—इसकी स्थापना केन्द्रीय सरकार द्वारा सन् १९५६ ई० में हुई। साइलों एशिया में सबसे पहले यहां स्थापित हुआ। यह मेरठ रोड पर स्थित तथा गल्ला रखने का बहुत प्रसिद्ध प्लान्ट है इसके मध्य में २० विन हैं एक बिन की क्षमता ५०० टन है इस तरह से इसके अन्दर एक समय में १० हजार टन गल्ला रखा जा सकता है। इसमें ५ वर्ष तक अनाज सुरक्षित रह सकता है। विन के पास एक ड्राई हाउस है जिसके अन्दर गल्ला मशीन के द्वारा सुखाया जाता है। इसमें एक लिफ्ट है जिसका प्रयोग ऊपर आने-जाने के लिये किया जाता है। यहाँ एक हैड हाउस है जिसमें सब मशीने रखी जाती हैं। अगर किसी कारणवश बिजली फेल हो जाती है तो उसके लिये जनरेटर का भी प्रबन्ध है जिससे पुनः कार्य लिया जा सकता है। साइलों में समस्त कार्य मशीनों द्वारा होता है यहां तक कि बोरी भी मशीनों द्वारा ही सिलती हैं। साइलों का आउटपुट इतना ज्यादा है कि ८ घंटे में ५०० टन गल्ला स्टोर किया जाता है। इसके अन्दर माल भी मशीनों द्वारा लाया व ले जाया जाता है।

साइलों की ऊँचाई १५६ फीट है यह यहां की प्रमुख दर्शनीय है। यहाँ पर इसको देखने के लिये विदेशी भी काफी मात्रा में आते रहते हैं।

सम्पूर्ण डिपो की क्षमता करीब ७० हजार टन है जो कि गोदाम फ्लेट स्टोरेज और साइलों को मिलाकर है। यहां पर एक फ्लेट स्टोरेज भी है जिसमें मशीन द्वारा खुला अनाज अन्दर रखा जाता है तथा बाहर निकाला जाता है साइलों में माल अन्दर व बाहर ले जाने के लिये एक रेल लाईन भी है। साईलो प्लान्ट सब Imported धातु का बना है।

यहाँ पर लगभग २०० मनुष्य कार्य करते हैं जो कि आजकल F,C.T के के आधीन हैं। यह डिपो भारत वर्ष के सबसे अच्छे डिपो में माना जाता है।

यहाँ पर एक Training Institution भी हैं जिसमें भारत के बड़े बड़े ऑफिसर Training लेने आते हैं। इसमें एक प्रयोगशाला भी है जिसमें गल्ले की जाँच करने के बारे में प्रयोग किये जाते हैं यह सब दर्शनीय हैं।

यहाँ पर Food wored Degaigation भी बन रहा है जिसमें कई विदेशी भी काम करते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—पापड, कचरी, गुड़, शक्कर, गेहूँ, मटर, खाँड, दाल मटर, मेथी, सरसों, जौ, उड़द, आदि का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। घी मण्डी, पीतल का काम और खद्दर के कार्य का यह प्रमुख केन्द्र है यहाँ की मन्डी भी प्रसिद्ध है। इस समय इमारती लकड़ी का प्रमुख केन्द्र है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, यूनियन बैंक, सिंडिकेट बैंक, सैन्ट्रल डि० को-आपरेटिव आदि बैंक हैं।

हस्तिनापुर—(हस्तिनापुर) यह नगर उत्तर प्रदेश मेरठ जिले में मेरठ से ३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। इसका रास्ता मवाना से हस्तिनापुर को जाता है। शहर में रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये जैन धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यह कौरवों एवं पाण्डवों की जन्मभूमि व राजधानी है। शान्ति नाथ, कुन्थनाथ, अरहनाथ, भगवान की जन्म भूमि है। यहाँ का जैन मन्दिर, गंगा का किनारा, भसूमा ग्राम में प्राचीन जैन प्रतिबिम्बर (प्रतिमाए) विदुर जी की कुटी एवं, तपो भूमि, बूढी गंगा, द्रोपदी घाट, काशी घाट, आदि दर्शनीय हैं। यहाँ पर किले के खण्डहर भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें – गेहूं, चना, मक्का, बाजरा, गन्ना और सरसों का उत्पादन यहाँ अधिक मात्रा में पाया जाता है।

जिला मथुरा

(कोसीकला, गोवर्धन, गोकुल, नन्दगांव, बरसाना, मथुरा, महावन, [illegible] वृन्दावन बलदेव)

कोसीकला—यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में सी० आर० की देहली बम्बई लाईन पर देहली से लगभग १०२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे का विशेष प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के विश्राम करने के लिये अनेक धर्मशालायें हैं। यहाँ —हिन्दू विश्रान्त कुंज धर्मशाला, तालाब शाही धर्मशाला, ला० हरि प्रसाद जी की धर्मशाला, अग्रवाल पंचायती धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल – रत्नाबगार सागर बहुत प्रसिद्ध है जिसका नाम अब शाही तालाब है, गोमती कुण्ड पर गोपेश्वर मन्दिर जहाँ पर जगदम्बा भगवती का मन्दिर है, अत्यधिक प्राचीन दाऊ जी का मन्दिर, अत्यधिक वृहत जमुना नहर, सत्य नारायण जी की बगीची, आर्य समाज मन्दिर आदि अनेक दर्शनीय एवं अनुपम हैं। यहाँ पर नन्द बाबा का कोष रहता था इसलिये इसका नाम कोष स्थली से बिगड़ कर कोसी-कला हो गया है।

उत्पादित वस्तुयें—सरसों, गेहूं, जना, जौ, गुड़, रूई, सिंघाड़ा, कपास, बिनौला ज्वार, बाजरा, मूंग, उड़द, तुवर, मटर आदि का उत्पादन यहाँ अधिक मात्रा में होता है।

बैंक – स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंक हैं।

गोवर्धन—यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से २५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर आने जाने के लिये मथुरा से बस, ताँगे का भी अच्छा प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर ठहरने के लिये एक धर्मशाला है व पण्डों के यहाँ भी ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मानसी नाम का सरोवर, छोटे २ तीन मन्दिर, हरदेव जी का मन्दिर, लक्ष्मी नारायण का मन्दिर, मानसी देवी के दर्शन व चरण चिन्ह, आषाढ़ की पूर्णमासी एवं दीपावली को मेला लगता है तथा गोविन्द कुण्ड, कृष्ण कुण्ड ये तीनों पवित्र सरोवर परिक्रमा के समय मिलते हैं। कहा जाता है कि यह एक पर्वत के रूप में वसा हुआ है जिसकी दूरी ७ मील है इसकी परिक्रमा का अत्यधिक महत्व है सुना जाता है कि इसकी एक परिक्रमा करने पर १०८ यज्ञ के समान फल की प्राप्ति होती है। अतः यह स्थल दर्शनीय एवं पुण्य दायक है।

उत्पादित वस्तुयें—जौ, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा का उत्पादन यहाँ अधिक मात्रा में पाया जाता है।

गोकुल—यह नगर उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से ६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये ताँगा, रिक्शा, बस आदि की व्यवस्था है। यह छोटा सा परन्तु धार्मिक स्थान है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां यमुना के दूसरे तट पर कई दर्शनीय मन्दिर हैं। दो गौशाला भी है प्रथम श्री गोकल नाथ जी की गौशाला, द्वितीय माध वल्लभ यहाँ पर कृष्ण भगवान ने बचपन में अपनी लीलायें दिखाई थी।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा आदि का उत्पादन यहाँ अधिक पाया जाता है।

नन्दगांव—यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से ४५ कि० मी० की दूरी पर है। गोवर्धन नन्द गाँव, बरसाना से भी बस द्वारा जा सकते हैं। यहां पर आने जाने के लिये मथुरा से बसें मिलती हैं।

विश्राम स्थल—छोटी छोटी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर पर नन्द जी का मन्दिर है जहां नन्द, यशोदा, कृष्ण, बलराम, व राधा जी की मूर्तियां है तथा पामरी कुण्ड नामक सरोवर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तु—यहां गेहूं, चना, ज्वार बाजरा, जौ, आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बरसाना—यह नगर उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से ५५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे का प्रबन्ध है। राधा कृष्ण के उपासकों के लिये बरसाना तीर्थ स्थान है यह राधा जी की पितृ भूमि है।

विश्राम स्थल— यहाँ पर विनानी धर्मशाला, कलकत्ते वाली धर्मशाला, प्रिया कुण्ड धर्मलाला, व अन्य धर्मशालायें यात्रियों के ठहरने के लिये वनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, गहर वन, साँकरी खोर, व

अन्य कई मन्दिर दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त यहाँ राधा जी का जन्म स्थान है। वर्षा में यहां की पहाड़ियों की शोभा दर्शनीय है भादों शुक्ल पक्ष में अष्टमी से कृष्णलीला के मेले व फागुन शुक्ल पक्ष में नवमी से व्रज की प्रसिद्ध डण्डा मार होली होती है। यहा पर एक प्रसिद्ध प्रभात आश्रम है इसकी स्थापना आर्य समाज के प्रसिद्ध तपस्वी प्रचारक पं० जोरावर सिंह कवि ने की है। आप की धर्म पत्नी स्नातिक प्रभावती देवी महान प्रचारिका हैं।

उत्पादित वस्तुयें – गेहूं, चना ज्वार। बाजरा, अलसी आदि का उत्पादन यहाँ अधिक मात्रा में पाया जाता है।

मथुरा (मदुरा)—यह नगर स्वयं एक जिला है। यहाँ रेलवे जंकशन भी है तथा सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाइन पर दिल्ली से १४३ किलो मीटर की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ पर यातायात के लिये रिक्शा, ताँगा एवं टैक्सी का पूर्ण प्रबन्ध है। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है यहाँ से नम्बू स्वामी जी ने मोक्ष प्राप्त किया था। यह यमुना नदी के किनारे वसा हुआ है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक विश्राम-स्थल है यथा—पुल के पास राजा अवागढ़ की धर्म०, नया वाजार में कलकत्ते वालों की धर्म० कन्नीबाई की धर्मशाला, विलासपुर की धर्मशाला, दिल्ली वालों की धर्मशाला, किले के ऊपर सेठ सागर वालों की धर्मशाला, चौक वाजार में सेठ गंगोलीमल जी की धर्म-शाला, वंगाली घाट पर राजा गिलोई की धर्मशाला, मारुगली में तेजपाल गोकुल दास जी की, जूना मन्दिर प्रया ग घाट पर रामगोपाल लक्ष्मीनारायण भालाड़ी की, हरमुखराय दुलीचन्द हाथरस वाले की धर्मशाला, नया बाजार में हरदयाल विष्णुदयाल जी कलकत्ते वालों की धर्मशाला, छाता बाजार में दामोदर भवन, अहमदाबाद वालों की धर्मशाला, असकुण्डा बाजार में दामोदर दास वापी दास जी की धर्मशाला, वंगाली घाट पर बिहारी लाल जी की धर्मशाला तथा कलकत्ते वालों की धर्मशाला, रामघाट पर कुंजलाल विशेश्वरदास जी की धर्मशाला, राम घाट पर नैनसी की धर्मशाला, सेठ घनश्यामदास रूपकिशोर की धर्मशाला, महेश्वरी धर्मशाला वृन्दावन दरवाजा, छाता वाजार में मंगल दास गिरधर दास जी की धर्मशाला, करमसीदास कारामहल विश्राम घाट, जवलपुर वालों की धर्मशाला सतघड़ा आदि अनेक धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल – यहाँ ब्रह्माचर्याश्रम और भारतीय दिगम्बर जैन संघ का प्रधान कार्यालय हैं अतः यहाँ यात्रियों को एक वार अवश्य आकर दर्शन करने चाहिये क्योंकि यहाँ अनेक पवित्र. अनुपम एवं दर्शनीय स्थल एवं मन्दिर हैं यथा—द्वारकाधीश जी का मन्दिर, कृष्ण जन्मभूमि, कंस जन्मभूमि, मन्दिर श्री ध्रुव टीला, मन्दिर श्री दाऊ जी, मन्दिर श्री गायत्री माता, केशवदेव जी का मन्दिर, यमुना महारानी मन्दिर, ब्रजानन्द जी की कुटी, विरला मन्दिर, गुरु ब्रजानन्द की कुटी, भगवान पार्श्वनाथ जी का स्तूप, जैन मन्दिर, प्रसिद्ध यमुना जी के नदी किनारे दर्शनीय घाट (इनमें विश्राम

घाट मुख्य है), गीता मन्दिर, महावन, बलदेव, रंगनाथ का मन्दिर, मदन मोहन मन्दिर, गोपीनाथ मन्दिर, जम्बू स्वामी का विशाल मन्दिर, अजित नाथ भगवान की मनोहर एवं विशाल मूर्ति आदि अतीव दर्शनीय हैं। यहां दो आर्य समाज मन्दिर है जहाँ एक में कन्यायें शिक्षा प्राप्त करती हैं जो बंगाली घाट को जाते हुए फाटक के पास स्थित हैं। दूसरा मन्दिर चौक में हैं जहाँ छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। इनके अतिरिक्त व्रजानन्द कुटी हैं जहाँ पर महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द जी के चरण में रह कर जीवन के तीन वर्ष व्यतीत करके वेद का ज्ञान प्राप्त किया था तथा यहीं पर बम्बई के सेठ प्रतापभाई शूर जी बल्लभदास जी ने एक लाख रुपये की धनराशि व्यय करके विशाल स्मारक बनवाया जिसको दूर से देखा जा सकता हैं यह स्मारक शहर के मुख्य बाजार विरजानन्द मार्ग पर स्थित है। यहाँ मगलवार को शहर की छुट्टी रहती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—कपास, चना, बाजरा, मटर, सरसों, गुड़, तेल आदि का उत्पादन यहां अधिक होता है। श्री फूलसिंह के भाई गुलफाम के पेड़े प्रसिद्ध है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, गोविन्द बैंक आदि बैंक यहाँ पर हैं।

रूप साहित्य प्रकाशन—मथुरा वृन्दावन मार्ग पर वैदिक धासना आश्रम है यहाँ से प० ईश्वरी प्रसाद प्रेमी बड़ी लगन से वैदिक साहित्य का प्रकाशन करते हैं यहीं से आर्य समाज की मासिक पत्रिका 'तपोभूमि' का प्रकाशन होता है।

महावन—यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से ११ किलो मीटर की दूरी स्थित हैं। यहाँ रेलवे स्टेशन नहीं है अपितु मथुरा से आने जाने के लिये बस, ताँगा व रिक्शा का प्रबन्ध है। इसे पुराना गोकुल भी कहते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के लिये पण्डों के यहाँ ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ नन्द भवन, रपनरेली जी का मन्दिर, चौरासी खम्भा आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, ज्वार, बाजरा, जौं आदि का उत्पादन अधिक होता है।

राया—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में एन० ई० आर० की मथुरा-हाथरस लाईन पर मथुरा से १५ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है यहां रिक्शा, तांगे आदि सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां कन्हैया लाल जी की धर्मशाला व झमकी लाल जी की आदि धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देवी जी का मन्दिर, गणेश बाग, आनन्द बाग, नेहरु पार्क, नन्द बाबा का खजाना, व्रजभूमि, गऊ का भंडार आदि दर्शनीय हैं।

विशेष—यहां से कारब होते हुए दाऊ जी को रास्ता जाता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहा गेहूं, गुड़, धान, ईख की अधिक पैदावार होती है।

वृन्दावन—यह नगर उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से १३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां आने-जाने के लिए मथुरा से रिक्शा, ताँगेएवं बस का पूर्णरूपेण प्रबन्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के विश्राम के लिए अनेक धर्मशालाओं, का प्रबन्ध है यथा—स्टेशन के पास तेजपाल जमुना दास जी की धर्मशाला, तारा चन्द रामनाथ ज्ञान गुदडी, गोविन्द बाग बीच वाली गली में राधा कृष्ण भवन, सूरजमल जयनारायण पत्थर पुरा, मिर्जापुर वालों की धर्मशाला, कलकत्ते वालों की धर्मशाला, सेठ हर गुलाल आदि की धर्मशालयें हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहां अनेको दर्शनीय स्थल भी है जैसे–विहारी जी का मन्दिर रंग जी महाराज का मन्दिर, राधा कृष्ण जी का मन्दिर, मथुरा-वृन्दावन के मध्य में बिरला जी का मन्दिर दर्शनीय है यहां गुरुकुल महाविद्यालय भी है जो आर्य समाज द्वारा चलाया जा रहा है तथा जिसकी स्थापना महात्मा स्वामी नारायण जी ने की थी ।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, आदि का उत्पादन यहां अधिक होता है । यहां भी छुट्टी का दिन मंगलवार है ।

बलदेव—यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में मथुरा से २१ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है । यहाँ रेलवे स्टेशन नहीं है अपितु यातायात के लिए मथुरा से बस-ताँगों का प्रबन्ध है । बलदेव जी को दाऊ जी भी कहते हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए छोटी-२ धर्मशाल यें तथा पण्डों के यहां ठहरने का प्रबन्ध है ।

दर्शनीय स्थल—यहां दाऊ जी का मन्दिर तथा क्षीर सागर नामक एक झील दर्शनीय है ।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चना, बाजरा, जौ, ज्वार की पैदावार अधिक पाई जाती हैं ।

"जिला मुरादाबाद

(मुरादाबाद, अमरोहा, काँठ, चन्दौसी, धनोरा मण्डी, सम्भल, गजरौला)

मुरादाबाद—यह स्वयं उत्तर प्रदेश का एक जिला है एन० आर० की दिल्ली बरेली लाईन पर दिल्ली से १६० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है । यहां रेलवे स्टेशन भी है तथा शहर में यातायात के लिए रिक्शा, ताँगा एवं टैक्सी का प्रबन्ध है । यहां एक मण्डी हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के लिये अनेकों आवास-गृह बने हुए है यथा-स्टेशन से २ फर्लांग पर लाला सावलदास मदन लाल की धर्मशाला बाजार गंज में, जवाहर लाल जी की धर्मशाला वुद्ध बाजार में, गुलजारी मल की धर्मशाला स्टेशन पर, कोठी वालों की धर्मशाला बाजार गंज में, मुकुट बिहारी लाल मदन स्वरूप की धर्म शाला कचहरी रोड पर, विक्ट्री होटल, एवं न्यू कंसल होटल, मान सरोवर होटल, पूनम होटल, मोती महल होटल, वैष्णव होटल, मुस्लिम सराय आदि विश्राम करने के लिए अच्छे से अच्छे स्थान हैं ।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, अनाथालय, कलई के बर्तनों के कारखाने, राम गंगा, टी० बी० क्रिश्चियन होस्पिटल, हाथी मन्दिर, चौरासी घन्टे का मन्दिर, जैन मन्दिर, पुलिस ट्रेनिंग कालिज' अश्व पालन केन्द्र, शुगर मिल, श्री रामगंगा गौशाला आदि स्थल यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, सरसों, मक्का, अलसी, आदि का उत्पादन यहां अधिक होता है। कलई के बर्तन, लिहाफ व छींट तथा सूती कपड़ा बर्तन यहां के प्रसिद्ध हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया. सैन्ट्रल बैंक, पजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, बरेली बैंक, बरेली कार्पोरेशन आदि जनता की सहायता के अनेकों बैंक हैं।

अमरोहा—यह नगर उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में एन० आर० की दिल्ली-मुरादाबाद लाईन पर दिल्ली १३० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है तथा शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे का भी प्रबन्ध है। यहाँ मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के लिए ठंडी सड़क पर अग्रवाल धर्मशाला माँ कोट धर्मशाला, स्टेशन से १ किलो मीटर दूर सिनेमा के पास अनेकों और भी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, वासुदेव पार्क, भीसमन्दिर, टन्डन मन्दिर शुगर मिल आदि अनेकों दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, गुड़, खाण्ड, राब, जौ, मटर, अरहर, तिल, खादी का कार्य आदि पाया जाता हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, बरेली कार्पोरेशन आदि बैंक हैं।

कांठ—यह उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में मुगलसराय से ६५७ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां यातायात के लिए रिक्शा, ताँगा है। यहां पर मण्डी भी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों ठहरने के लिए राम स्वरूप जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, पुस्तकालय, डिग्री कालिज भी यहां के दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, चावल, खांड, शक्कर, दाल, गुड़, अरहर, चीनी, खद्दर, आदि का उत्पादन अधिक होता हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया की शाखा है।

चन्दौसी—यह उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में एन० आर० अलीगढ़ की बरेली लाईन पर अलीगढ़ से ६८ किलो मीटर की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ पर यातायात के लिए रिक्शा, तांगे का टैक्सी प्रबन्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास गोविन्दराम सीताराम जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ देसी घी की मन्डी दर्शनीय है और यहां पर संस्कृत पाठशाला रघुनाथ ब्रह्मचर्याश्रम भी है।

उत्पादित वस्तुयें—अरहर, दाल-अरहर, मूंगफली, तेल, देसी खांड, शीरा, देसी-घी, मटर, गेहूँ, मक्का, चना, सरसों, तिल, बाजरा, सौंफ, धनिया, पोस्त आदि का उत्पादन यहां अधिक होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि बैंक यहां पर हैं।

धनौरा मन्डी—यह उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में एन० आर० की मुरादाबाद-सम्भल लाईन पर मुरादाबाद से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर यातायात के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगे का प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये जैन धर्मशाला, गढ़ी धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, जाटव धर्मशाला आदि और भी अनेकों धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां खांड, गुड़ व अनाज की मन्डी दर्शनीय है, कपड़े का काम थोक का होता है, आर्य समाज मन्दिर, महादेव मन्दिर के पास रामलीला का मैदान है, वहीं एक तालाब है जिसके ऊपर किनारे से लगा एक बाग है, जहां साधू-सन्यासी निवास करते हैं, वह कुटी सुन्दर भी है तथा पौराणिक सत्संग भी होता है, यह सब दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, जौं, ज्वार, मटर आदि का उत्पादन अधिक होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

संभल—यह नगर उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में एन० आर० की मुरादाबाद-संभल हातिमगंज लाईन पर मुरादाबाद से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर यातायात के लिये रिक्शा एवं तांगे का प्रबन्ध है। यहां एक मन्डी है जो सोमवार को बन्द रहती है।

विश्राम स्थल—यहां पर एक शहर में धर्मशाला है, दूसरी स्टेशन के पास धर्मशाला है जहां यात्री आकर विश्राम करते हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर का भवन दर्शनीय हैं, हरिहर मन्दिर जो पृथ्वी राज चौहान के समय का ऐतिहासिक मन्दिर है लेकिन अब लगभग १०० वर्षों से यह जामा मस्जिद के रूप में है इसके अतिरिक्त नेमसार, मनोकामना, सूर्य कुण्ड, कुरुक्षेत्र, वंशगोपाल, चक्की का पाट (जो पृथ्वीराज चौहान के जमाने का है) आदि ऐतिहासिक एवं सुन्दर तीर्थ स्थान हैं यह सब दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—खाँड, गुड़, राब, सरसों, अरहर, उड़द, मूंगफली-दाना, मटर, शीरा, तम्बाकू, लकड़ी का काम, खादी का काम आदि का उत्पादन यहां अधिक मात्रा में पाया जाता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया तथा बरेली कारपोरेशन बैंक आदि बैंक हैं।

गजरौला—यह नगर उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में एन० आर० की दिल्ली-मुरादाबाद लाईन पर दिल्ली से १०७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां से अमरोहा को सड़क जाती है तथा रिक्शा, तांगों का यातायात के लिये अच्छा प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीयस्थल—यहां पर अनेकों धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं जैसे—हनुमान जी का मन्दिर।

जिला रायबरेली

(राय बरेली, जायस, बछरावाँ, लालगंज)

राय बरेली—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में रायबरेली स्वयं एक बहुत प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० की इलाहाबाद-रायबरेली लाईन पर इलाहाबाद से १२२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे व टैक्सी आदि की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के लिए बहुत सी धर्मशालाएं बनी हुई हैं। जैसे कन्हाई सहाय जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, गाँधी धर्मशाला स्टेशन के सामने व स्टेशन से २ कि. मी. दूरी पर चौक बाजार में धर्मशाला आदि प्रमुख धर्मशालाएं हैं। जिसमें यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर बहुत सुन्दर बना हुआ है, जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे-२ मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां एक अनाज की बहुत बड़ी मन्डी हैं। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूँ, तिल, नीम का तेल, अलसी, महुआ, सरसों आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया, व इलाहाबाद बैंक, आदि की ब्रांच स्थित है। जो कि व्यापार की दृष्टि से अत्यधिक सुविधा योग्य है।

जायस—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में रायबरेली जिले के एन० ई० आर० की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से २१२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे आदि की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के लिए शहर में एक बहुत सुन्दर व बड़ी धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्रीजन रात्रि में विश्राम कर सकते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां अनाज की मन्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज तिलावी, महुआ-सीड, नीम-सीड, अरहर, खल आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर कोई बैंक नहीं हैं। व्यापार को चलाने के लिये रायबरेली के बैंकों द्वारा काम किया जाता है।

बछरावां—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में रायबरेली जिले के एन० आर० की रायबरेली-लखनऊ लाईन पर रायबरेली से ३० कि० मी०, व लखनऊ से ४७ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के लिए शहर में, व स्टेशन के पास बहुत बड़ी-२ धर्मशालाएं बनी हुई हैं। जिसमें यात्रीजन रात्रि को विश्राम कर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। जिनमें से हनुमान जी का मन्दिर बहुत पूज्य माना जाता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ अनाज की मन्डी है। इस क्षेत्र की प्रमुख उपज गेहूं, तिल, नीम का तेल, अलसी, महुआ, सरसों आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ इण्डिया, इलाहाबाद बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

लालगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में राय बरेली जिले के एन० आर० की कानपुर-ऊंचाहार लाईन पर कानपुर से ८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा तांगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में दो धर्मशालाएं बहुत बड़ी-२ बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से स्थान व मन्दिर देखने योग्य हैं। इनमें आर्य समाज मन्दिर, इसके अतिरिक्त बालेश्वर महादेव जी का मन्दिर ३ कि० मी० दूर जो बहुत प्राचीन है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, ज्वार, तिल आदि।

बैंक—रायबरेली के बैंकों द्वारा काम होता है।

जिला रामपुर

रामपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में रामपुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन. आर. की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ६१७ कि. मी. व मुरादाबाद

से ३० कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, टैक्सी, तांगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिए धर्मशालाएं व होटल आदि उपलब्ध हैं। जिनमें से प्रमुख हरनामसिंह शंकर दास जी की धर्मशाला, सदर बाजार में अग्रवाल धर्मशाला, टूरिस्ट होटल, एवन ए-शाही होटल फोन न० २९९ आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में बहुत से दर्शनीय, धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान हैं। यहां नवाब का महल, बेगम का महल, आर्य समाज मन्दिर, सेक्रेटिरिएट, गौशाला आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर में चाकू बहुत अच्छे बनते हैं, यहां का बाजार बहुत सुन्दर लगता है। यह अनाज की प्रसिद्ध मन्डी है। यहां दियासलाई के कारखाने सूती कपड़े के मिल व लकड़ी का व्यापार बहुत सुचारु रूप से होता है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज अरहर, दाल-अरहर, गेहूं, चना, ज्वार, मक्का, मिर्च आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, यू० पी० को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला लखनऊ

(लखनऊ, मोहनलाल गंज)

लखनऊ—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त की राजधानी है। और यह शहर बहुत ही सुन्दर है। यह रेलवे का बहुत बड़ा जंकशन है। यह एन. आर. की अमृतसर-मुगलसराय लाईन पर अमृतसर से ८४० कि० मी० व कानपुर से ७२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में घूमने के लिये सिटी बस, टैक्सी, आटो रिक्शा, तांगे व रिक्शा की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये बहुत बड़ीं-२ व सुन्दर धर्मशालाएं व होटल बने हुए हैं। जिनमें यात्रियों को आस-पास की व नहाने-धोने, पानी, बिजली आदि की सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। जिनमें से मुख्य छेदी लाल जी की धर्मशाला अमीनाबाद पार्क के सामने, श्री प्रभु दयाल जी जैन की धर्मशाला अहियागंज में, जैन धर्मशाला भोलानाथ जी के चौक में, मुन्नालाल बाबा कागजी की धर्मशाला चार बाग बड़े स्टेशन के पास, गया प्रसाद जी की धर्मशाला चार बाग बड़े स्टेशन के पास, विनायक धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला लाट्सरोड, कार्लटन होटल-१ फोन न० २७२६८, इन्डिया होटल एन्ड रैस्टोरेन्ट फोन न० २६१३४, उत्तर प्रदेश एन्ड रैस्टोरैन्ट फोन न० २६८७१, एम० एल० जैन धर्मशाला फोन न० २९३७२, कार्लटन होटल (प्रा० लि०) शाहनजफ रोड-१ फोन न० २४०२१, २४०२३, पी० बी० एक्स० जंकशन लाईन फोन न० २४०२२, २४०२४, २४०२५, काश्मीरी होटल २६०५८, क्वालिटी

रेस्टोरेन्ट २३३३१, कृष्णा रैस्टोरैन्ट फोन न० २३४८८, ग्रेट इन्डिया होटल फोन न. २८१९०, चाइनावार एवं रेस्टोरेन्ट फोन न० २३८११, एम्पायर होटल-१ फोन न० २७६८०, जैभारत सिन्धी हिन्दू होटल एन्ड रेस्टोरेन्ट चार बाग-१ फोन न० २६४०६, डासमल जवाहर होटल फोन न० २३६४०, दुर्गा रेस्टोरेन्ट फोन न० २७८१३, न्यू इन्डिया होटल फोन न० २४४७८, न्यू इम्पिरियल होटल २६७२२, न्यू जनता होटल फोन न० २४६३१, न्यू राजाबार होटल फोन न० २८४५२, न्यू सिन्ध रेस्टोरेन्ट फोन न० २७००२, पेशावर रेस्टोरेन्ट फोन न० २३५१३, बंगाल होटल फोन न० २५११८, बंगाली होटल फोन न० २२७५१, मारवाड़ी होटल फोन न० २७८४१, मोतीमहल रेस्टोरेन्ट फोन न० २७०२६, मोहन होटल फोन न० २६६४६, रंजना रेस्टोरेन्ट फोन न० २५६४६, राज कमल होटल फोन न० २४१८४, क्वालिटी रेस्टोरेन्ट फोन न० २००७७, रंजना रेस्टोरेन्ट फोन न० २००७३, रेनबो होटल एन्ड रेस्टोरेस्ट फोन न० २५८०१, वर्मा रेस्टोरेन्ट फोन न० २७१५७, विष्णु गोपाल होटल फोन न० २४२१६, सैन्ट्रल होटल फोन न० २२५२५, स्टैन्डर्ड होटल फोन न० २५६६७, हिन्दू होटल फोन न० २२७५१, टूरिस्ट होटल फोन न० ५३३१३, डिलाइट होटल फोन न० २४८८०, आदि धर्मशालाएं व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान, व मंदिर दर्शनीय हैं। जैसे—आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, आर्य अनाथालय, विधान सभा, मीना बाग, चिड़िया घर, अजायब घर, भूलभुलैयां, बड़ा इमामबाड़ा, छोटा इमाम बाड़ा, बनारसी बाग, रेजीडैन्सी, शहीद स्मारक, गोमती नदी, पक्का पुल, उत्तर प्रदेश (नारायण स्वामी भवन), अमीनाबाद पार्क, आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय, ५ मीरा बाई मार्ग पर (यहां से साप्ताहिक 'आर्य मित्र' का प्रकाशन होता है), गोशाला आदि स्थान दर्शनीय हैं।

प्रयोगशाला—यहाँ राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान, औद्योगिक विष विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय भारतीय औषधि वनस्पति संगठन, केन्द्रीय भेषज अनुसंधान संस्था आदि प्रमुख प्रयोग शाला हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गल्ले की बहुत बड़ी मन्डी है। यहाँ पर कागज का काम बहुत अच्छा होता है। इस शहर की चिकन, कढ़ी हुई साडियाँ, कुरते व पल्ले की टोपियां बहुत प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गुड़, शक्कर, खांड, तेल, मूंगफली, अलसी, तिल, दालें, चावल आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर जनता की सुविधा व व्यापार को चलाने के लिये इलाहाबाद बैंक, बैंक अफ बड़ौदा, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, हिन्दुस्तान कॉमर्शियल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, न्यू बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक आफ इण्डिया, यूनाईटेड कॉमर्शियल बैंक, यूनाईटेड बैंक आफ इण्डिया, ट्रेडिंग एन्ड बैंक ह.उस, यू० पी० को-आपरेटिव बैंक आदि बैंक अत्यधिक सुविधा योग्य हैं।

मोहनलाल गंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में लखनऊ जिले के एन० आर० की मुगलसराय-लखनऊ लाईन पर लखनऊ से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे आदि की सवारियों का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्रीजन रात्रि को विश्राम कर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान जी का मन्दिर व अन्य कई छोटे-२ मन्दिर, दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य उपज गुड़, तिल, गेहूं, चना, जौं, आदि का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहां कोई बैंक नहीं है। लखनऊ के बैंकों द्वारा काम होता है।

जिला "लखीमपुर-खीरी"

(लखीमपुर-खीरी, गोलागोकरन नाथ, मेगलगंज)

लखीमपुर-खीरी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में लखीमपुर-खीरी स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० ई० आर० की लखनऊ-बरेली लाइन पर लखनऊ से १२४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत बड़ी-बड़ी व सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई है जैसे बाथूम वैश्य धर्मशाला स्टेशन के पास, हीरा लाल जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, जनता धर्मशाला पूरब की ओर मेन रोड बाजार में आदि प्रमुख धर्मशालायें है। जिनमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त है। यहाँ सरदार होटल, कपूर होटल, कृष्णा होटल, आदि प्रमुख होटल है जिनमें यात्रियों के ठहरने व खाने पीने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय है। जैसे शंकर जी का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, शंकर जी का प्राचीन मन्दिर, संकटा देवी जी का प्राचीन मन्दिर, देवी काली का स्थान व मन्दिर, त्रिलोकी नाथ जी का मन्दिर। यहाँ पर सुन्दर नदी भी है जो शहर से ८ किलो मीटर के फासले पर स्थित है) शुगर मिल, (खीरी में) आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गल्ले की काफी बड़ी प्रसिद्ध मण्डी है। इस शहर में लकड़ी का काम बहुत अच्छा होता है। इस क्षेत्र की विशेष उपज जूट, देशी घी, धनिया, मक्का, अण्डी, मूंगफली, सरसों, लाही, गेहूं, चना, धान, जौं, ज्वार, खल, गुड़, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिये बैंकों की आवश्यकता होती है। इस नगर में सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

गोलागोकर नाथ—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में लखीमपुर-खीरी के एन० ई० आर० की लखनऊ-बरेली लाईन पर लखनऊ से १६६ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, टैक्सी, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के विश्राम करने के लिये बहुत बड़ी-२ सुन्दर धर्मशालायें बनी हुई है। जिनमें विशेष श्री बद्री प्रसाद जी की धर्मशाला तालाब पर, साहुसाहब की धर्मशाला तालाब पर, पुत्तन लाल जी की धर्मशाला तालाब पर, श्री हंस राम जी की धर्मशाला तालाब पर, श्री मदनलाल रघुनन्दन प्रसाद जी की धर्मशाला तीर्थ पर आदि विशेष धर्मशालायें है जिनमें यात्रियों को आस पास सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। यहां एक विशाल 'सरोवर' है जिसके पास 'गोकरन नाथ महादेव जी का विशाल मन्दिर' है जो देखने योग्य है। आर्य समाज मन्दिर, शिवशंकर जी का मन्दिर आदि विशेष स्थान जो वहां बहुत पूज्य माने जाते ई। देखने योग्य है यहां से ११·२ कि० मी० दूर भूतनाथ जी का मन्दिर है। सावन के हर सोमवार को व साल मे १८ मेले लगते है।

विशेष—यहां एक विशाल शिवलिंग है इसके बारे में कहा जाता है कि शिव-जी की पिन्डी को रावण कैलाश पर्वत से उठाकर लाया था और लंका की ओर जा रहा था तो बीच में गोला शहर पड़ जाता है। वह शिवजी की पिन्डी को रखकर भगवान शंकर की स्तुति करने में मग्न हो गया। स्तुति करने के पश्चात जब वह उसे उठाने लगा तो वह वहाँ से हिली तक भी नहीं इसलिये इसका नाम गोला गोकरन नाथ पड़ा। तभी से यह बहुत बड़ा तीर्थ बन गया।

उत्पादित वस्तुयें—यहां चीनी का बहुत बड़ा मिल है जो एशिया में सबसे बडा है। जो प्रतिदिन ५००० बोरी चीनी की तैयार करता है। और १। लाख मन गन्ना प्रतिदिन निकाल देता है। यह करीब ६ कि० मी० दूर अहमदनगर में हैं। यहाँ गल्ले की बहुत बड़ी मण्डी है। इस क्षेत्र की विशेष उपज गेहूँ, चना, जौं, ज्वार, बाजरा, तिल, गुड़, शक्कर, गन्ना आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है। यहाँ लकड़ी का काम भी बहुत अच्छा होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, की प्रमुख शाखा है।

मेगलगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के लखीमपुर-खीरी जिले में एक छोटे से कस्बे के रूप में बसा हुआ है। शहर में आने जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये 'विश्राम धर्मशाला' बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें उपलब्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जैसे देवी जी का मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर, गोमती नदी ३ किलो मीटर की दूरी पर, इनके अतिरिक्त बाबा पार्श्वनाथ जी का मन्दिर गोमती तट पर, जहां हर अमावस्या को मेला लगता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की विशेष उपज गेहूं, चना, जौं, तिल, दालें आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

जिला "शाहजहांपुर"

(शाहजहांपुर)

शाहजहाँपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में शाहजहाँपुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ४८० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में बाहर से आने जाने वाले मुसाफिरों के ठहरने के लिये बहुत बड़े-बड़े होटल व धर्मशालायें बनी हुई है। जिनमें विशेष 'कन्हाई लाल कपूर जी की धर्मशाला चौक के पास, श्री द्वारका प्रसाद दयाल जी की धर्मशाला सदर बाजार में, डा० सुदामा जी की धर्मशाला, ज्वाला देवी जी की धर्मशाला, धोबी धर्मशाला, मानसरोवर होटल, महाशय होटल, श्री चन्द्र होटल आदि विशेष धर्मशालायें व होटल है। जिनमें यात्रियों को आस पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जैसे आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, बरखण्डी नाथ जी मन्दिर, फूलमती मन्दिर भिक्षु आश्रम (जो सुखदेवानन्द जी का बनवाया हुआ है) फैक्टरी नगरपालिका, श्री गोपाल गौशाला आदि हैं।

विशेष—महान क्रान्तिकारी अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। वे आर्य समाज की देन थे। आर्य समाज मन्दिर ही उनका घर था। अमर शहीद अशफाक उल्ला खान भी उनसे आर्य समाज मन्दिर में मिलते थे। कांकारी षड़यन्त्र में इन दोनों देशभक्तों को फांसी दी गई थी।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अनाज की काफी बड़ी प्रसिद्ध मण्डी है। इस शहर में चीनी का उद्योग, रेशमी कपड़े का उद्योग अधिक होता है। इस क्षेत्र में विशेष उपज गेहूँ, चना, जौं, गुड़, तुवर, शक्कर, धान, चावल, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिये इलाहाबाद बैंक, बरेली कारपोरेशन बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, करनाटक सेठ बैंक, आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला "सुल्तानपुर"

(सुल्तानपुर)

सुल्तानपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में सुल्तानपुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। एन० आर० की इलाहाबाद-फैजाबाद लाईन पर इलाहाबाद से ९९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा व तांगा की सवारियां उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस शहर में बाहर से आने-जाने वाले मुसाफिरों के ठहरने के लिए बहुत बड़ी-बड़ी धर्मशालायें है। जिनमें स्टेशन के पास ४ किलो मीटर पर मारवाड़ी धर्मशाला और शहर में भी एक धर्मशाला उपलब्ध हैं। जिनमें यात्रियों को सभी सुविधायें प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य है जिनमें संग्राहलय, नेहरु पार्क, गगरी वाल, प्रताप बाग, गांधी पार्क, सिक्खों का गुरुद्वारा, आर्य अनाथालय व आर्य समाज मन्दिर आदि हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तिलहन, नीमगुदी, महुवा-फूल, महुवा सीड व आलू आदि का अधिक उत्पादन होता है। यहाँ पर प्रसिद्ध मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया व सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया आदि बैंक हैं।

जिला "सीतापुर"

(सीतापुर, नेमीसारन, मिश्रंख तीर्थ, महौली)

सीतापुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में सीतापुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० की शाहजहाँपुर-मुरादाबाद लाईन पर शाहजहाँपुर से ९० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिए टैक्सी, तांगा व रिक्शाउपलब्ध हैं। तोताराम सिन्धी (देशी घी की) प्रसिद्ध दुकान है।

विश्राम स्थल—इस शहर में बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिए बड़ी २ धर्मशालायें उपलब्ध हैं। जिनमें नई धर्मशाला स्टेशन से २ कि० मी० आँकगंज (सेठ बुद्धराम की), पुरानी धर्मशाला (सेठ खूब चन्द जी की) इस धर्म शाला में औषधालय भी हैं। जहां पर मुफ्त दवा मिलती है, मारवाड़ी धर्मशाला, यह स्टेशन से २ कि० मी० की दूरी पर है, लल्लू सेठ की धर्मशाला यह धर्मशाला विजय लक्ष्मी नगर में है, पंजाबियों की धर्मशाला यह धर्मशाला आर्य नगर में है। इन धर्मशालाओं में यात्रियों के लिए सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक एवं अन्य स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें आर्य समाज मन्दिर (घास मण्डी में है) आंखों का अस्पताल, आर्य अनाथालय, बाबा श्याम नाथ का मन्दिर (पुराने सीतापुर में) सावन के महीने में हर सोमवार को मेला लगता है। देवी का मन्दिर भी दर्शन करने व पूजा करने का सुन्दर स्थान

है। हनुमान जी का मन्दिर, इन्टर कालिज का मन्दिर, जंगली नाथ का मन्दिर और सिक्खों का गुरूद्वारा (वाजार में), दर्शन हेतु स्थान है। यहाँ पर यज्ञशाला (आर्य समाज में), पुस्तकालय (आर्य समाज में), दयानन्द विद्या मन्दिर स्कूल, जूट का कारखाना व प्रिजांपोल सोसाइटी गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन तिलहन, गुड़, चीनी, जौ, उड़द, मटर, गेहूं, जूट, चना, दाल आदि है। यहाँ पर लकड़ी का भी कारखाना देखने योग्य है और दरियां भी अच्छी बुनी जाती है। यहाँ की गल्ला मण्डी भी प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट वैंक ऑफ इण्डिया, सैन्ट्रल वैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल वैंक ऑफ इण्डिया और इलाहाबाद आदि वैंक हैं।

नेमीसारन—यह शहर उत्तर प्रदेश प्रान्त के जिला सीतापुर में स्थित है। यह एन० आर० ई० की वालामऊ-सीतापुर लाईन पर सीतापुर से ३४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है सीतापुर से यहां पर आने जाने के लिये रेल और मोटर उपलब्ध हैं। शहर में आने जाने वालों के लिये रिक्शा तांगा आदि सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने का उचित प्रवन्ध है जिनमें ला० रामलाल प्रयागलाल धर्मशाला व बड़ी धर्मशाला प्रसिद्ध है। इन धर्मशालाओं में यात्रियों के लिये पर्याप्त सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दर्शन हेतु सुन्दर धार्मिक व अन्य स्थान बहुत ही सुन्दर है। जिनमें लालतां माता का मन्दिर बहुत सुन्दर वना हुआ है। इस शहर में हर अमावस्या को मेला लगता है। यहां ८८००० ऋषियों ने यज्ञ किया था। कहा जाता है कि यहाँ भगवान कृष्ण का सुदर्शन चक्र आकर गिरा था। इसे चक्र तीर्थ भी कहा जाता है। नारदानन्द जी का आश्रम भी देखने योग्य है। यह स्थान भारत के तीर्थ करने के योग्य स्थानों में से एक है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं चना, जौं, सरसों तथा वाजरा आदि का अच्छा उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट वैंक ऑफ इण्डिया की शाखा है।

मिश्रख तीर्थ—यह स्थान भारत के तीर्थ स्थानों में गिना जाता है। उत्तर प्रदेश प्रान्त के सीतापुर जिले में स्थित है। यह एन० आर० की वालामऊ सीतापुर लाईन पर सीतापुर से २४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। इस तीर्थ स्थान के जाने के लिए बसों की पर्याप्त सुविधायें प्राप्त है। इस शहर में [आने जाने के लिए रिक्शा, तांगा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस शहर में बाहर से आने वाले यात्रियों को ठहरने के लिये बड़ी २ धर्मशालायें हैं। जिनमें उदय राम कानपुर वाली धर्मशाला प्रसिद्ध है जिसमें यात्रियों को पूरी २ सुविधायें प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व अन्य स्थान देखने योग्य हैं।

जिनमें महर्षि दधीचि की गद्दी एवं दधीचि कुण्ड है। यहां पर ही दद हजार ऋषियों ने तपस्या की थी। यहाँ से १० कि० मी० दूरी पर नेमीषारन्य है। होली पर बहुत वड़ा मेला लगता है। उसको देखने को हर वर्ष हजारों यात्री आते हैं। आदि सुन्दर स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य पैदावार जौं, सरसों, गेहूं, मटर, मूंगफली आदि हैं। और इस स्थान पर गल्ला मण्डी हैं।

महौली—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के सीतापुर जिले में हैं। यह एन० आर की शाहजहाँपुर सीतापुर कैन्ट लाईन पर स्थित है। शाहजहांपुर से ६४ कि मी० तथा सीतापुर से ३० कि० मी० की दूरी पर है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा व तांगा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में आने वाले यात्रियों के ठहरने का उचित प्रवन्ध हैं। जिनमें खूबचन्द नन्दराम जैन रोड़ पर धर्मशाला, शुगर मिल के सामने जी० टी० रोड पर, शम्भू दयाल द्विवेदी धर्मशाला, सेठ गोविन्द राम मूलचन्द जी की घास मण्डी के पास, नई धर्मशाला, बाल गोविन्द का होटल आदि धर्मशालायें है इनमें यात्रियों के लिए सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में धार्मिक तथा अन्य-स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें आर्य अमाज मन्दिर, घास मण्डी में आंखो का अस्पताल, आर्य अनाथालय, देवी मन्दिर, आदि प्रमुख स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मुख्य उत्पादन चीनी, मूंगफली, दाना गल्ला आदि का होता। यहा पर लक्ष्मी शुगर मिल भी है। और गल्ला मण्डी भी है।

बैंक—बैंक की व्यवस्था सीतापुर में है।

जिला सहारनपुर

सहारनपुर, कनखल, गंगोह, देवबन्द, मंगलौर टाऊन, रूड़की, लक्सर तथा शाकुम्बरी देवी)

नोट--हरिद्वार का वर्णन उत्तरा खण्ड की यात्रा में है।

सहारनपुर—सहारनपुर उत्तर प्रदेश प्रान्त के प्रसिद्ध जिलों में से है। यह स्थान एन० आर० की दिल्ली सहारनपुर लाईन पर दिल्ली से १७९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा तांगा व टैक्सी आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में आने वाले यात्रियों को ठहरने के लिए वड़ी-२ धर्मशालायें है जिनमें जैन धर्मशाला सब्जी मण्डी पुल पर, धर्मशाला अम्बला रोड पर, तथा सेठ मूलराज जी की स्टेशन के पास स्थित है। इन धर्मशालाओं में यात्रियों को पूरी सुविधायें प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त अशोका होटल रैस्टोरेन्ट कोर्ट रोड फोन न० ३४०७, आदर्श होटल रेस्टोरैन्ट क्लाक टावर फोन न० ३२१२, नटराज होटल रेलवे

रोड फोन न० ३५९२, पंजाब होटल एण्ड रेस्टोरैन्ट पी० सी० ओ० कोर्ट रोड फोन न० ३०१०, पंजाब होटल एण्ड रेस्टोरैन्ट फोन न० ४१७२, प्रकाश होटल गोविन्द भवन फोन न० ३२८७, प्रोहित होटल रेलवे रोड फोन न० ३४४१, मारल होटल और रैस्टोरैन्ट अम्बाला रोड फोन न० ४५७४, मोटेल क्वालिटी एण्ड रेस्टोरन्ट रेलवे रोड फोन न० ४८२४, विक्ट्री बार एण्ड रैस्टोरैन्ट कोर्ट रोड फोन न० ३५३७, आदर्श होटल एण्ड रैस्टोरैन्ट रेलवे रोड ३२१२ आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक एवं अन्य स्थान देखने योग्य हैं। आर्य समाज मन्दिर खाला पाला, आर्य समाज मन्दिर राम नगर, देखने योग्य हैं। यहां बैलों की खुरी प्रसिद्ध है, तथा बान प्रसिद्ध है। कई कारखाने है तथा एक शुगर मिल भी है और पेपर मिल भी है ओल्टीकल्चर एन्सटीटयूट पर बागवानी प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, गुड़, खाण्ड, सुलहरी, सिग्रेट, कागज व चीनी आदि मुख्य उत्पादन है यहां पर लकड़ी का भी अच्छा काम होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक, आरियन्टल बैंक हैं।

कनखल--कनखल सहारनपुर जिले में स्थित हैं। मायापुर रहेट वर्क से लगभग १ कि० मी० की दूरी पर एक बहुत बड़े क्षेत्र में यह नगर बसा हुआ है शहर में सवारी के लिए रिक्शा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल--नगर के अन्दर यात्रियों के ठहरने के लिये होटल व धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर धार्मिक स्थान दर्शन करने के हेतु सुन्दर बने हुये हैं जिनके दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर दक्षिण सीमा पर तथा हनुमान मन्दिर पूजा करने के लिए योग्य स्थान है।

उत्पादित वस्तु—यहां का मुख्य उत्पादन, जौ, चना, आलू तथा गेहूं आदि है।

गंगोह—यह नगर सहारनपुर जिले में स्थित है यह सहारनपुर से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में रिक्शा, तांगा व टैक्सी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें उपलब्ध है। जिनमें ला० हरदेव सहाय की धर्मशाला, ला० दुर्गा दास जी की धर्मशाला तथा राम लीला भवन धर्मशाला अच्छी प्रसिद्ध है इनमें यात्रियों को ठहरने की पर्याप्त सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में बहुत ये धार्मिक एवं एतिहासिक स्थान देखने योग्य है। जो कि बहुत ही सुन्दर बने हुये है जिनमें आर्य समाज मन्दिर बड़ा शिवाला (ऐतिहासिक प्राचीन मन्दिर) राम बाग मन्दिर, (जगदम्बा देवी का) बाबा हरिदास की समाधि, ककराली मन्दिर तथा शिव मन्दिर आदि कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, जौ, चना, मक्का, बाजरा, प्याज धान,

चावल, मटर, तुवर, खांड, गुड़, चीनी तम्बाकू का बहुत उत्पादन होता है। यहां पर गल्ला मन्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल, इलाहाबाद आदि बैंक हैं।

देवबन्द—यह नगर उत्तर प्रदेश सहारनपुर जिले में स्थित है जो देवबन्द के नाम से प्रसिद्ध है। यह एन० आर० की दिल्ली सहारनपुर लाईन पर स्थित है दिल्ली से १४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में व्यक्तियों को सवारी के लिए रिक्शा, टैक्सीं, तांगा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये बड़ी-बड़ी धर्मशालायें उपलब्ध है। जिनमें दल्लों की धर्मशाला रेलवे रोड पर, बैनी सराय तथा देवी सिंहजी की धर्मशाला मौ० कायस्तवाडा में आदि प्रसिद्ध धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में देखने के लिए धार्मिक एवं अन्य स्थान बहुत ही सुन्दर है जिनमें आर्य समाज मन्दिर, श्री जैन दिगम्बर मन्दिर, देवी वाला सुन्दरी का मन्दिर यहां चैत सुदी चौदस को विशाल मेला लगता है। दारूल उलूम (अराबिक यूनिवर्सिटी) अरबी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। जो देखने योग्य है। श्री देवी कुण्ड संस्कृत महाविद्यालय, श्री हरपत राय एंग्लो वैदिक इन्टर कालेज आदि भी शिक्षा के अच्छे केन्द्र हैं।

उत्पादित वस्तुयें—खाण्ड सारी, चीनी, गुड़, शक्कर, धान, चावल, गेहूँ, मुख्य उत्पादन है। और खादी का काम भी अच्छा होता है। यहाँ पर शुगर मिल भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट पंजाब नेशनल आदि बैंक हैं।

मंगलौर टाऊन—यह नगर सहारनपुर जिले में स्थित है। यह रुड़की से १० कि० मी० की दूरी पर है। शहर में सवारी के रिक्शा, ताँगे उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में आने जाने वाले यात्रियों के लिए धर्मशालायें उपलब्ध हैं जिनमें जौहरी धर्मशाला, हरि मन्दिर धर्मशाला, पंचायती धर्मशाला तथा वैश्य धर्मशाला आदि धर्मशालायें हैं जिनमें यात्रियों को पूरी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देखने के लिये धार्मिक व अन्य स्थान हैं जिनमें गुरुद्वारा, गंग नहर, हरि मन्दिर, तथा हनुमान मन्दिर, देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहा का मुख्य उत्पादन गुड़, शक्कर, सरसों गेहूं आदि है। यहाँ पर गुड़ की मन्डी भी है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

रुड़की—यह नगर उत्तर प्रदेश प्रान्त के सहारनपुर जिले में है। यह एन० ई० आर० की मुगलसराय अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ८०२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में यात्रियों की सवारियों के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगें उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने का नगर में उचित प्रबन्ध है। ठहरने के लिए धर्मशालायें व होटल हैं। जिनमें जैन धर्मशाला तथा पंचायती धर्मशाला होटल मद्रास, पुलारसा, नीलम विक्ट्री आदि धर्मशालायें तथा होटल है। जिनमें यात्रियों के खाने पीने की पर्याप्त सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में बहुत से धार्मिक एवं अन्य स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें बांध जो कि बहुत ही बड़ा बना हुआ है और वहां पर बिजली बनती है। पत्थर पावर हाऊस, बहादुर पावर हाऊस, रूड़की इन्जीनियरिंग कालेज, एक ऐसा पुल जिस पर से नदी बहती है और दूसरे पर से नहर बहती है। रूड़की विश्व विद्यालय (स्थापना १९४९) तथा यहां से ४½ कि० मी० की दूरी पर मुसलमानों का सादर साहब का दरगाह जो मुसलमानों का तीर्थ स्थान है देखने योग्य है। यहां पर गंग नहर बहुत बड़ी है। आर्य समाज मन्दिर, गौशाला जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम रूड़की में की थी। प्रयोग शाला-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्था रूड़की संस्था नामक इन्जीनियरी अनुसंधान केन्द्र भी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, गुड़, शक्कर, अदरक, तथा मक्का आदि का अधिक उत्पादत होता है। यहां पर गल्ले की मण्डी भी हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंक हैं।

लक्सर—यह नगर सहारनपुर जिले में है। यह एन० आर० की मुगलसराय- अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ७८४ कि० मी० की दूरी पर जंक्शन स्थित है। शहर में सवारी के लिए टैक्सी, रिक्शा, ताँगा आदि का साधन उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए सूरज मल की धर्मशाला है। जिसमें यात्रियों को सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में देखने योग्य धार्मिक तथा अन्य सुन्दर स्थान हैं जिनमें आर्य समाज मन्दिर, भगवान श्री कृष्ण का मन्दिर आदि सुन्दर मन्दिर हैं। यहां पर शुगर मिल भी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां चीनी, शक्कर आदि का मुख्य उत्पादन होता है। चटाई भी सुन्दर बनाई जाती है। यहा पर मण्डी भी हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

शाकुम्बरी—यह नगर भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों में से है यहां पर शाकुम्बरी देवी का बहुत सुन्दर और बड़ा प्रचीन मन्दिर है इसीलिए इस नगर का नाम शाकुम्बरी पड़ा है। यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के सहारनपुर जिले में स्थित है। यहां पर सहारनपुर से बस द्वारा आना पड़ता है यह सहारनपुर से ३४ कि० मी० दूरी पर है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों की सुविधा के लिए अनेकों ठहरने के लिए बड़ी-बड़ी धर्मशालायें है। जिनमें ज्ञानी मल जी की धर्मशाला, जगाधरी वालों की, मुन्ना लाल विशेश्वर दयाल जी की धर्मशाला प्रसिद्ध है इनमें यात्रियों के लिये सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दर्शन करने के लिए बहुत सुन्दर तथा प्राचीन मन्दिर बने हुए है। जिनमें शाकुम्बरी देवी मन्दिर, भूरा देव का मन्दिर, पाँच मूर्ति शिवजी की, पांच मूर्ति मिल के एरिये में प्राचीन है, ब्रह्मा नन्द जी की मूर्ति यह मूर्ति भी प्राचीन है यह मन्दिर पहाड़ नदी के किनारे है यहां की माहानता बहुत है ठाकुर जी का मन्दिर, धिभ मस्ता देवी का मन्दिर, शकंराचार्य का आश्रम तथा यहां १० कि० मी० की ऊचाई पर सहस्त्र ठाकुर है वहां पर ७ कुंड है आदि प्राचीन एवं दर्शन योग्य सुन्दर है। शाकुम्बरी देवी पर वर्ष भर में दो बहुत बड़े मेले लगते है जिनमें एक तो असोज वदी चौदस दूसरा होली पर लगता हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन कत्था व मूंज हैं।

जिला हमीरपुर

(हमीरपुर, चरखारी, महोबा)

हमीरपुर—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में हमीरपुर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० की बांदा-कानपुर लाईन पर स्थित है। इसका रेलवे स्टेशन हमीरपुर रोड पर है जो कि हमीरपुर रोड से हमीरपुर शहर १२ कि० मी की दूरी पर है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए श्री लक्ष्मी नारायण जी की धर्मशाला बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधायें पर्याप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, गौशाला, पातालेश्वर जी का मन्दिर व संगमेश्वर जी का मन्दिर आदि बहुत सुन्दर बने है।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक प्रसिद्ध मण्डी भी है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार जीरा, धनियाँ, लाही, पान, अण्डी, ज्वार, बाजरा आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन पाया जाता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया की प्रमुख शाखा उपलब्ध है।

चरखारी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में हमीरपुर जिले का एक प्रसिद्ध शहर है। यह सी० आर० की झांसी-बाँदा लाईन पर स्थित है। महोवा से १२ कि० मी० दूर है। इसका रेलवे स्टेशन चरखारी रोड पर है जो १० कि० मी० दूरी पर है। शहर में आने-जाने के लिए रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये सदर बाजार में एक बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है जिसमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें उपलब्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय है। जैसे—सात तालाब का मन्दिर, किला, विजय नगर तालाब, कोठी किला, सुन्दर बाग, श्री गुमान बिहारी जी का मन्दिर, गोवर्धन नाथ जी का मन्दिर, श्री वटुक नाथ जी

का मन्दिर, गुनगौर शंकर जी का मन्दिर, झाँसी का किला, (इस किले की ऊचांई १००० फीट है जिसमें ४ सरोवर है किले के चारों तरफ पत्थर की दीवार बनी हुई है और चार बड़े फाटक लगे हुए है। किले के भीतर एक छोटा सा दुर्ग व ४ विशाल मन्दिर बने हुए हैं। जिनके नाम इस प्रकार है– श्री बख्त विहारी जी का मन्दिर, श्री बाँके बिहारी जी का मन्दिर, श्री सिद्ध बावा जी का मन्दिर, श्री दुर्गा माता अठारह भुजी का मन्दिर आदि मन्दिर दर्शनीय व मनोरंजनय हैं।

उत्पादित वस्तुयें——यह एक प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूं, चना, ज्वार, अल्सी, अण्डी, तिल्ली आदि का अधिक उत्पादन पाया जाता हैं।

बैंक——इस शहर का कार्य महोबा के बैंकों से होता है।

महोबा——यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में हमीरपुर जिले के सी० आर० की झाँसी मानकपुर लाईन पर झांसी से १३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल——यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए मुकुन्द लाल तिवारी जी की धर्मशाला तालाव के पास, बहुत बड़ी व सुन्दर बनी है जिसमें यात्रियों को हर प्रकार की सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल——यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, बड़ी चन्ड़ी देवी का मन्दिर, हिल्ता खम्वा, संस्कृत विद्यालय, (राज रोड पर) मनिया देव का मन्दिर व खम्वा गुफा, मदन सागर तालाब, वारहदरी, घोड़ों के पैरो के निशान, शहीद स्मारक, गौ-शाला, आदि इसके अतिरिक्त यहां पानों की खेती वहुत अच्छी होती है पानों की बेल तीन साल तक चलती है और इनमें पानी नंगे होकर भागकर देते है। आदि प्रमुख स्थान व मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक प्रसिद्ध मण्डी भी है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार गेहूं, चना, ज्वार, मूंग, उड़द, सिंघाड़ा, तिल, पान आदि हैं।

बैंक—यह जनता की सुविधा व व्यापार को सुचारू रुप से चलाने के लिए स्टेट बैंक आफ इण्डिया व इलाहाबाद बैंक की शाखा उपलब्ध हैं।

जिला हरदोई

(हरदोई, माधोगंज, संडीला, सांडी)

हरदोई—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त का स्वयं एक प्रमुख जिला है। यह एन० आर० की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ४१९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी की सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए राजा साहव कटि-हारी जी की धर्मशाला (शहर में), अग्रवाल धर्मशाला माल गोदाम के सामने, व एक धर्मशाला सदर बाजर में आदि प्रमुख धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, शुगर मिल व श्री गोपाल गौ-शाला आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक उत्तर प्रदेश की प्रमुख मंडी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौं, तुवर, उड़द, बाजरा, मूंगफली, सरसों, गुड़, शक्कर, तिल, धान, चावल, मक्का आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, इलाहाबाद बैंक, सेन्ट्रल बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक, आदि बैंकों की शाखायें स्थापित हैं।

माधोगंज—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के हरदोई जिले में एन० आर० की बालामऊ-कानपुर लाईन पर उन्नाव से ७७ कि० मी० व बालामऊ से २३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने व घूमने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में बहुत बड़ी व सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है जिसमें यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं। जिनमें प्रमुख शिव जी का प्राचीन मन्दिर, श्री कृष्ण गौशाला, तौला कमैटी का मन्दिर, नरपति सिंह का मन्दिर, पुराना किला व जरनल होप की कब्र आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां एक गल्ले की छोटी सी मण्डी भी है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज मूंगफली, सरसों, अरहर, आदि है।

बैंक—यहाँ का कार्य हरदोई के बैंकों द्वारा होता है।

संडीला—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त में हरदोई जिले के एन० आर० की मुगलसराय-अमृतसर लाईन पर मुगलसराय से ३६७ कि० मी० व वाराणसी से ३५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं। यहां के लड्डू बहुत प्रसिद्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास और दूसरी शहर में बहुत बड़ी व सुन्दर बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर दुर्गा देवी जी का मन्दिर व शीतल देवी जी का मन्दिर अत्यन्त सुन्दर बने हुये हैं जो दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अनाज की प्रसिद्ध मण्डी है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार मूंगफली, मूंगफली दाना, चना दाल, गेहूं, तुवर, मटर, मक्का, उड़द, धान, जौ, बाजरा, लहसन, आलू, प्याज, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन है।

बैंक—यहाँ पर गिदोड़िया बैंक व स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की प्रमुख ब्रांच उपलब्ध हैं।

सांडी—यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के हरदोई जिले में स्थित है यहाँ पर रेल मार्ग नहीं है। यहां जाने के लिये हरदोई से बसों द्वारा जाना पड़ता है। ये शहर हरदोई से २० कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर के अन्दर घूमने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये बस स्टैन्ड के पास व शहर में बहुत बड़ी-२ धर्मशाला, बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, श्री मंगला देवी का रमणीक स्थान, इसके अतिरिक्त साँडी के उत्तर में ३ किं० मी० दूर ब्रह्मावर्त तीर्थ स्थान एवं पास में ही देहर झील देखने योग्य है। गर्रानदी के पास डाक बंगला, तथा ५ मन्दिर अच्छी हालत के ठाकुरद्वारा में व ५ मन्दिर जीर्ण अवस्था में आदि मन्दिर।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक प्रसिद्ध मंडी है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार बाजरा मक्का, मूंगफली, तेल, सीडस, तिल, मटर, ज्वार, गेहूं आदि।

लखनऊ से प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
मुगलसराय	३१८	वाराणसी	३०१	जंघई	२२६
प्रताप गढ़	१७३	रायबरेली	७६	बालामऊ	६
हरदोई	१०१	शाहजहाँन पुर	१६५	बरेली	२३८
रामपुर	३०१	मुरादाबाद	३२८	नजीर	४२७
लक्सर	४६८	सहारन पुर	५२२	हापुड़ाबाद	४३१
ब्रजघाट	३९१	हरिद्वार	४६५	फैजा	१२८
अयोध्या	१३५	बाराबंकी	२८	जौनबाद	२६६
जफराबाद	२७२	गोलागोकरननाथ	१६८	सीतापुर	८८
मैलानी	१९४	नैनीताल	४२८	भोजीपुरा	३००
आगरा	४८६	मथुरा	४२४	हाथरस	३७३
कासगंज	३१९	फर्रुखाबाद	२११	फतेहगढ़	२०६
गुरुसहाय गंज	१७४	कन्नौज	१५२	कानपुर	७१
गोंडा	१२१	मनकापुर	१४९	बस्ती	२१०
गोरखपुर	२७५	देवरिया	३२३	इलाहबाद	२०२
काठगोदाम	३८८	पीलीभीत	२६२	मेरठ	४६१
गाजियाबाद	४६१				

भूलसुधार

(१) पन्ना न० २२ हरद्वागंज का तालों का उद्योग व आँखों का अस्पताल पन्ना न० २१ अलीगढ़ में पढ़ा जाय।

(२) पन्ना न० ४९ मंसूरी में सैर करने के लिये ट्राली मिलती हैं।

(३) पन्ना न० २१ नरोरा जिला अलीगढ़ में लिखा है वह पन्ना न० ७० जिला बुलन्दशहर में पढ़ा जाय।

(४) यात्री मार्ग की मील सूची पन्ना न० १८ पर यात्रा मार्ग की कि० मी० सूची पढ़ा जाय।

(५) रुनकता पन्ना न० ९९ "राग्रा" पढ़िये।

———

हिमाचल प्रदेश

हिम का आंचल, यह हिम प्रदेश,
है जिसकी शीतल मृदु मुस्कान.
कुल्लू जिसका प्यारा-प्यारा,
शिमला जिसकी अनुपम शान.

जिला "कांगड़ा"

(कांगड़ा, ज्वाला जी, धर्मशाला, पालमपुर, [redacted], जोगेन्द्रनगर)

कांगड़ा—इस नगर का नाम नगरकोट भी है। यह नगर हिमाचल प्रदेश का एक जिला है और उत्तर रेलवे की पठान कोट-जोगेन्द्रनगर लाईन पर पठान कोट से से १८२ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन है। यात्रियों को आवागमन के लिये रिक्शा, टैक्सी तथा ताँगों की सुविधायें उपलब्ध हैं। यहां से ज्वाला-मुखी ३५ किलो मीटर की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—इस नगर में बाहर के यात्रियों को विश्राम करने के लिये "भगसूनाथ जी की धर्मशाला" मक्लोडगंज में विद्यमान है जिसमें सभी सुविधायें उपलब्ध है तथा यहाँ पर पन्डों के यहाँ भी ठहरने का उचित प्रबन्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—किसी भी नगर का महत्व वहाँ के दर्शनीय स्थानों पर निर्भर होता है। अतः इस नगर का महत्व भी यहाँ के कुछ स्थलों से है जैसे—आर्य समाज मन्दिर तथा स्टेशन से ५ किलो मीटर की दूरी पर एक मन्दिर देखने योग्य है। जिस की महानता अधिक है और इसको नगरकोट वाली देवी भी कहते हैं। यहां पर भारत के कोने-कोने से श्रद्धालु लोग जात देने तथा दर्शन करने भी आते हैं। और इस मन्दिर में एक स्थान बना है जहां पिछले पाप का पश्चाताप करके आगे को अच्छे कार्य के लिये सौगन्ध दिलाई जाती है यहां पर एक सुन्दर बाजार है जिसमें प्रसाद तथा चढ़ावे का सामान बिकता है। यहां से २॥ किलो मीटर की दूरी पर एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ अर्जुन ने तीर का निशाना लगाया था, इस स्थान पर प्रत्येक समय पानी निकलता रहता है। इनके अतिरिक्त इस नगर से २½ किलो मीटर की दूरी पर भारत की पवित्र एवम् विशाल गंगा नदी है जिसकी यहां पर १०८ सीढ़ियां हैं।

उत्पादित वस्तुयें—पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ अधिक वस्तुओं तथा अनाज आदि का उत्पादन नहीं होता है किन्तु फिर भी यहाँ कत्था, धूप, जड़ी, बूटियों आदि का उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—इस नगर में हिमालय बैंक व पंजाब नेशनल बैंक की शाखा है।

ज्वाला जी—हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में यह नगर हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है जहां पर दूर दूर के श्रद्धालु लोग यहां के स्थित मन्दिरों के दर्शन करने आते हैं। यह नगर उत्तर रेलवे के पठानकोट-बैजनाथ पपरीला लाईन पर स्थित है। स्टेशन से ज्वाला जी मन्दिर जाने के लिये मोटर बसें उपलब्ध होती हैं। नगर में सवारी के लिये रिक्शा चलती हैं।

विश्राम स्थल—धार्मिक महत्व के कारण इस नगर में क्योंकि बाहर के यात्री बहुतायत से आते हैं इसलिये यहाँ विश्राम के लिये नगर में बस स्टैन्ड के निकट गोपी महल कुठियाला धर्मशाला तथा रायबहादुर मोधामल जी की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—यह नगर बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि यहां पर 'ज्वाला जी का प्राचीन मन्दिर' है। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि इसमें से सदैव अग्नि प्रज्जवलित होती रहती है। यह मन्दिर ज्वालामुखी स्टेशन से १० किलो मीटर की दूरी पर सुशोभित है। यहाँ जाने के लिये दर्शन प्रेमियों को स्टेशन से बसों की सुविधायें उपलब्ध हैं। ज्वालामुखी मन्दिर का ऊपरी भाग स्वर्ण मन्दिर है। इसी मन्दिर के निकट कुछ अन्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं जैसे अर्जुनदेव जी का मन्दिर, चन्द्रपूर्णी देवी का मन्दिर, देवी का मन्दिर तथा काली देवी का मन्दिर।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और मटर, गेहूं, चना तथा मक्का आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां से कुछ दूरी पर होशियार पुर में बैंक हैं।

धर्मशाला—यह नगर जिला कांगड़ा में भ्रमण की दृष्टि से एक प्रसिद्ध स्थान है। यह पर्वतीय क्षेत्र है। एन० आर० की ~~जालन्धर~~-पठानकोट लाईन पर कांगड़ा-पठानकोट के मध्य में तथा पठानकोट से ९० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे की आऊट एजेन्सी है। यहां के लिये कोई रेल नहीं जाती है। इस नगर के सबसे निकट २६ किलो मीटर की दूरी पर कांगड़ा रेलवे स्टेशन है।

विश्राम स्थल—इस नगर में भ्रमणकारियों के विश्राम के लिये निम्नलिखित सुविधायें प्राप्त हैं:—सराय (कोर्ट एरिये में) सनातन धर्म मन्दिर धर्मशाला, तथा आर्य समाज धर्मशाला आदि। इसके अतिरिक्त टूरिस्ट बंगला, रैस्ट हाउस, शिमला होटल तथा वैष्णव होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह नगर सुन्दर पर्वतीय क्षेत्र में सुशोभित है जहाँ के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य (सीनरी) देखने योग्य हैं तथा यहाँ का आर्यसमाज मन्दिर भी देखने योग्य है। इनके अतिरिक्त इस नगर के निकट कुछ निम्नलिखित स्थान भी देखने योग्य हैं:—भगसुनाथ ११ कि० मी० (यहाँ प्राचीन मन्दिर झरने व फव्वारे दर्शनीय

हैं), डलझील १० कि० मी० (यहां पर एक कृत्रिम झील है जहां सितम्बर माह में मेला लगता है), धर्मकोट ११ कि० मी० (यह भ्रमण (पिकनिक) के लिये रमणीक स्थान है), त्रियन्द २२ कि० मी० (धौला घर रेन्ज), करेरी २२ कि० मी० (भ्रमण एवम् मनोरंजन का एक सुन्दर आकर्षक स्थान), चामुन्डा देवी १४ कि० मी० (चामुन्डा देवी की गद्दी), काँगड़ा २० कि० मी० (व्रजेश्वरी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर तथा ऐतिहासिक 'कोट काँगरा' किला दर्शनीय है), ज्वालामुखी ५४ कि० मी० हिन्दुओं का प्रसिद्ध मन्दिर जहां पर अप्रैल माह में एक विशाल मेला लगता है), पालमपुर ३९ कि० मी० (यहाँ पर चाय के उद्यान हैं)।

उत्पादित वस्तुयें—यह मन्डी है और यहाँ बनफसा, शहद, चाय, मोम, धूप, रीठा, अखरोट, जड़ी बूटियाँ, अनाज, तिल व उड़द आदि वस्तुओं का अधिक मात्रा में उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, कांगरा सहकारी बैंक, हिमालय बैंक आदि हैं।

पालमपुर—जिला काँगड़ा में यह सुन्दर नगर एन० आर की पठान कोट-जोगेन्द्र नगर मार्ग पर पठानकोट से १९१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है। नगर में यात्रियों की सवारी के लिये रिक्शा व टैक्सी की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के विश्राम के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के निकट और एक धर्मशाला बाजार में है।

दर्शनीय स्थल—यह एक अच्छा नगर है और इस नगर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर की प्रमुख पैदावर आलू, अदरक, कत्था, आदि।

बैंक—यहाँ पर सेन्ट्रल बैंक, हिमालय बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जोगेन्द्र नगर—यह नगर जिला काँगड़ा में एन० आर० की पठानकोट-जोगेन्द्र नगर लाईन पर पठानकोट से ३४६ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है नगर में सवारी के लिये रिक्शा टैक्सी और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये सनातन धर्मशाला, आर्यसमाज मन्दिर, गुरुद्वारा, गवर्नमैंट टूरिस्ट बंगला, पी० डब्लू० डी रैस्ट हाउस, आदर्श होटल तथा टूरिस्ट होटल (रेलवे स्टेशन और बस स्टैन्ड के निकट) इसके अतिरिक्त एक धर्मशाला स्टेशन के निकट है।

दर्शनीय स्थल—जोगेन्द्र नगर तथा बसी पावर हाउस, बरोट हैड वर्क्स, होलेग मार्ग (Haulage way), महू नाग देव मन्दिर दरंग, नमक की खाने (गूमा व दरंग), पाँच पाँडवों का प्राचीन मन्दिर (गूमा), मन्दिर बाबा बालक रूपी, मछयाल, शिव मन्दिर व देवी जी का मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह मण्डी है और यहाँ आलू का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशनल बैंक तथा हिमाचल प्रदेश स्टेट को-आपरेटिव बैंक हैं।

जिला कुल्लू

कुल्लू—यह नगर हिमाचल प्रदेश का एक प्रमुख जिला है। यह उत्तर रेलवे के पठान कोट जोगेन्द्र नगर मार्ग पर मलानी से २३ कि० मी० और मण्डी से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। जोगेन्द्र नगर में रेलवे स्टेशन है। नगर में आवागमन के लिये टैक्सी और रिक्शा की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों को विश्राम के लिये आर्य समाज की धर्मशाला, गुरुद्वारा की धर्मशाला, भारत सरकार का टूरिस्ट बंगला, सिविल रैस्ट हाऊस, डाक बंगला, फोरेस्ट रैस्ट हाऊस तथा टूरिस्ट बंगला हैं जिनमें यात्रियों की प्रत्येक सुविधा उपलब्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—कुल्लू नगर में आर्य समाज मन्दिर तथा हवाई जहाज अड्डा दर्शनीय हैं। इनके अतिरिक्त इस नगर के निकट चारों ओर बहुत से दर्शनीय स्थल हैं यथा बजौरा १५ कि० मी० दूर (यहा पर वशेश्वर महादेवजी का मन्दिर तथा सुन्दर वाटिकायें हैं)। विजली महादेव मन्दिर ११ किलो मीटर (महादेव का मन्दिर)। केसधर १४ किलो मीटर (सुन्दर व आकर्षक दृश्य तथा भ्रमण का स्थान)। जगनाथी देवी मन्दिर ५ किलो मीटर (मनोरंजन व पिकनिक का स्थान)। मनीकरण ४३ कि० मी० (गर्म पानी के फव्वारे)। लरजी ३४ किलो मीटर (पहाड़ी दृश्य देखने योग्य है)। बनजार ५५ किलो मीटर (तीर्थम् नदी में मछली पकड़ने का स्थान)। शोजा ६७॥ किलो मीटर (हाऊस चरागाह)। बथाद ८५ किलो मीटर (शिकार खेलने, व मछली पकड़ने तथा सुन्दर दृश्य देखने के लिये प्रसिद्ध हैं)। रेजन १३ किलो मीटर (फलों की बाटिकायें हैं)। खनग ८० किलो मीटर पहाड़ी दृश्य दर्शनीय हैं)। नगर २२½ कि० मी० (वर्फ की चोटियां)। कटरेन १६ किलो मीटर (शहद की मक्खी तथा मछली पालन।

उत्पादित वस्तुएं—यहां बहुत बड़ी मण्डी है और यहां पर सेव, आड़ू, नाख, आलूबुखारा, खुवानी, जापानीफल, गलास, चेरी, बी दानर थोड़ी मात्रा में बादाम, जड़ी बूटियां, पैंनीस, गुच्छियां, बनफशा, दन्दासा, मश्क बाला, बालछड़, धूप, धनिया पीली मिर्च, सिंजलीमिंगनी, अखरोट तथा राम दाना आदि का उत्पादन होता हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, देराजत बैंक, तथा पंजाब नेशनल कवैं हैं।

जिला चम्बा

चम्बा—हिमाचल प्रदेश में यह नगर एक छोटा सा जिला है। यह उत्तर रेलवे के जालन्धर-पठान कोट मार्ग पर पठानकोट से १२५ किलो मीटर की दूरी पर

स्थित है। यहां रेलवे की आऊट एजेन्सी है यात्रियों को आवागमन के लिये बसों और टैक्सियों की सुविधायें उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में बाहर के यात्रियों को विश्राम के लिये डा० चतुर्भुज जी की धर्मशाला तथा गरपान लिका के दो विश्रामगृह हैं जिनमें सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर के निकट खजयार नामक स्थान पर पांडवों का मन्दिर तथा प्राकृतिक झील दर्शनीय है। इनके अतिरिक्त इस नगर के निकट और भी बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। यहां पर हवाई अड्डा भी है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर पर्वतीय क्षेत्र है जिसके कारण कोई मुख्य वस्तुओं व अनाज का उत्पादन नहीं होता है। यहां–आलू, उड़द, सियोल, धूप, रजमान, अखरोट तथा सेव आदि का उत्पादन होता हैं। यहाँ का अधिकतर माल पठानकोटसे ही निर्यात होता हैं।

बैंक—यहां स्टेट वैंक, स्टेट कोआपरेटिव वैंक तथा अर्बन कोआपरेटिव बैंक स्थित हैं।

जिला नाहन

नाहन—यह नगर हिमाचल प्रदेश में एक छोटा सा जिला है और उत्तर रेलवे के जालन्धरनगर-पठान कोटमार्ग पर रेलवे स्टेशन बरारहा से ५४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के लिये कोई रेल की सुविधा नहीं है। यहा टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये इस नगर में हिन्दू आश्रम धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां के दर्शनीय स्थान निम्नलिखित हैं। काली का मन्दिर, शिव का मन्दिर, नाहन से २८ किलो मीटर की दूरी पर रेणुका झील है जहां परशुराम रेणुका मन्दिर है और प्रति वर्ष कार्तिक सुदी दशमी व एकादशमी को एक विशाल मेला लगता है। नाहन से ४५ किलो मीटर और रेणुका से ४० किलो मीटर दूर पावटा साहिब में यमुना नदी के किनारे बसा है जो प्रसिद्ध स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और आलू, अदरक, सौंठ, चौलाई, मिर्च-धनियां, अनार दाना कूटू आदि का उत्पादन होता है। यहाँ के कोल्हू के कारखाने भारत में अनेक स्थानों पर हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, तथा हिमाचल प्रदेश स्टेट कोआपरेटिव बैंक हैं।

जिला महासू

सोलन—यह नगर हिमाचल प्रदेश के महासू जिले में है और उत्तररे लवे के कालका-शिमला मार्ग पर कालका से ४७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों को विश्राम करने के लिये यहाँ स्टेशन के निकट एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, अन्य मन्दिर तथा पर्वतीय दृश्य देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और आलू, मक्का, बनफशा, धनियां, अदरक, अनारदाना, सौंठ, नारियल, सौंफ व काला जीरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशलन बैंक, स्टेट बैंक आफ पटियाला, नारंग, बैंक आफ इण्डिया तथा हिमाचल प्रदेश स्टेट कोआपरेटिव बैंक हैं।

जिला मन्डी
(मण्डी मनाली)

मन्डी—हिमाचल प्रदेश में यह नगर एक जिला है और उत्तर रेलवे के पठान कोट जोगेन्द्र नगर मार्ग पर जोगेन्द्र नगर से ५६ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ के लिये रोपड़ से बसों की सुविधा हैं।

विश्राम स्थल—विश्राम के लिये नगर में ही धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर और आर्य समाज मन्दिर वास्तव में देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और आलू, सेव, खुमानी, जापानी फल, मिर्च, धनियाँ, शहद, राम दाना, अखरोट, जड़ी बूटियां, सबीले, उड़द तथा ददासा, आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ इण्ड़िया, पंजाब नेशनल बैंक, हिमाचल प्रदेश स्टेट को आपरेटिव बैक तथा अर्बन बैंक स्थित है।

मनाली—मण्डी जिले में यह नगर उत्तर प्रदेश रेलवे के पठान कोट कुल्लू मार्ग पर कुल्लू से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारियों के लिये शहर में टैक्सी की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये यहां मन साईन गैस्ट हाऊस, न्यूहोम गैस्ट हाऊस तथा अशोका गैस्ट हाऊस हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर निम्नलिखित दर्शनीय स्थान हैं।

कोटी ११ कि० मी० सुन्दर पर्वत वन रहत्ला १४ कि० मी० फव्वारे रोटेंगपास २२ कि० मी० मनोरमा की बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ यहाँ पर हवाई अड्डा भी है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर पीली मिर्च, सिगनी मिंगनी, अखरोट, रामदाना, सेव, आड़ू, नाख' आलू, बुखारा, खूबानी, जापानी फल, गलास, गश्बाला, बाल छड़, धूप धनियाँ और बादाम आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

यह नगर पर्वतीय क्षेत्र में है और यहा पर बर्फ बहुत पड़ती है।

जिला शिमला

(शिमला, कसौली सुबायू)

शिमला—यह हिमाचल प्रदेश की एक सुन्दर राजधानी है ग्रीष्म काल में भ्रमण की दृष्टि से इस नगर का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह पर्वतीय क्षेत्र में है। यह नगर उत्तर रेलवे के शिमला-कालका मार्ग पर कालका से ९७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है। सवारी के लिये रिक्शा और टैक्सियों की सुविधायें हैं।

विश्राम स्थल—शिमला नगर में बहुत दूर-दूर के यात्री भ्रमण के लिये आते हैं। और बहुत समय तक ठहरते भी हैं। अतः यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये निम्नलिखित सुविधायें हैं।

धर्मशालायें—सनातन धर्मशाला लोग्रर बाजार, जैन धर्मशाला मिडिल बाजार, पूरन मल जी की धर्मशाला, कार्ट रोड, बुतेल धर्मशाला कार्ट रोड तथा काली बारी, दीमाल, शिमला।

होटल—बालजी होटल फोन न० २३१३, मैरीना होटल, दी माल फोन न० ३५५७, हिन्दू होटल, दी माल फ़ोन न० २४०८, ब्राईट लैंड होटल फोन न० २६५९, ठाकुर (रायल) होटल कोर्ट रोड २५२८, शिमला होटल दी माल फोन न० ३२१८, फ्लोरा होटल, लाकर बाजार फोन न० २०२७, सैन्ट्रल होटल, दी माल फौन न० ३०५८ गेलौट होटल फोन न० ३१५०, विलोज होटल फोन न० २५२३, ब्रिजव्यू होटल दी माल फोन न० २०३७, ब्लैंसिगटन होटल फोन न० २४२४, स्वर्ग आश्रम, जाक्कू फोन न० २०४३, २३६३ अशोका होटल फोन न० २१६६।

दर्शनीय स्थल—शिमला एक मनोहर तथा रमणीक नगर है। यहां पर बहुत से आकर्षक और मनोरंजन स्थान है। जैसे—

आर्य समाज मन्दिर, आर्य कन्या पाठशाला, गुरूकुल दी माल रोड बाजार, जाकू पर्वत शिखर इस शिखर पर पुराना मन्दिर है जिसकी रक्षा बानर सेना करती है तथा यहां हवाई अड्डा भी देखने योग्य है।

इनके अतिरिक्त शिमला नगर के निकट अनेकों निम्नलिखित दर्शनीय स्थान है। जिनका अपना अलग २ महत्व है—

जाकू हिल २ कि० मी० हनुमान मन्दिर, चित्र खींचने के दृश्य, सुन्दर बर्फीले मार्ग। संजौली ३ कि० मी० सुन्दर वाटिकायें चित्र खीचने के दृश्य, सुन्दर बर्फीले मार्ग) आननदल २ कि० मी० (पोलो ग्राउन्डस), ग्लैन ४ कि० मी० (सघन बन में बहता हुआ एक स्रोत है) चाडविक ५ कि० मी० (२०० फिट ऊंचा झरना) प्रौस-पैक्ट हिल ५ कि० मी० (क्रेडा देवी का मन्दिर तथा सुन्दर दृश्य) तारा देवी ८ कि० मी० (स्काउट हैड क्वाटर, सुन्दर जंगल), मशोवरा १० कि० मी० (पिकनिक का

मनोरम स्थान), क्रेगनानों १६ कि० मी० (पहाड़ी चोटी पर सुन्दर विश्राम गृह बना हुआ है।), नल डेरा २३ कि० मी० (गोल्फ कोर्स, सी० पी० डब्लू० डी० विश्राम गृह), वाईल्ड फ्लोवर हाल १० कि० मी० (एक आदर्श पिकनिक का स्थान टूरिस्ट होटल है।), कुफरी १४ कि० मी० (विश्राम गृह), चीनी बंगला १६ कि० मी० (बन में विश्राम गृह), फगु २३ कि० मी० (विश्राम गृह), टट्टा पानी ५२ कि० मी० (सतलज नदी पर सलफर के फव्वारे), चेल ४५ कि० मी० (विश्राम गृह), नारकन्दा ६४ कि० मी० (सुन्दर वर्फीले दृश्य तथा विश्राम गृह), वागी ८२ कि० मी० (विश्राम गृह), खदराला ९३ कि० मी० (सेवों की वाटिकायें तथा विश्राम गृह) सुभाटु ८० कि० मी० (सेवों की वाटिकायें तथा विश्राम गृह), डगशाई ६९ कि० मी० (विश्राम गृह), रोहरु ११५ कि० मी० (मछली पालन तथा विश्राम गृह), कोट गढ़ ८२ कि० मी० (सेव की बाटिका तथा विश्राम गृह)।

यहां पर एक प्रसिद्ध मण्डी है। जाड़ों में यहां बर्फ गिरती है। यहां के प्राकृतिक दृश्य देखने और चित्र खींचने योग्य हैं। यहां कम्वल और लकड़ी के खिलौने बनते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर दन्दासा, सेव, बनफशा, अनार दाना, गुच्छियाँ ओगला, वाथू, रीठा, अखरोट, तिलगोजा तथा राल आदि वस्तुओं का उत्पादन, होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, नेशनल एन्ड ग्रिन्डलेज वैंक, हिमाचल प्रदेश स्टेट को-आपरेटिव वैंक, पंजाव नेशनल वैंक, स्टेट बैंक आफ पटियाला तथा यूनाईटेड कॉमशियल वैंक हैं।

कसौली—शिमला जिले में यह एक प्रमुख नगर है जो पर्वतीय क्षेत्र में विद्यमान है। यह नगर चंडीगढ़ से ६४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये यहाँ पर टैक्सियों की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये यहां पर निम्नलिखित सुविधायें हैं:—कल्याण होटल, म्यूरिस होटल, अलासिया होटल, लोअर माल पर टेली० न० ८, ब्रैलमाउन्ट विश्राम गृह, पी० डब्लू डी० विश्राम गृह, डाक बंगला तथा कसौली क्लब।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, ६४ किलोमीटर की दूरी पर चन्डीगढ़ में हवाई अड्डा दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त कसौली के निकट भी कुछ निम्नलिखित स्थान दर्शनीय हैं। यथा—मंकी पाईन्ट ४ कि० मी०, (पहाड़ियों का सुन्दर व मनोरम दृश्य), सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट ½ फर्लांग (सुन्दर पहाड़ी दृश्य हैं जिन्हें मंगलवार को डायरेक्टर की अनुमति से भ्रमणकारी देख सकते हैं), डिस्टीलरी ४·८ कि० मी० (छुट्टी के दिनों को छोड़कर प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक और सायं ३ से ५ बजे तक इसे यात्री देख सकते हैं), सोनावर ५·६ कि. मी. (यहाँ लोरैन्स पब्लिक स्कूल स्थित है), सुबाथु २८·९ कि. मी. (मछली पकड़ने के लिये

६⅓ कि. मी. दूर गमहर नदी है तथा ३ कि. मी. दूर कोथार महल है), डगशाई ६.४ कि. मी. पी. डब्लू. डी. का विश्राम गृह), सोलन २८·६ कि. मी. (एक छोटा सा पहाड़ी स्थान), कसौली क्लब भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर आलू, गेहूँ, चना, आडू और अखरोट आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक की शाखा है।

सुबाथू—शिमला जिले में यह नगर एन. आर. रेलवे के कालका-शिमला मार्ग पर स्थित है। सवारी के लिए यहाँ टैक्सी और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये यहाँ पर एक बहुत बड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर तथा सनातन धर्म मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और कुट्टु, अदरक, अनार दाना, सोंठ, बनफशा, अखरोट, रीठा तथा काला जीरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ कोई बैंक नहीं हैं। कसौली तथा सोलन के बैंकों द्वारा कार्य किया जाता है।

शिमला से प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में (सड़क द्वारा)

(१०० किलोमीटर=६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
ओट	२१२	कटरेन	२६०	कसौली	७७.२
कांगड़ा	३०६	कालका	६०	कुफरी	१४
कुल्लू	२३६	कुराली	२०५	खडराला	६३.३
गगेल	३०४	चक्की	३७०	चम्बा	४६३
चाईल	४५	जयसुर	३६१	ज्वाला जी	३४४
जोगेन्द्रनगर	२२६	डलहौजी	४५६	देहर	१३५
धर्मशाला	३१५	नरकंडा	६४.३	नलदरा	२२.५
नेरचौक	१५४	पन्डु	१६१	पालमपुर	२६५
पिन्जौर	१११	फगु	२२.५	बाजीनाथ	२४७
बागी	८२	मन्डी	१७०	मनाली	२७६
रूपड़	१८६	रोहरु	११५.८	विलासपुर	१००
सुबाथू	८०·४	हमीरपुर	२१०		

जम्मू एण्ड काश्मीर

शोभा शाली यह नन्दन बन,
मन हरती सुबह शाम जहाँ
अमरनाथ, वेष्णों देवी के,
पावन तम हैं धाम जहां।

अनन्तनाग—यह जे० एण्ड के० प्रान्त का एक प्रमुख नगर व जिला भी है। यह नगर पहलगांव से ४५ कि० मी० और श्री नगर से ५५ कि० मी० दूर झेलम नदी के किनारे पर बहुत ही रमणीक स्थान पर स्थित है। यह नगर सड़क द्वारा वैरीनाग, अचावल गार्डन व कुक्कड़ नाग से जुड़ा हुआ है। यहाँ पर बसों द्वारा आया जाया जाता है। पर्यटन हेतु टैक्सी व जीपों का विशेष प्रवन्ध रहता है। शहर के अन्दर घूमने के लिये टट्टू, घोड़े व डाँडी की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर ठहरने के लिये होटलों का प्रबन्ध है। दुकानदारों ने भी अपने यहाँ ठहराने के लिये इन्तजाम कर रखा है जो होटलों की अपेक्षाकृत सस्ता पड़ता है।

विशेष—यह एक प्राचीन नगर है तथा धार्मिक दृष्टि से भी इसका काफी महत्त्व है। यहाँ की आबादी ३० हजार के लग-भग है जिसमें अधिकाँश मुस्लिम धर्म के मानने वाले हैं और धर्मों के मानने वाले गिने-चुने ही हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व प्राकृतिक स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें आर्यसमाज मन्दिर, एक अन्य विशाल मन्दिर, गन्धक के जल के चश्में व ठंडे और स्वास्थ्यप्रद जल के कई जलस्रोत हैं जिनमें रंग बिरंगी मछलियाँ तैरती रहती हैं। यहाँ हर वर्ष गर्मियों में धार्मिक व पर्यटन दोनों प्रकार के यात्रियों का आना-जाना रहता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, तिलहन व मक्का की खेती होती है। फलों में शहतूत, बदाम, दाख (काला अंगूर), व अनार प्रमुख हैं। गब्बा व लोइयों की कई छोटी-२ फैक्ट्रियाँ हैं। शहद व जड़ी बूटियाँ भी यहाँ की पैदावार में विशेष स्थान रखती हैं।

अच्छावल गार्डन—जे० एण्ड के प्रान्त के अन्नतनाग जिले में अच्छावल गार्डन नामक एक प्रसिद्ध शहर है। यहां पर टैक्सी व कार द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने के लिये घोड़े की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये होटल्ज हैं। तथा शहर में ठहरने का भी उचित प्रवन्ध है। तथा एक गवर्नमैन्ट बंगला भी है।

विशेष—यह एक सुन्दर शहर है तथा यह स्थान पिकनिक के लिये बहुत ही उपयुक्त है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर दो तीन चश्मे हैं। मानव ने इन्हें फव्वारे आदि की सहायता से रमणीक बना रखा है। यहां कुछ इस प्रकार की इमारतें हैं कि जिनके नीचे पानी बहता है। यहां सेव के बाग भी हैं। और यहां के प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां सेव, फल और मेवे आदि की प्रमुख रूप से पैदावार होती है।

कुकड़नाग—जे० एण्ड के प्रान्त के अन्नतनाग जिले में कुकड़नाग नामक एक शहर है जो पहलगांव से ३० कि० मीटर दूर है। यहां पर टैक्सी व कार द्वारा जाया जाता है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये गवर्नमैन्ट बंगला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व प्राकृतिक स्थान देखने योग्य हैं जैसे:—गवर्नमैन्ट म्यूज़ियम, लाल मंडी बाग, गार्डन बहुत सुन्दर हैं व यहां पहाड़ों में से झरने निकलते है, सीज़न में टैन्ट लगाये जाते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का पानी बहुत हाज़मेदार हैं रोगों को भी फायदा देता है। यहां पर मछली, फल व मेवे आदि प्रमुख रूप से पैदा होते हैं।

वैरीनाग—यह जे० एण्ड के० प्रान्त के अन्नतनाग जिले का एक प्रमुख नगर है। यहाँ जाने के लिये टैक्सी, जीप द्वारा जाया जाता है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए होटलों में प्रवन्ध है तथा एक डाक बंगला भी है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दो तीन बड़े-बड़े झरने हैं और बाग हैं। यहाँ से झेलम नदी निकलती है तथा यहाँ पर मुग़लों के ज़माने की पुरानी इमारतें भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर मेवे आदि पैदा होते हैं।

जिला ऊधमपुर

(ऊधमपुर, शुद्ध महादेव, बटौत)

ऊधमपुर—जे० एण्ड के० प्रान्त में ऊधमपुर एक जिला है। यह जम्मू से ६७ कि० मीटर दूर है। जम्मू से ऊधमपुर के लिये बसों द्वारा जाया जाता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये मेन बाज़ार में धर्मशाला सरकारी विश्राम गृह, बद्रीमल रामचरन की धर्मशाला आदि हैं।

विशेष—यह शहर बहुत सुन्दर है तथा यह फौजी क्षेत्र है।

दर्शनीय स्थल—नगर में आर्य समाज मन्दिर, शिवाला मन्दिर, रघुनाथ जी का मन्दिर, सत्यनारायण जी का मन्दिर, गीता भवन, लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर, शीतला देवी का मन्दिर व राधाकृष्ण जी का मन्दिर आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर शहद, वनफशा, अखरोट, बादाम, अनारदाना, केसर, बुटू व चौलाई आदि पैदा होते हैं।

बैंक—यहाँ पर जम्मू एण्ड काश्मीर बैंक है।

शुद्ध महादेव—यह जे० एण्ड के० प्रान्त के ऊधमपुर जिले में शुद्ध महादेव नगर स्थित है। और जम्मू से १२० कि० मी० दूर है। यहाँ टैक्सी व कार द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने के लिए घोड़े की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने के लिये बहुत अच्छा होटलों का प्रबन्ध है।

विशेष—यह एक तीर्थ स्थान है जिसकी बड़ी महानता है।

दर्शनीय स्थल—किमवदंती है कि यहां पर महादेव जी ने पार्वती जी से विवाह किया था। यहाँ पर कई कुण्ड जिनमें नहाने का धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व है। यहाँ कई प्राचीन मन्दिर है जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां फलों व मेवों का भण्डार है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार सेब, नारंगी, मेवे, बादाम, अखरोट व बब्बूबोसा आदि पैदा होते हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की मुख्य शाखा है।

बटोत—यह जे० एण्ड के प्रान्त के ऊधमपुर जिले में स्थित है। यह जम्मू १२० कि० मी० की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने लिये गुरुद्वारे में उचित प्रबन्ध है। यहाँ पर महाजन सभा नाम की बड़ी धर्मशाला भी है।

विशेष—यह नगर देवदयार के लम्बे पेड़ों से घिरा जम्मू काश्मीर क्षेत्र में सबसे ऊंचा है यहाँ मौसम ठंडा रहता है। यह पहाड़ी क्षेत्र है इसमें अनेक प्राकृतिक दृश्य सुशोभित है जो देखने में बड़े मनमोंहक प्रतीत होते हैं। यहाँ की प्रातः काल की लालिमा की छटा अनुपम है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं। इसमें पत्नी टाट प्रमुख है। इसके अतिरिक्त सनासर साहब सिक्खों का गुरुद्वारा आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां पर मेवों की पैदावार है और भी कुछ अन्य प्रकार के फल उपलब्ध हैं।

जिला कठुआ

कठुआ—यह जे० एण्ड के० प्रान्त में एक जिला है। यह शहर पहाड़ों पर

बसा हुआ है। यहाँ पर वर्फ पड़ती है। अतः वर्फीले दृश्य देखने योग्य हैं।) यहाँ पर यातायात के साधन जैसे टैक्सी, कार, व बस इत्यादि उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल---यहाँ पर ठहरने के हेतु बिरलेशाह नाम से प्रसिद्ध एक बड़ी धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल---यहाँ बहुत से मन्दिर, गुरुद्वारे आदि देखने योग्य है। जिनमें प्रमुख इस प्रकार है। आर्य समाज मन्दिर, नारायण भवन, सिक्खों का गुरुद्वारा, माता आशा पूर्णिमा का मन्दिर, और सत्य नारायण जी का मन्दिर इनका अपना विशेष महत्व है।

उत्पादित वस्तुयें---यहाँ पर सेव और फल भी पैदा होते है। सुक्ष्म रूप में मेवे भी हैं।

जिला जम्मू

(जम्मू, अखनूर, कटरा, वैष्णों देवी, पुन्च रजौरी)

जम्मू---जे० एण्ड के० प्रान्त में जम्मू स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह पठान कोट श्री नगर रोड पर स्थित है। यहाँ रेल मार्ग नहीं है। पठान कोट से बसों व कार द्वारा जाया जाता है। पठान कोट से यह १०८ किलो मीटर की दूरी पर है। शहर में घूमने फिरने व पहाड़ों पर चढ़ने के लिए रिक्शा, डाँडी व घोड़े की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल---यहाँ पर बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये धर्म शालायें और होटल हैं। होटलों में विश्राम की उचित व्यवस्था है। वहां की धर्मशालायें व होटल इस प्रकार है। रघुनाथ मन्दिर धर्मशाला, सुन्दर सिंह गुरुद्वारा रघु नाथ मन्दिर, के पास, विनायक मिश्रा धर्मशाला ज्वैल सिनेमा के पास, प्रीमियर होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट वीर मार्ग, अप्सरा होटल एण्ड रैस्टोरेण्ट, ।

दर्शनीय स्थल---यहाँ पर बहुत से देखने योग्य स्थान तथा मन्दिर हैं। जिनमें मुख्य ये हैं। रघुनाथ मन्दिर, रनवीरेश्वर मन्दिर, पुरानी सक्रेट्रीएट, पिरखाव, नहर बाहू किला, डोगरा आर्ट गैलरी, गाँधी भवन, राजेन्द्र पार्क, हरी सिंह जनाना पार्क। वैष्णों देवी ६२ किलो मीटर की दूरी पर है।

उत्पादित वस्तुयें---यहाँ पर लाल मिर्च का उत्पादन होता है। यहाँ पर अनार दाना, गुच्छियाँ, बनफशा, शहद, सिवाल, दड़ऊ, अखरोट, बादाम आदि की पैदावार अच्छी होती है।

—बैंक---यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, नेशनल बैंक, जम्मू एण्ड काश्मीर बैंक आदि प्रमुख बैंकों की शाखायें स्थापित हैं।

अखनूर---यह जे० एण्ड प्रान्त के जम्मू जिले में प्रसिद्ध है। यह जम्मू से ३२ किलों मीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलमार्ग की व्यवस्था नहीं है। इस लिये बसों, टैक्सी व कार द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने फिरने व पहाड़ों पर चढ़ने के लिये घोड़े आदि की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ परबाहर से आने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये बहुत सुन्दर होटल बने हुये हैं।

दर्शनीय स्थल—यह पिकनिक का बहुत सुन्दर स्थान है। यह शहर चैनाब नदी के ऊपर स्थित है। यहां पाकिस्तान का बार्डर है। पाकिस्तान व हिन्दुस्तान की १९६५ की लड़ाई में यह प्रमुख स्थान रहा है। यहाँ के लोगों को इस लड़ाई से काफी नुकसान पहुंचा है। यहाँ तक कि शहर भी खाली कर देना पड़ा। आदि स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण गल्ले की पैदावार नहीं होती है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज हरी सब्जी, सेव, अखरोट बादाम आदि हैं।

बैंक---यहां पर कोई बैंक नहीं है।

कटरा—यह जे० एण्ड के० प्रान्त में जम्मू जिले के एन० ई० आर० मनका-पुर-कटरा लाईन पर स्थित हैं। इस क्षेत्र में रेल व्यवस्था नहीं है। इसलिये यहाँ टैक्सी कारें, बसें आदि के द्वारा जाया जाता है।

विश्राम स्थल—यहां पर बाहर से आने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिए आनन्द धर्मशाला, सरकारी गृह, इसके अतिरिक्त यहां पर ३ सरकारी बंगले व पण्डों के यहां रहने का भी उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह बहुत सुन्दर पहाड़ी इलाका है और यहां से वैष्णों देवी का मन्दिर २० कि० मी० की दूरी पर है। यहां कई छोटे २ सुन्दर मन्दिर है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर सेव, फल व हरी सब्जी आदि का अधिक उत्पादन पाया जाता है।

(माता वैष्णो देवी की यात्रा)

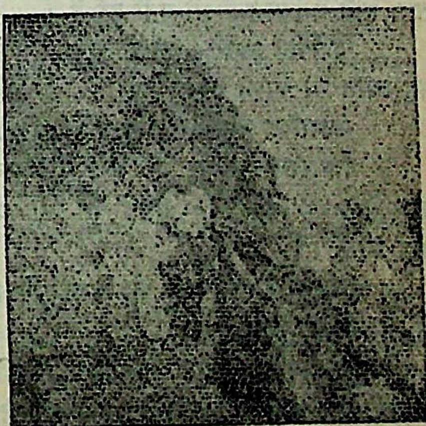
(जम्मू से कटरा ४२ कि० मी० दूर है कटरा से वैष्णों देवी २० कि० मी०)

माता वैष्णों देवी की यात्रा यहां से शुरू होती है कटरे में नारियल, प्रशाद और छड़ी लेकर कपड़े के जूते पहिन कर यानी माता के दर्शन को जाते हैं यहां घर-घर में माता की मूर्ति की प्रतिमा हैं और छोटे-२ बच्चे कन्यायें माता की सुरीली आवाज में भेट गाती हैं जो यात्रियों के मन में माता के दर्शनों की लालसा भर देती है कहते है कि जोगी भैरों मदरा के नशे में चूर होकर माता का पीछा करते हुए कटरे आया माता वैष्णों जी शराब, प्याज, माँस, वगैहरा से जलती थी माता ने कन्या का रुप धारण किया और जो बालिकायें कटरे में खेल रही थी उनके साथ मिलकर माता भी कन्या का रूप धारण करके खेलने लगी।

खेल रही थीं महारानी बालाओं के संग भूमिका खेल रहीं

जोगी भैरों ने अपने जोग के बल से देखा तो माता को बालाओं के साथ खेलते पाया परन्तु जोगी भैरों पहिचान ना सका उसने बालिकाओं से पानी मांगा तो

सब बालायें देखती रह गईं कहाँ लाई तो माता वैष्णों ने ही उसी समय बाँण गंगा पैदा कर धारा लाईं और जोगी को पानी देने लगी भैरों माता के पीछे और माता आगे-आगे पहाड़ों पर को भाग चली कटरे से चलने पर पहिले वाँण गंगा में स्नान करके पुल पार करके चढ़ाई शुरू हो जाती है। कटरे से ५ कि० मी० दूरी पर चरण पादुका स्थान है यहाँ माता के चरणों के निशान है रास्ते में युवा लड़कियां सुन्दर-२ माता की भेंट गाते हुए मिलेगीं एक-एक पैसा नया मीक का लेकर अपने को धन्य मानती है चरण पादुका से ५ किलो मीटर की दूरी पर अर्द्ध क्वारी स्थान है यहाँ गर्भ जून नामक गुफा है इसी गुफा में माता प्रवेश कर गई परन्तु भैरों ने पीछा नहीं छोड़ा जब भैरो भी गुफा में घुसा तो माता गुफा के दूसरी ओर से निकल कर फिर भागी इसी-लिये इस गुफा को गर्भ जून कहते हैं अर्द्ध क्वारी में माता का मन्दिर है खाने का ढावा है हलवाई की व चाय की दुकान है यात्री १ घन्टा २ घन्टा विश्राम करके माता वैष्णों देवी की चढ़ाई शुरू करते है यहाँ से भैरो मन्दिर ५ कि० मी० खड़ी चढ़ाई है ये भैरों मन्दिर एक स्थान है यहाँ पर भैरों ने माता वैष्णों देवी का दामन पकड़ा था माता ने अपने खड़क से भैरों का सिर काट डाला अगर कोई यात्री भैरों के दर्शन कर लेता है तो उसे माता के दर्शन नहीं होते लौटते हुये दर्शन करने पड़ते हैं (भैरों मन्दिर से वैष्णों देवी ५ कि० मी० है भैरों मन्दिर से उतराई याने ढाल आ जाता है और वैष्णों माता के मन्दिर से १०० गज दूरी पर उरली तरफ एक झरना पड़ता है जो सड़क काट कर नीचे निकाला गया है बड़ा सुहाना दृश्य है झरना पार करते ही घोड़ों का स्टेन्ड आता है और फिर बाजार एक सिधीं हलवाई देशी घी की पूरी हलुवा बेचता है वो माता की कृपा से कोई पैसा नहीं माँगता ग्राहक अपने आप दे जाते है यहाँ अनेको धर्मशाला हैं और धार्मिक नाम संस्था की ओर से पैसे जमा करा कर कम्बल दरी बगैरा मिलती है वापस जमा कराने पर पैसे मिल जाते है यहां एक ठन्डे जल की बावड़ी है जिसमें ३ ईंची के पाइप लगे है ये मन्दिर के निचले भाग में है इन पाइपों से यात्री स्नान करते हैं और फिर नारियल का प्रसाद लेकर सीढ़ियों द्वारा मन्दिर में जाते है यहाँ यात्रियों को लाईन लगाकर बैठना पड़ता है नव यात्रियों में तो ८-१० घंटे बाद नम्बर आता है यहाँ से मन्दिर के पन्डे १० आदमी एक बार गुफा में आने देते है और उन १० आदमियों याने यात्रियों के आने पर फिर १० यात्री छोड़तें है क्योंकि गुफा में गैस होती है दम घुटने लगता है इस गुफा में पिंडली तक पानी बहता है ये जल माता के चरणों में से आया है अगर गुफा की गैस सताने लगे तो जल पीलो ठीक



वैष्णों देवी यात्रा मार्ग

हो जाओगे जब भैरों का धड़ पीछा करते हुए यहाँ आया तो माता ने त्रिशूल से पहाड़ को छेदा और माता उसमें घुस कर लोप हो गई भैरों का धड़ छिद्र से टकरा कर ठंडा हो गया गुफा में पहले पैर भैरों के धड़ पर रख कर घुसना पड़ता है तभी माता वैष्णों के दर्शन होते है यहाँ पर भी हिमाचल की पर्वत मालायें हैं सुन्दर स्थान है मौसम हर वक्त ठंडा रहता है यह काफी ऊंचाई पर है घोड़ों से भी यात्रा होती हैं।

पून्च राजौरी—यह जे० एण्ड के० प्रान्त के जम्मू जिले के पून्च राजौरी नामक शहर स्थित है। यह जम्मू से २४० किलो मीटर की दूरी पर है। यहां रेल मार्ग न होने के कारण बसों, टैक्सी, व कार आदि से जाना पड़ता है। शहर में घूमने के लिये घोड़े, आदि की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये होटल बने हुए हैं।

दर्शनीय स्थल—यह पाकिस्तान के बार्डर पर स्थित है। यहाँ मिलेट्री की खान केन्द्र देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त पून्च सैन्ट्रल व पहाड़ी इलाका भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर सेव, अखरोट, आदि की अधिक पैदावार होती हैं।

जिला डोढ़ा

(डोढ़ा, किस्तवार, भद्रावाह, बनिहाल)

डोढ़ा—यह जे० एण्ड के० प्रान्त का प्रमुख जिला है यह एक बड़ा और प्रसिद्ध शहर भी है यह शहर जम्मू से ७५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह शहर चिनाव नदी के ऊपर लगभग ५ कि० मी० ऊँचाई पर बसा हुआ हैं। यहां यातायात के साधन केवल टैक्सी, कार, बसें हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर आने-जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये डाकबंगला तथा नयी धर्मशालायें भी बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर का पुल देखने योग्य है। यह एक सुदृढ़ पुल है। यह स्थान भी काफी सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर फल और मेवे अधिक मात्रा में पैदा होते है।

किस्तवार—यह जे० एण्ड के० प्रान्त डोढ़ा नामक जिले का शहर है। यह जम्मू से २४४ कि० मी० दूर स्थित है। बसों के अलावा यातायात के अन्य साधन और भी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर विश्राम के लिये धर्मशाला व होटल दोनों में ही ठहरने का उचित प्रबन्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यह शहर चिनाव नदी के ऊपर बसा हुआ है। यहां पर पानी की कमी है। यहां सरथल देवी का मन्दिर है। जो अपना विशेष महत्व रखता है। तथा दर्शनीय है। यहां से लगभग १३० कि० मी० की दूरी पर नीलम की खान। है

यहां पर मुसलमानों की एक जयरल भी है जिसको छोटा हज्ज भी कहते है। यहां पर केसर, कस्तूरी, इत्यादि काफी मिलती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सेब, फल, अखरोट व वादाम आदि पैदा होते हैं।

भद्रावाह—जे० एण्ड के० प्रान्त के जिला डोढ़ा में यह शहर स्थित है। यह जम्मू से १२४ कि० मी० की दूरी पर है। टैक्सी, कार, और बसें यहां के यातायात के मुख्य साधन हैं।

विश्राम थल—यहां यात्रियों के विश्राम के लिये वजीरों की धर्मशालायें तथा मन्दिरों में भी व्यक्ति विश्राम कर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—वजीरों की धर्मशाला देखने तथा प्रशंसनीय है। यह शहर पहाड़ के आँचल में वसा हुआ है। यह वर्फ से घिरा हुआ है। इसके दोनों ओर वर्फीले पहाड़ स्थित है। यहां पर वासुकीनाथ जी का मन्दिर है। मन्दिर की शोभा तथा उसकी मान्यता अपना अलग महत्व रखती है। यहां पर पहाड़ और उनसे निकलते हुए झरने मन को मोह लेते हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर सेव, मेवे, अखरोट व वादामों की पैदावार अच्छी होती हैं।

बनिहाल—यह जे० एन्ड के० प्रान्त में जिले के जम्मू-श्रीनगर रोड पर जम्मू से १९३ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेल मार्ग न होने से बसों, टैक्सी व कार आदि से जाया जाता है। शहर में घूमने के लिए घोड़े की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से धार्मिक व प्राकृतिक हश्य देखने योग्य हैं। जैसे आर्य समाज मन्दिर, नेहरू सुरंग (जो ३ कि. मी. लम्बी जिसके पार करने से ८० कि. मी. का रास्ता बच जाता है जो सारे संसार में दूसरे नम्बर पर है) इसके अतिरिक्त यहाँ हवाई जहाज देखने वाला यन्त्र 'रडार' भी अति सुन्दर व दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर आलू, सेव, मेवे आदि का अधिक उत्पादन होता है।

जिला बारामूला
(बारामूला व गुलमुर्ग)

बारामूला—जे० एन्ड के० प्रान्त में वारामूला एक जिला है। यहां टैक्सी, वसें चलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां विश्राम के लिये होटलों में उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह शहर घूमने तथा देखने योग्य हैं। पहाड़ों के प्राकृतिक दृश्य दर्शनीय हैं।

उत्पादिन वस्तुएं—यहाँ विरोजा, तारपीन का तेल, पहाड़ी, फल आदि वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है। यह एक मन्डी भी है।

गुलमर्ग—जे० एन्ड के० प्रान्त के बारामूला जिले में गुलमर्ग एक सुन्दर स्थान हैं। यह श्री नगर से ३८ कि. मी. दूर है। वहाँ से बस, कार द्वारा आया जाता है। गुलमर्ग से १५ कि. मी. दूर खिलन मर्ग है तथा ८ कि. मी. दूर टनमुर्ग है। शहर में घूमने फिरने के लिए टैक्सी, बस, कार, घोड़ा इत्यादि है। यह स्थान काफी ऊंचाई पर है। यहाँ ठंड काफी पड़ती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये डाक बंगला व होटलों में उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ कई पार्क हैं। जो देखने योग्य हैं। गुलमर्ग से यहाँ पर लोग घोड़े की सवारी से आते जाते हैं तथा बर्फ का आनन्द लेते हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ सेव, फल, अखरोट मेवा व बादाम मिलते हैं।

जिला पहलगाँव

(पहलगांव, चन्दनवाड़ी, स्वामी अमरनाथ)

पहलगांव—यह जे० एन्ड के० प्रान्त में पहलगाँव स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह खानबल-अमरनाथ रोड पर स्थित है। यहाँ से ३९ कि. मी. की दूरी पर अमर नाथ जी हैं। यहाँ रेलमार्ग न होने के कारण बसों, टैक्सी आदि से जाया जाता है। शहर में घूमने व पहाड़ों पर चढ़ने के लिये घोड़े की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिए बहुत सुन्दर-२ होटल आदि का उचित प्रवन्ध है। जिनमें मुख्य पहलगांव होटल, पूर्णिमा होटल, माउन्ट व्यू होटल, प्रिंस होटल, खालसा होटल, नटराज होटल, वोलगा होटल, राक्सी होटल, ग्रीनलैंड होटल आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यह काश्मीर का सबसे रमणीय स्थान है। यहाँ पर फिल्मी अभिनेत्री तथा अभिनेता आकर रुकते हैं। यहाँ से ही अमर नाथ जी की यात्रा शुभारम्भ होती है। यहाँ से अमर नाथ जी की चढ़ाई १६ हजार फिट है। शिवजी की पिण्डी बर्फ से ही बनती है। बर्फ के पहाड़ अत्यन्त सुन्दर है। हजारों यात्री दूर-२ से यात्रा करने के लिए आते हैं। इसके अतिरिक्त गौरी शंकर जी का मन्दिर, यहाँ सावन सुदी पूर्णमासी (रक्षा बन्धन) को स्वामी अमरनाथ में बड़ी जोर का मेला लगता है। अमरनाथ जाने के लिये यात्रियों को हर प्रकार का सामान किराये पर मिलता है आदि स्थल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर मेवे आदि का अधिक उत्पादन होता है।

श्री अमरनाथ महादेव की यात्रा

चन्दनवाड़ी—यह जे० एण्ड के० प्रान्त के पहल गाँव जिले में यह प्रसिद्ध शहर स्थित है। यह पहल गाँव से ३२ कि० मी० की दूरी पर है। यहा रेल मार्ग न होने के कारण घोड़ें की सवारी द्वारा जाया जाता है घूमने के लिये बहुत सी सवारी उपलब्ध है।

विश्राम थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये होटल धर्मशाला आदि का प्रबन्ध है।

स्टेट पहल गांव से अमरनाथ जी की यात्रा

पहल गाँव में जम्मू काश्मीर गवर्नमैन्ट ने यात्रियों की सुविधा के लिये डाक्टर व राशन वगैरा का प्रबन्ध बहुत अच्छा किया हुआ है इस मेले के समय पहाड़ों पर से हजारों कश्मीरी हजारों घोड़ों, डाँडी सहित पहल गाँव में इकट्ठे हो जाते हैं और गवर्नमैन्ट की तरफ से इनके घोड़े डाँडी का रेट नियुक्त कर दिया जाता है और इन पहाड़ियों कश्मीरियों का नाम पता भी दर्ज कर लिया जाता है यात्री को एक पास दिया जाता है जब तक यात्री अपनी अमरनाथ यात्रा पूरी करके वापस अपने सामान के ठीक वापस पहल गाँव आकर पास पर लिख कर घोड़े वाले कश्मीरी को देता है तभी कश्मीरी को उसकी मेहनत का पैसा गवर्नमैन्ट देती हैं।

अमरनाथ महादेव का मुख्य मेला दर्शन सावन शुक्ला पूर्णिमा सलूनों (रक्षा बन्धन) का होता हैं ये यात्रा रक्षा बन्धन से ४ दिन पहले शुरु होती है और रक्षा बन्धन से ३–४ दिन बाद तक यात्री वापिस आ जाते हैं वैसे इस मेले को छड़ियों का मेला भी कहते हैं। कहते है कि कोई छड़ी वाला महात्मा हर साल अमरनाथ के दर्शन करने सलूनों को आया करता था। इस लिये छड़ियों का मेला प्रसिद्ध हुआ कहते हैं कि पहिले यात्री अमरनाथ जी के दर्शन करके भैंरों बलि पहाड़ पर से कूद कर बली हो जाते थे (भैंरों बली एक पहाड़ है) आओ अब पहल गांव से पैदल, घोड़ा या डांडी, द्वारा अमर नाथ जी चलें।

पहला विश्राम—चन्दन वाड़ी

यह स्थान ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से घिरा बीच में अच्छा खासा मैदान है यहाँ मौसम ठंडा रहता है पहल गांव से १३ कि० मी० चलने के बाद यात्री पहला पड़ाव यही डालते है। यहाँ एक छोटा सा बाजार भी लग जाता है। करीब ५-६ हजार यात्रियों का काफला यहां रुक जाता है रात्रि को विश्राम करके यात्री अमरनाथ जी को प्रातः कूच बोल देते है चन्दन वाड़ी से (पिस्सू घाटी) ये एक बर्फ का पुल है। जिसके अन्दर ये नदी निकलती है अमरनाथ यात्रा में सबसे कठिन चढ़ाई यही पड़ती है यात्री को बर्फ पर होकर चलना पड़ता है पिस्सू घाटी से आगे एक स्थान ऐसा आता है जहाँ पर हवा, या खुशबू, बदबू, कुछ नहीं होती है यहां पुलिस वाले किसी यात्री को रुकने नहीं देते हैं क्योंकि इस स्थान पर कुदरती दम घुटने लगता है।

ये स्थान पहल गांव से २६ कि० मी० और चन्दन बाड़ी से १३ कि० मी० पर है। पहल गाँव से चलने के बाद १ पडाव चन्दन वाड़ी २ पड़ाव शीश नाग पर है यहां पर एक झील है जिसका पानी दूर से हरा २ दिखलाई देता है और पानी को हाथ में लेकर देखों तो सफेद दूध जैसा होता है इसी झील में शेष नाग नाम के सर्प रहते हैं कभी कभी किसी क़िसी भाग्य शाली को ही दर्शन होते हैं। यहां के दृश्य बहुत ही रमणीक ह इस यात्रा में झरने व ऊंची २ पर्वत मालायें सफेद बर्फ का ओढ़ना

ओढ़े हुए बहुत ही आर्कषित करती हैं रात्री को शेश नाग पर विश्राम करके प्रातः अमरनाथ जी को यात्री कूच करते हैं।

शेष नाग से पंचतरणी (८ कि० मी०)

पड़ाव पंचतरणी है यहां एक नदी है जिसे पंच तरणी कहते हैं इसी नदी के सहारे अच्छा खासा पहाड़ी मैदान है आखरी पड़ाव ये ही है इसी नदी में यात्री स्नान करके अमरनाथ की गुफा में जाते हैं और दर्शन करके उसी दिन वापिस यही आ जाते हैं पंचतरणी से अमरनाथ की गुफा तक पैदल ही जाते हैं घोड़े डाँडी से नहीं पंचतरणी से अमरनाथ की गुफा ५ कि० मी० की दूरी पर है गुफा में पहुंचकर काफी ठंड महसूस होती है। यहाँ अगर माचिस जलाई जावे तो जलेगी नहीं अगर जल भी गई तो फौरन बुझ जावेगी ये गुफा पहाड़ में कुदरती ही अच्छा खासा एक बड़ा कमरा बना हुआ है। इसी कमरे में वर्फ से शिव लिंग वनता है इस शिव लिंग को ही अमरनाथ महादेव कहते हैं इसी शिव लिंग पर बूंद २ पानी गिरता रहता है। यहाँ एक कबूतर का जोड़ा भी रहता है जो अमरनाथ महादेव का परम भक्त है यहाँ पर शंकर भगवान ने पार्वती जी को अमर कथा सुनाई थी इनके अतिरिक्त और कोई अन्य पक्षी नहीं रहता। इसलिये इसका नाम अमर नाथ पड़ा अमरनाथ जी की यात्रा करने के बाद किसी हिल स्टेशन देखने को मन नहीं करता है।

जिला श्रीनगर

श्रीनगर—यह जम्मू एण्ड काश्मीर की सुन्दर राजधानी है। यह एन० आर की पठान कोट-श्रीनगर रोड पर पठानकोट से ४३७ कि० मी० व जम्मू से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेल मार्ग न होने के कारण पठान कोट से बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने व पहाड़ों पर चढ़ने के लिये ताँगे, टैक्सी, घोड़े डांडी आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालायें तथा होटल आदि का उचित प्रवन्ध है। जिनमें मुख्य जैन धर्म-शाला, लाल चौक में, अग्रवाल धर्मशाला लाल चौक में, आदि है।

होटल—नेहरू गैस्ट हाउस, ग्रांड होटल, एम्वैसी होटल, बोम्बे गुजरात होटल महा लक्ष्मी होटल बादशाह रोड, पार्क होटल, मुन्शी पार्क होटल, कैपीटल होटल, नीलम होटल, मेजिस्टिक होटल, आदि प्रमुख है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से प्राकृति दृश्य, पार्क, झील, गार्डन आदि दर्शनीय स्थान है। जैसे गवर्नमेंन्ट म्यूजियम, लाल मण्डी बाग, नेहरु पार्क, गागरी बाल, प्रताप, गाँधी, लाल मण्डी, उस्मान जनाना और नया काश्मीर आदि पार्क है।

झील—डल, अन्चर, होकरसर, मनासवल, तुलर, गंगा वल, शेषनाग वल नाग विष्णुसर, कृष्णासर, तारसर, कौंसरंग, अफरावत, मानसर, सूरेनसर, और तुलियन आदि प्रमुख झील है।

फव्वारे—चश्माशाही, अचावल, कुकड़ नाग, वैरीनाग, सलफर, व अनन्तनाग आदि फुव्वारें दर्शनीय है।

गार्डनस—चश्माशाही गार्डन में (रायल फव्वारा), निशात बाग, शालीमार बाग, नसीम बाग, अचावल बाग आदि बाग देखने योग्य है। पारी महल, जामा मस्जिद, शाही मस्जिद, दुर्गियाना मन्दिर, विश्व विद्यालय, आर्य समाज मन्दिर आदि प्रमुख स्थल दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सेव, फल, व मेवें की अधिक उपज होती है। यह मेवों का काश्मीर कहलाता है। जैसे सेव, नाग, अखरोट, बादाम, अनार गिलास, आलू बुखारा, आडू, खुमानी, डीगरा, गुच्छी केसर, कस्तूरी, सिंघाड़ा, लाल मिर्च, जड़ी बूटियां, आदि का अधिक उत्पादन होता है। यहां के कश्मीरी शाल बहुत प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ इण्डिया, नेशनल एण्ड ग्रीडलेंज बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, जम्मू एण्ड काश्मीर बैंक, और यूनाईटेड कार्मशियल बैंक आदि प्रमुख बैंक है।

श्री नगर से प्रमुख नगरो की दूरी कि० मी० में (सड़क द्वारा)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अचावल	६३	अनन्तनाग	५५	अर्द्ध क्वारी	३५५
अवानतीपुर	३१	अधमपुर	२३२	कटरा	३४८
काजीगड़	७१	काली बरी	३७६	कुड	१९४
खन्नावल	५२	जम्मू	३००	टनमर्ग	३९
दयाल चाक	३५६	पम्पारे	१५	पठानकोट	४०८
पाटनीरोप	१८६	पहल गाँव	९७	बरोद	१७५
बनिहाल	१०७	बारामूला	५२	यशमर्ग	४७
रामबन	१४४	लखनपुर	३८७	वैष्णों देवी	३६२
अमरनाथ जी	१३७	सोन मर्ग	८३	सोपोर	५२

———

पंजाब

यह सिंह शावकों का घर है,
पंजाब केसरी थे लाला.
वीरों की याद दिलाता है,
है बाग जहाँ जलियां वाला.

जिला अमृतसर

(अमृतसर, तरनतारन, खडूर साहिब, गोविन्दवाल साहिब, बावावकाड़ा,)

अमृतसर—यह जिला व नगर पंजाब प्रान्त में दिल्ली-अमृतसर लाईन पर दिल्ली से ५९० कि० मी० की दूरी पर है। यह एन. आर. का रेलवे जंक्शन है। यहां से चारों ओर को रेल गाड़ियां जाती हैं। यहाँ पर घूमने के लिये रिक्शा, सीटी बस, तांगा व टैक्सी आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं। यहां की प्रमुख धर्मशालायें इस प्रकार हैं:—संत राम जी की धर्मशाला (रेलवे स्टेशन के पास), लाला हरगोविन्द दास की धर्मशाला (स्टेशन के पास), हर दयाल दुगदि की धर्मशाला (मलका मूर्ति के पास गुरुवाणी बाजार में), गुरुद्वारा बाजार में गुरु रामदास की धर्मशाला, एयर लाईन्स रैस्टोरैन्ट (कपूर रोड पर फोन न० ४४५४५,) रिज़्त होटल (फोन न० ४४१९९) आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का जलियाँ बाग एक ऐतिहासिक स्थान है (स्वर्ण मन्दिर के पास) यह एक ऐसा बाग़ है जहां पर देश भक्तों की १३ अप्रैल सन् १९१९ को बैसाखी के जलसे में सभा हो रही थी उस समय जरनल डायर में उन पर मशीनगनों की गोलियां चलवाई थीं परिणामस्वरूप सैंकड़ो देशभक्त शहीद हो गये और लाशों से कुआं भर गया था। उस समय की गोलियों के चिह्न आज भी अंकित हैं। (यहां पर प्रति-वर्ष बैसाखी का उत्सव होता है।) यहां पर ऊनी-सूती कपड़ों के मिल व गोल्डन मन्दिर (सिक्खों का प्रसिद्ध मन्दिर निर्माता श्री रामदास जी), सिक्खों का गुरुद्वारा, आर्य-समाज मन्दिर, अमृतसर नामक सरोवर, सत्यनारायण जी का मन्दिर, हर की पैड़ी,

जैन मन्दिर, अड़सठ तीर्थ, दुख भंजन पेरी, गौशाला, व चातीविप रोड पर बाबा स्वापा का मन्दिर है। हर मन्दिर साहब के पास सिक्खों का एक पवित्र स्थान है जहां सिक्खों के छटे गुरु ने धर्मयुद्ध के लिये वीरता प्रदान की थी, इसके आसपास सिक्खों के २२ ऐतिहासिक गुरुद्वारे हैं। इस शहर में प्रतिवर्ष १० लाख यात्री दर्शन के लिये आते हैं और यह सिक्ख धर्म का राष्ट्रीय धार्मिक व सामाजिक केन्द्र है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से बाँसमती चावल, लाल मिर्च, चना सफेद व काला, कपास देसी, धान, सरसों, खल, बिनौला, रुई, तिल, गेहूँ, मसूर, किराना, मेवा, चाय, रंग आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। इसके साथ-साथ यहाँ केसर, कस्तूरी, मोम, शहद, कत्था व हींग आदि भी उत्पन्न होते हैं। यह ऊनी व सूती कपड़े का बड़ा केन्द्र है।

बैंक—यह नगर व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहां भारत के मुख्य बैंकों की शाखायें स्थापित हैं:—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक बड़ौदा बैंक, हिन्दुस्तान कामिशियल बैंक, लापड़ बैंक, चार्टड़ बैंक, इण्डिया बैंक, अमृतसर बैंक, न्यू बैंक, नेशनल बैंक, सौराष्ट्र बैंक, यूनाइटेड कार्मशिअल बैंक, नारंग पंजाब एण्ड सिन्ध और इण्डियन ओवर सीज़ बैंक आदि प्रमुख हैं।

तरनतारन—यह नगर जिला अमृतसर में एन० आर० की अमृतसर-खेमकरन लाईन पर है। यह अमृतसर से २४ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर रिक्शा, ताँगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिए दरबार सहाय की सराय बहुत सुन्दर बनी हुई है। आदि और भी अनेक धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, राधा स्वामी का मन्दिर, यह सिक्खों का पवित्र तीर्थ स्थान है। भारत के कोने-कोने से सिक्ख सम्प्रदाय के लोग दर्शन के लिये आते हैं। सरोवर के बीच में सिक्खों का गुरुद्वारा है यह सरोवर ८४ वीघे में फैला हुआ है। यह तालाब गुरु अर्जुन जी महाराज ने यहाँ कुष्टियों (कोढ़ियों) का इलाज करने के लिये बनवाया था। इस सरोवर में स्नान करने से कोढ़ियों का रोग व अन्य रोग दूर होते हैं। हर अमावष्या को बहुत बड़ा मेला लगता है। लाखों यात्री स्नान करने के लिये आते हैं। यात्री को प्रसाद व गुरु के लंगर में फ्री खाना मिलता है। यहां का स्वर्ण मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौं, चावल, बिनौला व रुई आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रमुख बैंक हैं।

खडूर साहिब—यह पंजाब प्रान्त में अमृतसर जिले क अमृतसर से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर के अन्दर घूमने के लिये रिक्शा, तांगा व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यह शहर १२ पट्टी में बसा हुआ है और हर पट्टी में यात्रियों के ठहरने का पूरा प्रबन्ध है। यहां जैन धर्मशाला भी है।

दर्शनीय स्थल—यह १२ पट्टी का प्रसिद्ध शहर है यहां अनेकों बड़े-बड़े गुरुद्वारे बने हुए हैं जिनमें प्रमुख अंगत साहब गुरुद्वारा, अमरदास जी का गुरुद्वारा, रामदास जी का गुरुद्वारा, जैन मन्दिर व डिग्री कॉलिज आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूँ, चना, जौं, चावल, विनौला व रुई की अधिक पैदावार है।

गोविन्दवाल साहिब—यह पंजाब प्रान्त के अमृतसर जिले में अमृतसर से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में घूमने के लिये रिक्शा, तांगे,टैक्सी की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें व गुरुद्वारों की तरफ से उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—देहली और लाहौर की जो मुगलकाल की सड़क थी वहां व्यास दरिया के किनारे नाव से पार होते हैं। यही सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदास जी ने यह शहर आबाद किया था। बाबा बोली साहब गुरुद्वारा देखने योग्य है।

बाबा बकाड़ा—यह पंजाब प्रान्त के अमृतसर जिले में अमृतसर से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में घूमने फिरने के लिये रिक्शा, ताँगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये गुरुद्वारे की बहुत ही सुन्दर सराय बनी हुई है जिसमें हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यह तेज बहादुर जी का मुख्य स्थान है यहां से २ मील की दूरी पर देहराबाबा जयमल सिंह व राधा स्वामी का मुख्य स्थान है।

जिला "कपूरथला"

(कपूरथला, सुल्तानपुर लोधी)

कपूरथला—कपूरथला पंजाब प्रान्त का एक जिला है। यह नगर एन० आर० पर एक सुन्दर रेलवे जंकशन है। यह जालन्धर-फिरोजपुर लाईन पर जालन्धर से २१ किलो मीटर दूर है। यहां पर टैक्सी, रिक्शा और तांगों की सेवा यात्रियों को मिलती है।

विश्राम स्थल—रेलवे स्टेशन के पास ही यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर राजा का महल, किला, मोर्डन पैलेस (अब इसमें पंजाब सरकार का सैनिक स्कूल है), आर्य समाज मन्दिर, गौशाला, व अन्य लोहे के बड़े-बड़े कारखाने देखने योग्य है।

विशेष—यह सरदार कपूरसिंह जी जो सिक्खों के पहले बादशाह हुए हैं उनके नाम पर ही इस शहर का नाम कपूरथला पड़ा। यह पहले एक छोटी सी रियासत थी।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, तेल, गेहूं, जौ, अलसी, मूंगफली, गुड़, चीनी आदि हैं। यहां पर एक बड़ी मंडी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, आदि बैंकों की सेवायें उपलब्ध हैं।

सुल्तानपुर लोधी—यह पंजाब प्रान्त का कपूरथला जिले में कपूरथला से ३० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत सी धर्मशालायें हैं व गुरुद्वारे की तरफ से ठहरने का भी उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से ऐतिहासिक व धार्मिक स्थान हैं। जैसे लोधी काल का किला, गुरुद्वारा बेरसाहब, मोदी खाना, प्राचीन मन्दिर आदि स्थान देखने योग्य हैं।

जिला "गुरदासपुर"

(गुरदासपुर, कादियां, डलहौजी, दीना नगर, पठानकोट, बटाला)

गुरदासपुर—यह पंजाब प्रान्त के प्रमुख जिलों में अपना स्थान रखता है। यह पंजाब प्रान्त के प्रसिद्ध शहर अमृतसर से ७२ किलो मीटर की दूरी पर है। यह नगर एन० आर० की अमृतसर-पठानकोट लाईन पर स्थित है। यह एक सुन्दर रेलवे जंक्शन है। यहाँ यात्रियों की सुविधा के लिये टैक्सी, रिक्शा और तांगों की सेवायें हर समय प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में सबसे उत्तम ठहरने का स्थान ऋषि शाह की की धर्मशाला है जहां यात्रियो के आराम का विशेष ध्यान रखा जाता हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से महत्वपूर्ण स्थान हैं। जिनके दर्शन मात्र से मन में एक अनोखा आनन्द प्राप्त होता है। कुछ समय के लिये तो मनुष्य संसारिक वन्धनों से मुक्त हो ही जाता है। यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर दो हैं और दोनों ही भव्य हैं। जैसे गुरुकुल विश्वविद्यालय, झूलना महल, पंढ़ोरी महन्त की गद्दी। यहाँ पर हर वर्ष वैशाख के महीने में एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें प्रान्त भर के बहुत से आदमी आते हैं और बहुत सी दुकानें भी इस मेले की शोभा को बढ़ाती हैं। यहां एग्रीक्लचर के दफ्तर और पंजाब सरकार का सबसे बड़ा मुर्गी फार्म है।

उत्पादित वस्तुएं—इस क्षेत्र में लगभग सभी वस्तुयें उत्पन्न होती हैं। परन्तु चावल, गेहूँ, जौ, मसूर, अलसी, उड़द, गुड़, चीनी, तेल और तिल आदि विशेष हैं। यह एक अच्छी व बड़ी व्यापारिक मंडी है।

बैंक—मंडी होने के कारण व्यापारियों को रुपया मंगाना तथा भेजना पड़ता है। इसी सुविधा के लिये यहाँ पर प्रमुख बैंक स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया, अमृतसर बैंक और दी गुरदासपुर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक है।

कादियां—यह नगर जिला गुरदासपुर के अन्तर्गत आता है। यह नगर उत्तर रेलवे की बटाला-कादियां लाईन पर बटाला से ५० किलो मीटर की दूरी पर है। यह एक अच्छा रेलवे स्टेशन है। रेल मार्ग के अतिरिक्त जालन्धर से बसों द्वारा भी कादियां पहुंचा जा सकता है। टैक्सी, रिक्शा और ताँगे नगर में तथा आस-पास के स्थानों पर जाने के लिये मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास ही एक सुन्दर धर्मशाला है जहां यात्री सुविधा से ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है।

विशेष—कादियां की विशेषता यह है कि वहां अमदिया फिरका (सम्प्रदाय) का धार्मिक केन्द्र है। उनका यही मक्का मदीना है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अनेक वस्तुयें पैदा होती हैं, परन्तु यहां की मंडी में धान, गुड़, शक्कर, मक्का, गेहूं, जौ, तिल, मसूर, चावल, परमल, अरहर, चना आदि हैं। यहाँ एक व्यापारिक मंडी है।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक ही प्रमुख है।

डलहौजी—पंजाब प्रान्त के जिला गुरदासपुर में डलहौजी एक प्रसिद्ध नगर है। यह नगर पठानकोट नगर से ८० किलो मीटर की दूरी पर है। यह एक पहाड़ी स्टेशन है अतः यहां प्रति वर्ष बहुत से यात्री आते रहते हैं। रमणीक स्थान है यहाँ रिक्शा, तांगे और टैक्सी की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला और होटल हैं। यहाँ पर धर्मशालाओं की अपेक्षा होटल अधिक हैं। जिनमें यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है, सनातन धर्म सभा मन्दिर, गुरुद्वारा धर्मशाला, क्लेयर्सि होटल, क्रम्स होटल, ग्राण्ड व्यू होटल, माउन्टू व्यू होटल, डलहौजी कल्ब, ग्रीन होटल, कोहिनूर होटल, मेहर्स होटल, मेट्रो होटल, स्प्रींग होटल हैं जहाँ पर यात्रियों को आराम से ठहरने का प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त पी० डब्लू० डी० रैस्ट हाऊस, टूरिस्ट बंगला, टूरिस्ट होम।

विशेष—यह एक पहाड़ी स्थान है। यहां पर कोई विशेष वस्तु की खेती नहीं होती और न ही कारखाने हैं वरन् यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर और मनोहारी हैं। यहाँ पर पिकनिक के लिये अच्छे स्थान हैं। यहां पर पहाड़ों की चोटियां वर्फ से ढ़की रहती हैं। यहा पर अनेक दर्शनीय स्थान हैं जो इस स्थान की शोभा और भी बढ़ा देते हैं। कुछ विशेष स्थान देखने योग्य हैं। लार्ड डलहौजी जो भारत का जनरल था उसी के नाम पर यह छोटा साहिल स्टेशन आबाद हुआ।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, सात धारा, पूंज पूला, सुभाष बोली, सनातन धर्म सभा का मन्दिर, गुरुद्वारा, खजियार यह स्थान विशेष दर्शनीय हैं जन-धारी घाट, काला टोप, डेन कुण्ड, चम्बा है। चम्बा के नाम पर ही सेव की एक

जाति चम्बा कहलाती है। यहाँ पर आस पास की पहाड़ियां अपना विशेष महत्व रखती है। जैसे जानधारी घाट (३ किलो मीटर यह स्थान पिकनिक के लिये उत्तम है), ब्रोकोटा पहाड़ी (५ कि० मी० वर्फ की चोटियां है), देन कुण्ड (१० कि० मी० पिकनिक का उत्तम स्थान), काला टोप (८ कि० मी० पिकनिक का उत्तम स्थान है), चम्बा (५६ कि० मी० सुन्दर घाटियों का रास्ता है)।

बैंक—पंजाव नेशनल बैंक आफ इण्डिया, स्टेट बैंक आफ इण्डिया यहाँ के प्रमुख बैंक हैं।

दीनानगर—यह नगर गुरदासपुर जिले में है। यह एक अच्छा रेलवे स्टेशन है। यह नगर अमृतसर-पठानकोट लाईन की एन. आर. यह नगर अमृतसर से ९४ कि० मी० दूर है। यहां टैक्सी, रिक्शा, और ताँगे अधिक मिलते हैं।

विश्रान स्थल—यह एक अच्छा नगर हैं। यहां पर अनेक मन्दिर हैं। दूर से देखने पर यह मन्दिरों का ही नगर मालूम पड़ता है और अनेक मन्दिरों और धर्मशालाओं में यात्री ठहरते है। ठहरने के स्थानों में ही अनेक स्थान दर्शनीय हैं। संक्षेप में कह सकते है कि यहां पर कई धर्मशालायें हैं जिनका उल्लेख दर्शनीय स्थानों के साथ दिया है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, दयानन्दमठ यह वड़ा सुन्दर स्थान है। इस मठ में संस्कृत विद्यालय है और जनता की सेवा के लिये धर्मार्थ औषधालय भी है। शाह की छवला मन्दिर है और यहाँ इस मन्दिर में यात्री ठहर सकते हैं वाल माता का मन्दिर-इस मन्दिर में गीता भवन भी है जहां सतसंग होता है और इस मन्दिर में यात्रियों के ठहरने का भी प्रबन्ध है। चूदरानी का मन्दिर, शीतला मन्दिर, भूतनाथ का मन्दिर, काली का मन्दिर, गुरूद्वारा इससे अतिरिक्त चारों तरफ अनेक मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज चावल, धान, मक्का, अलसी, मेथी जौ आदि की पैदावार होती है। यहां एक सुन्दर मण्डी है।

विशेष—यहाँ महाराजा रणजीत सिंह के खाद्यमन्त्री राजा दीनानाथ के नाम पर बसाया गया है और इसी कारण इस शहर का नाम दीना नगर पड़ा। यहां लकड़ी के खिलौने बहुत प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक और सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक की सेवा उपलब्ध हैं।

पठानकोट—यह पंजाब प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर है। यह नगर जिला गुरदासपुर में आता है। यह जालन्धर-पठानकोट लाईन पर एक बहुत बड़ा रेलवे स्टेशन है। यहाँ एन० आर० का एक मुख्य स्टेशन है और यहा से बड़े-२ नगरों को रेल जाती है। यह नगर पंजाब के मुख्य नगर जालन्धर से ११६ कि० मी० की

दूरी पर है। यहां टैक्सी, रिक्शा, ताँगे आदि मिलते हैं और जम्मू जाने के लिये यहां से बसें २ फर्लांग पर मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के विश्राम करने के लिये निहालशाह की धर्मशाला मैंन बाजार में ही हैं। काली माता का मन्दिर व धर्मशाला, आराम गृह सार्वजनिक निरीक्षण विभाग है यह स्थान भी स्टेशन के पास ही है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दो आर्य समाज मन्दिर है काली माता का मन्दिर, डी० ए० वी० हायर सैकिन्ड्री स्कूल यह नगर बहुत बड़ा है और बड़े अच्छे ढंग से बसा हुआ है।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में एक बड़ी मण्डी तथा प्रसिद्ध व्यापारिक मंडी है। यहां पर चावल, कूट्टु, चौलाई, लोबिया, रीठा, तिल, अलसी आदि का व्यापार होता है। भारत के अनेक स्थानों को पहाड़ी उपज जैसे कूट्टु, रीठा आदि जाते रहते हैं।

विशेष—यह भारतवर्ष का सबसे बड़ा मिलिट्री एरिया है। जो ३२ कि० मी० के एरिये में फैला हुआ है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, लक्ष्मी कौमर्शियल बैंक, नेशनल बैंक आफ लाहौर।

बटाला—यह नगर जिला गुरदासपुर का एक नगर है। यह एन० आर० की अमृतसर-पठानकोट लाईन पर एक बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह नगर अमृतसर से ३९ कि० मी० दूर है। यहां पर भी अन्य पंजाब के नगरों की तरह ही टैक्सी रिक्शा और ताँगे ही विशेष रुप से मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये भाई ईचरन देव जी की धर्मशाला अच्छी बनी हुई है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज चावल, गेहूं, चना, तेल, खल, रुई धान, तिल, गुड़, आदि की पैदावार होती है। मसूर की यह प्रसिद्ध मण्डी है और भारत के अनेक नगरों को यहां से मसूर जाती है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर काली माता जी का मन्दिर, कंछ साहब का गुरूद्वारा, अखलेश्वर महादेव जी का मन्दिर जालन्धर रोड पर, तालाब, आर्य समाज मन्दिर, शिवशंकर का मन्दिर है।

विशेष—यहां लोहे के व ढलाई के अनेक बड़े-२ कारखाने हैं। उसके ३॥ कि० मी० पूर्व में उच्चलबटाला में शिवशंकर का बहुत बड़ा मन्दिर है। यहाँ शिवरात्रि का प्राचीन काल से बहुत भारी मेला लगता है। यहां पर गुरु नानक जी का विवाह हुआ था।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक, साहूकारा बैंक, जमीदर को-आपरेटिव बैंक आदि बैंक है।

जिला चण्डीगढ़
(चण्डीगढ़ पिंजोरगार्डन)

चण्डीगढ़—चण्डीगढ़ पंजाब प्रान्त का एक उन्नत जिला है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली-कालका लाईन पर दिल्ली से २६६कि० मी० दूर है। यह एक बड़ा जंकशन है और एक प्रसिद्ध नगर है। यहां पर सिटी बस, रिक्शा, और टैक्सी हर समय मिलती हैं।

विश्राम स्थल—सूद धर्मशाला-सैक्टर न० २२ डी० धर्मशाला सैक्टर न० १८ डी० और यह एक सुन्दर और बड़ा नगर है। यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये ओवराम माऊन्ट व्यू होटल सैक्टर न० १० फोन न० ४७२६, ४०६६, ४०७६, ६०२१, २२२३ हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार गुड़, गेहूँ आदि का अच्छा व्यापार होता है। (यहां पर दस्तकारी भी होती है)। अनेक प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन होता है।

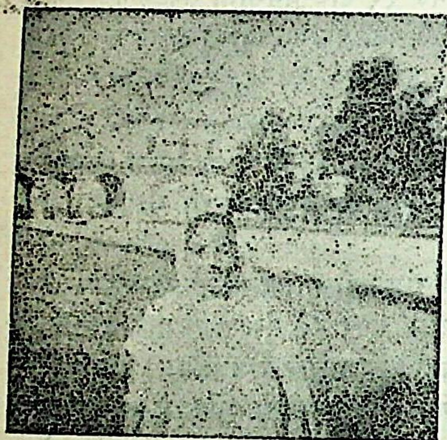
विशेष—चण्डीगढ़ पंजाब प्रान्त की राजधानी है। यह शहर बहुत सुन्दर है सड़क चौड़ी और आधुनिक ढंग की बनी हुई है। नगर ४० सैक्टरों में आकर्षिक है। यहां सरकारी दफ्तर है। यह एक बहुत बड़ा व्यापारिक व उद्योगिक नगर है। यहां पर गल्ले की बहुत बड़ी मण्डी है इस नगर के बारे में ऐसा प्रसिद्ध है कि यहाँ से २० कि० मी० दूर कालका शिमला रोड पर चन्डी का मन्दिर है। इसी मन्दिर के नाम पर इस नगर का नाम चण्डीगढ रखा गया है। चण्डीगढ़ के समीप ही चंडीगढ़ नामक प्राचीन गांव है जिसमें चन्डी मन्दिर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि दक्ष प्रजापति की यह राजधानी की शिवपुराण के अनुसार दक्ष पुत्री सत्ती ने शिव का विवाह शिव जी के साथ हुआ था चण्डी का रूप धारण कर अपने शरीर को क्रोध वश योग अग्नि में भस्म कर दिया था। परिणायता महादेव जी ने दक्ष यज्ञ का विध्वन्स किया था तभी से इस गांव का नाम चण्डीगढ़ पड़ा और आज भी इसी नाम से जाना जाता है। यह संसार में तीसरे दर्जे का शहर है।

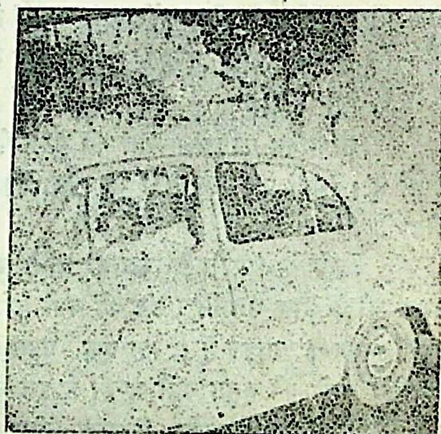
बैंक—यह एक बड़ा नगर है और यहाँ पर बहुत से बैंकों की सेवा मिलती है जिनमें प्रमुख बैंक आफ इण्डिया, न्यू बैंक आफ इण्डिया, स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक स्टेट बैंक आफ इण्डिया, यूनाईटेड कोमर्शियल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से स्थान देखने योग्य हैं परन्तु कुछ तो ऐसे प्रसिद्ध हैं कि यहाँ आने पर उनको देखना तो आवश्यक ही है। यहां पर एक बहुत बड़ी और सुन्दर झील है। यहाँ पर यात्री आकर विहार करते हैं जैसे—विधान सभा भवन, सेक्टर, पंजाब विश्वविद्यालय (इसकी स्थापना भारत पाकिस्तान के बाद १९४७ ई० में हुई थी, इस विश्वविद्यालय के आधीन १४३ कालिज हैं), पिंजौर गार्डन

(यह स्थान २५ कि. मी. दूर है), रोज गार्डन, हवाई अड्डा, आर्य समाज मन्दिर, गवर्नमैंट प्रेस (जो शीशे की बनी हुई है), कालका जी का मन्दिर (जो २५ कि. मी. दूर है प्राचीन मन्दिर है), केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन चंडीगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है।

पिंजौर गार्डन—चन्डीगढ़ जिले का एक सुन्दर स्थान है और यह चण्डीगढ नगर से २५ कि. मी. दूर है। यहां पर आने जाने के लिये रिक्शा और टैक्सी की सवारी मिलती है।





संग्रहकर्ता कैलाशवती (पिंजौर गार्डन) संग्रहकर्ता कार में परिवार सहित

विशेष यह एक सुन्दर दर्शनीय स्थान है जैसा इसके नाम से ही प्रकट होता है। यह गार्डन बहुत सुन्दर है। कहते हैं कि महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास, जो बनवास के १२ वर्ष समाप्त होने पर करना था, यहीं पर गुप्त रूप से रह कर बिताया था। यहां पर विदेशों से मंगाये हुए नये-नये पौधे भी लगाये गये हैं। इस बाग में १६ तरह के भिन्न-भिन्न प्रकार के आम के पेड़ भी लगे हैं। यहां का सारा प्रबन्ध महाराजा पटियाला के संरक्षण में होता है।

जिला जालन्धर

(जालन्धर, करतारपुर, नवाबशहर दोआबा, फिल्लौर, बंगा मंडी, ब्यासा)

जालन्धर जालन्धर पंजाब प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। शहर भी सुन्दर है। यह नगर एन. आर. की दिल्ली-अमृतसर लाईन पर भारत की राजधानी तथा मुख्य व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र दिल्ली से ३६८ कि. मी. दूर है तथा प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है। यह बहुत बड़ा औद्योगिक नगर है। यहाँ पर रिक्शा, तांगे और टैक्सी, सिटी बस हर समय यात्रियों के आने जाने को मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर श्री जमुनादास जी की धर्मशाला है जो रेलवे रोड पर है। यहां यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से कारखाने हैं जो देखने योग्य हैं। नगर भी दर्शनीय है। प्रमुख दर्शनीय स्थानों का परिचय देना भी आवश्यक है जैसे—गुरुदत्त भवन, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा भवन, आर्य समाज मन्दिर, हवाई अड्डा है। यहां पर जालन्धर गौशाला बहुत बड़ी गौशाला है।

विशेष— यह नगर व्यापार की दृष्टि से बहुत बड़ा नगर है। यहां पर बहुत बड़ी मंडी है। यह एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है। यहां पर औजार और छोटी बड़ी मशीन बनाने के अनेक कारखाने हैं और यह व्यापार का भी बहुत बड़ा केन्द्र है और इसका सम्बन्ध पंजाब तथा भारत के बड़े-बड़े नगरों से है। यहां पर हर प्रकार के खेलों का सामान बड़ी मात्रा में बनता है। यहां से खेल का सामान भारत के सब भागों को जाता है तथा विदेशों को भी भेजा जाता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, मक्का, तेल, तिलहन, दालें, रूई, खल, किराना, गुड़, चीनी आदि का व्यापार होता है। यहां पर औजार बनाने के बहुत से कारखाने हैं तथा खेल का सामान भी बड़ी मात्रा में बनता हैं।

बैंक—व्यापारिक केन्द्र होने के कारण व्यापार में रुपया भेजने के साधन अति आवश्यक है और यह काम बैंकों के द्वारा ही भली भांति पूरा हो सकता है। इसी कारण यहां पर लगभग सभी बैंक हैं। उनमें भी प्रमुख बैंक के नाम निम्न हैं स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, यूनाईटेड कॉमर्शियल बैंक, पंजाब एन्ड सिन्ध, नेशनल बैंक ऑफ लाहौर, ओरियन्टल बैंक, प्रभात बैंक, हिन्दू कॉमर्शियल बैंक, सैन्ट्रल बैंक हैं।

करतारपुर—यह पंजाब प्रान्त में जालन्धर जिले के जालन्धर से १४ कि. मी. की दूरी पर है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे और टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये शहर में कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गुरु अर्जुनसाहिब का गुरुद्वारा व फर्नीचर का काम देखने योग्य हैं।

नवाबशहर दोआबा—यह नगर पंजाब में जिला जालन्धर का नगर है। यह स्थान एन. आर. पर फगवाड़ा जैजों दोआबा ब्रांच लाईन पर है। यह एक बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह नगर फगवाड़ा से ३६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां आने वाले यात्रियों के लिये रिक्शा और ताँगे की सवारियों का उचित प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये दाल मंडी के सामने एक बड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह पुराना नगर है और बहुत से स्थान देखने योग्य हैं। उन में भी आर्य समाज मन्दिर, गीता भवन, राधा कृष्ण जी का नया मन्दिर (यह मंदिर तीन मंजिला बना हुआ है, यह बहुत सुन्दर है), राधा कृष्ण आर्य कॉलिज तथा बगीचा, सरकारी बारादरी और बागीचा, चीनी की मिल आदि विशेष दर्शनीय हैं। यहां पर गौशाला बांगा नवाब शहर प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गुड़, शक्कर, गेहूँ, मूंगफली, नर्मा, मक्का और चावल आदि की अच्छी पैदावार होती है।

विशेष—यहाँ एक अच्छा व्यापारिक स्थान है और एक बड़ी मन्डी है जहां पर अनेक वस्तुओं का आदान प्रदान होता है। यहां पर पंजाब प्रान्त की सबसे बड़ी चीनी की मिल है जहां से पंजाब के अनेक भागों को चीनी जाती है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक की शाखायें हैं और साहूकारा भी व्यापार में सहायता प्रदान करता है।

फिल्लौर—जिला जालन्धर का एक मुख्य नगर फिल्लौर है। यह नगर पंजाब के प्रसिद्ध नगर अमृतसर से १२२ कि० मी० दूर है। यह एक बड़ा रेलवे जंकशन है और उत्तर रेलवे पर अमृतसर लुधियाना लाईन पर बसा है सतलज नदी पर एक सुन्दर स्थान है। यहां पर आने जाने के लिये विशेष रूप से टैक्सी, तांगे और रिक्शा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—श्री मोतीलाल बावल जी की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने का अच्छा स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर सुन्दर है और सतलज नदी के किनारे पर होने के कारण विशेष रमणीय है। यहाँ पर पुलिस ट्रेनिंग कॉलिज है, आर्य समाज मन्दिर, सतलज नदी का दृश्य बहुत सुन्दर है और यात्रियों के आकर्षण का मुख्य स्थान है। जैन मन्दिर, सनातन धर्म सभा क. मन्दिर, बनियों का मन्दिर आदि विशेष दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—जौं, गुड़, शक्कर, ज्वार, मूंगफली और गेहूं आदि यहां अधिक पैदा होते हैं साथ ही एक बड़ी व्यापारिक मन्डी है और बड़े-बड़े नगरों से व्यापारी आकर माल खरीदते हैं।

बंगा मंडी—बंगा मंडी जिला जालन्धर का नगर है। यह नगर एन. आर. पर फगवाड़ा-जैजो दोआबा लाईन पर रेलवे स्टेशन है। यह स्थान फगवाड़ा से २४ कि. मी. की दूरी पर है। यहाँ आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा तथा तांगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये बिशनदास की धर्मशाला है, जो रेलवे रोड पर स्थित है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, (यह मन्दिर गढ़ शंकर रोड पर है), लक्ष्मी नारायण मन्दिर (दाना मन्डी में है), बंगा से ३ कि. मी. दूर शहीदे आजम

(सरदार भगतसिंह का गांव है), शहीद भवन, शहीदे आजम सरदार भगतसिंह की मूर्ति है)। जिनका जन्म १९०७ ई० में किशन सिंह जी के यहां हुआ था।

विशेष—यह एक ऐतिहासिक नगर है क्योंकि यहां से ३ कि. मी. की दूरी पर ही एक गांव में महान देशभक्त और क्रान्तिकारी नेता सरदार भगतसिंह का जन्म स्थान है जिन्होंने हंसते-हंसते २३ मार्च १९३१ ई० को फाँसी के फन्दे को चूमा था। यहीं पर सरदार भगतसिंह की मूर्ति भी है।

उत्पादित वस्तुयें—गुड़, शक्कर, मूंगफली, मक्का, चना, गेहूं, धान, रूई, चावल आदि की अच्छी पैदावार होती है।

व्यासा—यह नगर पंजाब प्रान्त के जिला जालन्धर में है। अमृतसर से ४२ कि० मी० दूर है। अमृतसर जालन्धर लाईन पर बड़ा रेलवे स्टेशन है। यहाँ टैक्सी, रिक्शा और तांगे उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—राधा स्वामी की गद्दी प्रसिद्ध है जिसमें यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह राधा स्वामी मठ का प्रमुख केन्द्र है। यहां पर एक बहुत विशाल मन्दिर है और साथ ही राधा स्वामी जी की गद्दी भी है। इस गद्दी का भवन इतना विशाल है कि यहां पर १० हजार आदमी एक साथ आराम से ठहर सकते हैं। यह नगर व्यासा नदी के किनारे पर बसा हुआ हैं जहां का दृश्य बड़ा मनोहर है।

जिला पटियाला

(पटियाला, नाभा, बस्सी पठाना)

पटियाला—पटियाला पंजाब प्रान्त का प्रमुख जिला है तथा एक बड़ा नगर भी है। यह नगर एन० आर० की अम्बाला केन्ट-भटिन्डा लाईन पर एक बड़ा रेलवे जंकशन है। यह स्थान अम्बाला कैंट से ५४ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर शहर में हर प्रकार की सवारी की सुविधा है। रिक्शे, ताँगे तथा टैक्सी हर समय मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों को ठहरने के लिये यहां कई छोटी धर्मशालाओं का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—पटियाला एक प्रसिद्ध नगर है। यहाँ पर अनेक पुराने स्थान तथा नये स्थान देखने योग्य हैं। निम्न स्थान विशेष महत्त्व के हैं। आर्य समाज मन्दिर राजा का महल, पंजाब विश्व विद्यालय जिसकी स्थापना सन् १९६२ में हुई थी और इस विश्व विद्यालय के आधीन ९ कालिज हैं।, शिमला जैसा दृश्य व पहाड़ी दृश्य प्रसिद्ध नगर शिमला के समान रमणीय हैं। गौशाला पटियाला प्रसिद्ध और सुन्दर गौशाला हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, जौ, चना, मक्का, सरसों, बाजरा, गवार, तारामीरा, खल, बिनौले, कपास, और धान आदि का व्यापार तथा उत्पादन होता है। मिर्च की यह एक प्रसिद्ध मण्डी है। यहां पर लाल और पीली मिर्च बहुतायत से होती हैं।

विशेष—यह लाल और पीली मिर्च की बहुत बड़ी मण्डी है और पंजाब ही नहीं भारत तथा विदेशों को भी मिर्चों का यहां से व्यापार होता है।

बैंक—मण्डी बहुत प्रसिद्ध और बड़ी है। इसलिये लगभग सभी बड़े और प्रमुख बैंकों की यहाँ शाखायें हैं। सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक, ओरियन्टल बैंक, यूनाइटेड कोमर्शियल बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, की शाखायें जनता की सेवा सुचारु रूप से करती है।

नाभा—यह नगर जिला पटियाला का एक प्रमुख प्रसिद्ध नगर है। यह नगर एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-भटिंडा लाईन पर रेलवे स्टेशन है। यह अम्बाला कैन्ट से ८० किलो मीटर दूर है। यहाँ पर टैक्सी, रिक्शा और तांगे सवारी के लिये मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों को ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें, हैं। उनमें से मुख्य धर्मशाला बाहावल पुरी पंचायत घर, साधुराय जी की धर्मशाला, धर्मशाला घास मण्डी, भोजराज एण्ड सन्स की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—यहाँ मुख्य दर्शनीय स्थल निम्न हैं। सत्यनारायण स्वामी का मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, सन्यासी आश्रम, पार्क माला, नाभा जेल, मिलफैक्टरी, नाभा गौशाला प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, जौ, मक्का, रुई, विनोला, जूट, मिर्च, मूंगफली आदि यहां की मुख्य उपज हैं।

विशेष—यह एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है तथा एक बड़ी मण्डी है।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, की शाखा विशेष हैं।

बस्ती पठाना-यह नगर जिला पटियाला का एक मुख्य नगर है। यह नगर एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-नागल डैम लाईन पर प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है। यह नगर अम्बाला कैन्ट से ६२ कि० मी० है। यहां पर रिक्शा, तांगे, टैक्सी की सवारीं मिलती हैं।

विश्राम स्थल—बनियों वाली धर्शशाला यह धर्मशाला रेलवे स्टेशन से ४ फर्लांग की दूरी पर है। यहाँ यात्रियों के ठहरने का स्थान है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, गुरुद्वारा यहां से ३ कि० मी० की दूरी पर है। यह बहुत बड़ा और प्रसिद्ध गुरुद्वारा है, बाबा नामदेव का मन्दिर रेलवे स्टेशन पर ही है।

विशेष—ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्थान प्रसिद्ध है। क्योंकि यहां से २ कि० मी० की दूरी पर एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा है। जहां गुरु गोविन्द सिंह के दो पुत्रों को

जिन्दा ही चिनवा दिया था गुरु गोविन्द सिंह सिक्खों के बड़े गुरु थे और उनके पुत्रों का बलिदान विशेष महत्व रखता है। यह एक अच्छा व्यापारिक नगर है।

उत्पादित वस्तुयें--गुड़,, शक्कर, खाण्ड देशी, गेहूं, मक्का, लहसुन, नरमा, तिल आदि बहुतायत से पैदा होते हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक है।

जिला फिरोजपुर

(अबोहर, तलवन्डी मण्डी, फाजिल्का, मुक्तसर,)

(मोंगा मन्डी मलौंट)

फिरोजपुर--यह नगर पंजाब प्रान्त का एक प्रमुख जिला है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली फिरोजपुर, लाईन पर प्रसिद्ध रेलवे स्टेशनों में से एक प्रमुख नगर है। यह नगर भारत के प्रसिद्ध नगर दिल्ली से ३८९ कि० मी० की दूरी पर है और यह एक उन्नत नगर है। यहां पर यात्रियों की यातायात की सुविधा के लिये टैक्सी, रिक्शा, ताँगा, और रेड़ी की सेवायें हर स्थान के लिये हर समय मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने और आराम के लिये बहुत से स्थान हैं परन्तु इन प्रमुख स्थानों पर विशेष सुविधा मिलती है। नानकचन्द की धर्मशाला, सुन्दरदास जी की धर्मशाला, अनेक मन्दिरों में विश्राम गृह हैं।

दर्शनीय स्थल--यहां पर अनेक स्थान देखने के योग्य हैं। उनमें भी कुछ ऐसे स्थान हैं जिन को भुलाया नहीं जा सकता और जिन को देखने से महान वीर और परोपकारी महर्षियों की याद आ जाती है।

सरदार भगत सिंह की समाधि। यह समाधि पवित्र नदी सतलज के पावन तट पर स्थित है। इसी नदी के किनारे पर भारत के महान वीर शहीद सरदार भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव जी की यादगार है जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ था। आर्य अनाथालय, इस को महर्षि दयानन्द जी ने अपने कर कमलों द्वारा स्थापित किया था।, गाँधी पार्क, छोटा सा तालाब, श्मशान भूमि, नेहरू पार्क यह एक विशाल स्थल है।, सैन्ट्रल जेल, इसी जेल में सुमेर सिंह शहीद हुये थे।, बड़ी फौजी छावनी।' किला।

विशेष—यह एक विशाल नगर है। यहां पर एक बड़ी मण्डी है। जहाँ पर वस्तुओं का आदान-प्रदान बड़ी मात्रा में होता है। यह ऐतिहासिक नगर भी है। यहाँ पर सतलज नदी के किनारे भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान वीर सरदार भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव जी का अन्तिम संस्कार हुआ था और उनकी समाधि है। जो उनके बलिदान की कहानी दोहराती है। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ पर महर्षि दयानन्द जी ने अपने पवित्र कर कमलों से एक विशाल अनाथालय की स्थापना की थी पास ही अंग्रेजी राज्य में यहाँ बहुत बड़ी छावनी थी जो आज भी है तथा सैन्ट्रल

जेल है। इस स्थान पर अंग्रेजों सिक्खों की बहुत घमासान लड़ाई हुई थी। यह एक ऐतिहासिक स्थान है। व पाकिस्तान का बार्डर भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक बहुत बड़ा व्यापारिक नगर है। और जीवन की भी आवश्यक वस्तुयें यहां उपलब्ध हैं। परन्तु मिर्च लाल, चना, गेहूं, जौ, सरसों, गवार, चावल, धान, बाजरा आदि विशेष रूप से इस क्षेत्र की उपज हैं और इन वस्तुओं का बड़ा व्यापारिक केन्द्र हैं।

बैंक—यहां पर व्यापारियों की सुविधा के लिये कई बैंकों की ब्रांच हैं। परन्तु स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक और पंजाब नेशनल बैंक की सेवायें विशेष है।

अबोहर—यह नगर पंजाब प्रान्त में जिला फिरोजपुर में स्थित है। यह नगर भटिण्डा-हिन्दूमल कोट लाईन पर एन० आर० का एक बड़ा स्टेशन है। यह नगर भटिन्डा से ७३ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर पंजाब प्रान्त में उपलब्ध यातायात के साधन है परन्तु टैक्सी, रिक्शा, तो हर समय मिलते हैं।

विश्राम स्थल—वैसे यहां ठहरने के लिये अनेक स्थान है परन्तु निम्नलिखित स्थान प्रमुख हैं। जैन धर्मशाला, रटिया वाली धर्मशाला, शारदा ट्रस्ट।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, सूत की मिल, मोदी काटन मिल, अंगूरों के बाग यहां प्रमुख दर्शनीय है। श्री गौशाला अबोहर प्रसिद्ध हैं।

विशेष—यहां पर रुई की बहुत बड़ी मण्डी है। यहां पर देशी और अमरीकन दोनों प्रकार की रूई बड़ी मात्रा में आती है और मण्डी द्वारा भारत के उन स्थानों को जाती है। जहां कपड़े और सूत के कारखाने है। यहां पर कई सूतों की मिलें है जहां से सूत भारत के बड़े बड़े नगरों को जाता है। यहां पर रूई कपास से सम्बधित एक काटन लेबोरेट्री भी है जहां पर रूई पर अनुसंधान कार्य होता है। यहां पर फल और मेवे भी पैदा होते हैं। और अंगूरों के बगीचे भी तो बड़े ही आकर्षक है।

उत्पादित वस्तु—कपास व रूई देशी और अमरीकन, गेहूं, जौ, चना, मूंग, उड़द, विनौला, और तारा आदि मुख्य हैं। सूत का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र हैं और सूत का बड़ा उत्पादन होता है।

बैंक—बड़ा व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहां पर अनेक बैंकों की ब्रांच हैं परन्तु निम्न बैंकों से व्यापार अधिक मात्रा में होता है। क्योंकि इन बैकों की शाखायें सभी प्रमुख नगरों में हैं। यहां स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक यूनाइटेड कार्मशियल बैंक तथा बैंक आफ बीकानेर है।

तलवन्डी मण्डी—यह नगर जिला फिरोजपुर में स्थित है। यह एन० आर० की लुधियान-फिरोजपुर कैन्ट लाईन पर एक बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह स्थान प्रसिद्ध नगर लुधियाना से ६४ कि० मी० दूर है। यहां पर सभी प्रकार की सवारी मिलती हैं तांगे और रिक्शा का अधिक प्रयोग होता है।

विश्राम थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत से स्थान हैं और स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला भी है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक पुराने और नये मन्दिर हैं जो देखने के योग्य है। इन मन्दिरों में दस्तकारी उत्तम है और अतीत के गौरव की कहानी याद दिलाती है।

विशेष—इस नगर के आस-पास का क्षेत्र उपजाऊ है और अनेक धान यहां विकने के लिये आते हैं इसी कारण से यहां एक बड़ी मण्डी है जहां उपज का क्रय-विक्रय होता हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर व्यापार के लिये आस पास के क्षेत्र से गेहूं, जौ, चना, चावल, कपास, लाल मिर्च, तारामीरा, बाजरा, मक्का, सरसों, उड़द आदि अनाज आते हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया की सेवा ही उत्तम है।

फ़ाजिल्का—जिला फिरोजपुर का एक शहर है। यह उत्तर रेलवे की रिवाड़ी फाजिल्का लाईन पर स्थित है। यह रिवाड़ी से ८९ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा, टैक्सी, ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास यात्रियों के ठहरने के लिये एक बहुत बड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, गौशाला व यहां की मण्डी भी देखने योग्य है।

विशेष—यह अंगूरों का सबसे बड़ा उत्पादित स्थान है। जो २५००० एकड़ में फैला हुआ है। और सारे भारत में अंगूरों की सप्लाई होती है।

उत्पादित वस्तुये—कपास, रूई' विनौला, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, धान, गवार आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाव नेशनल बैंक, देना बैंक आदि प्रमुख हैं।

मुक्तसर—मुक्तसर पंजाब प्रान्त के फिरोजपुर जिले का एक प्रमुख और प्रसिद्ध नगर है। यह एन० आर० की रिवाड़ी- फाजिल्का लाईन पर एक बड़ा रेलवे जंकशन है। यह नगर रिवाड़ी में ३७५ कि० मी० दूर है। और एक प्रसिद्ध नगर हैं। अन्य नगरों के समान ही यहां भी आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शे और तांगों का अधिक प्रयोग होता हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के अनेक स्थान हैं। परन्तु गीता भवन धर्मशाला, मेघराज भवन धर्मशाला अपना विशेष स्थान रखते हैं।

दर्शनीय स्थल—यह ४० मुक्ति का घर है। यहां गुरू गोविन्द जी के साथ ४० आदमी मुक्त हुये थे। गुरुद्वारा पट्ठी साहब। तालाब नहाने के लिये जहाँ गुरु सिंह से दातुन आदि किया था।, गौरी शंकर का मन्दिर। मुक्तसर की गौशाला विशाल और प्रसिद्ध है।

विशेष—यह रूसी चने की एक मात्र मण्डी है। यह एक ऐतिहासिक नगर भी है। इसी स्थान पर गुरु गोविन्द सिंह जी अपने ४० अन्य, साथियों सहित मुक्त हुये थे। इसी लिये उस याद को अमर बनाने के लिये इस नगर का नाम ही मुक्तसर पड़ गया। यह नगर सिक्खों के इतिहास में अपना मुख्य स्थान रखता है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, जौ, चना, गवार, बाजरा, रुई, उड़द, मूंग, मोठ, बिनौला, सरसों, तारामीरा, आदि है परन्तु, रूसी चने, का उत्पादन इस क्षेत्र में विशेष रूप से होता है।

बैंक—यहां पर अन्य नगरों के समान ही स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाव नेशनल बैंक और सैन्ट्रल बैंक हैं।

मोगा मंडी—मोगा मंडी जिला फिरोज़पुर का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है और भारत में एक प्रसिद्ध स्थान है। यह नगर एन० आर० की लुधियाना-फिरोज़पुर लाईन पर स्थित है और लुधियाना से ७० कि० मी० की दूरी पर है अन्य नगरों की तरह यहां पर भी रिक्शा और ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में कितनी ही धर्मशालायें हैं।

विशेष—मोगा मंडी एक प्रसिद्ध नगर है और एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है और एक बहुत बड़ी मंडी भी है। यहाँ के डा० मथुरादास जी ने आँखों के इलाज में बहुत ख्याति प्राप्त की है और भारत के बडे-बड़े नगरों से अनेक व्यक्ति आंखों के आप्रेशन कराने आते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, डा० मथुरा दास का आँखों का होस्पिटल, नाज की मंडी व अन्य कई पुराने व नये मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वतुयें—यहां पर निकटवर्तीय क्षेत्र में अनेक वस्तु पैदा होती हैं जैसे:—गेहूँ, चना, रुई, लाल मिर्च, धान, विनौला, ज्वार, वाजरा, सरसौं, तारामीरा, मेथी, मक्का, खल, तोरिया, मूंग, उड़द आदि यहाँ की मुख्य उपज हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, व यूनाइटेड कार्मसियल बैंक आदि हैं।

मलोट—मलौट जिला फ़िरोज़पुर का एक नगर है। यह नगर एन० आर० की भटिन्डा हिन्दूमल कोट लाईन पर बसा हुआ है। यह भटिन्डा से ४४ कि० मी० की दूरी पर एक रेलवे स्टेशन है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगे का भी प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के विश्राम के लिये स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला है जहाँ ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर बड़े भव्य हैं जो बड़े कलात्मक हैं और दर्शनीय हैं।

विशेष—यहाँ एक अच्छी व्यापारिक मंडी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर रुई, कपास, जौं, सरसों, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, खल, बिलौना, तारामीरा व चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जिला फगवाड़ा

फगवाड़ा—फगवाड़ा पंजाब प्रान्त का प्रमुख जिला है और बड़ा औद्योगिक नगर है यह नगर एन० आर० की दिल्ली-अमृतसर लाईन पर एक प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है और दिल्ली से ३४७ कि० मी० की दूरी पर है तथा भारत के मुख्य नगरों से रेल द्वारा मिला हुआ है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—बाहर में यात्रियों के ठहरने के लिये श्री राम धर्मशाला, आर्यसमाज मन्दिर (बंगा रोड पर) आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां हनुमान जी का मन्दिर (यह प्राचीन मन्दिर है और 'चौड़ाखुह' के नाम से प्रसिद्ध है), सन्धुरा भाई का मन्दिर, विश्वकर्मा जी का मन्दिर (यह मन्दिर बहुत विशाल तथा पुराना है और दस्तकारी का एक अच्छा नमूना है), शुगर मिल व कपड़ा मिल आदि दर्शनीय हैं।

विशेष—यह नगर एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यहाँ पर अनाज आदि की बड़ी मण्डी है। यहां पर कपड़े का उत्पादन बड़ी मात्रा में होता है और उत्तर प्रदेश के अनेक नगरों को कपड़े का लदान होता है इसी कारण यह नगर प्रसिद्ध है। यह इन्डस्ट्रीयल टाऊन है।

उत्पादित वस्तुएं—इस क्षेत्र की मुख्य उपज मक्का, गेहूँ, चना, रुई, कपास, मूंगफली, गुड़ आदि हैं। यहां पर कपड़े की मिल भी है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट ऑफ पटियाला बैंक की शाखायें प्रमुख हैं।

जिला भटिन्डा

(भटिन्डा, कोटकपूरा, फूल मंडी, फरीदकोट, मांनसा)

भटिन्डा—भटिन्डा नगर पंजाब प्रान्त का एक जिला तथा प्रमुख नगर है। व्यापारिक दृष्टि से भी यह अपना विशेष स्थान रखता है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली-फ़िरोज़पुर लाईन पर एक प्रसिद्ध रेलवे जंक्शन है। यह स्टेशन भारत के मुख्य नगर दिल्ली से २९८ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास ही सेठ सोहन लाल जी की धर्मशाला तथा बाबा जयराम दास जी की धर्मशाला हैं ये दोनों धर्मशालायें माल गोदाम के पास ही हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गुरुकुल शिल्प विद्यालय, आर्य समाज मन्दिर, गौ-शाला, राजा विजयपाल जी का किला (जो १२ वीं शताब्दी का बना हुआ है जिसके ४८ बुर्ज हैं), व यहां पंजाब का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन भी दर्शनीय है।

विशेष—यह नगर रुई का एक प्रसिद्ध केन्द्र है और एक बड़ी मंडी है।

उत्पादित वस्तुयें—चना,गेहूँ, सरसों, तारमीरा, बाजरा, गवार, जौं, कपास, खल, बिनौला, मूंग, मोठ व उड़द यहाँ की मुख्य उपज हैं तथा रुई का व्यापार अधिक होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक हैं।

कोटकपूरा—कोटकपूरा नगर जिला भटिंडा का नगर है। यह शहर एन० आर की दिल्ली- फिरोजपुर कैन्ट लाईन पर एक सुन्दर रेल का स्टेशन है। यह नगर भारत की राजधानी दिल्ली से ३४० कि० मी० की दूरी पर हैं। यहां रप टैक्सी, रिक्शा, और तांगे सवारी के लिये मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने की समुचित सुविधा है। यहां जीवन राम केदारनाथ जी की धर्मशाला, मोहन लाल रामप्रसाद जी की धर्मशाला मुन्शी राम कटारिया की धर्मशाला यह धर्मशाला स्टेट बैंक के पास ही है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आस-पास बहुत से सुन्दर स्थल है जो देखने योग्य हैं। यहां पर गीता भवन एक बहुत ही सुन्दर धार्मिक स्थान है। राम बाग यह स्थान रेलवे लाईन के ही पास है। सेठ केदार नाथ जी की छत्री, तालाब विशेष देखने योग्य और अति सुन्दर है। आर्य समाज मन्दिर, सिक्खों का गुरुद्वारा, व गौशाला भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, रुई, काबुली चना तथा देशी चना, दाल चना, गेहूं, मूंग, सोठ, तारामीरा, बिनौला, देशी कपास, जौं, उड़द सरसों, बाजरा आदि की पैदावार हैं।

विशेष—यह नगर पुराना है आस-पास का क्षेत्र उत्पादन के विचार से उत्तम है। यहां की मंडी गेहूँ, रुई और चने के लिये प्रसिद्ध है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक यहाँ के प्रमुख बैंक हैं।

फूलमंडी—फूलमण्डी नगर जिला भटिंडा की एक प्रसिद्ध मंडी और नगर है। यह स्थान एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-भटिंडा लाईन पर बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह नगर अम्बाला कैन्ट से १७० कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर विशेष रूप से टैक्सी, ताँगे और रिक्शे यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान को लाने लेजाने के साधन हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के सुविधा पूर्वक रहने और ठहरने के लिये लाला अमरी मल बाबू राम जी की धर्मशाला, लाला मेला राम जी की धर्मशाला, लाला बारूमल छज्जूराम जी की धर्मशालायें आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गीता भवन, राम बाग, जय शक्ति दुर्गा मन्दिर, विशेष दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य उपज कपास, बिनौला, गेहूँ, जौ, चना सरसों आदि की उपज हैं।

विशेष----यह एक प्राचीन और बड़ा नगर है अनाज व रुई की प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—अन्य बैंकों के अतिरिक्त यहां पर विशेष रूप से व्यापार में सहायक स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, यहां के प्रमुख बैंक हैं।

फरीदकोट—फरीदकोट पंजाब प्रान्त का प्रसिद्ध नगर है। इसका जिला भटिंडा है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली फिरोजपुर लाईन पर स्थित है। यहां पर रेलवे का एक बड़ा जंक्शन है। यह नगर दिल्ली से ३५३ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ हैं। यह एक व्यापारिक नगर है और यहां पर रिक्शा और तांगे की सवारी मिलती है जो यात्रियों के आने-जाने और घूमने का साधन है।

विश्राम स्थल—यहां रेलवे स्टेशन के पास ही एक सुन्दर धर्मशाला है और यहां पर यात्रियों के ठहरने की अच्छी सुविधा है।

दर्शनीय स्थल—यह बड़ा और सुन्दर नगर है और इस नगर में कई मन्दिर है जो बहुत सुन्दर है और देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज सरसों, मूंग, उड़द, मूंगफली, तारा-मीरा, गेहूं, जौं, चना, देशी चना व काबली चना, लाल मिर्च, कपास, गवार, मोठ आदि की पैदावार अच्छी हैं।

विशेष—यहां का क्षेत्र उपजाऊ है। नगर के चारों तरफ उन्नत और व्यापारिक नगर हैं और यह भी एक व्यापारिक नगर है। यहां अनाज की बड़ी मण्डी है। जहां पर अनेक वस्तुओं का व्यापर होता है।

बैंक—फरीद कोट नगर में पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया की व्यापारिक सेवायें उत्तम हैं।

मानसा—यह पंजाब प्रान्त के जिला भटिंडा का एक सुन्दर नगर है। यह प्रसिद्ध नगर एन० आर० की दिल्ली फिरोजपुर लाईन पर बसा है। यह शहर दिल्ली से २४५ कि० मी० दूर है। यातायात के साधन आवश्यकता अनुसार उपलब्ध होते हैं परन्तु कुछ साधन इस प्रकार के होते हैं जो सर्व सुलभ होते हैं। तांगे और रिक्शा ऐसे साधन हैं जो प्रायः सभी नगरों में प्राप्त हो जाते हैं। वे ही साधन यहां भी उपलब्ध हैं।

विश्रामस्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में दो तीन धर्मशालायें है परन्तु नानक मल जी की धर्मशाला स्टेशन के बिल्कुल पास हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दर्शनीय स्थानों पर मन्दिर काफी अच्छे है जो प्राचीन काल के सुन्दर नमूने हैं। यहां पर एक गौशाला भी है। यह वैराड वंश की राजधानी थी। किला व महाराजा का महल और आस पास माल्टा के फलों के बाग देखने योग्य हैं और सबसे अधिक पैदावार होती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में एक बड़ी व्यापारिक मंडी है। इस के क्षेत्र में अनेक अन्न पैदा होते है जो व्यापार की दृष्टि से यहां पर विक्री के लिये आते है। गेहूं, जौ, चना, सरसों, मक्का, मूंगफली, रूई, विनौला, उड़द, कपास तारामीरा, मूंग, सोठ, चूरी, छिलका, बाजरा, गवार, और लाल मिर्च आदि वस्तुयें अधिक मात्रा में पैदा होती है। यहां की मंडी बहुत बड़ी है और इस मंडी में सरसों और चने का व्यापार अधिक होता हैं।

बैंक—बैंक व्यापारिक संस्था है। जहां व्यापार होता वहां अपनी सुविधानुसार अपनी शाखायें खोल देता है। यहां भी पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आदि बैंकों की शाखायें हैं।

जिला रोपड़

(रोपड़, आनन्दपुर साहिब, कीर्तपुर, खरड़, नैनादेवी)

रोपड़—यह पंजाब प्रान्त में स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-नागल लाईन पर अम्बाला कैन्ट से १०२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की सवारी अधिक मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास बहुत बड़ी धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर श्री मठा साहिब का गुरुद्वारा ऐतिहासिक महत्व रखता है। सतलज नदी के किनारे पीपल का पेड़ भी ऐतिहासिक है व आर्य समाज मन्दिर भी दर्शनीय हैं। यहां से ११ कि० मी० दूर सरसा नदी बहती है जहां गुरु-गोविन्द सिंह जी का परिवार युद्ध के समय बिछड़ गया था।

उत्पादित वस्तुयें—यहां, आलू, गुड़, शक्कर, मक्का, चावल, गेहूं, चना, खांडसारी, मूंगफली आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—नगर का कारोबार स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक की शाखाओं द्वारा सुचारु रूप से चलता है।

आनन्दपुर साहिब—यह पंजाब प्रान्त के रोपड़ जिले में अम्बाला-नागल लाईन पर अम्बाला से ९० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में टैक्सी, रिक्शा व तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये गुरुद्वारा की सराय व अनेकों धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यह शहर गुरु गोविन्द सिंह जी के पिता तेज बहादुर जी ने आबाद किया था। यह गुरुगोविन्द सिंह जी की राजधानी थी यहां खालसा पंथ का जन्म हुआ था। यहाँ गुरुगोविन्द सिंह जी का प्राचीन किला व पुराने महल भी देखने योग्य हैं। यह प्राचीन धर्म स्थानों से भरपूर स्थान है, तख्त श्री केशगर साहिब का गुरुद्वारा है। यहाँ होली पर पूर्णिमा के दिन बहुत बड़ा मेला लगता है।

किर्तपुर—यह पंजाब प्रान्त के रोपड़ जिले में स्थित है। यह नैनादेवी से २३ कि० मी० की दूरी पर है। शहर में रिक्शा, तांगे और टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गुरुद्वारों की तरफ बहुत बड़ी-२ सराय बनी हुई हैं। जिनमें यात्रियों को हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती हैं।

दर्शनीय स्थल—किर्तपुर से नैनादेवी २३ कि० मी० की दूरी पर है। यहां से हिमाचल प्रदेश को माल सप्लाई करने का प्रमुख केन्द्र है। यहां लकड़ी की बहुत बड़ी मंडी है। यहां छटें, सातवें व आठवें गुरुओं की स्मारक देखने योग्य हैं होली के ऊपर बहुत बड़ा मेला लगता है। यहां मरने वालों की अस्थियां नदी में प्रवाहित होती हैं। इसके पूर्व में सतलज नदी बहती है।

खरड़—यह पंजाब प्रान्त के रोपड़ जिले में एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-नागलडैम लाईन पर स्थित है शहर में रिक्शा, तांगे और टैक्सी की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नानूमल जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई छोटे-२ मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गेहूं, गुड़, चावल, शक्कर, मूंगफली, मक्का, धान, मसूर, खांड, सरसों आदि का उत्पादन है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक की प्रमुख शाखा हैं।

नैनादेवी—यह पंजाब प्रान्त के रोपड़ जिले में कीर्तपुर से २३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है टैक्सी, रिक्शा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये पण्डों के यहां उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां ३५०० फुट पहाड़ की ऊंचाई पर नैनादेवी का बहुत सुन्दर मन्दिर बना हुआ है जिसके देखने व दर्शन करने के लिये भारत के कोने-२ से यात्रीजन भारी संख्या में आते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यहां से १५ कि० मी० दूर पहाड़ी ग्राम में नामधारी रामसिंह जी का जन्म हुआ था जो नामधारी सम्प्रदाय के संचालक थे इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की थी और गौ माता के प्राण बचाने

के लिये आन्दोलन किया था उनके १०० साथियों को अंग्रेजों ने तोपों से उड़ा दिया था और उन्हें पकड़ कर रंगून ले गये और नजरबन्द कर दिया ।

जिला लुधियाना

(लुधियाना, खन्ना मन्डी, जगरांव मन्डी)

लुधियाना—लुधियाना पंजाब प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला तथा नगर है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली-अमृतसर लाईन पर बसा है। यह नगर उत्तर भारत के महान नगर दिल्ली से ३११ कि० मी० दूरी पर है। यहां एक बहुत बड़ा रेलवे जंक्शन है जहां से भारत के लगभग सभी बड़े नगर रेल के द्वारा मिलते हैं। बड़े नगरों में आने जाने के लिये जो साधन अन्यत्र मिलते हैं वे ही यहां भी उपलब्ध हैं। मुख्य रूप से यहां पर रिक्शा और तांगे की सवारियों का उचित प्रबन्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये लाहोरियों की धर्मशाला है, यह धर्मशाला लालूमल की गली, चौड़ा बाजार में है, जैन मन्दिर धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला आदि हैं ।

दर्शनीय स्थल—हवाई अड्डा, लोहे की खैराद की मशीन बनाने के कारखाने हौजरी बनाने वाले कारखाने, साइकिल और सिलाई मशीन व उनके पार्टस बनाने के कारखाने, लुधियाना गौशाला भी दर्शनीय है, लोधियों का प्राचीन किला, गुरुद्वारा व रेलवे जंकशन भी देखने योग्य हैं।

विशेष—यह एक बहुत बड़ी मन्डी है। इस नगर में बहुत से छोटे बड़े कारखाने हैं जो अनेक प्रकार की मशीन और अन्य सामान बनाते हैं। यहाँ पर हौजरी के बड़े-बड़े कारखाने हैं। लोहा, खैराद, करने की मशीन बनती है। सिलाई की मशीनों के भी भाग बनाये जाते हैं। लुधियाना मंडी साईकिल तथा इसके सामान के लिये विशेष प्रसिद्ध है। यहां से साईकिल का सामान समस्त भारत तथा विदेशों को जाता है।

उत्पादित वस्तुयें—इस जिले की मुख्य उपज जौं, गुड़, शक्कर, ज्वार, मूंगफली, गेहूं, आदि हैं। यह नगर छोटे और बड़े उद्योगों का भी केन्द्र है। यहाँ पर हौजरी का सामान, मशीनों का सामान और लोहे से बनी बहुत सी वस्तुओं का यहां उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर बहुत से बैंकों की ब्रांच हैं जिनमें से कुछों के नाम इस प्रकार हैं स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक, बैंक आॉफ लाहौर, यूनाईटेड कॉमर्सियल बैंक, ओरियन्टल बैंक, न्यू बैंक आफ इण्डिया है। साहूकारा भी बैंकों का काफी काम करता है।

खन्ना मंडी—खन्ना मंडी पंजाब के जिला लुधियाना का एक नगर है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली अमृतसर लाईन पर एक बड़ा रेलवे जंकशन है

यह नगर दिल्ली से सहारनपुर होकर आने पर ३३२ किलो मीटर और दिल्ली से करनाल होकर आने में २६९ किलो मीटर दूर है, यह एक प्रसिद्ध नगर हैं। यहाँ टैक्सी, रिक्शा और तांगे अधिक मिलते है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहां विशेष-२ धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, हाई स्कूल, डिग्री कालिज, संस्कृत कालिज, यहाँ पर पढ़ाई का कोई खर्च नहीं हैं।

विशेष—यह एक बड़ा व्यापारी नगर है। इस नगर में मूंगफली, गेहूं, और बिनौले का व्यापार अधिक मात्रा में होता है। इन वस्तुओं की बिक्री के लिये यहाँ एक बड़ी मण्डी है। इस नगर में एक संस्कृत कालिज भी है। जहाँ पर शिक्षा निःशुल्क हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मूंगफली, बिनौला, गेहूं, गुड़, शक्कर, खाँडसारी, रूई, कपास आदि यहां की मुख्य उपज हैं। कई वस्तुओं का व्यापार बड़ी मात्रा में होता है।

बैंक—यह एक बड़ी मण्डी है इसलिये यहां बड़े-बड़े बैंकों की ब्रान्च हैं। इस नगर में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक, अमृतसर बैंक, सेन्ट्रल बैंक, की सेवायें उत्तम मानी जाती हैं।

जगराव मंडी—जगराव मंडी जिला लुधियाना का एक सुन्दर नगर है। यह नगर एक सुन्दर रेलवे स्टेशन है। एन० आर० की लुधियाना-फिरोजपुर कैन्ट लाईन पर लुधियाना से ४० किलो मीटर की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर टैक्सी, रिक्शा और तांगे हर समय हर स्थान के लिये मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये जो स्थान हैं वे सराय के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह नाम प्राचीन मुसलमानी राज्य की याद दिलाते है। लाला अमर नाथ जी की सराय, लाला देवी चन्द जी की सराय आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—गुरुद्वारा नानक सर (जगराव से ३ किलो मीटर दूर है), मन्दिर (यह मन्दिर दाना मंडी में है), गीता भवन। यहां पर सुन्दर गौशाला भी हैं।

विशेष—व्यापार की यह एक बड़ी मण्डी है और अनेक व्यापारिक नगरों से यहाँ से व्यापार होता है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, मूंगफली, कपास, सरसों, बिनौला, खल, तेल, चना, मक्का, उड़द, मूग, मोठ, गवार, काबली चना, तथा रूई यहां की मुख्य उपज हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, सैन्ट्रल बैंक और ओरियन्टल बैंक यहां के मुख्य बैंक हैं।

जिला "संगरूर"

(संगरूर, धुरी, बरनाला, मालेरकोटला, सुनाय)

संगरूर पंजाब प्रान्त का संगरूर एक प्रसिद्ध जिला है। यह एक सुन्दर नगर

हैं। यह एन० आर० की लुधियाना-हिसार लाईन पर प्रसिद्ध नगर है। यह बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह स्थान लुधियाना से ७८ किलो मीटर दूर है। यहां आने जाने के लिये भी रिक्शा और तांगे हर समय मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये इस नगर में दो पंचायती धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यह एक प्राचीन नगर है तथा अनेक स्थान दर्शनीय हैं। कुछ स्थान अपना विशेष महत्व रखते हैं। आर्य समाज मन्दिर, प्राचीन किले, महल, पुत्री पाठशाला, बनासर बाग, काली देवी का मन्दिर (यह मन्दिर अति प्रसिद्ध और प्राचीन है), सन्तोषी माता का मन्दिर, महावीर मन्दिर, सैनिक छावनी यह नगर के बाहर है, गुरुद्वारा (यह गुरुद्वारा नगर से ५ किलो मीटर की दूरी पर है तथा बहुत प्रसिद्ध है), संगरूर की गौशाला भी प्रसिद्ध है। यहां से ३ किलो मीटर की दूरी पर बडरूखा एक प्राचीन कस्बा है जहां महाराजा रणजीत सिंह पैदा हुये थे। उनका प्राचीन किला व महल भी देखने योग्य है।

विशेष—यहां पर व्यापार के लिये प्राचीन बड़ी मंडी है। यहां पर अनेक धार्मिक स्थान हैं जो प्राचीन तथा अति सुन्दर हैं। यहाँ पर विशाल सैनिक छावनी है तथा प्रसिद्ध गुरुद्वारा है। यहां पर सुन्दर गौशाला भी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, सरसों, तारामीत, जौ, मक्का, बाजरा, रूई, बिनौला, लाल मिर्च आदि यहां की मुख्य उपज हैं।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की सेवायें विशेष हैं।

धुरी—धुरी जिला संगरूर का एक प्रसिद्ध नगर है। यह नगर एन० आर० की अम्बाला कैन्ट-भटिन्डा लाईन पर प्रसिद्ध रेलवे जक्शन है। यह नगर अम्बाला कैन्ट से १०६ किलो मीटर की दूरी पर है। अन्य नगरों की भाँति यहां भी टैक्सी, रिक्शे और तांगे आने-जाने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं।

विश्राम स्थल—रेलवे स्टेशन के पास ही यात्रियों के ठहरने के लिये अच्छी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह प्राचीन शहर है। यहां पर कई प्राचीन मन्दिर हैं जो बहुत सुन्दर है। शुगर मिल है यहां पर गौशाला भी दर्शनीय है।

विशेष—यह बड़ा नगर है, बहुत सी वस्तुयें व्यापार के लिये यहां आस-पास के क्षेत्र से आती हैं इसलिये यहां पर बहुत बड़ी मंडी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—रूई, कपास, बिनौला, मक्का, चना, सरसों और शक्कर आदि वस्तु अधिक मात्रा में पैदा होती हैं तथा अन्य नगरों को भेजी जाती हैं।

बैंक—यहां पर विशेष बैंक पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया है इनके अतिरिक्त साहूकारों की भी [illegible] हैं।

बरनाला—यह जिला संगरूर का एक प्रसिद्ध नगर है। यह नगर भी उत्तर रेलवे की अम्बाला कैन्ट-भटिन्डा लाईन पर है तथा अम्बाला-कैन्ट से १३७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर के अन्दर घूमने के साधनों में तांगे, रिक्शा व टैक्सी हर समय मिलते हैं।

विश्राम स्थल—बरनाला का रेलवे स्टेशन नगर से दूर है और यात्रियों के ठहरने के लिये जो धर्मशाला है वह भी स्टेशन से, लग भग १ कि० मी० के फासले पर है।

दर्शनीय स्थल—यह प्राचीन नगर है इसी कारण नगर में अनेक मन्दिर हैं परन्तु कुछ मन्दिर विशेष दर्शनीय हैं और प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। यहाँ का आर्यसमाज मन्दिर व किला भी दर्शनीय है। यहाँ पर एक गौशाला भी है जो बरनाला गौशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

विशेष—बरनाला नगर के आस-पास का क्षेत्र बड़ा उपजाऊ है। पास के स्थानों से बिक्री के लिये बहुत सी वस्तुयें आती हैं इसलिये यहाँ पर एक बड़ी मंडी है और यह एक व्यापारिक नगर है तथा अन्य व्यापारिक नगरों से रेल तथा सड़क द्वारा मिला हुआ है।

उत्पादित वस्तुयें—पंजाब प्रान्त के अन्य नगरों के समान ही यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, चना, रुई, कपास, बिनौला, जौं, सरसों, मक्का, तारमीरा, गवार, और तेल आदि हैं।

बैंक—यहाँ पर अधिकतर पंजाब नेशनल बैंक और स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया का एकाधिकार जान पड़ता है और इन बैंकों की शाखायें लग भग सभी प्रमुख नगरों में है।

मालेर कोटला—पंजाब प्रान्त के जिला संगरूर में मालेर कोटला एक प्रसिद्ध स्थान है। यह नगर एन० आर० की लुधियाना-हिसार लाईन पर एक प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है। यह नगर लुधियाना से केवल ४६ कि० मीटर के फासले पर स्थित है। यहां पर एक बड़ी मंडी है अतः अनेक बाहर के व्यापारी यहां आते हैं उन की सुविधा के लिये रिक्शा व तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर लाला तिलक राम जैन की धर्मशाला में ठहरने का अच्छा स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर श्री गोपाल भवन मन्दिर, बाबा हैदर शेख, शीश-महल, ईदगाह (सारे भारत में उच्च कोटि की ईदगाह है जो अति सुन्दर और दर्शनीय है) आदि।

विशेष—यह एक प्राचीन नगर है और पंजाब के मुख्य व्यवसायिक क्षेत्र के बहुत पास है। यहाँ की मुख्य उपज तथा व्यापार की वस्तु लाल मिर्च और धनिया जीरा, अजवायन आदि हैं जो बड़ी मात्रा में बाहर की मन्डियों को जाती हैं। यहाँ

की मंडी बहुत बड़ी है और रेलवे स्टेशन भी बड़ा है तथा माल लाने ले जाने के लिये मोटर भी मिलते हैं। इस नगर में कुछ दूर पर ईदगाह है जहाँ ईद की नमाज भी पढ़ी जाती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, जौ, कपास देसी, अमरीकन ज्वार, बाजरा, तारामीरा, उड़द, मक्का, सरसों, लाल मिर्च, मूंग, मोठ, प्याज, मूंगफली, लहसुन, अजवायन, जीरा, सौंफ व धनिया आदि की पैदावार होती है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज मिर्च तथा मसाले हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक व स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख बैंक हैं।

सुनाम—यह नगर जिला संगरूर का प्रसिद्ध नगर है। और एन० आर० की लुधियाना हिसार लाईन पर रेल का बड़ा स्टेशन है। यह नगर लुधियाना से ६४ कि० मी० की दूरी पर है। यात्रियों के आने-जाने के साधन अधिकतर रिक्शा और तांगे हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये बस स्टेण्ड के पास ही धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में विशेष रूप से निम्न स्थान देखने योग्य हैं:—भाई मूलचन्द जी की समाधि, माता मोदी का मन्दिर, गल्ले की प्रसिद्ध तथा बड़ी मण्डी, किला, व प्राचीन यादगार भी देखने योग्य है।

विशेष—यह नगर प्रसिद्ध नगर है। अनाज और मसाले की पैदावार अच्छी होती है। बड़े व्यापारिक नगरों से रेल और मोटरों द्वारा सम्बन्धित है इसी कारण यहां पर एक बड़ी मण्डी है और सभी वस्तुओं का व्यापार अधिक मात्रा में होता है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, बाजरा, सरसों, जौ, मक्का, चना, मूंगफली, मेथी, जीरा, लाल मिर्च, कपास, बिनौला आदि यहाँ की मुख्य उपज हैं। जिनका यहां पर व्यापार होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक और स्टेट बैंक आफ इण्डिया यहां के प्रसिद्ध बैंक हैं।

जिला होशियारपुर

(होशियारपुर, चन्द्रपूर्णी, जैजो दोआबा, टांडा उरमाड़, नागल, बलाचौर)

होशियारपुर—पंजाब प्रान्त में होशियारपुर का प्रसिद्ध जिला है। होशियारपुर एक प्राचीन नगर है और अपना एक विशेष स्थान रखता है। यह नगर एन० आर० की जालन्धर होशियार पुर लाईन पर बड़ा जंकशन है। यह नगर पंजाब के बड़े व्यापारियक नगर जालन्धर से ४३ कि० मी० की दूरी पर है। होशियार पुर से चन्द्र पूर्णी केवल ४२ कि० मी० है। अन्य नगरों के समान ही यहां भी टैक्सी तांगे

और रिक्शे की अधिकतर सवारी के लिये मिलते हैं आवश्यकतानुसार अन्य साधन भी प्राप्त हो जाते हैं।

विश्राम स्थल—आने-जाने वाले व्यापारियों के ठहरने लिये श्री लक्षमन दास जी की धर्मशाला उत्तम है। यह धर्मशाला नमक मण्डी में है।

दर्शनीय स्थल—नगर सुन्दर है। यहां का आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है तथा चन्द्रपूर्णी का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान यहां से केवल ४० किलो मीटर दूर है यहां सुन्दर दृश्य विशेष दर्शनीय हैं। यहाँ लकड़ी के खिलौने बहुत सुन्दर बनते हैं।

विशेष--होशियारपुर एक ऐसा नगर है जहां से पहाड़ी इलाका आरम्भ हो जाता है। इस नगर में पहाड़ी उपज अधिक मात्रा में क्रय-विक्रय के लिये आती है। यहां तथा इस नगर के आस पास बहुत से कारखाने हैं बिरोजा तथा तारपीन का तेल तैयार किया जाता है। यह नगर अनेक औद्योगिक नगरों से रेलवे तथा बसों द्वारा मिला हुआ है। यहाँ पर बहुत बड़ी तथा प्रसिद्ध मण्डी है तथा पहाड़ी उपज की भी बड़ी मण्डी है।

उत्पादित वस्तुयें---गेहूं, चना, मक्का, गुड़, खाण्ड, बिरोजा, तारपीन का तेल और अन्य पहाड़ी समान इस क्षेत्र में बहुत पैदा होते हैं।

बैंक---यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक तथा पंजाब एण्ड सिन्ध बैंकों की शाखायें व्यापारियों के अधिक सुविधायें प्रदान करती हैं।

चन्द्रपूर्णी—पंजाब प्रान्त के होशियारपुर जिले का एक प्रसिद्ध स्थान है। यह एक पहाड़ी क्षेत्र है। यहा पर पहुंचने के लिये बसों का तथा घोड़ो का उपयोग किया जाता है। यह नगर होशियारपुर रेलवे स्टेशन से ४० कि मी० दूरी पर है तथा बस अड्डे से केवल ३५ कि० मी० है और बसों का रास्ता है। नगर में आने-जाने के लिये केवल रिक्शा और तांगे ही उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहा पर यात्रियों के ठहरने के लिये सर्वोतम स्थान लुधियाने वालों की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हर स्थान ही मन को हरने वाला है। यहां पहुंच कर मनुष्य के विचारों में परिवर्तन हो जाता है तथा सात्विक भाव पैदा होने लगते हैं। यहां पर आर्य समाज मन्दिर चन्द्र पूर्णि का मन्दिर यह पुराना मन्दिर है और कला का सुन्दर नमूना है। यह मन्दिर पहाड़ी पर ऊंचे स्थान पर बना हुआ है। इस मन्दिर में पहुंचने के लिये यात्रियों को १६० सीढ़िया पार करनी पड़ती है तब इस मन्दिर में पहुंचा जा सकता हैं।

उत्पादित वस्तुयें—पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां भी भूमि खेती के योग्य नहीं है कुछ थोड़े से खाने-पीने की वस्तुओं की पैदावार होती है परन्तु उनका व्यापार नहीं होता है।

विशेष—चन्द्रपूर्णी ऐसे स्थान पर स्थित है जहाँ से पहाड़ी क्षेत्र आरम्भ हो जाता है। यह मनोहर तीर्थ स्थान है तथा पहाड़ी तीर्थ स्थानों को जाने के लिये द्वार के समान है। प्राकृतिक दृश्य सुन्दर है तथा हर साल बहुत से यात्री तथा सैलानी यहां आते हैं। तीर्थ स्थानों में चन्द्रपूर्णी का स्थान प्रमुख है। यहां का दृश्य बहुत ही मनोहारी है।

बैंक—यह एक पहाड़ी स्थान है। यहां कोई विशेष व्यापार नहीं होता इस लिये यहां पर बैंक की सुविधा नहीं हैं।

जैंजो दोआबा—जैंजो दोआबा जिला होशियारपुर में एक सुन्दर स्थान है। यह नगर उत्तर रेलवे की जालन्धर-जैंजो दोआबा लाईन पर एक रेलवे स्टेशन है। यह जगह जालन्धर से ६० कि. मी. की दूरी पर है। यहां पर आने जाने के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए रत्नपुरी की धर्मशाला में प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, बाबा आदेश्वर नाथ जी का मन्दिर (यह मन्दिर बहुत प्राचीन है), यहां पर गौशाला भी है।

विशेष—आस पास के क्षेत्र में बहुत सी वस्तुयें पैदा होती हैं उनके क्रय-विक्रय के लिये यहाँ अनाज मंडी है जहाँ से इस क्षेत्र की वस्तुयें बाहर भेजी जाती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, गुड़, चना, मटर, सरसों आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ का मुख्य बैंक, बैंक नवाबशहर दोआबा में है। उन्हीं बैंकों के द्वारा कार्य होता है।

टाडा उरमाड़—यह नगर पंजाब प्रान्त में जिला होशियारपुर में है। यह नगर रेलवे का स्टेशन है। यह स्टेशन एन. आर. की जालन्धर-पठानकोट लाईन पर है और जालन्धर से केवल ४२ कि. मी. की दूरी पर है। यहाँ शहर में आने जाने के लिये तांगे और रिक्शा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से लगभग ४ फर्लांग दूर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में अनेक प्राचीन और मुख्य मन्दिर हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि भारत का प्रमुख धर्म क्षेत्र है उनमें से निम्नलिखित स्थान दर्शनीय हैं। बाबा बूटा भगतजी का मन्दिर, बाबा हरगोविन्द जी का मन्दिर, शिव मन्दिर, जालियाँ मन्दिर, सीतला मन्दिर, बाबा बालक नाथ जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, बाबा बारा शाह का मंदिर, बाबा पूरनगिर का मंदिर, सोधियाँ मन्दिर, देवी द्वारा, बाबा नाथा वाला, लसूड़ी वाला मन्दिर तथा कई अन्य मन्दिर भी हैं।

विशेष—यहाँ पर आस पास के क्षेत्र से अनाज आदि वस्तुयें बिक्री के लिये आती हैं। इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये यहाँ मंडी भी है जहाँ पैदावार की वस्तुओं का व्यापार होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चावल, चना, मक्का, आदि का उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक की सेवायें ही विशेष उल्लेखनीय हैं।

नागल—यह स्थान जिला होशियारपुर में प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। यह स्थान पंजाब में ही नहीं भारत में भी प्रसिद्ध है। यह स्थान एन. आर. रेलवे की अम्बाला कैंट-नागल डैम लाईन पर एक अच्छा स्टेशन है। यहाँ से भाखड़ा बांध ११ कि. मी. की दूरी पर है। यहाँ आने जाने के लिये आवश्यकतानुसार सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर सनातन धर्म सभा, धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर नदी के किनारे का दृश्य अति आकर्षक है। 'सुरंग' यह सुरंग हर समय नहीं देखी जा सकती और न हर व्यक्ति इसमें प्रवेश ही कर सकता है। इसको देखने का समय केवल ८ बजे से ५ बजे तक सायं है और पास लेकर ही सुरंग में प्रवेश सम्भव है। इस सुरंग की विशेष देखभाल रहती है, खाद का कारखाना, नागल बांध, इस स्थान पर नदी में बांध बांधकर पानी का संग्रह किया गया जिससे पर्याप्त मात्रा में बिजली का उत्पादन होता है। इस बांध के नीचे सुरंग है, आर्य समाज मन्दिर आदि विशेष दर्शनीय स्थान हैं।

विशेष—यह स्थान अति रमणीक है। इस स्थान पर नदी के पानी को रोक कर एक बहुत बड़ा बांध बनाया गया है जहाँ से आस पास के क्षेत्र में सिंचाई का बहुत बड़ा साधन है तथा बिजली उत्पादन का प्रमुख और प्रसिद्ध स्थान है। यह बांध बहुत विशाल है तथा भारत में प्रसिद्ध स्थान है। देश और विदेश के अनेक यात्री इसे देखने आते हैं। इन्जीनियरी का एक अद्भुत नमूना है। यहाँ पर एक सुरंग भी है। इस स्थान को देखकर मनुष्य की बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है और देखने वाला प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। और यहां पर एक सुन्दर व्यापारिक मन्डी है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर गेहूं, मक्का, चना आदि खाद्यान्न पैदा होते हैं तथा उनके क्रय विक्रय के लिये यहाँ पर एक बड़ी मंडी है।

बैंक—यहाँ पर पंजाब नेशनल बैंक तथा स्टेट बैंक की सेवायें ही अधिक उत्तम है।

बलाचौर – बलाचौर जिला होशियारपुर का नगर है। यह स्थान एन. आर. की फगवाड़ा-जैजो दोआब लाईन पर है। यह जगह नवाबशहर तथा रोपड़ से २० कि. मी. की दूरी पर है। यहां रेलवे का स्टेशन नहीं है। यहाँ पर रेल नहीं

जाती। यहाँ पर आने जाने के लिये बस और तांगे की सवारियों का ही उपयोग करना पड़ता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों की सुविधा के लिये शहर में धर्मशालायें बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर हैं जो बहुत सुन्दर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर साधारण रूप से पैदावार होती है। कोई विशेष उपज नहीं होती है। आस पास के क्षेत्रों से आने वाली वस्तुओं के लिये मन्डी है।

बैंक—यहाँ होशियारपुर सैन्ट्रल बैंक तथा सैन्ट्रल बैंक की शाखाओं का कार्य अच्छा है।

===

हरियाणा

हरियाणा की गणना भारत के लघु प्रदेशों में की जाती है। । यह प्रदेश पहले पंजाब का ही अंग था। हरियाणा की अभी कोई राजधानी निश्चित न हुई है। इसलिये नगरों की दूरी चण्डीगढ़ से ही दी गयी है।

यह पुन्य भूमि, मां गायों की,
भक्त धर्म पर देते प्राण,
गऊओं की सेवा करना ही,
हर प्राणी का कर्म महान,

जिला अम्बाला

(अम्बाला, कुराली, कालकाजी, जगाधरी, भाखड़ा डैम, मौरेण्डा)

अम्बाला—यह नगर हरियाणा प्रदेश का प्रमुख नगर है। यह नगर उत्तर रेलवे (एन० आर०) पर दिल्ली अमृतसर मार्ग पर स्थित है। यह दिल्ली से २०५ किलो मीटर दूर है। शहर में आने-जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—मास्टर हरगुलाल जी की धर्मशाला अनाज मण्डी में है। इसमें यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में अनेक स्थल देखने योग्य है। एक विशाल आर्य समाज मन्दिर है। अनेक देवी देवताओं के मन्दिर नगर में यंत्र तंत्र बने हुए है। यहा सेना की विशाल छावनी है। यहां हवाई अड्डा भी है। विज्ञान का सामान बनाने का बहुत बड़ा कारखाना है। एक बड़ा कालिज है। यहाँ एक गौशाला भी है। आदि स्थान दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ एक अनाज की बड़ी मण्डी है। इस क्षेत्र में गेहूँ, धान, उड़द, बिनौला, मूंगफली, चावल, मसूर, गगार, लाल मिर्च आदि का उत्पादन होता है। कालिजों में विज्ञान पढ़ाने के लिये विविध वैज्ञानिक सामग्री दूर-दूर तक भेजी जाती है। माइक्रोस्कोप (छोटे को बड़ा बनाकर दिखाने का यंत्र) के लिये अम्बाला सर्व विदित है। तौलने के काँटे बनाये जाते हैं।

विशेष—इस नगर में ग्रामों की पैदावार अधिक होती है इसलिये इसका नाम अम्बाला पड़ा हैं ।

बैंक—नगर का कार्य अनेको बैंकों की सहायता से चलता है । जिसमें स्टेट बैंक ग्राफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, सैन्ट्रल बैंक, इलाबाद बैंक आदि बैंक हैं ।

कुराली—इस नगर का जिला अम्बाला है । एन. आर. की अम्बाला कैंट नांगल डैम लाईन पर अम्बाला कैंट से ८५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलते है । गुड़ शक्कर की मण्डी है ।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला हैं ।

दर्शनीय स्थल—यह स्थान विभिन्न धर्मो की दृष्टि से महत्वपूर्ण रखता है । यहां हिन्दू, मुस्लिम तथा सिक्ख धर्म सम्बन्धी मनोरम स्थल है । शीतला माता का मन्दिर प्रसिद्ध है यहाँ पर मेला भी लगता है । गुसाई बाबा का तालाब तथा मन्दिर है जहाँ मेला लगता है । यहाँ से ७२४ कि० मी० की दूरी पर एक पहाड़ी पर जयन्ती देवी का भव्य मन्दिर है । ६ कि० मी० की दूरी पर हजरत मुहम्मद की मजार बनी हुई और उर्स लगता है । गुरू गोविन्द सिंह के बड़े साहिब जादे का शहीदी स्थान चमकोट साहिब में दिसम्बर के आखिर में मेला लगता है आठ किलो मीटर की दूरी पर मोरेन्डा कस्बे में गोविन्द सिंह के छोटे साहिबजादे की स्मृति में गुरूद्वारा बना हुआ है । इसके अतिरिक्त अन्य भी दर्शनीय स्थल हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य पैदावार गुड़, शक्कर, रसकट, खाँड़सारी, मसूर, मूंगफली, गेहूं, चना, आदि हैं ।

बैंक—यहां स्टेट बैंक ग्राफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक, सैन्ट्रल बैंक आदि प्रमुख बैंकों की शाखायें स्थापित हैं ।

कालकाजी—यह नगर अम्बाला जिले का प्रमुख नगर है । यह दिल्ली से ३०३ किलो मीटर की दूरी पर उत्तर रेलवे (एन० आर०) की दिल्ली कालका लाईन पर स्थित है, यहां सवारी के लिये रिक्शा और टैक्सी मिलती हैं । यहां से हिमाचल प्रदेश शुरू होता है और यह रेल का बड़ा स्टेशन हैं ।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में अनेक धर्मशालायें है । गोविन्द राम की धर्मशाला यहाँ के मुख्य बाजार में स्थित है । पहाड़ी बाजार में मगलसैन की तथा बुढ़िया की धर्मशालायें है और आढ़त बाजार में छज्जूराम की धर्मशाला प्रसिद्ध हैं ।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर एक आर्य समाज मन्दिर है । रामचन्द्र जी का मन्दिर है । कालका देवी का मन्दिर प्रसिद्ध है । इस मन्दिर की प्रसिद्धि के कारण ही इस नगर का नाम कालकाजी पड़ा ।

उत्पादित वस्तुयें—यह पहाड़ी इलाका है । अतः अनेकों पहाड़ी पदार्थ उत्पन्न है आलू, अदरक, अरबी, अनारदाना बनफशा, अखरोट, चिलगोजा, रायदाना, कुटू

कालाजीरा, काकड़ा सींगी, रीठा, चम्पावती आदि का उत्पादन होता है और देश के विभिन्न भागों को भेजे जाते है।

विशेष–यहां से हिमाचल प्रदेश को गल्ले की सप्लाई होती है। रेलवे की बहुत बड़ी वर्कशाप हैं।

बैंक—यहां पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक, बैंक आफ पटियाला आदि बैंकों की सहायता से यहाँ का कारोवार चलता हैं।

जगाधरी—(यमुना नगर) यहां अम्बाला जिले में दिल्ली से २१४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है उत्तर रेलवे (एन० आर०) की दिल्ली अमृतसर लाईन पर बसा हुआ है। यहाँ सवारी के लिये तांगा, टैक्सी तथा रिक्शा मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशालायें बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर है तथा कई अन्य देवताओं के मन्दिर बने हुए है। एक गौशाला भी है। और पीतल के वर्तन बनाने के कारखाने है। शुगर, कागज, कपड़े के बड़े २ मिलें हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस शहर में पीतल के वर्तन प्रसिद्ध हैं। यहां से बर्तन दूर-दूर तक भेजे जाते हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, एवं साहूकारा बैंकों द्वारा कारोवार होता हैं।

भाखड़ा डैम—यह अम्बाला जिले में स्थित है। यह दिल्ली से ३२० कि० मी० दूर हिमालय पहाड़ की तलहटी में है। भाखड़ा के पास सतलज नदी पहाड़ों के बीच एक तंग रास्ते से निकलती है। इस पानी के तंग मार्ग को रोक कर एक बहुत बड़ा बाँध बाधा गया है। इस बाँध की ऊंचाई २२६ मीटर तथा लम्बाई ३३५० मीटर है। बाँध बंध जाने पर एक छोटा सा समुद्र बन गया है। इसका नाम गोविन्द सागर है। यहां पर इतनी बिजली बनेगी जो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश को मिल सकेगी। इस बाँध से जो नहर निकल रही है और जो इस नहर से दूसरी निकलेंगी उनसे राजस्थान में जाल सा फैल जायेगा। जिससे लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होगी। इन नहरों की लम्बाई लगभग ६४०० किलो मीटर होगी। यह भारतवर्ष का सबसे बड़ा और ऊंचा बाँध हैं।

दर्शनीय स्थल–सारा क्षेत्र ही दर्शनीय है। चारों ओर प्राकृतिक तथा मानवीय कृत्यों की छटा देखते ही बनती हैं। गोविन्द सागर, पावर हाउस, सुरंग, बाग आदि अत्यन्त सुन्दर है। वर्ष में हजारों दर्शनार्थी यहां पर आते हैं।

मौरेडा—यह अम्बाला जिले में है। उत्तर रेलवे की अम्बाला कैन्ट-नांगल डैम लाईन पर अम्बाला कैन्ट से ७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगे मिलते हैं। यहाँ पर मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, खल, बिनौला, तेल, अलसी, तारामीरा चीनी आदि है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया की शाखा है।

जिला करनाल

(करनाल, कुरुक्षैत्र. कैथल, घरौंडा, तरावड़ी, थानेसर, पानीपत, लाडवा, शाहबाद मारकण्डा)

करनाल—यह हरियाणा प्रदेश का वड़ा जिला है। यह नगर दिल्ली से १२३ कि० मी० की दूरी पर दिल्ली-कालका लाईन पर स्थित है। इसकी रेलवे एन० आर० है। सवारी के लिये तांगा तथा रिक्शा मिलती है। यह अनाज की मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास तथा वाजार में धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा आर्य अनाथालय है। जिसमें अनेक अनाथ बच्चों का पालन पोषण होता है एवं शिक्षा दी जाती है। ऊन का एक बहुत बड़ा कारखाना है। गौशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं चावल, चना, जौ, मक्का, जीरा, सरसों, खल, ज्वार, तोरियां आदि का उत्पादन होता है। आलू और प्याज भी बहुतायत से पैदा की जाती है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंकों द्वारा मुख्य रूप से कारोबार होता है।

विशेष—यह शहर राजा कर्ण का बसाया हुआ है। इसी कारण इसका नाम करनाल पड़ा। कर्ण का पुराना तालाब बहुत प्रसिद्ध है।

कुरुक्षेत्र—यह करनाल जिले का एक प्रमुख एवं धार्मिक नगर है। यह दिल्ली-अम्बाला लाईन पर दिल्ली से १५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। रेलवे एन० आर० है। जी० टी० रोड पर पीपली से जाना पड़ता है। सवारी के लिये रिक्शा तथा रेड़ी मिलती हैं। महाभारत में इस को पुण्य तथा धार्मिक स्थान माना गया है। पाण्डवों तथा कौरवों का प्रसिद्ध युद्ध इसी स्थान पर हुआ था। सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहा विशाल मेला लगता है जिसमें सारे देश के कोने २ से लाखों व्यक्ति एकत्रित होते हैं। यहां अनेकों पण्डें रहते हैं। यहा पर बड़े २ तालाब बने हैं जिनमें स्नान करते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये बिरला मन्दिर धर्मशाला व अनेक बड़ी २ धर्मशालायें प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यह एक धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थल होने के कारण यहां अनेक दर्शनीय स्थान है। बिरला मन्दिर अपने सौन्दर्य और कला के कारण दर्शकों के मन को अपनी ओर वरबस आकर्षित कर लेता है। कौरवों पाण्डवों का मन्दिर, ज्योतिसर का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, गुरुद्वारा आदि के अतिरिक्त ऐतिहासिक इमारतें देखने योग्य है यहा पर अनेक कूप हैं जिनका धार्मिक महत्व हैं। इनमें चन्द्र कूप, विष्णु कूप, तथा देवी कूप प्रसिद्ध हैं। अनेक पवित्र सरोवर है जिनमें मेलों के अवसर पर यात्री स्नान करते हैं। उल्लेखनीय तालाब निमांकित हैं—कुरुक्षेत्र तालाब, ब्रह्मसर ज्योतिसर, स्थानेसर, कालेसर, यह शिक्षा का भी मुख्य स्थान है। सन् १९५६ में कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय की स्थापना हुई। संस्कृत महा विद्यालया, गुरुकुल विश्व-विद्यालय, इन्जीनियरिंग कालिज के अति- रिक्त तीन कालिज हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, मसूर, चना, धान, चावल, आदि उत्पन्न किया जाता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया।

विशेष—यह सरस्वती नदी के किनारे बसा हुआ है कुरुक्षेत्र तालाब की लम्बाई ४५०० फुट व चौड़ाइ २१०० फुट है।

कैथल—इसका जिला करनाल है। उत्तर रेलवे की नरवाना कुरुक्षेत्र लाईन पर स्थित है। नरवाना से इसकी दूरी ३८ कि० मी० है। रेल के अतिरिक्त बसें भी जाती हैं। रिक्शा आदि सवारी मिलती हैं। इस नगर का ऐतिहासिक महत्व है। इसे कौरवों और पाण्डवों की प्रसिद्ध भूमि माना जाता है। किंवदन्ति है कि हनुमान जी का जन्म यहीं पर हुआ था। एक गौशाला है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में अनेक मन्दिर एवं तालाब है। विद्ध की आर तालाब पुण्डरी काण्ड तालाब प्रसिद्ध हैं। पुण्डरी काण्ड तालाब का नाम पुण्डरी काक्षताल था। इस पर बने हुये मन्दिरों की शोभा अवलोकनीय है। अंजनी माई का टीला हनुमान मन्दिर, दुर्गाजी का मन्दिर प्रसिद्ध हैं। कहां जाता है कि इसी दुर्गाजी के मन्दिर में हनुमान जी की माता ने दुर्गाजी की पूजा की थी। सीता वन जिसे सियावन भी कहते हैं, सत्य नारायण मन्दिर तथा कृष्ण मन्दिर, यहाँ के दर्शनीय स्थानों में अपना विशेष स्थान रखते है। पहेवा एक धार्मिक स्थान हैं। जहाँ चैत में मेला लगता है। इनके अतिरिक्त केदार तीर्थ, चण्डी स्थान, सर्वदेव तीर्थ, विष्णु तीर्थ आदि स्थल अपनी सुन्दरता एवं पवित्रता के लिये उल्लेखनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चना, तोरिया, सरसों, जीरा, चावल, मक्का, दाल, चना, गेहूं, मसूर, गवार, बिनौला, खल, बाजरा, मूंग, ज्वार, रुई, तथा गुड़ यहां की प्रमुख वस्तुयें हैं। व प्रमुख मण्डी है।

बैंक—नगर का कारोबार स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक की सहायता से चलता है।

घरौंडा—यह नगर करनाल जिले में हैं। उत्तर रेलवे की दिल्ली कालका लाईन पर दिल्ली से १०५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह अनाज की बड़ी मण्डी है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगों की सुविधा है मुगलों बादशाहों के समय से यह प्रसिद्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये मण्डी के पास धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, प्राचीन किले के खण्डहर, जैन मन्दिर तथा गुरुकुल विद्यालय अवलोकनीय स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, चावल, सरसों, मसूर, मूंग, ज्वार, मक्का, कपास, गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, आलू, प्याज और देशी घी आदि प्रसिद्ध उत्पादित वस्तुयें हैं।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया तथा सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया मुख्य बैंक हैं।

तराबड़ी—तरावड़ी का जिला करनाल है और यह उत्तर रेलवे की दिल्ली-कालका लाईन पर दिल्ली से १३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है तथा थानेश्वर से २३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है तथा जी. टी. रोड पर नीला खेड़ी और करनाल के बीच में है यहां सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलता है। यह एक ऐतिहासिक स्थान है इसका प्राचीन नाम 'तराइन' है। यहां पर सन् ११९१ ई० तथा ११९२ ई० में हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के बीच दो युद्ध हुए थे। यह चावल की बड़ी मण्डी है यहां से बासमती चावल को बहुत बड़ी मात्रा में अरब देशों को निर्यात किया जाता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध पुरुषार्थ धर्मशाला व अग्रवाल धर्मशाला में अच्छा है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर एक प्राचीन किला है। सिक्खों ने लाखों रुपयों की लागत से गुरुद्वारा शीशगंज का निर्माण कराया है जो अपनी निराली छटा से दर्शकों का मन आकर्षित कर लेता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, मक्का, जौं, जीरा, तोरिया अदि की उपज होती है। बासमती चावल यहाँ की मुख्य एवं प्रसिद्ध पैदावार है।

विशेष—यहाँ पर मौ० गौरी व पृथ्वीराज चौहान का घमासान युद्ध हुआ था।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक व सैन्ट्रल बैंक की मुख्य शाखाएं हैं।

थानेसर—जिला करनाल का यह एक ऐतिहासिक स्थान है और एन. आर. की नरवाना-कुरुक्षेत्र लाईन पर कुरुक्षेत्र से चार कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और तांगा मिलते हैं। छटी शताब्दी के अन्तिम चरण में

यह नगर वर्धन साम्राज्य की राजधानी बना। यहीं महाराज हर्षवर्धन ने राज्य किया इसका असली नाम थानेश्वर था।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के लिये स्टेशन से २ कि० मी० की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई सुन्दर मन्दिर हैं। शिवजी का प्राचीन मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चावल, जौ व चना आदि।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

पानीपत—पानीपत का जिला करनाल है। यह एन० आर० की दिल्ली-कालका लाईन पर दिल्ली से ८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा, ताँगा व टैक्सी मिलती हैं। यहां ऊन के अनेक कारखाने हैं और खादी का काम बड़े पैमाने पर होता है। यहां एक गौशाला है। गुड़ शक्कर की बड़ी मण्डी है। सं० १५२६ ई० में पानीपत के मैदान में बाबर और इब्राहीम लोधी के बीच भयकर संग्राम हुआ। बाबर को विजय मिली।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये ब्राह्मण धर्मशाला में उत्तम प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, देवी मन्दिर, गीता भवन, राम मन्दिर, काला आम, इब्रहीम लोधी की कब्र तथा किला विशेष रूप से उल्लेखनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, गेहूँ, चना, सरसों चीनी आदि और यह शुगर मिल, ऊनी सामान का मुख्य केन्द्र है।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक तथा सेन्ट्रल बैंक है।

लाडवा—यह करनाल जिले का नगर है और एन० आर० की दिल्ली-कालका लाईन पर स्थित है। इसकी दूरी रादौर से १२ कि० मी०, कुरुक्षेत्र से २२ कि० मी० तथा जगाधरी से २७ कि० मी० है। यह गुड़, शक्कर तथा अनाज की मण्डी है। सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर अनेक विश्राम के सार्वजनिक स्थान हैं जिनमें आर्य समाज धर्मशाला, लाला दर्शन लाल की धर्मशाला तथा भगत राम की बड़ी धर्मशाला प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, देवी मन्दिर तथा हनुमान मन्दिर दर्शनीय धार्मिक स्थल हैं तथा एक सुन्दर तालाब और खादी भण्डार है।

उत्पादित वस्तुयें—गुड़, शक्कर, गेहूँ, चावल, धान, चना, तिल, सरसों, मेथी, बाजरा तथा उड़द आदि।

बैंक—नगर में सेन्ट्रल बैंक की एक शाखा है।

शाहबाद-मारकन्डा—इसका जिला करनाल है और उत्तर रेलवे की दिल्ली कालका लाईन पर दिल्ली से १७८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक बड़ी मण्डी है तथा आस-पास के ग्रामों से बड़ी मात्रा में अनाज मण्डी में आता है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहां नगर में स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, कपास, मसूर, सरसों, काबली चना, तारामीरा, उड़द, ज्वार, बाजरा, जौं, चावल, गुड़, शक्कर, धनिया तथा लाल व पीली मिर्च आदि मुख्य हैं।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया तथा करनाल को-आपरेटिव आदि बैंक हैं।

जिला गुड़ गांव

(गुड़गांव, पलवल, फ़रीदाबाद, वल्लभगढ़, रेवाड़ी, होडल, हैलीमण्डी, सोहना)

गुड़गांव—गुड़गांव जिला हरियाणा का एक जिला है और एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से ३२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के लिये दिल्ली से बसे भी जाती हैं। यहां सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं। यह एक बड़ी मंडी है। यहाँ एक गौशाला है। इस नगर का प्राचीन नाम गुरुग्राम बताया जाता है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर तथा माता का विशाल मन्दिर है मन्दिर के पास एक विशाल तालाब है यहां हर वर्ष विशाल मेला लगता है उत्तर भारत के कोने-कोने से यात्री आते हैं व बच्चों के बाल उतरवाते हैं और मन्दिर में माता के दर्शन करते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चना और चने की दाल, जौं, ज्वार, सरसों, उड़द, मूंग, मोठ, तारमीरा, गुड़, शक्कर तम्बाकू, लाल मिर्च व जीरा आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, सेण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा न्यू सिटीजन बैंक।

पलवल—पलवल का जिला गुड़गाँव है। यह सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ५९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगा मिलता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीन काल में पलम्बासुर दानव ने यह माहारूरी द्वापर नगर बसाया था। कंस के कहने पर पलम्बासुर श्री कृष्ण जी के बड़े भाई बलराम को चुराकर यहाँ ले आया था। बलराम जी ने देवी मन्दिर में मुक्का मारकर राक्षस का वध किया। पलवल रेलवे स्टेशन पर सन् १९१ में महात्मा गाँधी जी सर्वप्रथम गिरफ्तार किये गये थे।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक बहुत सुन्दर धर्मशाला ।

दर्शनीय स्थल— पलम्बासुर दानव का किला, तालाब और मन्दिर प्रसिद्ध हैं। दाऊ जी (बलराम जी) का मन्दिर है जहाँ भादों सुदी ६ को बड़ा भारी मेला लगता है। गाँधी जी की प्रथम गिरफ्तारी की स्मृति में एक सुन्दर यादगार स्टेशन पर बनी हुई है। आर्य समाज मन्दिर है और पाण्डवों की पंचवटी और देववन आदि प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—सरसों, तारामीरा, कपास, गुड़, मूंग, गेहूं, चना, ज्वार, बजारा, जौं, गुंवार, मटर आदि।

बैंक—कारोबार संचालन में स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक से सहायता ली जाती है।

फरीदाबाद—फरीदाबाद का जिला गुड़गाँव है। सी० रेलवे की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं और यहां पर मेंहदी की बहुत बड़ी मण्डी है।

विश्राम स्थल—शहर में धर्मशाला है और होली-डे-इन नाम का होटल है। जिसका फोन न० ८१२३३३ है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर है तथा कई बड़े-बड़े कारखाने हैं।

उत्पादित वस्तुएं—मेंहदी यहां की प्रमुख एवं प्रसिद्ध उत्पादित वस्तु है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, न्यू बैंक ऑफ इण्डिया तथा ओरियन्टल बैंक।

बल्लभगढ़—इसका जिला गुड़गाँव है। सैन्ट्रल रेलवे की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं। यह नगर ऐतिहासिक है। महाराज नाहरसिंह यहां के अन्तिम राजा थे।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये जानकी धर्मशाला और देवकी धर्मशाला प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, महाराज नाहरसिंह का किला तथा उनकी बनवाई हुई छतरी तथा तालाब जो अब भी अच्छी हालत में है प्रसिद्ध स्थल हैं। नाहरसिंह पार्क तथा नाहरसिंह की रानी का महल दर्शनीय हैं। महाराज नाहर सिंह की कचहरी है जिसमें आजकल तहसील का दफ्तर बना हुआ है। इनके अतिरिक्त अन्य कई सुन्दर स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुएं—सरसों, जौं, अरहर, खल, गेहूं, चना, गवार, ज्वार, बाजरा आदि।

बैंक—स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

रेवाड़ी—यह गुड़गाँव जिले का प्रसिद्ध नगर है। एन. आर. की दिल्ली बीकानेर लाईन पर दिल्ली से ८३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा, ताँगे मिलते हैं। यहाँ का पेड़ा प्रसिद्ध है। भारत की सबसे पहली गौशाला रेवाड़ी में स्थापित हुई थी जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने स्वयं अपने कर कमलो द्वारा की थी।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये बिन्दा वाले की धर्मशाला प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—वर्तनों का कारखाना, आर्य समाज मन्दिर, बड़े तालाब पर हनुमान जी का मन्दिर बहुत सुन्दर है। यहाँ से चार कि. मी. की दूरी पर आश्रम एवं पिकनिक स्थल है।

उत्पादित वस्तुएं—सरसों, जौं, चना, ज्वार, गेहूं, तारामीरा, राई, कासनी, मूंग, मोठ, बाजरा आदि।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक, सैन्ट्रल वैंक तथा पंजाव नेशनल बैंक की शाखायें खुली हुई हैं।

होडल—इसका जिला गुड़गाँव है। सैन्ट्रल रेलवे की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ८६ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं। यह प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये, वैश्य अग्रवाल धर्मशाला प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—विशाल आर्य समाज मन्दिर है। भरतपुर के महाराज सूरजमल के समय का एक सती का मन्दिर है। बारह खम्बा कचहरी, पाण्डुवन, बावली तथा चमेलीवन देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—दालें, चना, मूंग, मटर, अरहर, सरसों, नेव, रूई, बिनौला, गुड़, जई, गेहूं, तारामीरा आदि।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक व स्टेट बैंक आफ इण्डिया की प्रमुख शाखायें स्थापित हैं।

हैलीमण्डी—इसका जिला गुड़गाँव है। रेलवे स्टेशन परोही रोड है। उत्तर रेलवे की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से ६२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां की मण्डी जौं के लिये प्रसिद्ध है। सवारी के लिये टैक्सी, तांगा तथा रेड़ी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—कई सुन्दर मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—जौं, चना, सरसों, तारामीरा, जीरा, बाजरा, गवार, चौला, लाल मिर्च तथा मूंग आदि।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक तथा को-आपरेटिव बैंक हैं।

सोहना—इसका जिला गुड़गाँव है। मध्य रेलवे की अलवर वाली लाईन पर दिल्ली से ६६ कि० मी० व गुड़गाँव से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं। यह शौनक ऋषि की तपस्या स्थली है। बहुत पुराने जमाने से यहां पर गर्म पानी के सोते हैं।

विश्राम स्थल—ऊष्ण कुण्ड के पास धर्मशालां हैं जिसमें यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—शौनक ऋषि की तपस्या स्थली, सोहना ऊष्ण कुण्ड तथा तथा अन्य कुण्ड, कुछ कुण्डों में स्नान के लिए ५० पैसे से २·५० तक टिकट लगाता है। कुछ कुण्डों में निःशुल्क स्नान कर सकते हैं। दूर-दूर से यात्री कुण्डों को देखने तथा स्नान करने के लिये आते हैं। आर्य समाज मन्दिर भी देखने योग्य है। यहाँ शिव शंकर जी का स्थान व मन्दिर भी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूँ, चना, जौं, ज्वार, बाजरा आदि।

बैंक—स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक की शाखाओं द्वारा नगर का कारोबार चलता है।

जिला जीन्द

(जीन्द, नरवाना)

जीन्द—हरियाणा प्रदेश का जींद एक जिला है। उत्तर रेलवे की दिल्ली-फीरोजपुर लाईन पर दिल्ली से १२८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए टैक्सी, रिक्शा तथा तांगा मिलता है। यह प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है जिसमें यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य अनेक देव मन्दिर व गौशाला भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं कपास, सरसों, गेहूं, चना, बाजरा, गुड़, ज्वार, मूंग, गवार आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक की शाखाओं द्वारा नगर का कारोबार सुचारु रूप से चलता है।

नरवाना—जींद जिले का यह प्रसिद्ध नगर है। उत्तर रेलवे की दिल्ली-फीरोजपुर लाईन पर दिल्ली से १६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं। यह प्रसिद्ध मण्डी है। गौशाला भी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, पतराम नगर में ला० नन्नूमल द्वारा निर्मित एक पाँच मजिल का देवी का मन्दिर है। जिसमें देखने पर एक देवी की हजारों देवियाँ दिखलाई पड़ती हैं। अब इस मन्दिर में एक ऐसी मशीन लगाई जा रही है जिससे सारी जमीन समुद्र और मछलियों के रूप में दिखलाई देगी।

उत्पादित वस्तुएं गेहूं, चना, दाल, सरसों, तारामीरा, कपास, बिनौला, जौं, गवार, मूंग, मक्का आदि।

बैंक स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक।

जिला महेन्द्रगढ़

(महेन्द्रगढ़, चर्खी, दादरी, नारनौल)

महेन्द्रगढ़—यह हरियाणा प्रदेश का महेन्द्रगढ़ एक जिला है। यह एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से १३३ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा तथा ताँगे मिलते है। यहाँ गौशाला तथा बड़ी मण्डी है।

विश्राम स्थल—नगर में अनेक धर्मशालायें है। जिनमें से निम्नलिखित प्रसिद्ध है–हीरालाल सागर मल जी की धर्मशाला, तोताराम जसमल जी की धर्मशाला, ला० वंशीधर जी की, ख्याली राम जानकीदास जी की तथा लाला शम्भू मल जी की धर्मशालायें है। एक धर्मशाला सराय मोहल्ला में खाती के द्वारा निर्मित धर्मशाला भी प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर का दुमंजिला मुख्य द्वार, आर्य समाज मन्दिर, श्री भूतेश्वर नाथ मन्दिर, ला० मोहन लाल का मन्दिर,तथा हनुमान जी का मन्दिर अवलोकनीय है। रामलीला ग्राउन्ड में दर्शनीय स्थल पक्का बना हुआ है। एक विशाल पुस्तकालय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां सरसों, चना, मोठ, मूंग आदि की उपज है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक तथा को-आपरेटिव बैंक हैं।

चर्खी दादरी—यह महेन्द्रगढ़ जिले का एक मुख्य शहर । उत्तर रेलवे की रिवाड़ी फाजिल्का लाईन पर रिवाड़ी से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा, ताँगा मिलते है। यहां एक गौशाला है और मन्डी है। यह के लिये प्रसिद्ध है। मण्डी में सरसों, चना, दाल, जौ, गवार, बाजरा बहुतायत सीमेन्ट से आता है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां सीमेंट फैक्ट्री है तथा अन्य मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वतुयें—यहाँ की मुख्य उपज सरसों, चना, दाल, जौ, गवार, मूंग माठ, तारामीरा आदि की उपज हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया।

नारनौल—इस नगर का जिला महेन्द्रगढ़ है। यह नगर डब्लू० आर० की फुलेरा-रिवाड़ी ब्रांच लाईन पर फुलेरा से १६४ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सीं, रक्शा और तांगे मिलते हैं। सरसों और लोटनी की प्रसिद्ध मण्डी है। यहाँ एक गौशाला है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों विश्राम करने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज सरसों, चना, बाजरा, गवार, मक्का, जौ, ज्वार, मोठ, मूंग, धनिया, जीरा, घी, तेल, खल, आदि की उपज हैं।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक हैं।

जिला रोहतक

(रोहतक, गन्नौर, गोहाना, झज्जर, बेरी, बहादुरगढ़,)
(सांपलामण्डी, सोनीपत)

रोहतक—हरियाणा प्रदेश का रोहतक एक प्रमुख जिला है। यह नगर उत्तर रेलवे की दिल्ली फिरोजपुर लाईन पर दिल्ली से ७० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, टैक्सी और तांगे मिलते है यह गुड़ की प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—रेलवे रोड पर कपूर धर्मशाला तथा अन्य जैन धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर छोटूराम कालिज, दयानन्द मठ आर्य समाज मन्दिर तथा हिन्दी साहित्य भवन देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गुड़, की मुख्य पैदावार है। चना, सरसों, गुवार गेहूं, बाजरा, मसूर, रूई आदि की उपज है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, न्यू बैंक आफ इण्डिया तथा यूनाइटेड बैंक की शाखाओं द्वारा नगर का कारोबार सम्पादित होता है।

गन्नौर—इस नगर का जिला रोहतक है। यह एन० आर० की दिल्ली कालका लाईन पर दिल्ली से ६० किलो मीटर की की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते है। और यह व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के विश्राम करने के लिये स्टेशन से लगभग ३ कि० मी० की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में देव मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गुड़, खाँड़, लाल मिर्च, गेहूं, चना, बाजरा, ज्वार, सरसों, मक्का, मसूर आदि की उपज है।

गोहाना—गोहाना रोहतक जिले का एक शहर है। एन० आर० की रोहतक गोहाना लाईन पर रोहतक से ३२ कि० मी० की दूरी स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलता है। एक अच्छी गौशाला एवं मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने के लिये स्टेशन से लगभग १½ कि० मी० पर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर है तथा कई देवालय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहा की मुख्य उपज गेहूँ, चना, सरसों, धान, कपास, गुड़ शक्कर, चावल, आदि की उपज है।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक की एक शाखा है।

झज्जर—झज्जर शहर रोहतक जिले में है। एन० आर० की दिल्ली-फिरोजपुर लाईन पर स्थित है। रिवाड़ी से इसकी दूरी ४६ किलो मीटर तथा बहादुरगढ़ से २६ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा, टैक्सी और ताँगे मिलते हैं। गुड़, शक्कर की अच्छी मण्डी है। यह आर्य समाज का बड़ा केन्द्र है।

विश्राम स्थल—यहां गुरुकुल में ठहरने की व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—गुरूकुल महाविद्यालय, आर्यगुरुकुल विद्यापीठ, वैदिक साहित्य प्रकाशन केन्द्र तथा आर्य समाज मन्दिर अवलोकनीय। गुरूकुल का संग्रहालय भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की उपज गुड़, शक्कर, खाँड, गेहूं, चना आदि की पैदावार होती है।

बैंक—स्टेट बैंक तथा सहकारी समिति है।

बेरी—यह रोहतक जिले का एक नगर हैं। दक्षिण पूर्व रेलवे की हावड़ा वाल्टेयर लाईन पर हावड़ा से ३८४ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहा गौशाला है।

विश्राम स्थल—नगर में अनेक धर्मशालायें हैं जिन्हें विभिन्न जाति वालों ने अपनी जाति के नाम पर बनवाया है। इनमें प्रमुख निमांकित हैं देवी जी की धर्मशाला, ब्राह्मणों की धर्मशाला, कुम्हारों की धर्मशाला, खटीकों की धर्मशाला तथा वैश्य धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, देवी जी का मन्दिर तथा अन्य मन्दिर एवं शिवालय तथा तालब देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूं, चना, जौ, अलसी, आदि की उपज है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

बहादुरगढ़—इसका जिला रोहतक है। एन० आर० की दिल्ली फिरोजपुर सिटी लाईन पर दिल्ली से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा, तथा ताँगे मिलते हैं। यहाँ अनाज की मंडी हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा अनाज की मंडी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार गेहूँ. चना, गुड़, शक्कर, सरसों, आदि की पैंदावार है।

बैंक—नगर का कारोबार स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंकों के द्वारा चलता है।

सांपलामण्डी—इस नगर का जिला रोहतक है। एन० आर० की दिल्ली फिरोजपुर सिटी लाईन पर दिल्ली से ५१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा मिलते हैं। एक मण्डी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन पर एक धर्मशाला है जहाँ यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर अच्छा बना हुआ है। अमर शहीद सुमेर सिंह का जन्म स्थान 'नया गाँव' यहां से कुछ ही दूरी पर है। नया गांव में ही इनकी समाधि बनी हुई है। इन्होंने सन् १९५७ के हिन्दी आँदोलन में सक्रिय भाग लिया लेकिन इस पापी सरकार ने इन्हें फिरोजपुर सैन्ट्रल जैल में बंद कर लाठियों से मार दिया। श्री गंगा प्रसाद आर्य जो इस पुस्तक के प्रकाशक हैं, उनके दाह संस्कार के समय सम्मिलित थे।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की पैदावार गुड़, शक्कर, खांड़, गेहूं, चना, है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया की एक शाखा यहां पर खुली हुई है।

सोनीपत—रोहतक जिले का यह मुख्य नगर है। यह एन० आर० की दिल्ली कालका लाईन पर दिल्ली से ४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित । सवारी के लिये रिक्शा, तथा तांगे मिलते हैं। गुड़ शक्कर की मण्डी है।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला गोहाना अड्डे के पास तथा दूसरी रोहतक अड्डे के पास है।

दर्शनीय स्थल—राम मन्दिर, गीता भवन तथा आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है। एटलस साइकिल का कारखाना है तथा और भी अनेक कारखाने नगर में देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गुड़, शक्कर, तथा लाल मिर्च आदि की उपज हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ़ इण्डिया की शाखा नगर में खुली हुई हैं।

जिला हिसार

(हिसार, एलिनाबाद, टोहाना, भिवानी, मंडीड बवाली, सिरसा, हांसी)

हिसार—यह हरियाणा प्रदेश का प्रमुख जिला है। यह रेलवे जंकशन है। एन० आर० की लुधियाना-हिसार लाईन पर लुधियाना से २०१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे की सवारी मिलती है। यहां गौशाला एवं मण्डी है।

विश्राम स्थल—नगर में धर्मशाला है जहां यात्रियों के ठहरने की नगर में अच्छी सुविधा है।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य समाज मन्दिर के अतिरिक्त अन्य कई मन्दिर हैं। और यहां पर किला व गूजरी का महल भी सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ चना, सरसों, बाजरा, तारामीरा, गुवार, मूंग, मोठ आदि की उपज है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, तथा यूनाटेड बैंक की शाखाओं द्वारा नगर का कारोबार सुचारु रूप से चलता है।

एलिनाबाद—इसका जिला हिसार है। एन० आर० की सादुलपुर-हनुमानगढ़ लाईन पर सादुलपुर से १३५ कि० मी० दूर स्थित हैं। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलता है। यहाँ पर अनाज की मण्डी है।

विश्राम स्थल—नगर में कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की उपज धान, चना, जौ, मूंग, मोठ, मक्का, गुवार चावल, सरसों, तारामीरा ज्वार, बाजरा आदि की पैदावार है।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक की शाखा के द्वारा यहां का कारोबार चलता है।

टोहाना—यह हिसार जिले में है। और एन० आर० की दिल्ली-फ़िरोजपुर लाईन पर दिल्ली से १८७ कि० मी० दूर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा मिलता है। यहाँ अनाज की मंडी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास ला० माम चन्द्र बख्शी राम की धर्मशाला है तथा बस स्टैन्ड के पास ला० देवूमल आत्माराम की धर्मशाला है। गुरुद्वारे में भी ठहरने का स्थान है।

दर्शनीय स्थल—नेहरू गेट के बाहर विशाल आर्यसमाज मन्दिर है। गुरुद्वारा दर्शनीय है। भाखड़ा कैनाल का दफ्तर तथा रैस्ट हाउस सुन्दर बने हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गेहूं, चना, सरसों, तारमीरा, कपास, मक्का, मूंग, मोठ, बाजरा, धान, गवार और तिल आदि।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक की शाखायें हैं।

भिवानी—यह हिसार जिले का प्रमुख नगर है। यह एन० आर० की रिवाड़ी-फाजिल्का लाईन पर रिवाड़ी से ८३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलता है। यहाँ पर एक बड़ी मंडी है। यहाँ की गौशाला भी प्रसिद्ध है। आँखों का एक बहुत बड़ा एवं विशाल अस्पताल है जिसकी स्थापना सन् १९३३ में हुई थी। यहां दूर-२ से रोगी आँखों का इलाज कराने आते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के लिए नगर में अनेक धर्मशालायें हैं। स्टेशन के पास हरसुख राय बागला की धर्मशाला, वेदों की धर्मशाला तथा हलवाइयों की धर्मशाला है बाजार में लाला किरोड़ी मल की धर्मशाला, व चौधरियों की धर्मशाला है। एक धर्मशाला भूतों की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं जिनमें किशोरी सेवा सदन, किरोड़ी मल का मन्दिर, आर्य अनाथालय, आर्यसमाज मन्दिर प्रसिद्ध हैं। किशनलाल

जालान नेत्र चिकित्सालय तथा प्रहलाद राम कन्हैया लाल का अस्पताल भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चना, मूंग, गवार, गेहूं, तारमीरा, आदि।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक व सेन्ट्रल बैंक की शाखाओं द्वारा नगर का कारोबार होता है।

मंडीड बबाली—यह नगर हिसार जिले में है। एन० आर० की भंटिंडा-बीकानेर लाईन पर भंटिडा से ३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तांगे मिलते हैं। यहाँ पर कपास और दालों की प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर राजाराम की तथा मनसुख लाल रामबिहारी लाल की धर्मशालायें प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई सुन्दर मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—कपास, विनोला, चना, गेहूँ, सरसों, ज्वार, बाजरा, मूंग,

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

सिरसा—इसका जिला हिसार है। एन० आर० की रेवाड़ी-फाजिल्का लाईन पर रेवाड़ी से २२५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा टैक्सी व तांगे मिलते हैं। अनाज की बड़ी मण्डी है। गौशाला भी है।

विश्राम स्थल—नगर में अनेक धर्मशालायें हैं जिनमें निम्नलिखित प्रसिद्ध है:— मोती लाल कूथर मल की धर्मशाला, ला० डूंगा मल जी माटूवाला धर्मशाला, ला० तुलाराम फूंथरा की धर्मशाला, ला० गजा नन्द धर्मशाला, ला० हरनारायण नारायण दास की धर्मशाला, प्रेमसुख दास खजाँची एम० एल० ए० की धर्मशाला, जैन धर्मशाला तथा अरोड़ा धर्मशाला प्रसिद्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज भवन, गुरु गोविन्द सिंह गुरुद्वारा तथा शमशान-घाट पर शिव का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—चना, चावल, जौं, गेहूं, बाजरा, सरसों, तारमीरा, मूंग, मोठ, गवार, नरमा, कपास, बिनौला, मैदा, सूजी, आटा, आदि।

बैंक—नगर में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सेन्ट्रल बैंक, तथा पंजाब नेशनल बैंक की शाखायें हैं।

हांसी—यह हिसार जिले का प्रसिद्ध नगर है। एन० आर० की रेवाड़ी-फाजिल्का लाईन पर रेवाड़ी से १२० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलता है। यहाँ मण्डी और गौशाला है। यह एक ऐतिहासिक स्थान है।

विश्राम स्थल—नगर में अनेक धर्मशालायें हैं। वैश्य धर्मशाल पुराने बस स्टैंड के पास है। किला बाजार में जैन धर्मशाला तथा तेरापंथी समाज भवन है। पंचायती धर्मशाला, ठंडीराम की धर्मशाला, कैलाश चन्द जैन की धर्मशाला तथा उदमी राम की धर्मशाला भी प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—पृथ्वीराज चौहान का किला, विष्णु मन्दिर, काली देवी का मन्दिर, दुर्गा माता मन्दिर प्रसिद्ध मन्दिर हैं। दो जैन मन्दिर हैं। आर्यसमाज मन्दिर तथा बड़सी गेट पावर हाउस, तालाब अंटी भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—कपास, रुई, मेथी, तारमीरा, ज्वार, बाजरा, मक्का, गुड़, सरसों, बिनौला आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, तथा पंजाब नेशनल बैंक।

(चण्डीगढ़ से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी किलो मीटर में)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अमृतसर	२३८	अम्बाला	५१	आनन्दपुर साहिब	७७
करनाल	१२४	किर्तपुर	६७	कुराली	२६
खन्ना	८७	गोविन्दगढ़	७७	गुरदासपुर	३०८
जगाधरी	१३५	जालन्धर	१५८	दसुया	२२१
नागल	१०१	नीलोखोरी	११४	पठानकोट	३४६
पटियाला	६६	पानीपत	१५७	पिन्जौर	२१
पीपली	९०	फगवाड़ा	१३४	फिल्लौर	१११
बटाला	२७६	मॅरिन्दा	२७	मुक्रेन	२३७
रोपड़	४२	राजपुरा	४०	लुधियाना	६७
शाहाबाद	७०	सराहिन्द	६७	होशियारपुर	१९८
कालका	२७				

राजस्थान

छाती जिसकी मजबूत ढ़ाल,
हर बाजू तेज कृपाण है.
बैरी जिससे थर-थर कांपा,
ऐसा यह राजस्थान है.

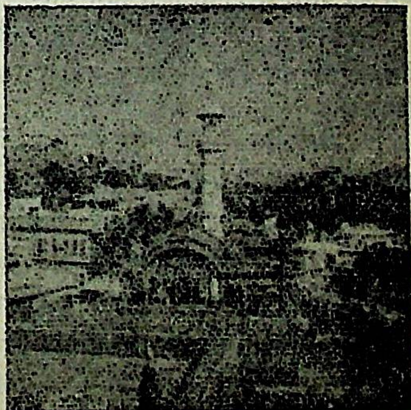
जिला अजमेर

(अजमेर, केकड़ी, नसीराबाद, पुष्करजी, मदनगंज-किशनगंज, ब्यावर, विजयनगर)

अजमेर—अजमेर नगर राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला है। यह नगर डब्लू० आर० की दिल्ली-अहमदाबाद लाईन पर दिल्ली से ४५१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ शहर में टैक्सी, सिटीबस, रिक्शा, ताँगे आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये टीकम जी की धर्मशाला (स्टेशन के पास), लोगगृह (स्टेशन के पास), उम्मेद अभय की धर्मशाला (स्टेशन के पास), रोला वालों की धर्मशाला (स्टेशन के पास), हिन्दू बंगाली और भगत कुंवर राय की धर्मशाला तथा पिताम्बर धर्मशाला। व मैरीना होटल (फोन न० ५८०) तथा सीराज होटल (फोन न० ४०८), ऐडवर्ड मैमोरियल आदि होटल व धर्मशालायें हैं।

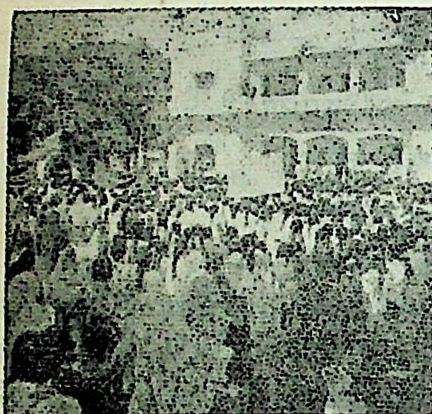
दर्शनीय स्थल—इस नगर में अनेकों दर्शनीय स्थल हैं जैसे :—आर्य समाज मन्दिर चार हैं : नगर आर्य समाज, आदर्श नगर आर्य समाज, केसर गंज आर्य समाज, तथा नया बाजार आर्य समाज, श्री विरजानंद वैदिक विद्यालय गुरुकुल, श्री दयानंद अनाथालय, दयानंद आश्रम, साधु आश्रम, वैदिक यंत्रालय, सोने का जैन मन्दिर, ख्वाजा साहब की दरगाह, मेयो कालिज पुष्कर तीर्थ, अन्ना सागर, फाई सागर, ढ़ाई दिन का झौंपड़ा, ख्वाजा साहब अकबर का किला, तारा-



(जैन मन्दिर, अजमेर)

गढ़, राजपूताना संग्रहालय, सुभाष बाग, दौलत बाग, लक्ष्मी पार्क, जैन मन्दिर, ऋषि उद्यान जिसमें स्वामी दयानन्द जी के प्रयोग के सामान हैं जैसे–चश्मा, घड़ी, किताब, खड़ाऊँ, कमण्डल, उस्तरा, कैंची, कलम तथा वस्त्र हैं। वह स्थान भी है जहाँ स्वामी जी का निर्वाण हुआ था। तथा गढ़ बिटली है।

भिनाय भवन—इस भवन में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का सन् १८८३ की दीपावली पर स्वर्गवास हुआ था। यह स्थान अजमेर-जयपुर मार्ग पर है।



(ऋषि दयानन्द स्मारक, अजमेर)

महर्षि दयानन्द कालेज—यह सुन्दर कालेज अजमेर व्यावर मार्ग पर स्थित है और अपनी अनेक विशेषताओं के कारण राजस्थान में प्रमुख स्थान रखता है।

गौशाला—श्री पुष्कर गऊ आदि पशुशाला तथा बीता गौशाला।

यहाँ पर जैन मन्दिर और दो चेतालय हैं। एक तीन मंजिल ऊँची नसियाँ बनी हुई है। इसकी पहली मंजिल में अशोक के समवशरण, दूसरी मंजिल में स्फटिक और मीणक से बनी प्रतिमायें हैं। इस जगह दीवार पर तीर्थ क्षेत्रों का चित्र (नक्शा) अंकित है। तथा तीसरी मंजिल में काठ के हाथी, घोड़े आदि रक्खे हुए हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मक्का, चना, गेहूं, बाजरा, मूंग, मोठ, गुवार, चने की दाल, मूंगफली तथा तिल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटेड बैंक, कॉमर्सियल बैंक, बैंक आफ बड़ौदा तथा राजस्थान बैंक आदि बैंक यहाँ पर स्थित हैं।

केकड़ी—केकड़ी नगर जिला अजमेर में डब्लू० आर० लाईन पर स्थित है। और नसीराबाद से ५८ कि० मी० दूर है।

विश्राम स्थल इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये नगरपालिका धर्मशाला तथा श्री भिन्नी लाल जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, श्री चार भुजा का पुराना मन्दिर, गौशाला तथा श्वेताम्बर जैन स्वादवाद महाविद्यालय देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, तिल का तेल, जीरा, धनिया, ऊन, रूई, खमड़ा, गल्ला आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक इस नगर में केवल राजस्थान बैंक हैं।

नसीराबाद नसीराबाद नगर अजमेर जिले में डब्लू० आर० की अजमेर खंडवा ब्राँच लाईन पर अजमेर नगर से २४ कि. मी. की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में आर्य समाज मन्दिर, मिलिट्री की छावनी तथा श्री नृसिंह गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—नसीराबाद में जीरे की प्रसिद्ध मंडी है और जीरे के अतिरिक्त यहाँ पर गेहूं, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, तेल और मिर्च आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—इस नगर में नसीराबाद अरबन को-आपरेटिव बैंक तथा बैंक आफ राजस्थान हैं।

पुष्करजी पुष्करजी अजमेर जिले में एक छोटा सा नगर है। यह अजमेर से ११ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगा और टैक्सी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये तीन स्थान हैं : कामठी के बीड़ी वालों की बारह घाट, बैरी वाल की बारह घाट तथा सीरियों का सीरिहमा वैकुण्ठ मन्दिर के पास आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—पुष्करजी में ब्रह्मा जी का मन्दिर नगर से दूर पहाड़ी पर सुन्दर बना हुआ है। महर्षि दयानन्द जी ने इसी मन्दिर में कुछ समय तक रहकर योगाभ्यास किया था। इसके अतिरिक्त इस नगर में निम्नलिखित स्थल देखने योग्य हैं : जैन मन्दिर, नृसिंह घाट, देवी मन्दिर, नृसिंह जी का मन्दिर तथा तालाब व पहाड़ी क्षेत्र आदि।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, ऊन व औषधियों इत्यादि का उत्पादन होता है।

बैंक—अजमेर के बैंकों से काम होता है।

मदनगंज-किशनगंज मदनगंज-किशनगंज अजमेर जिले में डब्लू० आर० की दिल्ली अहमदाबाद लाईन पर दिल्ली से ४२४ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। किशनगंज इसका रेलवे स्टेशन है। यहाँ यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, ताँगे और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये गोकुल चन्द की धर्मशाला सिनेमा रोड, छाजेड़ों की धर्मशाला स्टेशन रोड तथा जैन धर्मशाला सिनेमा के सामने।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज भवन, किशनगढ़ का किला, नाथ जी का मन्दिर किले के अन्दर, फूल महल दर्शनीय बाग है। तालाब के बीच में बना हुआ प्राचीन मोखम विलास दरबार का बाग, हनुमान जी का मन्दिर, श्री मुनि सुव्रतनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय, माहेश्वरी भवन तथा अभक्षेत्र।

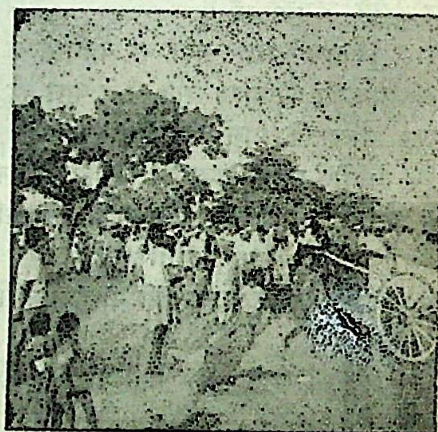
उत्पादित वस्तुएं यहाँ पर जीरे अनाज की प्रसिद्ध मण्डी है। और तिल जौं, ज्वार, तेल, मिर्च, बाजरा, मूंग, मोठ और चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा बैंक आफ राजस्थान आदि हैं।

ब्यावर—यह नगर अजमेर जिले में डब्लू० आर० की दिल्ली अहमदाबाद लाईन पर दिल्ली से ४९६ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहां यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—सेवाराम हंसराज धर्मशाला स्टेशन के पास, गौशाला की इमारत व धर्मशाला तथा साधना होटल।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर व सुन्दर व्यायाम शाला, गाँधी चौक दरवाजा, गाँधी स्मारक, अशोक की लाट, लक्ष्मी मार्केट, महादेव छतरी, श्री तिजारती चैम्बर शौफान गौशाला, सुभाष बाजार तथा तालाब देखने योग्य हैं। यहाँ के मुख्य बाजार का नाम श्रद्धानन्द बाजार है। महर्षि दयानन्द जी यहां दो बार आये थे। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने यहाँ ऊन की फैक्ट्री स्थापित की थी। यहाँ तीन कपड़े की मिले हैं।


(ब्यावर स्टेशन के बाहर)

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर ज्वार, बाजरा, आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ राजस्थान, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर है।

विजयनगर—विजयनगर पश्चिम रेलवे की अजमेर चित्तौड़गढ़ लाईन पर अजमेर से ६६ कि० मी० की दूरी पर अजमेर जिले में स्थित है। यहाँ यात्रियों को सवारी के लिये तांगे और रिक्शा मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये कोई स्थान नहीं है।

दर्शनीय स्थल—बीजा नगर गौशाला तथा बुद्धा पुष्कर गौशाला।

उत्पादित वस्तुयें—रूई, सूत, जीरा, मेथी, बिनौला, मूंगफली, तिल तथा गल्ला आदि।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान।

जिला अलवर

(अलवर, तिजारा, बेराठ, राजगढ़)

अलवर—अलवर राजस्थान का प्रमुख जिला है। यह डब्लू० आर० की दिल्ली-अहमदाबाद लाईन पर दिल्ली से १५८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ स्टेशन पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा टैक्सी और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—कन्हीराम महादेव प्रसाद व्यासी की धर्शशाला (स्टेशन पर), खण्डे वाल धर्मशाला (निकट बस स्टेण्ड), अग्रवाल धर्मशाला (हेयर सर्कस के निकट) सुगाना भाई की धर्मशाला (स्टेशन रोड)।

होटल–सरकिट हाऊस फोन न० ५०, राजस्थान स्टेट होटल फोन न० ४६६ वैष्णों होटल, अन्य और भी है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, सीटी पैलेस, सागर टांक, आर्य गैलेरी (सींटी पैलेस में बना हुआ है और शक्रवार को बन्द रहता है), विजय मन्दिर, महाराजा वक्तासिंह की छतरी, पूर्जन बिहार (कम्पनी गार्डन), सीलीसर (यह एक झील है) राजीरा (यहां पहले मुगल बादशाहों की मस्जिद व गुम्बद बने हुये हैं), चिड़िया घर (इसमें चीते ओर हिरण की बहुत सी किस्में हैं), पाण्डु पुल (चिड़िया घर के बाहर बना हुआ है), गेम गार्डन तथा नारायण जी (यहाँ पर कुछ ठंडे और गर्म पानी के फव्वारे देखने योग्य हैं)।

उत्पादित वस्तुएं—सरसों, लोटनी की प्रसिद्ध मण्डी है तथा यहाँ पर सरसों, तिल्ली, चना, अरहर, मक्का, खल, गवार, मूंग, उड़द, लोबिया, जीरा, तेल और मूंगफली आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर और जयपुर, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया तथा यून ईटेड कामर्शियल बैंक, सेविंग बैंक।

तिजारा--यह नगर अलवर जिले में सोना से रिवाड़ी वाली लाईन पर दिल्ली से ११० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिसे रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल–दिगम्बर जैन धर्मशाला देहरा व जैन धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—दिगम्बर जैन मन्दिर, चन्द्रप्रभु का मन्दिर देहरा, झरना व पहाड़ किला व नशियां जी है–यहां पर चन्द्र प्रभु भगवान की कृपा से ऊपरी भूत परेत का इलाज वहां पर होता है।

यहाँ पर जैन धर्मकाप्रमुख तीर्थ है। यहाँ पर चन्द्रप्रभु भगवान की मूर्ति निकली थी। चन्द्र प्रभु भगवान की कुण्डली है जहाँ मूर्ति निकली थी।

उत्पादित वस्तुयें–यहाँ पर गेहूं, चना, और बाजरा आदि का उत्पादन होता है

बैंक...स्टेट बैंक आफ इण्डिया।

बेराठ–यह राजस्थान प्रान्त में अलवर जिले की दिल्ली-जयपुर रोड पर स्थित है यहाँ रेल मार्ग न होने के कारण अलवर से बसों द्वारा जाना पड़ता हैं।

अलवर, से २० किलो मीटर की दूरी पर है। यहां पर शहर में आने जाने के लिये टैक्सी रिक्शा, ताँगे की सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर बाहर से आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये नगर में बहुत अच्छी धर्मशाला बनी हुई हैं जिसमें यात्रियों को आस-पास की सभी सुविधायें उपलब्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहा पर आर्य समाज मन्दिर व वेराठ का किला जिसका महाभारत में भी वर्णन है आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, चना, जौ, ज्वार आदि का अधिक उत्पादन होता है।

राजगढ़—यह अलवर जिले में डब्लू० आर० की दिल्ली-अहमदाबाद लाईन पर दिल्ली से १६४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को स्टेशन से सवारी के लिये ताँगे, टैक्सी और रिक्शा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के लिये बहुत से विश्राम स्थल हैं।

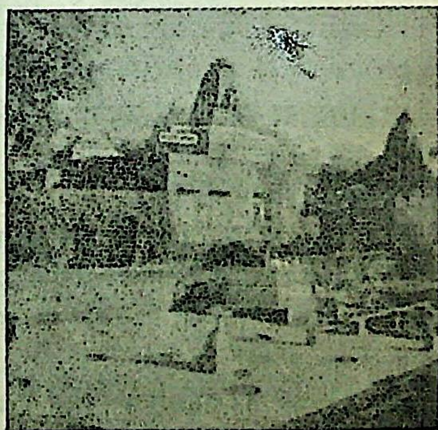
दर्शनीय स्थल—गौशाला, श्री जूबली गऊशाला।

उत्पादित वस्तुये—तिलहन, धनियां, जीरा का उत्पादन होता है और गल्ले की प्रसिद्ध मन्डी है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

जिला उदयपुर
(उदयपुर)

उदयपुर—यह राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला है। यह नगर पश्चिमी रेलवे की चित्तौड़ गढ़-उदयपुर लाईनपर चितौड़ गढ़ से ११५ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर स्टेशन है और स्टेशन से यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी सिटी बस तथा आटो रिक्शा आदि मिलते हैं।



(उम्मेद भवन उदयपुर)

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत से स्थान उपलब्ध हैं—फतेह मेमोरिया सूरजपोल, राधा माधव निवास सूरज पोल, मुसाफिर खाना, चम्पालाल की धर्मशाला, रसूलपुरा, धाम नदी, महन्त माधव दास की सूरजपोल।

होटल—अलका होटल फो० न० ४११, अजन्ता होटल फो० न० ३१४, अप्सरा होटल फो० न० २००, गार्डन होटल फोन न० ६२, अशोका होटल महा-गुजरात होटल फोन न० ३५६।

दर्शनीय स्थल—नग मन्दिर महल, फतेह सागर, पिचौला झील, जगदीश मन्दिर, जवाहर पार्क, गुलाव बाग, रौंक बाग, सहेलियों की चेतक स्मारक, किल राणा प्रताप, कांच का महल, सरस्वती भवन, राजमहल में सोने का सूरज, चेतक, चिड़िया घर, विद्या भवन, चेतक चबूतरा, आर्य समाज, जगनिवास, पार्श्वनाथ विद्यालय, त्रिपुलिया गेट, मेहता पार्क सुखडिया पार्क, डाकुओं की गुफा, जगन्ननाथ मन्दिर, जगनिवास महल, उदयपुर विश्वविद्यालय (स्थापना १९६२ तथा १२ कालिज), दिगम्बर जैन मन्दिर, संभव नाथ जी का मन्दिर, आठ जैन मन्दिर तथा दा चैत्यालय हैं। अहार २ कि० मी० दूर, नाथद्वारा ५२ कि० मी० दूर, नागदा २४ कि० मी० दूर, सास बहू मन्दिर, जय समद झील, ५२ कि० मी०, कँकरौली ७१ कि० मी०, हल्दी घाटी ४४ कि० मी० (यहां पर घोड़े के चिन्ह बावड़ी प्राचीन काल के हैं) चित्तौड़गढ़ ११७ कि० मी० दूरी पर स्थित है। गोवर्धन संस्कृत पाठशाला तथा माधव किशोर संस्कृत पाठशाला। श्री कृष्ण गौशाला। ये उपरोक्त स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर जौ, गेहूं, मक्का, चना, लाल मिर्च, चावल, उड़द, मूंग, तिल चौला, सरसों, हल्दी, राजगिरा तथा गोंद आदि वस्तुओं का उत्पादन विशेष रूप से होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, बैंक आफ राजस्थान, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, बड़ौदा बैंक, उदयपुर सैन्ट्रल कोआपरेटिव बैंक।

विशेष—उदयपुर प्राकृतिक सौन्दर्य, रमणीय स्थान तथा शुद्ध वायु के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के राजमहल में रहकर ही महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी। यह नगर राजस्थान प्रान्त में अत्यधिक सुन्दर एवं रमणीय स्थान है और यहाँ की झील बहुत ही सुन्दर और देखने योग्य हैं। उदय पुर में हवाई अड्डा भी है।

जिला कोटा

(कोटा, इकलोरा, छिपाबड़ोत, बारा, अटरु,)

कोटा—यह राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और यह पश्चिमी रेलवे की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ४६७ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है जहां पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, ताँगे और टैक्सी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल - हिन्दू धर्मशाला तथा दिगम्बर जैन धर्मशाला। कमला होटल, मद्रास होटल, ग्रांड होटल, जगदीश होटल, एयर लाईन्स होटल, अग्रवाल होटल, महेश्वर होटल तथा नवरंग होटल (स्टेशन के पास) हैं।

दर्शनीय स्थल—दो आर्य समाज मन्दिर, शाहबल और गांगरौन का किला, सीता वारी, कैसुवा जल मन्दिर, अमर निवास, नवा महल, राणा प्रताप सागर डैम (बांध), जवाहर सागर डैम, गोपीनाथ महादेव, अधर शिला, एयरोड्रम, जगमन्दिर, म्यूजियम, गुरुकुल कन्धा यहां पर प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, चना, धनिया, अलसी, तिल, मसूर, मूंग फली, उड़द, मक्का, जीरा, मेथी, तथा घी का उत्पादन होता है।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक, पँजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ राजस्थान, बैंक आँफ बड़ौदा, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

इकलेरा—यह राजस्थान प्रान्त में कोटा जिला के छिपावड़ौत पारत रोड पर छिपावडौत से २३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां शहर में आने जाने के लिये रिक्सा, ताँगे की सवारियाँ उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व सन्तरे के बाग आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ तिल, बाजरा, ज्वार, गवार व संतरे के बाग आदि का अधिक उत्पादन होता है।

छपाबड़ौत—यह राजस्थान प्रान्त में कोटा जिले की बीना-कोटा रोड पर अटरु से २३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये आर्य समाज मन्दिर में ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर, झरने, पहाड़, व संतरे के बाग आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर ज्वार, तिल, संतरे, आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन पाया जाता है। यह प्रमुख मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर को-आपरेटिव बैंक कोटा आदि प्रमुख बैंक हैं।

अटरु—यह राजस्थान प्रान्त में कोटा जिले के डब्लू० आर० की बीना-कोटा लाईन पर बीना से २०८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने जाने के लिये ताँगे, रिक्शा की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास धर्मशाला उपलब्ध है

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर नदी का किनारा, व संतरे के बाग आदि स्थल दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा व संतरे का अधिक मात्रा में उत्पन्न होता हैं।

बैंक—यहाँ को-आपरेटिव बैंक कोटा प्रमुख है।

बारा—यह जिला कोटा में एक नगर है। यह डब्लू० आर० की बीना-कोटा लाईन पर बीना से २३७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। बारा रलवे स्टेशन पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शे और ताँगें मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के बहुत से स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—बारा एक प्रसिद्ध मण्डी है। इस नगर में आर्य समाज मन्दिर जैन मन्दिर पास के गांव में भी जैन मन्दिर हैं। ५० कि० मी० दूर सीता वाड़ी गाँव में सूर्य कुण्ड देखने योग्य है। तथा ५० कि० मी० की दूरी पर रामगढ़ गाँव में माता जी का मन्दिर भी देखने योग्य है।

बैंक—इस नगर में पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, कोटा सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा नागरिक सहकारी बैंक हैं।

जिला बूंदी

(बूंदी)

बुंदी—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है। यह प्रमुख नगर डब्लू० आर० की दिल्ली बम्बई लाईन पर कोटा जंकशन से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह रेलवे स्टेशन है जहां पर यात्रियों को सवारी के लिये टैक्सी और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये मोसाराम महावीर धर्मशाला तथा रानी की धर्मशाला है। आजाद पार्क, नवल सागर पार्क तथासुख महल पार्क भी मनोरंजन के स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—रानी की ब्योरी २ कि० मी०, चनरसी थम्बा की छतरी १५ कि० मी०, फूल सागर, १० कि० मी०, सीटी पैलेस ४ कि० मी० तथा आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यह नगर में गेहूं, जौ, चना, मक्का, अलसी, ज्वार, तिल्ली जीरा, सरसों, गन्ना, चावल, धनीया, कपास, तथा मूंगफली का उत्पादन होता है।

बैंक—बूंदी में बैंक आफ राजस्थान तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा को आपरेटिव बैंक।

जिला चितौड़गढ़

(चितौड़ गढ़, कपासन, प्रताप गढ़)

चितौड़ गढ़—यह राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला तथा ऐतिहासिक नगर है। यह नगर डब्लू० आर० की अजमेर खन्ड वा लाईन पर अजमेर से १८६ कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे जंकशन है जहां से यात्रियों को सवारी के लिये तांगे, रिक्शा और सिटी बस मिलती हैं।

विश्राम स्थल—बिरला धर्मशाला, जैन धर्मशाला, मानमल धर्मशाला, स्टेशन के पास पूल दरवाजा, मीठाराम जी महन्त की धर्मशाला, टूरिस्ट धर्मशाला तथा रामचन्द्र की धर्मशाला हैं। ग्रीन होटल तथा चन्द्र निवास होटल।

दर्शनीय स्थल—चितौड़गढ़ का क़िला बड़ा ही प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त यहां बहुत से स्थान देखने योग्य हैं। जैसे—आर्य समाज मन्दिर, गुरुकुल आर्य समाज कीर्ति स्तम्भ, मीरा का मन्दिर, पद्मनी का महल, राणा कुम्भा का महल, चेतक

स्मारक, नेहरु उद्यान, जैन मन्दिर, उदयपुर द्वार, निजय स्तम्भ, जैन मन्दिर (२७ है) फतेहपुर स्कूल, जल महल, छत्तरपुर दरबार, काली माता का मन्दिर, गोमुख, नील कण्ठ महादेव का मन्दिर, पुराना किला जिसमें छोटे बड़े ३५ तालाब है, राजकचहरी सूर्य फाटक, तथा जल स्तम्भ।

इस नगर में महर्षि दयानन्द जी ने गुरुकुल खोलने की इच्छा प्रकट की थी। जिसको स्वामी व्रतानन्द जी ने सरकार रूप दिया। यह गुरुकुल आर्य प्रणाली पर बहुत ही अच्छी प्रकार से चल रहा है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मेथी, तिल्ली, पोस्त दाना व चूरा, मक्का गवार, सिंघाड़ा, तिल, अम्बाड़ी(जूट,)गेहूं, कपास, काकड़ा मूंगफली तथा चना आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, आदि बैंक हैं।

कपासन—यह जिला चित्तौड़गढ़ का एक नगर है। यह नगर डब्लु० आर० की चित्तौड़गढ़ उदयपुर लाईन पर चितौड़ गढ से ३६ कि० मी० तथा उदयपुर से ७४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है तथा यात्रियों को सवारी के लिये तांगें और रिक्शा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—कपासन नगर में यात्रियों के ठरहने के लिये बस स्टैन्ड पर पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—मन्दिर, सरोवर, नदी के किनारे पर बना हुआ शिवजी का मन्दिर तथा मातृ कुडिया नामक स्थान देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मण्डी है और यहां पर रुई, कपास, बिनाला तेल, गेहूँ, मक्का, जौ, ज्वार, तिल, चना, जूट, तथा अम्बाड़ी (सन) का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ ब्रीकानेर एण्ड जयपुर।

प्रतापगढ़—यह जिला चित्तौड़गढ़ में डब्लू० आर० अजमेर खण्डवा लाईन पर स्थित है। यह मन्दसौर रेलवे स्टेशन आउट एजेन्सी है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये सेठ हुकम चन्द बसन्त लाला जी की धर्मशाला तथा बस स्टैण्ड के पास भाव गढ़ वालों की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—दिगेश्वर महादेव तालाब, गुप्तनाथ महादेव, नया जैनमन्दिर (जो कांच की कारीगरी से सुशोभित है), सीता माता का दर्शनीय स्थान (यहां से ३५ मील दूर सगन बन में हैं), शिव की वेरी, पशुपति नाथ जी की आलीशान मूर्ति यहां से ३२ कि० मी० दूर मन्दसौर में है, ३ कि० मी० दूर अम्बा जी का मन्दिर, ३ कि०

मी० दूर शान्ति नाथ जी का जैन मन्दिर तथा गोतमेश्वर जी का तीर्थ स्थान है जो स्नान व दर्शन के लिये महत्वपूर्ण है।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मण्डी है और यहां पर अजवान, मूंगफली, अलसी, पोस्तदाना, मेथी, उड़द, मक्का, ज्वार, गेहूं, चावल, गोंद, सफेद मूसली, चना लहसन तथा मिर्च आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

जिला चुरु

(चुरु, रतनगढ़, श्री डूंगरगढ़, सरदार शहर, सुजानगढ़, हड़ियाल)

चुरु—यह राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से २८२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन है जहाँ से सवारी के लिये रिक्शा, तांगा और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, श्री गोपाल गौशाला तथा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत पाठशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मंडी है और मूंग, मोठ और गुवार आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर व पारिक कॉमिश्यल बैंक।

रतनगढ़—यह जिला चुरु का एक नगर है। यह नगर एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से ३२५ कि० मी० दूर स्थित है। यहां पर रेलवे जंक्शन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—रतनगढ़ स्टेशन पर यात्रियों के ठहरने के लिये चौधरियों की धर्मशाला, बुढ़िया की धर्मशाला व पोद्दार विश्रामालय है तथा इसके अतिरिक्त बाजार में भी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान पार्क, रामचन्द्र पार्क, रामजन्द्र जी का मन्दिर, बालाजी का मन्दिर, हनुमान पुस्तकालय व सरोवर तथा श्री रतनगढ़ पिंजरापोल गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक मंडी है और यहां पर गुवार, मूंग, मोठ तथा बाजरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एन्ड जयपुर व पारिक कॉमर्शियल बैंक।

श्री डूंगरगढ़—यह नगर चुरु जिले में एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाइन पर दिल्ली से ३८९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—बोहती धर्मशाला, चांडक धर्मशाला, स्टेशन धर्मशाला तथा नाहरा धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में भैरों जी का मन्दिर, माता जी का मन्दिर, हनुमान मन्दिर, रामदेव जी का मन्दिर, हनुमान धोरा, नेहरू पार्क, बी० आर० एन० महल, सुशीला महल तथा श्री गोपाल गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह मण्डी है और यहाँ मोठ, गुवार, बाजरा तथा घी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर व बैंक ऑफ राजस्थान।

सरदार शहर—यह नगर चुरु जिले में एन० आर० की रतनगढ़-सरदार-शहर लाईन पर रतनगढ़ से ४८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां के रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—श्री हंसरिया धर्मशाला, चौधरियों की धर्मशाला, नाहरा धर्मशाला, झालरियों की धर्मशाला, पेड़ी वालों की धर्मशाला तथा छोट्टडियों की धर्मशाला आदि।

दर्शनीय स्थल—शाँक्षिएक आकृतियां, श्री गंगाधर जी लाटा धार्मिक सार्वजनिक पुस्तकालय, सरदार शहर गौशाला, श्री रघुनाथ जी का मन्दिर, श्री राम मन्दिर, श्री हनुमान जी का मन्दिर, श्री शिव मन्दिर, गाँधी विद्या मन्दिर (अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालन का एक मात्र स्थान) आदि।

उत्पादित वस्तुयें—यह मण्डी है और यहाँ मोठ, गुवार, बाजरा तथा देशी घी आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर और पारिक कॉमर्शियल बैंक।

सुजानगढ़—यह नगर जिला चुरु में एन० आर० की रतनगढ़-देगाना लाईन पर रतनगढ़ से ४६ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है जहाँ से सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—गड़ोदिया की धर्मशाला स्टेशन पर, बगड़िया की धर्मशाला स्टेशन पर, मराड़िया की धर्मशाला बाजार में, खैतान की धर्मशाला बाजार में, आर्य समाज भवन स्टेशन रोड, पाडया की धर्मशाला, रायगढ़िया की धर्मशाला, जड़ियों की धर्मशाला, जाजादियों की धर्मशाला तथा चौपड़ा की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—लक्ष्मीनाथ जी का मन्दिर, सिन्धी मन्दिर, जैन मन्दिर, खैतान जायदाय की टंकी (जो राजस्थान में दूसरे नम्बर पर है), गाँधी आश्रम, स्टेशन तथा श्री गोपाल धर्मशाला यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गुवार, मोठ, मूंग तथा उड़द आदि वस्तुओं की उपज होती है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर, पारिक कॉमर्शियल बैंक आदि।

हड़ियाल—जिला चुरु में यह नगर एन० आर० की दिल्ली-बीकानेर लाईन पर दिल्ली से २४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां के रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—सेठ भूरामल बनारसीदास की धर्मशाला, मलसीसर वालों की धर्मशाला तथा श्री जौहरीमल जी की धर्मशाला स्टेशन के सामने है।

दर्शनीय स्थल—एक कि० मी० दूर रतनापुरा ग्राम में गोरेवयम की झाँकी, ५ कि० मी० दूर फाजला ग्राम में बजरल वली की तीव्र छाया में इमारत झुकी है। यह रमणीक व पवित्र स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और गेहूं तथा चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जिला जोधपुर

जोधपुर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला है और एन. आर. की बीकानेर-मारवाड़ लाईन पर बीकानेर से २७६ कि० मी० दूर स्थित है। यहां रेलवे जंक्शन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी और सिटी-बस मिलती हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के सामने श्री रघुनाथदास जी परिहार की धर्मशाला (जो बहुत बड़ी और देखने योग्य है), जसवन्त सराय स्टेशन रोड, जैन धर्मशाला, श्री जसवन्त जाड़ची विलास (स्टेशन से एक फर्लांग दूर)। ग्रांड होटल, शान्ति होटल, अशोक लॉज, अग्रवाल लॉज, आदर्श निवास, प्रीतम लॉज, अरुणा होटल तथा महावीर लॉज।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज-सरदार पुरा (रोड न० २), गुलाब सागर, शिव-विष्णु मन्दिर, सूर सागर, रातानाड़ा (दयानन्द मार्ग), मन्डोर उद्यान, उम्मेद भवन, बाल समुद्र तालाब, जोधपुर किला, दौलतखाना, महाराजा अजीतसिंह के बैठने का स्थान, दीपक महल, मोती महल, उम्मेद सिंह शीश महल, फूल महल, थम्बा महल, हाईकोर्ट, ओसियन (६७ कि० मी० दूर), सरदार समुद्र झील (६१ कि० मी० दूर), सोजाती बाजार, सरदार बाजार, जालोरी गेट, चन्द्र महल, महा मन्दिर, जोधपुर विश्व विद्यालय (स्थापना १ ६२) तथा एक कालिज, मारवाड़ गऊ पालक, संधर गौशाला, सिवानची गेट गऊशाला, सनातन गौशाला तथा बाल नेहरू कालिज।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और यहाँ पर मूंग, मोठ, गुवार, बाजरा, तिलहन, मुलतानी मिट्टी तथा देशी घी आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर।

विशेष—जोधपुर में ही महर्षि दयानन्द को वहाँ के राजा के पास आने वाली नन्हीजान नाम की वैश्या ने उनके रसोइये जगन्नाथ को लालच देकर दूध में जहर दिलवाया था जिसके परिणामस्वरूप एक मास पश्चात अजमेर में महर्षि दयानन्द जी सदैव के लिये इस संसार से चल बसे।

जिला जैसलमेर

जैसलमेर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और एन० आर० की पोकरन-जैसलमेर लाईन पर पोकरन से ११३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे जंकशन है और सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—जैन धर्मशाला तथा भाटिया बगीची।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जैन मन्दिर देखने योग्य है जो कि बहुत प्राचीन है, जैन मन्दिर १२ कि० मी० दूर, पटवा हवेली, हिज हाईनैस निवास, जैसलमेर फोर्ट, गड़सीसर, अमर सागर तथा बाग।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मंडी है और यहाँ पर घी तथा ऊनी माल का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ बीकानेर।

जिला जालौर

जालौर—यह नगर राजस्थान प्रान्त में एक जिला है और यह एन० आर० की भिलड़ी रानीवाड़ा समदारी लाईन पर भिलड़ी से १६६ कि० मी० दूर स्थित है। रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—जैन धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, जलन्धर नाथ जी का स्थान, जैन मन्दिर घनश्याम जी का मन्दिर, तालाब पर शिवजी व बालाजी का मन्दिर, झरने, महादेव का मन्दिर पहाड़ पर है।

उत्पादित वस्तुयें— यहां पर मण्डी है और मूंग, मोठ, गुवार, जौ, तिल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर।

जिला जयपुर

(जयपुर, चमू, फुलैरा, रैनवाल, सांभर झील)

जयपुर—जयपुर नगर राजस्थान प्रान्त की राजधानी है तथा एक ऐतिहासिक व प्रमुख जिला है। यह रेलवे जंकशन है और डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर सवाई माधोपुर से १३० कि० मी० व दिल्ली से २८९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिये यहां पर रिक्शा, तांगे, टैक्सी और सिटी बस मिलती हैं।

विश्राम स्थल—पंचायती धर्मशाला स्टेशन के पास, भाई साहब की चाँद पोल बख्शी जी की धर्मशाला शहर में रायगंज बाजार में, रामचन्द्र जौहरी की रामभवन सागानेर दरवाजे के बाहर, दामोदर भवन, मोदी जी का ज्वाला अग्रवाल भवन, सूरज भवन, गीता भवन, जैन धर्मशाला, सूरजमल की धर्मशाला रामगंज बाजार में, सेठ बंजीलाल ढोलियों की धर्मशाला जौहरी बाजार में, प्रताप जी की धर्मशाला रामगंज बाजार में तथा एक धर्मशाला मेंहदी वाले चौक में, मल जी छोगालाल ट्रस्ट मिर्जा स्माईल रोड, सट्टे वालों की धर्मशाला बाबू बाजार में, इमीटेशन वालों की सागानेरी गेट, वैराडियों की धर्मशाला जड़ियों का रास्ता। टूरिस्ट होटल मिर्जा स्माईल रोड फोन न० ७७२६३, पोलो विक्ट्री होटल स्टेशन रोड फोन न० ७७२५७ सेवोय होटल मिर्जा स्माईल रोड फोन न० ७३९१६ डीलक्स होटल फोन न० ७७२४६ ।

दर्शनीय स्थल—इस नगर के बाजार व मकान बड़े विचित्र और देखने योग्य हैं। यहाँ के बाजार एक समान और एक ही रंग के बने हुये है। इसके अतिरिक्त यहां पर अन्य दर्शनीय स्थल हैं:– आर्य समाज मन्दिर, किशन पोल बाजार, आदर्श नगर राजापार्क, मोती कटरा, दीवाना जी के मन्दिर, जैन संस्कृत कालेज भवन, अन्य सैकड़ों जैन मन्दिर, राजा का महल, राजपूताना म्यूजियम्स, गल्ता जी झील, पोथी खाना, चन्द्रा महल, मुबारक महल, हवा महल, जंतर मंतर, रामनिवास बाग, विश्वविद्यालय, रामसिंह अस्पताल, गांधी पार्क, जल महल, गुरुकुल, दादु महाविद्यालय, राजस्थान विश्व विद्यालय स्थापना १९४७ तथा ६६ कालिज, हवाईअड्डा यहां पर सूत की मिले भीं हैं। नूहरगढ़ ६½ कि० मी० दूर, आमेर महल किला ११ कि० मी०, गेटोर ८ कि० मी०, गल्ता ८ कि० मी०, रामगढ़ झील ३० कि० मी०, सिगानेर १६ कि० मी०, सिसोदिया रानी का महल ८ कि० मी० की दूरी पर है। ज्योतिषि मंत्रालय, आमेर के महल, पुरातत्त्व संग्रहालय, आमेर का मन्दिर बाहर की ओर, कीर्ति स्तम्भ की नशियां, छोटा तथा बड़ा सागर, गल्ता जयपुर, दिगम्बर जैन मन्दिर वधीचन्द जी दीवानका, छोटा मन्दिर अमर चन्द जी दीवान का, दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियों का (इसमें भी अच्छा शास्त्र भंडार है), दिगम्बर जैन मन्दिर संधी जी का, दिगम्बर जैन मन्दिर चौबीस महाराज का, दिगम्बर जैन मन्दिर पटौदी का (इसमें अच्छा हस्तीलिखित ग्रन्थों का संग्रह है), दिगम्बर जैन मन्दिर महावीर जी का (कालाडेहरा)। संस्कृत पाठशाला गणनाथ विद्यापीठ आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और किराना, जीरा, लाल मिर्च, ज्वार बाजरा, गवार, चना तथा दाल आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इन्डिया, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, यूनियन बैंक, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, बैंक आफ राजस्थान, बैंक आफ इण्डिया, बैंक आफ बड़ौदा तथा इलाहाबाद बैंक आदि बैंक हैं।

चोमूं—यह नगर जिला जयपुर में डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के लिये कई धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—चोमूं नगर स्व० देवी सिंह जी ठाकुर द्वारा बनाया गया था। आजकल इसे साँई लोग बहुत मानते हैं। इस नगर में सोने व जवाहरातों से जड़े कई पलंग हैं। कुर्सियाँ, बहुत सुन्दर मोती महल व कई बाग देखने योग्य हैं। चोमूं नगर का किला तथा नहर भी देखने योग्य है।

बैंक–यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, जयपुर सैन्ट्रल को-आपरेरिव बैंक, आदिप्रमुख बैंक है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां एक मण्डी है और मोठ, मूंग, बाजरा, जौं, गेहूँ, आदि का उत्पादन होता है।

फुलैरा—यह नगर जयपुर जिले में एन० आर० की डेगाना फुलैरा लाईन पर डेगाना से १०५ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे जंकशन है और यात्रियों को सवारियों के लिये रिक्शा, तथा ताँगे मिलते है।

विश्राम स्थल—यहाँ सिधांनियां धर्मशाला-गांधी चौक, कूकू बाबा की धर्मशाला स्टेशन के पास, राम द्वारा धर्मशाला स्टेशन के पास तथा आर्य समाज अतिथि ग्रह।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, सीताराम का मन्दिर, जैन मन्दिर, दादू पंथियों का मन्दिर, तीन शिव मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और जौं, गेहूं तथा चना आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक हैं।

रैनवाल–यह नगर जिला जयपुर में पश्चिमी रेलवे की रीगंस शहर में फुलैरा लाईन पर रीगंस से ६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है। यहां पर आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां सूरज भवन धर्मशाला, जैन भवन धर्मशाला, खुटेटा धर्मशाला तथा शारदा की धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर सती माता का मन्दिर, जैन मन्दिर, वैष्णव मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और गेहूं, चना, तथा जौ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक, आफ इण्डिया, पंजाब नेशनल बैंक तथा यूनियन बैंक है।

सांभर झील—यह नगर जयपुर जिले में एन० आर० की डेगाना-फुलैरा लाईन पर फुलैरा से ८ कि० मी० की दूरी पर तथा डेगाना से ९७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये टैक्सी, ताँगे और रिक्शा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां स्टेशन पर नमक वालों की धर्मशाला तथा हरी भवन धर्मशाला आदि है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर है और यहाँ पर एशिया का सबसे बड़ा कारखाना है। देवयानी नाम का यहाँ पर पौराणिक तीर्थ स्थान है जिसके बीच में बहुत बड़ा तालाब है इसके चारों ओर देवी देवताओं के मन्दिर बने हुए है। यह दृश्य बड़ा ही मनोरम है। साँभर से १६ कि० मी० दूर एक पहाड़ी पर श्री शाकुम्भरी देवी का मन्दिर है। ऐसा बताते है कि इन्हीं की कृपा और आशीर्वाद से साँभर में नमक की झील बनी हुई है जो ४० कि० मी० में फैली हुई है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और नमक, सज्जी, चना, मूंग तथा ज्वार आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बेंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बेंक है।

जिला झालावाड़

(झालावाड़ तथा गंगधर)

झालावाड़—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है और पश्चिमी रेलवे की बम्बई-दिल्ली लाईन पर बम्बई से ८३५ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन है और यात्रियों की सवारी के लिये रिक्शा टैक्सी और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—राधेश्याम भगवान के विशाल मन्दिर में ठहरने का उचित प्रबन्ध है तथा सेठ साहब की अग्रवाल ट्रस्ट की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—राधेश्याम भगवान का विशाल मन्दिर, शिवजी का मन्दिर ३ कि० मी०, लक्ष्मी नारायण मन्दिर तथा आर्य समाज मन्दिर।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, बाजरा और मक्का आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान है।

गंगधर—यह नगर जिला झालावाड़ में डब्लू० आर० की दिल्ली बम्बई लाईन पर मंडी चौमहला रेलवे स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने के लिये शहर में धर्मशालायें व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—जैन मन्दिर तथा विक्रमादित्य के समय की श्री २३वें तीर्थ कर नागेश्वर पार्श्वनाथ जी की १४ फिट ऊँची श्याम वर्ण की मूर्ति आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अनाज की मण्डी है और गेहूं व चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान है।

जिला झुंझनू

(झुंझनू, खेतड़ी, नवलगढ़, पिलानी)

झुंझनू—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है और डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर सवाई माधोपुर से ३०३ कि० मी० दूर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा, टैक्सी और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन पर धर्मशाला और गांधी चौक में धर्मशाला हैं। इनके अतिरिक्त दो होटल भी हैं और रानी सती के मन्दिर में भी ठहरने की अच्छी व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, रानी सती का मन्दिर, बादलगढ़, खेतड़ी महल, श्री गोपाल गौशाला तथा पिलानी में अजायबघर और विद्यापीठ प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ मण्डी है और मूंग, मोठ, ज्वार तथा बाजरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

खेतड़ी—यह नगर जिला झुंझनू में एक छोटा सा कस्बा है और यहां सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—राजकीय संस्कृत पाठशाला तथा श्री रघुनाथ गौशाला।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर गेहूं व चना आदि का अधिक मात्रा में उत्पादन होता है।

नवलगढ़—यह नगर जिला झुंझनू में डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर सवाई माधोपुर से २६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—मीठूका की धर्मशाला, भक्तों की धर्मशाला तथा मानसिंह की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—श्री रामदेव जी का मन्दिर, टैगोर स्मृति भवन, श्री राम मन्दिर, नाहर पार्क तथा श्री पिञ्जापोल नवलगढ़ गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ मण्डी है और गेहूं व चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर आदि बैंक हैं।

पिलानी—यह नगर जिला झुंझनू में स्थित है और यहाँ पर यात्रियों को सवारी के लिये टैक्सी, रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में हाई स्कूल के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, बिरला इंस्टीट्यूट आफ टैक्नॉलोजी एण्ड साइन्स, सैन्ट्रल म्यूजियम, सरस्वती मन्दिर, CEER, हिरनों का राज, पंचवटी तथा केन्द्रीय इलैक्ट्रोनिक्स इन्जीनियरिंग अनुसंधान संस्था यहाँ पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूँ व चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यूनाईटेड कॉमर्शियल बैंक है।

ज़िला टोंक
(टोंक तथा निवाई)

टोंक—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक मुख्य जिला है। राजपूताना रियासत के समय की यह राजधानी है। यह डब्लु० आर० की सवाई माधोपुर-लाहोरु रोड पर निवाई रेलवे स्टेशन से २६ कि० मी० दूर स्थित है। यह रेलवे की आउट ऐजन्सी है और यहां यात्रियों को सवारी के लिये बसें मिलतो हैं।

विश्राम स्थल—टिक्की वाल की धर्मशाला बस स्टैंड के पास, श्री गोपाल मन्दिर की धर्मशाला, बच्छराज जी की धर्मशाला तथा किले के मैदान में, अग्रवाल धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, किदवई पार्क, श्री यज्ञ स्थल, नाईयों की नारायणी माता का मन्दिर, शिव मन्दिर, द्वारकाधीश का मन्दिर, बद्री नारायण मन्दिर, जगदीश मन्दिर, जैन नसियाँ यहां भूगर्भ से प्राप्त २६ मनोज्ञ प्रतिमायें विराजमान हैं, श्री महादेवालय, अन्नपूर्णा वाला जी का मन्दिर, निरंकारी भवन, मथुराधीश का मन्दिर, पाँच जैन मन्दिर, चैत्यालय, गांधी पार्क, नेहरू पार्क, पक्का बांध, ईदगाह की कोठी, बड़ी जामा मस्जिद, घण्टाघर, सुभाषचन्द्र बोस व सरदार पटेल की प्रतिमायें यहां पर देखने योग्य हैं।

इनके अतिरिक्त बनस्थली ग्राम में विश्व विख्यात विश्वविद्यालय स्तर का महिलाओं का 'बनस्थली विद्यापीठ' है तथा अन्य अनेकों मन्दिर और दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अनाज, सौंफ, धनियाँ, जीरा, अलसी, तिल, उड़द व मूंग आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक हैं।

निवाई—यह नगर जिला टोंक में डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर सवाई माधोपुर से ६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—अग्रवाल धर्मशाला तथा जैन धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—श्री गुरु गोरखनाथ जी की जालन्धर जी का मन्दिर व गुफायें, ठंडे व गर्म कुण्ड, जैन मान-स्तम्भ संगमरमर से बना हुआ ४१ फीट ऊंचा, दामोदर जी का सुन्दर व मनोहर कुण्ड, शिवालय तथा पाँच जैन मन्दिर यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और जीरा, अनाज, मूंगफली, अलसी, रूई और सौंफ आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ वीकानेर एण्ड जयपुर है।

जिला "डूंगरपुर"

(डूंगरपुर तथा सागवाड़ा)

डूंगरपुर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है और डब्लू० आर० की चित्तड़ौगढ़-उदयपुर लाईन पर गिरपुर रेलवे स्टेशन के निकट स्थित है। यह रेलवे की आउट एजेन्सी है। यहाँ के लिये यात्रियों को सवारी के लिये उदयपुर से बस मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर पालिका धर्मशाला, रामवेला की धर्मशाला, होटल तथा भीलड़ा ग्राम में ठहरने के लिये धर्मशाला है। जो यहां से ४८ कि० मी० की दूरी पर है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, तालाब, तालाब के किनारे श्री नाथ जी का एक विशाल मन्दिर, पहाड़ी पर पुराने महल, पहाड़ी पर धन्ना माता तथा काली माता का मन्दिर, यहाँ से लगभग २७ कि० मी० दूर देव सोमनाथ का मन्दिर प्राचीन एवम् कलापूर्ण है, भुवनेश्वर का मन्दिर, ११ कि० मी० दूर, नाग फरांजी का मन्दिर जहाँ प्राकृतिक जल स्रोत हैं, ३४ कि० मी० की दूरी पर वोरेश्वर जी का मन्दिर तथा वोरेश्वर जी का दो नदियों पर तीर्थ स्थान है। भीलड़ा ग्राम में ४५ कि० मी० दूर रघुनाथ जी का मन्दिर देखने योग्य हैं। यहां जैन मन्दिर भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी हैं और तिलहन, प्याज, अदरक, मूंगफली, गुड़, मक्का, चावल, धान तथा चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक, डूंगरपुर सैन्ट्रल को-आपरेटिव तथा स्टेट बैंक आफ वींका-नेर एण्ड जयपुर हैं।

सागवाड़ा—यह जिला डूंगरपुर में एक छोटा सा नगर है और डब्लु० आर की हिम्मत नगर-उदयपुर रोड पर उदयपुर से १४७ कि० मी० और डूंगरपुर से ४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के लिये कोई रेल नहीं जाती है। सवारी के लिये बस चलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिवजी का मन्दिर तथा और कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और गेहूं, मक्का, तिल, सरसों, मेथी, राजगिरा व मूंगफली आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर कोई बैंक नहीं है। डूंगरपूर में बैंक हैं।

जिला धौलपुर

(धौलपुर)

धौलपुर—यह राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से २४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह रेलवे जंकशन है और यहां सवारी के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल--प्यारेलाल रामचरन की धर्मशाला लाल बाजार, सरदार की धर्मशाला तथा चौधरी रामबाबू की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, मचकुण्ड तीर्थ स्थान, चम्बल ब्रिज, रामचन्द्र जी का मन्दिर तथा वन बिहार यहाँ पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहाँ मण्डी है और चावल, गन्ना, मूंग, बाजरा, सरसों, अरहर, ज्वार, उड़द, मोमकत्था, तिल, तथा जौ, गेहूँ, चना, मटर आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, कार्मशियल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर हैं।

जिला नागौर

(नागौर, कुचामन रोड, पर्वतसर)

नागौर--यह नगर राजस्थान प्रान्त का जिला है और एन० आर० की बीकानेर-मारवाड़ लाईन पर बीकानेर से ११५ कि० मी० दूर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को टैक्सी, रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर और अमरसिंह राठौर का प्रसिद्ध किला यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और मोठ, गवार, बाजरा, मूंग, तिल, गेहूं, तथा चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक--स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा नागौर सैन्ट्रल को आपरेटिव बैंक हैं।

कुचामन रोड—यह नगर जिला नागौर में डब्लू० आर० की फुलैरा-मारवाड़

लाईन पर कुचामन रोड रेलवे स्टेशन से १० कि० मी० दूर स्थित है और सवारी के लिये यात्रियों को यहाँ पर रिक्शा, ताँगे और टैक्सी मिलती है।

विश्राम स्थल—मन्नालाल शिव प्रताप की धर्मशाला यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—नमक की झील, गंगा जी का मन्दिर, श्री हनुमान जी का मन्दिर, श्री माता जी का मन्दिर यहां देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है। और मूंग, मोठ, गवार, सफैद चौला तथा नमक का उत्पादन होता है।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक, जौधपुर कार्मशिलय बैंक।

पर्वत सर—यह नगर जिला नागौर में एन० आर० की मकराना-पर्वतसर सिटी मार्ग पर मकराना से २२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और टैक्सी मिलती है।

वश्राम स्थल—भागड़िया जी की धर्मशाला, मन्त्री जी की धर्मशाला स्टेशन के पास तथा श्री कृष्ण धर्मशाला व प्याऊ स्टेशन के पास यात्रियों के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—रघुनाथ जी का मन्दिर, शेष जी का मन्दिर, श्री गोपाल जी का मन्दिर, पहाड़ी पर माता जी का प्रसिद्ध स्थान, तेजा जी का स्थान तथा श्री चार भुजा जी का मन्दिर यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मंडी है और गेहूँ व चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर बहुत से बैंक हैं।

जिला पाली

(पाली, मारवाड़, सोजत रोड)

पाली—यह नगर राजस्थान प्रान्त का जिला है और एन० आर० की बीकानेर-मारवाड़ लाईन पर बीकानेर से ३७२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और यात्रियों की सवारी के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—बांगड धर्मशाला स्टेशन के पास तथा सुराणा सराय बस स्टैन्ड के पास यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, वैंकटेश मन्दिर, बजरंग बाग, केलेश्वर मन्दिर, नेहरु पार्क, कालेज तथा उम्मेद झील सूत का काम व सूत की मिलें भी यहाँ पर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और गेहूं, चना, मिर्च, सरसों, तिल, ज्वार, बांजरा तथा ऊन आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक ग्राफ इण्डिया, स्टेट बैंक ग्राफ बीकानेर एण्ड जयपुर, बैंक ग्राफ राजस्थान तथा जोधपर कार्मशियल बैंक हैं।

मारवाड़—यह नगर पाली जिले में उत्तर रेलवे की दिल्ली-ग्रहमदाबाद लाईन पर दिल्ली ग्रहमदाबाद के बीच में स्थित है। यहां रेलवे जंकशन है और सवारी के यात्रियों को रिक्शा, तांगे और टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—जैन धर्मशाला, महादेव जी की धर्मशाला, श्री जैन स्थानक तथा डाक बंगला यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—श्री भगवान पार्श्वनाथ जी का जैन मन्दिर, श्री भगवान महादेवी का मन्दिर, श्री भगवान सत्यनारायण जी का मन्दिर तथा हनुमान जी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और गेहूं, ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ, चना, मूंग और मोठ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टट बैंक ग्राफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

सोजत रोड—यह बहुत अच्छा नगर हैं और पाली जिले में पश्चिमी रेलवे की दिल्ली-अहदाबाद लाईन पर अहमदाबाद से ३७१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे जंकशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से लगभग एक दो फर्लांग की दूरी पर एक पुरानी धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—महादेव जी का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, महेश्वरियों की बगीची, पुराना किला, तालाब तथा गौमुख जिसके मुख से हर समय पानी गिरता है देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और चना, मक्का, बाजरा और तिल आदि का उत्पादन होता हैं।

बैंक—स्टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

जिला बांसबाड़ा

(बांसबाड़ा, बालाजी)

बांसवाड़ा—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और डब्लू० आर० की हिम्मत नगर उदयपुर सिटी लाईन पर सागवाड़ा से ५९ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर कोई रेल नहीं जाती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को विश्राम के लिये जानी कुशाल जेठा जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—त्रिपुरी सुन्दरी मन्दिर, भंडारिया हनुमान मन्दिर, स्वर महादेव मन्दिर, सोमाई माता का मन्दिर, राम सीता का मन्दिर, विश्वकर्मा मन्दिर, तथा

गोटी अम्बा पाँडवों का निवास स्थान देखने योग्य है। यहाँ पर आर्य समाज द्वारा आदिवासियों में अच्छा कार्य हो रहा है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और अरहर, तिल्ली, बिनौला, मूंगफली मेथी, मिर्च, कपास, चना, गेहूं, मक्का तथा ज्वार आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान, बैंक आफ बाँसवाड़ा।

बालाजी—यह नगर एक धार्मिक स्थान है और यहां के लिये बसों द्वारा जाना पड़ता है।

विश्राम स्थल—दिल्ली वालों की धर्मशाला, सेठ किरोड़ी मल की भिवानी तथा बाबूराम मनीराम की धर्मशाला विश्राम के लिये है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बालाजी का प्रसिद्ध मन्दिर तथा बालाजी का पहाड़ी वाला मन्दिर है जिन्हें दर्शन करने के लिये बहुत दूर-२ के लोग आते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूँ, व चना आदि का उत्पादन होता है।

जिला बाड़मेर

(बाड़मेर, बालोतरा)

बाडमेर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और एन० आर० की लूनी मन्नाबाद लाईन पर लूनी से १७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के विश्राम करने के लिये स्टेशन के पास नई व पुरानी धर्मशालायें बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जगदम्बे माता का मन्दिर पहाड़ पर, शिवजी का मन्दिर दूसरे पहाड़ पर, जैन मन्दिर तथा इसी जिले में बालोतरा के निकट सत्य-नारायण जी का मन्दिर, जैन मन्दिर तथा और भी कई स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और घी, गौन्द, असगन्ध, तिल, ऊन, जूट, बाजरा, गुवार, मूंग तथा मोठ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर तथा जयपुर हैं।

बालोतरा—यह नगर जिला बाडमेर में एन० आर० की लूनी मन्नाबाद लाईन पर लूनी से ८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नकोड़ा धर्मशाला, जैन धर्मशाला तथा पली वालों की धर्म-शाला ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर (वहाँ पाठशाला चलती है), ६ मील दूर क्षीरपुर में (खेड़ मन्दिर तथा रण छोड़ जी का मन्दिर), ६ मील दूर नकौड़ा में पार्श्व-नाथ का जैन मन्दिर व तीर्थ है तथा सूखा साग की भारत की प्रसिद्ध मण्डी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मंडी है और मोठ, मूंग, गुवार, बाजरा, तिल, रूई तथा असगन्ध आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर है।

जिला बीकानेर

बीकानेर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और एन० आर० की दिल्ली बीकानेर लाईन पर दिल्ली से ४६३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे जंक्शन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा, ताँगे और टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर स्टेशन के पास मेहता मोती राम की धर्मशाला तथा राजस्थान स्टेट होटल फोन न० १४२ हैं।

दर्शनीय स्थल—फोर्ट एण्ड पैलेस ५ कि० मी०, लालगढ़ महल २ कि० मी० भण्डसागर मन्दिर, तीन आर्य समाज मन्दिर, गंगा गोल्डन जुबली म्यूजियम, गंगा निवास पब्लिक पार्क, भवन पैलेस पब्लिक पार्क, नेताजी पार्क, देशनोक २६ कि० मी० दूर, देव कुंड ८ कि० मी० दूर तथा जगनर पैलेस ३१ कि० मी० दूर यहां पर दर्शनीय स्थान है। राजमहलों व भवनों को देखने के लिये बीकानेर के महराज के प्राईवेट सैक्रेट्री से स्वीकृति लेनी पड़ती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मण्डी है और तिल व मोठ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर तथा सैन्ट्रल बैंक है।

जिला भरतपुर
(भरतपुर, डीग, नदबई, बयाना)

भरतपुर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला हैं और डब्लू० आर० की दिल्ली बम्बई लाईन पर दिल्ली से १७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन हैं और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा, ताँगे और टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये कम सैन अग्रवाल भवन जैन सुनारन की धर्मशाला, धंधेवालान की धर्मशाला, ब्राह्मण धर्मशाला, बोरा जी धर्मशाला, नौशेलाल लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला, घानाबर्ड सैन्कचुरी होटल फोन न० २७७ तथा कूपर जैन होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, भरतपुर का किला, किशोरी महल, कोठी खास, महल खास, जवाहर बुर्ज, कैली डियों घाना चिड़ियाघर ५ कि० मी०, डींग पैलेस ३४ कि० मी०, कन्खाली ३१ कि० मी०, नेहरु पार्क, सूचना केन्द्र :—टूरि-

स्ट इनफौरमेशन ब्यूरो गवर्नमेंट आफ राजस्थान (आगरा रोड पर) फोन न० ३४० तथा म्यूजियम आर्ट गैलरी भरतपुर के किले में स्टेट म्यूजियम देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर मंडी है और सरसों की प्रसिद्ध मण्डी है तथा मूंगफली, तिल, मूंग, तेल, गेहुं, चना, ज्वार, बाजरा, गुवार तथा खल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक--बैंक आफ राजस्थान, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, सैन्ट्रल बैंक तथा पंजाव नेशनल बैंक आदि हैं।

डींग—यह नगर राजस्थान प्रान्त में भरतपुर जिले मथुरा भरपुर रोड पर स्थित है। यहां रेल मार्ग न होने के कारण मथुरा से बसों द्वारा जाया जाता है। यह मथुरा से ३५ कि० मी० की दूरी पर है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में बहुत अच्छी धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व महाराज सूरज मल जी का प्रसिद्ध किला अति दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यह मण्डी के रूप में बसा हुआ प्रमुख स्थान है। इस क्षेत्र की मुख्य पैदावार गेहूं, चना, जौ, ज्वार आदि का अधिक उत्पादन पाया जाता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया प्रमुख बैंक है।

नदबई—यह नगर जिला भरतपुर में डब्लू० आर० की आगरा बाँदीकुई पर आगरा से ८२ कि० मी० दूर स्थित है यहाँ पर रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते है।

विश्राम थल—श्री सत्यनारायण धर्मशाला ट्रस्ट मेन बाजार में, छज्जूराम की धर्मशाला स्टेशन के पास तथा पलूराम मूलचन्द की धर्मशाला नगरपालिका के पास विश्राम करने के लिये है

दर्शनीय स्थल—यहां कल्प वृक्ष मन्दिर तथा बरखंडी दंगल यहां पर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर सरसों, की प्रसिद्ध मण्डी है तथा गुवार, सरसों, तारामीरा, अरन्डी, जीरा, गेहूं, मूंग, ज्वार, चना, बाजरा तथा धनियां आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, की प्रमुख शाखा है।

बयाना—यह नगर भरतपुर जिले में डब्लू० आर० की दिल्ली बम्बई पर दिल्ली से २१८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और तांगे मिलते है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में जैन धर्मशाला तथा पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, ऊषा मन्दिर तथा बयाना से ३ कि० मी० की दूरी पर किला है जो राजस्थान में तीसरे स्थान पर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मन्डी है और हरी सौंफ, सरसों, तारामीरा, मूंगफली, अरहर, बाजरा, चना, जीरा, गेहूं, तथ, तिल आदि का उत्पादन होता है।

जिला भीलवाड़ा

भीलवाड़ा—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है और डब्लू० आर० की अजमेर खंडवा लाईन पर अजमेर से १३२ कि० मी० दूर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—गजाधर जी की धर्मशाला स्टेशन के पास, मुरलीधर की धर्मशाला, लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला तथा बारातियों की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, हरनी महादेव का मन्दिर, मेजा बांध, राम द्वारा (शाहपुरा में), पार्श्वनाथ जी का मन्दिर, मेनाल (मांडवगढ़ के पास) तथा मीन्डकी महादेव (मांडवगढ़ के पास), सूत का काम और सूत की मिलें आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर मण्डी है और गेहूं, चना, मक्का, जौं, कपास, उड़द, मूंग, मेथी, जीरा, धनिया तथा सिंघाड़ा आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ राजस्थान, सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर हैं।

जिला श्री गंगानगर

(श्री गंगानगर, केसरी सिंहपुर, नौहर, रायसिंह नगर, श्री करनपुर, संगरिया, सूरतगढ़, सादुल शहर, हनुमानगढ़ टाऊन)

श्री गंगानगर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक प्रमुख जिला है और एन० आर० की हनुमानगढ़-सूरतगढ़ लाईन पर हनुमानगढ़ से ६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को टैक्सी, रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—पंचायती धर्मशाला तथा गीता भवन धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, भगवान शिव का मन्दिर, गीता भवन और श्री गंगानगर गौशाला आदि देखने योग्य स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मण्डी है और रूई, सरसों, गेहूं, जौं, चना, बिनौला, बाजरा तथा तारामीरा का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ग्राफ बीकानेर एण्ड जयपुर, यूनाईटेड कॉमर्सियल बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक तथा बैंक ग्राफ राजस्थान।

केसरी सिंहपुर—यह नगर जिला श्री गंगानगर में एन० ग्रार० की हनुमान गढ़-सूरतगढ़ लाईन पर हनुमानगढ़ से ६२ कि० मी० दूर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यहां पर यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगों का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां सनातन धर्म मन्दिर है जिसमें इतना पर्याप्त स्थान है कि सैंकड़ों आदमी सरलता से ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—सत्य नारायण भगवान जी का बहुत सुन्दर मन्दिर, ग्राम चक न० २ बी में हनुमान जी का मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर, दुर्गा जी का मन्दिर, शिवशंकर जी का मन्दिर, संगमरमर की मूर्तियां व हरे भरे पौधे आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और बिनौला, गेहूं, चना, जौं, सरसों, तारा-मीरा, गवार, मूंग, अरहर, बाजरा तथा रूई आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ग्राफ बीकानेर एण्ड जयपुर आदि बैंक हैं।

नौहर—यह नगर जिला श्री गंगानगर में एन० ग्रार० की सादुलपुर-हनुमान गढ़ लाईन पर सादुलपुर से १०३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और यात्रियों की सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—धीरानी धर्मशाला, चाचाणों की धर्मशाला, पेड़ीवाल धर्म-शाला तथा नेवरों की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—सूर्य मन्दिर, गीता भवन, श्री मानकचन्द नेवर की कोठी, अमरनाथ जी का मन्दिर तथा श्री गोपाल गौशाला।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और चने की दाल की प्रसिद्ध मण्डी है तथा दाल, चावल, मूंग, गवार, मोठ, बाजरा, तिल, चना, जौं तथा तारामीरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक ग्राफ बीकानेर एन्ड जयपुर है।

पदमपुर—यह राजस्थान प्रान्त के श्री गंगानगर जिले में स्थित है। यहाँ रेल मार्ग न होने के कारण श्री गंगानगर से बसों द्वारा जाना पड़ता है। यह श्री गंगानगर से ३५ कि० मी० की दूरी पर है। यहां सवारी के लिये रिक्शा और तांगा आदि उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये आर्य समाज मन्दिर में उचित व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, जंगलात के पेड़, बावड़ी आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य पैदावार गेहूं, चना, जौं, ज्वार, बाजरा आदि का अधिक उत्पादन पाया जाता है। यह अनाज की बहुत बड़ी व प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

रायसिंह नगर—श्री गंगानगर जिले में यह नगर एन० आर० की हनुमान गढ़-सूरतगढ़ लाईन पर हनुमानगढ़ से १४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—रायसिंह नगर गौशाला आदि।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और गेहूं, चना, जौं, सरसों, तारामीरा, मूंग, मोठ, गवार, बाजरा, बिनौला, रूई, कपास तथा अरहर आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर हैं।

श्री करनपुर—श्री गंगानगर जिले में यह नगर एन० आर० की हनुमानगढ सूरतगढ़ लाईन पर हनुमान गढ़ से ११४ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और ताँगे आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास ठहरने के लिये एक पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, राधा कृष्ण का मन्दिर तथा श्री करनपुर गौशाला दर्शनीय हैं।

विशेष—यह नगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बार्डर (सीमा) पर स्थित है और इसकी जनसंख्या १२ हजार है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गल्ला, तारामीरा, सरसों, बिनौला, कपास, रूई, मेथी, धनिया तथा जीरा आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर आदि बैंक हैं।

संगरिया—श्री गंगानगर जिले में यह एन० आर० की भटिन्डा-बीकानेर लाईन पर भटिन्डा से ६६ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है। सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—श्री सनातन धर्म सभा मन्दिर, ग्रामोत्थान विद्यापीठ नामक शिक्षा संस्था जिसका म्यूज़ियम देखने योग्य है तथा संगरिया जाट स्कूल गौशाला दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और गेहूं, जौं, चावल, बिनौला, रूई, चना, दाल, छिलका, सरसों, तारामीरा, गवार तथा बाजरा आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक--पंजाब नेशनल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर आदि बैंक हैं।

सूरतगढ़--श्री गंगानगर जिले में यह एन० आर० की भटिन्डा-हिन्दूमल कोट लाईन पर भटिन्डा से १४२ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है। सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल--एक धर्मशाला स्टेशन के सामने है और एक धर्मशाला बाजार में है।

दर्शनीय स्थल--शंकर जी का मन्दिर, हनुमानजी की खेजड़ी, तालाब के बीच में गणेश जी का मन्दिर तथा श्री सूरतगढ़ गौशाला आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें--यहाँ मण्डी है और सरसों, तारामीरा, चना, मोठ, तिल, जौं तथा गवार आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक--स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर है।

सादुल शहर--यह नगर श्री गंगानगर जिले में एन० आर० की हनुमानगढ़ सूरतगढ़ लाईन पर हनुमानगढ़ से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल--नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल--आर्य समाज मन्दिर।

उत्पादित वस्तुएं--यहां मण्डी है और गेहूं, चना, जौं, सरसों, तारामीरा, कपास, नरमा, अरहर, गवार, गुड़, मूंग तथा बिनौला आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक--पंजाब नेशनल बैंक तथा स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर आदि बैंक हैं।

हनुमानगढ़ टाऊन--श्री गंगानगर जिले का यह प्रमुख नगर एन० आर० की भटिन्डा-बीकानेर लाईन पर भटिन्डा से ९२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां स्टेशन है। यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, तांगे और टैक्सी आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल--बिहाणी धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला, महाबीर दल धर्मशाला, पंचायती धर्मशाला तथा रेंगरों की धर्मशाला आदि में ठहरने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल--ठाकुर जी का मन्दिर, महाबीर जी का मन्दिर, गीता भवन, राम सीता का मन्दिर, महावीर दल हनुमानजी का मन्दिर, करियाना व्यापारी संघ भवन, पुस्तकालय तथा वाचनालय, ४०० वर्ष पुराना किला, गऊशाला, नेहरू मैमोरियल डिग्री कालिज, नगरपालिका एवम् पंचायत समिति तथा गौशाला हनुमानगढ़ दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ मण्डी है और चना, जौं, सरसों, तारामीरा, गवार, बाजरा, मोठ, तथा चावल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर है।

जिला सीकर

(सीकर, नीम का थाना, फतेहपुर, रीगस, श्री माधोपुर)

सीकर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और डब्लू० आर० की सवाई माधोपुर-लोहारु लाईन पर सवाई माधोपुर से २३९ कि० मी० दूर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, टैक्सी और ताँगे आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—वियानियों की धर्मशाला स्टेशन के पास, लोदी दुजोद दरवाजे के पास, सुनारों दुजादे दरवाजे के पास, कावरों की धर्मशाला, दीवानजी की धर्मशाला, महेश्वरी की धर्मशाला, तापड़ियों की धर्मशाला, मारुओं की धर्मशाला तथा अग्रवाल समाज की धर्मशाला विश्राम के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, गोपीनाथ जी का मन्दिर, रघुनाथ जी का मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर, घंटाघर, अजायवघर, नेहरू पार्क, श्री गोपीनाथ गौशाला तथा श्री पंचायत पिञ्जापोल (गौशाला) दर्शनीय हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

नीम का थाना—सीकर जिले में यह नगर डब्लू० आर० की फुलेरा-रिवाड़ी लाईन पर फुलेरा से ११३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये यात्रियों को टैक्सी, रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—१६ कि० मी० पूर्व में पर्वत पर पानी के श्रोत, गणेश्वर नामक स्थान पर गर्म पानी का नाला व तीर्थ स्थान ३० कि० मी० की दूरी पर लोहागर स्थान है जहां के बारे में कहावत है कि पाँडवों की लोहे की बेड़ियां इसी स्थान पर स्नान करने से मुक्त हुई थीं, लोहा गल कर समाप्त हुआ था; बलेश्वर नामक स्थान में पहाड़ पर गुरु द्रोणाचार्य ने सात शंकरों की स्थापना की थी। यह बड़ा पवित्र स्थान है और इनके अतिरिक्त श्रीकृष्ण गौशाला है जो बहुत सुन्दर बनी हुई है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और विशेषकर चना, मूंग, व सरसों की प्रसिद्ध मण्डी है तथा इनके साथ-साथ यहाँ पर बाजरा, मोठ और राई आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर है।

फतेहपुर—जिला सीकर में यह नगर स्थित है और यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का किला प्रसिद्ध है जो देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त यहां आर्य समाज मन्दिर, सुन्दरदास जी की समाधि, बुद्धगर जी की भर जहाँ शिवजी का मन्दिर है जो ऊंचे टीले पर रमणीय स्थान पर ४०० वर्ष पुराना है, एक बावड़ी है जो काफी प्रसिद्ध हैं जिसमें से एक सुरंग राजा के महल में पहुंचती है, राजमहल जिसमें पत्थर पर दुर्लभ चित्रकारी देखने को मिलती है, बाजार में लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर है, भारतीय अस्पताल जो प्राईवेट है लेकिन रोगी का प्रत्येक खर्चा सहन करता है तथा पिञ्जरापोल पंचायत गौशाला दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूँ और चना आदि का उत्पादन होता है।

रीगस—सीकर जिले में यह नगर डब्लू० आर० की रिवाड़ी-फुलेरा लाईन पर रिवाड़ी से १४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला स्टेशन के पास है और एक धर्मशाला गाँव में है।

दर्शनीय स्थल यहाँ से १६ कि० मी० दूर श्याम जी का बहुत पुराना मन्दिर है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और घी, तेल, लाल मिर्च, गेहूं, जौं, चना तथा तोरियां आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक है।

श्री माधोपुर—सीकर जिले में यह नगर डब्लू० आर० की फुलेरा-रिवाड़ी लाईन पर फुलेरा से ७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगें मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में निवास स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—श्री गोपीनाथ जी मन्दिर, शंकर जी की मूर्ति तथा श्री कृष्ण गौशाला दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें यहाँ मण्डी है और चौला, मूंग, बाजरा, मोठ तथा चना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर है।

जिला सवाई माधोपुर

(सवाई माधोपुर, करौली, भगवतगढ़, गंगापुर सीटी, महावीर जी, हिन्डौन)

सवाई माधोपुर—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक जिला है और डब्लू० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर गंगापुर सिटी से ६३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। रेलवे स्टेशन से सात कि० मी० दूर है। सवारी के लिये यहां पर रिक्शा टैक्सी और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—मंगली राम रामकुमार बागड़ की धर्मशाला विश्राम के लिये है।

दर्शनीय स्थल—चमत्कार जी का मन्दिर, एशिया का सबसे बड़ा सीमेंट का कारखाना, गंगा, मनोरम झरने, गणेश जी का मन्दिर, शोलेश्वर महादेव का मन्दिर, प्राचीन दुर्ग, जांगी महल, तथा यहां के जंगलों में शेर-चीते-सूअर, तथा जंगली गाय पायी जाती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और गुवार, ज्वार, धनियां, मूंगफली, तिल, सरसों तथा अलसी का उत्पादन होता है।

इनके अतिरिक्त सीमेन्ट, लकड़ी के रंग बिरंगे खिलौने तथा खस के बने हुए इत्र, पंखे व पान की डिबियां बनाने की तो यहां की विशेषता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर।

करौली—यह नगर जिला सवाई माधोपुर में डब्लू० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर हिन्डौन सिटी से ३२ कि० मी० दूर स्थित है। यह नगर रेलवे की आउट एजेन्सी है। यात्रियों को यहां सवारी के लिये रिक्शा तांगे और टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—अग्रवाल धर्मशाला नाज मण्डी, जैन धर्मशाला सब्जी मण्डी तथा पंच गल्ला व्यापारी धर्मशाला हिडौनगेट के बाहर बस स्टैन्ड के पास हैं।

दर्शनीय स्थल—श्री मदन मोहन जी का मन्दिर, राज्य का किला, रणगया का तालाब, शहर से २६ मील दूर केला देवी का मन्दिर जहां चैत्र बदी १२ (चैत्र शुक्ला) को मेला लगता है तथा २६ कि० मी० की दूरी पर श्री कैलाश देवी जी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और जीरा, सरसों, मूंगफली, शहद, लाल-मिर्च, सिंगाड़ा, देशी घी, लहसुन, धान, चावल, सन तथा फूल आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर।

भगवतगढ़—यह राजस्थान प्रान्त में सवाईमाधोपुर के बम्बई-सवाईमाधोपुर रोड पर सवाईमाधोपुर से ३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेल मार्ग न होने के कारण सवाईमाधोपुर से बसों द्वारा जाया जाता है। यहां सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये आर्य समाज मन्दिर में अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, पानी के झरने, बाग व अन्य कई छोटे-२ मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक मण्डी के रूप में बसा हुआ एक छोटा सा कस्बा है। इस क्षेत्र की मुख्य उपज सरसों, जौं, ज्वार, तिल व ऊन आदि है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक यहाँ का मुख्य बैंक है।

गंगापुर सिटी—यह नगर सवाईमाधोपुर जिले में डब्लू० आर की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से २९६ कि० मी० कीं दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और सवारी के लिये रिक्शा, तांगे तथा टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—रामशाला (स्टेशन के पास) तथा अग्रवाल धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, नाज की मण्डी, गंगापुर से १ कि. मी. की दूरी पर केलादेवी जी का मन्दिर है, १८ कि० मी० की दूरी पर महावीर जी का मन्दिर है जिसमें २६३ फीट ऊँची मूर्ति है तथा धुदेश्वर का एकादिश लिंग महादेव जी का रमणीक स्थान है, वहां पर हमेशा पहाड़ में से पानी का झरना निकलता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और मूंगफली, सींगदाना, तिल्ली, बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, उड़द, धान, चावल, गेहूं, अरहर, चना, जौं, सरसों अलसी, तारा-मीरा, जीरा, धनिया, मेथी, हालम तथा अंडी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—बैंक आफ राजस्थान तथा बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर है।

महावीर जी—यह नगर सवाईमाधोपुर जिले में हिन्डौन से १६ कि. मी. दूर है। यहां का रेलवे स्टेशन शहर से ५ कि० मी० की दूरी पर है। यहां सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—जैन मन्दिर धर्मशाला, दिल्ली वालों की धर्मशाला, जयपुर वालों की धर्मशाला, रिवाड़ी वालों की धर्मशाला, तीन नम्बर धर्मशाला, जायसवाल आगरे वालों की धर्मशाला, श्वेताम्बरी धर्मशाला तथा व्रज चन्द्र धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—जैन मन्दिर ३० फीट ऊंची मूर्ति, नया जैन मन्दिर (शान्ति नगर में), एक विशाल मूर्ति, महावीर जी का स्टेशन, २४ प्रतिमा भगवानों की, महिला आश्रम, कमला बाई आदर्श तथा दिगम्बर जैन मन्दिर अत्यन्त सुन्दर है जहां पर चैत्र सुदी १३ से बैसाख वदी १ तक विशाल मेला लगता है। यह नगर जैन धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गेहूँ व चना आदि का उत्पादन होता है।

हिन्डौन—सवाईमाधोपुर जिले में यह नगर डब्लू० आर० की महुआ-करोली रोड पर महावीर जी से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—अग्रवाल समाज धर्मशाला तथा बजाजों की धर्मशाला विश्राम के लिये अच्छी है।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, श्री गोपाल गोशाला तथा पत्थर की कारीगरी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूँ, चना और जौं आदि का उत्पादन होता है। यह नगर पत्थरों के लिये प्रसिद्ध है।

बैंक—बैंक आफ जयपुर।

जिला सिरोही

(सिरोही, ग्राबूरोड सिटी, स्वरूपगंज, श्रीनाथ द्वारा)

सिरोही—यह नगर राजस्थान प्रान्त का एक छोटा सा जिला है। यह डब्लू. ग्रार. की दिल्ली-ग्रहमदावाद लाईन पर दिल्ली से ७०५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर विश्राम के लिये राजमाता वागेला जी की धर्मशाला है जिसमें हर जाति का व्यक्ति ठहर सकता है।

दर्शनीय स्थल—ग्रार्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, सिरोही से ३ कि० मी० दूर श्री सारणेश्वर जी का मन्दिर तथा सिरोही रोड से सिरोही ग्राते हुए वामणवाड़ जी तीर्थ है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ मण्डी है और सरसों, तिल, चना तथा जीरा ग्रादि का उत्पादन होता है।

बैंक—पंजाब नेशनल बैंक, को-ग्रापरेटिव बैंक तथा स्टेट बैंक ग्राफ बीकानेर एण्ड जयपुर हैं।

ग्राबूरोड सिटी पर्वत—सिरोही जिले में यह नगर डब्लू० ग्रार० की दिल्ली-ग्रहमदाबाद लाईन पर सिरोही से ४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। ग्राबूरोड से दो फर्लांग की दूरी पर है। यहां से ग्राबू पर्वत को मोटर जाती हैं और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा, ताँगे और टैक्सी मिलती हैं। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है।

विश्राम स्थल—श्वेताम्बरी धर्मशाला, जैन धर्मशाला तथा रघुनाथ जी की धर्मशाला विश्राम के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर ग्रार्य समाज मन्दिर तथा वैदिक कन्या विद्यालय देखने योग्य हैं इसके ग्रतिरिक्त दुलेश्वर महादेव का मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, सूर्यास्त दर्शन, गुरु शिखर, नक्की झील, ट्रोडोक, तखेड़ तालाब, ग्रशोक वाटिका, ग्रधर देवी जी का मन्दिर, कोदूरा डैम, ब्रह्मकुमारियों का प्रमुख केन्द्र, जैन मन्दिर, देहलवाड़ा जैन मन्दिर, गौमुखी, ग्रचलगढ़, रघुनाथ मन्दिर। देहलवाड़ा जैन मन्दिर खुलने का समयः—दोपहर १२ बजे से ६ बजे तक। ग्राबू पर्वतः—२)रु० प्रति व्यक्ति टैक्स तथा १)रु० प्रति बच्चा टैक्स है।

महर्षि दयानन्द ग्राबू पर्वत दो बार गये थे। एक बार गृह त्याग के पश्चात् और दूसरी बार जोधपुर में जहर मिलने के पश्चात्। ग्रापने यहाँ दोनों बार योगाभ्यास तथा यौगिक क्रियायें की थीं। ग्रन्तिम बार ग्राप राजेन्द्र रोड पर स्थित किशनगढ़ की कोठी पर ठहरे थे। गुजरात तथा राजस्थान के लोग प्रत्येक वर्ष गर्मी के दिनों में हजारों की संख्या में यहां ग्राते हैं। यहां राजस्थान तथा गुजरात के ग्रनेक राजाग्रों की सुन्दर कोठियाँ वनी हुई हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां तिल, सरसों, गेहूं, चना, लोभिया सफेद, मक्का तथा उड़द आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंकस—टेट बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक हैं।

स्वरूपगंजय—ह नगर जिला सिरोही में डब्लू० आर० की आबूरोड-अजमेर लाईन पर आबूरोड से २५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—१७ कि० मी० दूर महावीर जी का मन्दिर तथा महावीर भवन है।

१५ कि० मी दूर शिवगंज है यह व्यापार की दृष्टि से अच्छी मण्डी है। आर्य समाज का कार्य यहां बहुत अच्छा होता है। त्यागमूर्ति स्वामी श्री चेतनानन्द जी इस क्षेत्र में सुन्दर कार्य कर रहे हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मण्डी है और बाँस, कोयला, लकड़ी, रीठा इमली, शहद, मोम, सफेद मूसली, गेहूँ, चना, सरसों, तिलहन आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—स्टेट बैंक।

श्रीनाथ द्वारा—यह राजस्थान प्रान्त के उदयपुर जिले में चित्तौड़गढ़-उदयपुर लाईन पर उदयपुर से ५४ कि० मी० की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—यहां बहुत सी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां श्री कृष्ण जी का मन्दिर, श्रीनाथ द्वारा जी का एक लिंग मन्दिर व आर्य समाज मन्दिर आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—बाजरा, गेहूँ, चना, जौं, ज्वार आदि का उत्पादन है।

जयपुर से प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अजमेर	१२५	अलवर	१५१	आबूरोड	४४०
किशनगढ़	१०६	चित्तौड़गढ़	३२४	चिड़ावा	२०१
चोमूं	३१	झूंझनू	१७१	टोरडी सागर	९३
नीमच	३७७	नवलगढ़	१३४	बाँदीकुई	९४
मटेरा	६०	मारवाड़	२७५	माधोराजपुर	३८
राजगढ़	११५	रेवाड़ी	२२५	लोहरु	२३०
विजय नगर	२०१	शाहपुरा	६६	स्वरूपगंज	४६५
सोजत रोड	२५४	सवाईमाधोपुर	१३२	सीकर	१०९
साँगानेर टाउन	१२				

———

गुजरात

यह देश के भक्तों की भूमि,
मन हरता जिसका सोमनाथ
है शान द्वारिका की अपनी,
नित उठा धर्म के लिये हाथ

जिला अमरेली

(अमरेली)

अमरेली—गुजरात प्रान्त में जिला अमरेली डब्लू० आर० की खिजाड़ियाँ-वीरावल लाईन पर खिजाड़िया से १७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी टैक्सी, तांगा, रिक्शा, स्कूटर मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर पंचायती धर्मशाला व मनमोहन जी की धर्मशाला स्टेशन रोड पर यात्रियों के ठहरने के लिये बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर नागनाथ जी का मन्दिर, वैष्णव हवेली, दत्तमन्दिर कामनाथ मन्दिर, रोकड़िया हनुमान मन्दिर, समुद्री मन्दिर, स्वामी नारायण का मन्दिर व संग्राहालय देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—इस नगर में मूंगफली, मूंगफली का तेल, कपास मिर्च, सज्जी, बीज, तेल-बिनौला आदि वस्तुओं का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, देना बैंक, अमरेली डिस्ट्रिक्टकोआपरेटिव बैंक हैं।

जिला अहमदाबाद

(अहमदाबाद, धधुका)

अहमदाबाद—यह गुजरात प्रान्त की राजधानी है गुजरात प्रान्त में अहमदाबाद डब्लू० आर० के जंकशन पर दिल्ली-अहमदाबाद लाईन पर देहली से ९३४ कि० मी० दूर है सवारी के लिये रिक्शा, सिटी बस, ताँगा, टैक्सी मिलमी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर भाई शंकर जी की धर्मशाला, बेचरदास लहकरी धर्मशाला, मणिकलाल मनिलाल रणछोड़ जी की धर्मशाला, दिगम्बर जैन धर्मशाला

मग्न भाई कर्मचन्द की धर्मशाला, भटिया धर्मशाला, नगर गृह लाल भाई किशनदास जी की ट्रस्ट धर्मशाला, टक्साली धर्मशाला. रेवाबाई की धर्मशाला (स्टेशन के पास) आदि स्थान यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल---यहाँ पर देखने योग्य स्थलों में आर्य समाज मन्दिर की आठ शाखाए इन स्थानों पर हैं---महर्षि दयानन्द मार्ग पर, लुणसावाड़ा, सरसपुर, कुवर नगर, सहीजपुर बोधा, साबरमती, बापूनगर, महात्मा गाँधी मार्ग पर हैं। इनके अतिरिक्त राज भवन, जगन्नाथ मन्दिर, जामा मस्जिद, सहीद स्मारक, झूलता मीनार, भद्रकिला, हठीसिंह मन्दिर, रानी रूपमती मस्जिद, काँकरिया झील, बाल वाटिका, सरवैंज का रोजा, रानी सिपरी मस्जिद, शाहआलम का रोजा, अहमद शाह की मस्जिद, तीन दरवाजा, चिड़ियाँ घर, स्वामी नारायण मन्दिर, मुहाफिज खान मस्जिद रानी हाजिश गुम्बद, जगदीश मन्दिर, गौशाला, दिगम्बर जैन मन्दिर व श्वेताम्बर जैन मन्दिर, अहलाद का सीढ़ी दार कुआ, दादा हारी का सीढ़ी दार कुआ, हरिजन आश्रम, साबरमती आश्रम व वेद मन्दिर आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सबसे अधिक काम कपड़े का होता है। इसके अतिरिक्त चावल, तेल मूंगफली, गेहूं, आदि भी पैदा होता है।

बैंक---यहाँ पर स्टेट बैंक, देना बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, इण्डिया बैंक, यूनाईटिड कामर्शियल बैंक, स्टैट बैंक आफ जयपुर एण्ड बीकानेर, सैन्ट्रल बैंक, अहमदाबाद डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव बैंक, अहमदाबाद प्यूपिल को-ओपरेटिव बैंक, यूनियन बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक आदि बैंक हैं।

धंधुका—गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद जिले में धंधुका नामक नगर स्थित है यह अहमदाबाद भावनगर के बीच है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक बड़ी और एक छोटी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ महाप्रभु जी की तगड़ी की बैठक विशेष देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गेहूँ, चना, जौ, बिनोला, रुई आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, अहमदाबाद सैण्ट्रल को-आप-रेटिव बैंक स्थित हैं।

जिला कच्छ

(आदिपुर, गांधी धाम-कण्डला, भुज)

आदिपुर—यह गुजरात प्रान्त के जिला कच्छ में एक अच्छा नगर है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये एक धर्मशाला नगर में तथा दूसरी स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—यह एक नया नगर है। यहाँ पर कई छोटे २ मन्दिर है, जो देखने योग्य हैं। उसके पास ही गाँधीधाम में हवाई अड्डा भी देखने योग्य है। यहां पर आर्य समाज मन्दिर की भी स्थापना हो गई है।

गांधी धाम-कण्डला—यह सुन्दर नगर गुजरात प्रान्त के जिला कच्छ में डब्लू० आर० की पालनपुर-गाँधी धाम लाईन पर पालनपुर से ३०१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये आर्य समाज मन्दिर व धर्मशाला आदि है

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व सिन्धियों का मन्दिर देखने योग्य हैं।

विशेष—यहां से पाकिस्तान पास होने के कारण सिन्ध से आये हुये हिन्दूओं के लिये भाई प्रताप ने इस नगर की स्थापना की। यहां सिन्धी लोग अधिक रहते हैं यहां से सात मील की दूरी पर पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध कण्डला बन्दरगाह है जहां विदेशों से जहाज माल लाते हैं और भारत में बने सीमेन्ट आदि का निर्यात होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर नमक, तिल, अण्डी, आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डिया बैंक, मर्केन्टाइल बैंक आदि बैंक हैं।

भुज—गुजरात प्रान्त में जिला कच्छ का भुज अन्तिम स्टेशन है। यह डब्लू० आर० की गांधी धाम-भुज वाली लाईन पर गांधी धाम से ५८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां का स्थानीय यातायात तांगा, टैक्सी आदि द्वारा अधिकतर होता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—भुज कच्छ की राजधानी है। यहां का राजमहल, रेडियो स्टेशन, एयर पोर्ट तथा अनेक मन्दिर देखने योग्य हैं। यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर भी है। यहाँ से कच्छ के प्रसिद्ध स्थानों नारायण सरोवर, कोटेश्वर, भद्रेश्वरी, हाजी पीर, दुऐश्वर महादेव का मन्दिर, नलिया तथा माण्डवी (जहां क्रान्तिकारियों के अग्रदूत श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म हुआ था) को बसों द्वारा देखने जाया जा सकता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, तिल का तेल, बाजरा, सरसों, गूगल आदि वस्तुयें पैदा होती है।

बैंक—यहां सैन्ट्रल बैंक की शाखा है।

जिला खेड़ा

(आनन्द, कर्मसद, कठलाल, खेड़ा, डाकोर, नडियाद, पेटलाद)

खेड़ा—गुजरात प्रान्त में स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह डब्लू० आर० की अहमदाबाद बड़ौदा लाईन पर अहमदाबाद से १३ कि० मी० और नडियाड से १६ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में बसा हुआ है। नगर में आने जाने के लिये तांगा व रिक्शा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर व हनुमान मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य पैदावार चावल, कपास, विनौला, धान, गेहूं आदि हैं।

आनन्द—यह गुजरात प्रान्त के जिला खेड़ा में डब्लू० आर० की वीरमगाम-बड़ौदा लाईन पर वीरमगाम से १३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक अच्छी मण्डी है और यहाँ रिक्शा व तांगा आदि की सवारी प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों को ठहरने के लिये प्रेमचन्द रामचन्द की धर्मशाला है और एक धर्मशाला स्टेशन के पास भी है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अमूलडेरी, कर्मभूमि, (यहाँ पर सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्मारक के रूप में वल्लभ विद्या नगर शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं) आर्य समाज मन्दिर (इस क्षेत्र में यह एक विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर में अनेकों विद्यार्थियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षा दी जा रही है) आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर दालें, तम्बाकू, मूंगदाल, उड़द दाल आदि वस्तुओं का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, देना बैंक, बड़ौदा बैंक, खेड़ा डिस्ट्रिक्ट सैन्ट्रल को-ओपरेटिव बैंक आदि बैंक हैं।

कर्मसद—यह गुजरात प्रान्त में जिला खेड़ा में आनन्द जंक्शन से ७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर तांगा व रिक्शा सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—पाटीदार निवास धर्मशाला यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, सन्तराम मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर, बापेश्वर महादेव का मन्दिर, विट्ठल सेवा समाज आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चावल, जौ, चना मुख्य रूप से पैदा होता है।

कठलाल—यह नगर गुजरात प्रान्त के जिला खेड़ा में डब्लू० आर० की आनन्द खम्भात रेलवे लाईन पर स्थित है। यह एक अच्छी मण्डी है और ताँगा, रिक्शा की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर २६२ वीं धर्मशाला, २४२ वीं धर्मशाला व बड़ा जटाक्षालय की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिए हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कुबेर जी महादेव का मन्दिर, सिद्धनाथ महादेव का मन्दिर, हरिश्वर महादेव का मन्दिर, नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर, नारायन देव मन्दिर, मठज्यादी मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, तेल मूंगफली, बाजरा, तुवर, मोठ, तिल्ली, विनौला आदि वस्तुए पैदा होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

डाकोर—यह गुजरात प्रान्त के जिला खेड़ा में डब्लू० आर० की आनन्द गोधरा लाईन पर आनन्द से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। ताँगा यहां की मुख्य सवारी है।

विश्राम स्थल—यहां पर मोरार भवन, गायक वाड़ की धर्मशाला, दामोदर भवन आदि यात्रियों के ठहरने के लिये स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यह गुजरात प्रान्त का प्रमुख तीर्थ स्थान है। वैष्णाव सम्प्रदाय का यह प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर श्री रणछोड़राय जी का मन्दिर, गोमती तालाब, मारवणियोआरो, लक्ष्मी मन्दिर आदि देखने योग्य हैं। शरदपूर्णिमा को यहां बहुत बड़ा मेला लगता है।

उत्पादितवस्तुयें—यहां पर जीरा, तम्बाकू, गेहूँ, कपास, मूंगफली व दालें पैदा होती हैं।

बैंक—यहाँ पर बड़ौदा बैंक, स्टेट बैंक, देना बैंक हैं।

नडियाद—गुजरात प्रान्त के खेड़ा जिले में नडियाद डब्लू० आर० की वीरमगाम-बड़ौदा लाईन पर वीरमगाम से १११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर टैक्सी, रिक्शा, तांगा आदि सवारी की सुविधा प्राप्त है। यह गुजरात का एक प्रमुख शहर है।

विश्राम स्थल—यहां नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, टैकनीकल कालिज, आयुर्वेदिक कालिज देखने योग्य हैं।

विशेष—इस नगर में, राजमाता मीनलदेवी का, स्वामी विनेकानन्द का, महात्मा गांधी जी का, आगमन हुआ था। स्वातंत्र्यवीर तात्यटोपे और नाना साहब का भी आगमन क्रान्ति के कारण हुआ था। नडियाद में प्रसिद्ध कथा 'सरस्वतीचन्द्र' के रचयिता गोवधनरा त्रिपाठी का जन्म हुआ था।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर जीरा, रायदाना, सौंफ, अण्डी, सफेदमूसली, अमचूर, चावल, गेहूं, तिल, आदि वस्तुओं की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ोदा बैंक, देना बैंक, सैन्ट्रल बैंक इन्डिया बैंक, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक, खेड़ा डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव आदि प्रमुख बैंक हैं।

धार्मिक तीर्थ धाम—श्री संतराम मन्दिर, श्री भाई मन्दिर, हिन्दू अनाथालय व विट्ठल कन्या विद्यालय आदि देखने योग्य हैं।

पेटलाद—यह एक मण्डी के रूप में गुजरात प्रान्त के खेड़ा जिले में डब्लू० आर० की आनन्द-खम्बात लाईन पर आनन्द से २२ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां पर रिक्शा, व तांगे सवारी की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये एक निवास स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तुवर-दाल, तेल, खल, तम्बाकू, मुख्य रूप से पैदा होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाव नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, देना बैंक खेड़ा डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव आदि बैंक हैं।

जिला जामनगर

(जामनगर, ओखापोर्ट, द्वारकाजी)

जामनगर—गुजरात प्रान्त में जामनगर एक प्रसिद्ध जिला है। यह नगर डब्लू० आर० की वीरमगाम-ओखा लाईन पर वीरमगाम से २६२ कि० मी०, बोम्बे से ८३१ कि० मी०, राजकोट से ८८ कि० मी० और अहमदाबाद से ३३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर एक अच्छा हवाई अड्डा है। इसके अतिरिक्त यहां पर टैक्सी, रिक्शा और तांगे आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर मूलाजी जेठाजी की धर्मशाला, गोकलदास धर्मशाला भाटिया धर्मशाला, बोरी धर्मशाला व सरकारी गैस्ट हाऊस यात्रियों के ठहरने के लिये बने हुए हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शमशान घाट, (ऐसा सुन्दर घाट शायद ही कोई और हो) सूर्य की प्रकृति का अस्पताल, समुद्र का किनारा, लक्ष्मी मन्दिर, सिटी झील, कोटावस्तीयान, (यह झील के बीच में बसा है) भीदभजन मन्दिर, आयुर्वेदिक कालिज (भारत का सबसे अच्छा कालिज) आर्य समाज मन्दिर, (इस सुन्दर मन्दिर में श्री मद्दयानन्द कन्या विद्यालय चलाया जा रहा है जिसमें दो हजार कन्यायें विद्याभ्यास करती हैं) आदि स्थान देखने योग्य हैं।

विशेष---इसका नाम नवनगर भी है यहां पर राजकीय संस्कृत पाठशाला भी है। राजकोट से रेलद्वारा यहाँ तक पहुंचने में ३ घन्टे लगते हैं। इसके पास में ही सौराष्ट्र झील है। जाम नगर का बाजार अपनी सुन्दरता व कारीगरी के लिये खूब प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, चावल, खजूर, छोहारा, लहसुन, नमक अजवायन आदि वस्तुयें पैदा होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, जामनगर डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव बैंक, सैन्ट्रल बैंक पंजाब नेशनल बैंक, देना बैंक, बड़ौदा बैंक, यूनाइटिड कार्मशियल बैंक, स्टेट बैंक आफ जयपुर आदि बैंक हैं।

ओखापोर्ट—यह नगर गुजरात प्रान्त के जिला जामनगर में पश्चिम रेलवे लाईन पर बसा हुआ है। यहां रेलवे स्टेशन भी है और तागा, रिक्शा आदि सवारी मिलती है। यह एक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यूरोपियन रैस्ट हाऊस, अरब रैस्ट हाऊस, अनुपम रैस्ट हाऊस, आइस रैस्ट हाऊस और स्टेशन के पास एक धर्मशाला यात्रियो के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—ओखा से समुद्र पार करके समुद्र के टापू के अन्दर 'द्वारिकाधीश का मन्दिर' है। ओखा से ११ कि० मी० दूर मीठापुर शहर में टाटा कैमिकल्स फैक्ट्री देखने योग्य है। वहां नमक व सीमेंट का कारखाना है। ओखा शहर में दो-तीन छोटे-२ मन्दिर हैं। समुद्र के किनारे पर सरकार द्वारा बनवाया गया मछली उद्योग भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां बन्दरगाह होने के कारण समुद्र पार की वस्तुओं का आयात निर्यात होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, बैंक आफ इन्डिया आदि बैंक हैं।

द्वारकाजी—हिन्दुओं का यह पवित्र स्थान गुजरात प्रान्त के जिला जामनगर में पश्चिम रेलवे की ओखा लाईन पर राजकोट से २१६ कि. मी., जामनगर से १३६ कि० मी० और ओखा से ३२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। द्वारका के पास जामनगर में हवाई अड्डा है। यहाँ शहर में टैक्सी, तांगा व रिक्शा आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—द्वारका में भाऊजी प्रेम जी की धर्मशाला, वसन्तलाल रामेश्वर दयाल की धर्मशाला, हजारी मल की धर्मशाला (स्टेशन के पास), अचारज जी वेद द्वारका-सू-द्वारका भवन, गोकुल दास धर्मशाला, करसरनदास हालू की धर्मशाला, भाटिया धर्मशाला, श्रीराम धर्मशाला, सत्यकामा की वेटद्वारका, व सरकारी गैस्ट हाऊस यात्रियों के ठहरने के स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर द्वारकाधीश का बड़ा मन्दिर, रुकमणी माता का मन्दिर, गोमती नदी, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, श्री राम मन्दिर, श्री शंकराचार्य जी

का मठ, नौ घाट, घाटों के ऊपर संगम नारायण जी का मन्दिर, वासुदेव घाट पर हनुमान मन्दिर, पश्चिम में नरसिंह भगवान का मन्दिर, सरकारी घाट पर एक छोटा सा सरोवर जो गोमती के खारे जल से भरा रहता है आदि स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तिल, सोड़ा आदि वस्तुयें पैदा होती हैं।

विशेष—यह सौराष्ट्र के पश्चिमी सिरे पर, हिन्दुओं के सात तीर्थ स्थानों में से एक और भगवान कृष्ण जी की राजधानी है। कृष्ण जी मथुरा से आकर यहीं रहे थे। भगवान कृष्ण का मन्दिर ५ मंजिल का बना है। इसकी ऊंचाई लगभग १०० फुट है। इसमें नक्काशी का कार्य अति सुन्दर हुआ है। कहते है कि कृष्ण के अन्तर्धान होते ही द्वारकापुरी समुद्र में डूब गई थी केवल कृष्ण का निजी मन्दिर ही नहीं डूबा था।

जिला जूनागढ़

(जूनागढ़, गिरनार, पोरबन्दर, वैरावल, मानाबदर, शारदाग्राम, सोमनाथ सासन गिरी)

जूनागढ़—गुजरात प्रान्त में जूनागढ़ एक जिला है यह ड्ब्लू० आर की राजकोट- वीरावल लाईन पर राजकोट से १५३ कि० मी० और वीरावल से लगभग ८३ कि० मी० की दूरी पर एक विशाल नगर व मण्डी के रूप में स्थित है।

यातायात के साधन—जूनागढ़ से ३७ कि० मी० की दूरी पर केशोद में हवाई अड्डा है। इसके अतिरिक्त रेल, मोटर, टैक्सी, तांगा व रिक्शा आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये भाटिया धर्मशाला, बलिया धर्मशाला, जाटा धर्मशाला, शंकरी और दिगम्बर जैन धर्मशाला, (स्टेशन से १ कि० मी० है) जीवाराम भाटिया धर्मशाला व मनोरंजन गैस्ट हाऊस आदि अच्छे स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अपरकोट किला, अशोका ऐडिकट, दामोदर कुण्ड, मकबरा, नरसी मेहता की सराईन, गिरनार की पहाड़ी, वैलिंगडन डैम, दातार मन्दिर, आर्यसमाज मन्दिर, महल, राय जी (महर्षि दयानन्द) बाग, दत्तात्रेय तथा जैनियों के मन्दिर जो गिरनार पहाड़ पर हैं देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, मूंगफली का तेल, खल अत्यधिक मात्रा में पैदा होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डिया बैंक, देना बैंक, सेण्ट्रल बैंक, बड़ौदा बैंक व स्टेट आफ सौराष्ट्र बैंक आदि हैं।

विशेष—जूनागढ़ एक ऐतिहासिक नगर है। यह प्राचीनगढ़ के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस के पास ही गिरनार की पहाड़ी है। गिरनार जाते हुए रास्ते में

दामोदर कुण्ड पड़ता है जिसके पानी में यह विशेषता है कि उसमें हड्डियाँ घुल जाती हैं। यहां दरबार हाल में पुराने शस्त्र रखे हुए है। विलिंगडन डैम संध्या समय घूमने का सुन्दर स्थान है। यहाँ के चिड़ियाघर को नाज है कि यहां गिरिनार जंगल के शेर पाये जाते हैं। यह सुन्दर स्थल अत्यन्त दर्शनीय हैं।

गिरनार—गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में एक पर्वतीय स्थान गिरनार स्थित है। इस पर्वत पर असंख्य ऋषि मुनियों का आवागमन रहा है। इस पर्वत की वन्दना भाव सहित करनी चाहिये।

दर्शनीय स्थल—इस पर्वत पर लगभग ७०२० सीढ़ी हैं, करीब ३ कि० मी० की चढाई के बाद सोरठा महल आता है। यहां से आगे कोट में दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं, मन्दिरों में प्रतिमायें बहुत विशाल एवं सुन्दर हैं, यहां पर एक राजुलजी की गुफा है जहां उन्होंने तप किया था। यहां एक चरणपादुका भी है यह भगवान नेमिनाथ जी की है यहीं पर नेमिनाथ जी ने तप किया था। ये सब देखने योग्य हैं।

पोरबन्दर—महात्मा गाँधी जी का जन्म स्थान पोरबन्दर गुजरात प्रान्त के जिला जूनागढ़ में डब्लू० आर० की धौला-पोरबन्दर लाईन पर धौला से २५६ जूनागढ़ से ११५ द्वारका से १२३ व जाम नगर से २१४ कि० मी० की दूरी पर एक विशाल मण्डी व दर्शनीय स्थल के रूप में बसा हुआ है।

यातायात के साधन—पोरबन्दर में एक हवाई अड्डा है जिसका सम्बन्ध बम्बई व केशोद से है। इसके अतिरिक्त शहर में टैक्सी, ओटो रिक्शा व तांगा आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये जमुना बाई की धर्मशाला, रेलवे धर्मशाला, भोपाल जी कांजी और भांजी लाल जी की धर्मशाला हैं। इनके अतिरिक्त अनेक होटल हैं जैसे:—पैराडाइज लॉज सरदार पटेल रोड पर, पैरामाउन्ट होटल रेलवे स्टेशन के पास, एवरग्रीन होटल महात्मा गाँधी रोड पर, मनोरंजन गैस्ट हाऊस बस स्टैण्ड के सामने, अन्नपूर्णा होटल सरदार पटेल रोड पर व सरकारी गैस्ट हाऊस भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, कीर्ति मन्दिर (जहाँ गाँधी जी पैदा हुए थे) यह सुदामा की जन्म भूमि है, भरत मन्दिर, चौपाटी, समुद्री किनारा, तारा मन्दिर, महर्षि दयानन्द साइंस कालेज, आर्य कन्या गुरुकुल जिसे सेठ नानाजी कालीदास महता ने बनवाया है और जिसमें देश विदेश की सात सौ ब्रह्मचारिणियां विद्याभ्यास करती हैं और यह संस्था पश्चिम भारत के शिक्षा जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, सोने व चाँदी के काम की फैक्ट्री आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर खजूर, छुआरा, तेल वनस्पति, तेल मूंगफली व रबड़ आदि अधिक मात्रा में पैदा होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, इण्डिया बैंक, सेण्ट्रल बैंक, देना बैंक, बड़ोदा बैंक, स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र व यूनियन बैंक हैं।

वैरावल—यह नगर गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में डब्लू० आर० की राजकोट-वैरावल लाईन पर सोमनाथ से ११ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगे, आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिए नगर में कई धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, समुद्री तट पर बन्दरगाह, ६ कि. मी. दूर सोमनाथ जी का मन्दिर, अन्य मन्दिर व गिरी के जंगल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर नारियल व केला अधिक मात्रा में पैदा होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

माना बदर—यह गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में पश्चिमी रेलवे की जूनागढ़-सराडिया लाईन पर जूनागढ़ से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर ताँगा, रिक्शा आदि सवारी उपलब्ध हैं। यहाँ पर मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर महादेव का मन्दिर, विष्णु महादेव का मन्दिर, स्वामी नारायण का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर बिनौला, तेल-मूंगफली, खल आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र की एक शाखा है।

शारदा ग्राम—यह गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में डब्लू० आर० की राजकोट वैरावल लाईन पर राजकोट से १६५ कि० मी० और मांगरौल स्टेशन से ५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहाँ पर सवारी के लिये तांगा व रिक्शा आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये धर्मशाला है।

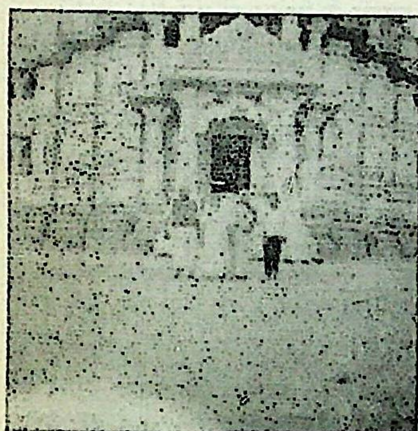
दर्शनीय स्थल—इस नगर में जूनागढ़ के नवाब का बगीचा खरीद कर उसमें सरकार तथा जनता के सहयोग से एक सुन्दर गुरुकुल प्रणाली से शिक्षा संस्थान खड़ा किया गया है जो देखने योग्य है। यहाँ गऊशाला भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर केला, आम, नारियल, चीकू, चावल, गेहूँ आदि की पैदावार होती है।

सोमनाथ—यह नगर गुजरात प्रान्त के जिला जूनागढ़ में डब्लू० आर० की वेरावल-सोमनाथ लाईन पर वेरावल से ७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह स्थान सनातन धर्मावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ स्थान है। यहां पर ताँगा, टैक्सी व रिक्शा आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर ठहरने के लिये श्री राम धर्मशाला, श्री भाटिया की धर्मशाला सुभाष पाटन में, श्री सिंहानियां की धर्मशाला व श्री कंसरा धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर सोमनाथ का मन्दिर, श्री अहिल्या बाई मन्दिर, भगवान शिव माल का तीर्थ मन्दिर, पाटन गेट, मैनपुरी मस्जिद, हांजी मंगोलिया दरगाह आदि देखने योग्य हैं।



(सोमनाथ दर्शन)

उत्पादित वस्तुयें—यहां नारियल, और केला, बहुत मात्रा में उत्पन्न होता है।

विशेष—यह एक धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थान है। यहीं भगवान कृष्ण एक हिरन की भूल में एक भील के तीर के शीकार बने थे। यहां का सोमनाथ मन्दिर जिसे महमूद गजनवी ने नष्ट किया था और जिसके अवशेष सोमनाथ व सोराष्ट्र म्यूजियम में रखे हुए हैं, अब उस मन्दिर के स्थान पर एक नवीन मन्दिर बनवा दिया गया है। नगर के पूर्व में जहां तीन नदियों का संगम हैं वहां यात्रियों के स्नान का एक पवित्र स्थान है। इसका समुद्री किनारा अत्यन्त रमणीक है।

सासनगिरी—गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में सासनगिरी भारतीय शेरों के रहने का एक मात्र स्थान है। यहाँ पहुंचने के लिये वैरावल से सड़क जाती है जिस पर जीप, स्टेशन वैगन व ट्रक चलते हैं। वैरावल से सासनगिरी ५८ कि० मी० की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये सरकारी आराम गृह व गैस्ट हाऊस हैं इसमें २० आदमी ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर तुलसीश्याम का मन्दिर जो जंगल के बीच में है और जिसमें गर्म पानी के स्रोत हैं देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त यहां पर तरह-तरह के जानवर विशेषरूप से शेर देखने को मिलते हैं।

विशेष—विशेषरूप से यह स्थान शेरों का है। यहाँ सरकार की तरफ से सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध है। प्रति आदमी ५० रुपये यहां घूमने का टैक्स लगता है यहां ऐशियन शेर भी मिलते हैं। यहां जाने के लिये सबसे अच्छा मौसम मार्च से मई तक का है उसी मौसम में शेर देखे जा सकते हैं।

जिला डांग

(गणदेवी)

गणदेवी—गुजरात प्रान्त के जिला डांग में गणदेवी पश्चिमी रेलवे की सूरत बलसाड़ लाईन पर बलसाड़ से १७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कुछ धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य समाज का आश्रम देखने योग्य है, जो आदिवासियों में अच्छा कार्य कर रहा है। इसका संचालन आर्य कुमार महासभा बड़ौदा द्वारा होता है। डांग का जंगल भी प्रसिद्ध है यहां पर बहुत सी वनस्पतियां प्राप्त होती हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर केला, चीकू, चावल, गेहूं, दाल, सुपारी तथा अनेकों प्रकार की वनस्पतियां पैदा होती हैं।

जिला पंचमहल

(गोधरा, दोहद)

गोधरा—गुजरात प्रान्त के जिला पंचमहल में गोधरा एक प्रमुख कस्बा है जो डब्लू० आर० की दिल्ली-वड़ौदा लाईन पर दिल्ली से ८६० कि० मी० की दूरी पर स्वयं एक रेलवे स्टेशन को लिये हुए स्थित है। नगर में आने जाने के लिए तांगा, रिक्शा व टैक्सी की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कई धर्मशालाएं एवं होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह पंचमहल जिले का मुख्य शहर है। आस पास बनवासी क्षेत्र बहुत सुन्दर हैं। कुछ मन्दिर तथा शहर के मध्य में जो तालाब है वह देखने योग्य हैं। यहां का आर्य समाज मन्दिर भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तम्बाकू, जीरा, चना, गेहूं, मूंगफली, कपास, दालें अधिक मात्रा में पैदा होती हैं।

दोहद—गुजरात प्रान्त में जिला पंचमहल में दोहद एक विशाल मण्डी के रूप में बसा हुआ है। यह डब्लू० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ८४३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहां मण्डी है तथा आने जाने के लिये सभी सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर श्री ओछनलाल की धर्मशाला स्टेशन के पास व श्रीधर सेठ की धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, इस क्षेत्र में जिन वनवासियों को ईसाई पादरी लोभ लालच देकर ईसाई बना लेते हैं उन्हें पुनः आर्य धर्म में दीक्षित करने का यहाँ की आर्य समाज सुन्दर कार्य कर रही है, जो देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त सुदाई माता का मन्दिर व और बहुत से मन्दिर हैं, जो अति सुन्दर बने हुए

हैं देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—पंचमहल जिले की यह एक बड़ी मण्डी है। यहां पर गेहू, चना, चावल, तुवर, उड़द, मूंग, मक्का, लोबिया, दालें, तेल, मूंगफली, गोंद और काला जीरा आदि वस्तुएं पैदा होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंचमहल डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक, दोहद को-आपरेटिव बैंक, दोहद मर्केन्टाइल को-आपरेटिव बैंक, सैन्ट्रल बैंक व अरवन को-आपरेटिव आदि बैंक हैं।

जिला बड़ौदा

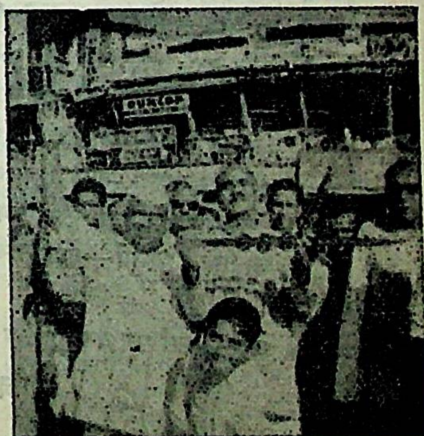
(बड़ौदा, इटोला)

बड़ौदा—गुजरात प्रान्त में बड़ौदा स्वयं एक विशाल जिला है। यह विश्वामित्री के किनारे पर बसा हुआ है। यह डब्लू० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से १०३९ कि० मी०, बम्बई से ४८२ कि० मी० और अहमदाबाद से १२० कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

यातायात के साधन—बड़ौदा में हवाई अड्डा है, जिसका सम्बन्ध देहली से है। इसके अतिरिक्त यहां पर टैक्सी, तांगा और रिक्शा आदि सभी सवारियां यहां आने जाने के लिये उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों को ठहरने के लिये श्रीरामजी राव जी की धर्मशाला, श्री चिम्मन लाल बादशाह की धर्मशाला, श्री पारसी धर्मशाला, डांडी-बोरी और नगर पालिका धर्मशाला, जैन धर्मशाला आदि धर्मशालाएं हैं। इनके अतिरिक्त अनेक होटल हैं जैसे—कृष्ण निवास न्याय मन्दिर के सामने, गार्डन लॉज लहरीपुरा में, श्रीनिवास होटल न्याय मन्दिर के पास, जगदीश लॉज खर्क बाजार में, जानकी निवास, बड़ौदा होटल, रेलवे रिटायरिंग रूम, सर्किट हाऊस, आनन्द निवास जुबली गोल्डन आदि ठहरने के स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—बड़ौदा एक विशाल स्थान होने के कारण यहां पर अनेकों वस्तुएं देखने योग्य हैं जैसे—आदर्श स्त्री शिक्षण प्रतिष्ठान, आर्य कन्या महाविद्यालय जिसके संस्थापक कर्मवीर पं. आनन्द प्रिय जी हैं। महात्मा आत्माराम अमृतसरी ने यहां अनेकों वर्षों रहकर पश्चिम भारत में वैदिक विचारधारा का प्रचार किया था, आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय, आर्य कुमार महासभा, आर्य कन्या गुद्ध



(बड़ौदा बाजार)

आयुर्वेद महाविद्यालय, आर्य विनीताश्रम, राजा का महल, म्यूजियम कमेटी बाग, नया मन्दिर, चिड़िया घर, लक्ष्मी विलास स्थान, कीर्ति मन्दिर, सूरसागर झील, कृषि अनुसंधान, खांडे राव मार्केट, गृह जादूघर, जुवेली बाग, महादेव मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, पदमी बाग, गांधी ग्राम उद्योग, बौद्ध मूर्ति, महात्मा गांधी नगर, गीता मन्दिर, टावर हाउस, आजवा तालाब, रेडियो स्टेशन, फतेहसिंह राव महाराज का स्मारक, महारानी शान्ति देवी होम, कला भवन, हाई कोर्ट, मस्जिद व दरगाह, तालाब पार्क, शाही पार्क, संग्रहालय, पिक्चर गैलरी, मकरपुरा महल, नजरबाग महल, प्रताप विलास महल, बड़ौदा के महल, कालिका माता का मन्दिर, हैवतखाँ की मस्जिद, सय्यद आलम, जामा मस्जिद, दिल्ली गेट के निकट हुथीसिंह का मन्दिर जहाँ जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों को दीवारों पर चित्रित किया गया है व बड़ौदा विश्वविद्यालय जिसमें ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट है जिसमें अनुसंधान कार्य होता है। एलैम्बिक का कारखाना जिसमें हिन्दुस्तान की मशहूर दवाईयाँ व जिसमें कोका कोला की खाली बोतल भी बनती हैं आदि वस्तुएं दर्शनीय हैं।

विशेष—बड़ौदा से २७ कि० मी० की दूरी पर रभोई नामक स्थान है। इसे पुरातत्व की दृष्टि से देखना अवश्य चाहिए। इसके चार द्वार हैं बड़ौदा, नादोंद, मोरी तथा हीरा। यहां अनेकों मस्जिदें व मकबरे आदि हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर दाल, मूंगफली-तेल व खल, विनौला आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—बड़ौदा में स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, इण्डिया बैंक, यूनियन बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, स्टेट बैंक आफ जयपुर एण्ड बीकानेर, सैन्ट्रल बैंक व कनारा बैंक हैं।

इटोला—गुजरात प्रान्त के जिला बड़ौदा में इटोला डब्लू० आर० की बड़ौदा बम्बई लाईन पर बड़ौदा से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है और नगर में आने जाने के लिए तांगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य कन्या महाविद्यालय देखने योग्य है। इस महाविद्यालय का संचालन आर्य कुमार महासभा बड़ौदा द्वारा होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां तम्बाकू, जीरा, बाजरा तथा मूंगफली की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर बड़ौदा बैंक और देना बैंक हैं।

जिला बनासकांठा

(पालनपुर)

पालनपुर—गुजरात प्रान्त के बनासकांठा जिले में पालनपुर गुजरात का एक प्रमुख स्टेशन है। यह डब्लू० आर० की देहली-अहमदाबाद लाईन पर अहमदा-

बाद से १३५ कि० मी० दूरी पर स्थित है। यहां टैक्सी, तांगा, रिक्शा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—गांधी धाम, (कच्छ को जाने के लिये यहां से गाड़ी बदलनी पड़ती है। यहाँ आर्य समाज मन्दिर हैं, लक्ष्मण टेकरी, पातालेश्वर महादेव देखने योग्य स्थान हैं, बालाराम महादेव—यह दर्शनीय स्थल पालनपुर से ८ कि० मी० दूर है बस तथा टैक्सी जाती हैं। अम्बाजी—यहां अनेक मन्दिर हैं। गुजरात तथा राजस्थान के लोगों में इस स्थान के लिए बड़ी श्रद्धा है। पालनपुर पहले नवावी लोगों की रियासत थी।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर जीरा, कपास, गेहूं, सरसों, आदि की पैदावार होती हैं।

जिला भड़ौंच

(भड़ौंच)

भड़ौंच—गुजरात प्रान्त में भड़ौंच स्वयं एक जिला है। यह नगर नर्बदा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह डब्लू० आर० की देहली-बम्बई लाईन पर बड़ौदा से ७० कि० मी० और बम्बई से ३२१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सभी सवारियां उपलब्ध मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर व नर्वदा नदी पर बना हुआ पुल देखने योग्य हैं।

उत्पादिन वस्तुएं—यहाँ पर उड़द-दाल, मूंग-दाल, लोंग, बिनौला, नारियल आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक आदि बैंक हैं।

जिला भावनगर

(भावनगर, पालीताना, बोटाद, सोनगढ़)

भावनगर—गुजारत प्रान्त में भावनगर स्वंय एक जिला है। यह ड्ब्लू० आर० की सुरेन्द्रनगर-भावनगर लाइन पर सुरेन्द्रनगर से १६७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी व सुन्दर शहर के रूप में बसा हुआ है। भावनगर में एक हवाई अड्डा है जिसका सम्बन्ध बम्बई से रहता है। यहाँ टैक्सी, रिक्शा, तांगा आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रीयों के ठहरने के लिये बखेश्वर जी की धर्मशाला, स्टेशन रोड के पास एक धर्मशाला, जैन धर्मशाला, रेवाबाई जी की धर्मशाला,

हैं। इसके अतिरिक्त होटल टोपमीस्ट डाइमण्ड चौक में, एवरग्रीन होटल घोघागेट के पास, कश्मीर होटल पथिक आश्रम के पास, गैस्ट हाऊस व राजं होटल ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, गोरी शंकर मन्दिर, गाँधी स्मृति, तख्तेश्वर मन्दिर, रूवायरी, पेईल गार्डन, लौक गेट, राजमहल, बाग, हौज, जैन मन्दिर, श्यामलदास कालेज, व्यायामशाला, आयुर्वेदिक कालेज, अजायबघर व गोगड़ी दरवाजा आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर नमक, तेल-मूंगफली, वनस्पति घी, खल, कपास, पीतल-ताबें के वर्तन व कपड़े का अधिक व्यापार होता है।

बैंक—यहाँ पर पंजाव नेशनल बैंक, सैन्ट्रल बैंक, यूनाइटिड कामर्शियल बैंक, बड़ौदा बैंक, स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र, देना बैंक, यूनियन बैंक, कनारा बैक, इण्डिया, बैंक, भावनगर डिस्ट्रिक्ट को ओपरेटिव आदि बैंक हैं।

विशेष—भावनगर १७२३ ई० में स्थापित हुआ था। यह कैम्बे की खाड़ी में एक बन्दरगाह हैं। यह औद्योगिक शहर है। यहां से कपास बाहर को जाती है। शहर में वहुत सी सुन्दर इमारतें हैं। कारखाने, अस्पताल और शिक्षा संस्थायें हैं। इजिनियरिंग कालेज व कामर्स कालेज भी हैं। यहां एक सैण्ट्रल साल्ट रिसर्च स्टेशन भी है जो देखने योग्य है।

पालीताना—जैनियों का प्रमुख तीर्थस्थान पालीतान गुजरात प्रान्त के भावनगर जिले में डब्लू० आर० की सिहोर-पालीताना लाईन पर सिहोर से २७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ एक शहर है। यहां शहर में आने जाने के लिये सभी सवारियां उपलब्ध हो जाती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास धर्मशाला, सम्बुज विहार धर्मशाला, कल्याण भवन, चन्द्रभवन धर्मशाला, नरसीनाथ और हिन्दू सार्वजनिक धर्मशाला, महावीर लाँज होटल स्टेट बैंक के पास, रैस्ट हाऊस व जैन धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर, देवी जी का मन्दिर, जैन मन्दिर पानी का कुण्ड तथा जैनियों के अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, कपास, गेहूं, जौ, की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर केवल स्टेट बैंक है।

विशेष—यहां से १ मील दक्षिण की ओर शंभुजय की पहाड़ी है जो जैनियों का तीर्थ स्थान है। शंभूजय पहाड़ी समुद्र सतह से १०७७ फीट की ऊंचाई पर है। यहां पर ८६३ मन्दिर हैं। यह मन्दिरों का शहर कहलाता है। प्रत्येक जैनी वहां का दर्शन करना चाहता है और मन्दिर बनवाना चाहता है।

बोटाद—गुजरात प्रान्त के जिला भावनगर में बोटाद एक मण्डी है जो डब्लू

आर० की अहमदाबाद-बोटाद लाईन पर अहमदाबाद से १७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर टैक्सी, तांगा, रिक्शा आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिए एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तु—यहां मिर्च, तिल, अण्डी, बिनौला, प्यांज. लहसुन आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर देना बैंक, स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र, भावनगर डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव आदि बैंक हैं।

सोनगढ़—यह गुजरात प्रान्त के जिला भावनगर में डब्लू० आर० की सुरेन्द्रनगर भावनगर लाईन पर भावनगर से १९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा व तांगा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गुरुकुल तथा नगर में धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज का सुन्दर गुरुकुल है जिसमें पाँच सौ ब्रह्मचारी विद्याध्ययन करते हैं। यहां महर्षि दयानन्द हाईस्कूल भी है। इन संस्थाओं का संचालन आर्यकुमार महासभा बड़ौदा करती है धार्मिक स्थान बड़े-बड़े मन्दिर धर्मा स्थान बने हुए हैं। ये देखने योग्य हैं। यहां जैनियों के स्थान भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, कपास, गेहूं, बाजरा की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, बड़ौदा बैंक व देना बैंक हैं।

जिला मेहसाना

(मेहसाना, ऊंझा, चाणस्मा, तारंगा सिद्ध क्षेत्र, पाटन, बहुचराजी, मोढेरा, विसनगर, सिद्धपुर, हारिज)

मेहसाना—गुजरात प्रान्त में मेहसाना स्वयं एक जिला है। यह डब्लू० आर० की देहली अहमदाबाद लाईन पर देहली से ८६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर टैक्सी, रिक्शा, तांगा आदि सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व विशाल दूध की डेरी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जीरा, सौंफ, राई, मूंग, उड़द, सरसों आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, बड़ौदा बैंक व सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक हैं।

विशेष—यहां से सौराष्ट्र, खेड़ब्रह्म, अहमदाबाद, देहली तथा पाटन को ट्रेन मिलती है।

ऊंझा—गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में ऊंझा डब्लू० आर० की दिल्ली अहमदाबाद लाईन पर एक मण्डी के रूप में बसा हुआ है। यहाँ तांगा की सवारी प्राप्त है।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर उमा देवी का मन्दिर व यहां से ५ कि० मी० दूरी पर मीरांदातार देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जीरा, सौंफ, राई, सरसों, बाजरी, दालें, रायदाना ईसबगोल, मेथी, गेहूँ, मूंग, तम्बाकू आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, बड़ौदा बैंक और देना बैंक हैं।

चाणस्मा—गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में चाणस्मा एक मण्डी के रूप में पश्चिमी रेलवे की रणुज-हारिज लाईन पर रणुज से १३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा व तांगा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जैन मन्दिर, रामजी का मन्दिर, मार्किट यार्ड के पास एक छोटा जैन मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां सरसों, अण्डी, तम्बाकू, ज्वार, बाजरा, मूंगफली काटन, मूंग, तिल आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब नेशनल बैंक व स्टेट बैंक हैं।

तारंगा सिद्ध क्षेत्र—गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में तारंग सिद्ध क्षेत्र तारंगा हिल स्टेशन से ५ कि० मी० दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये एक मील की दूरी पर पहाड़ की तलहटी के नीचे एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां एक मील दूर पहाड़ी की तलहटी में १३ प्राचीन मन्दिर हैं, पहाड़ के चारों ओर कोट हैं, यहां दो पहाड़ हैं एक कोटिशिला और दूसरा सिद्ध-शिला के नाम से प्रसिद्ध है, ये वस्तुयें देखने योग्य हैं। कार्तिक और चैत्र में यहां विशाल मेला लगता हैं।

पाटन—गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में पाटन पश्चिमी रेलवे की मेह-साना-मतराना रोड पर मेहसाना से ८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह पुराने समय की राजधानी है और यहां पर ताँगा, रिक्शा आदि की सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये गोदावरी बाई की धर्म-शाला प्रमुख है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर रानी की वाव, स्तस्त्रलिंग का सरोवर, जैन मन्दिर हेमचद्राचार्य लायब्रेरी, काली का मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर व जीमखाना व्यायाम

शाला देखने योग्य हैं।

विशेष--यह शहर राजा सिद्ध राज के समय गुजरात की राजधानी थी। कहते है कि वनवास के समय पाण्डव यहां आये थे और भीम ने हिडिम्ब नाम के राक्षस को यही मारा था।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जीरा, सौंफ,राई, सरसों, बिनौला, दालें, पटोले आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, वड़ौदा बैंक, देना बैंक, मेहसाना डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव आदि बैंक हैं।

बहुचराजी--गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में बहुचराजी डब्लू० आर० की अहमदाबाद कलोल लाईन पर अहमदाबाद से ६५ कि० मी० की दूरी पर गुजरात का यह प्रथम तीर्थस्थान स्थित हैं। अहमदाबाद से वाया कलोल होकर यहां के लिये सीधी ट्रेन जाती है। गुजरात के लोगों में इस स्थान के प्रति बड़ी श्रद्धा है।

विश्राम स्थल--यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल--यहाँ पर 'बहुचराजी माता' का एक विशाल मन्दिर है। वर्ष में एक वार पूर्णिमा को यहां पर वहुत वड़ा मेला लगता है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जीरा, गेहूँ, कपास, दालें, बाजरी आदि की पैदावार होती है।

बैंक--यहां पर वड़ौदा बैंक व देना बैंक हैं।

मोढ़ेरा—मोढेरा मण्डी गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में डब्लू० आर० की मेहसान पाटन लाईन पर मेहसाना से १८ कि० मी० व अहमदाबाद से ६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये मांतजी मन्दिर के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक छोटे बड़े मन्दिर हैं जिनमें श्री मांतजी देवी का मन्दिर प्रसिद्ध है। पुरातत्व की दृष्टि से यहां का 'सूर्य मन्दिर' तथा सूर्य कुण्ड' प्रसिद्ध हैं। 'सूर्य मन्दिर' १०२६ इ० में बनवाया गया था। इसका मुंह पूर्व दिशा की ओर है और मन्दिर से तालाब तक सीढ़ियां जाती हैं। यहाँ के मन्दिरों की कला कृति को दूर-२ से लोग देखने आते हैं। उत्तर-गुजरात के दर्शनीय स्थानों में यह प्रमुख दर्शनीय स्थान है।

उत्पादितवस्तुयें---यहाँ पर चावल, गेहूँ, कपास की पैदावार होती है।

विसनगर—गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में विसनगर डब्लू० आर० की मेहसाना-तरंगाहिल लाईन पर मेहसाना से २० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में बसा हुआ है। यहाँ रिक्शा व ताँगा की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये निवास स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, महिला विकास गृह व मजदूरों द्वारा सहकारी सीमिति से चलाया जा रहा है एक कारखाना देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जीरा, मेथी, गेहूं, बाजरा, तिल्ली, सौंफ, की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, देना बैंक, बड़ौदा बैंक, व मेहसाना डिस्ट्रिक को-ओपरेटिव बैंक हैं।

सिद्धपुर—यह नगर गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में डब्लू० आर० की देहली अहमदाबाद लाईन पर देहली से ८३१ कि० मी० की दूरी पर सरस्वती नदी के किनारे बसा हुआ है। तांगा, रिक्शा आदि की सवारी यहाँ मिलती है। यह नगर गुजरात प्रान्त की काशी नगरी कहलाता ।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर सरस्वती नदी का पवित्र किनारा, आर्य समाज मन्दिर, नीलकंठ महदेव, रुद्रमहल, अतीतों का मठ, संस्कृत विद्यालय आदि दर्शनीय स्थल हैं। कार्तिक मास का मेला यहां देखने योग्य होता हैं। लाखों लोग उस दिन सरस्वती में स्नान करते है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सफेद जीरा, सौंफ, ईसबगोल, मगज, तुवर दाल, ज्वार, बाजरा, मोठ, अण्डी, पीलीसरसों, तेल, मूंगफली आदि की पैदावार होती है। यह एक अच्छी मण्डी भी है।

विशेष—कहते हैं कि गृहत्याग करने के पश्चात महर्षिदयानन्द को उनके पिता ने यहीं आकर साधु के वेश में पकड़ा था, परन्तु रात्रि को वे पिता के पंजे से मुक्त होकर मानव जाति के उद्धार के लिये तथा सच्चे शिव की खोज में यहां से प्रस्थान कर गये और फिर कभी अपने परिवार वालों से नहीं मिल सके।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, बड़ौदा बैंक व देना बैंक हैं।

हारिज—यह नगर गुजरात प्रान्त के मेहसाना जिले में हारिज पश्चिमी रेलवे की रणुज हारिज लईन पर रणुज से ३४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यह एक बड़ा पुराना शहर है। यहां पर सभी सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के जैन मन्दिर में गुरु नामक भगवान 'नैमनाथ, हारिज से २० कि० मी० दूर जैनों का यात्रा धाम 'सरवेश्वर' जहाँ के पार्श्वनाथ भगवान बहुत बहुत चमत्कारी हैं, और यहाँ से १८ कि० मी० दूर पारण सिद्ध राज का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुये—यहाँ पर रुई, बिनौला, गेहूं, मूंग, तिलहन, बाजरा गौंद आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, बड़ौदा बैंक, और मेहसाना डिस्ट्रिक्ट को-ओपरेटिव बैंक हैं।

जिला राजकोट

(राजकोट, गोडंल, टंकारा, मोरवी, बिंछिया)

राजकोट—गुजरात प्रान्त में राजकोट एक जिला है। यह डब्लू० आर० की वीरमगाम-ओखा लाईन पर वीरम गाम से १८१ कि० मी० पोरबन्दर से १९० कि० मी० और जूनागढ़ से १०० कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां पर एक हवाई अड्डा है जिसका सीधा सम्बन्ध बम्बई से है। यहां पर टैक्सी, तांगा व रिक्शा आदि की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये पटेल और रत्न सिंह की धर्मशाला के अतिरिक्त बहुत से होटल है जैसे:-एमबैसेडर, भूपेन्द्र, धर्मराज, साधना, पैलेस, ताजमहल, महाकाली, राजदूत आदि होटल हैं। सरकारी गैस्ट हाऊस भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गांधी होम, वैंस्टसन म्यूजियम, अजी डेम, लालपरी की झील, स्टेन्डर झील, सरकारी दूध की डेरी, जुबली बाग, रेसकोर्स पार्क, जिला गार्डन, प्रेमयूमेन पार्क, आर्य समाज मन्दिर तथा दो जैन मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, तेल मूंगफली, खल, चना, बाजरा आदि की पैदावार होती हैं।

विशेष—सौराष्ट्र की यात्रा राजकोट से आरम्भ करनी चाहिये। यहां के मकान खुले हुये बड़े सुन्दर ढंग से बने हैं। यहां झील व बगीचा दोड़ मार्ग है जो आजकल घूमने के काम आता है। महात्मागांधी ने प्रारम्भिक जीवन यहाँ बिताया था। यहां राजकुमारों के लिये राजकुमार कालिज है। अब यह जनता के लिये खुल गया है। यहां एक सुन्दर पुस्तकालय व पब्लिक हाल है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक, देना बैंक, बड़ौदा बैंक, यूनाइटिड बैंक, और स्टेट आफ सौराष्ट्र बैंक, सैन्ट्रल बैंक हैं।

गोंडंल—गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट में गोंडल डब्लू० आर० की राजकोट वीरावल लाईन पर राजकोट से ४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा तांगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर स्वामी नारायण मन्दिर, राजमहल, आजीडेम, और भुवनेश्वरी रस औषधालय देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तेल मूंगफली, खल, गेहूँ, कपास आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र, देना बैंक व यूनाइटिड कामर्शियल बैंक, सैन्ट्रल बैंक हैं।

टंकारा—गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट में महर्षि देव दयानन्द की जन्म

भूमि टंकारा डब्लू० आर० की राजकोट मोरवी लाईन पर राजकोट से २५ मील मोरवी से १९ कि० मी० तथा बांकानेर से ३० कि० मी० दूरी पर स्थित है। टंकारा स्वयं रेलवे स्टेशन हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये आर्य समाज मन्दिर व महर्षिदयानन्द स्मारक स्थल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रवंतक महर्षिदयानन्द की जन्म भूमि है। सन् ३५ में यहां आर्य समाज मन्दिर की स्मारक के रुप में स्थापना हुई थी, जिसमें ब्रह्मचर्य आश्रम, योग आश्रम, पुस्तकालय, वाचनालय, अतिथिगृह, व्यायाम शाला चलाये जा रहे हैं। इसके संचालक तथा प्रधान आचार्य भगवान देव शर्मा हैं। सन् ५९ में नाना जी कालीदास महता ने मोरवी नरेश का महल खरीद कर सुन्दर स्मारक की स्थापना की जिसके प्रधान सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री महरचन्द महाजन तथा मन्त्री श्री पं० आनन्द प्रिय जी ने बड़ी योग्यता से स्मारक कार्य को आगे बढ़ाया। इस समय यहां छात्रावास, गौशाला, पुस्तकालय, अतिथिगृह यज्ञशाला हैं। स्थानीय शिवालय जहां महर्षि दयानन्द को बोध हुआ था तथा उनकी जन्म भूमि देखने योग्य है। टंकारा से ११ कि० मी० दूर बांकानेर जाते जड़ेश्वर का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, गेहूं, तिल, बाजरी, कपास, जीरा आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र है।

मोरवी—गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट में मोरवी पश्चिमी रेलवे की राजकोट मोरवी लाईन पर टंकारा से १९ कि० मी० दूरी पर स्थित है। यहां पर रेड़े व तांगा मुख्य सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर झूलता पुल, राजमहल, केसर बाग, शंकर आश्रम में नानासाहब पेशवा की समाधि, मणी मन्दिर, व यहां का आर्य समाज मन्दिर बहुत सुन्दर व देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौ, की अधिक पैदावार होती हैं।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक है।

बिछिया—गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट में बिछिया नानपारा कतरनिया घाट लाईन पर नानपारा से ६४ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ पर ताँगा रिक्शा आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्रामस्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का जैन मन्दिर और यहाँ से ११ कि० मी० दूर सोमनाथ का मन्दिर देखने योग्य मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मिर्च, तेल, तिल, अण्डी, खाद, कपासिया देशी घी, मेथी आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र व डिस्ट्रिक्ट सैन्ट्रल को-ओपरेटिव बैंक हैं।

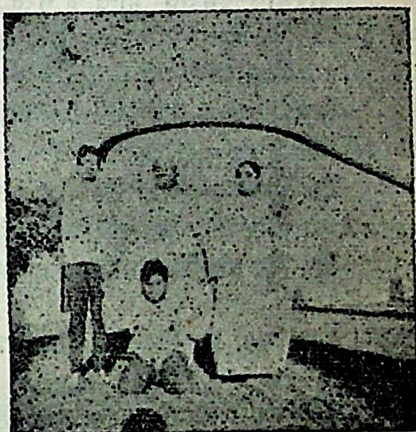
जिला सूरत

(सूरत, नवसारी, पारड़ी, वापी,)

सूरत—गुजरात प्रान्त में सूरत स्वयं एक जिला है। यह डब्लू० आर० की देहली बम्बई लाईन पर देहली से ११२१ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां पर सभी सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर सैन्ट्रल होटल स्टेशन के पास, विजय लाँज, जैन धर्मशाला चन्दावाड़ी में, तथा रेलवे रिटायरिंग रूम हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर पहले पोर्चोगेजों का चर्च था जिसे खरीद कर आर्य समाज मन्दिर बनाया गया। गांधी जी ने इस समाज मन्दिर का उद्‌घाटन किया था जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त सलमे के सितारे म्यूजियम, जवाहर उद्यान प्रदर्शनी, फव्वारा वाला बाग, चौपाटी, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय दिगम्बर जैन मन्दिर, कटरा गाँव में श्री विद्यानन्द जी की चरण पादुकायें व समाधि, महुआगाँव में श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ का भव्य मन्दिर है जिसमें प्राचीन प्रतिमायें और प्राचीन सचित्र ग्रंथ भी हैं, यहाँ भट्टारकीय गद्दी भी है जिसे प्रत्येक वर्ण के लोग पूजते है, धनामल शिल्क मिल, आयुर्वेद कालिज, गाँधी पार्क, तथा ३ कि० मी० लम्बा बाजार देखने योग्य है।



चौपाटी दृश्य, सूरत

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर बिनौला, कपास, तेल-मूंगफली, खल, तेल तिल तुवर दाल आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डिया बैंक, यूनाईटिड कामर्शियल बैंक, यूनियल बैंक, बड़ौदा बैंक, देना बैंक व सूरत डिस्ट्रिक्ट को ओपरेटिव बैंक हैं।

विशेष—व्यापार तथा यात्रा की दृष्टि से एक उत्तम स्थान है। मराठा राज्य के संस्थापक शिवाजी ने १६१५ ई०. में इस नगर पर आक्रमण किया था। यह एक औद्योगिक नगर भी है। यहां पर रेशम का अधिक उत्पादन होता है।

नवसारी—गुजरात प्रान्त के जिला सूरत में नवसारी डब्लू० आर० की

देहली-बम्बई लाईन पर देहली से ११५१ कि० मी० तथा सूरत से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सभीसवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य है। नवसारी से ११ कि० मी० की दूरी पर अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित 'सूपा गुरुकुल' एक आदर्श लड़कों का गुरूकुल है। यहाँ इस समय ६ सौ ब्रह्मचारी विद्या अभ्यास करते हैं। इसके प्रधान डा० खण्डु भाई देसाई तथा आचार्य पं० श्रुत बन्धु जी शास्त्री हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तेल मूंगफली की अधिक पदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाइटिड कार्मसियल बैंक, देना बैंक व बड़ौदा बैंक सैन्ट्रल बैंक हैं।

पारड़ी—गुजरात प्रान्त के सूरत जिले में पारड़ी डब्लू० आर० की देहली बम्बई लाईन पर देहली से १२०० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में बहुत अच्छा विश्राम स्थल है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर श्री पं० दामोदरदास जी द्वारा स्थापित 'स्वाध्याय मण्डल देखने योग्य हैं। यहां से वैदिक साहित्य का बहुत सुन्दर प्रकाशनहोता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, गेहूँ, चना, जौ, आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, भील वाड़ा बैंक, व पारड़ी प्यूपिल्स को-आपरेटिव बैंक हैं।

वापी—गुजरात प्रान्त के सूरत जिले में वापी डब्लू० आर० की देहली-बम्बई लाईन पर देहली से १२१६ कि० मी० की दूरी पर नदी तट पर बसा हुआ है। यहाँ रिक्शा, ताँगे की सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में बहुत सी धर्मशाला व निवास स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नदी तथा कुछ मन्दिर देखने के योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, जौ, चना, आम व चीकू की अधिक पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर बड़ौदा बैंक है।

जिला साँवर काँठा
(हिम्मतनगर)

हिम्मतनगर—गुजरात प्रान्त के जिला साँवर कांठा में हिम्मत नगर डब्लू० आर० की अहमदाबाद-छोटा ऊधमपुर लाईन पर अहमदाबाद से ५५ कि० मी० की

दूरी पर स्थित है। यहाँ रिक्शा, तांगे, टैक्सी की सवारियाँ उपलब्ध हैं। यह इडर नरेश की राजधानी रही है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला तथा होटल आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का राजमहल तथा कुछ मन्दिर देखने योग्य हैं। यहां से इडर कुछ मील दूर है। आयुर्वेद की औषधियों की दृष्टि से इडर के जंगलों का बड़ा महत्व है। इडर से २४ कि० मी० की दूरी पर 'खेड़ा ब्रह्मा' है। यहाँ ब्रह्मा जी का मन्दिर है। पास ही में हिरण्याक्षी कोसम्बी तथा भीमाक्षी नदियों का त्रिवेणी संगम है। कहते हैं यहाँ ब्रह्मा जी ने यज्ञ तथा भृगु ऋषि ने तप किया था। इस लिये इस क्षेत्र को 'भृगु क्षेत्र' भी कहते हैं, जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंगफली, कपास, जीरा, आदि की पैदावार होती है।

जिला सुरेन्द्रनगर

(सुरेन्द्रनगर चोटीला,सायला)

सुरेन्द्रनगर—गुजरात प्रान्त में सुरेन्द्रनगर एक जिला है। यह डब्लू० आर० की मेहसाना-ओखा लाईन पर मेहसाना से १३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। बड़ी लाईन से यहां के लिये रोडवेज जाती है।रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये यहां स्टेशन के पास एक बड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर माता जी का मन्दिर, पुराने राज्य का महल, पुराना मन्दिर, भुवनेश्वर मन्दिर, नमक का कारखाना, मानव मन्दिर, आर्य समाज, गांधी स्मारक व बांध बहुत सुन्दर हैं जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, बिनौला, मूंगफली, की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक और पंजाब नेशनल बैंक व सैन्ट्रल बैंक हैं।

चोटीला—गुजरात प्रान्त के जिला सुरेन्द्र नगर में चोटीला डब्लू० आर० की थान-चोटीला लाईन पर थान ये २१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये पहाड़ की तलहटी में में एक धर्मशाला है और साधुओं के ठहरने के लिये एक धर्मशाला राम मन्दिर के अन्दर है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चामुण्डा माता का मन्दिर, राममन्दिर जहां साधुओं के लिये सदावृत लगा रहता है। देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से ८ कि० मी० की दूरी पर एक कुण्ड है जिसमें हमेशा पानी भरा रहता है। इस कुण्ड में

स्नान करने की महिमा है ।, यहां से ८ कि० मी० दूर एक सूरज देवता मन्दिर है ।, ८ कि० मी० पर एक महादेव का मन्दिर है वहां गुफा में श्री सावित्री की मूर्ति है । इस मूर्ति पर बारह मास ऊपर की शिला में से जल टपकता रहता है । यहां से १० कि० मी० दूर एक गांव में एक बड़े भगत की समाधि है । यहां से १६ कि० मी० एक गांव हैं । जिसे द्रोपद राजा की राजधानी कहा जाता है । कहते हैं यही पर पाण्डवों का मच्छवेध हुआ था । ये सारी वस्तुयें देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, देसी घी, तिल-, मेथी, कपास, ज्वार बाजरा आदि की पैदावार होती है ।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र है ।

सायला—गुजरात प्रान्त के जिला सुरेन्द्र नगर में सायला जोरावर नगर-सायला लाईन पर जोरावर नगर से २८ कि० मी० और अहमदाबाद से राजकोट-ओखा लाईन पर स्थित है । यहां पर रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल—यहाँ गाव में श्री 'बालजी महाराज' का बहुत अच्छा मन्दिर है, भारतवर्ष के बहुत से यात्री यहां आते हैं जिन्हे दोनों समय खाना मिलता है । और ठहरने की भी अच्छी सुविधा है । यहां पर और अनेक प्रसिद्ध मन्दिर हैं जो देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर कपास, बिनौला, रुई आदि की अधिक पैदावार होती है ।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ सौराष्ट्र, और सुरेन्द्रनगर डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक हैं ।

विशेष—आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द अपने गृह का त्याग करके जब यहां पहुंचे तब अपने वस्त्र तथा सोने के आभूषणों का यहीं पर त्याग करके भगवा वस्त्र धारण करके ब्रह्मचारी 'शुद्ध चैतन्य' बने थे । यहां 'लाला भक्त' का स्थान भी प्रसिद्ध है ।

अम्बाजी—गुजरात प्रान्त में अम्बा जी राजस्थान व गुजरात के बार्डर पर स्थित है । यह आबू रोड से १९ कि० मी० की दूरी पर हैं यहाँ रिक्शा, तांगे की सवारियाँ मिलती हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये सीतापुर वालों की धर्मशाला, बम्बई वालों की धर्मशाला व ज्वालापुर वालों की धर्मशाला ।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अम्बा जी का मन्दिर देखने योग्य है । मन्दिर सुबह को ८ बजे से ११॥ बजे तक, दोपहर को १। बजे से ४। बजे तक, रात्रि को ७ बजे से ९ बजे तक खुलता है ।

विशेष—वहां के निवासियों को छोड़कर बाकी यात्रियों से मन्दिर में जाने के लिये ४० पैसे प्रति आदमी टिकट लगता है ।

अहमदाबाद से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि०मी०
आनन्द	६५	ओखा	४६३	ईडर	११६
कानालूस	३५२	खेडब्रह्मा	१४२	गाँधी ग्राम	२०
गोडल	२८८	जामनगर	३२२	जूनागढ़	३४६
जेंतलसर	३२४	टंकारा	२५४	तलोद	५३
धधूंका	१२८	धोलका	६५	नडियाद	४६
नन्डोल डेगाम	२८	पाटन	१०५	बडौदा	१००
बावला	५२	बोटाद	१७७	बाकानेर	२०४
वेरावल	४३२	मेहसाना	६८	मोरवी	२२६
राजकोट	२४६	रेणुज	६२	वडाली	१३१
वीरमग्राम	६५	शापुर	३६१	सलाल	७४
सुरेन्द्रनगर	१२८	सिद्धपुर	१०४	सोमनाथ	२६
हिम्मतनगर	८८				

मध्य प्रदेश

खजुराहों के मन्दिर विशाल,
हीरे पन्नों की खान जहाँ.
किला ग्वालियर, सांची का स्तूप,
रखते ऐतिहासिक शान जहाँ.

जिला इन्दौर

(इन्दौर, बड़वानी, बड़वाहा, महू, सिदवर कूट)

इन्दौर—इन्दौर मध्य प्रदेश का एक प्रसिद्ध जिला है। यह अजमेर-खन्डवा लाईन पर स्थित है। यह अजमेर से ४९४ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर एक बड़ा (डब्लू० आर०) स्टेशन है। शहर में यातायात की दृष्टि से सिटी बस, रिक्शा, ताँगा व टैक्सी आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों को विश्राम व ठहरने हेतु अत्यन्त मात्रा में सुविधा प्राप्त है। यहाँ पर सेठ हुकम चन्द की धर्मशाला स्टेशन से २ फर्लांग की दूरी पर स्थित है। इसके पास ही टीकम चन्द जी की धर्मशाला स्टेशन से १ एक फर्लांग की दूरी पर स्थित है। शहर में दयाल जी की धर्मशाला, घीसालाल मोदी की धर्मशाला, जगन्नाथ नारायण जी की व ओंकार की धर्मशाला भी स्थित है। उपरोक्त धर्मशालाओं के साथ एक धर्मशाला खजूरी बाजार में चुन्नीलाल जी की भी है।

धर्मशालाओं के साथ-२ यहां बहुत से होटल हैं जैसे:—बोम्बे होटल, न्यू जनता होटल, पंजाब होटल, स्टैण्डर्ड होटल, सेण्ट्रल होटल, चन्द्र लोक होटल, सेण्ट्रल होटल में टेलीफोन की भी सुविधा है जिसके नम्बर ये हैं:—७०४०, ६२७१, ३२०४१, ३२०४२ ३५७१४!

दर्शनीय स्थल—इन्दौर केवल होटल में ही अधिक नहीं बल्कि दर्शनीय स्थानों के कारण भी यह प्रसिद्ध है। इसमें विभिन्न दर्शनीय स्थान हैं:—जैन काँच का मन्दिर, आर्यसमाज मन्दिर, छत्तरी बाग. पानी की उच्च टंकी, गुरुकुल विद्यालय, सेठ हुकम चन्द का शीश महल, इन्दौर विश्व विद्यालय (जिसकी स्थापना १९६४ में हुई जिसके अर्न्तगत १४ उच्च विद्यालय और भी हैं), जवेरी बाग, जैन महाविद्यालय, राज महल,

नौ जैन मन्दिर, होल्कर कॉलिज, डाकखाना, महाराजा थ्येटर हाल, रेवा नदी, इन्द्र भवन, हवाई अड्डा, गुरुद्वारा तोपखाना, इमली साहब गुरुद्वारा।

यहां से ओंकारेश्वर साँधाता ६६ कि० मी०, मन्दसौर २०३ कि० मी०, बरवानी १७५ कि० मी०, मांडू १०० कि० मी० तथा उज्जैन ५२ कि० मी० आदि शहर दूरी पर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज मूंग, मक्का, उड़द, लोभिया, बाजरा मोठ, मटर, ज्वार, गेहूँ, पिस्सी, चना-देशी, जौं, धान, चावल, मटर, तिवाडा दाल, प्रत्येक दालें, चुनी-भूसी, मूंगफली, अलसी तिल्ली, सरसों, सींगदाना, अरण्डी, प्रत्येक तेल, खल, मेथीदाना, धनिया, मिर्च-लाल, जीरा, राई, सौंफ, हल्दी, सनबीज अजवायन, इमली, खसखस, राजगिरा, मोमधन, खाँडसारी, सुपारी, नारियल।

इन्दौर दर्शनीय स्थल, विश्राम स्थल एवं उत्पादित वस्तुओं की प्रसिद्धि के साथ-साथ संस्कृत पाठशालाओं के लिये भी प्रसिद्ध है।

केसरवानी संस्कृत पाठशाला, परोपकारिणी पाठशाला, दुर्वासा संस्कृत पाठशाला, हिन्दू महासभा संस्कृत पाठशाला, गुरुचरन लाल संस्कृत पाठशाला, गौरीशंकर स्मारक संस्कृत पाठशाला, श्री रामाश्रम सन्यासी संस्कृत पाठशाला, श्री ब्रह्म ऋषि आदर्श संस्कृत पाठशाला, राधा कृष्ण संस्कृत विद्यालय, सुबोधिनि संस्कृत पाठशाला, श्री कृष्ण चन्द्र संस्कृत विद्यालय, आदर्श संस्कृत पाठशाला, अंजनी कुमार संस्कृत पाठशाला, धर्मज्ञानों पदेशक पाठशाला आदि।

बैंक—इन्दौर सभी प्रसिद्धि के साथ-२ व्यापारिक कार्य की सुविधा हेतु बैंको की शाखा के लिये भी प्रसिद्ध है। यहां पर इन बैंकों की शाखायें स्थित हैं:—

स्टेट बैंक सेण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट ऑफ बीकानेर, यूनाईटेड कॉमिश्यल बैंक इन्दौर एवं अन्य !

बड़वानी—यह इन्दौर जिले का एक प्रसिद्ध शहर है जो कि मध्य प्रदेश प्रान्त के अन्तंगत आता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये दो धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—बड़वानी में एक बड़ा दिगम्बर जैन मन्दिर है इसमें बोडिंग भी है। यहाँ की कचहरी व राजमहल भी देखने योग्य है।

बड़वाहा—यह नगर जिला इन्दौर के अन्तंगत आता है। यह अजमेर-खण्डवा लाईन पर स्थित है। यहां पर एक रेलवे स्टेशन (डब्लू० आर० भी है। यह इन्दौर से ४० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। इस शहर में रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह शहर दर्शनीय स्थानों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां एक कुंड 'नागेश्वर' बहुत प्रसिद्ध है। बड़वाहा से ११ कि० मी० की दूरी पर ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर है इनके पास ही जैनियों का तीर्थ 'सिद्धवरकूट है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मुख्य रूप के रुई, कपास, घी. ज्वार, मक्का का उत्पादन होता है।

महू—'यह' इन्दौर जिले के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध शहर है यहां पर एक रेलवे जंकशन (डब्लू० आर०) है। यह अजमेर खण्डवा लाईन पर बसा हुआ है। यह अजमेर से ५१५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। आने-जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिये रिक्शा ताँगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये तीन अच्छी धर्मशाला है जिनमें से एक लक्ष्मीनरायण की धर्मशाला 'गांधी' स्ट्रीट में हैं हिन्डोनिया धर्मशाला व नारनौली नाम की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में लक्ष्मी नारायण मन्दिर, गोपाल मन्दिर, काली मावा का मन्दिर तथा स्वर्ण मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज मूंगफली, गेहूं, चना, अलसी, उड़द, काला, महुवा, ज्वार, इमली व आलू, कुटू, सीताफल, प्याज आदि है। यहां एक मण्डी भी है।

बैंक—इस शहर में पंजाब बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ इण्डिय आदि की शाखायें स्थापित हैं।

सिद्धवरकूट—'इन्दौर' जिले में एक यह भी प्रसिद्ध शहर है।

विश्राम स्थल—यहां पर व्यक्तियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें भी हैं।

दर्शनीय स्थल—इस शहर का महत्व इसलिये अधिक है क्योंकि यहाँ से ३॥ करोड़ मुनिराज दो चक्रवर्ती और एक कामदेव ने मोक्ष प्राप्त किया था। यहां के जंगल में एक मन्दिर है। जंगल में चारों ओर कांटे हैं। और अन्दर आठ जैन मंदिर है।

जिला उज्जैन

(उज्जैन, महीदपुर)

उज्जैन—यह मध्यप्रदेश प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। यह भोपाल वाली लाईन पर बसा हुआ है। यहां का रेलवे स्टेशन डब्लू० आर० सुविधाजनक है। यह भोपाल से १८४ कि० मी० की दूरी पर है। यात्रियों की सुविधा हेतु यहां रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ धर्मशालायें निर्मित है।

फतेहपुर वालों की धर्मशाला, (शिप्रा नदी के किनारे), खेमराज किशन दास की धर्मशाला, (हरि सिद्धी दरवाजे के पास), पुरी अग्रवाल की धर्मशाला, विचराज की धर्मशाला, वेन कटेश्वर धर्मशाला, महाराज ग्वालियर की धर्मशाला, स्टेशन के पास, सुखिया राजनगर पालिका की सराय, जैन धर्मशाला (नमक की मण्डी)।

धर्मशालाओं के साथ-साथ विभिन्न होटल भी यहां स्थित हैं :—

ग्रांड होटल फ्रीगंज, सवीरा होटल एण्ड रेस्टोरैन्ट, ताजमहल होटल, शेरे पंजाब होटल।

दर्शनीय स्थल—उज्जैन एक धार्मिक स्थान है। लोग दूर-दूर से यहां धर्म स्थलों को देखने आते हैं।

महाकाल का मन्दिर, गोपाल मन्दिर, मगल नाथ का मन्दिर, महागणेश का मन्दिर, गोपाल मंदिर (पार्क), जंतर महल, गढ़वाल देवीमन्दिर, वेगम की मस्जिद दुर्ग जामा मस्जिद, कमला पार्क, काशीपुर घाट, त्रिवेनी भवन, हर सिद्धि देवी का मन्दिर, आश्रम सांदीपन, वीना की मस्जिद, विक्रम विश्वविद्यालय (जिसकी स्थापना १९५७ में हुई व इसके अन्तर्गत ३५ विद्यालय आते हैं, भर्तृहरि गुफा, काल भैरव, सिद्ध वट, वैद्यशाला, शिप्रानदी, शमशान भूमि, प्राचीन खण्डहर, आकाश लोचन, भैरव मठ।

उज्जैन से ३६ कि० मी० की दूरी पर एक देवसदेवी का मन्दिर तथा भक्सी जैन मन्दिर ३८ कि० मी० की दूरी पर उपस्थित है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से ज्वार, गेहूँ, चना, रूई मक्का, अलसी, मूंगफली, तिल; गुड़; उड़द मूंग; दालें आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर तीन कपड़े की मिलें भी हैं।

बैंक—इस नगर में बैंकों की शाखायें स्थापित हैं। स्टेट बैंक, यूनाईटिड कामर्शियल बैंक, सैण्ट्रल बैंक, डिस्टिकट कोपरेटिव बैंक ऑफ इन्दौर, पंजाब नेशनल बैंक।

यहां पर संस्कृत पाठशाला, वलवन्त संस्कृत पाठशाला भी हैं।

महीदपुर—यह दिल्ली बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से डब्लू० आर० ६७५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर एक मण्डी भी है जोकि महीदपुर रेलवे-स्टेशन से २० कि० मी० की दूरी पर है। यहां का यातायात साधन रिक्शा-ताँगा ही है। यह जिला उज्जैन का प्रसिद्ध शहर है।

विश्राम स्थल—इस शहर में भी अन्य शहरों की भांति यात्रियों के ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं जैसे—गोपाल धर्मशाला, पोरवाल धर्मशाला, जैन धर्मशाला मूलचन्द दयानन्द की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में कई दर्शनीय स्थल है जोकि इसकी प्रसिद्धि को बढ़ाते हैं जैसे—

आर्य समाज मन्दिर. जैन, शैव, वैष्णव धर्म के लगभग २५ मन्दिर, हैं। यहाँ से ४ कि. मी. दूर धनवंतरी महादेव का अत्यंत प्राचीन मंदिर है तथा एक पिकनिक प्लेस भी है। यहां से ३ कि. मी. की दूरी पर पश्चिम में शिप्रानदी के तट धूर्जटेश्वर महादेव का भी मन्दिर है। कई प्राचीन दुर्ग है जहां जैनों के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ का प्राचीन मंदिर तथा भस्मीटेकड़ी है। कहा जाता है कि यहाँ

अर्जुन पुत्र वीर बब्रूवाहन ने यज्ञ किया था जिसकी भस्मी अभी भी खुदाई करने से प्राप्त हो जाती है।

उपरोक्त सभी के अलावा कई धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां की मुख्य उपज ज्वार, मूंगफली, चना, गुड़, गेहूं, बाजरा, मक्का, उड़द, मूंग, मैथी, तिल आदि है।

बैंक—यहाँ स्टेट, पंजाव, सैण्ट्रल-वैंक की शाखा भी स्थापित हैं।

जिला गुना

(गुना, अशोकनगर, ईसागढ़, चन्देरी)

गुना—जिला उज्जैन के अन्तर्गत आता है। यह वीना कोटा लाईन पर स्थित है। यह वीना से ११६ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है। शहर में तांगा-रिक्शा, टैक्सी आदि की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल---यहाँ पर एक धर्मशाला स्टेशन से १ फर्लाउ पर स्थित है।

दर्शनीय स्थल--यहां का शिवजी का मन्दिर, हनुमान का मंदिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं---इस नगर में ज्वार' अलसी, धनिया' चना' गेहूँ' मक्का सरसों-गुड़' मैथी-मसूर' मूंग, धान-तिल्ली, जीरा, गौंद, शहद इमली आदि की उत्पादन विशेष रूप से होता है।

बैंक--यहाँ पंजाव नेशनलवैंक, स्टेट वैंक आफ इण्डिया आदि की शाखा स्थापित है।

अशोकनगर—यह गुना जिले में स्थित है। यह वीना-कोटा लाईन पर वीना से २९८ कि० मी० की दूरी पर स्थापित है। यहाँ रिक्शा, आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के लिये हनुमान मन्दिर धर्मशाला, हरिजन धर्मशाला, चिम्मनलाल की धर्मशाला स्थापित है।

दर्शनीय स्थल—अशोक नगर में आर्य समाज मन्दिर, हनुमान मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर. तार वाले बाला जी का मन्दिर, अष्ठ भुजी माता का मन्दिर, सिंह सभा गुरुद्वारा आदि प्रसिद्ध स्थान है। अशोक नगर में ३० कि० मी० दूर आनन्दपुर में वैशाखी का मेला भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन ज्वार पीली, चना, मूंग, सरसों, अलसी, घी आदि है। यहां पर एक मंडी भी है।

बैंक—अशोक नगर में पंजाब नेशलन, स्टेट बैंक आफ लाहौर भी स्थापित हैं।

ईसागढ़—यह 'गुना' जिले का एक प्रसिद्ध शहर है यहां रेलवे स्टेशन डब्लू० आर०) भी है। यह बीना-कोटा लाईन पर स्थित है। यहाँ की मण्डी अशोक नगर से ३७ कि० मी० की दूरी पर है। आने जाने हेतु रिक्शा, टैक्सी आदि की सुविधा भी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गुरु महाराज की धर्मशाला, राठौर धर्मशाला तथा जैन धर्मशाला स्थापित है।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में संकट मोचन, गुरुमहाराज का मन्दिर, विष्णु भगवान का मन्दिर, वूदावाई का मन्दिर, जैन मन्दिर, राम मन्दिर घाट पर, राम जानकी मन्दिर, जशोदावाई मन्दिर, महादेव मन्दिर, शंकर मन्दिर, सिंह खोह, ग्राम खोह, केर खोह, देवकानी खोह आदि दर्शनीय स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूँ, चना, ज्वार, मसूर, मूंगफली, सरसों, तिल, अम्बाड़ी बीज, घी, बीड़ी के पत्ता आदि है।

बैंक—यहां तो कोई बैंक नहीं है परन्तु बैंक सम्बन्धी सभी कार्य अशोकनगर से होते हैं।

चंदेरी—यह जिला गुना का प्रसिद्ध नगर है जोकि ललितपुर स्टेशन डब्लू० आर० से २० कि० मी० की दूरी पर हैं। यहां जाने की सुविधा ललितापुर से मोटर तागें रिक्शा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने ने लिये यहाँ एक धर्मशाला भी है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर दर्शनीय स्थान प्रसिद्ध है जो कि मुख्य रूप से है। यहाँ बीन मन्दिर जिनमें से एक में वर्तमान चौवीसी के अलग २ शिखर वन्द मन्दिर हैं। यहाँ से २ कि. मी. दूर पहाड़ पर गुफा में कार्योत्सर्ग प्रतिमा है। यहां के हाटकपुरा ग्राम में एक मन्दिर है।, चन्देरी से २० कि. मी. दूर थोवन जी में १ जैन मन्दिर है। १० २ गज की कई ऊंची प्रतिमायें हैं।

जिला ग्वालियर

(ग्वालियर, मुरार)

ग्वालियर—मध्य प्रदेश प्रान्त का एक प्रमुख शहर है। यह दिल्ली वम्बई लाइन पर दिल्ली से ३१५ कि० मी० (सी० आर०) की दूरी पर है। यहाँ यातायात की सुविधा के हेतु सिटी बस, टैक्सी, स्कूटर, तांगा, रिक्शा आदि का बहुत सा प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये पूर्ण सुविधा उपलब्ध है शहर में धर्मशालायें है—श्री कृष्ण धर्मशाला (स्टेशन से १ फर्लांग पर) रामकृष्ण श्री कृष्ण विधी चन्द की धर्मशाला, श्री राम कृष्णा की धर्मशाला, महावीर व रघुवीर की धर्मशाला, हैं धर्मशालाओं के साथ २ यहां कई होटल भी है जैसे— गूजरी होटल, लक्ष्मी होटल, संध्या की छावनी। अशोका होटल (स्टेशन के पास) मन मन्दिर होटल, अलंकार होटल (हास्पिटल रोड) रणजीत होटल।

दर्शनीय स्थल— मध्य प्रदेश में ग्वालियर दर्शनीय-स्थलों के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। टैली का मन्दिर, शाहसवाहु का मन्दिर, कई आर्य समाज मन्दिर, सूरज

पैलेस, मोती महल, तानसेन की गुम्बद, रानी झांसी की यादगार, मछली पकड़ने व नाँव में तैरने का स्थल, रमना बांध (१० कि० मी० दूर) चिड़िया घर, अजायब घर, जीवाजी विश्व विद्यालय (स्थापना १९६४ कालिज २५, हवाई अड्डा ग्वालियर का भव्य किला रेलवे स्टेशन से ही यात्री का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करता है। चेतरोज का सिंधियाँ रूलरस। यहाँ पूजा के भी विभिन्न मन्दिर हैं। सनातन धर्म मन्दिर, गोपाल मन्दिर, गीता मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, महादेव मन्दिर सिक्खों का गुरुद्वारा, राम मन्दिर, मान मन्दिर।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, चावल, बाजरा, मक्का, तेल तिल्ली, मूंग, तिलहन, मूंगफली आदि के उप्पादन के लिये प्रसिद्ध है। यहां की प्रमुख मण्डी इन्द्र जंज लकसर में है जो कि स्टेशन से लगभग २ कि० मी० की दूरी पर है।

विशेष—यहां स्टेशन से २ मील दूर चम्बा बाग है। यहाँ चेताल्य कुल २० है लकसर से ग्वालियर २ कि० मी० की दूरी पर है। रास्ते में पहाड़ पर बड़ी-बड़ी गुफायें हैं। यहाँ के किले की मूर्तियाँ देखने योग्य है। यहाँ का किला बहुत प्राचीनतम है। यहाँ का राजावाडा देखने योग्य है। इन सभी के साथ २ यहां पर कपड़े के मिलें भी हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक, तथा यूनाइटेड कामर्शियल बैंक की शाखा स्थापित है।

मुरार—मुरार ग्वालियर जिले का एक महत्वपूर्ण शहर है जो कि ग्वालियर से ५ कि० मी० दूर दिल्ली बम्बई वाली लाईन पर स्थित है। यहाँ एक रेलवे स्टेशन सी० आर० भी है। यतायात के लिये यहां रिक्शा, टैक्सी, ताँगा आदि सवारी की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये यहां अधिक मात्रा में धर्मशालायें है जिनके नाम इस प्रकार हैं :—गिरराज धर्मशाला दौलगत गंज लश्कर, तेरापंथी धर्मशाला, रामकृष्ण धर्मशाला इन्द्रगंज लश्कर, महावीर धर्मशाला नई सड़क लश्कर, ओसवाल धर्मशाला सर्राफागंज बाजार लश्कर, श्री कृष्ण धर्मशाला स्टेशन ग्वालियर, बुद्धि चन्द धर्मशाला स्टेशन ग्वालियर, उषा किरन होटल पैलेस ग्वालियर दरबार।

दर्शनीय स्थल—मुरार अपने दर्शनीय स्थलों के कारण भी ग्वालियर जिले में प्रसिद्ध है। यहां के निम्नलिखित स्थल देखने योग्य है किला, मान मन्दिर, गुजरी महल जय विलास महल, मोती महल, रिगरा का बांध, सनातन धर्म मन्दिर, नूतन विष्णु मन्दिर, छत्री पार्क, महाराज वाड़ा, गाँधी पार्क, चिड़िया घर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इस नगर में मुख्यरुप से गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मसूर, चावल, सरसों, अलसी, अण्डी, तिल, जीरा आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटिड कर्मिशयल बैंक आदि की शाखा स्थापित हैं।

जिला छिन्दवाड़ा

छिन्दवाड़ा—यह नगर मध्य प्रदेश प्रान्त का एक जिला है और यह एक प्रसिद्ध शहर भी है। यह नागपुर-नैनपुर वाली लाईन पर नागपुर से ४३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहाँ पर यातायात की दृष्टि से टैक्सी, रिक्शा व ताँगा आदि की सुविधाउपलब्ध है। यह एस० ई० आर० के अन्तर्गत है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये यहां प्रमुख धर्मशालायें हैं। राजा गोकुल दास की धर्मशाला, नरसिंह दास की धर्मशाला (स्टेशन के पास) सुख लाल चन्द जैन की धर्मशाला पाटनी बाजार में, शहर से एक मील की दूरी पर १ अन्य धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—छिन्दवाड़ा में आर्य समाज मन्दिर, तथा अन्य ८ मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर हरी चिरौंजी गौद, अमचूर, इमली, काला जीरा महुवा बीज व मूंगफली, रमतिल्ली (जगनी) अलसी, तिल-मेथी, ज्वार, गेहूँ, चना मसूर, उड़द, सन, गुड़ आदि की मुख्य उपज हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, को-ओपरेटिव बैंक की शाखायें स्थापित हैं।

जिला छतरपुर

(छतरपुर, खजुराहों, नौगांव, हरपालपुर)

छतरपुर—मध्य प्रदेश प्रान्त का यह प्रसिद्ध नगर है। यह झांसी-मानिकपुर वाली लाईन पर स्थित है। इसके लिये हरपालपुर स्टेशन (सी० आर०) बना हुआ है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ बाजार में एक भरोसें लाल अग्रवाल की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर हीरे जवाहारात की खान है। आर्य समाज संस्था भी यहाँ कार्य करती है। यहाँ पर बहुत से दर्शनीय स्थान हैं राजकीय संग्रहालय एवं छत्रसाल का मकबरा जोकि नगर से १५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। छतरपुर से ६५ कि० मी० की दूरी पर एक भीमकुंड है जो देखने योग्य है। विश्व प्रसिद्ध 'खजुराहों' मन्दिर यहां से ४५ कि० मी० दूरी पर स्थित है। यह शहर महाराज छत्रसाल का बसाया हुआ है। कन्दरिया महादेव का मन्दिर, जैन मन्दिर इसमें पार्श्वनाथ का सबसे बड़ा और अलंकृत मन्दिर है आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मुख्य रूप से महुवाबीज, तिल्ली, मूंग, उड़द काला, चिरौंजी, सुतली, मसूर, अरहर, सिंघाड़ा, कत्था, आदि का उत्पादन होता है।

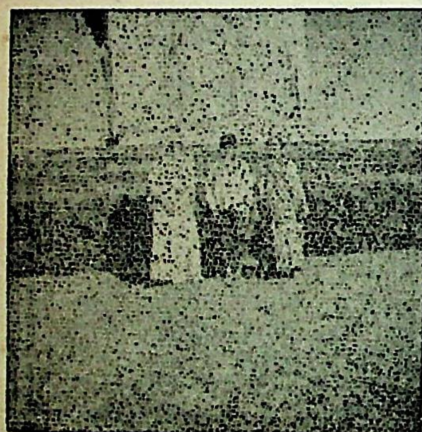
बैंक—यहां पर व्यापारिक व जनता की सुविधा के लिये स्टेट बैंक की शाखा है।

खजुराहों—छत्तरपुर जिले का यह एक प्रसिद्ध नगर है। यह सी० आर० की छत्तरपुर-खजुराहों रोड पर बसा हुआ है। यह छत्तरपुर से ३२ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ यातायात की सुविधा के लिये मोटर व तांगा आदि की व्यवस्था है।

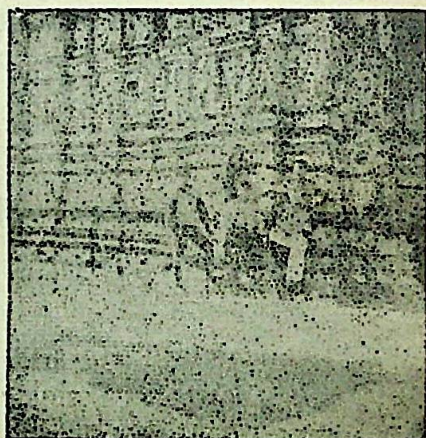
विश्राम स्थल—बाहर से आने-जाने वाले यात्रियों के लिये यहाँ जैन धर्मशाला, आदिनाथ मन्दिर धर्मशाला तथा खजुराहों की धर्मशाला, सरकारी गैस्ट हाउस व अन्य कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—खजुराहों दर्शनीय स्थलों के कारण प्रसिद्ध है और यहां पर बहुत से दर्शनीय स्थान हैं:—

खजूराहों मन्दिर, चौंसठ योगिनी मन्दिर, देवी जगदम्बा मन्दिर, भरत जी



जैन मन्दिर, खजुराहों



खजुराहों का मन्दिर

का मन्दिर, कन्दरिया महादेव मन्दिर (१०१ फीट ऊंचा), लक्ष्मण जी का मन्दिर, लाल गुआन महादेव मन्दिर, ब्रह्मा मन्दिर, विश्वनाथ और नन्दी मन्दिर, घंटाली जैन मन्दिर, दुलादेव मन्दिर, चतुर्भुज मन्दिर, जवारी मन्दिर, लक्ष्मी मन्दिर, बारह मन्दिर, चित्रगुप्त मन्दिर, पार्वती मन्दिर, जयवेशी का मन्दिर, पारसनाथ जैन मन्दिर, खान (हीरे की), शान्तिनाथ भगवान की १५ फीट ऊंची मूर्ति, आदिनाथ जैन, मन्दिर प्राचीनतम २१ जैन मन्दिर, जैन मन्दिर दो कि० मी० की दूरी पर व हवाई अड्डा भी देखने योग्य है।

नौ गांव—यह नगर मध्य प्रदेश प्रान्त के छत्तरपुर जिले में स्थित है। यहां से ६ कि० मी० की दूरी पर ही धुवेला है। यहां पर यातायात के लिये रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

उड़द, सरसों लाल, अरहर, गोंद, अलसी, चिरौंजी, लाख, बीड़ी पत्ता पान आदि का उत्पादन होता है। यहां अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक की भी शाखा है।

करेली—यह नरसिंहपुर जिले के सी० आर० इटारसी-इलाहाबाद रेलवे लाईन पर इटारसी से १४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन है। यहाँ टैक्सी, रिक्शा, ताँगा आदि की भी सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर दो मुख्य धर्मशालायें म्यूनिसिपल कमेटी व गुरुद्वारे की व और भी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनाज व किराने की बहुत बड़ी मण्डी है इसके साथ २ जैन मन्दिर, राम मन्दिर, नर्मदा नदी आदि है यहाँ से १६ कि० मी० की दूरी पर बरवाना सतधारा पर पी० डब्लू० डी० का बहुत भारी पुल बना है इस पर काफी मेला लगता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से चना देशी व गुलाबी, मसूर, जौ, अलसी, अरहर, मटर, ज्वार, मूंग, उड़द, आदि पैदा होता है। यहां पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक को-ओपरेटिव बैंक की शाखा भी है।

गाडरवारा—नरसिंहपुर जिले में 'गाडरवारा' सी० आर० के अन्तर्गत इटारसी-इलाहाबाद वाली लाईन पर स्थित है। यह इटारसी से ११६ कि० मी० दूर है। यहाँ टैक्सी, रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये राम साहिब सेठ घासी राम लक्ष्मी नरायण की धर्मशाला, सेठ भोजराज लूनामल की धर्मशाला, पं० टीका राम शुक्ल की धर्मशाला, पं० किशन प्रसाद आचार्य की धर्मशाला, श्री हरलाल साहू की धर्मशाला, नगरपालिका की सराय आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान है जिनके कारण गाड़रवारा प्रसिद्ध है जैसे श्री राम मन्दिर, श्री राधा बल्लभ मन्दिर, श्री जगदीश मन्दिर श्री रणछोड़ मन्दिर, श्री अटलविहारी मन्दिर, श्री लक्ष्मी नरायण मन्दिर, श्री जानकी देवी माता का मन्दिर, गोवर्धन मन्दिर, श्री महावीर मन्दिर, श्री शंकर जी का मन्दिर, श्री माता मन्दिर, बृह्मचारी का मन्दिर, श्री शान्ति नाथ भगवान का मन्दिर, श्री श्वेताम्बर जैन मन्दिर, श्री गया प्रसाद खूब चन्द सिंघाई का मन्दिर आदि व यहां पर मंडी भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर मसूर, मूंग, उड़द, चना, तिल, अलसी, मूंगफली ज्वार, गौंद, अरन्ड़ी आदि का उत्पादन होता है। यह मंडी दालों के लिये भी प्रसिद्ध हैं।

बैंक—यहां पर एक स्टेट बैंक की शाखा हैं।

जिला निर्माण (पश्चिमी)

(खरगौन)

खरगौन—मध्य प्रदेश प्रान्त के अन्तर्गत जिला निर्माण में एक प्रसिद्ध शहर खरगौन है। यह डब्लू० आर० चित्तौड़गढ़-उदयपुर वाली लाईन पर मण्डी सनावद से ६७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये जैन धर्मशाला, श्री रामधर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का श्री नवगृह मन्दिर व संतोषी माता का मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां कपास, बिनौला, जौ, मूंगफली, ज्वार, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है। यहाँ पर एक मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, बैंक आफ इण्डिया की शाखा भी स्थापित हैं।

जिला निर्माण (पूर्वी)

(खडण्वा, बुरहानपुर, हरसूद)

खण्डवा—यह जिला निर्माण (पूर्वी) में सी० आर० दिल्ली वम्बई रेलवे लाईन पर दिल्ली से ९७२ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां छोटी बड़ी दोनों लाईन हैं। यहां पर रिक्शा, तांगा, स्कूटर, टैक्सी आदि की व्यवस्था हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास पार्वती बाई की धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का गाँधी भवन, बालाजी का मन्दिर, बुधवारा बाजार बोम्बे बाजार, गांधी मार्ग, धूनी वाले बाबा की समाधि, आर्य समाज का मन्दिर, एवं गनेश गौशाला (बावनी बाका रोड) देखने योग्य है। यहां पर अनाज की मंडी भी हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां कपास' मूंगफली, उड़द, काला ज्वार, गेहूं, लोबिया, मक्का, मूंग, चना, महुवा, अलसी, तिल, बिनौला, तेल, खल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ स्टेट, पंजाब, सैन्ट्रल बैंक आदि की शाखा हैं।

बुरहानपुर—यहनगर जिला निर्माण में सी० आर० दिल्ली वम्बई वाली लाईन पर वम्बई से १०३५ कि० मी० दूर तथा स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगे आदि वाहन मुख्य रूप से चलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर सेठ की धर्मशाला जोकि स्टेशन के पास स्थित है यात्रियों के लिये उपलब्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहनगर दर्शनीय स्थलों के कारण मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। यहां पर आर्य समाज मन्दिर, बड़ा गुरुद्वारा (जहां गुरू गोविन्द ६ माह ठहरे थे) चौंक में जामा मस्जिद, आहू खाना (मुमताज महल का मृत्यु स्थल) प्राचीन जलप्रपात 'महल

जिला दमोह

(दमोह, कुण्डलपुर, हटा)

दमोह—मध्य प्रदेश प्रान्त में दमोह एक प्रसिद्ध जिला सी० आर० बीना-कटनी लाईन पर बीना से १५३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां यात्रियों को रिक्शा तांगा टैक्सी आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर रेलवे स्टेशन के पास तथा बस स्टैन्ड के पास धर्मशाला है। एक धर्मशाला जैनियों की भी है।

दर्शनीय स्थल—यहां के श्री बूंदा बऊ का मन्दिर, श्री राम मन्दिर, जयशंकर महादेव का मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन गेहूँ, चना, ज्वार, चावल मूंग, मक्का, अलसी, सफेद व काला तिल, मूंगफली आदि की मण्डी भी है।

बैंक—यहां स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल आदि बैंक हैं।

कुण्डलपुर—यह दमोह जिले में दमोह से ३२ कि० मी० की दूरी पर एक प्रसिद्ध शहर है। यहां बसों द्वारा यातायात की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये दिगम्बर जैन धर्मशाला अधिक प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—इस स्थान से जमीन के अन्दर से विशाल नगरी व जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई है जोकि दर्शनीय है। यहाँ पर ही एक बौद्ध धर्म का एक विशाल भवन निकला है जिसे बौद्ध धर्म का विद्यालय व छात्रालय कहा जाता है। दिगम्बर धर्मशाला में एक महावीर स्वामी की सुन्दर मूर्ति है। यह महावीर-स्वामी का जन्म स्थान भी है। यहाँ भगवान महावीर जी का बहुत बड़ा मेला भी लगता हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहू, जौ, मटर, चना आदि का उत्पादन होता है।

हटा—यह दमोह जिले में बीना-कटनी लाईन पर स्थित है। यहां पर ताँगे, रिक्शा, टैक्सी की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर लोगों को ठहरने के लिये मोटर स्टैन्ड के पास सराय, चन्डी मन्दिर के पास धर्मशाला व नदी के किनारे शम्भू अग्रवाल की धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर श्री गौरी शंकर जी का मन्दिर, श्री चण्डी जी का मन्दिर, श्री बाला जी, रामगोपाल जी, बिहारी जी कई मन्दिर है। यहां किले का मन्दिर व गंगा झिरिया भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां, गेहूँ, जौ, चना मटर, अलसी, सब्जी, आदि खाद्य पदार्थ का उत्पादनहोता है।

जिला धार

(धार, मनवार)

धार—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला धार डब्लू० आर० अजमेर-खण्डवा की लाईन पर स्थित है। यह इन्दौर से ६१ कि० मी० व महू से ६३ कि० मी० तथा मेघ नगर से ९६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। इस शहर में रिक्शा, टैक्सी, ताँगा आदि सवारी की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये स्थान प्राप्त हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, कपास, चना, मक्का, ज्वार, उड़द, आजवायन, धनियां, अलसी, मूंगफली, रुई, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है। यहाँ एक अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, धार कौपरेटिव बैंक की भी शाखा स्थापित है।

मनवार—यह धार जिले में वम्बई-आगरा रोड़ पर इन्दौर से ७५ कि० मी० की दूरी पर डब्लू० आर० मार्ग पर स्थित है। औररेलवे की आऊट ऐजेन्सी भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहां एक शासकीय धर्मशाला भी स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां का शिव मन्दिर, चावण्डा देवी का प्राचीन मन्दिर आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मुख्य उत्पादन कपास, जौ, मूंगफली, मक्का, ज्वार, रुई, उड़द, मूंग, चावल आदि है। यहाँ अनाज की एक मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इन्दौर की शाखा भी है।

जिला नरसिंहपुर

(नरसिंहपुर, करेली, गाडरवारा)

नरसिंहपुर—मध्य प्रदेश प्रान्त में नरसिंह पुर एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० लाईन इटारसी-इलाहाबाद पर इटारसी से १६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है। यहां पर रिक्शा, ताँगा टैक्सी की सवारी भी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये हरी राम की धर्मशाला निर्मित है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर नरसिंह भगवान का मन्दिर, झरना, जैन मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां मुख्य रूप से चना, जौ, ज्वार, तिल, मसूर, मूग हरी,

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर इन्दौर-बोम्बे रोड पर ६ कि० मी० की दूरी पर ग्राम देवसरी में शंकरजी का प्राचीन मन्दिर है वहां पर झरने का पानी पहाड़ से गिरता है। पहाड़ पर पुरानी गुफा भी है। पहाड़ से जो पानी गिरता है उसका एक जोमुखी कुण्ड बना दिया गया है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, मटर, मक्का आदि हैं।

जिला टीकमगढ़

टीकमगढ़--मध्य प्रदेश प्रान्त में टीकमगढ़ जिला सी. आर. दिल्ली-बम्बई लाईन पर ललितपुर से ८८ कि० मी० और मऊरानीपुर से ६७ कि० मी० तथा निवोदी से ७५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर बसें भी चलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये यहाँ पर जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां से ६ कि० मी० की दूरी पर एक झील है जहाँ महादेव जी की मूर्ति दर्शनीय है। यहाँ से ३ कि० मी० पर हनुमान जी का मन्दिर है। यहाँ जैनियों का तीर्थ स्थान पपौरानी है जहाँ कि १०८ मन्दिर हैं। पुराना राजाशाही किला भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन गेहूं, चना, ज्वार, पीली उड़द, मूंग, गाजर, मसूर, जौं, महुवा, तिल्ली, गुड़, धान, कपास, बिनौला आदि हैं। यहां पर मण्डी भी हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की एक शाखा स्थित है।

जिला दतिया

दतिया--मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला दतिया सी० आर० दिल्ली-बम्बई लाईन पर स्थित है। यह दिल्ली से ३८७ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन पर व बड़े बाजार धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का पुराना किला, आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं। यहाँ की मण्डी भी प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौं, चना, मसूर, मूंग, उड़द, अलसी, सरसों, सीड, तिल, धान, चावल, और दालें आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक की शाखायें हैं।

जिला देवास

देवास—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला देवास डब्लू० आर० की उज्जैन-इन्दौर लाईन पर इन्दौर रेलवे स्टेशन से ३९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास १ फ० की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देवी माता का मन्दिर भी देखने योग्य हैं तथा अनाज की मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर प्रत्येक अनाज गेहूं, जौ चना, ज्वार, मूंग, उड़द, मसूर, अलसी, मूंगफली, सींगदाना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ हर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक की शाखा स्थापित है।

जिला दुर्ग

(दुर्ग, राजनांद गाँव)

दुर्ग—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला दुर्ग एस. ई, आर. हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से ८६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर आने जाने के लिये शहर में रिक्शा, टैक्सी, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—बाहर से आने जाने वाले यात्रियों को ठहरने के लिये शहर में प्रभात टाकीज के पास ग्यारसी लाल छित्तर मल की धर्मशाला तथा अन्य सिनेमा के पास चमरू सहाय की धर्मशाला तथा अयोध्या वासी धर्मशाला, श्री दिगम्बर जैन की धर्मशाला निर्मित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के आर्य समाज मन्दिर, आर्य कन्या विद्यालय, आर्य प्रतिनिधि, सभा भिलाई इस्पात कारखाना, १० कि० मी० लोहे का भण्डार, चूना पत्थर का भण्डार आदि स्थल दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तु—यहाँ की मुख्य उपज धान, चावल, चना गुलावा अरहर, उडद, मूंग अलसी, हर प्रकार का तेल व खली है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, इलाहाबाद, महाराष्ट्र बैंक आदि की प्रमुख शाखायें स्थापित हैं।

विशेष—यहाँ सी० पी० शिव संस्कृत पाठशाला भी है।

राजनांद गांव—यह शहर जिला दुर्ग में एस० ई० आर० नागपुर-हावड़ा वाली लाईन पर नागपुर से २३४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ यातायात के लिये रिक्शा, तांगा की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये बाजार में सेठ घसीटामल की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर एवं अन्य कई मन्दिर देखने योग्य है,

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, धान, जौ, मूंग, चना, काबुली चना, अलसी, गेहूँ आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

बैंक—यहां पर इलाहाबाद तथा महाराष्ट्र बैंक की शाखा स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कई पुराने मन्दिर देखने योग्य हैं। और यहां से ६ कि० मी० की दूरी पर ही धुवेला में छत्तरपुर के राजा रहते थे और उनके जमाने की बहुत सी चीजें देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन चना, गेहूं, जौं, मटर आदि है।

हरपाल पुर—यह जिला छत्तरपुर में झांसी मानिकपुर लाईन पर स्थित है। यह झांसी से ८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगा आदि की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के लिये निवास स्थान नगर में है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपजें गेहूँ, चना, तिल्ली, अलसी, सरसों, जौं व मटर आदि हैं।

जिला जबलपुर
(जबलपुर, कटनी, सिहौरा रोड)

जबलपुर—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक बहुत ही प्रसिद्ध नगर है। यह इलाहाबाद-इटारसी लाईन पर स्थित है। यहां का रेलवे स्टेशन (सी० आर०) भी प्रसिद्ध है। यह इटारसी से २४५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा, ताँगा, स्कूटर व टैक्सी आदि की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये सुविधाजनक स्थान है। यहाँ बहुत सी धर्मशालायें व होटल हैं:—

राजा गोकुल दास की धर्मशाला (स्टेशन से २ फर्लांग दूर), भूरामल की धर्मशाला, मुस्लिम धर्मशाला, अग्रवाल धर्मशाला (कोतवाली), दिगम्बर जैन धर्मशाला (जैन मन्दिर के पास), मारवाड़ी धर्मशाला (हाऊस बाग), लार्ड गंज धर्मशाला।

होटल—पैगोड़ा होटल (फोन न० २७२२), सौराष्ट्र हिन्दू होटल, आर्यनिवास हिन्दू होटल, स्टैण्डर्ड होटल, जैकसन्स होटल (सिविल लाईन, फोन न० १३२०)।

दर्शनीय स्थल—यहां के बहुत से स्थल दर्शनीय है :—चौयस योगनी मन्दिर (२१ कि० मी० की दूरी पर), झरना (२१ कि० मी० दूरी पर), पंचवटी घाट (२१ कि० मी० की दूरी पर), मदन महल (७ कि० मी० की दूरी पर), गांधी मैमोरियाँ, शहीद स्मारक, किंग-गार्डन, भेड़ा घाट, भवरताल पार्क, शिवजी जी का पुराना मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, पत्थर की चट्टानों, राजा गोकुलदास का महल, आदि हैं। यहाँ पर जबलपुर विश्वविद्यालय भी है जिसकी स्थापना १९५७ ई० में हुई थी और इसके अन्तर्गत २० कॉलिज है। यहाँ की नर्मदा नदी में धूँआधार नामक स्थान है। यहाँ पर बाहुरीबन्द क्षेत्र में श्री शान्ति नाथ जी की १२ फुट ऊंची मूर्ति दर्शनीय है। यहाँ पर जबलपुर गौशाला, हनुमान ताल पर २५ मन्दिर व शहर में

३१ मन्दिर है। यहाँ जैनियों के ३०० परिवार है। यहां पर एक पहाड़ी झरना, नर्मदा नदी, कम्पनी बाग, संगमरमर की चट्टानें तथा जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्व-विद्यालय आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन गेहूं, धान, चावल, ज्वार, मक्का, चना (देशी व गुलाबी), मटर, काली मूंग, उड़द, अलसी, तिल, सरसों आदि है। यहाँ पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर मुख्य रूप से स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, इण्डिया बैंक, जबलपुर को-आपरेटिव बैंक, यूनाईटेड कॉमर्शियल बैंक आदि की शाखायें हैं।

कटनी—मध्य प्रदेश प्रान्त के जबलपुर जिले में बीना-कटनी वाली सड़क पर बीना से २६३ कि० मी० दूर सी० आर० पर बसा हुआ है। इस स्थान पर रिक्शा, टैक्सी व तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए दो धर्मशाला है जिनमें से एक स्टेशन के पास जयदयाल जी की है तथा दूसरी घण्टाघर के पास हरदत्तराय जी की है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर रेलवे का जंकशन, गौशाला, आर्य समाज मन्दिर देखने योग्य हैं।

विशेष—यहां पर शान्ति निकेतन, दिगम्बर जैन पाठशाला, नारायणी संस्कृत पाठशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, चना, त्रिफला, मक्का, मसूर, उड़द, मूंग, सरसों, लाख, महुवा, तिल, शहद, मोम, तेजपत्ता, चावल, कत्था, पान, चूना आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक की भी शाखाएं हैं।

सिहोरा रोड—यह मध्य प्रदेश प्रान्त के जबलपुर जिले में जबलपुर-कटनी की सी० आर० लाईन पर जबलपुर से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां से २० कि० मी० की दूरी पर मझौली ग्राम में विष्णु वाराह का मन्दिर तथा २५ कि० मी० की दूरी पर रूपनाथ में अशोक का शिलालेख देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, जौ, चना, मटर, मसूर, बिनौला, सरसों, तिल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की प्रमुख शाखा है।

जिला झाबुआ

झाबुआ—मध्य प्रदेश क्षेत्र में झाबुआ जिला स्थित है।

गुलारा' (नगर से १० कि० मी०, (२ कि० मी० की दूरी पर वोहरा समाज का तीर्थ स्थान, श्री शान्ति नाथ श्वेताम्बरी जैन मन्दिर, सूत्राभंडार (सर्वश्रेष्ट स्थान) नगर से २३ कि० मी० दूर नसीर गढ़ का क़िला, अन्य सभी धर्मों के मन्दिर दर्शनीय है। इसको १४०० ई० में बादशाह नसीर खां फारुखी ने बसाया था।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बिनौला, तिल, मूंगफली, चना, उड़द, मूंग, आदि का उत्पादन मुख्य रुप से होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट, बैंक ऑफ इण्डिया पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंकों की शाखायें हैं।

हरसूद—यह निर्माण जिले में सी० आर० की दिल्ली बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से ६१९ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है जहां से शहर के लिये टैक्सी रिक्शा, तांगा आदि वाहन की सुविधा उपलब्ध है यहां मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का शिवजी का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन मूंगफली, बिनौला, तेल, खल आदि का उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहां के लोगों के लिये खण्डवा में बैंक स्थित हैं।

जिला पन्ना

पन्ना—मध्य प्रदेश प्रान्त में यह जिला स्थित है। यहां बसों द्वारा आया-जाया जाता हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गैस्ट हाऊसहै।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व हीरे की खान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वतुयें—यहां पर मुख्य रूप से गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा उत्पन्न होता हैं।

जिला पंचमढ़ी

पंचमढ़ी—मध्य प्रदेश प्रान्त का पंचमढ़ी एक प्रसिद्ध जिला है। जहां पर यातायात के लिये रिक्शा, तांगा टैक्सी आदि की व्यवस्था है। और ३५०० फुट ऊंचे पहाड़ पर स्थित है।

विश्राम स्थल—बाहर से आने-जाने वाले यात्रियों को ठहरने के लिये यहां पर एक जैन धर्मशाला व होटल ब्लाक हैं।

दर्शनीथ स्थल—यह गर्मियों की मुख्य राजधानी है। यहां पर धूप गढ़, महादेव की चोटी, चोंग गढ़, पाण्डवों की भुजा राजनगिरी के बाग, पंसी तालाब, बाहर

मीट,डुचेस फांलन, पंचमढ़ी गार्डन आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहां से ८ कि० मी० दूर राजत प्रपात ३ कि० मी० दूर जमुना प्रपात भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, मटर, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, अलसी, सरसों आदि का मुख्य उत्पादन होता हैं।

जिला बेतूल
(बेतूल,मुलतई)

बेतूल—मध्य प्रदेश प्रान्त में यह जिला सी० आर० की नागपुर-इटारसी लाईन पर नागपुर से १९१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, तांगा व टैक्सी की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये यहां स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नगर में देवी जी का मन्दिर एवं गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह जिला उत्पादन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहां पर कपास, गौंद, चिरौंजी, अरहर, आंवला, वहेड़ा, काला जीरा, मोम, मूंगफली, सिंगाड़ा, आमला छाले, वायकुम्भा, बिनौला रामतिल्ली, तिल्ली (लाल व सफेद) आदि का उत्पादन होता है। यहां पर लकड़ी का अत्यधिक कार्य होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व पंजाब नेशनल बैंक की शाखा है।

मुलतई—यह जिला बेतूल में सी० आर० की परमानी-पर्ली बैजनाथ लाईन पर परमानी से १४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां के रेलवे स्टेशन पर रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये शहर में एक धर्मशाला स्थापित है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर दर्शनीय स्थलों के कारण बहुत प्रसिद्ध है यहां पर ताप्ती तालाब (जहां से ताप्ती नदी का विकास होता है और हर वर्ष कार्तिक का बहुत बड़ा मेला लगता है), चौरागढ़ किला (खरदूषण का किला), गुफा में शिव लिंग का मन्दिर (जहां कि मूर्ति पर हर समय पानी गिरता रहता है), पहाड़ पर पांडवों के समय की ५ कुटी आदि दर्शनीय हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक की शाखा है।

जिला बालाघाट
(बालाघाट, बारासिवनी)

बालाघाट—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला एस० ई० आर० की गोंदिया-जबलपुर लाईन पर गोंदिया से ४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है। शहर में रिक्शा, तांगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये रेलवे रोड पर अग्रवाल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर लोहे की खान, ताँबे की नई खान, आर्य समाज मन्दिर एव अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन ताँबा चावल, लोहा, अलसी, गेहूँ, लाख, उड़द, सरसों आदि है।

यह मैंगनीज़ बांस की प्रसिद्ध मण्डी है और लकड़ी का प्रमुख काम होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की एक शाखा है।

बारासिवनी—यह वालाघाट जिले में एस० ई० आर० की वालाघाट-कटनी लाईन पर वालाघाट से १७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ के रेलवे स्टेशन पर रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां चावल, गुड़, घी, लाख, चिरौंजी आदि का उत्पादन होता है। यहाँ धान व चावल की प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व वालाघाट सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक हैं।

जिल बिलासपुर

(बिलासपुर, अकलतरा, चम्पा, तखतपुर, पेन्ड्रा टाऊन, मुंगेली, सक्ती)

बिलासपुर—यह जिला मध्य प्रदेश प्रान्त में एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से ७१६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहाँ के रेलवे स्टेशन पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यहां के गोल बाजार में यात्रियों के लिये छिवानी भितानी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, १६ कि० मी० की दूरी पर रत्नपुर नामक ऐतिहासिक स्थल, श्वरी नारायण स्थल (यहां भगवान राम ने शवरी के झूठे बेर खाये थे और यहां शिव का प्रसिद्ध मेला लगता है) व गौशाला आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूं, चना देशी, मूंग, उड़द, राव, दालें, सरसों तिल्ली, अलसी तेल, खली, सीड, कलाड़ी, चिरौंजी, आँवला, बबूल गोंद, चावड़ा गोंद आदि। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक व बिलासपुर दूबे-कार्मशियल बैंक आदि की शाखायें हैं।

अकलतरा—यह नगर बिलासपुर जिले में एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर बिलासपुर से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है जहां से शहर को रिक्शा व तांगे जाते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये नगर में धर्मशाला है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ चावल, खेसरी, अलसी, तेल, चना, गेहूँ, मूंग आदि का उत्पादन होता है। यहाँ प्रसिद्ध मण्डी भी है।

बैंक—यहां विलासपुर सैन्ट्रल कौपरेटिव वैंक है।

चम्पा—विलासपुर जिले में यह एस० ई० आर की हावड़ा-नागपुर लाईन पर विलासपुर से ५० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रेलवे स्टेशन से शहर को तांगा, रिक्शा आदि जाते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ डांगाघाट पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला वनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का बृजरंग मन्दिर, काली मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अलसी, धान, चावल आदि का उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी है।

बैंक—यहां विलासपुर सैन्ट्रल कौपरेटिव वैंक भी है।

तख्तपुर—जिला विलासपुर में तख्तपुर एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर विलासपुर से २० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रेल के आने जाने की सुविधा तो नहीं है परन्तु विलासपुर से बसों द्वारा यातायात होता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, धान, गेहूँ, चना, बिनौला अलसी, खल, तेल, गल्ला आँदि का उत्पादन होता हैं। यहाँ एक मंडी भी है।

बैंक—यहां पर सैन्ट्रल कौपरेटिव बैंक है।

पेन्ड्रा-टाऊन—जिला विलासपुर में यह एस० ई० आर० की कटनी-विलासपुर लाईन पर कटनी से २१८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के रेलवे स्टेशन पर ताँगा, टैक्सी आदि की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये बृजरंग धर्मशाला माना धर्मशाला तथा अन्य कई धर्मशालायें है।

दर्शनीय स्थल—यहां से २५ कि० मी० की दूरी पर नर्मदा नदी का उद्गम स्थान 'कन्टक तीर्थ' है। ८ कि० मी० की दूरी पर चारों तरफ धारा सोनधारा, कपिल धारा, दूध धारा, अनगढ़ गनेश प्राचीन शिव मन्दिर, ज्वाल गंगा का उद्गम स्थान आदि दर्शनीय स्थल है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, गेहूं, मक्का, अलसी, उड़द, गोंद सरसों, जौ आदि का उत्पादन होता है। यहां पर प्रसिद्ध मंडी भी हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक की शाखा भी है।

मुंगेली—यह जिला विलासपुर में एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन

पर मण्डी विलासपुर से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां विलासपुर से बस के द्वारा यातायात की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ रिक्शा, तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर सेठ भीकम चन्द की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का शंकर मन्दिर, महामाया मन्दिर, बजरंग बली मन्दिर, राम मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ धनिया, चावल की प्रसिद्ध मण्डी है।

सक्ती—विलासपुर जिले में एस० ई० आर० की नागपुर-हावड़ा लाईन पर विलासपुर से ८२ कि० मी० की दूरी पर स्थिर है। रेलवे स्टेशन यहाँ से २ कि० मी० है। जहाँ रिक्शा, ताँगा आदि का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर मंशाराम जय नारायण की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का श्री राम मारवाड़ी पंचायत मन्दिर, तथा यहां से १३ कि० मी० की दूरी पर 'तुर्री' नामक स्थान पर एक प्राचीन शिव मन्दिर है। जिसमें शिव लिंग के ऊपर दो जल धारायें (एक मस्तक पर व दूसरी चरन पर) सदैव गिरती रहती हैं यहां पर फागुन बदी १३ को मेला लगता है। शहर से २२ कि० मी० दूर (उत्तर पश्चिमी) दामोह धारा (ऋषभ तीर्थ) नामक स्थान रमणीय व दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन धान, चावल, महुवा, गेहूं चना, बीड़ी पत्ता, लाल तिवडा, तिल्ली, कोसम सीडस, शहद, गौंद अलसी आदि पैदा होती है।

बैंक—यहां सैन्ट्रल कौपरेटिव बैंक व स्टेट बैंक की शाखा है।

जिला बस्तर

(बस्तर, जगदलपुर)

बस्तर—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला वस्तर एस० ई० आर० की लाईन पर पर बसा हुआ है। यहां बसों द्वारा पहुंचा जाता है। यहां शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, तांगा आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में ठहरने की व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहा पर गेहूं, चना, आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ स्टैट बैंक की शाखा भी है।

जगदलपुर—यह बस्तर जिले में एस० ई० आर० की हावड़ा-वाल्टेयर लाईन पर रायपुर से २९४ कि० मी० दूर, धमतरी से २१८ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रेलवे की आऊट ऐजेन्सी है। यहाँ पर यातायात के लिये टैक्सी, रिक्शा तांगा आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल – यहाँ पर यात्रियों के लिये शहर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का राजमहल में दंतेश्वरी माई का मन्दिर, दंते वाड़े में दतेश्वरी माई का मन्दिर तथा ४० कि० मी० दूरी पर चित्रकूट जल प्रपात दर्शनीय है। दंतेवाडा तहसील में बारसूट,नामक स्थान में पुरातन मन्दिरों में भव्य खण्डहर भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन चावल, मक्का, गेहूं, चना, देशी, तुवर, सरसों, रमतिल्ली-अरण्डी-तिल अलसी-गोंद चिरोंजी, वेचादी-तिखुर आदि होता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—.यहाँ स्टेट व यूनियन बैंक की शाखा स्थित है।

जिला भोपाल

भोपाल—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला भोपाल सी० आर० की दिल्ली-बम्बई वाली.लाईन पर दिल्ली से ७०३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी काफी बड़ा है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगा, टैक्सी, सीटी बस की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने की बहुत सुविधा उपलब्ध हैं। यहां जासबाल धर्मशाला सराय सिकन्दी, अग्रवाल धर्मशाला मैन बाजार, मोधल होटल के सामने धर्मशाला, चौक बाजार में जैन धर्मशाला स्थित है। यहाँ धर्मशालाओं के साथ २ प्रसिद्ध होटल भी हैं जैसे कैपिटल होटल, हिन्दू होटल, डिलाईट होटल, रंग महल होटल, ग्रांड होटल, पोगड्डा होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट आदि है।

दर्शनीय स्थल—भोपाल दर्शनीय-स्थलों के लिये भी प्रसिद्ध हैं। यहां पर टी० टी० नगर (न्यू भोपाल), आर्य समाज मन्दिर, जामा मस्जिद, सरदार मंजिल पैलेस, मोती मस्जिद, हैवी इलैक्ट्रिक बिरला मन्दिर, राजभवन, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी की मूर्ति, कमला का महल, ताजऊल मस्जिद, अहमदाबाद स्मारक, छोटा तालाब. भदसदा झरना टी० टी० नगर, बड़ा तालाब, टैगोर भवन, जैन मन्दिर, नवाबी इमारतें प्रसिद्ध तालाब, टकसाल घर, तोपखाना, मोती मस्जिद, नवाब का महल, विधान सभा, हवाई अड्डा आदि है। यह मध्य प्रदेश की राजधानी भी है। यहाँ से ६ कि० मी० पर नीरी तथा ४५ कि० मी० पर चीकलेड, २८ कि० मी० पर भोजपुर, ४५ कि० मी० पर रायसैन, ६७ कि० मी० की दूरी पर सांची बसे हुये है। यहां पर नामली, गोपाल, राम आदि पूजा के प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ का मुख्य उत्पादन गेहूं, जौ, ज्वार, चना (देशी हरा व पीला) चना गुलावी, बटरी, मक्का, उड़द, मूंग, मसूर, बिनौला अलसी, सरसों,तेल मूंगफली, तिलहन दालें आदि हैं।

बैंक—यहाँ परस्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल, इलाहाबाद, यूनाईटेड कार्मशियल देना, स्टेट बैंक आफ इण्डिया आदि बैंक है।

जिला भिलाई

भिलाई—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह हावड़ा नागपुर लाईन पर हावड़ा से ८७३ कि० मी० दूर है यहां रिक्शा टैक्सी की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यह नगर यहां के इन्जीनियरिंग कारखाने के कारण ही बना है। यहां पर भारत का स्पात का बहुत बड़ा कारखाना है। यहां का आर्य समाज मन्दिर व नगर बहुत सुन्दर है। यह उद्योग का केन्द्र है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज गेहूं, चना, चावल है।

बैंक—यहां स्टेट व सैन्ट्रल बैंक की शाखा स्थापित है।

जिला भिन्ड

भिन्ड—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में भिन्ड जिला सी० आर० की ग्वालियर-भिन्ड लाईन पर ग्वालियर से ८४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां के रेलवे स्टेशन पर रिक्शा-ताँगा आदि यातायात की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये यहाँ नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ सरसों, अलसी, अण्डी, तिल्ली, अरहर, मसूर, मूंग, चना, जौ, बिनौला, गेहूं, बाजरा, ज्वार, चना दाल, उड़द, दाल, मूंगदाल, सरसों तेल, खल आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां स्टेट, यूनाईटिड कार्माशियल, भिन्ड कोपरेटिव बैंक आदि है।

जिला मुरैना

(मुरैना, जौरा अल्लापुर)

मुरैना—मध्य प्रदेश मे जिला मुरैना सी० आर० की दिल्ली-बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से २२७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर आने जाने वाले यात्रियों के विश्राम करने के लिये पंचायती धर्मशाला, श्री काशीबाई धर्मशाला, श्री जानकीबाई धर्मशाला, श्री भरोसी लाल की धर्मशाला निर्मित है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर श्री बिहारी जी का मन्दिर, श्री मार्कन्डेश्वर जी का मन्दिर, श्री गिरिराज का मन्दिर, श्री गोपाल दिगम्बर जैन मन्दिर एवं आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ का प्रमुख उत्पादन सरसों, अलसी, तारामीरा, तिल, चना, तुवर, मूंग, दाल, गेहूं, ज्वार, जौ, बाजरा, तेल, खल आदि हैं। यहां गल्ले की प्रसिद्ध मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, यूनाईटेड कामशियल बैंक, मुरैना सैन्ट्रल को-आपरेटिव आदि बैंक हैं।

जौरा अल्लापुर—यह मुरैना जिले के अन्दर से० रे० की ग्वालियर-शिवपुर कला वाली लाईन पर ग्वालियर से ७५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है। यहां टैक्सी, ताँगा, रिक्शा आदि यातायात की सुविधा भी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ घी, तिलहन, गुड़, सन, पटसन, मूंग, तुवर, आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

जिला मंदसौर
(मंदसौर, नीमच)

मंदसौर—मध्य प्रदेश प्रान्त में मन्दसौर जिला डब्लू० आर० की अजमेर-खण्डवा लाईन पर अजमेर से २९१ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ के रेलवे स्टेशन पर आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, और तांगा आदि सवारियों की उचित व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये परसराम पुरिया की धर्मशाला, वंशी धर्मशाला, सेठ मोती की धर्मशाला, महेश लॉज, अग्रवाल लॉज, कोर्ट के पास हिन्दू धर्मशाला है जो कि स्टेशन से लगभग २ कि० मी० दूर है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ सौंधनी ग्राम में एक से पत्थर का विजय स्तम्भ है जो कि सम्राट यशोवर्धन ने हूण सम्राट को हराने के बाद बनवाया था। यहाँ आर्य समाज मन्दिर, गुरुद्वारा, ५ शिखरबन्द मन्दिर, २ चैतालय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर मुख्य रूप से अलसी, गेहूँ, मक्का, चना, रूई, मूंगफली, बिनौला, कपास, अलसी, तिल, खल, गन्ना, गुड़, सरसों, जौ, बाजरा, धान, उड़द, मूंग, लहसन, मिर्च, खसखस, अलसी, दालें, मेथी, अजवायन आदि उत्पन्न होता है। यहाँ अनाज की मण्डी है।

बैंक—यहाँ पर सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, मन्दसौर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक हैं।

नीमच—यह मन्दसौर जिले में डब्लू० आर० की अजमेर-खण्डवा वाली लाईन पर अजमेर से २४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के रेलवे स्टेशन पर रिक्शा, तां गा आदि वाहन की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज, हनुमान मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर पोस्तदाना, डोडा व चूरा-खस-खस, मेथी, अजवायन धनिया, जीरा, इमली आदि का उत्पादन होता है और यहाँ मण्डी है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक ग्राफ इन्डिया, सैन्ट्रल बैंक, को-ग्रापरेटिव बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक हैं।

जिला रतलाम
(रतलाम, जावरा)

रतलाम—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला रतलाम डब्लू० ग्रार० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ७३३ कि० मी० की दूरी पर बसा हुग्रा है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है टैक्सी, रिक्शा, तांगा ग्रादि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में साधुराम, तुलाराम खुर्जा वालों की धर्मशाला, स्टेशन के पास इन्दौर वालों की तथा स्टेशन के पास ही भाटियों की धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर ग्रार्य समाज मन्दिर, चेतक स्मारक, गांधी स्मारक, रतलाम द्वार, नगरपालिका बाग दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर रूई, कपास, मूंगफली, मक्का, गेहूं, चना, ज्वार, मूंग, उड़द, धान, चावल, मेथी, ग्रजवायन, सुला, धनिया, ग्रलरनो, तिल, तेल ग्रादि का उत्पादन होता है ग्रौर गल्ले की मण्डी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ग्राफ जयपुर, इन्दौर बैंक ग्रादि की शाखा हैं।

जावरा—यह जिला रतलाम में डब्लू० ग्रार० की ग्रजमेर-खण्डवा वाली लाईन पर ग्रजमेर से ३४२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है ग्रौर शहर में ग्राने जाने के लिये रिक्शा व तांगा ग्रादि वाहन की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर ग्रार्य समाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, ज्वार, मक्का, चना, ग्रलसी, मूंगफली, बिनौला, कपास, तिल, गुड़, खांड, सरसों, धान, ग्रजवायन, धनिया, पोस्तदाना, मिर्च, रूई, इमली, फूल, लहसन ग्रादि हैं।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक ग्राफ इन्डिया व यूनाईटेड कामर्शियल बैंक हैं।

जिला रायपुर
(रायपुर, धमतरी, नवापारा-राजिम, नेवरा, बागबहरा, भाटापारा, सारंगढ़)

रायपुर—मध्य प्रदेश प्रान्त में जिला रायपुर एस० ई० ग्रार० की हावड़ा-नागपुर वाली लाईन पर हावड़ा से ८२९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यातायात के लिये रिक्शा, तांगा ग्रादि की व्यवस्था उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास खुशीराम

अवीरचन्द की धर्मशाला, सदर बाजार में गिरधर भवन तथा शिव धर्मशाला आदि निर्मित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं। यहाँ पर रविशंकर विश्वविद्यालय की स्थापना १९६४ में हुई थी जिसके अन्तर्गत ३७ विश्वविद्यालय आते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ धान, चावल, चना गुलाबी, उड़द, मूंग, तुवर, मसूर खेसाड़ी, लाख (छोटा व बड़ा दाना), गोंद, कत्थाकाला, अलसी, तेल, तिल्ली, धनियां, बीड़ी, महुवा, मूंगफली, ज्वार, मक्का आदि का उत्पादन होता है। यहां की मण्डी भी प्रसिद्ध है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, यूनियन बैंक, रायपुर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि की शाखायें हैं।

धमतरी—रायपुर जिले में धमतरी नगर एस० ई० आर० की रायपुर धमतरी लाईन पर रायपुर से ७२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने के लिये नगर में धर्मशालायें बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त होटल भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गौशाला आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर धान, चावल, सरसों, अलसी, अरहर, मूंग, त्रिफला, लाख, बीड़ी पत्ता आदि का मुख्य उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है और बीड़ी पत्ते का मुख्य केन्द्र है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक व सैन्ट्रल बैंक की शाखा स्थित है।

नवापारा-राजिम—यह शहर रायपुर जिले के एस० ई० आर० की रायपुर धमतरी वाली रेलवे लाईन पर रायपुर से ४५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रेलें नहीं जातीं। यहां का स्थानीय यातायात रिक्शा, तागे आदि के द्वारा होता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये तीन धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर संगम पर कुटजेश्वर नाथ जी का मन्दिर सुन्दर बना हुआ है। नवापारा में १० मन्दिर व राजिम में २४ मन्दिर हैं, यहां दो जैन मन्दिर भी है। चंपारण ग्राम में १५ कि० मी० की दूरी पर श्री महाप्रभु जी का मन्दिर है।

विशेष—यह प्रदेश इसलिये भी प्रसिद्ध है क्योंकि यह तीन नदियों के संगम के पास बसा हुआ है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य उत्पादन धान, चावल, उड़द, लाख, गोंद, अलसी, खल, आदि का होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, रायपुर सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक स्थापित हैं।

नेवरा—यह नगर रायपुर जिले के एस० आर० की हावड़ा-नागपुर वाली लाईन पर टिल्ड्रा रेलवे स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगा आदि की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनाज की मण्डी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर धान, चावल, गेहूं, चना, लाख, धनियां, मसूर, अरहर, गुलाबी चना, तिल्ली, कलौंजी आदि पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व नेवरा आदि बैंक की शाखा हैं।

बागबहरा—यह नगर रायपुर जिले में एस० ई० आर० की रायपुर विशाखा पट्टनम वाली रेलवे लाईन पर रायपुर से ८५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहां पर रिक्शा, तांगा आदि सवारी की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां की मंडी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अरहर, चावल, बीड़ी का पत्ता, हैड़, बहैड़ा, आंवला, अलसी, उड़द, मूंग आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की शाखा स्थापित है।

भाटा पारा—यह नगर रायपुर जिले के एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर वाली लाईन पर विलासपुर से ४५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर यातायात की दृष्टि से रिक्शा व ताँगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां की गौशाला (गौपाल) प्रसिद्ध व देखने योग्य है।

उत्पादित वतुयें—यहां का मुख्य उत्पादन सरसों, चावल, मूंग, बिनौला, उड़द, काला जीरा, अलसी, लाख, लाखरी, अण्डी, सरसों, तेल, खल आदि हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, रायपुर सैन्ट्रल को-परेटिव बैंक आदि हैं।

सारंगढ़—यह नगर रायपुर जिले में बहुत प्रसिद्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला है व शिवरी नारायण क्षेत्र में भी धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर निर्मित खंडेश्वर नाथ जी का मन्दिर, महादेव जी का मन्दिर, समलेश्वरी देवी का मन्दिर, राज महल, शिवनरायण क्षेत्र में पूर्व की ओर ५ कि० मी० दूर नारायण जी का मन्दिर, लखनेश्वर महादेव जी का मन्दिर (खरौंद गांव से ५५ कि० मी० दूर) दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूं, चना, चावल, आदि है। यहां बीड़ी का मुख्य काम होता है।

बैंक—यहां का व्यापारिक कार्य रायपुर बैंक द्वारा होता हैं।

जिला रीवां

रीवां—जिला रीवां मध्य प्रदेश प्रान्त में सी० आर० पर बसा हुआ है। यहां पर रेलें तो नहीं जाती परन्तु रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल— यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास वैज अग्रवाल धर्मशाला व बस स्टैंन्ड के पास नेशनल हाइवे होटल फोन न० ५० हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, लक्ष्मण बाग व मन्दिर, किला तथा किले के मन्दिर, वैकट भवन चचाई जल प्रपात ४४ कि० मी० दूर सिरभोर मार्ग पर, गोविन्द गढ़ १८ कि० मी० खखरी कोठी व तालाब, अन्य मन्दिर. एस० पी० सिंह विश्वविद्यालय (स्थापित १९६८) दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूँ व चना है।

बैंक—यहां पर स्टेट व सैन्ट्रल को-परेटिव बैंक की शाखा हैं।

जिला राजगढ़

(राजगढ़, खरसिया, रायगढ़, सारंगपुर)

राजगढ़ (ब्यावरा)—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का मुख्य शहर है। यहां का स्थानीय यातायात रिक्शा, व तांगे के द्वारा होता है।

विश्राम स्लथ—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल--यह बहुत ही प्राचीन धार्मिक स्थान है। यहां पर एक नगरी बसी हुई है जिसमें सुन्दर मन्दिर बने हुये है। नगर से पश्चिम में २ कि० मी० की दूरी पर जलियां के नाम से प्रसिद्ध एक जगदम्बे माता के नाम से विशाल मूर्ति पहाड़ की चोटी पर स्थित है। इस मूर्ति के बारे में कहा जाता है कि यह भूमि के नीचे से खोदने के समय निकल आयी थी। उसे तभी से पहाड़ पर स्थापित कर दी आज यहाँ के व दूर के लोग अत्यधिक संख्या में इसके दर्शन करने आते है और वर्ष में एक बार बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाते हैं। नगर के उत्तर पूर्व में २ कि० मी० दूर जगदम्बे की ही मूर्ति टंकरी पर विराजमान है जोकि वैंटरी के नाम से विख्यात है। यहां के राजगढ़ महाराज का महल देखने योग्य है। यहाँ से निकली नेवज नदी का पानी बारह महीने अत्यधिक पानी के साथ बहता रहता है। उपरोक्त सभी के साथ-साथ शहर के अन्य मन्दिर भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहू, चना, चावल आदि हैं।

खरसिया—यह रायगढ़ जिले के एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर वाली लाईन पर हावड़ा से २३० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां का स्थानीय यातायात रिक्शा, तांगा आदि हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये यहां पर जानकी धर्मशाला भगत धर्मशाला, मंगलचन्द धर्मशाला स्थित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर श्री नागा मन्दिर, श्री राम मन्दिर, श्री हनुमान, कबीर धर्म स्थान आदि प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सरसों, चावल, तिल, महुआ, तिलहन, तेल दालें आदि का मुख्य रुप से उत्पादन होता है। यहां पर एक मंडी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, कोपरेटिव बैंक आदि की शाखायें स्थापित हैं।

रायगढ़—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर वाली लाईन पर हावड़ा से ५ ६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर स्थानीय यातायात रिक्शा, ताँगा आदि के द्वारा होता हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये यहाँ चार धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का गौरीशंकर मन्दिर अन्य दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, अलसी, बिनौला, गौंद, चिरौंजी हड़, बहेड़ा, आवला, स रसों, बीड़ी का पत्ता, सन, महुवा, फूल, उड़द, धवई फूल, सालसीड़, लखोड़ी मूंग आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता हैं।

बैंक—यहां स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल आदि बैंक की शाखायें हैं।

सारंगपुर—यह रायगढ़ जिले में निकटवर्ती रेलवे स्टेशन अकोंदिया से १६ कि० मी० दूर है और यह नवनिर्मित गुमा मक्खी रेलवे लाईन के मध्य में हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये सेठ रायमल जी की धर्मशाला कस्तुर मल दुली चन्द जी की धर्मशाला, कृष्ण आश्रम, महावीर धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर पार्श्वनाथ, माहुवली, दिगम्बर, चतुर्भुज नारायण का मन्दिर, आम्बिका देवी का मन्दिर, राम मन्दिर, राधा कृष्ण मन्दिर आदि हैं। यह बहुत ही प्राचीन नगरी है। यह बम्बई-आगरा राजमार्ग पर इन्दौर से १२० कि० मी० दूर पूर्व में है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, ज्वार, कपास, बिनौला, मूंगफली, तिल महुआ आदि का उत्पादन होता है। यहां की मंडी भी प्रसिद्ध है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इन्डिया की शाखा उपस्थित हैं।

जिला बिदिशा

बिदिशा—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में सी० आर० की दिल्ली बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से ६५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में एक धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ की मण्डी व अन्य कई मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से गेहूँ, चनागुलावी चना देशी, चनाहरा चनासफेद, अलसी, ज्वार, मसूर, तिवड़ा, अरहर, खल, मटर, बिनौला, मूंगफली, सरसों, सनबीज, मक्का, तिल्ली, जौ, आदि उत्पन्न होता है।

बैंक—यहाँ पर यूनाईटेड कामर्शियल, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल को-परैटिव बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला शिवपुरी

शिवपुरी—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में सी० आर० की ग्वालियर-शिवपुरी लाईन पर ग्वालियर से १२० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ ह। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगे आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शिवपुरी लॉज, शिवपुरी होटल, राजा लॉज व डाक बंगला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर छत्रीस, भड़िया कुंड, पिकनिक वैली, वीरा वत्रा प्रकाशक मण्डल, तात्या टोपे की मूर्ति, शिवपुरी नेशनल पार्क, आर्य समाज मन्दिर, राष्ट्रीय भवन उद्यान, यहां से १८ कि० मी० की दूरी पर शिवपुरी-झांसी मार्ग पर सुखाया के जीर्ण मन्दिर और गढ़ी भी देखने योग्य है। यहां पत्थर की कटाई उत्कृष्ठ है। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य भी देखने योग्य हैं। यहाँ से ७० कि० मी० की दूरी पर दक्षिण में 'रन्नोद' है जो कि मध्ययुग में शिव पूजा का एक महान केन्द्र रहा है। यह अनेकों मस्जिदों और मकबरों के कारण भी मध्ययुग में विशेष महत्त्व रखता है। खोखई-मठ, जहाँगीरिया मस्जिद तथा चहरुम बीबी का रोजा यहां के दर्शनीय हैं। यहाँ से १४ कि० मी० दक्षिण-पूर्व में 'रन्नोद' स्थित है। इसका प्राचीन नाम तिराम्नी है। यहाँ की दर्शनीय वस्तुओं में ११वीं शताब्दी का देवी मन्दिर, वीर स्तम्भ, माया तथा अष्ट्रमुखी शिवलिंग प्रमुख है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, ज्वार, मूंग, उड़द, जौं, तिल्ली, मक्का, सरसों, अलसी, महुंवा, मूंगफली, तेल व आदि का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त यहां कत्थे का मिल भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया व सैण्ट्रल बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला रायसेन

(रायसेन, सांची)

रायसेन—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। और साँची से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगे आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने के लिये मिश्र तालाब पर बावा जी के मन्दिर में सुविधा उपलब्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, किला (१५ वर्ष पुराना) बीड़ी बनाने के कारखाने, बारह दरी, मदागन महल, पुरानी तोपें, खखई की काली गुफाएं, 'राम शैय्या' नामक स्थान पर श्री राम के पावन चरणों की अनुकृति है। यहाँ पर 'सीता तलाई' रमणीक स्थान है। २३ कि० मी० दूर सांची के स्तूप हैं। यहां रायसेन का किला भी प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त आसपास और भी अनेकों धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर गेहूं, चना, चावल आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां पर बीड़ी बनाने का मुख्य केन्द्र है।

सांची—यह नगर रायसेन जिले में रायसेन-सांची रेलवे लाईन पर रायसेन से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहाँ सवारी के लिये बस आदि की सुविधा है

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये नगर में एक धर्मशाला व होटल तथा सरकारी गैस्ट हाऊस है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर स्तूप, रेखे, अशोक पिलर, मन्दिर (पंहाड़ों पर), स्टोम रैलिंग, हवाई अड्डा, आदि दर्शनीय हैं। यहां से ६ कि० मी० की दूरी पर सोनारी स्तूप, ० कि० मी० पर सतधारा, ११ कि० मी० पर पिपलिया तथा १७ कि० मी० पर अन्धेर, १५ कि० मी० पर उदयगिरि, १७ कि० मी० पर वीदीया, ४५ कि० मी० पर ग्यारसपुर तथा ८४ कि० मी० पर उदेश्वर मन्दिर दर्शनीय है। यह एक पर्यटन केन्द्र है। यहाँ के प्रसिद्ध स्तूप एक पर्वत पर लगभग ३०० फीट की ऊँचाई पर स्थित हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूँ, चना, चावल आदि है।

जिला शाजापुर

शाजापुर—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में डब्लू. आर. की उज्जैन-गुनार (रोडवेज) की लाईन पर स्थित है। यहां रेल तो नहीं जाती परन्तु स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगे आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गोपाल धर्मशाला हरायपुर, सिंघनाथ जी की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर लालपुरे में आर्य समाज मन्दिर, ओंकारेश्वर का मन्दिर, सोमेश्वर का मन्दिर, द्वारकाधीश जी का मन्दिर, काकासाका का मन्दिर, गोर्धनदास जी का मन्दिर, स्वर्णकार संघ जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, गांधी सागर बांध, कृषि फार्म, पाँडव खादे, चीलर बांध व नहर, रेलवे कालोनी, साबुन तेल कारखाना व मिल आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां का मुख्य उत्पादन ज्वार, मूंगफली अलसी, कपास, रुई, बिनौला, मक्का, चना, मिर्च लाल, उड़द, महुवा, तिल, मूंग, काली आदि। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, शाजापुर डिस्ट्रिक को-आपरेटिव बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला सहडोल

(सहडोल, उमरियां)

सहडोल—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में एस० ई० आर० की कटनी-बिलासपुर लाईन पर कटनी से १२६ कि. मी. की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कोतवाली के पास जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां के कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चावल, महुवा, महुवाफूल, तिल्ली, अलसी, महुवाबीज, सरसों, चना, मक्का, राई, बीड़ी पत्ता, गौंद, लाख, चिरौंजी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर नघलखण्ड बैंक, स्टेट सहडोल बैंक, सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि हैं।

उमरियां—यह नगर सहडोल जिले में एस० ई० आर० की कटनी-बिलासपुर लाईन पर कटनी से ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नदी के किनारे अग्रवाल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ से ५ कि० मी० की दूरी पर मढ़ीवाह का मन्दिर, (अशोक कालीन), विश्वनाथ का सगरा मन्दिर, ज्वालामुखी मन्दिर, ३५ कि० मी० की दूरी पर बाँधवगढ़ का प्राकृतिक किला व सरकारी नेशनल पार्क (जहाँ सफेद शेर रहता है) आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से सन, सरसों, अलसी, तिल, महुआ, मक्का, अरहर, शहद, गौंद, चिरौंजी, देशी जड़ी-बूटी आदि का उत्पादन होता है। और यहाँ प्रसिद्ध मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, को-आपरेटिव बैंक आदि की शाखा है।

जिला सागर

(सागर, द्रोणागिरि, बीना)

सागर—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में सी० आर० की बीना-कटनी लाईन पर बीना से ७५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ तांगा, रिक्शा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये गुजराती बाजार में गैंडा जी की धर्मशाला व अग्रवाल धर्मशाला, कटरा बाजार में गेज जी की धर्मशाला, बालिस्टर की लाट के पास कोरलाल जैन की धर्मशाला, सदर बाजार में डा० मुकर्जी की धर्मशाला स्थापित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के दर्शनीय स्थल भी मुख्य हैं जैसे:—सागर तालाब, बीड़ी का कारखाना, विशाल आर्यसमाज मन्दिर, सागर विश्वविद्यालय (जिसकी स्थापना १९४६ में हुई व जिसके अन्तंगत ५९ कॉलेज आते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन मसूर, गेहूं, चना देशी, ज्वार, उड़द, मूंग, तिलहन आदि हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक व यूनाईटेड कामर्शियल बैंक आदि शाखायें हैं।

द्रोणागिरि—यह नगर जिला सागर में स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नदी, मन्दिर, पहाड़ पर १४ मन्दिर व गुफा आदि दर्शनीय स्थल हैं।

बीना—यह नगर जिला सागर में सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से ५६५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा, तांगे आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये नगर में धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज दर्शनीय है। यहां पर बीड़ी का मुख्य केन्द्र है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूं, चना, ज्वार, अलसी, तिल, सरसों, मक्का आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर सेण्ट्रल बैंक, सागर डिस्ट्रिक्ट सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक, स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला सरगुजा

(सरगुजा, मनेन्द्रगढ़)

सरगुजा—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये मारवाड़ी धर्मशाला, अजनोश्रम (धर्मशाला) बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर महामाया का मन्दिर, रामेश्वरी मन्दिर, हनुमान मन्दिर, राम मन्दिर आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चावल, चना, गौंद आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

मनेन्द्रगढ़—यह नगर सरगुजा जिले में एस० ई० आर० की अनूपपुर-चिरमरी वाली लाईन पर अनूपपुर से ६४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है, जहां से ताँगा, रिक्शा आदि की सुविधा स्थानीय यातायात के लिये उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर मोटर स्टैण्ड के पास जैन धर्मशाला, स्टेशन से दो फलाँग पर मारवाड़ी धर्मशाला स्थापित हैं।

दर्शनीय स्थल—यह नगर दर्शनीय स्थल होने के कारण मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। यहां पर बाजार में श्री रामचन्द्रजी का मन्दिर, हनुमानजी का मन्दिर, स्टेशन के सामने तालाब पर शंकर जी का मन्दिर, ३-४ कि० मी० की दूरी पर पहाड़ी पर सिद्ध बाबा जी का देवस्थान है। नगर से १० कि० मी० की दूरी पर 'सिरोली' नामक स्थान है जहां पर हंसदो नदी के किनारे श्री हनुमानजी का मन्दिर है जो कि पाताल से निकले हैं। उनका एक पैर तालाब के अन्दर ही है। यहाँ से ३१ कि० मी० दूर पर अमृतधारा है। यहाँ की मंडी भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुये—यहां पर चावल, सरसों, तिल, अलसी, लाख, अरहर, गोंद, शहद आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

जिला सतना

सतना—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० की इटारसी-इलाहाबाद रेलवे लाईन पर इटारसी से ४३४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यह ५-६ जिलों की आउट ऐजेन्सी है। इसके आस पास कोई स्टेशन नहीं है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है। शहर में यातायात के लिये रिक्शा, ताँगा, टैक्सी आदि वाहनों की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये सुभाष बाजार में जैन धर्मशाला, जयस्तम्भ के पास बाम्बे लॉज स्थित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बीड़ी का कारखाना, आर्य समाज मन्दिर, सीमेन्ट का कारखाना हैं, लकड़ी का प्रमुख कार्य होता है। यहां से १५ कि० मी० की दूरी पर हनुमान मन्दिर, राज भवन, चढ़ाईपाल आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अलसी, तिल, सरसों, महुआ, गेहूं परवती, गेहूँ

फार्म, चना देशी, मसूर, तुवर, ज्वार, उड़द, मूंग, गेहूं आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला सिवनी

सिवनी—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में एस० ई० आर० की नागपुर-नैनपुर वाली लाईन पर नागपुर से १११ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां के रेलवे स्टेशन पर रिक्शा, तांगा आदि वाहन की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये २ फर्लांग पर रायबहादुर दादू गुलाब सिंह की धर्मशाला, स्टेशन से २ फर्लांग पर किशनलाल की धर्मशाला स्थापित है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, जैन मन्दिर, राम मन्दिर, सिवनी वध तालाब, चांदी का रथ तथा अन्य २१ मन्दिर दर्शनीय हैं। यहाँ की मण्डी भी प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, जूट, मसूर, अलसी, रामतिल्ली, महुआ-बीज, अरहर, चावल आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि की शाखा हैं।

जिला सिहोर

सिहोर—यह मध्य प्रान्त का मुख्य जिला है। यह डब्लू० आर० की भोपाल उज्जैन वाली लाईन पर भोपाल से ३६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी है और यहां पर रिक्शा, तांगा आदि वाहन की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन गेहूँ, चना, तम्बाकू आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला होशंगाबाद

(होशंगाबाद, इटारसी, पिपरिया, सोहागपुर, हरदा)

होशंगाबाद—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। यह सी० आर० की दिल्ली-बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से ७७७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रेलवे स्टेशन भी बड़ा है। यहाँ रिक्शा, ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नर्मदा नदी के किनारे सेठानीबाई की धर्मशाला, अग्रवाल विश्रन्ति भवन, सत्संग भवन आदि स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यह दर्शनीय स्थानों के कारण मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। यहां पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य गुरूकुल मध्यभाग, नर्मदा नदी के किनारे सुन्दर मन्दिर व घाट। यहां से ३ कि० मी० दूरी पर छोटी पहाड़ी जिसपर प्राचीन काल के चित्र हैं। जगदीश मन्दिर, विहारी जी का मन्दिर, राधा वल्लभ मन्दिर, दक्षिण मुखी हनुमान मन्दिर, द्वारकाधीश मन्दिर, हनुमान मन्दिर सुन्दर घाट, प्राचीन नर्मदा मन्दिर, नवीन नर्मदा मन्दिर, जी-जी मन्दिर, स्कूल भवन, सुरक्षा कागज कारखान, रामदास जी महाराज की समाधि नर्मदा पुल एवं गोशाला आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रुप से गोंद, मैहदी पत्ता, अरहर, आवला बहेड़ा, शहद, मोम, अमलतास, तेजफूल, जामुन, अलसी, असगन्ध, हर प्रकार की बन ओषधियाँ आदि उत्पन्न होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की शाखा भी स्थित है।

इटारसी—यह नगर होशंगाबाद जिले में सी० आर० की दिल्ली बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से ७६० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यह रेलवे का प्रसिद्ध जंक्शन है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि वाहन की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये यहां पर स्टेशन के पास सेठ लक्ष्मी चन्द जी की धर्मशाला एवं राजाराव दानवीर सर सेठ स्वरुप चन्द हुकम चन्द जी की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, दो सनातन धर्म मन्दिर, संस्कृत महाविद्यालय आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मक्का, मूंग, ज्वार, चना देशी, बिनौला, मसूर मूंगफली, दालें, अलसी, तिल, सरसों आदि का मुख्य उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब बैंक आदि की शाखायें है।

पिपरियां—यह होशंगाबाद जिले में सी० आर० की इटारसी-इलाहाबाद वाली रेलवे लाईन पर इटारसी से ६७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रिक्शा तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर धर्मशाला बनी हुई है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से गेहूं, अलसी, मसूर, सरसों, बटरी, चनादेशी व गुलाबी तथा सब्ज हरा रंग का मूंग प्रत्येक तिलहन आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ स्टेट को-आपरेटिव बैंक की शाखा भी है।

सोहागपुर—यह होशंगाबाद जिले में सी० आर० की इटारसी-इलाहाबाद वाली लाईन पर इटारसी से ४७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर पालिका की धर्मशाला, सरकारी विश्राम-गृह आदि स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर श्री हनुमान नाका नामक भव्य स्थान, कुआंहब अमराइ, हनुमान जी का मन्दिर जिसमें आत्मकद की मूर्ति है सामने भगवान राम का मन्दिर, हनुमान मन्दिर के बरावर शिवाजी का मन्दिर (शिव रात्रि को मेला लगता है) आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूं, चना मसूर, ज्वार, मूंग, उड़द तिवड़ा, तिल्ली अलसी, बीड़ी पत्ता, महुवा, लकड़ी, सागवान, कोयला आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

बैंक——यहां पर सैन्ट्रल, कोआपरेटिव, स्टेट बैंक आदि की शाखायें है।

विशेष--नगर का प्राचीन नाम श्रोषितपुर था जहाँ कि बाणासुर की राजधानी थी परन्तु अब वहाँ कोई चिन्ह नहीं है।

हरदा--यह नगर होशंगाबाद जिले में सी० आर० की दिल्ली-बम्बई वाली लाईन पर दिल्ली से ८७० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवें स्टेशन भी है और स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा-ताँगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से २फर्लांग की दूरी पर यहां जीजलबाई की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ से २१ कि० मी० दूर नर्मदाजी का नामी स्थल है। यहां पर शंकर जी का मन्दिर, (अहिल्ला बाई द्वारा बनवाया हुआ) ३६ कि० मी० दूरी पर जोगा का किला, जोगा किला से २० कि० मी० पश्चिम में गड़ी घाट है जहां से पानी गिरने की आवाज १० कि० मी० तक जाती है। यहाँ से ३६ कि० मी० दूर चारुआ गांव में शंकर जी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मुख्य रुप से गेहूँ, ज्वार, चना, सरसों, मूंग अरहर, उड़द, तिल, अलसी, मूंगफली, कपास, बिनौला, दालें आदि का उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, पंजाब बैंक आदि की शाखा है।

मन्डू--यह नगर मध्य प्रदेश प्रान्त में स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल--यह नगर दर्शनीय स्थनों के कारण मुख्य रुप से प्रसिद्ध है यहाँ पर जहाज महल, हिन्डौला महल, होसेंग सहाय का गुम्बद, जामा मस्जिद, बाच बहादुर का महल, रूपमती महल आदि है।

खाना किसली—यह मध्य प्रदेश प्रान्त का प्रमुख नगर है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर विन्दिया की पहाड़ियों में खाना नेशनल पार्क बसा है और यहां चीते बड़े-२ कुत्ते और हिरन आदि देखे जा सकते है।

बाग गुफायें—यह मध्य प्रदेश प्रान्त में स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये जैन धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बाग गुफायें, पंडिया गुफायें, यह मलमन्दी नामेश्वर का मन्दिर, बागफोर्ट, हिन्दू भागेश्वरी मन्दिर आदि हैं ।

भोपाल से कुछ प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में

(१०० कि० मी०=६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अस्ता	७८	अरुई	४६६	इन्दौर	१८३
उज्जैन	१८४	ग्वालियर	३४२	गुजरी	२४४
चन्दूर	५२७	जल वानियाँ	३०४	हिकरी	२७३
देवास	१४६	धामनाद	२५५	धुलिया	४३६
नरदाना	४०२	पाल घाट	२६२	बारेघाट	३५७
महूँ	२०२	मानपुर	२२३	माले गांव	४८६
राजपुर	३१७	रायसेन,	४४	शाजापुर	१६६
सारंगपुर	२२५	सिहोर	३५	सेन्धवा	३२८
सिन्ध खेड़ा	३६०	सोनगिर	४१७		

महाराष्ट्र

यह महाराष्ट्र, यह महाराष्ट्र,
अनगिन नगरों से हरा भरा.
है बम्बई जिसकी एक शान,
है वीर शिवा की वसुन्धरा.

जिला अहमदनगर

(अहमदनगर, संगमनेर)

अहमदनगर—महाराष्ट्र प्रान्त में अहमद नगर स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की मनमाड़-दौंड लाईन पर मनमाड़ से १५३ कि० मी० दूर तथा पूना के उत्तर-पूरब में लगभग १०६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहा सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कराची वाली धर्मशाला, चगड़े की धर्मशाला, फिरोयावाया की धर्मशाला और पटवा की धर्मशाला भी बहुत सुन्दर है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर एक नाथ महाराज सेन स्थान की शाई बाबा का स्थल, ज्ञानेश्वर महाराज जी का तीर्थ स्थान, अहमद नगर का किला जो हुसैन निजामाबाद का बनवाया है, श्री पिञ्जापौल गौरक्षण संस्था, यहाँ से ६ कि० मी० दूर चाँद बीबी महल के नाम से प्रसिद्ध सलावत खाँ का मकबरा, सफेद संगमरमर से बना हुआ दरबार हाल, टावरी मस्जिद, निजाम शाह का मकबरा, परिबाग और हस्तबिहिस्त बाग देखने योग्य हैं।

विशेष—यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। यह अहमद निजामशाह द्वारा १४६० में बसाया गया था। यहाँ पर हुसैन निजाम शाह का एक प्रसिद्ध किला है। जहां पर बहुत सी लड़ाईयां लड़ी गई। इस किले का यह भी महत्व है कि इसमें अंग्रेजों ने १६०१ के युद्ध में कैदियों को रखा था और दूसरी बार १६४२ के भारत छोड़ों आन्दोलन में भारत के प्रमुख नेताओं को जिनमें प्रधान मंत्री भी थे बन्दी बना कर इसी किले में रखा था।

उत्पादित वस्तुएं--यहाँ पर मूंग, कपास, बिनौला, जौ, चना, बाजरा की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, देना बैंक, महाराष्ट्र नगर जिला सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक, अहमद नगर डिस्ट्रिक्ट सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक आदि की शाखा हैं।

संगमनेर--महाराष्ट्र प्रान्त के जिला अहमद नगर में संगमनेर सेण्ट्रल रेलवे की मनमाड- ढोई लाईन पर रेलवे स्टेशन बेलापुर से ५० कि० मी० दूर और नासिक से ५ कि० मी० दूर पांच नदियों के संगम पर बसा हुआ है। इस लिये इसका नाम संगमनेर है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये एक स्टेशन पर और एक शहर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर सोमनाथ जी का मन्दिर, हनुमानजी का मन्दिर, बालाजी का मन्दिर, गणपति का मन्दिर, खाण्डेश्वर का मन्दिर, प्रवरा नदी पर गंगा माता का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गवार, मूगफली, तेल, खल, गुड़, गेहूं, चना आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, अहमद नगर डिस्ट्रिक्ट सैण्ट्रल को-ओपरेटिव बैंक, संगमनेर मर्चेन्ट बैंक, व अर्बन को-ओपरेटिव बैंक हैं।

जिला अमरावती

(अमरावती, चाँदूर' मुक्तागिरी)

अमरावती—महाराष्ट्र प्रान्त में अमरावती स्वयं एक जिला है। यह सी आर० की बाड़नेर अमरावती लाईन पर बाड़नेर से १० कि० मी० दूर एक मण्डी के के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये बलगांव वालों की धर्मशाला, सावनपुरा, आशाराम की धर्मशाला स्टेशन के पास और छत्तरीपुरी वाला जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—वहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, गाडगे महाराज की समाधि, साईनाथ मन्दिर, मुक्तागिरी स्थान जैनियों का तीर्थ, चिखलदरा शीतल हवा के लिये, जैन मन्दिर, गौशाला तथा आर० वी० संस्कृत पाठशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर तेल, बिनौला, जौ, चना, खल, ज्वार, मूंग आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक. पंजाब नेशनल बैंक व बड़ौदा बैंक की शाखा है।

चांदूर—महाराष्ट्र प्रान्त के अमरावती जिले में चाँदूर सेन्ट्रल रेलवे की

भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से २४७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये अग्रवाल पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, यहाँ से ३ कि० मी० दूर खेड़ में शिवजी का मन्दिर, उसमें एक तालाब, यहाँ से ३० कि० मी० दूर विनोबा रूख-साई को सुन्दर मन्दिर, सत्यनारायण जी, रानी, महाराजा राम देव जी, हनुमानजी, शङ्कर जी, श्री रामजी आदि के सुन्दर मन्दिर भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बिगोला, तुवर, ज्वार, खल, तेल, मूंग, मूंगफली मिर्च आदि पैदा होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, बैंक व अमरावती डिस्ट्रिक्ट सैण्ट्रल को-ओपरेटिव बैंक हैं।

मुक्तागिरी—महाराष्ट्र प्रान्त के अमरावती जिले में मुक्तागिरि एक पहाड़ी क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ कभी अनेक प्रकार के मोतियों की वर्षा हुई थी इसीलिये इसका नाम मुक्तागिरि पड़ा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा, टैक्सी स्कुटर आदि की सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये तलहैटी के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर तलहैटी के पास एक मन्दिर, चढ़ने की सीढ़ियाँ, पहाड़ पर एक गुफा में मन्दिर, शान्ती नाथ जी की दो प्रतिमायें तथा अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चावल यहां की मुख्य उपज है।

जिला अकोला

(अकोला, कारंजा)

अकोला—महाराष्ट्र प्रान्त में अकोला स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से १३९ कि० मी० की दूरी पर एक प्रसिद्ध मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ परसभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये राधा किशन की धर्मशाला स्टेशन के पास और बम्बई लांज भी स्टेशन के पास ही है,

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर गांधी आश्रम, आर्य समाज मन्दिर, गौशाला, राधाकृष्ण संस्कृत पाठशाला व ए० वी० एम० संस्कृत पाठशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बिनौला, चावल, तेल, खल, ज्वार, गोंद,पान, पीपल, उड़द, मूंग आदि की पैदावार होती है।

बैंक---यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहबाद बैंक, बड़ौदा बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

कारंजा--महाराष्ट्र प्रान्त के अकोला जिले में कारंजा सी. आर. की मूर्तिजापुर-यवतमाल लाईन पर मुर्तिजापुर से ३२ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगे की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल---यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला शहर में तथा एक धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल---यहाँ पर पिञ्जापोल संस्था (गौशाला), शिवजी का मन्दिर, और अन्य कई मन्दिर हैं जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें---यहां पर रुई, बिनौला, तुवर, उड़द, मूंग, अलसी, तिल, मूंगफली जौ, ज्वार आदि की पैदावार होती है।

बैंक---यहाँ पर स्टेट बैंक व बड़ौदा बैंक हैं।

जिला उस्मानाबाद

उस्मानाबाद--महाराष्ट्र प्रान्त में उस्मानाबाद स्वयं एक जिला है। यह तेल की बड़ी मण्डी है यहां का रेलवे स्टेशन यादसी है। यहां रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती है।

विश्राम स्थल---यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशालाओं में प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल---यहाँ पर शिवाजी का मन्दिर व अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें---यहां पर गुड़, ज्वार, मूंगफली, तेल, गेहूँ आदि की पैदावार होती है।

बैंक---यहां पर स्टेट बैंक, उस्मानाबाद डिस्ट्रिक्ट को ओपरेटिव बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

जिला औरंगाबाद

(औरंगाबाद, जालना)

औरंगाबाद---महाराष्ट्र प्रान्त में औरंगाबाद स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की मनमाड-काचगुडा लाईन पर मनमाड से ११४ कि० मी० दूर और बम्बई से रेल द्वारा ४०० कि० मी० की दूरी पर मलिक अम्बर द्वारा बसाया हुआ एक प्रसिद्ध नगर है। यहां पर सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं। यहां अजन्ता और एलौरा की गुफायें बहुत प्रसिद्ध हैं।

विश्राम स्थल---यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये मेवाड लाज शाहगंज में टूरिस्ट होम, काठियावाड़ा होटल, नटराज होटल, उदीपी होटल, अशोक होटल, एम्पर

होटल, पूर्णिमा होटल, महाराष्ट्र निवास, सिटी होटल, स्वास्तिक लॉज, औरंगाबाद होटल, ग्रीनस होटल, सर्किट हाउस यहाँ का रिजर्वेशन जिलाधीश द्वारा होता है, पी० डब्लू० डी० निरीक्षण बंगला यहा एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर द्वारा रिजर्वेशन होता है और डाक बंगला है यहां नगर पालिका इन्जीनियर द्वारा रिजर्वेशन होता है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, अकबर की पान चक्की, बीबी का मकबरा, औरंगजेब की कबर, शंकर ज्योति मन्दिर, एमपीरियम, किला, दौलताबाद यूनिवर्स्टी, औरंगजेब के गुरु कीं कबर, गौतमबाई अहिल्याबाई, सुनहरी, महल, जूना बाजार, जवाहर स्मारक, अजन्ता की ३२ गुफाएं (१०० कि० मी०) औरएलौरा की ३० गुफाएं (२७ कि० मी०) दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर उड़द, ज्वार, चना, बिनौला, अरहर, अलसी, मूंगफली, तिल, कपास आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर सैण्ट्रल बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, महाराष्ट्र बैंक की शाखायें हैं।

विशेष—सन् १६२६ में मालिक अकबर ने यह नगर बसाया उसकी मृत्यु के बाद यह मुगल शासकों के अधिकार में आ गया। यहां पर बहुत सी खन्डित इमारतें हैं यहां १२ बुद्धों की गुफायें हैं औरंगजेब ने अपनी रानी की यादगार में १६६० में एक बीबी का मकबरा बनवाया था यह भी आगरे के ताजमहल के समान ही है। मकबरे में बीबी की कब्र के पास ही उसकी नर्स की भी कब्र है।

जालना—महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में जालना सी० आर० की मनमाड काचेगुड़ा लाईन पर मनमाड़ से १७६ कि० मी० की दूर एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थित है। स्टेशन से २ कि० मी० की दूरी पर शहर है। यहां पर टैक्सी, रिक्शा, तांगा सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास है और एक धर्मशाला शहर में है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, शिवजी का मन्दिर व अन्य अनेकों मन्दिर हैं जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूंग, उड़द, ज्वार, कपास, बिनौला, तुवर, खल, गेहूं, मुज आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर सैण्ट्रल बैंक, महाराष्ट्र बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया आदि की शाखा हैं।

जिला कोल्हापुर

कोल्हापुर—महाराष्ट्र प्रान्त में कोल्हापुर स्वयं एक जिला है। यह एस०-आर० की मिरज-कोल्हापुर लाईन पर मिरज से ४६ कि० मी० की दूरी पर शिलहार-वंश के राजाओं की राजधानी के रूप में बसा हुआ है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये जैन धर्मशाला व सेठ मलिक चन्द्र द्वारा निर्मित बोर्डिंग हाऊस है इसके अतिरिक्त टूरिस्ट होटल (फोन न० ७४४), रेन्वो लॉजिंग होटल (फोन न० ४२०), राजहंस लॉज (फोन न० ६६३) आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य अनाथालय, नया महल, पुराना महल, रन्कला झील, शालीनी महल, टाऊन हाल, पंचगंगा घाट, कोटी तीर्थ, अम्बाबई मन्दिर, बिन्दु चौक, गार्डनस, पदभाराजे पार्क (रन्काला झील के पास), शाहु उद्यान (गंगावेश के पास), राजाराम हाल गार्डन, ताराबाई गार्डन, पन्हाला (२५ कि० मी० दूर), विशाल गड का किला (७० कि० मी० दूर), रधानागरी (८४ कि० मी० दूर), शंधशाही विष्णु का मन्दिर, चार शिखरबन्द जैन मन्दिर और तीन चैत्यालय तथा गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां गुड़, मूंगफली आदि पैदा होती हैं। यह गुड़ की विशेष मंडी है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, बड़ौदा बैंक, महाराष्ट्र स्टेट को-आपरेटिव बैंक, देना बैंक, इन्डिया बैंक व यूनियन बैंक हैं।

जिला चाँदा

चांदा—महाराष्ट्र प्रान्त में चांदा स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की विकरावाद-परली बैजनाथ लाईन पर विकरावाद से ११६ कि० मी० दूर स्थित है। यहाँ रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां कई महत्त्वपूर्ण मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौं, ज्वार व बाजरा की पैदावार होती है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक, बड़ौदा बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

जिला चन्द्रपुर
(बरोरा)

बरोरा—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला चन्द्रपुर में बरोरा सी० आर० की वर्धा-बल्हारशाह लाईन पर वर्धा से ७३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं। यह एक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला शहर में और एक धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आनन्दवन नाम का गाँव बसाया गया है जहां पर माता के रोगियों का इलाज होता है, जैन मन्दिर, २० कि० मी० दूर महवली श्री परधानाथ भगवान का मन्दिर, ५६ कि० मी० दूर एक राष्ट्रीय उद्यान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तुवर, ज्वार, तिलहन, इमली, तेल, खल, कपास व बिनौला पैदा होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाव नेशनल बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

जिला जलगाँव

(जलगांव, अमलनेर, भुसावल)

जलगांव—महाराष्ट्र प्रान्त में जलगांव स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर और भुसावल-सूरत लाईन पर स्थित है। यह दिल्ली से ११२० कि० मी० और भुसावल से ३० कि० मी० दूर है। यहां सवारी के लिये ताँगे और रिक्शा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला नगर में और एक धर्मशाला स्टेशन के पास है इसके अतिरिक्त अजन्ठा गैस्ट हाऊस (बस स्टैण्ड के पास) आदि।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के अनेकों मन्दिर व बाजार देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां उड़द, मूंग, मोठ, मूंगफली, धनिया, कपास व ज्वार आदि पैदा होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, महाराष्ट्र बैंक व जलगांव बैंक हैं।

अमलनेर—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त के जिला जलगाँव में डब्लू० आर० की सूरत-भुसावल लाईन पर सूरत से २५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास और एक धर्मशाला नगर में है इसके अतिरिक्त यहां लक्ष्मी लॉज व सीपी लॉज भी विश्राम के लिये अच्छे हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत श्री सखाराम जी की तपो भूमि व उनकी समाधि देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त श्रीराम मन्दिर, तत्वज्ञान मन्दिर, श्री खारटेश्वर मन्दिर, श्री खलेश्वर मन्दिर, श्री वरुणेश्वर मन्दिर, श्री स्वर्णेश्वर मन्दिर, हनुमान मन्दिर व अन्य तीर्थ स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मिर्च, धनिया, बिनौला, ज्वार, उड़द, मूंग, व चावल आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, जलगांव डिस्ट्रिक सेण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक व अमलनेर को-आपरेटिव बैंक आदि हैं।

भुसावल—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त के जलगाँव जिले में सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से १०६५ कि० मी० की दूरी पर एक तेल की मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहाँ सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर, चकई मन्दिर, देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर रुई, बिनौला व मूंगफली, केला आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, भुसावल प्युपिल्स को-आपरेटिव बैंक व जलगांव डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक हैं।

जिला थाना

(थाना, उल्हास नगर, कल्याण)

थाना—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त में स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से १५०७ कि० मी० तथा बम्बई से ३२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सवारी के लिये सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, महाराष्ट्र बैंक व यूनियन बैंक हैं।

उल्हासनगर—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त के जिला थाना में कल्याण रेलवे स्टेशन से ६ कि० मी० और बम्बई से ५७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये ताँगे मिलते हैं।

वश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां के मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, गुड़, तेल आदि की पैदावार है।

बैंक—यहाँ पर कनारा बैंक, स्टेट बैंक, यूनाईटेड बैंक, पंजाब नेशनल बैंक हैं।

कल्याण—यह नगर महाराष्ट्र के जिला थाना में सी० आर० की दिल्ली-बम्बई लाईन पर दिल्ली से १४८७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा व तांगा आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर व अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर उड़द, गुड़, तुवर, तिल, प्याज आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, कनारा बैंक, यूनियन बैंक, महाराष्ट्र बैंक व थाना डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक हैं।

जिला धुलिया

धुलिया—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त में स्वयं एक छोटा सा जिला है। और सी० आर० की चालिसगाँव-धुलिया लाईन पर चालिसगाँव से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये नगर पालिका की धर्मशाला (पानी की टंकी के पास) आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां बाजार में एक मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, विनौला, खल, उड़द, मूंग आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक व बड़ौदा बैंक हैं।

जिला नागपुर
(नागपुर, रामटेक)

नागपुर—यह महाराष्ट्र प्रान्त का स्वयं एक जिला है। और सी० आर० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से ३९३ कि० मी० दूर एक नाग नदी पर बसा हुआ है। इसी कारण इसका नाम नागपुर पड़ा। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली की रेलवे लाईन नांगपुर से सम्बन्धित हैं। यहां सवारी के लिये रिक्शा, तांगे, टैक्सी व सिटी बस मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये जमुनादास पोदार की धर्मशाला स्टेशन के पास, जैन धर्मशाला इतवारी बाजार में, सैण्ट्रल होटल गाँधीनगर में, माऊण्ट होटल माऊण्ट रोड पर फोन न० २३९१६, लक्ष्मीनारायण इन्सटीट्यूट होटल, शिशु महल होटल फोन न० २४०३०, श्याम होटल फोन न० २१४०७, आनन्द आश्रम फोन न० २३२५०, कोहिनूर होटल फोन न० २३६७३ आदि धर्मशालायें व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, टैक्नीकल इन्सटीट्यूट, कस्तूर चन्द पार्क, जुम्मा तालाब, गांधी सागर, गोरेवारा तालाब, म्यूजियम, गाँधी बाग, अजायब घर, आबाझारी गार्डन, इटली खाई, राजकीय प्रेस, अंगूरों का महाराज बाग, चिड़िया घर, नागपुर विश्वविद्यालय, केन्द्रीय लोक सेवा, स्वास्थ्य इंजीनियरिंग अनु-

संधान संस्था, सीता बल्दी किला, अम्बा झेरी झील, तेलन खेड़ी तालाब, ऊमा तालाब, नगरखाना, किला, १३ मन्दिर, जैन मन्दिर, कचहरी, कौंसिल चैम्बर, विक्टोरिया मैमोरियल, भोसला संस्कृत महा विद्यालय तथा ब्रह्माकारा वर्धिनी संस्कृत पाठशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर संतरा, विनौला, गौंद व बीड़ीपत्ता आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डिया बैंक, इलाहाबाद बैंक, नागपुर यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, कनारा बैंक, बीकानेर बैंक, बड़ौदा बैंक, देना बैंक, यूनियन बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

विशेष—नागपुर शहर अधिक प्राचीन नहीं है। १८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में देवगढ़ के गोंद राजाओं ने नागपुर को अपनी राजधानी बनाया था और १७४० में राघोराव जी घोसला ने नागपुर में अपना निवास स्थान स्थापित किया था। नवम्बर १९५६ में इसको महाराष्ट्र राज्य में मिला दिया गया। इस नगर के बाहर चारों ओर संतरे के बाग हैं जिसकी प्रसिद्धि सारे भारतवर्ष में है। नगर में सुगन्धित वायु बहती है।

रामटेक—महाराष्ट्र के नागपुर जिले में 'रामटेक' दक्षिणी-पूर्वी-रेलवे की नागपुर रामटेक लाईन पर नागपुर से ४२ कि० मी० की दूरी पर जैनियों के एक तीर्थ स्थान के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये रिक्शा, ताँगा, टैक्सी आदि सवारियाँ उपलब्ध होती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर १० बड़े जैन मन्दिर हैं। एक मन्दिर में एक प्रतिमा १४ गज की है, और ४ गज की है जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त रामटेक मन्दिर, नागजिन मन्दिर, आदि हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चावल, मक्का, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, पैदा होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक है।

जिला नान्देड

नान्देड—महाराष्ट्र प्रान्त में जिला नान्देड़ स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की मनमाड़-काचेगुड़ा लाईन पर मनमाड़ से ३५० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां गुरु गोविन्द सिंह जी अन्तर्धान हुये थे। स्टेशन से नादेर बाजार ३ कि० मी० है। रक्षा और तांगा वहां की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला मारवाड़ियों की है और एक दास महाराज की धर्मशाला है। प्रकाश लोजींग होटल, रूप

महल पंजाबी होटल,, कल्पना लोजीग और बोर्डिंग होटल, पंजाब होटल, उदीरी होटल आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर ५५० वर्ष पुराना गुरु द्वारा, गोदावरी नदी के किनारे बाबा निधान सिंह का गुरु द्वारा, श्रीमान दास महाराज का मन्दिर, गुरुद्वारे में गुरु महाराज का सिंहासन और उस पर गुरु जी की रत्न जड़ित कलंगी स्थापित हैं। जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त मनार प्रोजेक्ट, (४८ कि० मी०दूर, सुन्दर बाग, इन्सपेक्सन बंगला, बांध) निजाम सागर (१३५ कि० मी० दूर, डाक बंगला, बांध) औंधा नामनाथर (६५ कि० मी० दूर, भगवान शिव का मन्दिर)' पार्ली वैंजनाथ, म्यूनिस्पल पार्क,

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर उड़द, मूंग, बिनौला, तिलहन, कपास, हल्दी, तुवर आदि की पैदावार होती हैं। हल्दी, उडद, मूंग की यह विशेष मण्डी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया आदि बैंक हैं।

जिला नासिक

(नासिक, श्री गजां पंथी (सिद्ध क्षेत्र), घोटी बाजार, देवलाली, नासिक रोड, मालेगांव, श्रीमांगी तुगी (सिद्ध क्षेत्र)।

नासिकः—महाराष्ट्र प्रान्त में नासिक स्वयं एक जिला है यह सी० आर० की देहली बम्बई लाईन पर देहली से १३६१ कि० मी० दूर तथा बम्बई से ११५ कि. मी. की दूरी पर गोदावरी नदी के किनारे बसा हुआ है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए महाराज कपूरथला की धर्मशाला, सेठी धर्मशाला, सिंघानिया धर्मशाला, सोमेश्वर महावीर की धर्मशाला तथा लिबर्टी होटल, मजदा होटल व ग्रीन्स होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर गोदावरी नदी के पास पंचवटी स्थान शीतल वन ७ कि० मी० दूर ५ कुए एक जैसे कि जिसमें से १ से दूसरे कुए में पार हो जाते है वह (शीतल वन सगंम के बीच) रामचन्द्र जी का वनवास स्थान, सीता हरण करना, रामचन्द्र जी का मन्दिर, सोमेश्वर जी का मन्दिर, भीषरोग मन्दिर, ६०० वर्ष पुराना क्पलेश्वर जी का मन्दिर, सीता की गुफा, रामेश्वर मन्दिर, पंचरामेश्वर, गोरा राम मन्दिर, उमा महेश्वर, भद्रकाली का मन्दिर, देव मन्दिर, शारदा मन्दिर, कालाराम मन्दिर, गौशाला, पंचवटी पर राम कुण्ड, सीता कुण्ड तथा लक्ष्मण कुण्ड आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर चावल, मूंग, धनिया, प्याज, आलू, तेल मूंगफली, अंगूर, आदि की पैदावर होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, देना बैंक, महाराष्ट्र बैंक, नासिक को आपरेटिव बैंक तथा नासिक सैण्ट्रल को आपरेटिव बैंक हैं।

विशेष—यह हिदुन्ओं का एक पवित्र नगर है। यहां पर हर बारहवर्ष बाद एक कुम्भ का मेला लगता है। जिसमें लाखों यात्री स्नान करने आते हैं। इसके दक्षिण-पश्चिम में ८ कि० मी० दूरी पर बम्बई रोड पर २३ बौद्ध गुफांए जो हीनयान युग की मूर्तिकला का उत्तम उदाहरण है।

श्री गंजा पंथी—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला नासिक में श्री गंजा पंथी (सिद्ध क्षेत्र) ४०० फिट की ऊंचाई पर गंजापथ पर्वत पर स्थित है। श्री गंजापंथी से यहां बस द्वारा पहुंचते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां से १ कि० मी० पर पर्वत की चढ़ाई के लिए सीढ़ियां बनी हैं, पर्वत पर २ मन्दिर, २ कुण्ड और गुफाएं हैं। मन्दिर के शिखर और प्रतिमाएं पत्थर काट कर बनाई गई हैं जो देखने योग्य हैं। दो स्थानों पर चरण पादुका हैं, ये भी दर्शनीय हैं।

घोटी बाजार—महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में घोटी बाजार सी० आर की देहली-बम्बई लाईन पर देहली से १३९४ कि० मी० दूर तथा बम्बई से १४६ कि० मी० दूर तथा नासिक रोड से ४२ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रुप में स्थित है। यहां लगभग सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां से १२० कि० मी० दूर राकेद एक गांव है वहां पर अनेकों तीर्थ हैं जैसे भगवान राम ने गरूड़ का उद्धार किया वह स्थान रामायण की कथा स्थल है। यहां से करीब १२० कि० मी० दूर विल्सन डैम है, यहां से करीब ४० कि० मी० दूर नासिक है, नासिक से लगभग १२५ कि० मी० अम्बकेश्वर है वहां से गोदावरी का उदगम हुआ है जो एक तीर्थ स्थान भी हैं, वहां संत निवृत्ती नाथ जी की सामधि है जो दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुए—यहां पर चावल, मगर. मुरमुरा, रामतिल्ली, दाल, आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां नासिक सैण्ट्रल को ओपरेटिव बैंक, व घोटी मर्चेन्टस बैंक हैं

देवलाली—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला नासिक में देवलाली सी० आर० की बम्बई, भुसावल लाईन पर बम्बई से १८२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां की रक्शा, तांगा, टैक्सी स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूं, चना, मटर, जौ, ज्वार, बाजरा आदि की पैदावारहोती है

बैंक—नासिक के बैंकों से कार्य होता है।

नासिक रोड—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला नासिक में नासिक रोड सी०आर०-की देहली-बम्बई लाईन पर देहली से १३३५ कि० मी० दूरी पर एक मण्डी के रुप में स्थित है यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं ।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए शहर में उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां शहर में एक मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें— यहां पर चावल, मूंग, धनिया, प्याज, आलू, तेल, मूंगफली, अगूंर आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बड़ौदा बैंक, आदि बैंक हैं

मालेगांव--महाराष्ट्र प्रान्त के जिला नासिक में मालेगांव सी० आर० की मनमाड रेलवे स्टेशन से ३५ कि० मी० दूर तथा धुलिया रेलवे स्टेशन से ४८ कि० मी० दूर एक मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहां के लिए रेल नहीं जाती अन्य सवारियां आती जाती हैं यहाँ पर टैक्सी रिक्शा तागाँ की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए नगर में एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गौशाला तथा मन्दिर देखने योग्य हैं

उत्पादित वस्तु—यहां पर गुड़, जौ, मटर, अलसी, शक्कर, मूंगफली, गेहूँ, बाजरा आदि पैदा होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, देना बैंक, बड़ौदा बैंक, व सैण्ट्रल बैंक हैं।

श्री मांगी तुंगी—माहराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में श्री माँगी तुंगी मनमाड़ स्टेशन से ६० मील की दूरी पर माँगी तुंगी नाम के दो पहाड़ हैं । यहाँ पर राम. हनुमान और सुग्रीव मोक्ष के लिए पधारे थे। यहाँ के लिए बस कीसवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में कई धर्मशाला है।तथा विशाल जंगल में पहाड़ के नीचे भी एक धर्मशाला है । एक विशाल मन्दिर, माँगी पहाड़ पर चार गुफांए, पहाड़ो में पत्थरों की अनेकप्रतिमाँए मूलनायक भद्रबाहु की प्रति माँए ३मी० की दूरी पर तुंगी पहाड़ पर मूर्ति का काम व गुफाँए देखने योग्य हैं। यहाँ से

उत्पादितवस्तुए.—यहाँ की मुख्य पैदावार चावल धान, कपास, जौ हैं।

पूना—महाराष्ट्र प्रान्त में जिलापूना स्वंय एक जिला है। यह सी० आर की कल्याणरायचूर लाईन पर कल्याण से १३८ कि० मी० की दूरी पर महाराष्ट्र के एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थित है। टैक्सी, सिटी बस, रिक्शा, तांगा, स्कूटर यहां की स्थानीय सवारी हें।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए तेजपाल गोकल दास की धर्मशाला स्टेशन से २ कि० मी० दूरी पर, गुजरात लाज, लक्ष्मी लाज (सीटी पोस्ट आफिस के सामने), चेतना लाज, जैन धर्मशाला स्टेशन से ३ कि० मी० की

दूरी पर, कश्मीर रैस्टोरेन्ट स्टेशन रोड फर्गुसन कालिज व अस्पताल, नेवियर होटल, पूनम होटल, पूना होटल, वेलसने होटल, नेशनल होटल, अमीर होटल१५ कनाट रोड फोन न० २७३७१---३, होटल गुलमोहर १५A/1 कनाटरोड, फोन० २३५४५-६-७, देव होटल, चेत नहोटल, रिट्ज होटल ७ कनाट रोड फोन० २२९६५ आदि होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दो आर्यसमाज मन्दिर, शिवाजी पार्क, बिजली झील,आगाखां महल, सिनरवाड़ा, शिवाजी की मूर्ति,जंगली महाराज मन्दिर, पातेश्वरी मन्दिर, पार्वती मन्दिर, पेश्वे पार्क, सारस पार्क, झांसी की रानी, सम्भा जी पार्क, महात्मा फुलेमार्केट, शिवाजी का किला, शिवाजी का पुल, संगम ब्रज, नगर पालिका, पूना राशन गोदाम, आगाखां पैलेस, वूंद गार्डन, चतुरश्रृंगी मन्दिर, एम प्रेस गार्डन, दगोडो, भण्डारकर-ओरियन्टल रिसर्च इन्सटीटूयूट, भारतइतिहास सम्शोधक मंडल, राष्ट्रीय रसायन लायब्रेरी. पातेश्वर गुफाएं, पार्वती पहाड़ी व मन्दिर, यूनिवर्स्टी बिल्डिंग, सिन्डेश छत्री, वेदसा गुफाएं भाजा गुफाएं लोर्ड रीय म्यूजियम, पूना कोर्ट, पांच पाण्डुओं की गुफा कस्तूरवा समाधि, तिलक स्मारक, शास्त्री स्मारक, तुलसी बाग, जय जवान जय किसान स्मारक, हनुमान मन्दिर, शिवाजी के जमाने का मन्दिर, राम मन्दिर, यर्वदाजेल, डिफैन्स अकादमी, एन्टीबायोटिक्स फैक्ट्री, सैण्ट्रल व टर एण्ड, पावर रिसर्च स्टेशन, पूना विश्वविधालय, पूना गौशाला, वुन्दु गार्डन, आदि दृश्य देखन योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गुड़, कपास, चना, मटर, अलसी, आदि की पैदावर होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटिड कार्मासियल बैंक, इण्डिया बैंक, बड़ौदा बैंक, महराष्ट्र बैंक, देना बैंक, कनारा बैंक संगली बैंक, व यूनियन बैंक आदि बैंक हैं।

विशेष—यह पहाड़ियों से घिरा हुआ एक सुन्दर शहर है। यह मराठो का ऐतिहासिक और सांस्कृति नगर रहा है। सन १७५० में मराठों की राजधानी यहीं बनी थी। बम्बई से पूना तक की यात्रा ११९ मील की बिजली की गाड़ी से ३ घण्टे में पूरी हो जाती है। यहाँ की जलवायु बहुत अच्छी है। खेल कूद का यह केन्द्र है। भारत के बहुत से प्रमुख टैक्नीकल प्रोजैक्ट यहां पर स्थित हैं। यहाँ और आसपास में अनेको देखने योग्य मन्दिर हैं। पूना में एक नगर पालिका का प्रसिद्ध तालाब है। यहां से लगभग ८ कि० मी० की दूरी पर एक नेशनल कैमिकल लैब्रोट्री है जो १९५० में स्थापित हुई थी जिसका भवन अति सुन्दर व देखने योग्य है।

जिला परभणी

परभणी—महाराष्ट्र प्रान्त में परभणी स्वयं एक जिला है। यह सी० आर० की कल्याण-रायचूर लाईन पर कल्याण से ३९१ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी

के रुप में स्थित है। पर लिये सभी सवारियां मिलती हैं जैसे:—टैक्सी, रिक्शा, ताँगा यहाँ की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर तथा अन्य अनेकों मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंग, मटर, ज्वार, बाजरा, बिनौला, मूंगफली कपास आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया व महाराष्ट्र बैंक है।

जिला बीड़

बीड़—महाराष्ट्र प्रान्त में वीड़ स्वय एक जिला है। यह एस० सी० आर० की मनमाड़-काचेगुड़ा लाईन पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये रेल नहीं जाती। वस यहां के लिये मुख्य सवारी है। यह जालना से १०२ कि० मी० वारसी से ११२ कि० मी०, औरंगा से १२८ कि० मी० तथा परली वैजनाथ से ११५ कि० मी० की दूरी पर है। जालना, बारसी, औरंगाबाद व परली वैजनाथ से यहां के लिये बस मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर, तथा अन्य अनेको मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर चना, मटर, बाजरा कपास, बिनौला, उड़द, मूंगफली तिल्ली आदि की पैदावार होती है।

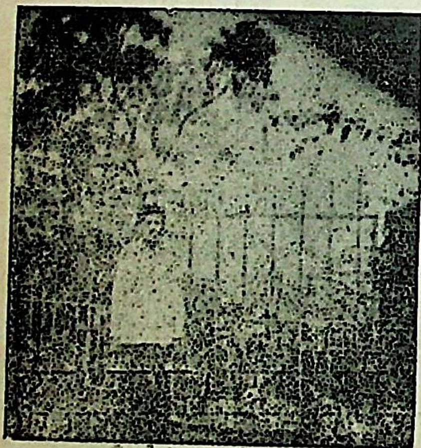
जिला बम्बई
(बम्बई, माथेरान)

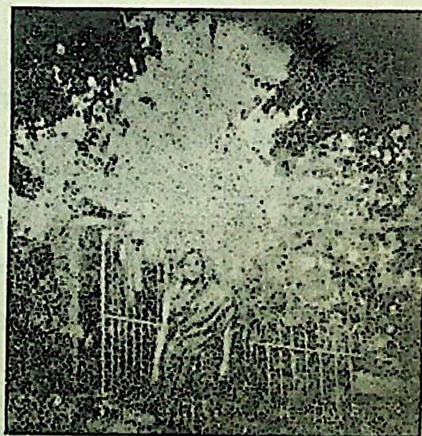
बम्बई—महाराष्ट्र प्रान्त में बम्बई स्वयं एक जिला है। यह डब्लू० आर० की देहली-बम्बई लाईन पर देहली से १३८४ कि० मी० दूर महाराष्ट्र की राजधानी के रुप में एक सुन्दर नगर समुद्र के किनारे पर बसा हुआ है। यहां के लिये हवाई जहाज के साथ-साथ सभी सवारियाँ जाती हैं। रिक्शा, ताँगा, स्कूटर, सिटी बस आदि यहां की स्थानीय सवारियाँ हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये हीराबाग सी० पी० टैंक गिर गाँव, माधो बाग सी० पी० टैंक गिर गांव, सूखानन्द की धर्मशाला गिर गाँव, बिड़ला जी की धर्मशाला फानस वाड़ी में, इसमें ठहरने के लिये वलदेवदास शिव नारायण से तथा पंचायती धर्मशाला में ताराचन्द घनश्माम के यहाँ से आज्ञा पत्र लाने

पड़ते हैं। इन धर्मशालाओं के अतिरिक्त अनेक होटल है जिनमें मुख्य ये हैं–एयर लाईन होटल चर्चगेट फोन न० २९५४३६, एम्बेसेडर होटल चर्च गेट फोन न० २९११३१ होटल अरोमा १९० डा० अम्बेडकर रोड, होटल बम्बई इन्टरनेशनल २९ मैरीन ड्राइव आर्य निवास होटल कालवदेव रोड फोन न० ३११०११-१२, एसकोर्ट होटल ७८ गार्डन रोड फोन न० २११०६७ ग्राण्ड होटल फोन न० २७०२११, जाहू होटल फोन न० ५७१३२१-२२, होटल मनोरा २४५ पी० डी० मैलो रोड फोर्ट फोन न० २६४-७५८, मैट्रोपोल होटल पलटन रोड फोन न० २७७३३०, होटल नटराज १३५ नेताजी सुभाष रोड फोन न० २४४१६१-७, होटल पार्क वे रानाडे रोड फोन न० ४५३३६१, ४५१०९२, प्यार केज एपोलो होटल लैन्स डाऊन रोड फोन न० २१११७५-२१४४ ३२-२१४० ३, रवि होटल १९१ दादा भाई नौरोजी रोड फोन न० २६१३५४, रिट्ज होटल ५ जमशेद जी टाटा रोड फोन न० २९५०६१, सी० ग्रीन होटल मैरीन ड्राईव फोन न० १९६१०७, २९६०६८, सी० प्लेश होटल २६ स्टैण्ड रोड फोन न० २१३ ११, शलीमार होटल कवाला हिल फोन न० ३६१४११, ताज महल होटल अपोलो बन्दर फोन न० २९७७५५, इनके अलावा और भी बहुत से होटल यात्रियों के विश्राम के लिये हैं।

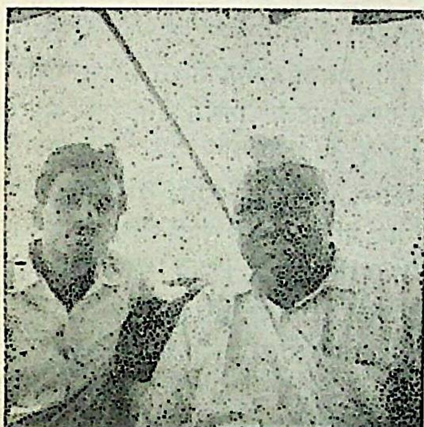
दर्शनीय स्थल—बम्बई नगर में अनेको दर्शनीय स्थल है जो ये है–आर्य समाज मन्दिर, मैरीन ड्राइव और चौपाटी, चर्चगेट स्टेशन शिवजी का मन्दिर म्यूजियम,


एली फेन्टा गुफा बम्बई

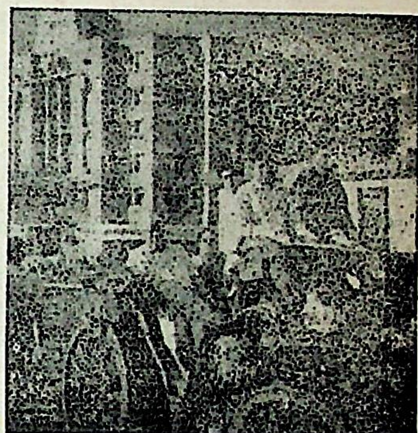

एली फेन्टा गुफा बम्बई

विश्वविद्यालय, ऐलीफैन्टा की गुफायें, गोरे गांव नेशनल पार्क, मिल्क कालोनी, ओबजरवेशन पोस्ट, कन्हेरी गुफायें, विहार झील, फिल्म स्टूडियों, कमला नेहरू पार्क, महालक्ष्मी चैम्बर, बुढ़िया का जता, मालाबार होटल, दादर बीवी दादर, क्रिकेट स्टेडियम, मछली म्यूजियम, ताराबाग, व्ही शांताराम स्टूडियों, शिवाजी पार्क, शान्ता कुण्ड, जू गार्डन, न्यू म्यूजियम, गांधी स्मारक, फ्लोरा का झरना, विक्टोरिया गार्डन, घंटाघर,

झील, आर० के० स्टूडियों राजा बाई सागर, हाईकोर्ट, जुबली बाग, गुलाब वाड़ी, जैन मन्दिर, ममा देवी का मन्दिर, बलेश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, गुरुकुल महाविद्यालय, प्रथम आर्य समाज की स्थापना का स्थान, गेटवे आफ इण्डिया, हेंगिंग गार्डन



बम्बई एलीफेन्टा स्टीमर मार्ग



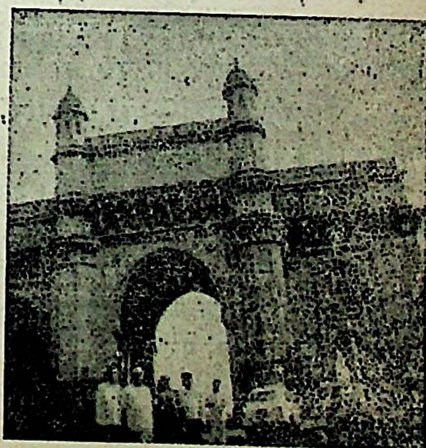
बम्बई रेलवे स्टेशन

बबलू नाथ मन्दिर, महालक्ष्मी मन्दिर, कौंसिल हाल, जूहू हवाई अड्डा, शिवाजी स्मारक, एस० एन० डी० टी० महिला महाविद्यालय, सैकेट्रियेट, टैक्नीकल एजूकेशन विभाग, मफतलाल वैज्ञानिक तथा औद्योगिक संग्राहलय, तथा समुद्र के दृश्य देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर नारियल, गोला, काजू, मसाले आदि की अच्छी पैदावार होती है।

बैंक—लगभग सभी बैंकों की शाखायें इस नगर में काम करती है।

विशेष—यह नगर महाराष्ट्र प्रान्त की राजधानी है। यह भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र है तथा आधुनिक युग का सुन्दर एवं सभ्य नगर है। यह नगर तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है, इसकी चौड़ी-चौड़ी स्वच्छ सड़कें, गगन चुम्बी अट्टालिकायें, चित्ताकर्षक बाजार एवं स्टूडियो दर्शनीय हैं। यह आधुनिक कला का सबसे सुन्दर नगर भारत का लन्दन कहा जाता है। यहां पर हवाई अड्डा व बन्दरगाह होने के कारण यह एक्सपोर्ट एण्ड इम्पोर्ट की सबसे बड़ी मण्डी व भारत का अन्त राष्ट्रीय व्यापार केन्द्र है।



गेटवे आफ इण्डिया बम्बई

माथेरान—यह महाराष्ट्र प्रान्त में बम्बई का सबसे पास का पहाड़ी स्टेशन हैं। यह सी० आर० की नरेल माथेरान लाईन पर बम्बई से ६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी आदि की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ एलेक्सन गैस्ट हाऊस, अशोक होटल, बोम्बे वीयू होटल ब्राईट लेन्डस होटल, सैन्ट्रल होटल, केसियल होटल, खान होटल, लक्ष्मी होटल, रोयल होटल, मेघदूत होटल, शालीमार होटल, वेस्ट एण्ड होटल, रीगल होटल, आदि प्रमुख होटल है जिनमें रहने-सहने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर खेलने का मैदान, चार लोट्टा झील, राम बाग, एबी पार्क, पाण्डे का खेलने वाला मैदान, पीसर नाथ मन्दिर (चार लोट्टा जील के पास), श्री शिव मन्दिर (पाण्डे प्लेग्राउन्ड के पास), राम मन्दिर (रेलवे स्टेशन के पास) मस्जिद (कपाडिया मार्केट के सामने), आदि प्रमुख स्थान दर्शनीय है।

बैंक—नरेल में यूनियन बैंक आफ इण्डिया की प्रमुख शाखा स्थापित है।

जिला बुलढाना
(खामगांव, नांदुरा, मलकापुर)

खामगांव—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला बुलढाना में खाम गांव सी० आर० की जालम्ब- खामगांव लाईन पर ज़ालम्ब से १३ कि० मी० की दूरी पर एक मन्डी के रूप में स्थित है। यहां रिक्शा, ताँगे की सवारिया मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये पूरन चन्द्र जी की धर्मशाला व सरदार मल जी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, अम्बाजी का मन्दिर, सा ्द्री माल मन्दिर, सत्यनारायण मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, भगवान बालाजी का जमुना तालाब, नटराज गार्डन, यशराय गार्जन, दिगम्बर जैन मन्दिर, शिताम्बरी मन्दिर टिकक राष्ट्रीय विद्यालय, धारपुरी की भवानी देवी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मटर, जौ, कपास, बिनौला, उड़द, मूंग, मूंगफली आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक व सैण्ट्रल बैंक है।

र: –ा[illegible] प्रान्त के जिला बुलढाना में नान्दुरा सी० आर० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से ८८ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में [illegible]त हैं और यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए गंगा विशन भवन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर श्री बाबा जी का मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर मटर, चना, ज्वार, उड़द, मूंग, रूई, विनौला आदि पैदा हंती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

मलकापुर—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला बुलढाना में मलकापुर सी० आर० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से ५० कि० मी० दूर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास और दूसरी धर्मशाला शहर में है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गौरी शंकर मन्दिर, प्रतिशल्क मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, मूंगफली, उड़द, मूंग, रूई, मोठ, खल, मिर्च, ज्वार, अलसी की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

जिला भन्डारा
(भण्डारा, गोंडिया)

भण्डारा—महाराष्ट्र प्रान्त में भण्डारा स्वयं एक जिला है। यह एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से १०६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं। तथा रिक्शा और तांगा यहां की स्थानीय सवारियां हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है व नगर में और भी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, चना, अलसी, जौ, ज्वार, बाजरा आदि की पैदावार होती है।

गोंडिया—महाराष्ट्र प्रान्त के भण्डारा जिले में गोंडिया उ० पू० रे० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से १००१ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां रिक्शा, तांगे की सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। व नगर में कई धर्मशाला व होटल भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व संस्कृत पाठशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अलसी, धान, तिल, उड़द, लाख, कपड़ा, गोंद, चिरौंजी, चना सफेद- बीड़ी पत्ता, गेहूं आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक व सैन्ट्रल बैंक आदि बैंक हैं।

जिला यवतमल

(यवतमल, वणी)

यवतमल—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला यवतमल सैन्ट्रल रेलवे की मूर्तिजापुर-यवतमल लाईन पर मूर्तिजापुर से ११३ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तुवर, गुड़, दाल उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, तेल, खल, बिनौला, कपास आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक व सैण्ट्रल बैंक हैं।

वणी—महाराष्ट्र प्रान्त के यवतमल जिले में वणी म० रे० की माजरी-राजूर लाईन पर माजरी से १५ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियां आती जाती हैं। रिक्शा व तांगा यहां की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। नगर में कई और भी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नगर में अनेक मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, बिनौला, खल, लाही, ज्वार, बाजरा, सरसों, मूंग, उड़द, तुवर, तुवर दाल, अलसी, बीड़ी पत्ता, तिल आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

जिला रत्नगिरी

(रत्नगिरी)

रत्नगिरी—महाराष्ट्र प्रान्त में रत्नगिरी स्वयं एक जिला है। यह कोल्हापुर से १४६ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगे की सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में एक धर्मशाला है। इसके अतिरिक्त डाक बंगला व सरकारी गैस्ट हाऊस भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नगर के कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर आम, नारियल, चना, जौ, धान, चावल आदि की पैदावारहोती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, कनारा बैंक, सिन्डीकेट बैंक, महाराष्ट्र बैंक, रत्नगिरी अरबन को-आपरेटिव बैंक व यूनियन बैंक हैं।

जिला वर्धा

(वर्धा, आरवी, पुलगांव)

वर्धा—महाराष्ट्र प्रान्त में वर्धा स्वयं एक जिला है। यह म० रे० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से ३१४ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए बच्छराज की धर्मशाला मदन मोहन धर्मशाला, सरकारी विश्रामालय, ये तीनों स्टेशन के पास हैं तथा स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर गांधी धाम आश्रम है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, सर्वधर्म मन्दिर, सेवाग्राम आश्रम, भरतराम मन्दिर, गांधी ज्ञान मन्दिर, मगन संग्रहालय तथा कुदिनपुर क्षेत्र हैं जहां श्री कृष्णजी ने रुकमणि जी का हरण किया था, आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर तेल, खल, मूंग, तुवर, ज्वार, बिनौला, कपास आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, महाराष्ट्र बैंक, वर्धा सैण्ट्रल बैंक हैं।

आरवी—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला वर्धा में आरवी सै० रे० की पुलगांव-आरवी लाईन पर पुलगांव से ३५ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए प्रताप भवन व शाली ग्राम धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जैन मन्दिर तथा रुक्मणी जी का हरण स्थल दर्शनीय हैं। यहां पर पालीवाल ब्राह्मण वैदिक ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत पाठशाला आदि दर्शनीय हैं। और भी कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, बिनौला, मटर, चना, तिल, तेल, खल पैदा होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व महाराष्ट्र बैंक हैं।

पुलगांव—महाराष्ट्र प्रान्त के जिला वर्धा में पुलगांव से० रे० की भुसावल-नागपुर लाईन पर भुसावल से २८४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। नगर में और भी धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मटर, चना, तेल, खल, ज्वार आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर महाराष्ट्र बैंक हैं।

जिला साँगली

(सांगली)

सांगली—महाराष्ट्र प्रान्त में सांगली स्वयं एक जिला है। यह द० रे० की मिरज-सांगली लाईन पर मिरज से १० कि० मी० की दूरी पर महाराष्ट्र की हल्दी व मूंगफली की एक प्रसिद्ध मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं। रिक्शा व तांगा यहां की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व सांगली पिञ्जापोल गौशाला देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मटर, हल्दी, मूंगफली, लाल मिर्च, तम्बाकू, गुड़, धनिया, शक्कर आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, कनारा बैंक, महाराष्ट्र बैंक व बड़ौदा बैंक हैं।

जिला सोलापुर

(सोलापुर)

सोलापुर—महाराष्ट्र प्रान्त में सोलापुर स्वयं एक जिला है। यह से० रे० की कल्याण रायचूर लाईन पर कल्याण से ४०१ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये नमक वालों की धर्मशाला स्टेशन से १॥ कि० मी० की दूरी पर है। इसके अतिरिक्त अजन्ता लॉज चौक पर, डैक्कन लॉज आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व पिञ्जापोल सोलापुर गौशाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर उड़द, मूंग, गुड़, ज्वार, तुवर, मूंगफली आदि की अधिक पैदावार होती है। इन वस्तुओं की यह एक बड़ी मण्डी है। इनके अतिरिक्त खल, इमली की भी पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, देना बैंक, कनारा बैंक, बड़ौदा बैंक आदि बैंक हैं।

जिला सतारा
(सतारा)

सतारा—महाराष्ट्र प्रान्त में सतारा स्वयं एक जिला है। यह द० रे० की तिन्नेवेली तिरुचेन्दूर लाईन पर तिन्नेवेली से ८८१ कि० मी० की दूरी पर ढाईसौ वर्ष पहली मराठा साम्राज्य की राजधानी के रूप में बसा हुआ है। नगर रलवे स्टेशन से १८ कि० मी० की दूरी पर है यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर किल्ली अजिम तारा, नया और पुराना राजवाड़ा, जल मन्दिर, श्री क्षेत्र माहुली जहां कृष्ण और वेष्णा का संगम तीर्थ है। यहां से ५ कि० मी० दूर समर्थ गुरु रामदास जी की समाधि, ११ कि० मी० दूर श्री जरण्डेश्वर पर्वत श्री हनुमान जी का स्वयंम् स्थान और ४८ कि० मी० दूर महाबलेश्वर पांच गणी पहाड़ी स्टेशन है। यहां के लिए बसे चलती हैं। ये स्थल देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर धनिया, हल्दी, तम्बाकू, मूंगफली आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सतारा सैन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक व यूनाईटेड बैंक आफ करड हैं।

जिला पंढरपुर
(पंढरपुर)

पंढरपुर—महाराष्ट्र प्रान्त में पंढरपुर द० म० रे० की मिरज-कूडंवाड़ी लाईन पर मिरज से १३७ कि० मी० की दूरी पर महाराष्ट्र का एक प्रधान तीर्थ स्थान के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये श्री गाडगे महाराज की स्टेशन रोड पर धर्मशाला, गुजरात लॉज हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर भक्त पुण्डरिक, सन्त तुकाराम, नामदेव, रांका वाका नरहर जी नदी का किनारा आदि सन्तों की निवास भूमि देखने योग्य हैं।

विशेष—यह नगर भीमा नदी के तट पर बसा हुआ है। इसे चन्द्रभागा भी कहते हैं। भक्त पुण्डरीक तो इस स्थान के प्रतिष्ठाता ही हैं। इसीलिये इसका नाम पंढरपुर पड़ा है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक है।

बम्बई से कुछ नगरों की दूरी कि० मी० में रेल द्वारा

(१०० किलोमीटर = ६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अतुल	१८७	अहमदाबाद	४९२	आमला	८०६
आनन्द	४२७	इगतपुरी	१३७	उल्हासनगर	५७
कल्याण	५४	खण्डवा	५६८	खन्डाला	१२४
गोधरा	४६५	चालीस गांव	३२८	जलगांव	४२०
थाना	३४	नडियाद	४४६	नासिक रोड	१८८
नेरल	८७	नागपुर	१०४४	पाचोरा	३७३
पाल घर	८७	पूना	१९२	पीप लोछ	४९८
बरनाभा	३७७	बड़ौदा	३९२	बुरहानपुर	४९९
भड़ौंच	३२२	भुसावल	४४५	मनमाड	२६१
वीरमगाम	५५७	सोलापुर	३४७	सूरत	२६३
हर्दा	६७०	होशंगाबाद	७६३	इटारसी	७४६

———

गोवा

गोवा को मुक्त कराने में,
अनगिन भक्तों ने दिये प्राण.
मर मिटा देश का हर बच्चा,
यह गोवा है, भारत की शान.

पानाजी

पानाजी—पानाजी गोवा प्रान्त की राजधानी है। यह सुन्दर नगर सनदीवी नदी के बाये किनारे पर बसा हुआ है। गोवा प्रान्त का यह सुन्दर नगर बन्दरगाह भी है। यह नगर स्वच्छ, सुन्दर व दर्शनीय है। यह स्थल पुराने गोवा से लगभग १० कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर पहुंचने के लिये बस एक उत्तम साधन है। नगर तथा आसपास के स्थलों पर आने-जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगे व सिटी बस उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—पानाजी समुद्रतट का प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक पश्चिमी ढंग व भारतीय ढंग के होटल हैं इन होटलों में सब प्रकार की सुविधा मिलती है। यहाँ के वैस्टर्न स्टाइल होटलों का वर्णन यात्रियों की सुविधा के लिये नीचे दिया गया है। वैस्टर्न होटलों में होटल मांडवी (कस्टमस वर्फ के पास फोन न० ३८६९), होटल सोलमार, गासपर डिआस फोन न० ३१४, होटल नैपच्यून, भारतीय पद्धति के होटल इस प्रकार हैं:—सेण्ट्रल होटल चम्पल फोन न० ५६६, रिवीत होटल फोन न० ५१८, इम्पीरियल होटल बस स्टैण्ड के पास ही है इनके अतिरिक्त और भी अनेक होटल हैं जिनमें सभी प्रकार की सुविधा मिलती है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर प्राचीन है और यहां तथा आस-पास अनेक स्थान दर्शनीय हैं जैसे:—आर्यसमाज मन्दिर, डोना पोलेक्स (मनोरंजन का स्थान), मीरामार (समुद्र का किनारा), वंशीलिका में गोवा का प्रसिद्ध और बड़ा चर्च है, से. के. थरेडल प्रसिद्ध प्राचीन चर्च है, श्री मगरा (प्रसिद्ध शिव मन्दिर), श्री महलशा में विष्णु

भगवान का मन्दिर, श्री शान्ति दुर्गा मन्दिर, मापूसा में हर शुक्रवार को मेला लगता है। केलन गेट के बीच प्रसिद्ध समुद्र का किनारा है, पिलर (प्रसिद्ध शिक्षण संस्था), तथा आजाद पार्क सभा यहां के प्रसिद्ध तथा दर्शनीय स्थल हैं।

विशेष—यह नगर बड़ा ही सुन्दर है। समुद्र तट बड़े ही रमणीक हैं। यहां पर अनेक प्राचीन मन्दिर व गिरजे हैं तथा अनेक सुन्दर भव्य भवन हैं। यहां का समुद्रतट विशेष मनोहर है। यह नगर गोवा प्रान्त की राजधानी है तथा वड़ा व्यापारिक नगर है।

उत्पादित वस्तुयें—यह नगर समुद्रीतट पर बसा हुआ है इसलिये मछली यहां की मुख्य पैदावार है। इसके अतिरिक्त समुद्रतट पर नारियल तथा अन्य क्षेत्र में काजू मुख्य उपज है। यहाँ चावल व अन्य खाद्यान भी पैदा होते हैं। यहाँ से देश और विदेशों को व्यापार होता है।

बैंक—नगर में व्यापारियों की सुविधा के लिये बैंको की सेवायें उपलब्ध हैं परन्तु सेण्ट्रल बैंक की सेवायें अति उत्तम हैं।

दूधसागर—यह गोवा प्रान्त का एक सुन्दर प्राकृतिक स्थान है। इसका नाम अर्वालिय का झरना है तथा यह रेलवे स्टेशन पर ही है और पक्के पर बसा हुआ है। यह स्थान लोन्डा नगर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित है। नगर में घूमने के लिये रिक्शा तांगे तथा टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास ही एक मुसाफिरखाना हैं।

दर्शनीय स्थल—दूधसागर स्टेशन के पास ही एक झरना है। यह वड़ा झरना है और दूध की शक्ल में पहाड़ से गिरता है। यहां पर इसमें तीन झरने और आकर मिलते हैं और चारों मिलकर पर्याप्त स्थान में फैल जाते हैं। यह फैला हुआ जल दूध के समुद्र की तरह दिखाई देता है। यह स्थान इतना सुन्दर है कि भारत में अन्यत्र दिखाई देता है। चार झरनों का मिलन वड़ा रमणीक है।

उत्पादित वस्तुयें—इस क्षेत्र की मुख्य उपज गेहूं, चावल, काजू और नारियल है। यह कोई व्यापारिक स्थान नहीं है। आस-पास के क्षेत्र में और भी वस्तुयें जैसे मसाले आदि भी पैदा होते हैं।

विशेष—यह स्थल बड़ा सुन्दर तथा विचित्र है। यह स्थान पहाडों के वीच में बसा हुआ है। यहां पर सुन्दर झरने हैं तथा झरनों का जल दूध के समान मालूम होता है यहां पर चार झरने मिलते हैं और बड़ा ही सुन्दर दृश्य लगता है।

पुराना गोआ—गोआ प्रान्त के जिले पानाजी से कुछ ही फासले पर पुराना गोवा है यह नगर भी समुद्र तट पर ही बसा हुआ है व पुराना गोवा सड़क के किनारे है। यह स्थान प्रान्त के मुख्य नगर तथा राजधानी पानाजी से केवल ११ कि० मी० की दूरी पर है। नगर सुन्दर है परन्तु नया गोवा स्थापित हो जाने के कारण यह स्थान प्रसिद्धि में पीछे रह गया है। पुराना गोआ पहुंचने के लिए जलपान तथा बस

की सवारी अच्छी है। यहाँ पर अनेक प्राचीन भव्य भवन, मन्दिर, गिरजा तथा मस्जिद आदि है जो अति दर्शनीय हैं घूमने वालों के लिये रिक्शा, ताँगा तथा सिटी. बस और टैक्सी की सेवायें उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यह नगर अति प्रसिद्ध है और प्राचीन समय में वह नगर संसार प्रसिद्ध नगर था यहां यात्रियों का आवागमान अधिक होता था इस लिये अपने गौरव को बढ़ाने के लिये देशवासियों ने यहां पर अनेक स्थान यात्रियों के ठहरने के लिये बनवाये थे जो आज भी बने हुये है। यहां पर ईसाईयों की बड़ी धर्मशाला है यहां पर होटल भी हैं जो यात्रियों के ठहरने की सुविधा प्रदान करते हैं।

उत्पादित वस्तुयें--पुराना गोवा पानाजी के अधिक दूर नहीं हैं जो राज्य की राजधानी है इस लिये यहां की मुख्य उत्पादित वस्तुयें पानाजी के समान ही हैं। यहां पर नारियल मछली. चावल तथा काजू का उत्पादन अधिक होता है परन्तु यहां पर व्यापार न होकर पानाजी में ही होता हैं।

विशेष—पुराना गोवा अति प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। इस नगर का वर्णन भारत के इतिहास में अनेक स्थानों पर मिलता है। प्राचीन समय में यह एक प्रसिद्ध स्थान था और बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। पच्छिमी देशों से तथा चीन आदि के साथ यहीं से व्यापार होता था। यह अनेक प्रकार के कीमती सामान मिलत गर्म मसाले का व्यापार यहीं से होता था। यह नगर माढवी नगर के बायें किनारे पर है। एक समय यूसुफ आदिल शाह बादशाह बीजापुर के शासन में था उस समय सर्व प्रथम पुर्तगाली यहाँ आये थे। पुराने समय में मक्का शरीफ जाने के लिये यही से जल पान मिलते थे। यह स्थान इतना मुख्य है कि यहां पर अनेक मन्दिर महल, गिरजा, मस्जिद तथा विद्यालय है तथा अनेक दर्शनीय स्थान हैं। यह ईसाईयों का प्रसिद्ध प्रमुख स्थान हैं।

बैंक—यहां पर बैंक की सेवा में भीं उपलब्ध हैं परन्तु यहां अधिक बैंक नहीं हैं क्योंकि अनेक बैंकों की ब्राँच पानाजी में हैं जो केवल ११ कि० मी० दूरी पर है।

दर्शनीयस्थान—यहां पर समुन्द्र तट पर नारियल की उपज अति रमणीक है। यहां पर पुरान चर्च है जो अति प्राचीन है। यहां का म्यूजियम बड़ा मनोहर है। यहां का नया गिरजाघर भी प्रसिद्ध है जिसमें सोने काम किया हुआ है। यह भारत में ईसाईयों का मुख्य तीर्थ स्थल है। यहां पर प्रभु ईसा मसी के अवशेष एक सन्दुक में विशेष मसालों से सुरक्षित रखे है और बड़े दिन के अवसर पर जनता को दर्शन कराये जाते है। वैसे यहाँ पर अनेको स्थान प्राचीन तथा दर्शनीय है।

वास्कोडिगामा—वास्कोडिगामा नगर गोवा प्रान्त का एक प्रमुख नगर है तथा यह नगर प्रान्त का जिला है। यह स्थान मारमागाओं की खांड़ी पर बन्दरगाह है। यह नगर द० म० रेलवे की लौंडा मोरमुगांव लाईन पर बड़ा रेलवे स्टेशन है। यह स्थान स्वयं प्रसिद्ध है तथा लौंडा से १३६ कि० मी० है। यह नगर समुद्र तट पर बसा हुआ है तथा प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यहां पर चारों तरफ बड़े दर्शनीय

स्थल है जिस को देखने के लिये प्रति वर्ष अनेकों यात्री देश तथा विदेशों से आते हैं। समुन्द्र तट की सैर करने के लिये छोट जलपान तथा नगर है नगर में तथा अन्य स्थानों को आने जाने के लिये रिक्शा, ताँगा, तथा टैक्सी मिलती है। जिनसे यात्रा में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है।

विश्राम स्थल—यह नगर प्रसिद्ध तथा व्यापारिक है। यहां पर आने वालों के ठहरने के लिए अनेक स्थान हैं। जहां पर मुख्य स्थान प्रवासी होटल फोन न० ८९ है। दूसरा प्रसिद्ध होटल जुआरी होटल, जिसका फोन न० ७३१०६ है। इन्द्रा-लोज भी एक सुन्दर स्थान है और यहां पर ठहरने का बड़ा अच्छा प्रबन्ध हैं। यहाँ पर कई धर्मशालायें भी हैं तथा अनेक अन्य होटल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—अन्य नगरों के समान ही यहां की प्रमुख उपज नारियल, फल, गेहूं, चावल खाद्यान तथा काजू, और मसाले, है। मछली यहां पर अधिक पकड़ी जाती है। अन्य कई प्रकार की वस्तुयें यहां पैदा होती है परन्तु मुख्य नारियल और काजू तथा मसाले, हाथी दांत तथा चन्दन की लकड़ी का हाथ का बना सामान प्रसिद्ध है।

विशेष—यह नगर समुन्द्र तट पर है अतः नारियल की रौस तथा उनके साये में दौड़ती हुई नावें तथा छोटे जलयान बड़े सुन्दर दिखाई देते है। समुद्र तट पर सफेद रेत में अनेक पिकनिक के स्थान है। वास्कोडिगामा बड़ा सुन्दर नगर है तथा बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। नगर में अनेक मन्दिर तथा गिरजे भव्य तथा दर्शनीय हैं। यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। यह नगर विदेशी व्यापारियों का विख्यात केन्द्र है।

बैंक—नगर में अनेक बैंक है जिनमें मुख्य बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, कनांरा बैंक, दीना बैंक, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, कामर्शियल यूनाईटेड बैंक, पंजाब नेशनल आदि बैंक है।

दर्शनीय स्थल—वास्कोडिगामा नगर का नाम प्रसिद्ध नाविक वास्कोडिगामा की याद दिलाता है। नगर बड़ा दर्शनीय है और समुन्द्र तट बड़ा सुन्दर है। इस नगर के दर्शनीय स्थानों का वर्णन देना आवश्यक है। यहां का आर्य समाज मन्दिर, सुन्दर बाग, समुद्र तट, पुर्तगालियों की समाधि तथा अनेक मन्दिर और गिरजे विशेष दर्शनीय हैं। हवाई अड्डा देखने योग्य है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा आकर्षक माना जाता है।

मझगांव—गोवा प्रान्त का एक जिला है। यह सुन्दर नगर है। यह नगर अन्य व्यापारिक नगरों से मिला हुआ है और एक अच्छा व्यापारिक नगर है। अन्य नगरों के समान ही यहाँ पर अधिकतर रिक्शे, तांगे, तथा टैक्सी का प्रयोग आने-जाने के लिये किया जाता है। अन्य नगर बस द्वारा एक दूसरे से मिले हुये है।

विश्राम स्थल—मझगाँव एक अच्छा व्यापारिक केन्द्र है। यहां पर अनेक

व्यापारी यहाँ आते जाते रहते हैं। आस पास के क्षेत्रों में अनेक सुन्दर स्थान है जो यात्रियों को आकर्षित करते हैं। यात्रियों को ठहरने के लिये नगर में अनेक धर्मशाला तथा होटल है। होटल और धर्मशालाओं में ठहरने के लिये हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—नगर बड़ा रमणीक है तथा आस पास के स्थान अति सुन्दर हैं फिर भी कुछ स्थान अपना विशेष महत्व रखते हैं। इनकी जानकारी होना आवश्यक है। इस नगर के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल गोमान्त सेवा समिति, म्यूजियम पुराना चर्च और नया चर्च है। म्यूजियम बड़ा सुन्दर है तथा अनेक दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह है। नई और पुरानी चर्च नई और पुरानी सभ्यता का प्रदर्शन करती है।

उत्पादित वस्तुयें— यहाँ की उपज अन्य पहाड़ी स्थानों के सामान ही है। यहां पर मुख्य उपज नारियल है। अन्य उत्पादित वस्तुयें कोपरा, सुपारी, नमक, काजू और नारियल से बनने वाले तेल आदि हैं। आस पास के क्षेत्रों में फल अधिक मात्रा में पैदा होते हैं जिनका व्यापार अन्य नगरों से होता है।

बैंक—यहाँ पर कई बैंक है जैसे आस पास नगरों में हैं। स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, इण्डियन बैंक व्यापारिक बैंकों की सेवायें अधिक सुविधा जनक है।

मारगोआ—यह शहर पच्छिमी गोवा का प्रसिद्ध नगर है। यह नगर समुद्र तट से कुछ दूर साल नदी के किनारे हैं। यह पक्की सड़क पर बसा है तथा दक्षिण रेलवे का प्रसिद्ध नगर है तथा अन्य नगरों से रेल तथा सड़क द्वारा मिलता है। यह नगर बड़ा सुन्दर है तथा व्यापार के विचार से भी प्रमुख स्थान प्राप्त है। यहाँ पर अनेक देशी तथा विदेशी आते जाते हैं और घूमने योग्य अनेक स्थानों को देखने के लिये आराम देह आने जाने के साधनों की आवश्यकता है। अन्य जगहों की तरह ही यहां पर यात्रा के साधनों में रिक्शा, तांगा और टैक्सी हर समय मिलती है।

विश्राम स्थल—यह नगर बड़ा है व्यापारियों तथा सैलानियों का आकर्षण स्थल है। यात्रियों को ठहरने की सुविधा प्रदान करने के लिये अनेम धर्मशाला और होटल है। ठहरने के लिये इस क्षेत्र में उत्तम स्थान में बहुत से स्थान प्रमुख है। केमेन्ट मिलन रोमोटरस मारगाओं तथा स्थिल रौक्ज़ों-बिसन्दा कोस्त होटल यहां पर अधिक प्रसिद्ध है। इन स्थानों में यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेक दर्शनीय स्थल है जिन का वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है। यहां का बन्दरगाह बड़ा सुन्दर है तथा संसार के प्रसिद्ध बन्दरगाहों में माना जाता है। यहाँ पर सुन्दर तथा सुगन्धित बाग है जो अति दर्शनीय है। यहाँ की मण्डी भी सुन्दर है जहाँ पर विदेशी सामान की खरीद के हेतु बड़ी भीड़ रहती है। मारगोआ का समुद्री किनारा भी सुन्दरता में अपना विशेष स्थान रखता है। यिक्सी मशीन जहाजों की कारीगरी का बड़ा केन्द्र है। यहाँ के बाजारों में न्यू मार्केट सडेकर इलैकट्रिक अधिक प्रसिद्ध है। नगर में अनेक मन्दिर आदि भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—मारगाम्रो नगर क क्षेत्र अधिक उपजाऊ है यहां पर पहाड़ के ढालों पर फलों के वाग तथा मसालों के उपज स्थान है। यहाँ पर चावल, फल, कालीमिर्च, लोंग सुपारी आदि वस्तुयें अधिक पैदा होती हैं और उन वस्तुओं का व्यापार होता है।

बैंक—इस नगर में अनेक वैंक है प्रमुख बैंक नगर के व्यापार में सहायता प्रदान करते है। स्टेट बैंक, सेण्ट्रल वैंक, कनारा बैंक आदि प्रमुख हैं।

पानाजी से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी कि॰ मी॰ में
(१०० कि० मी॰=६२ मील के लगभग)

नगर	कि॰ मी॰	नगर	कि॰ मी॰
बंगलौर	६३८	वेलगांव	१६१
मारगोवा से सदाशिवगढ़	७०	मारगोवा से वेलगामा	१४८
मारगोवा से हुवली	१९५	वास्कोडिगाम से सदाशिवा गढ़	११२
वास्कोडिगामा से बेल गांव	१७५		

———

मैसूर

है खान यहाँ पर सोने की,
ललिता का महल प्यारा-प्यारा.
है वृन्दावन उद्यान यहां,
हरत्रामन को हर फव्वारा.

जिला कोलार

(कोलार, कोलार गोल्ड फिल्ड, तथा बंगार पेट)

कोलार—यह प्रान्त मैसूर में जिला कोलार के नाम से स्थित है। यह दक्षिण रेलवे बंगलौर-बंगार पेट लाईन पर बंगलौर से १४६ कि० मी० दूरी परस्थित है। शहर में सवारी के लिए रिक्शा, तांगा, व टैक्सी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—इस शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला आदि हैं। जिनमे एक धर्मशाला स्टेशन २ फर्लांग पर हैं। और दूसरी धर्मशाला बाजार में है। इनमे यात्रियों के लिए सब सुविधाये प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल---इस शहर में कई छोटे–२ मन्दिर है।

उत्पादित वस्तु--यहाँ पर गुड़, हूँगे, तथा आदि का उत्पादन होता है।

बैंक--इस नगर में स्टेट बैंक आफ इण्डिया विजय बैंक आदि बैंक है।

कोलार गोल्ड फ़ील्ड--यह शहर मैसूर प्रान्त के जिला कोलार में है। यह दक्षिण रेलवे की गुण्टाकल बंगलौर सीटी लाइन पर बंगलौर के १०० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में यात्रियों के सवारी लिए रिक्शा, तांगा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियो के ठहरने के लिए होटल हैं

दर्शनीय स्थल—यहां पर देखने के योग्य धार्मिक स्थान व सोने की खाने आदि है। यहाँ पर भारत में सबसे अधिक सोना निकालता है। विश्व प्रसिद्ध गहरी खाने हैं। और शहर में हेतु कई छोटेमन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य काम खानो से सोना निकालना गुड़, इमली आदि का उत्पादन होता है। और मन्डी भी है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक आफ मैसूर है ।

बगारा पेट—यह शहर प्रान्त मैसूर में जिला कोलार में है । और यह बंगारा पेट नाम से स्थित है । यह एस- आर. की मद्रास-बंगलौर सिटी लाइन पर मद्रास से २८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । शहर में सवारी के लिए रिक्शा, व टैक्सी तांगा आदि उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियो के ठहरने के लिए धर्मशालायें उपलब्ध हैं ।

दर्शनीय स्थल—इस शहर में देखने योग्य कई छोटे २ सुन्दर मन्दिर है ।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गुड़, चना, मूंगफली तथा दालें आदि का अधिक उत्पादन होता है । और इस शहर में मंडी भी है ।

बैंक—यहां स्टेट आफ मैसूर बैंक है ।

जिला गुलबर्गा

गुलबर्गा—यह मैसूर प्रान्त में गुलबर्गा स्वयं एक जिला है । यह सी० आर० की कल्याण-रायचूर लाइन पर कल्याण से ५१५ कि० मी० तथा पूना से ७७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । नगर में सवारी के लिए रिक्शा व टैक्सी उपलब्ध है ।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला हैं ।

दर्शनीय स्थल—यह शहर ऐतिहासिक व महत्व पूर्ण स्थान है यहां किला बहुत सुन्दर बना हुआ है । इसमें १५ फुट ऊंची-२ मीनार हैं । और एक विशाल मस्जिद है । तीर्थ यात्रियों के लिए सराना वासवेश्वर के मन्दिर दर्शनीय हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मूगफली, तेल, ज्वार, बिनौला, गेहूँ, अलसी, अन्डी मसूर आदि का अच्छा उत्पादन होता है शहर में गल्ला मण्डी भी बहुत बड़ी हैं ।

बैंक—शहर में सैन्ट्रल, हैदराबाद स्टेट, कनारा, मैसूर स्टेट, सरस्वती तथा इन्डस्ट्रियल आदि बैंक हैं ।

जिला चमराज नगर

चमराज नगर—यह नगर मैसूर प्रान्त में जिला चमराज नगर के नाम से स्थित है । जो कि मैसूर-चामराज नगर लाईन पर मैसूर से ६१ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है । शहर में यात्रियों के लिये टैक्सी, रिक्शा, तथा तांगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं ।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य मन्दिर तथा अन्य स्थान बहुत ही अच्छे बने हुए है । जैसे चामराज सागर बोध, अरकावथी नदी पर शैलानियों का रमणीक स्थल है ।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का उत्पादन धान मूगफली सिल्क आदि है । वैसे तो यहां पर उड़द, मूंग, शीशम का भी अच्छा उत्पादन होता है । शहर में मन्डी है ।

बैंक—यहां पर मैसूर, सिन्डीकेट, आदि बैंक हैं।

जिला चिकमा गालूर

(चिकमा गालूर)

चिकमा गालूर—मैसूर प्रान्त में चिकमागालूर स्वयं एक जिला है। जिसका स्टेशन कडूर है जो कि बंगलौर मैसूर लाइन पर स्थित है। यह रेलवे की आऊट एजेन्सी है। यात्रियों के ठहरने के लिए रिक्शा, तांगा आदि सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल— यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में धर्मशाला हैं

दर्शनीय स्थल—शहर में मन्दिर तथा धार्मिक स्थान देखने योग्य हैं जिनमें शिव मन्दिर तथा नगर में हनुमान मन्दिर आदि जो कि बहुत ही सुन्दर बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त यहां शहर दक्षिण-पूर्व में २३ कि० मी०दूर कोप्पा में सगेरी का महान धार्मिक केन्द्र है यहां जगद गुरु शँकराचार्य की गद्दी है।

विशेष—यहाँ १७ वीं शताब्दी में बाबा बुदन ने मक्का से आकर यहाँ सर्व प्रथम कॉफी का पौधा लगाया था यहाँ पर भारत की सर्वोत्तम काफी पैदा होती है ये हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का ही तीर्थ स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन काफी है। जिसकी प्रसिद्ध मन्डी है। पिपरमेंट सिकाकाई आदि का उत्पादन होता है। और शहर में मन्डी भी है।

बैंक—यहां पर कनारा, कनारा बैंकिग सिन्डीकेट, जय लक्ष्मी आदि बैंक है।

जिला चित्रदुर्ग

(चित्रदुर्ग, दावनगिरी, हरिहर)

चित्र दुर्ग—यह मैसूर में जिला चित्र दुर्ग नाम से स्थित है। सी० आर० की चिकमागालूर-चित्र दुर्ग लाईन पर चिकमागालर से ३४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में यात्रियों के लिए रिक्शा, तांगा आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये धर्मशालायें व होटलों का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर में मन्दिर तथा अन्य स्थान देखने योग्य हैं, जिनमें से विष्णु मन्दिर, काली माता का मन्दिर तथा अन्य मन्दिर भी देखने योग्य हैं। यह एक ऐतिहासिक स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन कपास है। यहां पर प्रसिद्ध मण्डी भी है और मूंगफली, धान, चावल, गुड़, उड़द, मूंग, रूई व अरण्डी आदि वस्तुओं का भी बहुत अच्छा उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर मैसूर बैंक, सिन्डीकेट बैंक, चित्रदुर्ग टाऊन कार्पोरेशन बैंक हैं।

दावनगिरी—यह नगर चित्रदुर्ग जिले में दावनगिरी के नाम से प्रसिद्ध है। यह सी० आर० की बंगलौर-पूना लाईन पर बंगलौर से ३२७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगे की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य मन्दिर व अन्य स्थान है जिनमें देवी का मन्दिर व अन्य मन्दिर सुन्दर बने हुए हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन कपास और मूंगफली है जिसकी यहां पर प्रसिद्ध मण्डी है, और धान, चावल, उड़द, मूंग, अरण्डी, खल आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर सैन्ट्रल बैंक, इण्डिया बैंक, कनारा बैंक, मैसूर बैंक हैं।

हरिहर—यह मैसूर प्रान्त के चित्रदुर्ग जिले में एस० आर० की बंगलौर-हुबली लाईन पर बंगलौर से ३४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में घूमने के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के विश्राम करने के लिये शहर में बहुत सुन्दर होटल बने हुए हैं।

दर्शनीय स्थल—यह ऐतिहासिक, धार्मिक तथा औद्योगिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थल है। यहां हरिहरेश्वर का मन्दिर होईसाला कला का बहुत सुन्दर बना हुआ है

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ ज्वार, बाजरा, राजी आदि का उत्पादन अधिक मात्रा में पाया जाता है। यह एक छोटी सी मण्डी भी है।

बैंक—बैंक आफ महाराष्ट्र यहाँ का प्रमुख बैंक है।

जिला तम्कूर

(तम्कूर)

तम्कूर—यह मैसूर में जिला तम्कूर नाम से प्रसिद्ध है, जो कि एस० आर० की बंगलौर-पूना लाईन पर बंगलौर से ७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये मुसाफिर खाना, टूरिस्ट रैस्ट हाउस आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देखने योग्य धार्मिक व अन्य स्थान सुन्दर बने हुए हैं। जिनमें शहर में महादेव जी का मन्दिर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त १४ कि० मी० की दूरी पर पहाड़ी की चोटी पर 'नृसिमा का मन्दिर, बहुत सुन्दर बना हुआ है। कैदाला (प्रवीण वस्तुकारों का घर), यहां श्री चन्नाकेश्वर का का मन्दिर (बंगलौर से ८० कि० मी० दूर) है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन कपास व मूंगफली है। धान, चावल, उड़द, मूंग, अरण्डी तथा रूई आदि का भी अधिक उत्पादन होता है। कपास और अन्य वस्तुओं की यहां पर प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—यहां मैसूर बैंक, कनारा इन्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिंग, सिन्डीकेट तथा कर्नाटक आदि बैंक हैं।

जिला धारवाड़
(गदग, हुबली धारवाड़)

गदग—यह प्रान्त मैसूर में जिला धारवाड़ में गदग नाम से स्थित है। जो कि एस० आर० की हुबली-मचिली पट्टम लाईन पर हुबली से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर आने जाने के लिये रिक्शा व ताँगा आदि की सवारियों का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालायें आदि बनी हुई है इसके अतिरिक्त होटल भी हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में सुन्दर-२ मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास की मण्डी प्रसिद्ध है, और यहां का मुख्य उत्पादन कपास और मूंगफली है। तथा और भी अन्य वस्तुयें जैसे—बिनौला, अलसी, चावल, धान तथा गेहूँ आदि का भी अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बेलगाम सिटीजन बैंक, कर्नाटक आदि बैंक हैं।

हुबली—यह प्रान्त मैसूर में जिला धारवाड़ में हुबली नाम से स्थित है, जो कि एस० आर० की बंगलौर-पूना लाईन पर बंगलौर से ४६९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, ताँगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के विश्राम करने के लिये धर्मशालायें व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—देवी जी का मन्दिर बहुत दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां का मुख्य उत्पादन मूंगफली तथा कपास है। जिस की यहां पर प्रसिद्ध मण्डी भी है। बिनौला, अलसी, तिल, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, नारियल तथा सुपारी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—शहर में सिटीजन बैंक, स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, कनारा इन्डास्ट्रियल कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन, महाराष्ट्र बैंक, कर्नाटक बैंक, आदि बैंक हैं।

धारवाड़—मैसूर प्रान्त में धारवाड़ स्वयं एक जिला है, यह एस० आर० की बंगलौर-पूना लाईन तथा हुबली-धारवाड़ लाईन पर बंगलौर से ४९० कि० मी० की दूरी पर तथा हुबली से २१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर में यात्रियों को रिक्शा, तांगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य मन्दिर तथा अन्य स्थान हैं जिनमें कर्नाटक विश्वविद्यालय तथा शिवजी का मन्दिर सुन्दर बने हुए हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, मूगफली, अलसी तथा मिर्च आदि का बहुत उत्पादन होता है और कपास की प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, कर्नाटक बैंकिंग कार्पोरेशन, कनारा इन्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिग सिन्डीकेट बैंक आदि बैंक हैं। जिनमें हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त हैं।

जिला नार्थ कनारा

(नार्थ कनारा)

नार्थ कनारा—यह मैसूर प्रान्त में स्वयं जिला नार्थ कनारा नाम से स्थित है, जो कि एस० आर० की बंगलौर-पूना लाईन पर स्थित है। और शहर में रिक्शा, टैक्सी व ताँगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों को विश्राम करने के लिये होटल आदि हैं

दर्शनीय स्थल—यहां पर डाक बंगला, इन्सपेक्सन बंगला विचित्र स्थान व जंगल देखने योग्य हैं। समुद्र का किनारा दर्शनीय है यहां समुद्र में नहाने से बड़ा आनन्द प्राप्त होता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कपास, दालें तथा चावल आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—शहर में स्टेट बैंक, इन्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिग सिन्डीकेट बैंक, कनारा डि० सैन्ट्रल कार्पोरेशन आदि बैंक हैं।

जिला बेलगांव

(बेलगांव)

बेलगांव—इसका प्राचीन नाम वेणुग्राह है। यह प्रान्त मैसूर में बेलगांव स्वयं एक जिला है, जो कि एस० आर० की बंगलौर-पूना लाईन पर बंगलौर से ६११ कि० मी० दूर तथा शहर से ३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों के लिये टैक्सी, रिक्शा, तांगा आदि की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में होटल आदि है। डाक बंगला प्रमुख है। इसके अतिरिक्त होटल भी बहुत सुन्दर बने हुए है।

दर्शनीय स्थल—नगर में देखने के धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थान बहुत ही सुन्दर बने हुए हैं। जिनमें चार दिगम्बर जैन मन्दिर दर्शनीय है। प्राचीन काल में किले में १०८ जैन मन्दिर थे जिनमें से अब तीन मन्दिर शेष रहे है जो अनूठी कारीगरी के है। 'कमल वस्ती' जिसमें छत से लटके हुए ५ कमल छत्र शिल्पकारी की आश्चर्य कारी रचना हैं, जो कि बहुत ही सुन्दर बनी हुई है। शहर के पास एक बहुत बड़ा

किला है जोकि बहुत ही सुन्दर बना हुआ हैं। शहर में हवाई अड्डा भी है। यहां से मिर्जापुर तथा कोल्हापुर के लिये लाईन जाती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सुपारी, मिर्च, ज्वार, मूंग, कुलथी, मूंगफली तम्वाकू आदि का अधिक मात्रा में उत्पादन होता है और यहाँ मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सेण्ट्रल, सिटीजन न्यू सिटीजन, बैंक कर्नाटक, दिवेलग्राम, कनारा इन्डस्ट्रियल एण्ड बैंक सिन्डीकेट तथा महाराष्ट्र आदि बैंक हैं जिनमें हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त है।

विशेष—यह १२ वीं १३ वीं शताब्दी में रट्ठाऊ की राजधानी रही है।

जिला बंगलौर

बंगलौर—यह मैसूर प्रान्त की राजधानी है। यह एस० आर० की मद्रास-बंगलौर सिटी लाईन पर मद्रास से ३५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ शहर में घूमने-फिरने वालों के लिये रिक्शा, टैक्सी, सिटी बस, तांगे आदि की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें व होटल बहुत सुन्दर बने हुए हैं। जैसे:— बोम्बे आनन्द भवन अलीगढ़वालों का, जैन धर्मशाला, ग्राड होटल (२०-२२ लेवली रोड फोन न०२४१७७), हाई गेटस होटल (म्यूजियम रोड फोन न० ५२१७६), होटल बंगलौर इण्टर नेशनल २A-२८ क्रेजसेन्ट रोड फोन न० २८१८), मद्रास वूडलैंडस होटल (५ समपान्गी टैंक रोड फोन न० ७४१११), पैलेस होटल (३ अली असकर रोड फोन न० ७४०८८), शिल्टन होटल (स्ट्रीट मार्क फोन न० २५१३१), वेस्टैन्ड होटल (बंगलौर १ फोन न० २९२७५), आदि प्रमुख होटल व धर्मशालयें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक, उद्योगिक, तथा ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य है जैसे:—हिंदुस्तान का सबसे बड़ा विकसित हवाई जहाज का कारखाना (हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स), मशीन टूल्स फैक्ट्री, इण्ड़िया इलेक्ट्रोनिक्स फैक्टरी, इण्डियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज, पोर्सेलियन फैक्टरी तथा इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साईस, सैंडिल फैन्ट लाल बाग, कुब्बन पार्क, महाराजा का महल, विधान सभा, साबुन फैक्टरी, म्यूजियम, एच० एम० टी० घड़ी फैक्टरी, दिगम्बर जैन मन्दिर (स्टेशन से १।। कि० मी० दूर) आजायबघर, गुरुकुल आश्रम कंगेरी, आर्य समाज मन्दिर, इन्जिनिरिंग कालेज, बंगलौर विश्व घंटाघर, हवाई अड्डा, नन्दी की पहाड़ीयां (६० कि० मी० दूर), केम्पगोदा का मडफोर्ट और टीपू सुल्तान का महल ऐतिहासिक रुचि के स्थल हैं। इसके अतिरिक्त 'सुब्रमन्य घाट, (५० कि० मी० दूर भगवान सुब्रमन्य का मन्दिर), कृष्ण राजेन्द्र और रुसैल बाजार, नन्दी (बसावा) मन्दिर, विदुरासवठा (यह ९० कि० मी०

दूर है यहां विदुर का लगाया हुआ प्राचीन पीपल का पेड़ है), मेकेदातु (यह ९८ कि० मी० दूर से कावेरी नदी और अरकावथी नदी का संगम ५ कि० मी० दूर हैं यहाँ पर प्रसिद्ध संगमेश्वर का मन्दिर है) राष्ट्रीय वैमान की प्रयोग शाला आदि स्थान देखने योग्य हैं।

विशेष—यह सबसे सरल स्थल है जहां से भ्रमण शुरु किया जा सकता है यह सुन्दर सजे संवरे उद्यानों और भव्य भवनों का नगर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की अगरबत्ती बहुत ही प्रसिद्ध है यहां पर गलीचे बहुत ही सुन्दर बनते हैं तथा गुड़, चना, तिल, आलू, ऊन, प्याज, सोपादीन, आदि का भी अधिक उत्पादन होता है। यह एक प्रसिद्ध मण्डी हैं।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक आफ इन्डिया, पंजाब नेशनल बैंक कनारा बैंक, कनारा बैंकिंग कारपोरेशन, सिन्डीकेट बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल, मैसूर स्टेट को-आपअपेक्स, बडौदा बैंक, इण्यिन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डिया बैंक नेशनल बैंक, ट्राक्नकोर विसिया बैंक, आदि प्रमुख बैंक है।

जिला बेल्लारी

(बेल्लारी हास्पेट, हगरी बोग्नहल्ली, हाम्पी)

बेल्लांरी—यह नगर मैसूर प्रान्त में बेल्लारी स्वयं एक जिला है, जो कि एस० आर० की हुवली-मचिलीपट्टम लाईन पर हुवली से २०९ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने लिये धर्मशालायें होटल आदि विश्राम स्थल हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई स्थान सुन्दर हैं, जिनमें देवी जी का मन्दिर हनुमान जी का मन्दिर जो प्राचीन शिवजी का मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ का मुख्य उत्पादन कपास, मूंगफली ज्वार, गुड़, हल्दी तिल, धनिया, बाजरा आदि वस्तुयें हैं। शहर में मण्डी भी है।

बैंक—स्टेट, कनारा, कनारा इन्डस्ट्रियल बैंकिंग, सिन्डीकेट तथा सैन्ट्रल आदि बैंक हैं।

हास्पेट—यह नगर बेल्लारी तथा प्रान्त मैसूर में हास्पेट नाम से स्थित शहर है जोकि एस०सी० आर० रेलवे की गुन्टुर-हुवली लाईन पर गुन्टुर से ५३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा आदि सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के लिये स्टेशन के पास ही धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य कई मन्दिर है जिनमें देवी का मन्दिर है। इसके अतिरिक्त तुगभंद्राबांध यह ६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां मुख्य उत्पादन रुई तथा इमली का है। बिनौले तथा इमली की प्रसिद्ध मन्डी है। तथा अन्य वस्तु जैसे मूंगफली का अच्छा उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, मैसूर, आदि बैंक हैं।

हगरी बोम्मन हल्ली—यह मैसूर प्रान्त में जिला मैसूर रेलवे की हास्पेट-कोदूर लाइन पर होस्पेट से ४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर सवारी के लिऐ रिक्शा व तांगा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए होटल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने के लिए हनुमान जी का मन्दिर है।

हाम्पी—यह मैसूर प्रान्त में बेल्लारी जिले के तुंगभद्रा नदी के किनारे पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत सुन्दर-२ होटल बने हुए है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर प्राचीन मन्दिर हैं। इसके अलावा दसारा डिब्बा, लोटस महल, जनाना महल, आदि देखने योग्य स्थल हैं।

जिला बीजापुर

(बीजा पुर व बागल पुर)

जिला बीजापुर—यह मैसूर प्रान्त में बीजापुर जिले के नाम से प्रसिद्ध है। यह एस० आर० की हुबली- सोलपुर लाइन पर हुबली से २४३कि० मी० दूरी पर स्थित है। यहां पर यात्रियो के लिए रिक्शा, तांगा आदि सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर यात्रियों के देखने के लिए धार्मिक तथा एतिहासिक स्थान बहुत ही सुन्दर हैं। जिनमें श्री साच्छिश्वर देव स्थान, श्री महा लक्ष्मी देव स्थान, महावीर देव स्थान है। जो कि बहुत ही सुन्दर बने हुए है। यहां पर गोल गुम्बद (विश्व प्रसिद्ध) संसार में सबसे बड़ा है जो कि बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। और यहां से ३कि० मी० दूर जमीन में गढ़ा हुआ अति प्राचीन श्री० पार्श्वनाथ जी का मन्दिर व यहा पर एक विशाल किला है यह १६ वीं शताब्दी में आदिल शाही सलतन्त की राजधानी है। गोल गुम्बद की विशेषता यह है कि एक बार बोलने से ११ आवाज बराबर सुनाई पड़ती हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहा पर बिनौला, कपास, तेल, ज्वार बाजरा, तुवर' मूंग, उड़द, तिल आदि अन्य वस्तुओ का उत्पादन होता है और प्रसिद्ध मन्डी भी है।

बैंक—स्टेट, पंजाब नेशनल, कनारा, इन्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिंग सिन्डीकेट, डि० सै० कोआपरेटिव, यूनियन आफ बीजापुर एण्ड सोलापुर, कर्नाटक तथा कनारा आदि बैंक हैं।

बागलपुर—यह नगर जिला बीजापुर में एस० आर० की हुबली-सोलापुर लाईन पर हुबली से १३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिए रिक्शा व तांगा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने के लिए धर्मशाला आदि बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—बागल कोट के ५०कि० मी० के क्षेत्र में चारो तरफ बहुत प्राचीन काल के अनेको मन्दिर, किले व तीर्थ स्थान बने हुए हैं जो देखने योग्य हैं।

बैंक—यहां पर सैंण्ट्रल, कनारा इन्डस्ट्रियल आदि बैंक हैं। जिनमें हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

जिला बीदर

बीदर—यह गुलबर्ग के उत्तर में स्थित है। यहा घूमने वाले यात्रियों के लिए शहर में रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहा पर वाहर से आने जाने वालें यात्रियों के ठहरने के लिए होटल आदि का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां नया और पुराना किला है। इसमें रगीन महल, चीनी महल, तुर्की महल दर्शनीय है तथा नरसिमा का मन्दिर गुफा में देखने योग्य है।

बैंक—सैण्ट्रल का आपेरेटिव बैंक, स्टेट बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला मैसूर

(मैसूर, नंजन गुडटाऊन, श्रीरन्गापटना)

मैसूर—मैसूर एक सुन्दर राज्य व प्रसिद्ध जिला है। यहां पर रेलवे जंक्शन है यह एस० आर की बंगलौर-मैसूर लाईन पर बंगलौर से १३९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर यात्रियों की सवारी के लिये रिक्शा, तांगा, टैक्सी तथा सिटी बस आदि मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये धर्मशालायें व होटल हैं जो इस प्रकार हैं:—जैन बोर्डिंग हाऊस की धर्मशाला तथा स्टेशन से २ कि० मी० दूर जैन धर्मशाला आदि हैं होटल:—कृष्णा राजसागर फोन न० २२९, मैन्ट्रोपोल होटल लक्ष्मीबाई रोड फोन न० २०६८१/२०८७१ आदि होटल हैं, जिनमें देशी-विदेशी खाने-पीने का अच्छा तथा पर्याप्त प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर यहां के ऐतिहासिक अत्यधिक सुन्दर नगर और

बागों के लिये प्रसिद्ध है जिसमें प्रमुख आर्यसमाज देवराज मो० आर्यसमाज मन्दिर अशोक रोड, आर्यसमाज मन्दिर अरविन रोड, महाराज का महल, वृन्दावन गार्डन (जो सारे भारत में सबसे सुन्दर व बड़ा गार्डन है), ललिता महल, रानी का महल, चामुण्डी पहाड़ी, गवर्नमेण्ट सिल्क फैक्ट्री, डाक बंगला, घंटाघर, चन्दन के तेल की फैक्ट्री, नगर पालिका, सेंट बनाने की फैक्ट्री, आर्ट गैलेरी, मैसूर विश्व विद्यालय (जिसकी स्थापना १९१६ में हुई जिसके अन्तर्गत ५३ कालिज आते हैं), म्यूनिसिपल आफिस के पास 'गोम्मट गिरी' के दर्शन करने हेतु सुन्दर स्थान, ज्यूलोजीकल गार्डन, सेरंगा पट्टम में हिन्दू मन्दिर और टीपू सुल्तान का मकबरा आदि स्थान देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त सोमनांथपुर ४५ कि० मी० पर है जो दर्शनीय है।

टेक्नीकल संस्था—यहां पर केन्द्रीय खाद्य औद्योगिक की अनुसंधान संस्थः है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अगरबत्ती बहुत बनाई जाती है और भी अन्य वस्तुयें जैसे चावल, ज्वार, मूंगफली, आलू आदि का भी अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, कनारा इण्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिंग सिंडीकेट, पंजाब-नेशनल, कार्पोरेशन, मैसूर, सेलम, यूनाईटेड, तथा इण्डियन ओवरसीज आदि बैंक हैं।

नंजन गुड टाऊन—यह मैसूर प्रान्त व मैसूर जिले में एस० आर० की मैसूर-चमराज लाईन पर मैसूर से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां के मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तु—यहाँ एक मण्डी है और यहां की मुख्य उपज चावल है।

बैंक—यहां श्री कण्टेश्वरा, स्टेट, पंजाब तथा बैंक आफ मैसूर आदि बैंक हैं।

श्री रन्गापटना—यह मैसूर प्रान्त के मैसूर जिले में मैसूर से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये रैस्ट हाऊस आदि का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर विष्णु भगवान का मन्दिर, जामा मस्जिद, दरिया-दौलत, गुम्बज, स्कौट का बंगला व अबेन्दू-वोईल चर्च आदि देखने योग्य हैं।

जिलारायचूर

रायचूर—मैसूर प्रान्त में रायचूर स्वयं एक जिला है, जो कि सी० आर० की कल्याण-रायचूर लाईन पर कल्याण से ६५९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे जंक्शन है। शहर में सवारी के लिये रिक्शा आदि उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कुछ मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां बाजरा, ज्वार, कपास, बिनौला, मूंगफली, तेल, प्याज, आदि का उत्पादन होता है। यहां मण्डी भी है।

बैंक—स्टट, सेण्ट्रल, कनारा इण्डस्ट्रियल बैंकिंग, सिंडिकेट, कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन तथा स्टेट आफ़ हैदराबाद आदि बैंक हैं।

जिला शिमागो

शिमागो—मैसूर प्रान्त में शिमागो स्वयं एक जिला है, जो कि एस० आर० की बिरुर-तलगुप्पा लाईन पर बिरुर से ६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगे उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शिव जी का मन्दिर व अन्य कई छोटे बड़े मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर धान, चावल, सुपारी, मूंगफली तथा गुड़ आदि का उत्पादन होता है और धान, चावल व सुपारी की प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन, कनारा इन्डस्ट्रियल प्यूपुल्स, मैसूर तथा कर्नाटक आदि बैंक हैं।

जिला साऊथ कनारा
(उदीपी, मंगलौर)

उदीपी—यह मैसूर प्रान्त के जिला कनारा में एस० आर० की साऊथ कनारा लाईन पर मंगलौर से ५८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में सवारी के लिये रिक्शा व तांगे उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में हनुमान जी का मन्दिर व १३वीं शताब्दी में श्री माधवाचार्य ने भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति की स्थापना की थी जो दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर गोला, काजू, चावल, सुपारी, बीड़ी आदि का अधिक उत्पादन होता है और यह प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—यहां स्टेट, कनारा इण्डस्ट्रीयल व कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन आदि बैंक हैं।

मंगलौर—यह जिला साऊथ कनारा में एस० आर० की जलारपेट-मंगलौर लाईन पर जलारपेट से ६८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा व टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये जौहरी मल धर्मशाला, हरिमन्दिर धर्मशाला तथा पंचायती धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गुरुद्वारा, गंगा नहर, गुड़ की मण्डी देखने योग्य है, मंगला देवी का प्रसिद्ध मन्दिर दर्शन करने के लिये सुन्दर बना हुआ है। यहां पर हवाई अड्डा भी है। इस शहर का नाम मंगला देवी के नाम से मंगलौर पड़ा।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर सुपारी, काजू, काफी, चाय, सौंठ, शिकाकाई, गोला, नारियल, मीठा आलू, काफी दाना, पीपरमेंट आदि का उत्पादन होता है। यहां पर सुपारी और गुड़ की प्रसिद्ध मण्डी है।

बैंक—स्टेट, सैण्ट्रल, कनारा इण्डियन ओवरसीज, इण्डियन कनारा इण्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिंग, सिंडिकेट, कनारा कार्पोरेशन, जयलक्ष्मी व मंगलोर विजय आदि बैंक हैं।

जिला हस्सन

(हस्सन, श्रवण बेलगोला)

हस्सन—यह नगर मैसूर प्रान्त में स्वयं एक जिला है और एस० आर० की मैसूर-अरसीकेरे लाईन पर मैसूर से १०० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला व होटल का प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई प्राचीन मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मूंगफली, शिकाकाई, आलू आदि का उत्पादन होता है। यहाँ मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर मैसूर, कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन आदि बैंक हैं।

श्रवण बेलगोला (जैन प्रथा)—यह जिला हस्सन में चन्द्रराय पट्टन नगर से १० कि० मी० है। यहाँ पर रेल मार्ग नहीं है। यह मैसूर से १०० कि० मी० की दूरी पर है।

दर्शनीय स्थल—यह जैनियों का पवित्र दर्शनीय क्षेत्र है। इसका श्रवण बेल गोल नाम पड़ जाने के सम्वन्ध में कहा जाता है कि नेमी चन्द सिद्धान्त चक्रवर्ती के समय में श्रीराम चन्द्र जी ने स्वामी जी की प्रतिमा को निर्मानित कराया। यहाँ एक बहुत बड़ा तालाब है जो किसी जैनी राजा ने बनवाया था। यहाँ भगवान् बाहुबलि की मूर्ति ६३ फीट के लगभग ऊँची है जो संसारभर में प्रसिद्ध है। इसलिये भारतीय प्राचीन शिल्प कला का गौरव है। यहां पहाड़ों पर मन्दिर है, यहाँ की गुफायें देखने योग्य हैं। यहीं पर श्री बाहुबलि स्वामी की ५७ फीट ऊंची व द्वितीय विशालकाय प्रतिमा है व गौमातेश्वरा की विशाल मूर्ति देखने योग्य है जो संसार की मूर्तियों में गिनी जाती है।

बंगलौर से प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में
(१०० कि० मी०=लगभग ६२ मील के)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी
अन्नतपुर	२१२	अरकोणम्	२८७	अरसीकेरे	१६६
काटपाड़ी	२२६	गुंलकल	२८०	चिकजाजूर	२८०
चित्तेरी	२७६	जौलारपेट्टे	१४२	तिरुवल्लोर	३१४
तुमकुर	७६	धर्मपुरी	१६४	धर्मवरम्	१७८
बंगारपेट	७०	वालाजाह रोड	२५१	वीरुर	२११
मद्रास	३५६	मैसूर	१३६	सेलम	२३२
हरिहर	३४०	हावेरी	३६५	हिन्दुपुर	९९
हुबली	४६६	होसूर	७२		

———

केरल

विख्यात राज्य यह भारत का,
त्रिवेन्द्रम की शोभा अपार.
चर्च शाता क्रुज, कोचीन किला,
हैं सुन्दरता के कोषागार.

जिला आलप्पि

(आलप्पि, तरुबल्लम)

आलप्पि—यह नगर केरल प्रान्त का स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर० कोट्टायम रेलवे स्टेशन से २५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर समुद्र के किनारे पर बसा हुआ है। यह पश्चिमी घाट का रमणीक स्थल है। यहां पर पहुंचने के लिये कोट्टायम रेलवे स्टेशन से बसें टैक्सी आदि का उचित प्रबन्ध किया गया है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये यात्रियो की सुविधानुसार धर्मशाला व होटल हैं जिनमें बिजली आदि का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कई प्राचीन एवं विशाल मन्दिर दर्शनीय है। यह के दृश्य व समुद्र का किनारा मन को हरता है।

विशेष—यह नगर सैलानियों के लिये सुन्दर स्थान है। समुन्द्र के किनारे नारियल के बाग हैं। मोसम बड़ा ही सुहावना रहता है लगभग मौसम एक सा ही रहता है। गर्म वस्त्रों की आवश्यकता ही नहीं होती। पिकनिक का रमणीय स्थल है। यह नगर बड़ा ही सुन्दर है (

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल अधिक पैदा होता है और इस क्षेत्र का यह मुख्य भोज्य पदार्थ है। यहां पर मछली का उत्पादन भी होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैण्ट्रल बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक साउथ इण्डियन बैंक आफ इण्डिया, कनारा बैंक न्यू इण्डिया और ट्रावन कोर आदि बैंक हैं।

तिरुवल्लम—यह केरल प्रान्त में अल्लेप्पी जिले के एस० आर० की मद्रास-बंलौर सिटी लाइन पर मद्रास से ११८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर में यात्रियों के लिये आटो रिक्शा, टैक्सी व तागें आदि का उचित प्रन्वध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये रेलवे स्टेशन के पास कई धर्मशालायें व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेक विशाल मन्दिर है जो प्राचीन हस्त कला के उत्तम नमूने हैं।

उत्पादित वस्तुयें–यहां पर चावल और मछली का विशेष उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर ट्रावन कोर फारवर्ड बैंक, स्वदेशी बैंक, कोट्टायम बैंक, आरियन्टल बैंक, सैन्ट्रल बैंक, दक्कन बैंक आदि है।

जिला एर्नाकुलम

(एर्नाकुलम अलवायें)

एर्नाकुलम—यह केरल प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर० की शोटानूर-कोचीन लाईन पर शोरानूर से १०७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर में यात्रियों के लिये ओटो रिक्शा, ताँगे व टैक्सी आदि की सेवायें हर समय उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक होटल व धर्शशालायें हैं जो अधिकतर स्टेशन से २ फर्लांग की दूरी पर हैं।

दर्शनीय स्थल—यह नगर मंन्दिर और चर्चो का घर है। जो दर्शनीय है।

उत्पादितवस्तुयें---यहाँ की मुख्य उपज चावल और मछली है। समुद्र तट पर नारियल के बहुत से बाग है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, साऊथ इण्डिया बैंक, कनारा बैंक, मर्चेन्टस बैंक आदि हैं।

अलवायें—यह केरल प्रान्त के जिला एर्नाकुलम का प्रसिद्ध नगर है। यह एस० आर० की शोरानुर कोचीन लाईन पर शोरनूर से ६५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह पहाड़ी प्रदेश है। यहां पर यात्रियों के लिये ओटो रिक्शा, रिक्शा व टैक्सी आदि की सेवायें उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यरां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कई होटल व धर्मशालाओं का सुविधाजनक प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेक मन्दिर व गिरजाघर दर्शनीय हैं। पहाड़ों पर चीड़ के पेड़ों की सघन छाया भी मनोहारिनी है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल और मछली ही यहां की मुख्य उत्पादन वस्तुयें मानी जाती हैं।

बैंक—यहां की सैण्ट्रल बैंक, न्यू इण्डिया, साऊथ इण्डिया, ट्रावनकौर इण्डोमर केन्ट्राइल बैंक, बड़ौदा बैंक, और बैंक आफ इण्डिया की सेवायें विशेष उपलब्ध है।

जिला कन्नानोर

कन्नानोर—यह केरल प्रान्त का प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर की जलारपेट-मंगलोर लाईन पर जलार पेट से ५५५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह समुन्द्र तट पर बसा हुआ है। यहां पर सवारी के लिये तांगे, रिक्शा व टैक्सी का उचित प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये कई होटल व धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक मन्दिर व कागज का कारखाना बहुत ही दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, सुपारी, नारियल और अदरक की अच्छी पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक, इण्डियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कनारा बैंक, कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन, इण्डस्ट्रियल एण्ड बैंकिंग सिण्डीकेट आदि बैंक विशेष उल्लेखनीय हैं।

जिला कोचीन

(कोचीन, मट्टनचेरी)

कोचीन—यह केरल प्रान्त का प्रमुख जिला है। यह एन० एस० की शोरानूर-कोचीन लाईन पर शोरानूर से ११५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह नगर एक सुन्दर बन्दरगाह है। यात्रियों की सुविधा के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें व आधुनिक ढ़ंग के अनेक होटल हैं जिनमें:—केसीनो होटल (फोन न० ६१५५, ६२७७ विलिंगडन आइलैण्ड), बुडलैण्ड होटल (फोन न० ३१६१, ३१६२, ३१६३, ६१६८ विलिंगडन आइलैण्ड), इण्टर नेशनल होटल (फोन न० ६३११, ६३१२), सीशेल होटल (फोन न० ३८०७), माइफेयर होटल (फोन न० १११०, ३४०३, ३९:१), ग्रांड होटल (फोन न० ३२११, ३८४२, ३५०८), लाबेला होटल (फोन न० २,३१३), ब्रिजा होटल. एम्बेसी होटल, त्रिमन्स होटल, गैस्ट हाऊस, भारत गेट बोर्डिंग, पी० डब्लू

रैस्ट हाऊस आदि प्रमुख होटल हैं। म्यूनिसपल बंगला ठहरने का अच्छा स्थान है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कोचीन का किला, आर्यसमाज मन्दिर. मट्टन चेरी महल, जीपू शहर, हवाई अड्डा आदि विशेष रूप से दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त सैण्ट फ्रांसिस चर्च व चाईनीज फिशिंगनेट भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, जौ व नारियल की पैदावार होती है। यहाँ पर अनेक बाग हैं जिनमें हरे फल बड़ी मात्रा में पैदा होते है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, साऊथ इण्डियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कोचीन बैंक, बैंक आफ मैसूर, कनारा बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन व सिंडीकेट बैंक आदि बैंक हैं।

मट्टनचेरी—यह केरल प्रान्त के जिला कोचीन का प्रसिद्ध नगर ह। यह एस आर की मण्डी शोरानूर-कोचीन हार्बर टर्मिनल्स लाईन पर शोरानूर से ११३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिये बस, रिक्शा, तांगे व टैक्सी आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें व होटल का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मट्टनचेरी उच पैलेस विशेषरूप से दर्शनीय हैं। यह बड़ा ही सुन्दर पुराना महल है जिसकी दीवारों पर रामायण चित्रित है जो भारत की सभ्यता का उदाहरण है। इसके देखने का समय प्रातः ८ बजे से १२.३० बजे तक तथा सांय २ बजे से ५ बजे तक का है यह शनिवार के अतिरिक्त प्रत्येक दिन देखा जा सकता है। प्रवेश निशुल्क है। इसके अतिरिक्त चर्च, मन्दिर व अन्य बाग भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, जौं, चावल, नारियल, सुपारी, इलायची आदि का उत्पादन होता है। यहाँ के वनों में चन्दन वृक्ष व हाथी दाँत पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

बैंक—यहाँ पर बैंक आफ कोहूकुलम रोड, बैंक आफ कोचीन बाजार रोड, बैंक आफ इण्डिया बाजार रोड, कनारा बैंक, सेण्ट्रल बैंक आफ इण्डिया बाजार रोड इण्डियन बैंक ब्रिज रोड, स्टेट बैंक आफ मैसूर, स्टेट बैंक आफ ट्रावन कोर, यूनियन बैंक आफ इण्डिया बाजार रोड, इण्डियन ओवरसीज बैंक तथा सिण्डीकेट बैंक आदि।

जिला कालीकट

(कालीकट, बदागरा)

कालीकट—यह केरल प्रान्त का एक बड़ा व्यापारिक नगर व जिला है। यह एस० आर० की जलारपेट-मंगलौर लाईन पर जलारपेट से ४६५ कि० मी० की

दूरी पर स्थित है। यह समुद्रतट पर बसा हुआ है। यात्रियों के लिये रिक्शा, तांगे व टैक्सी आदि सवारियों का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को विश्राम के लिये आधुनिक ढ़ंग की धर्मशालायें व होटल हैं जिनमें यात्रीगण अपनी सुविधानुसार ठहर सकते हैं। अलकापुरी गैस्ट हाऊस जेल रोड पर (फोन न० ३३६१, ३३६२, ३३६३) है यहां ठहरने का उत्तम प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां अनेक प्राचीन मन्दिर व कालीकट विश्व विद्यालय (जिसकी स्थापना १६६८ में हुई थी) आदि देखने योग्य हैं।

विशेष—यह एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। वास्कोडिगामा सर्व प्रथम यहीं पर आया था और यहाँ के महाराजा से मिलकर तथा भेंट देकर व्यापार की आज्ञा प्राप्त की थी। अतः उसी समय से यह एक व्यापारिक नगर के रूप में प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की मुख्य उपज चावल आदि है। हरे फल पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होते हैं।

बैंक—यहाँ के प्रमुख बैंक स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, कनारा एण्ड इण्डस्ट्रियल बैंक, कनारा कार्पोरेशन, इण्डिया बैंक, साऊथ इण्डियन बैंक, ट्रावनकोर बैंक, फारवर्ड बैंक, चार्टर्ड फोरिन बैंक और इण्डियन ओवरसीज आदि बैंक हैं।

बदागरा—यह केरल प्रान्त के कालीकट जिले का सुन्दर नगर है। यह एस० आर० की जलारपेट-मंगलौर लाईन पर जलारपेट से ५१२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक व्यापारिक नगर है और यात्रियों को सवारी के लिये ओटो रिक्शा तांगे और टैक्सी का विशेष प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें एवं आधुनिक ढ़ंग के अनेक होटल हैं जो रेलवे स्टेशन के पास ही हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ कई सुन्दर भवन और मन्दिर हैं। समुद्र के किनारे अनेक पिकनिक के मनोरम स्थल हैं। प्राकृतिक दृश्य, झरने तथा पहाड़ों के ढालों पर लहराते हुए सुगंधित बाग मन को हर लेते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की भूमि अधिक उपजाऊ नहीं है। यहां की मुख्य उपज नारियल, गोले के तेल, गिरी, कागज और महुआ ही कहा जा सकता है।

बैंक—यहां पर इण्डियन बैंक, कनारा इण्डस्ट्रियल बैंक आदि हैं।

जिला क्विलोन

क्विलोन—यह केरल प्रान्त का एक सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण जिला है। यह एस० आर० की एर्नाकुलम-त्रिवेन्द्रम लाईन पर एर्नाकुलम से १८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह समुद्रतट पर बसा हुआ है। यहाँ से त्रिवेन्द्रम का हवाई अड्डा केवल ७० कि० मी० दूर है। यहाँ पर सवारी के लिये ओटो रिक्शा, ताँगा व टैक्सी का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें एवं होटल हैं। पश्चिमी ढ़ंग से निर्मित होटल नीला पट्टाथानम (फोन न० ३६१६, ३६१७, तथा ३८१०), आदि होटलों में सभी प्रकार की सुविधायें उपलब्ध हैं। भारतीय ढ़ंग से बने, ऐवरेस्ट होटल (फोन न० ३६३६), होटल पूरन प्रकाश (फोन न० २४४१), रैस्ट हाऊस, आनन्द भवन (फोन न० २२५७), प्रीमियर होटल आदि में देशी खान-पान का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक सुन्दर मन्दिर, झील व झरने देखने योग्य हैं। अस्तामुरी झील और थावेली महल विशेषरूप से दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर थंगासेरी पिकनिक मनोरम स्थल भी है। यहां का एस० एन० कॉलिज (फोन न० ३९६३) भी अधिक प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गोला, गोले का तेल, नारियल से बनने वाली अनेक वस्तुओं का उत्पादन होता है। सुपारी यहाँ की मुख्य उपज है, और नारियल अधिक मात्रा में पैदा होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ ट्रावनकोर मेन रोड, स्टेट बैंक, इण्डियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, सैण्ट्रल बैंक व कनारा बैंक आदि बैंक हैं।

जिला कोट्टायम

(कोट्टायम. चँगनाचेरी, पलाई, मुवातु पूजा)

कोट्टायम—यह केरल प्रान्त का मुख्य जिला है। यह एस० आर० की एर्नाकुलम त्रिवेन्द्रम लाईन पर एर्नाकुलम से केवल ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिये ओटोरिक्शा, तांगा व टैक्सी का उचित प्रबन्धहै समुद्र तट पर नाव की सवारी भी की जाती है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर ठहरने के लिये धर्मशाला व होटलों का पर्याप्त संख्या में प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बहुत से गिरजाघर तथा अनेक प्राचीन मन्दिर हैं जो भारतीय सभ्यता के नमूने है। प्राकृतिक दृश्य, समुद्रीसैर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ नारियल का विशेषरूप से उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त गोले का तेल, सुपारी, गर्ममसाला भी अधिक मात्रा में पैदा होता है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, इण्ड़ियन बैंक, न्यू इण्डिया बैंक, ओरियण्टल तथा कामर्शियल बैंक आदि बैंक हैं।

चँगना चेरी—यह केरल प्रान्त के कोट्टायम जिले का प्रसिद्ध नगर है। यह एस० आर की एर्नाकुलम-त्रिवेन्द्रम लाईन पर एर्नाकुलम से ७८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। अन्य नगरों की भाँति यहां भी रिक्शा, ताँगे तथा टैक्सी आदि का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये धर्मशालायें व होटल आदि का उचित प्रवन्ध है ये सभी स्टेशन के पास ही है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेक मन्दिर व गिरजाघर हैं जो अपने अतीत की गौरवगाथा को दोहराते हैं। नगर वास्तव में दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां नारियल व मछली की मुख्य उपज है। इसके अतिरिक्त गोले के तेल का कारखाना, स्टार्च व मसाले आदि भी पाये जाते हैं।

बैंक—ट्रावनकोर फारवंड बैंक, कैथोलिक बैंक, ट्रावनकोर बैंक, कोट्टायम बैंक व ओरियण्टल बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

पलाई—यह केरल प्रान्त के कोट्टायम जिले का एक नगर है। यह एस० आर की एर्नाकुलम-त्रिवेन्द्रम लाईन पर स्थित है। उद्योग की दृष्टि से इस नगर का विशेष महत्त्व है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा, तांगा व टैक्सी का उचित रूप से प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल आदि का उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चाय व कागज के कारखाने, मन्दिर व गिरजाघर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चाय की मुख्य उपज है। इसके अतिरिक्त चावल मछली आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—ट्रावनकोर फारवर्ड बैंक व सैण्ट्रल बैंक यहाँ के प्रमुख बैंक हैं।

मुवात्तु पूजा—यह केरल प्रान्त के जिला कोट्टायम का प्रमुख नगर है। यह एर्नाकुलम बन्दरगाह और रेलवे स्टेशन पर स्थित है। कोचीन किले का हवाई अड्डा भी रेलवे स्टेशन एर्नाकुलम के पास ही है। इस नगर को केवल सड़क द्वारा ही जाया जा सकता है। इसके दक्षिण में कोट्टायम दूसरा रेलवे स्टेशन है। यह समुद्र व रेलवे लाईन से दूर है इसलिये वसों द्वारा ही वहाँ जाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त रिक्शा ताँगा व टैक्सी का भी उचित प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये धर्मशालायें व होटलों का उचित प्रबन्ध है जिनमें सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई प्राचीन तथा प्रसिद्ध मन्दिर दर्शनीय हैं। पेपर मिल व चाय आदि के बाग भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चाय व मसालों का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त हाथी दांत का सामान भी बनता है।

बैंक—नगर में कई बैंक हैं परन्तु ट्रावनकोर बैंक की सेवायें प्रशंसनीय है।

जिला त्रिवेन्द्रम

(त्रिवेन्द्रम, नैयार, अरुविकारा, पदमा नाभापुरम महल, पौनमुदी, वरकाला)

त्रिवेन्द्रम—यह केरल प्रान्त का सर्वाधिक प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर० की एर्नाकुलम-त्रिवेन्द्रम लाईन पर एर्नाकुलम से २१६ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह प्राचीन व्यापारिक केन्द्र है। यात्रियों के लिये रिक्शा, तांगा व टैक्सी का उचित प्रवन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालाएं हैं। प्रमुख धर्मशाला मूल जी, जेठा जी बम्बई वालों की है। इसके अतिरिक्त त्रिवेन्द्रम होटल (फोन० न० ४१४२ सेक्रेट्रीएट के पास), कैपीटल टूरिस्ट होम स्टेट यू त्रिवेन्द्रम (फोन० न० ३६६४), गाँधी होटल चलाई (फोन० न० २६४८), आर्य भवन रेलवे रोड (फोन० न० ४४२३), मसकोट होटल (फोन० न० ३०६१ से ३०६५) आदि प्रसिद्ध होटल हैं।

विशेष—यह केरल प्रान्त की राजधानी है जो समुद्र तट पर बसा हुआ है। यहाँ पर हवाई अड्डा है। यहां का मौसम बड़ा ही सुहावना है। पूरे वर्ष सूती वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर अनेक मन्दिर, मस्जिद तथा गिरजाघर दर्शनीय है। यहाँ का म्यूजियम तथा चिड़ियाघर वहुत ही सुन्दर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, गोला, गोले का तेल आदि का उत्पादन मछली भी अधिक पायी जाती है।

बैंक—यहाँ पर सभी प्रमुख वैंकों की ब्रांच हैं जो व्यापरियों व सैलानियों को हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते हैं।

अरुविकारा—यह केरल प्रान्त में त्रिवेन्द्रम जिले का प्रमुख स्थान हैं। यहाँ रेल मार्ग की व्यवस्था न होने के कारण वसों व टैक्सी द्वारा जाया जाता है। शहर में घूमने फिरने के लिये रिक्शा, तांगा व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये होटल व सरकारी विश्राम ग्रह आदि का उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कारानामा नदी का वादर वर्क्स दर्शनीय है। यहाँ से दूर-दूर तक के सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ते हैं। फोटोग्राफी के लिये उत्तम स्थान है। पिकनिक का भी सुन्दर स्थान है।

नैयार—यह केरल प्रान्त के त्रिवेन्द्रम जिला का प्रमुख शहर है यहां रेल मार्ग न होने के कारण बसों द्वारा जाया जाता है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा टैक्सी आदि की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये रैस्ट हाऊस बहुत ही सुन्दर बना हुआ है जिसमें सभी प्रकार की सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—नैयार बांध के बाग, तैरने के तालाब, रैस्ट हाऊस, चौड़ी झील, वोटिंग व पहाड़ पर चढ़ने के लिये सभी सुविधायें हैं।

पदमानामा पुरम महल—यह केरल प्रान्त के त्रिवेन्द्रम जिले में स्थित है। यहां पर रेल मार्ग न होने के कारण त्रिवेन्द्रम से बसों द्वारा जाया जाता है। यह त्रिवेन्द्रम से ५३ कि० मी० की दूरी पर है। शहर में आने जाने के लिये रिक्शा टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये शहर में उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर १३वीं शताब्दी की सभ्यता देखने को मिलती है। मदर पैलेस, नरिला मण्डप, डाँस हाल आदि यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

पोनमुदी—यह केरल प्रान्त के त्रिवेन्द्रम जिले का प्रमुख स्थान है। यहाँ पर पहाड़ी इलाका होने के कारण रेल मार्ग की व्यवस्था नहीं है। त्रिवेन्द्रम से बसो द्वारा ही जाया जाता है। यह त्रिवेन्द्रम से ६१ कि० मी० की दूरी पर है। शहर में सवारी के लिये यात्रियों को टैक्सी मिलती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने के लिये सेनोटोरियम में उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चाय व रवड़ के बड़े-बड़े बगीचे हैं तथा काफी उत्पादन होने के कारण भारत में अन्य स्थानों को भेजे जाते हैं। यहां के जंगल देखने योग्य हैं।

वरकाला—यह केरल प्रान्त के त्रिवेन्द्रम जिले में एस० आर० की विरुदनगर-त्रिवेन्द्रम लाईन पर त्रिवेन्द्रम से ४१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा व ताँगे की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत ही सुन्दर टूरिस्ट बंगला बना हुआ है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर सुन्दर पहाड़ियों की नहरें, जर्नादन विष्णु जी का मन्दिर, शिवगिरि की पहाड़ी आदि दर्शनीय हैं।

जिला त्रिचूर

त्रिचूर—यह केरल प्रान्त का एक जिला है। यह एस० आर० की शोरानूर-कोचीन बन्दरगाह लाईन पर शोरानूर से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक प्राचीन नगर है। व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी है। यहाँ पर सवारी के लिये तांगा रिक्शा व टैक्सी का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक फैक्ट्रियां, भव्य मन्दिर तथा प्राकृतिक दृश्य दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर अनाज के अतिरिक्त सुपारीदाना, आम, केला, आकाशवेल और चावल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डियन बैंक, भारत यूनियन बैंक, कोचीन बैंक, ओरियण्टल इन्शोरेन्स एण्ड बैंकिंग कारपोरेशन बैंक, बैंक आफ कोचीन तथा कैथोलिक सिरीयान बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला पालघाट

पालघाट—यह केरल प्रान्त का प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर० की ओलोव क्कोट-पेंचोली लाईन पर ओवल क्कोट से केवल ५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह प्रान्त के मध्य में स्थित एक व्यापारिक नगर है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा और टैक्सी का प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—प्राचीन नगर होने के कारण अनेक धर्मशालायें हैं। यात्रियों को ठहरने के लिये कुछ होटल भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर मण्डी, अनेक मन्दिर, बड़े-बड़े कारखाने, भव्य वन तथा प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मसाले, चावल आदि की पैदावार होती है सुपारी यहां की मुख्य उपज है। यहाँ सिल्क भी तैयार होती है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, इण्डियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कनारा बैंकिंग कार्पोरेशन, साऊथ इण्डियन बैंक, कोचीन बैंक, कामर्शियल बैंक, इण्डियन मर्केण्टाइल बैंक व कामर्शियल बैंक यहाँ के प्रमुख बैंक हैं।

कालटि—यह केरल प्रान्त का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। रेलवे लाईन से कुछ दूरी पर सड़क पर बसा हुआ है। अंगामाली रेलवे स्टेशन यहाँ से केवल ९.६ कि० मी० की दूरी पर है। एलवाई नगर की दूरी यहां से २२.४ कि० मी० है। एर्नाकुलम ५१.३६ कि० मी० तथा प्रान्त का प्रसिद्ध नगर त्रिचूर ५४.४ कि० मी० की दूरी पर है। यह नगर रेलवे स्टेशन से दूर है और सवारी के लिये रिक्शा, तांगा बस तथा टैक्सी का उचित प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—इस नगर में यात्रियों के ठहरने का कोई प्रबन्ध नहीं है। आलवाय नगर, कलाडी नगर के समीप यात्रियों सुविधापूर्वक ठहरने का प्रबन्ध है। यहां पर धर्मशाला तथा होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह शंकराचार्य जी की जन्म भूमि है। यहां भगवान कृष्ण का मन्दिर, शारदा देवी का मन्दिर, शंकराचार्य जी का मन्दिर देखने योग्य हैं इसके अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द जी का धार्मिक पुस्तकालय, जिसमें ३ हजार से अधिक उच्च कोटि की पुस्तकें हैं, दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यह बहुत ही छोटा नगर है। इसके आस-पास के क्षेत्र में अनेक खाद्य पदार्थ होते हैं। यहां पर किसी प्रकार का व्यापार नहीं होता। यह केवल तीर्थ स्थान ही है।

बैंक – यहां पर यूनियन बैंक और सेण्ट्रल बैंक की शाखायें हैं।

(त्रिवेन्द्रम से प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में)

(१०० कि० मी० = ६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अन्जामली	२४२	अलेप्पी	१६१	अवनीश्पुरम	१०१
कन्याकुमारी	८७	कन्याकुलम	१०६	क्विलोन	६५
कोचीन	२१७	चोलपुरम	२९५	त्रिचूर	२८५
तेनकाशी	१६७	नागेरकोईल	६८	पदमानाभापुरम	७०
रामकृष्णपुरम	२२५	वरकला	४१	विरुदनगर	२९०
श्री विल्लुपुत्तुर	२४८	शेङ्कोट	१५६		

तामिलनाडु (मद्रास)

यह घर है दक्षिण भारत का,
है रामेश्वर का पुन्य धाम.
मन्दिर विशाल मीनाक्षी का,
शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणम्.

तामिलनाडू—तामिलनाडु प्रदेश भारतवर्ष के दक्षिण में पूर्वी समुद्र तट पर स्थित है। इस प्रदेश का पुराना नाम मद्रास था। इस प्रदेश का धार्मिक, राजनैतिक ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक महत्व है। इस प्रदेश की भाषा तामिल है। समुद्र तट पर नारियल के घने वृक्ष हैं। गर्म मसाले वड़ी मात्रा में पैदा किए जाते हैं। मद्रास इस प्रदेश की राजधानी है। यहां पर द्रविड़ जाति के लोग रहते हैं। चावल यहां का मुख्य भोजन एवं पैदावार है।

जिल अरकोट

(बेल्लौर)

बेल्लौर—यह जिला अरकोट का प्रसिद्ध नगर है। दक्षिण रेलवे की विल्लुपुरम् रेणि एन्टा लाईन पर स्थित है। यह विल्लुपुरम् से १५२ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सवारी मिलती हैं। एक गौशाला भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई देवालय देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त अरकोट शहर में नटराज मन्दिर बहुत सुन्दर बना है, जो १७वीं शताब्दी में बना था।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया की एक शाखा है।

जिला उटकमन्ड

(उटकमण्ड)

उटकमण्ड—यह एक जिला है। यह नगर दक्षिणी रेलवे की मेट्टापलायम-उटकमण्ड लाईन पर स्थित है। यह मेट्टापलायम से ४६ कि० मी० की दूरी पर है। यह नगर बहुत सुन्दर बना हुआ है। यहां पर रिक्शा, तांगे आदि की सवारी मिलती है। गर्मियों में यह नगर तामिलनाडू की राजधानी बन जाता है

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक होटल बने हुए हैं। जिनमें सिवाय होटल (फोन न० ५७२) तथा दास प्रकाश होटल (फोन न० २४३४, २४३५) प्रसिद्ध होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह नगर ही दर्शनीय है। आर्य समाज मन्दिर तथा हवाई अड्डा प्रसिद्ध है। झील बोटेनिकल गार्डन देखने योग्य हैं। नील गिरि पर्वत की सबसे ऊंची चोटी यहां से ८ कि० मी० की दूरी पर है।

जिला कन्याकुमारी

(कन्याकुमारी)

कन्याकुमारी—यह तामिलनाडू प्रदेश का एक जिला है। दक्षिण रेलवे की मनियाची शेन-कोटाह लाईन पर स्थित है। त्रिवेन्द्रम से इसकी दूरी ६७ कि० मी० है। यह समुद्र के तट पर है। भारत का सबसे नीचे का अन्तिम स्थान है। यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। पौराणिक कथा के अनुसार यहां पर पार्वती ने भगवान शंकर को प्राप्त करने के लिये तपस्या की थी। योगीराज स्वामी विवेकानन्द जी ने अपना नश्वर शरीर यहीं पर त्यागा था। यहां पर रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी आदि की सवारियां मिलती हैं। सारे भारत से हजारों यात्री यहां पर आते हैं। समुद्र स्नान के लिए महत्वपूर्ण है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला तथा होटलों की व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—महात्मा गाँधी की समाधि सुन्दर बनी हुई है। विवेकानन्द शिला अत्यन्त भव्य है। २ सितम्बर ७० को विक्रमाशिला का उद्घाटन राष्ट्रपति वी० वी० गिरी ने किया। इसी शिला पर विवेकानन्द जी को विवेक प्राप्त हुआ था। यह पहाड़ों पर है। भद्रकाली तथा कुमारी देवी के मन्दिर अवलोकनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—नारियल विशेष रूप से उत्पन्न होता है।

बैंक—स्टेट बैंक व सैन्ट्रल बैंक हैं।

जिला कुडडालोर

(कुडडालरो)

कुड्डालोर—तामिलनाडु का यह एक जिला है। कुड्डालोर नगर रेलवे जंक्शन है। यह दक्षिण रेलवे की मद्रास-रामेश्वरम् लाईन पर मद्रास से २०५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी आदि सवारियाँ मिलती हैं। यहाँ अनाज की मण्डी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है तथा एक धर्मशाला शहर में है जिनमें यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर में छोटे छोटे कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां धान, चावल, मटर, नमक, तेल, चीनी, आलू, प्याज आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—नगर के कारोबार संचालन हेतु अनेक बैंक हैं, जिनमें स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, इन्डो कार्मशियल बैंक, साउथ अर्काट बैंक, इन्डियन बैंक आदि मुख्य बैंक हैं।

जिला कोयमबटूर

(कोयमबटूर तथा ईरोड)

कोयमबटूर—तामिलनाडु का एक जिला है। यह नगर दक्षिण रेलवे की जलारपेट-मंगलौर लाईन पर जलारपेट से २८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सवारी मिलती हैं। यहाँ एक बड़ी मण्डी है। यह नगर रस्सी के लिये प्रसिद्ध है। यह एक बड़ा नगर है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास तथा बाजार में धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—देवी का मन्दिर, शिवजी का मन्दिर के अलावा और भी कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—रूई, बिनौला, मूंगफली, चाय, तम्बाकू, गुड़, शक्कर, आम, आलू, केला, अंगूर आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—नगर में अनेक बैंक हैं जिनमें सैन्ट्रल बैंक, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, जयपुर बैंक, स्टेट बैंक, कनारा बैंकिंग कारपोरेशन, इन्डियन ओवर-सीज बैंक, पंजाब नेशनल बैंक उल्लेखनीय हैं।

ईरोड—यह नगर कोयमबटूर जिले में है। दक्षिण रेलवे की जलारपेट मंग-लौर लाईन पर जलारपेट से १८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी आदि सवारियां मिलती हैं। यहां एक बड़ी मण्डी है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं जिनमें हनुमान और शिव जी के मन्दिर सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—देशी घी, अरण्डी तेल, चीनी, तम्बाकू, आम, गुड़ आदि।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इन्डियन कनारा बैंक तथा सैन्ट्रल बैंक के द्वारा नगर का कारोबार चलता है।

जिला चिंगलपुट

चिगंलपुट—यह तामिल नाडु का एक जिला है। यह नगर दक्षिण रेलवे की मद्रास-रामेश्वर लाइन रप मद्रास से ५६ कि० मी० की दूरीं पर स्थित है। सवारी के लिए तांगा, रिक्शा, और टैक्सी मिलती है। यहां पर मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में एक सराय है।
दर्शनीय स्थल—शहर में एक छोटा सा मन्दिर है।
उत्पादित वस्तुयें—नमक विशेष रूप से उत्पन्न किया जाता है।
बैंक—स्टेट बैंक तथा इण्डियन बैंक हैं।

जिला तिन्नेवेली

(तिन्नेवेली, तूतीकोरिन)

तिन्नेवेली—यह तामिल नाडु का एक प्रसिद्ध जिला है। यह रेलवे जंकशन है और दक्षिण रलवे की माणीयाची-शंकोठा लाईन पर माणीयाची से ५९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है सवारी के लिये यहां पर तांगा तथा टैक्सी, रिक्शा मिलती हैं। यिह कराने की मण्डी है। सूती वस्त्र उद्योग निरन्तर उन्नति कर रहा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास है और दूसरी शहर में है।

दर्शनीय स्थल—नगर में अनेक मन्दिर हैं। जिसमें हनुमान जी का काली का तथा देवी का मन्दिर अवलोकनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मिर्च लाल व काली, लौंग, पीपल तथा अन्य मसालें, गुड़ और दाल, सूती वस्त्र आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—अनेक बैंकों की शाखायें नगर में खुली हुई हैं जिनमें ये स्टेट बैंक सैन्ट्रल बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, साऊथ इण्डियन बैंक, इन्डो कामर्शियल उल्लेखनीय हैं।

तूतीकोरिन—यह नगर तिन्ने वेली जिले में है। यह दक्षिण रेलवे की त्रिचना पल्ली तूतिकोरन लाईन पर त्रिचना पल्ली से ३४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगे मिलते हैं। यहाँ एक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास तथा शहर में अच्छी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर नमक, धान, चावल आदि है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाबनेशनल बैंक, कनारा बैंक, साउथइडियन बैंक, इण्डियत ओवरसीज बैंक आदि।

जिला त्रिचनापल्ली

(त्रिचनापल्ली तथा पुडुकोट्टाई)

त्रिचनापल्ली—तामिल नाडु प्रदेश का प्रमुख जिला है। यह रेलवे जंक है। दक्षिणी रेलवे की मद्रास-धनुष कोटि लाईन पर मद्रास से ३९८ कि० मी०

की दूरी पर स्थित है। इस नगर की गिनती प्रदेश के प्रमुख एवं बड़े नगरों में की जाती है। यहां बहुत बड़ी मण्डी हैं। सूती वस्त्र उद्योग का यह बड़ा केन्द्र हैं। यहां बहुत बड़ा हवाई अड्डा है। दी त्रिचनापल्ली पिंजरा पोल के नाम से एक गौशाला है सवारी के लिये रिक्शा, तांगा, टैक्सी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—खेम राज श्री कृष्ण दास जी की धर्मशाला प्रसिद्ध है। नगर में अनेक होटल हैं। एरिस्टो होटल प्रसिद्ध है। इसका फो० न० ६५६५ है।

दर्शनीय स्थल—यहां से ५ कि० मी० की दूरी पर श्री रंग पट्टन में एक विष्णु मन्दिर है। यह एक चट्टान पर बना हुआ है और ७३ फुट ऊंचा है। दक्षिण के मन्दिरों में यह सबसे बड़ा तथा वास्तु कला की दृष्टि से सर्वोत्तम है। रघुनाथ जी का मन्दिर तथा आर्य समाज मन्दिर भी देखने योग्य हैं। ११ कि० मी० की दूरी पर कावेरी नदी की दो धाराओं के बीच में श्री रंग नाथ जी का मन्दिर है जिसके सात पर कोटे हैं और इक्कीस द्वार हैं। यह मन्दिर ६ कि० मी० के घेरे में है। महा लक्ष्मी मन्दिर भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें———धान चावल, बिनौला, गोला, उड़द, मूंग आदि।

बैंक—नगर में अनेक बैंकों की शाखायें हैं। स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटैड कार्शियल बैंक, इण्डियन बैंक, ट्रावन कोर बैंक तथा इण्डियन ओवर सीज बैंक प्रसिद्ध हैं।

पुउड्डुकोट्टाई—यह नगर त्रिचना पल्ली जिले में है। दक्षिण रेलवे की मद्रास धनुष कोटि लाईन पर मद्रास से ४५४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह चावल की मण्डी के लिये प्रसिद्ध है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से दो फर्लांग की दूरी पर एक धर्मशाला है तथां अन्य धर्मशालायें शहर में हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में अनेक मन्दिर हैं जिसमें लक्ष्मी जी का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, रुई, मूंगफली आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाइटेड बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, इण्डियन बैंक तथा तथा इण्डियन ओवरसीज बैंक की शाखायें नगर के कारोबार संचालन में मुख्य रूप रूप से हाथ बटाती है।

जिला तंजावूर

(तंजावूर, कुम्बाकोणम)

तंजावूर—यह नगर स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह दक्षिणी रेलवे की मद्रास धनुष कोटि लाईन पर मद्रास से ३५२ कि० मी० दूरी पर स्थित है। यहाँ एक गौशाला है। यहां की मण्डी धान, चावल, के लिये प्रसिद्ध है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी मिलती है। यह चोल राजाओं की राजधानी थी।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला राजा धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है। अन्य धर्मशालायें नगर में है।

दर्शनीय स्थल—बृहदीश्वर मन्दिर सुन्दर बना है। यह भारत का सब से सुन्दर मन्दिर है इस मन्दिर काशिखर दो सौ फुट ऊंचा है। मन्दिर के सामने एक विशाल मण्डप है जिसमें तेरह फुट ऊंचा, सोलह फुट लम्बा और सात फुट चौड़ा पत्थर का विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर दसवी शताब्दी का बना हुआ है। सम्भो जी राजा का प्रसिद्ध पुस्तकालय सरस्वती महल के नाम से प्रसिद्ध है। शिव गंगा वापिका भी देखने योग्य है यह मीठे पानी के लिये प्रसिद्ध है। तंजौर में एक प्राचीन एवम विशाल किला भी है। यहां का प्रमुख मन्दिर १४ मंजिलों का है। मन्दिर का कलश जिस पत्थर पर टिका है उसका भार २,०० मन बताया जाता है। यहां पर लगभग ७४ मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान, उड़द, मूंग आदि है।

बैंक—स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, इण्ड़ियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, इण्डो कार्मशियल बैंक।

कुम्बाकोणम—यह मद्रास प्रान्त तंजौर जिले में एस० आर० की मद्रास-रामेश्वरम लाईन पर मद्रास से ३१३ कि० मी० व तंजौर से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ शहर में आने जाने के लिये सिटी बस, रिक्शा, तांगे, टैक्सी आदि की सुविधा उपलब्ध है। यह कावेरी नदी के किनारे पर बसा हुआ है। रेलवे स्टशन से बाजार २ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान हैं यह नगर पुराने फैशन के सोने चाँदी के आभूषणों के लिये प्रसिद्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने ने लिये स्टेशन के पास एक बड़ी धर्मशाला व शहर में बहुत सुन्दर २ होटल बने हुये हैं

दर्शनीय स्थल—यहां पर ५ बड़े २ मन्दिर दर्शनीय है जैसे कुम्वेश्वरम मन्दिर सारंगवानी मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर, रामास्वामी का मन्दिर, रूवेश्वरम मन्दिर आदि हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ की मुख्य उपज धान, चावल, मूंग, बिनौला, उड़द, मूंगफली, गुड़, आम आदि है। यह पीतल के वर्तन तथा हैण्डलूम के कपड़ों के लिये प्रसिद्ध है।

बैंक—नगर में अनेक बैंकों की शाखायें हैं जिनमें स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सैन्ट्रल बैंक, इण्डियन बैंक, इण्डियन ओवर सिज बैंक, कार्मशियल बैंक, यूनियन बैंक आदि हैं।

जिला- नार्थ अर्काट

अरनी—यह नगर नार्थ अर्काट जिले में हैं। यह रेलवे स्टेशन नहीं है, बल्कि अरनी रोड रेलवे स्टेशन से १७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह स्टेशन दक्षिण

रेलवे की रेनी गुंटा-विल्लू पुरम् लाइन पर स्थित है। स्टेशन से शहर के लिए बस जाती है। यह एक छोटी मण्डी है। जो सिल्क के कपड़े के लिए प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—शहर में धर्मशाला है और वहां ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—सिल्क, सिल्क का कपड़ा, धान आदि

बैंक—स्टेट बैंक, तंजोरबैंक, परमा नेंट, लक्ष्मी विलास बैंक, अरनी को-आपरेटिव टाउन बैंक आदि हैं

जिला- मद्रास

(मद्रास)

मद्रास—तामिलनाडु का प्रसिद्ध जिला तथा भारत के तीन प्रमुख एंव महत्व पूर्ण नगरों में से एक है। यह रेलवे जंक्शन हैं। तामिलनाडु प्रदेश की राजधानी है। भारत पूर्वी समुद्र तट का प्रधान बन्दरगाह हैं। यह नगर १२९ वर्ग कि० मी० भूमि पर फैला हुआ है। नगर के बीच में होकर कूम नदी बहती है। यह कृत्रिम बन्दरगाह है। समुद्र में दीवार बनाकर जहाजों के ठहरने का स्थान बनाया गया है। मद्रास के पीछे का भाग विस्तृत है परन्तु यह प्रदेश धनी नहीं है। यहाँ उन वस्तुओं का कम उत्पादन होता है जिनकी माँग दुनिया के बाजारों में हैं। यहाँ पर सोलह जहाज सुरक्षित अवस्था में खड़े रह सकते है। रेल मार्गो तथा सड़को द्वारा यह दूसरे नगरों से जुड़ा हुआ हैं। सवारी के लिए यहाँ रिक्शा, ताँगा, टैक्सी तया सिटी बस हैं। दो गौशालाएं हैं:—दी महाज न गौशाला तथा श्री भाई जी नाथ रामानुज गौशाला। प्रसिद्ध तीर्थ स्थान रामेश्वरम् यहाँ से ६६६ कि० मी० है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ पर अनेक धर्मशालाएं होटल हैं। धर्मशालाओं में प्रमुख ये हैं:—स्टेशन के पास राजा राम धर्मशाला वंशी लाल अमीर चन्द साहूकारा की धर्मशाला, परमानन्द छोटा दास धर्मशाला, (स्टेशन के पास), दिगम्बर जैन धर्मशाला।, मद्रास के होटलों की सूची टेली फोन न० सहिति नीचे दी जा रही है। एअर लाइन्स होटल फोन न० ८४२७१-२, को ने मेरा होटल ८४०९४, ओसनिक होटल ७१००१-२-३, दास प्रकाश होटल ६११११, न्यू होटल ८६४ १, क्वीन्स होटल ३८८९१, गुप्ता अजन्ता होटल ८४४९१, राज भूषण होटल सेदा पेट कालिरिज होटल ६१८२५, विक्टोरिया होटल ८२१९१, टूरिस्ट होटल ८३५११, इम्पीरियल होटल ८२००१, गीता होटल ८३१०१, अशोका होटल ८२१६१, अरुण होटल ६३३१६,

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक मन्दिर हैं। आर्य समाज मन्दिर, बाला जी का मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, पुम्कुल मायात्रर के मन्दिर तथा १६० कि० मी० की दूरी पर तिरुपति मन्दिर अव लोकनीय है। सन् १८५७ में मद्रास विश्वविधालय की स्था ना हुई। विश्व विधालय का भवन सुन्दर है। अजायबघर, चिड़ियाघर,

संग्रहालय,अनाथालय हाई कोर्ट भवन, कला केन्द्र, सेन्टजार्ज किला, कपलेश्वर मन्दिर, रेस कोर्स, ए० वी० एम. स्टूडियों, लाइट हाउस, पारठा सारठी मन्दिर, थियासोफिकल सोसाइटी भवन, अवलोकनीय हैं। एल० आई० सी० बिल्डिगं चौदह मंजिल की है। बन्दरगाह का दृश्य भी निराला है। विक्टोरिया हाल में गोमट स्वामी की प्रतिमा दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर केन्द्रीय विद्युत् रसायन अनुसन्धान संस्था तथा केन्द्रीय चमड़ा अनुसन्धान संस्था है। नमक, गोले का तेल, गोले तथा नारियल से बनने वाले अनेक पदार्थ, पीपर मेन्ट, कैमीकल्स सूती वस्त्र, सिगरेट, सीमेन्ट, चमड़े का समान आइवरी तथा चन्दन की लकड़ी की वस्तुएं, जवाहरात, तथा कालीन भी प्रसिद्ध हैं। साईकिल बनाने का कारखाना है। चीनी बनाने के पाँच कारखाने आदि प्रमुख उत्पादित वस्तुएं हैं।

बैंक—यहां पर भारत के प्राय: सभी बैंकों की शाखाएं हैं। कुछ बैंकों की शाखाएं कई कई हैं।

जिला मदुराई

मदुराई—यह तामिलनाडु प्रदेश का एक प्रमुख धार्मिक स्थान व जिला है। यहाँ रेलवे स्टेशन है। दक्षिण रेलवे की त्रिचनापल्ली-तूतीकोरिन लाईन पर त्रिचनापल्ली से १५७ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह तमिलनाडु का दूसरा बड़ा नगर है। यहां प्राचीन भव्य मन्दिर तथा भवन हैं। यह द्राविड़ तथा तमिल संस्कृति का केन्द्र है। यहां पर लगभग प्रतिदिन कोई न कोई धार्मिक पर्व अथवा उत्सव मनाया जाता है इसीलिये इसे "उत्सवों का नगर" नाम से पुकारा जाता है। यह पांडया साम्राज्य की राजधानी रहा था। चैत्र मास में सुन्देश्वन तथा मीनाक्षी के विवाह का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सवारी के लिये रिक्षा, ताँगा तथा टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यत्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालाएं हैं। जिनमें से कुछ मन्दिर के पास बनी हुई है। रेलवे का विश्राम गृह, होटल तथा पर्यटकों के लिये बने हुए नवीन बंगले भी हैं। इंगलिश होटल फोन नं० ३११७, मिडलैण्ड होटल फोन नं० २४९१ तथा पान्डयन होटल फोन नं० २६६७१ प्रसिद्ध होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—मीनाक्षी का मन्दिर ८५० फुट लम्बा ७२५ फुट चौड़ा है जो एशिया का सबसे सुन्दर तथा विशाल मन्दिर है। यह राजा तिरुमल्ल नायक द्वारा सतरहवीं शताब्दी में बनाया गया। इसमें अनेक बारादरियां हैं। एक बारादरी ३३३ फुट लम्बी तथा १०५ फुट चौड़ी है। मन्दिर चौकोर आकार का है। एक हजार स्तम्भ वाला एक विशाल सभा मण्डप है। स्तम्भों की सजावट शिल्प कला विस्मयकारी है। कुछ स्तम्भ इस प्रकार के हैं कि उन पर यदि चोट की जाय तो उनसे सप्त स्वर उत्पन्न किये जा सकते हैं। इन्हें संगीत के स्तम्भ कहते हैं। नौ

गोपुर हैं मन्दिर के चारों ओर ३३ लाख मूर्तियां बनी हुई हैं। एक विशाल तालाब तिरुमल्ल नायक का महल भी दर्शनीय है। म्यूजियम, मदुराई विश्वविद्यालय, गांधी म्यूजियम, स्वामी का मन्दिर, मेरियम टैंक आदि अत्यन्त सुन्दर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—हैन्डलूम उद्योग बहुत बड़े पैमाने पर चल रहा है। सिल्क तथा जरी हुई साड़ियां प्रसिद्ध हैं। रंग ब ाने का काम प्रसिद्ध है। गुड़, कॉफी, मूंग फली, तेल आदि उत्पन्न किये जाते हैं।

बैंक—नगर का कारोबार स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, इन्डियन बैंक, नाडार बैंक की शाखाओं द्वारा सुचारू रूपेण चलता है।

जिला रामेश्वरम्

रामेश्वरम्—यह तामिलनाडु प्रदेश का प्रसिद्ध धार्मिक स्थान व जिला है। यह मद्रास से ६६: किलो मीटर की दूरी पर है तथा दक्षिण रेलवे की मद्रा-रामेश्वरम् लाइन पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा तथा टैक्सी मिलती हैं। यह एक छोटे से द्वीप पर स्थित है। रामेश्वरम दक्षिण दिशा का धाम है। कहा जाता है भगवान राम ने यहां भगवान शिव की उपासना रावण को मारने के उद्देश्य से की थी। हिन्दू तीर्थ यात्री वाराणसी (उत्तर प्रदेश) की यात्रा के पश्चात रामेश्वरम् की यात्रा करना आवश्यक मानते है रामेश्वरम् पहले भारत की भूमि से मिला हुआ था किसी प्राकृतिक घटना के कारण इस अन्तरीय का मध्य भाग समुद्र में डूब गया और रामेश्वरम् द्वीप अलग हो गया। यह १७ कि० मी० लम्बा तथा ११मी० चौड़ा है।

विश्राम स्थल—मन्दिर के आस पास अनेक धर्मशालाएं हैं। जिनमें वंशीलाल अमीर चन्द धर्मशाला, राय बहादुर भगवान दास जी की धर्मशाला, बलदेव दास वसन्त लाल दूध वालों की धर्मशाला, तंजौर के राजा की धर्मशाला प्रसिद्ध हैं। रामनाथ पुर राजा की धर्मशाला है जिसमें केवल मद्रासी ही ठहर सकते हैं।

दर्शनीय स्थल—रामेश्वरम् का मन्दिर प्रसिद्ध है। यह द्रविड़ कला उत्कृष्ट नमूना है। इसका निर्माण काल ११ वीं शताब्दी है। मन्दिर में विशाल बरामदें, दालान, एवं बारादरियाँ हैं। कहीं कहीं ४००० फुट तक लम्बी बारादरियाँ हैं। स्तम्भों की कला विस्मय कारी है। मन्दिर के सामने स्वर्ण माण्डित स्तम्भ है। पास में श्वेत वर्ण की मूर्ति है। यह १३ फीट ऊंची और आठ फुट लम्बी तथा ६ फुट चौड़ी है समुद्र के ऊपर बना पुल भी अपना महत्व रखता है। मन्दिर से एक मील पश्चिम में लक्ष्मण तीर्थ है। सीता तीर्थ में स्नान का महात्मय है। पास में एक पंच मुखी हनुमान का मन्दिर है। राम तीर्थ का जल खारा हैं धनुष कोडी में स्नान का महान माहात्म्य है। यहां पर दो समुद्रों का बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर का संगम होता है।

जिला सेलम

सेलम—तामिलनाडु का एक जिला है। रेलवे जंक्शन है। दक्षिणी रेलवे की जलार पेट-मंगलौर लाइन कर जलार पेट से १२१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा, टैक्सी, ताँगा मिलते हैं। गौं रक्षण समाज की ओर से गौशाला की स्थापना की गई है रेलवे जंकशन से दो मील की दूरी पर बाजार है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाऐं हैं। स्टेशन के पास भी एक धर्मशाला है। द्वारका होटल है जिसका फो न० ३०५१ है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर हैं जिनमें शिव मन्दिर सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—मूंगफली, तेल, खल, चावल, आम और सुपारी उत्पादित की जाती हैं।

बैंक——नगर में स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, साऊथ इन्डिया बैंक, इन्डियन बैंक इन्डियन ओवरसीज बैंक, कनारा बैंकिंग, कार्पोरेशन बैंक हैं।

जिला साउथ अर्काट

(चिदम्बरम, महाबलीपुरम, काँचीपुरम)

चिदम्बरम—जिला साउथ अर्काट में है। यह भगवान शिव की लील स्थली है। दक्षिण रेलवे की मद्रास त्रिचरापल्ली लाईन पर मद्रास से २४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक छोटा सा कस्बा है। परन्तु मन्दिरों की दृष्टि से यहा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं। पल्लव, चोल, पडया और नायक वंश के राजाओं ने यहां पर मन्दिरों का निर्माण कराया : अनेकों सन्त कवि उत्पन्न हुये।

विश्राम स्थल—वर्ष भर अनेकों यात्री यहां पर आते रहते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं। एक धर्मशाला स्टेशन के पास है।

दर्शनीय स्थल—नटराज का मन्दिर विशाल और प्रसिद्ध है। यह ३२ एकड़ भूमि में बना हुआ है। मन्दिर में नृत्य की १०८ मुद्राओं का चित्रण किया गया है। मन्दिर में एक स्तम्भों की बनी राज सभा है। देव सभा तथा चित सभा है। कनक सभा में नटराज की भव्य और प्रसिद्ध मूर्ति है एक नृत्य सभा है जिसकी कला दर्शनीय है। गोविन्द राज मंदिर वैष्णवों का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसमें विष्णु भगवान की मूर्ति है। सुब्रह्मण्यम मंदिर, कोंल मंदिर तथा इन्द्र मौलीश्वर मंदिर है रेलवे स्टेशन के दक्षिण में अन्न मलाई विश्व विद्यालय है जो ५०० एकड़ भूमि में बना है। यह दक्षिण प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र है।

बैंक—स्टेट बैंक तथा सेन्ट्रल बैंक है।

महाबलीपुरम—यह नगर मद्रास के दक्षिण में बंगाल खाड़ी का एक बन्दरगाह है। सातवीं शताब्दी में यह पल्लव राजवंश के राजा द्वारा बसाया गया। दक्षिण रेलवे की मद्रास त्रिचुनापल्ली लाईन पर स्थित है। यह मद्रास से ८४ कि० मी० और चिंगलपुर से २९ कि० मी की दूरी पर है यह नगर सात मन्दिरों का नगर कहलाया जाता है।

महावली पुरम के मन्दिरों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम श्रेणी के मन्दिर 'रथ' के नाम से प्रसिद्ध है। ये पत्थर की सख्त चट्टानों को काट कर बनाये गये हैं। इनकी संख्या पाँच हैं। इनके नाम महाभारत कालीन पाँचों पाण्डवों के नाम पर हैं। इनका शिल्प अत्युत्तम है। दूसरी श्रेणी के मन्दिर गुफाओं के रूप में हैं पहाड़ी को काट कर मन्दिर बनाये गये हैं। एक गुफा में भगवती दुर्गा, सिंह पर सवार हैं और महिषासुर का वध कर रही है एक अन्य गुफाओं के नाम कृष्ण मण्डप तथा बरांह मण्डप हैं। इनमें उपरोक्त दोनों अवतारों का चित्रण है। यह एक गुफा में भगवान शेष शायी विष्णु का चित्र उत्कीर्ण है तिसरी श्रेणी में समुद्र के तट पर निर्मित मन्दिर है। कहते है कि ये सात मदिन्र थे अब केवल एक रह गया है शैष समुद्र की भेंट हो गये। मूर्ति कला की दृष्टि से यह स्थान महत्वपूर्ण है। बन्दरों के चित्र एक दूसरे बाल ठीक करते हुये हाथियों की पंक्तियां, हिरणों के झुण्डों की शोभा देखते ही बनती हैं। और दूसरी जगह ११ फुट की विष्णु भगवान की मूर्ति है

कांचीपुरम—यह नगर भारत के सात पवित्र नगरों में से है। मद्रास के दक्षिण पश्चिमी में ७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह पल्लव और चौल राजवंशों की बहुत लम्बे समय तक राजधानी रहा। पल्लव राजाओं ने अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया। यहां पर हजारों मन्दिर है। परन्तु १०८ शिव मन्दिर और १८ विष्णु मन्दिर प्रसिद्ध है। यह स्वर्ग नगरी कहलाती थी। कैलाशनाथ मन्दिर एक हजार वर्ष पुराना है। दूसरा मन्दिर बैंकुण्ठ नाथ परूमल मंदिर है। वरदराज स्वामी का मदिर शिव कांची से २ कि० मी० की दूरी पर विष्णु काँची में हैं। यह प्रसिद्ध मंदिर है। इकम्बर नाथ स्वामी मंदिर शिव कांची में हैं। यह बहुत विशाल है। इन दोनों मंदिरों में हजारों यात्री देश के प्रत्येक कोने से आते हैं। ३ कम्बरनाथ स्वामी मंदिर से दो फर्लांग की दूरी पर का माक्षी देवी का मंदिर है। यहाँ पर महा वल्लभाचार्य की बैठक है। एक सरोवर में भगवान देवाधिराज (शैष शास्त्री) मूर्ति पानी में डूबी रहती है और बीस वर्ष में केवल एक बार जल से बाहर निकलती जाती है।

उत्पादित वस्तुयें—यह कुटीर उद्योग के रूप में रेशमी साड़ियां बनाई जाती है। यहां की साड़ियों का एक मार्का है (कांजीबरय साड़ी)

मद्रास से कुछ प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में
(१०० कि० मी०=६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अरकोणम्	६९	अल्वाय	६८७	आदोनी	५०१
इरोड	३९४	एर्नाकुलम	६९८	कणणनोर	७६९
कडपा	२६६	कालीकट	६७९	काटपाड़ी	१३०
कुडूलूर	२०५	कुट्टालम	२९०	कुभकोणम्	३१३
कोट्टियूर	४८५	कोटिकुलम	८४५	कोयम बटोर	४९४
गुंतकल	४४९	गुन्ती	४२१	चिन्दरम्बरम	२४४
चेंगल पट	५६	चित्तेरी	७७	जौंलार पॅटे	२१४
तन्जावर	३५१	ताडपत्री	३७३	ताम्बरम	२७
तिरुवल्लौर	४२	तिरुर	६३८	तिरुवलम	११८
तेल्लिचैरी	७४८	तिण्डिवनम	१२२	तिरूप्पाण्पुलियर	२०२
त्रिचुनापल्ली	४०२	नण्दलूर	२२७	नीडूर	२७७
परमक्कुडि	५७६	पुदुक्कोटै	४५४	पाम्बन	६२४
पोहनुर	५००	बंगारपेट	२८६	बड़मरा	७२६
वाला जाहरोड	१०६	मण्डपम	६४८	मायूरम	८११
मानामदुरै	५५१	मंगलौर	९००	रायचूर	५७०
रामेश्वरम	६६६	रामनाथपुरम	६११	रेणिगुन्टा	१४१
विल्लपुरम	१५९	शोरानूर	५९३	सेलम	३३५

पांडिचेरी

होती है यहाँ वर्षा प्यार,
हर खेत धान का मुस्काता।
यह पंडिचेरी, बन्दरगाह यहाँ,
सागर का किनारा लहराता।

जिला पांडिचेरी

पाँडिचेरी—भारतवर्ष में पांडिचेरी स्वयं एक प्रान्त है जो एक सुन्दर और देखने योग्य शहर के रूप में एस० आर० की विल्लुपुरम-पांडिचेरी लाईन पर विल्लुपुर से ३८ कि० मी० की दूरी पर एक नहर के किनारे पर बसा हुआ है। यहां जाने के लिये हवाई जहाज द्वारा मद्रास तक पहुंच सकते हैं यहाँ से रेल, बसें पांडिचेरी के लिए चलती हैं। टैक्सी व रिक्शा यहाँ की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए सरकारी बंगले हैं जो दी पब्लिक रिलेशन आफिसर, होम इंफोरमेशन एण्ड टूरिज्म डिपार्टमेन्ट गवर्नमेन्ट आफ पांडिचेरी के द्वारा बुक कराये जाते हैं। इनके अतिरिक्त अनेक होटल हैं जिनमें ये मुख्य हैं—ग्राण्ड होटल डी यूरोप, होटल कान्टीनैन्टल बीछ रोड (फोन न० ४०४), होटल लिब्रट्री अपालम रोड (फोन न० ८५८), क्वालिटी रैस्टोरैन्ट एण्ड होटल, वुडलैण्ड लॉज मिशन स्ट्रीट, अमनीवासम महात्मा गांधी रोड, शंकर लॉज अम्बालाथाडयर मेडम स्ट्रीट, अरुणा मेन्शन जवाहरलाल नेहरू स्ट्रीट, विक्टोरिया लॉज जवाहर लाल नेहरू स्ट्रीट, न्यू वुडलैण्ड लॉज भाराथी स्ट्रीट आदि होटल मुख्य हैं। इन होटलों के अतिरिक्त श्री अरविन्दो सोसायटी गैस्ट हाऊस व श्री अरविन्दो आश्रम गैस्ट हाऊस भी यात्रियों के लिये हैं। इनमें विश्राम करने के लिये अरविन्दो आश्रम मन्त्री महोदय से आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है। यहां पर सरकारी बँगले, होटल, गैस्ट हाऊस आदि के अतिरिक्त बहुत से क्लब तथा रैस्टोरैन्ट भी हैं।

दर्शनीय स्थल—पांडिचेरी में नहर की एक दिशा में सरकारी पार्क, राजनिवास, जनरल होस्पीटल, यूको० बैंक, चैम्बर आफ कामर्स तथा अन्य सरकारी कार्यालय देखने योग्य हैं। नहर की दूसरी ओर गांधी मूर्ति, लाइट हाऊस, न्यू पीयर, वार

मैमोरियल, टाऊन हाल, चर्च (गिरजाघर) आदि देखने योग्य स्थल हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर अरविन्दो की समाधि, आउसटैरी झील, फ्रेंच इन्स्टीट्यूट, शौपिंग सैन्टर, जैपमीर, मनारकुला विन्यागर मन्दिर, ईश्वरन मन्दिर, कालाथेश्वरन मन्दिर, त्रिकामेश्वर मन्दिर, बौटनीकल बाग व बीच भ्रमण स्थल, झील में नाव से सैर करने का दृश्य तथा अन्य स्थल दर्शनीय हैं। यहां के अरविन्दों आश्रम को देखने के लिये भारत के कोने-कोने से लोग आते हैं। यहाँ का जवाहरलाल नेहरू स्ट्रीट भारत का सबसे सुन्दर शौपिंग सैण्टर है जो देखने योग्य है।

विशेष—पांडिचेरी भारतवर्ष का सबसे अधिक वर्षा वाला प्रान्त है। यह क्रान्तिकारी कवियों की जन्मभूमि है। यहां पर क्रान्तिकारी योगी श्री अरविन्द जी के जीवन का बहुत सा समय व्यतीत हुआ। यहाँ पर लगभग ७ सिनेमा भवन, ६ क्लब तथा २ ट्रेविल ऐजेन्ट्स एक सी० जे० ट्रेविल्स, ४ कोर्स चैवरोल हैं। यहाँ पर एक टूरिस्ट इन्फोरमेशन ब्यूरो हैं जहां से पांडिचेरी प्रान्त के घूमने के लिये सहायता प्राप्त होती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तेल व व्हिस्की का अधिक उत्पादन होता है। यहाँ पर लकड़ी के सुन्दर-सुन्दर खिलौने, क़ागज व कपड़े आदि के खिलौने भी पर्याप्त मात्रा में बनाये जाते हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक, पांडिचेरी को-आपरेटिव बैंक, कनारा बैंक, इण्डियन बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, इन्डियन ओवरसीज बैंक आदि बैंक हैं।

आन्ध्र प्रदेश

विख्यात सत्य के लिये रहा,
यह सत्याग्रह का प्रमुख केन्द्र.
सिर झुका न जिनका आँधी से,
ऐसे हैं श्री पंडित 'नरेन्द्र'.

जिला अन्नतपुर
(अन्नतपुर, हिन्दु पुर)

अन्नतपुर—यह आन्ध्र प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक जिला है। यह एस० आर० की गुण्टाकल-बंगलौर सिटी लाईन पर गुण्टाकल से ६८ कि० मीं० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों के लिये रिक्शा, ताँगा आदि सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई छोटे-बड़े मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौं आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, कनारा इण्डस्ट्रीयल एण्ड बैंकिंग, सिंडीकेट बक हैं।

हिन्दुपुर—यह नगर आँध्र प्रदेश प्रान्त के अन्नतपुर जिले में स्थित है। जो एस० आर० की गुण्टाकल-बंगलौर सिटी लाईन पर गुण्टाकल से १८१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के विश्राम के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, चना, नमक आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, कनारा इण्डस्ट्रीयल एण्ड बैंकिंग, सिण्डीकेट बैंक, स्टेट आफ मैसूर आदि बैंक हैं।

जिला ईस्ट गोदावरी

(काकीनाडा, राजामुद्री, कपिलेश्वरापुरम)

काकीनाड—यह आंध्र प्रदेश प्रान्त के इस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। यह एम० आर० की समालकोट-काकीनाडा लाईन पर समालकोट से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों को विश्राम करने के लिये शहर में धर्मशाला और होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने योग्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां का मुख्य उत्पादन नारियल है। वैसे तेल नारियल, घी, तेल अण्डी तथा नमक आदि का भी उत्पादन होता है।

विशेष—मण्डी समालकोट ज० से १६ कि० मी० की दूरी पर है। बस द्वारा जाना पड़ता है। ब्रिटिश साम्राज्य के समय सन् १८५९ में यहीं 'चेम्बर आफ कार्मस' की स्थापना की गई थी। अंग्रेज काकीनाडा के नाम से पुकारते थे। क्योंकि यह नारियल के निर्यात का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ से नारियल रेल, समुद्र व सड़कों द्वारा भारत के मुख्य शहरों तथा विदेशों को निर्यात किया जाता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैन्ट्रल, इण्डियन, भारत लक्ष्मी, काकीनाड़ा तथा राधा स्वामी आदि बैंक हैं।

राजामुंद्री—यह आंध्र प्रदेश प्रान्त के ईस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। जो कि एस० आर की वाल्टेयर-मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से २०१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से थोड़ी दूर पर धर्मशाला है। जिसमें ठहरने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर दो मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, उड़द, गुड़, मेथी, हल्दी, नारियल, काजू, अण्डी तथा नीम तेल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सेण्ट्रल, इण्डिया, आँध्र तथा इण्डियन ओवरसीज आदि बैंक हैं।

कपिलेश्वरापुरम—यह आंध्र प्रदेश प्रान्त के ईस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। यहां रेल नहीं जाती, बसों द्वारा जाना पड़ता है। यह गोदावरी नदी के किनारे बसा हुआ गांव है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये सराय है। जहां विश्राम का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां का शिवालय देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तयें—यहाँ पर गेहूं, ज्वार, चना, जौं आदि पैदा होते हैं।

जिला करनूल टाऊन

करनूल—यह आँध्र प्रदेश के जिला करनूल टाऊन में करनूल नाम से स्थित है जो कि सी० आर० की सिकन्द्राबाद-द्रोणाचलम लाईन पर सिकन्द्राबाद से २४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन से १ फर्लांग की दूरी पर होटल व धर्मशालायें हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी गैस्ट हाऊस भी बने हुए हैं। जिनमें यात्रियों के रहने सहने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज व राम-कृष्ण मन्दिर हैं।

उत्पादित स्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, तेल, खल, मिर्च, जीरा, अण्डी, अज-वायन व वार आदि का उत्पादन होता है।

रेलवे स्टेशन से ३ कि० मी० व बस स्टैण्ड से २ कि० मी० मण्डी मूंगफली, तेल, खल, अजवायन के निर्यात के लिये प्रसिद्ध है। उत्तम क्वालटी की अजवायन देश के सभी बड़े-बड़े शहरों को भेजी जाती है।

बैंक—यहां स्टेट, सेन्ट्रल, आंध्र इण्डिया, कनारा आदि बैंक हैं।

जिला काजीपेट

काजीपेट—यह आंध्र प्रदेश प्रान्त में स्वयं एक जिला है। जो कि दक्षिण मध्य की हैदराबाद-काजीपेट लाईन पर हैदराबाद से १४१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां पर यात्रियों के लिए रिक्शा व ताँगा आदि की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन पर धर्मशालायें व होटल हैं जिनमें यात्रियों को पूरी सुविधा मिलती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूँ, ज्वार व बाजरा आदि का उत्पादन है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक है।

जिला कृष्णा

(विजयवाडा, मचिली पट्टम, गुडीवाडा)

विजपवाड़ा—विजयवाडा आन्ध्र प्रदेश प्रान्त के कृष्णा जिले में स्थित है। जो कि सी० आर० की वाल्टेयर-मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से ३५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों को रिक्शा, तांगा व टैक्सी आदि सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला तथा होटल आदि है। जिसमें दुर्गा भवन होटल एलूरू रोड फोन न० ३२०६-७-८, ३२२६-३२०० होटल मनोरमा बन्दर रोड फोन न० ७२२१, नव इण्डिया होटल, गोकुल महल लाँज वैलकम होटल गांधी नगर फोन न० ३२८६ आदि होटल है। जिनमें खाने-पीने तथा रहने-सहने की सब सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देखने योग्य धार्मिक तथा अन्य स्थान है। जिनमें पहाड़ियों का दृश्य, कनक दुर्गा का मन्दिर पर्वत पर, हनुमान मन्दिर, शिव मन्दिर,

सत्यनारायण मन्दिर, गांधी पर्वत, लाल बहादुर शास्त्री स्मारक तथा मंगल पर्वत पर नृसिंह जी का दर्शन आदि मन्दिर देखने योग्य है जो कि सुन्दर बने हुये है। कृष्ण नदी में स्नान करने का बड़ा महत्व है। कृष्ण बाँध भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बाजरा, गेहूं, उड़द, मूंग, तम्बाकू, नारियल आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मण्डी भी है। यहां से सभी स्थानों के लिये गाड़ियाँ जाती हैं। यह प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र है।

बैंक—यहा पर स्टेट,सैण्ट्रल, इण्डियन, कनारा, इन्डस्ट्रियल, बैंकिंग सिन्डीकेट आदि बैंक है।

मचिली पट्टम—मचिली पट्टम प्रान्ता आन्ध्र प्रदेश के कृष्ण जिले में स्थित है जो कि एस० सी० आर० की हुबली-सोलापुर लाईन पर हुबली से ७८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि सवारियां उपलब्ध है। पहले इसका नाम मसुली पट्टम था।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में कई धर्मशालायें व होटल हैं। जिनमें रहने-सहने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर समुद्र के किनारे पर बसा हुआ है जो कि समुन्द्र के किनारे से ८ कि० मी० ।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर धान, चावल, उड़द, मूंगफली तेल, नारियल तथा नमक आदि का उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां स्टेट, आन्ध्र व इण्डियन आदि बैंक है।

गुडीवाड़ा—यहनगर आन्ध्र प्रदेश प्रान्त के कृष्ण जिले में स्थित है। जो कि भीमावरम-गुडीवाड़ा लाईन पर भीमावरम से ६६ कि० मी० की दूरी पर है। नगर में यात्रियों के लिये रिक्शा, ताँगा आदि सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये कई धर्मशालायें है। जिनमें रहने-सहने का उचित प्रबन्ध है।

स्थदर्शनीय स्थल—नगर में दर्शन करने के लिये कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर धान, चावल, मूंगफली, चना काला आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मन्डी भी है।

बैंक—यहाँ स्टेट, सैन्ट्रल, आन्ध्र, इण्यिन ओवर सीज आदि बैक है।

जिला कडपा

कडपा—प्रान्त आन्ध्र प्रदेश में कडपा स्वयं एक जिला है। जो कि एस० आर० की मद्रास-रायचूर लाईन पर मद्रास २६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नगर में यात्रियों के लिये रिक्शा व तांगा आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला ब होटल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, आदि का उत्पादन होता है। शहर में मण्डी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, आन्ध्र, कनारा इण्डस्ट्रीयल सिन्डीकेट, कनारा बैंकिंग कारपोरेशन आदि बैंक हैं।

जिला गन्टूर

(गन्टूर, तेनाली, निडाईओलू)

गुन्टूर—प्रान्त आन्ध्र प्रदेश में गन्टूर स्वयं एक जिला है। जो एस० सी० आर० की हुबली मछिली पट्टम लाईन पर हुबली से ६७५ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहां पर यात्रियों के लिये रिक्शा, ताँगा व टैक्सी आदि सवारियां उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर मन्दिर तथा अन्य स्थान देखने योग्य है। जिनमें हनुमान का मन्दिर व कोण्ड विडु दर्शनीय है। शहर में और भी कई मंदिर बने हुए है जो कि सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर देशी घी, मिर्च लाल, तम्बाकू, चावल मूंगफली ज्वार, गुड़, तथा जूट आदि का उत्पादन होता है। और यहाँ पर मण्डी भी है। यह लाल मिर्च देशी घी व तम्बाकू की देश प्रसिद्ध मण्डीहै। उपरोक्त भारत में ही नहीं बल्कि बाहर देशों को भी यहां से निर्यात किये जाते है। भारतवर्ष वार्षिक मिर्च लाल के उत्पादन १०००० टन में से गन्टूर जिले का १३००० टन अकेला है। यह लाल मिर्च की अच्छी किस्म है। मिर्च यहाँ से U. S. A, G. D. R इटली -कुवैत सीलोन आदि देशों को निर्यात की जाती है।

बैंक—यहाँ स्टेट, सैन्ट्रल, इण्डियन, ओवरसीज, कनारा इण्डस्ट्रीयल एण्ड बैंकिंग सिण्डीकेट, आन्ध्र आदि बैंक है।

तेनाली—तेनाली आन्ध्र प्रदेश प्रान्त के गन्टूर जिले में स्थित है। यह एस० सी० आर० की वाल्टेयर, मद्रास लाईन पर वलटेयर से ३६२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा व तांगा आदि सवारियाँ उपलब्ध है।
यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, मक्का, सफेद, उड़द, मूंगफली मूंगफली तेल, खल, मिर्च लाल गुड़, हल्दी फल तथा नीबू आदि का उत्पादन होता है। यह धान के लिये उत्पादन का मुख्य केन्द्र व निर्यात की मण्डी हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सैण्ट्रल; इण्डिया, आन्ध्र आदि बैंक हैं।

नडाई ओलू—निडाई ओलू आन्ध्र प्रदेश के गन्टूर प्रान्त जिले में स्थित है। जो एस० आर० की वाल्टेयर मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से २२३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां पर रिक्शा व तांगा आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में देखने योग्य कई धार्मिक मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन धान, चावल है। और मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, आन्ध्र तथा इण्डिया आदि हैं।

जिला चित्तूर
(चित्तूर, तिरुपति)

चित्तूर—चित्तूर आन्ध्र प्रदेश प्रान्त में स्वयं जिला है। जो एस० आर० की रेनीगुन्टा विल्लू पुरम लाईन पर रेनीगुन्टा से ८२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये धर्मशालायें आदि बनी हुई है जिनमें श्री कन्या कापर में अपरी देवस्थानम धर्मशाला वकाठण्य अन्तदान धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर धार्मिक व अन्य स्थान देखने योग्य है। जिनमें को-आपरेटिव शुगर मिल, न्यूट्रिन पिप्पर में टंकी पाक्टोरी राम निवास सभा मन्दिर, कीदडरामालय तथा संस्कृत भाषा प्राचारणी सभा आदि हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, गेहूँ आदि का उत्पादन होता है तथा प्रसिद्ध मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सिण्डीकेट, चित्तूर डिस्ट्रिक सैण्ट्रल को-आपरेटिव, चितूर को-आपरेटिव टाऊन आदि बैंक हैं।

तिरुपति—यह आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में एस० आर० की रेनीगुन्टा विल्लूपुरम लाईन पर रेनीगुन्टा से १० कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, ताँगे व टैक्सी की सवारी मिलती हैं। यह एक प्रसिद्ध शहर है। गूडूर से भी तिरूपति तक बसें चलती हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के विश्राम करने के लिये दो धर्मशालायें व वाली जी भवन में उचित प्रबन्ध है धर्मशाला में निःशुल्क कमरे ठहरने के लिये मिलते है सामान की देख-रेख की व्यवस्था हैं सामान ढोने के लिये मजदूर पाये जाते है इसके अतिरिक्त भीम होटल फोन न० ५०१, न्यू भीमालन्च होम फोन न० ३८६, म्यूनिसिपल गैस्ट हाऊस फोन न० ५६७, गैस्ट-हाऊस फोन न० २११, टूरिस्ट रैस्ट हाऊस, इन्सपेक्सन बंगला आदि प्रमुख हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान दर्शनीय है जिनमें मुख्य वैंकटेश्वर स्वामी का मन्दिर, वैंकटेश्वर विश्व विद्यालय श्री गोविन्द राज स्वामी जी का मन्दिर, श्री पदमावती का मन्दिर और पुष्करिणी चन्द्र गिरी महल कपलितीर्थ के दृश्य, घाटी के दृश्य, तिरूमलाई मन्दिर व पहाड़ी तथा भगवान बाला जी का विशाल मन्दिर, आदि है इनके कपिलतीर्थ ३ कि० मी० (शिव मन्दिर व पानी के झरने देखने को मिलते है), कोदनद्राम स्वामी मन्दिर (१ कि० मी०,) पदमावती मंदिर (५ कि. मी.), पापाविनाशनम् (८ कि. मी. पानी के झरने), अक्सागंगा (६ कि. मी० पानी के झरने व पूजा के मन्दिर देखने को मिलते है), पेरुमल्लापल्ली (८० कि

मी०) कालास्थी, (३८ कि० मी०), कैलाशकोना (४३ कि० मी०), नागला पुरम (६५ कि० मी०) आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, ज्वार व बाजरा आदि का अधिक उत्पादन होता है ।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, यूनिवरसीटी केम्पुज आन्ध्र बैंक, तिरूपति को-आपरेटिव टाउन बैंक चित्तूर डिस्ट्रिक को-आपरेटिव सैण्ट्रल बैंक, सिण्डीकेट बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

जिला नेंल्लोर

नेल्लोर—यह प्रान्त आन्ध्र प्रदेश में स्वयं जिला नेल्लोर नाम से स्थित है। जो कि एस० आर० की वाल्टेयर-मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से ६०५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा व टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ ठहरने के लिये अन्नदान समाज धर्मशाला व शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर धार्मिक व अन्य स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें कामाक्षी देवी का मन्दिर (जो सचमुच देवी है), श्री वेनुगोपाल स्वामी का मन्दिर, उदयगिरी श्री शिवालय, अन्नदान समाज, कल्याण निलय, श्री कन्यका परमेश्वरी आलय, धर्मराज देवालय तथा पन्ना नदी है। जो कि बहुत स्थान बने हुए हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, मूंग, उड़द, मूंगफली व काजू का उत्पादन होता है। और मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, इन्डियन बैंक, आन्ध्र, प्रीमियर, नेल्लोर डि० को-आप० सैण्ट्रल बैंक आदि बैंक हैं।

जिला विशाखापट्टनम

(विशाखापट्टनम, विजयनगर)

विशाखापट्टनम—यह प्रान्त आन्ध्र प्रदेश में विशाखापट्टनम स्वयं जिला है। जो कि एसआ० र० की वाल्टेयर-मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से २ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा व टैक्सी की सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं। जिनमें होटल अप्सरा-वाल्टेयर मैन रोड (फोन न० ४२६१), मैरीना होटल बॅच रोड (फोन न० ४३३३), ओरी होटल, पोरना होटल आदि हैं जहां पर रहने सहने व खाने पीने का उचित प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर देखने योग्य धार्मिक व अन्य स्थान हैं जिनमें आर्य समाज मन्दिर तथा शहर में और बहुत से मन्दिर हैं और हवाई अड्डा भी है। भारत का एक मात्र कारखाना (हिन्दुस्तान शिवयार्ड) इस प्रदेश में स्थापित किया गया है।

कारखाने में पहला जल पोत (जल उषा' मार्च १९४८ में बना। श्री वेंकटेश्वर कोंडा यहाँ पर बहुत सुन्दर मन्दिर है। आन्ध्र यूनिवर्सिटी (४ कि० मी०), सिमाचलम मंदिर (१६ कि० मी०), शिवालयम् मन्दिर, सीताराम स्वामी मंदिर, जगन्नाथ स्वामी मंदिर, हनुमान मंदिर, कानका महालक्ष्मी मंदिर, सत्यानारायण स्वामी मंदिर, जैन मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, धान, नमक, मक्का, उड़द, मूंग, मूंगफली, मिर्च, गुड़ आदि का उत्पादन होता है। और यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, आन्ध्र बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, बैंक आफ इण्डिया, सैण्ट्रल बैंक, मार्केन्टियल बैंक, इण्डियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंक हैं।

विजयनगर—यह प्रान्त आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिले में स्थित है। जो कि एस० ई० आर० की हावड़ा-वाल्टेयर लाईन पर हावड़ा से ८१९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा व तांगा आदि सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में देखने के लिये कई मंदिर बने हुये हैं। विजय स्मारक भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मूंगफली, तेल, गुड़, निगर सीड आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, आंध्र बैंक, इण्डिया बैंक हैं।

जिला वारंगल

वारंगल—यह आंध्र प्रदेश में वारंगल स्वयं जिला है जो कि एस० सी० आर० की काजीपेट-विजयवाड़ा लाईन पर काजीपेट से १० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों को रिक्शा, तांगा व टैक्सी की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने के लिये होटल व धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मंदिर तथा शहर में अन्य कई मंदिर है। जो कि सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तेल, मूंगफली, मूंग, अण्डी, लाल मिर्च, चना, रूई, कपास, बिनौला आदि का उत्पादन होता है और मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर पंजाब सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक आफ हैदराबाद, आन्ध्र बैंक, कनारा आदि बैंक हैं।

जिला वेस्ट गोदावरी

(अकीविडु, एलेरू, भीमावरम)

अकीविडु—यह प्रान्त आंध्र प्रदेश के वेस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। जो कि एस० आर० की भीमावरम गुड़ीवाड़ा लाईन पर भीमावरम् से २ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा व तांगा आदि सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यह एक छोटा सा कस्बा है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर धान, चना, चावल आदि का उत्पादन हो । है। और मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर गुड़ीवाड़ा बैंकों से भी काम होता है।

एलेरू—यह प्रान्त आंध्र वेस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। जो कि एस० आर० की वाल्टेयर-मद्रास लाईन पर वाल्टेयर से २९१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

उत्पादि । वस्तुयें—यहाँ ५र धान, चावल, मूंगफली आदि का उत्पादन होता है। और मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इण्डियन बैंक, आन्ध्र बैंक आदि बैंक हैं।

भीमावरम—यह प्रान्त आन्ध्र प्रदेश के वेस्ट गोदावरी जिले में स्थित है। जो कि एस० आर० की निडाडाम्रोलू-नरासापुर लाईन पर निडाडाम्रोलू से ४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि सवारियां उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, धान आदि का उत्पादन होता है। और मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, आन्ध्र बैंक, इण्डियन बैंक हैं।

जिला मेदक

सिद्धीपेट—यह प्रान्त आन्ध्र प्रदेश के मेदक जिले में है जो कि विकाराबाद रेलवे स्टेशन से १८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा व तांगे की सवारी उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये घासीराम की धर्मशाला तथा गीता भवन है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ मन्दिर व अन्य स्थान देखने योग्य हैं। जिनमें श्री सीता राम देवक मन्दिर, रामेश्वरालय मन्दिर, पुल्लर क्षेत्र, कोमर वल्ली मेला आदि स्थान हैं। यहां पर रेल नहीं जाती है। यह एक छोटा सा कस्बा है।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि बैंक हैं।

जिला हैदराबाद

(हैदराबाद (सिकन्द्राबाद))

हैदराबाद—यह आंध्र प्रदेश प्रान्त का प्रसिद्ध जिला है। यह एस० आर०

की वाडी-काजीपेट लाईन पर वाडी से १८५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये यात्रियों को रिक्शा, तांगा, टैक्सी तथा सिटी बस मिलती हैं। यह नगर बहुत ही सुन्दर है।

विश्राम स्थल—नगर में ठहरने के लिये धर्मशालायें व होटल हैं जिनमें:— पीस मैमोरिया सराय, नमरवल्ली हैदराबाद, जुबली सराय, काची गुडा, राम प्रताप धर्मशाला, सज्जन लाल सराय, ग्रोरो सीटे सिकन्द्राबाद, ग्रेन बाजार धर्मशाला रेलवे रोड आदि धर्मशालायें हैं। होटल ताजमहल सरोजनी देवी रोड ७०१०५-३५५९१, पारसी होटल सरदार पटेल रोड ७२१०६, न्यू मैसूर कैफे स्टेशन रोड ४२५४१, वृन्दावन होटल, स्टेशन रोड ४४५८१, रायल होटल ३५३३३-३५३३४, रिट्ज होटल हिल फोर्ट पैलेस, ३३५७१ आदि होटल हैं जिनमें रहने-सहने व खाने-पीने की सब सुविधायें प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर धार्मिक, ऐतिहासिक एवं अन्य स्थान देखने योग्य हैं जैसे:—अजायब घर, चिड़िया घर, संग्रहालय, सैन सागर हुसैन, निजाम सागर, गाँधी पुतला, लक्ष्मी नारायण मन्दिर ५ कि० मी० दूर, चार मीनार, मक्का मस्जिद भस्का, गोल कुत्ब किला, कुतुब शाही मीनार, शालारगंज म्यूजियम, उस्मानिया विश्वविद्यालय, नौबत पहाड़, फैलेक नुमा महल, रेमण्डस मिनार, ओस्मान सागर, आर्य समाज मन्दिर, मीरआलम तालाब, नागार्जन सागर, राम मन्दिर, हनुमान मन्दिर, महाकाली मन्दिर, श्री हुजुर साहिब गुरुद्वारा; भारत की सबसे बड़ी अंगूर की खेती, गुरुकुल अन्नत गिरी, मैका मस्जिद, ६ मील पश्चिम में गोल कुण्डा का पुराना किला, आंध्र प्रदेश कृषि विद्यालय स्थापित १९६४ कालिज ६, रविन्द्र नाट्यशाला, जवहर बाल भवन, विधान सभा, आर्ट कालिज आदि देखने योग्य धार्मिक, ऐतिहासिक व अन्य स्थान हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और यहाँ पर प्रादेशिक अनुसधानशाला तथा राष्ट्रीय भू भौतिकी अनुसंधान संस्था हैदराबाद आदि अनुसंधान शालायें हैं। निजाम के समय में आर्यसमाज ने सत्याग्रह किया।


सालारजंग म्यूजियम, हैदराबाद

हैदराबाद से २९ कि० मी० दूर रामचन्द्र पुरम स्थित इस कारखाने के दो भाग हैं। एक में बिजली के भारी उपसकर और दूसरे में स्वीच गेयर बनाये जाते हैं। इसकी स्थापना १९६५ में हुई।

हैदराबाद से ११ कि० मी० दूर कुकरपल्ली में सल्फा और विटामिन बनाने का कारखाना। सिन्थेटिक ड्रग्स प्रोजेक्ट अपने ढंग का एशिया का सबसे बड़ा कारखाना कहा जाता है।



जलूस आर्य सम्मेलन, हैदराबाद

उत्पादित वस्तु—यहाँ पर चावल, उड़द, धनिया, ज्वार तिलहन, खल, तेल, अजवायन, सौंफ, तम्बाकू आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, पंजाब नेशनल, हैदराबाद स्टेट, कनारा, बड़ौदा, इण्डिया, कनारा इण्डस्ट्रीयल एण्ड बैंकिंग, सिण्डीकेट, यूनियन, यूनाईटेड कामशियल, इण्डियन ओवरसीज, सरस्वती आंध्र आदि बैंक हैं।

सिंहाचलम—यहाँ पुरी स्टेशन से साक्षी गोपाल होते हुए रेल द्वारा पहुंचते हैं। बस के द्वारा भी जा सकते हैं। सिंहाचलम का मन्दिर एक पहाड़ी पर बना हुआ है। मन्दिर तक जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर से भगवान वाराह नृसिंह और लक्ष्मी जी की मूर्तियां हैं। नृसिंह जी की मूर्ति पूरे वर्ष चन्दन से ढकी रहती है बैशाख के महीने में चन्दन हटाया जाता है तभी भगवान के दर्शन होते हैं। कहा जाता है कि राजा हिरण्य कश्यप ने इसी पर्वत से अपने पुत्र भक्त प्रहलाद को गिराया था और भगवान् विष्णु ने उसकी रक्षा की थी। यहां के प्राकृतिक दृश्य एवं जलप्रपात बड़े ही मनोरम हैं।

जिला ईस्ट गोदावपी

(राजमहेन्द्री)

राजमहेन्द्री—यह जिला ईस्ट गोदावरी का एक नगर है। यह दक्षिण-मध्य रेलवे की गुडूर-वाल्टेयर लाईन पर गुडूर से ४४८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सिंहाचलम से वाल्टेश्वर होते हुए रेल से पहुंच सकते हैं। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी मिलती हैं। यह नगर गोदावरी के तट पर बसा हुआ है। यहां मंडी है। यह ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां कोटि लिंगेश्वर तथा मार्थन्डेश्वर महादेव के प्रसिद्ध मन्दिर हैं। शिव मन्दिर, विष्णु गोपाल मन्दिर, पुष्कर घाट पर जर्नादन स्वामी का मन्दिर, नन्दीश्वर महादेव मन्दिर, दुर्गा मन्दिर और विष्णु मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां की चन्दन की लकड़ी का सामान तथा कालीन प्रसिद्ध हैं। चावल, उड़द, गुड़, हल्दी, नारियल, काजू, अण्डी का तेल तथा नीम का तेल उत्पन्न किया जाता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सेण्ट्रल बैंक, आन्ध्र बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक तथा कनारा बैंक की शाखायें हैं।

हैदराबाद से प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

(१०० कि० मी० = ६२ मील के)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
औरंगाबाद	५२७	काजीपेट	१४१	काचेगुड़ा	१८
कर्नूल टाऊन	२५४	कोरेगाँव	१०३५	कवठेमहांकाल	६५८
कुर्डूवाड़ी	११०२	गुंतकल	३७६	गदग	५७५
गुंटूर	६५६	जालना	४६४	दोन कोण्डा	५३५
द्रोणाचलम	३०७	धारवाड़	६५४	नन्दयाल	३८३
नरसरावु पेट	६१०	निजामाबाद	१७९	परभनी	३४९
पूर्णा ज०	३२०	पूना	११७०	बाडी	१८५
वेल्लारी कैंट	४२५	बेलगांव	७७५	बेलकी	९४०
भालनावर	६६०	मुदखेड़	२६७	मनमाड	६४०
महबूब नगर	१२४	मिरज	९१२	लोंडा	७२४
लातूर	१२३९	विकाराबाद	७३	हास्पेट	४८९
हुबली	६३३	सिकन्द्राबाद	१०		

———

उड़ीसा

रे बोल उड़ीसा जय जगन्नाथ,
जय भुवनेश्वर मन्दिर महान.
जय जगद गुरु शंकराचार्य,
हिन्दु जाति के प्राण दान.

जिला कालाहांडी

कालाहांडी--उड़ीसा प्रान्त में काला हांडी स्वयं एक जिला है । यहाँ के लिये रेल नहीं जाती । बसें आती जाती हैं । रिक्शा और तांगा यहां की स्थानीय सवारी हैं ।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल--यहां पर श्री भगवती मन्दिर, लंकेश्वरी माता का प्राचीन मन्दिर जूनागढ़ में, शंकर जी का मन्दिर बोल खण्डी में देखने योग्य है ।

उत्पादित वस्तु--यहां पर गेहूं, चावल, जौ, चना आदि की पैदावर होती है

बैंक--यहाँ पर स्टेट बैंक है ।

जिला कटक

(कटक, जाजपुर, छतयावाटी)

कटक--यह उड़ीसा प्रान्त का एक जिला है । यह एस० ई० आर० की हावड़ा-वाल्टेयर लाईन पर हावड़ा से ४०९ कि० मी० दूर एक बहु बड़ी मण्डी के रूप में स्थित है । यहाँ पर सभी सवारियां मिलती हैं ।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये चौधरी की धर्मशाला बाजार में, एक धर्मशाला बांका बाजार में, मनिक घोष की धर्मशाला बाजार में है ।

दर्शनीय स्थल--यहां पर गौशाला व एक बहुत बड़ा मन्दिर देखने योग्य है । इसके अतिरिक्त उड़ीसा पावर स्टेशन, सोने, चांदी का काम २ कि. मी. दूर बराबत्ती

का किला, नौ मण्डाली विल्डिग जो अकबर के जमाने की बनी हुई है जो अधिक दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें – यहां पर जूट, चना, धान, मूंग, उड़द मूंगफली तिल आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक व इण्डियन ओवरसीज बैंक हैं।

जाजपुर—उडीसा प्रान्त के जिला कठक में जाजपुर (क्योंझर रोड) दक्षिणी पूर्वी रेलवे की हावड़ा वाल्टयर लाईन पर हावड़ा से ३३७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर विरजा मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल धान, जूट, कच्चा लोहा अधिक मात्रा में पैदा होता है।

छतयावटी—यह उड़ीसा प्रान्त के कटक जिले में कटक से २४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां शहर में आने जाने के लिये टैक्सी, रिक्शा, की सवारी उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये सरकारी धर्मशाला बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसमें यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर छतयांवटी मन्दिर व जगन्नाथ पुरी सुन्दर मूर्ति देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, दाल, मूंग आदि का विशेष रूप मे उत्पादन होता है।

जिला गंजाम

(गंजाम, बरहमपुर, रम्भा)

गंजाम – यह उड़ीसा प्रान्त में स्वयं एक प्रसिद्ध जिला है। यह दक्षिण-पूरब रेलवे की हावड़ा-वाल्टेयर लाईन पर भुवनेश्वर से १३५ कि० मी० व हावड़ा से ५७२ कि० मी० की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने का उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई छोटे २ मन्दिर समुद्र का किनारा देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां चावल व नमक विशेष रूप से उत्पन्न होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा उपलब्ध है।

बहरमपुर—उड़ीसा प्रान्त के जिला गंजाम में बरहमपुर एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से ६०३ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित हैं। यहां पर सभी सवारिया मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये शहर में एक धर्मशाला विख्यात है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गौशाला, विश्वविद्यालय व गोपालपुर का समुद्र तट देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर हल्दी, मूंग, खेसाड़ी, उदड़ कुल्थी, धान, रामतिल्ली, अण्डी, लाल पीली मिर्च, मूंगफली, गुड़, धनिया, पटसन आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैं, यूनाइटिड कामसियल बैंक, व सैण्ट्रल बैंक हैं।

रम्भा—उड़ीसा प्रन्त के जिला गजाम में रम्भा द० पू० रेल की हावड़ा वाल्टेयर लाईन पर हावड़ा से ५५५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को टहरने के लिये मन्दिर के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गोपीनाथ जी का मन्दिर व दुर्गा देवी जी का मन्दिर देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त चिलका झील भी देखने योग्य है जो बहुत लम्बी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, धान की अधिक पैदावार होती है।

जिला ढेकानाल

ढेकनाल—यह उड़ीसा प्रान्त में एक प्रसिद्ध जिला है। यहाँ पर सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहा पर यात्रियों को ठहरने के लिये अग्रवाल धर्मशाला व खड़ग प्रसाद वालो की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर जगन्नाथ मन्दिर ही देखने योग्य है।

जिला पुरी

(पुरी, उदयगिरी, कोणार्क, खण्डगिरी, भुवनेश्वर, साक्षी गोपाल)

पुरी—उड़ीसा प्रान्त में पुरी स्वयं एक जिला है। यह एस० ई० आर० की खुर्दारोड-पुरी लाईन पर खुर्दारोड से ४३ कि० मी० की दूरी पर हिन्दुओं के एक तीर्थ स्थान के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियाँ मिलती हैं और यहाँ से आसनसोल, हावड़ा, मद्रास के लिये सीधी रेलें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये रामचन्द्र गोयन काकी धर्मशाला मदिर से ४ फर्लांग पर, टनजी मूलजी की धर्मशाला चलवेदी कोना, सेठ कन्हैयालाल बागला चुर वालों की धर्मशाला मन्दिर से २ कि० मी० दूर, देवी प्रसाद

दूध वालों की धर्मशाला बड़ा रास्ता, बीकानेर वालों की धर्मशाला दलवेरो कोन मे १ फर्लांग पर, तनसुखराम गनपत राय खेमका चुरु वालों की धर्मशाला मन्दिर से १ फर्लांग पर, वरगड़िया धर्मशाला ग्राण्ड रोड पर आदि धर्मशालायें हैं। इसके अलावा साऊथ इस्टर्न होटल (फोन न० ६३), पुरी होटल (फोन न० ११४), सर्किट हाऊस, पी० डब्लू० डी० डाक बंगला आदि होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर जगन्नाथपुरी का मंदिर, गुंडिचा का मंदिर, लोकनाथ मंदिर, दरिया हनुमान, सोनार गोरांग, इन्द्र दीयुना तालाब, गद्दी जगद्गुरू शंकराचार्य, नोलक्षत्र, सरस्वती जी का मन्दिर, नील माधव जी का मन्दिर, लक्ष्मी जी का मन्दिर, पातालेश्वर मन्दिर, एमार मठ, गम्भीरा मठ, जगन्नाथ पुरी गौशाला, कपाल मोचन, सिद्धबकुल, श्वेत केशव मन्दिर, गोवर्धन पीठ, कबीर मठ, हरिदास जी की समाधि, लोटा गोपीनाथ, लोकनाथ, बेड़ी हनुमान, चक्रतीर्थ-चक्रनारायण, भोग मन्दिर, नट मंदिर, कानवत हनुमान, नानक मठ, उड़ीसा आर्ट और क्राफ्ट एम्पोरियम, रघुनन्दन लायब्रेरी समुद्र का किनारा, कारीगरी का काम, स्वर्ग दरबार, आदि दर्शनीय स्थल है।

विशेष—हिन्दुओं के चार तीर्थ धामों में से यह भी एक तीर्थ धाम है। इसमें ३ बाजार हैं, ग्राण्ड रोड, लक्ष्मी बाजार और टैम्पुल रोड। पुरी के मन्दिर में तीन मूर्तियाँ स्थापित हैं बलभद्र जी की, सुभद्रा जी की और श्री जगन्नाथ जी की। यहां एक रोहणी कुण्ड है उसमें स्नान करने का महत्व है। इस स्थल की यात्रा करते समय मनुष्य सभी सांसारिक जालों से मुक्त सा होकर आध्यात्मिक मार्ग पर चलने लगता है। श्री जगन्नाथ धाम उड़ीसा प्रदेश के नीलाचल पर्वत पर एक विशाल मन्दिर के रूप में स्थित है और यहीं श्री जगत गुरू शंकराचार्य जी जी की प्रसिद्ध गद्दी है।

उत्पादित वस्तुए—यहां पर धान, मटर, चनाकाला, गेहूं, आयल, चावल की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाईटेड बैंक, पुरी अरबन को-आपरेटिव बैंक हैं।

कोणार्क—उड़ीसा प्रदेश के पुरी जिले में कोणार्क पुरी से ८३ कि० मी० तथा भुवनेश्वर से ६७ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर भुवनेश्वर से बसें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये डाक बंगले में उचित प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर युद्ध हाथी, युद्ध अश्व, सूर्य मन्दिर, नर्शीमा देव मन्दिर ड्यूस्रोलील मन्दिर, अप्सरा गौशाला आदि के अतिरिक्त यहां से ३ कि० मी० दूर लिंगराज, ४ कि० मी० दूर कपलीश्वर, २ कि० मी० दूर अनन्त सुखदेव, २ कि० मी० दूर केदार गौरी, २ कि० मी० दूर मुक्टेश्वर, ? कि० मी० दूर राजारानी, ३ कि० मी० दूर परसुरामेश्वर, ३ कि० मी० दूर ब्रह्मेश्वर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

विशेष—यहां के मन्दिर में कोई आराध्य मूर्ति नहीं है। मन्दिर बहुत ऊंचा था परन्तु शिखर का भाग टूट गया है। यह मंदिर अपनी कला के लिये विश्व का सर्वश्रेष्ठ मंदिर कहा जाता है। एक सरकारी संग्रहालय भवन भी यहां पर है। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मावलंबियों को भुवनेश्वर व पुरी के मन्दिरों में नहीं जाने दिया जाता है। सूर्य मन्दिर यहां का प्रमुख मन्दिर है जो पुरी से २० कि० मी० की दूरी पर है यह सन् १२३८ में बना। इसमें सूर्य महाराज को सात सजे हुए घोड़ों के रथ में सवार हुए दिखाया है और इसमें १२ पहिये सुशोभित है पहियों की ऊंचाई १० फुट है। इस मन्दिर की लम्बाई ८६५ फुट, चौड़ाई ५४० फुट है और ऊंचाई २०० फुट है। यह मन्दिर मीनाकारी में पूर्ण है।

उदयगिरी—उड़ीसा प्रान्त के ज़िला पुरी में उदयगिरी एवं खण्डगिरी दो पहाड़ियां हैं। यहां पर बसें मिलती हैं। यह नई राजधानी भुवनेश्वर से ६०४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये खण्डगिरी में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां एक गुफा है। अन्य छोटी गुफायें हैं, कोठरियां पहाड़ काट कर बनाई गई हैं, महाराजा खांखेल के समय का २५०० वर्ष पुराना एक शिला लेख है। चढ़ाई पर जय विजय गुफा और रानी का महल मिलते हैं। कई कुण्ड हैं। एक स्थान पर जैन प्रतिमा का चिन्ह बना हुआ है। इसके अतिरिक्त गुफा में सवार-गापुरी का मन्दिर, रानी गुफा, गनेश गुफा, हाथी गुफा आदि दर्शनीय हैं।

खन्डगिरी—उड़ीसा प्रान्त में जिला पुरी में खण्डगिरी एक विशाल गुफा है। भुवनेश्वर से यहां के लिये बसें, टैक्सी आती जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये तीन मुख्य धर्मशालाये हैं।

दर्शनीय स्थल—यह एक छोटा सा गांव है। पहाड़ की सीधी चढ़ाई पर सीढ़ियों के सामने खण्डगिरी गुफा है। अन्दर भी चार और गुफाये हैं। एक गुफा में डेढ़ हाथ की कार्योत्सर्ग प्रतिमा विराजित है। गुफाओं से आगे एक जैन मन्दिर है। दक्षिण दिशा की ओर पारशनाथ का बड़ा जैन मन्दिर है। कई गुफायें और कई मंदिर हैं। ये सब देखने योग्य हैं।

भुवनेश्वर—उड़ीसा प्रान्त के पुरी जिले में भुवनेश्र उड़ीसा की राजधानी है यह एस० ई० आर० की हावड़ा-वाल्टेयर लाइन पर नागपुर से ३३७ कि० मी० दूर, कटक से १८ कि० मी० दूर, हावड़ा से ४३७ कि मी० दूर और पुराने भुवनेश्वर स से • कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ लगभग सभी सवारी मिलती हैं। हिन्दुओं का यह एक तीर्थ स्थान भी माना जाता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये हर गोविन्द राय मथुरा दास डालमिया भिवानी वालों की धर्मशाला बिन्दू सरोवर के पास, रायबहादुर हजारी मल दुग्ध वालों की धर्मशाला बिन्दू सरोवर के पास, हरलाल जी विशेश्वर लाल

गोयल की धर्मशाला विन्दू सरोवर के पास व स्टेशन के पास भी एक धर्मशाला है। इनके अतिरिक्त राजमहल होटल बापू जी बाग, टूरिस्ट भवन, गैस्ट हाऊस, बनारस वाला होटल व नटराज होटल भी हे।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, विधान सभा, पुरी का मन्दिर स्टेशन से ५ कि० मी० दूर, विश्वविद्यालय, तालाब, मुक्तेश्वर मन्दिर, राजरानी मन्दिर, विठ्ठल देवल मन्दिर केदारश्वर मन्दिर, किंग राजा का मन्दिर, वैंटल मन्दिर, रविन्द्र मण्डप ब्रइनेश्वर मन्दिर, परशुरामेश्वर, व अन्य अनेकों मन्दिर, हैं यहाँ से १० कि० मी० दूर गुफायें, चिल्का झील, ६ प्रसिद्ध तीर्थ जिनमें स्नान का महत्व है, बिन्दु सरोवर-यः मुख्य बाजार के पास एक विशाल सरोवर है। सरोवर के बीच में एक मन्दिर है फिर चारों ओर मन्दिर हैं, ब्रह्मकुण्ड-यह बिन्दु सरोवर के लगभग २ फर्लांग की दूरी पर है। कुण्ड में गोमुख ये बराबर जल गिरता रहता है। यहाँ पर ब्रह्मेश्वरका मन्दिर भी है। श्री लिंग राज मंदिर यहां का मुख्य मंदिर है। इसमें चार द्वार हैं। मुक्य को सिंहद्वार कहा जाता है। इस मन्दिर के तीन भागों में तीन मंदिर हैं जिसमें ६५ मंदिर है जिसकी ऊंचाई १२७ फुट हैं लम्बाई ५२ फुट, चौड़ाई ४६५ फुट हैं जिसकी दीवार ७ फुट मोटी भी है यह मंदिर सन् ६७५ में वना था। ये सभी दर्शवीय स्थल हैं। इनको अवश्य देखना चाहिये।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक कार्य करता है।

साक्षीगोपाल—उड़ीसा प्रान्त के जिला पुरी में साक्षी गोपाल एस. ई. आर. की खुर्दारोड पुरी लाईन पर खुर्दारोड से ४५ कि० मी० तथा पुरी से २१ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये पुरी से बसें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर स्टेशन से आधे मील पर एक मंदिर तथा अन्य कई मंदिर देखने योग्य हैं। जगन्नाथ पुरी के दर्शन करने के बाद साक्षी गोपाल मंदिर दर्शन करने चाहिये।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर नारियल सूखे व पानी वाले, नारियल सींक झाड़ू पोलंग, तेल, चावल, धान आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक कार्य करते है।

जिला बालागिर

(बालागिर, कांटाबाजी)

बालागिर—उड़ीसा प्रान्त में बालागिर स्वयं एक जिला है यहाँ के लिये बसें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के कई मंदिर देखने योग्य हैं।

उत्पादितवस्तुएं—यहां पर चावल, धान, बीड़ी पत्ता, लकड़ी जूट, हल्दी महुआ आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

कांटाबाजी—उड़ीसा प्रान्त के जिला बालागिर में काँटावजी एस० ई० आर० की रामपुर-विशाखा पट्टम लाईन पर रायपुर से १७० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ के लिये सभी सवारियां मिलती है।

विश्राम स्थल—यहाँ परपंचायती धर्मशाला कृष्ण मंदिर के पास और बाल किशन धर्मशाला राम मंदिर के पास यात्रियों के ठहरने के लिये हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हरिशंकर तीर्थ, झरने, शिव मंदिर, नरसिंह नाथ का तीर्थं, आर्य समाज मंदिर, कृष्ण मंदिर, राम मंदिर, माता मंदिर, बाबाजी आश्रम देखने योग्य है।

उत्पादित स्तुएं—यहां पर धान, चावल, जूट, सरसों, तम्बाकू, तिल, पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

जिला बालेश्वर

बालेश्वर—उड़ीसा प्रान्त में बालेश्वर स्वयं एक छोटा सा जिला है। यहां के लिये सभी सवारियाँ मिलती हैं। यह रेलवे का बहुत बड़ा जं० है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये मारवाड़ी मन्दिर होटलों में प्रबन्ध हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान मन्दिर व मारवाड़ी मन्दिर देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त ५ कि० मी० दूर गोपी नाथ जी का मन्दिर, बालेश्वर जी का मन्दिर जगन्नाथ जी का मन्दिर, काली मन्दिर आदि हैं

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल की पैदावार अधिक होती है।

बैंक—यहां को-आपरेटिव बैंक, स्टेट बैंक आदि हैं।

जिला बालासोर
(बालासोर, भदरक)

बालासोर—उड़ीसा प्रान्त में बालसोर स्वयं एक जिला है। यह एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से २३२ कि० मी० की दूरी पर एक मंडी के रूप में स्थित है। यहां के लिये सभी सवारियां मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नगर में कई मंदिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, इमली, महुआ, आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

भदरक –उड़ीसा प्रान्त के जिला बालासोर में भदरक एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से २६४ की० मी० दूर एक मंडी के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गोपाल तथा नगर के अन्य कई मंदिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल और धान की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया है।

जिला मायूरगंज
(बारिपदा, रायरंगपुर)

बारिपदा–यह उड़ीसा प्रांत के मयूरगंज जिले में प्रसिद्ध नगर है। यह दक्षिण पूरब रेलवे की रूपसा-बजरीपोसी लाईन पर रूपसा से ५२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये महाराज की धर्मशाला बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसमें हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बहुत से धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य हैं जिनमें महाराजा का महल बहुत सुन्दर है जिसे देखने के लिये बहुत से यात्री आते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल की पैदावार अधिक होती है।

बैंक—यहां यूनाईटेड बैंक, आवरन को-आपरेटिव बैंक आदि हैं।

रायरंगपुर—यह उड़ीसा प्रान्त के मयूरगंज जिले में दक्षिण पूरब रेलवे की ताता नगर-बदाम पहाड़ लाईन पर ताता नगर से ६५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा आदि की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये ठाकुर जी की धर्मशाला व गजानन्द जी की धर्मशाला आदि है जिनमें आस-पास की सभी सुविधायें प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर पहाड़ लोल व गुरमा सिनी पहाड़ देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां चावल की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर जनता को सुविधा व व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिये स्टेट बैंक की शाखा उपलब्ध है।

जिला सुन्दर गढ़

राउरकेला–उड़ीसा प्रान्त के जिला सुन्दर गढ़ में राउरकेला एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर लाईन पर हावड़ा से ४१४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये लक्ष्मी नारायण नामक धर्मशाला डेली मार्किट में, राउरकेला होटल, हिन्दुस्तान होटल, आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर गांधी पार्क जो कि २८ एकड़ में क्षेत्र में फैला हुआ है, वेद व्यास मन्दिर (यहां से १२ कि० मी० दूर है और यह तीन नदियों के संगम पर है), तथा इनके अलावा यहां कोयले की खान, स्टील प्लान्ट मन्दिर धाम, झाल, हीराकुंड धाम आदि स्थल है। यहां पर स्पात का बड़ा कारखाना है जोकि फरवरी १९४९ में स्थापित हुआ था, यह प्रति वर्ष ६ लाख टन माल (स्पात) तैयार करता है। यह एशिया का एक महत्वपूर्ण उद्योग है। यह भारत में जर्मनी के उद्योग सहयोग से बना है।

विशेष—भारत में स्टील की चादरों का उत्पादन होता है। यहां का नगर सैक्टरों में चढ़ीगढ़ की भाँति बना हुआ है।

उत्पादित वस्तुयें—लोहे और खाद का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटिड बैंक, सैन्ट्रल बैंक व दी बैंक आफ इण्डिया आदि बैंक है।

जिला सम्बलपुर
(सम्बलपुर, झाड़सुगड्डा, हीराकुण्ड)

सम्बलपुर—उड़ीसा प्रान्त में सम्बलपुर स्वयं एक जिला है। यह एस० ई० आर० की झाड़सुगड्डा-सम्बलपुर लाईन पर झाड़सुगड्डा से ४९ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां पर सभी सवारियां उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के टहरने के लिये नगर में कई धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर विश्वविद्यालय, गौशाला सम्बलपुर व गौशाला भी दर्शनी हैं।

उत्पादित वस्तुय—यहां पर चावल, धान, बीड़ी पत्ता, लकड़ी, चिरौंजी दाना हल्दी पैदा होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक व पंजाब नेशनल बैंक हैं।

झाड़सुगड्डा—उडीसा प्रान्त के सम्बलपुर जिले में झाड़सुगड्डा एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर लाईन पर एक मण्डी के रूप में हावड़ा से ५१५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां की गौशाला तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, इमली, महुआ, गोंद चिरौंजी आदि पैदा होती है।

हीराकुण्ड—यह उड़ीसा प्रान्त के सम्बलपुर जिले में ईस० ई आर० की झाड़सुगड्डा-टिटिलागढ़ लाईन पर झाड़सुगड्डा से ५५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये, रिक्शा तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये डाक बंगला व रैस्ट हाऊस आदि उचित प्रवन्ध है ।

दर्शनीय स्थल–यहां पर 'हीराकुण्ड डैम' सबसे अच्छा देखने ने योग्य स्थान है ।

भुवनेश्वर से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

(१०० किलोमीटर = ६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
कटक	२८	कोणार्क	६६	खड़गपुर	३२१
खुरदा रोड	१६	गोपालपुर आनेसी	१८४	चिलकालेक	८१
जाजपुर	१००	घोली	८	नारायणगंज	२८८
नौआडा	२६५	पकासा	२४०	पुरी	६२
बालासोर	२०५	ब्रह्मपुर (गं.)	१६६	बालूगांव	६०
बारकल	६७	भद्रक	१४३	भरमपुर	१७२
रम्भा	११४	राजघाट	३४५	रूसा	२२४
विजयानगरम	३८३	बाल्टेयर	४४२	शिशुपालगढ़	१०
हावड़ा	४३७				

बिहार

यह सिक्खों का है तीर्थ धाम,
होता गया में पिण्ड दान.
हर मानव मन का उजला है,
हर सबल अबल का बना प्राण.

जिला गया

(औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, बौध गया, वारिस अलीगंज, रफीगंज)

औरंगाबाद—यह नगर गया जिले में ई० आर० की वख्र्यातपुर राजगीर वाली लाईन पर स्थित है। इसके मण्डी का रेलवे स्टेशन अनुग्रह नारायण रोड है जो कि यहां से लगभग ८ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा, बस आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर भगवान सूर्य देव जी का मन्दिर (५० पोरसा) ऊंचा है। और शहर में अनेकों दर्शनीय स्थल है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, खेसाड़ी, मसूर, आलू आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ स्टेट बैंक, यूनीवर्सल, पंजाब नेशनल बैंक आदि की शाखायें हैं।

गया—यह बिहार प्रान्त में ई० आर० की पटना-गया वाली लाईन पर पटना से ९३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रेलवे ज़ंक्शन भी है। यहाँ रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन पर सेठ शिव प्रसाद झुंझनू वालों की और चांद चौरे के पास भी इन्हीं की धर्मशाला स्थापित है। बौधगया पर महाबोधी सोसाइटी की, चौक में गुलराज रामविलास की, स्टेशन से २ कि० मी० की दूरी पर जैन धर्मशाला, भारत सेवा संघ की धर्मशाला, चाँद चौरे के पास भी भारत सेवा संघ नाम की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर है। यहां नदी के किनारे सुन्दर घाट बने हुए हैं। यहां पुरखों को पिण्ड दान देकर तृप्त किया जाता है। यह हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है यहाँ विशाल जैन व बौद्ध मन्दिर है। यहाँ से ६२ कि० मी० की दूरी पर कलुआ पहाड़ है जिसे जैनी पहाड़ के नाम से पुकारते हैं कहा जाता है कि मिश्री शीतल नामक भगवान ने इस पर्वत पर तपश्चरण किया था। यहाँ कि प्राचीन प्रतिमायें दर्शनीय है परन्तु रास्ता खराब है। यहां दो चीनी की मिले हैं तथा एक हवाई अड्डा है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाईटेड बैंक, बिहार हिन्दू कामशियल बैंक आदि की शाखायें हैं।

जहानाबाद—यह गया जिले ई० आर० की पटना-गया लाईन पर पटना से ४५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है। यहां का स्थानीय यातायात रिक्शा, तांगा आदि के द्वारा होता है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर स्टेशन के पास धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ शहर में बने कई मन्दिर दर्शनीय हैं और आर्य समाज मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, मसूर, चना, अरहर, गुड़ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां की मण्डी भी प्रसिद्ध है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक की शाखायें हैं।

बौधगया—यह गया जिले में ई० आर० की पटना-गया वाली लाईन पर रेलवे स्टेशन से ३ कि० मी० व पटना से १२२ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बिरला धर्मशाला, चाईनेस, तिब्बन, वर्मा व थाई आदि के प्रमुख विश्राम स्थल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का प्राचीन महाबोधी मन्दिर, बौद्धी का पेड़, बेजरासाना एनामसेलोचना स्टपा, रत्नागढ़, मगध, चंकरमना, विश्वविद्यालय (स्थापित १९६२ का), विष्णुपद मन्दिर (गया का मुख्य मन्दिर), सरस्वती मन्दिर, अशोक का बनवाया हुआ एक विशाल बौद्ध मन्दिर, स्तूप, धातपाद गदाधार (इसमें भगवान की चतुर्भुज मूर्ति है, पास ही गया सिर तथा भुण्ड पृष्ठ-स्थल है। आदि गया, सूर्य कुण्ड, उत्तर-मानस, राम-शिला, प्रेम शिला, व ब्रह्मकुण्ड, वैतरणी, भीमगया, भस्मकूट, गोप्रचार, टोराना मन्दिर, ब्रह्म सरोवर, मंगलागौरी, बौद्ध जी की विशाल मूर्ति है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, चना, मसूर, अरहर, आलू, गुड़ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां का कार्य गया के बैंकों द्वारा होता है।

विशेष—यहां से १० कि० मी० दूर गया जी है जहां बौद्ध जी को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

वारिस अलीगंज—यह गया जिले में ई० आर० की क्योल-गया वाली लाईन पर क्योल से ५३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ का स्थानीय यातायात ताँगा व रिक्शा आदि के द्वारा होता है।

विश्राम स्थल—यहां श्री गणेश जी की धर्मशाला, स्टेशन के बराबर में मारवाड़ी धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर ठाकुरवाड़ी में सूर्य मन्दिर, शिव मन्दिर; आसपास देवघर, राजगृह व गया आदि तीर्थ स्थान हैं। यहाँ की मण्डी भी प्रसिद्ध है। गऊशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें--यहाँ आलू, खल, चना, चावल, मूंगफली, सरसों, तिल, उड़द आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक--यहाँ बैंक आफ बिहार की शाखा है। नवादा व गया के बैंकों से कार्य होता है।

रफीगंज—यह नगर गया जिले में ई० आर० की हावड़ा-मुगलसराय वाली लाईन पर हावड़ा से ४६५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधाये उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल--यहां के शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं। व अनाज की मण्डी प्रसिद्ध है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर तेल, चावल, धान, मसूर, खल, गेहूँ, चना, अरहर आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

बैंक—यहाँ पर गया के बैंकों से कार्य होता है।

जिला मोतिहारी

(अरेराज, चनपाटिया, नारायणपुर, नरकटियागंज, बाराचकिया, बेतिया, भैंसा लोटन, मोतीहारी, रक्सौल, रुढ़िया, रामगढ़वा, लोरिया, बगाह सिकता, सगोली)

अरेराज—यह नगर चम्पारन जिले में स्थित है। यह मोती हारी से करीब ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा, टैक्सी आदि की यातायात उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर शिव शंकर की धर्मशाला. मन्दिर के पास घनश्याम की धर्मशाला, अयोध्या प्रसाद की धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर महादेव जी का मन्दिर, ८ कि० मी० दूर अशोक स्तम्भ, बावन नार पोखरा आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तु—यहां पर गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि का उत्पादन होता है।

चनपटिया—यह नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की मुज्जफरपुर नरकटियागंज वाली लाईन पर मुजफ्फरपुर से १४१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है रिक्शा, तांगा आदि की भी यहां सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर श्री रामनरायण शाह गैनियान की धर्मशाला व एक अन्य धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर चार पांच मन्दिर दर्शनीय है। यहां राहना नदी है जहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहां बड़ा मेला लगता है। यहां एक फुलवाड़ी है। जिसमें हर तरह के फूल और पेड़ है जो काफी प्रसिद्ध व दर्शनीय है। यहाँ एक गौ-शाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—बेतियाँ में एक बैंक भी है।

नारायणपुर—यह नगर चम्पारन जिले में एल० ई० आर० की आगरा-कटिहार वाली लाईन परआगरा से ११८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तागाँ आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के शहर में बने मन्दिर दर्शनीय है। यहां तीन नदियों को नावों से पार करने बाद नेपाल जाने के लिये ६० का फेर बचता है।

विश्राम स्थल—गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, आदि का उत्पादन है।

नरकटियागंज—यह नगर चम्पारन जिले में मुज्जफरपुर-नरकटियागंज लाईन पर मुज्जफरपुर से १६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधाये उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर बाजार में अमृत लाल की धर्मशाला, हनुमानदास की धर्मशाला, धरीक्षण राम की धर्मशाला, पुरानी व नई धर्मशाला यात्रियों के ठहरने हेतु बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, आर्य वीर सार्वजनिक पुस्त-कालय यज्ञशाला, यहां से ६ कि० मी० की दूरी पर चाणक्य का बनवाया हुआ चाणकीगढ़ ऐतिहासिक स्मारक है। नरकटियागंज नगर नेपाल भारत सीमा पर है यहाँ चौकी-चैक पोस्ट है। नेपाल अन्सार का अड्डा भी है। यहाँ पर गौशाला है और यहां भ्रमण करने वालों की भीड़ रहती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, सरसों आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ का सारा धन सम्बन्धित कार्य बेतियां के बैंकों से होता है।

बाराचकिया--यह चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की मुज्जफरपुर-नरकटियाँगंज वाली लाईन पर मुज्जफरपुर से ४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल--यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल--यहां पर कई दर्शनीय शिवालय हैं।

उत्पादित वस्तुयें--यहां पर जूट, गुड़, मूंग, तम्बाकू, अण्डी, अलसी, सरसों, महुआ, सौफ, धनिया, अरहर, आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बेतिया--यह नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की मुज्जफरपुर-नरकटियांगंज वाली लाईन पर मुज्जफरपुर के १२३ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा-तांगा आदि की सुविधाये प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल--यात्रियों के ठहरने के हेतु यहाँ पर स्टेशन से १ कि० मी० की दूरी पर मारवाड़ी धर्मशाला लाला बाजार में स्थित है महावीर स्थल में मारवाड़ी धर्मशाला, लाल बाजार में भारत जलपान गृह, पुरानी धर्मशाला एवं हजारी मल की धर्मशाला बनी हुई है।

धर्मशालाओं के साथ २ यहा पर मीना बाजार में शेरे पंजाब होटल व आनन्द होटल हैं।

दर्शनीय स्थल--यहां पर कालो नाग का मन्दिर है और बेतिया गौशाला है। यहां से ४ कि० मी० की दूरी पर सरेयामन है जिसके पानी से कोई रोग नहीं रहता यहां की मण्डी भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें--यहां पर हल्दी, धनियाँ, चना, सौंफ, अलसी, सरसों आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक--यहां पर स्टेंट व सैन्ट्रल बैंक आदि की शाखायें हैं।

भैसा लोटन--यह नगर चम्पारन जिले में पूर्वोत्तर रेलवे की बगाह-भैसालोटन वाली लाईन पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा आदि स्थानीय यातायात की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल--यात्रियों के विश्राम करने हेतु यहां गेस्ट हाऊस बना हुआ है।

दर्शनीय स्थल--यहां का वाल्मीकि मन्दिर, जयशकर का पुराना स्थान, आल्हा ऊदल का नरदेवी का स्थान व बांध दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें--यहां पर चावल, गेहूं, गन्ना, अरहर, मसूर, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है। यहां पर जंगल का ही क्षेत्र है।

मोतीहारी--यह नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की मुजफ्फरपुर-नरकटियागंज लाईन पर मुज्जफरपुर से ८० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां का रेलवे स्टेशन बाजार से करीब २ कि० मी० है। यहां रिक्शा, तांगे आदि की सुविधा भी प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन पर श्री मति शिवव्रत की धर्मशाला, बाजार में मारवाड़ी धर्मशाला तथा शहर में शाहु हीरालाल की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर आर्य अनाथालय मीनाबाजार में पंचमन्दिर, कोट, कचहरी, मोतीहारी गौशाला आदि दर्शनीय स्थल हैं। यहां एक झील के किनारे पर बहुत ही सुन्दर नगर है जिसका कुछ भाग झील के पूरब में व व कुछ भाग झील के पश्चिम में हैं।

उत्पादित वस्तुयें———यहाँ पर अलसी, हल्दी, तिल, सरसों, जूट, धान, चावल, चना, मक्का, चीनी, उड़द, आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैण्ट्रल, विहार आदि की शाखायें है।

रक्सौल—यह नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर-नर कटियागंज वाली लाईन पर समस्तीपुर से १९६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा, तागां, टैक्सी आदि यातायात की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु रामखिलावन महावीर धर्मशाला (२ फर्लांग स्टेशन से दूर), पशुपति दर्शक धर्मशाला, मारवाड़ी होटल, पंजाब होटल आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, हनुमान मन्दिर दर्शनीय हैं। यह भारत नेपाल की सीमा है।

विशेष—यह भारत और नैपाल दोनों देशों का चौक पोस्ट है। यहां हर आदमी की तलाशी लेकर नैपाल में आने जाने देते हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ का मुख्य उत्पादन सरसों, खेसाड़ो, गेहूं, चना, जौ, मसूर, चावल होता है।

बैंक—स्टेट व सैण्ट्रल बैंक की शाखा भी उपस्थित है।

रढ़िया—यह नगर विहार प्रान्त के चम्पारन जिले में स्थित है। यहां पर तांगा आदि की सवारी प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु अरेराज में धनश्याम दास की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर 'अरेराज धाम' में सोमेश्वर महादेव का मन्दिर व अरेराज धाम से ८ कि० मी० दूर दक्षिण में संग्रामपुर जहाँ लवकुश सग्राम हुआ था, अरेराज के पास ही बालमिक स्थान है जहाँ पर कि लवकुश और सीता रहतीं थीं। इसके पश्चिम में ही अशोक-स्तम्भ है।

वस्तु उत्पादन—यहाँ पर गेहूं, जौ, अलसी आदि का मुख्य रुप से उत्पादन होता है।

"रामगढ़वा"—यह नगर चम्पारन जिले में पूर्वोत्तर रेलवे की रक्सौल-संगोली वाली लाइन पर रक्सौल से १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल––यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादक वस्तु––यहाँ पर गेहूं, चना, जौ, अलसी, आदि का मुख्य उत्पादन होता है परिणामस्वरुप छोटी की मन्डी भी है।

"लोरिया"––यह चम्पारन जिले में वगहा-बेतिया वाली लाईन पर स्टेशन से ५कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ रिक्शा तागां आदि की सुविधा प्राप्त है।

दर्शनीय स्थल––यहाँ पर अशोक, लोरियागढ़, नन्दनगढ़, शुगर मिल आदि स्थल दर्शनीय हैं।

वस्तु उत्पादन––यहाँ गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा आदि का उत्पादन होता है।

"वगाह"––यह नगर बिहार प्रान्त के चम्पारन जिले में पूर्वोत्तर-रेलवे की नरकटियागंज-वगाह वाली लाइन पर नरकटियागंज से ४३कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहाँ रिक्शा-तागां आदि की सुविधायें प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु मारवाड़ी धर्मशाला, व वैश्य धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ की वनकटवा में पक्की बावली मूर्ति, ८कि० मी० दूर नौचन्दी (दुर्गा माता का मन्दिर) आर्य समाज मन्दिर आदि स्थल दर्शनीय है।

वस्तु उत्पादन––यहां पर गेहूँ, चना, चावल आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

"सिकता"—यह नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर नरकटियागंज वाली लाईन पर रक्सौल से १८कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा, तांगे, आदि की सुविधायें उपलब्ध है।

विश्रामस्थल––यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन से १ कि० मी० की की दूरी पर धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

वस्तु उत्पादन—यहाँ का मुख्य उत्पादन गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, चना आदि है।

बैंक—यहाँ का समस्त कार्य रक्सौल के बैंकों से होता है।

"संगौली"—यह छोटा सा नगर चम्पारन जिले में एन० ई० आर० की० रक्सौल-संगौली वाली लाईन पर रक्सौल से २५कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहाँ रिक्शा-तागे आदि यातायात की स्थानीय सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतू यहाँ स्कूल में शिवराम की धर्मशाला तथा अन्य मारवाडी धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर पुस्तकालय, गौशाला, आर्य समाज मन्दिर' शुगर मिल आदि दर्शनीय स्थल हैं।

वस्तु उत्पादन—यहाँ पर गन्ना, धान, गेहूँ, मकई, आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की शाखा है ।

जिला जमशेदपुर

(जमशेदपुर, टाटानगर)—यह बिहार प्रान्त का महत्वपूर्ण जिला है और यह एस० ई० आर० कों हावड़ा-नागपुर वाली लाइन पर हावड़ा से २५० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है यहाँ पर टैक्सी रिक्शा-तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त है ।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के लिये के० रोड० विष्टपुर पर महाराष्ट्र मंडल एन० रोड० विष्टुपुर पर चीनहोटल, वैली होटल, मार्डन होटल विस्तुपुर, हिन्दू लाँज, गवंमेन्ट सराय आदि स्थान हैं ।

दर्शनीय स्थल—यह लोहे के कार्य के लिये भारत में नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है । यहाँ पर टाटा आयरन एन्ड स्टील कम्पनी, इन्डियन टयूब कम्पनी, टीन प्लेट कम्पनी, इन्जियरिंग एन्ड लोकोमोटिव कम्पनी, इन्डियन केबिल कम्पनी, इन्डियन एन्ड वायर प्रोडेक्सर, टाटानगर फाउन्ड्री, जमशेदपुर इंजियरिंग एन्ड मशीन मैनीफोम्चरिंग, इन्डियन ह्यूम पाईप कम्पनी, टिस्को रिसर्च एन्ड कन्ट्रोल लेबोट्रीज, नेशनल मैट्रल आर्जीकल लेबोट्रीज दिमना झील १३कि० मी० की दूरी पर, आदित्यपुर ५कि० मी० दूरी पर, जलमा पहाड़ी ५कि० मी० आर्य समाज हवाई अड्डा आदि, दर्शनीय स्थल हैं । यहाँ राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला भी है ।

वस्तु उत्पादन—यहाँ पर गेहूँ ज्वार, जौ, वाजरा चना आदि का मुख्य उत्पादन होता है ।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सैण्ट्रल, पंजाब नेशनल, बैंक आँफ इन्डिया आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं ।

"टाटानगर"—यह नगर एस० ई० आर० की हावड़ा-नागपुर लाइन पर हावड़ा से २५०कि० मी० की दूरी पर स्थित है । यहाँ रिक्शा-तांगा आदि यातायात कीं सुविधायें उपलब्ध है ।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के हेतु गनेशी लाल की ठाकुर वाड़ी जुगसलाई धर्मशाला, सेठ जोखी राम वैजनाथ जी की धर्मशाला, गोल पहाड़ी स्टेशन के पास कलकत्त वालों की धर्मशाला वनी हुई है ।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मोटर बनाने का कारखाना, आर्य समाज मन्दिर, एक जैसे मकान हैं ।

विशेष—यहाँ के रेलवे-स्टेशन का नाम टाटानगर है व मन्डी नाम जुगलसाई है टाटा मर्शरी वैन्ड मोटर बनाने का भारत में सबसे बड़ा कारखाना है इस कारखाने के कारण सारे भारत में मर्शरी भगी फिरती हैं ।जिससे जनता को सुविधा है ।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब, बैंक आफँ इन्डिया, बड़ौदा यूनियन, यूनाईटीड़ कामिश्यल बैंक आदि की शाखायें हैं ।

जिला दरभंगा

(हसनपुर रोड, राज नगर, दरभगा, दलसिंह सराय, मधुबनी, कसेड़ा घाट. लहरिया सराय, समस्तीपुर)

हसनपुर रोड—यह बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की मानसी-सुपौल लाईन पर मानसी से ४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में आने-जाने के लिये रिक्शा व तांगे की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला व होटल वने हुए हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शहर में हनुमान जी का मन्दिर व देवी जी का मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर लाल मिर्च, अण्डी, चीनी, अलसी, मूंग, धनिया की पैदावार होती है।

बैंक—यहां समस्ती पुर के बैंकों से कार्य होता है।

राजनगर—यह बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की दरभंगा-जय नगर लाईन पर दरभंगा से ४७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। शहर में सवारी के लिये रिक्शा, तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में एक धर्मशाला वनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर में कई छोटे-बड़े मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर धान, तिल, चावल तथा गल्ले आदि का अधिक उत्पादन होता है।

बैंक—यहां दरभंगा के बैंको से कार्य होता है।

"दर भंगा"—यह विहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० ई० आर० की समस्तीपुर-नरकटियागंज वाली लाइन समस्तीपुर से ३८कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहां रिक्शा तागां, आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के हेतु यहां पर स्टेशन से ५कि० मी० दूर घंटा घर के पास मारवाड़ी धर्मशाला, महावीर प्रसाद अग्रवाल की धर्मशाला, लाल बाग में मथुरा साहु की धर्मशाला, सब्जी बाजार में पुरानी धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मंदिर, काली कामन्दिर, राजा जनक जी का मन्दिर, पंचायती मंदिर बहुत से तालाब (जैसे वंगासागर डिग्गी व लक्ष्मी सागर है। तथा अन्य कई दर्शनीय स्थल हैं। यहां का संस्कृत विधालय व इससे सम्बन्धित कॉलिज, एक महाराज का निवास-स्थान, दरभंगा गौशाला सोसायटी आदि दर्शनीय हैं।

वस्तु उत्पादन—यहाँ पर अलसी, सरसौं, खली, धान, तिल आदि का व्यापारिक केन्द्र है।

विशेष---यह मखानों की प्रसिद्ध मंडी है। यहाँ ६कि० मी० के क्षेत्र में फैला हुआ है लहरिया में सरकारी अस्पताल हैं। यहाँ शिक्षा केन्द्र भी हैं। यहां पर कभी भूचाल आया था परिणाम स्वरुप जन व धन की हानि बहुत हुई।

"दलसिंह सराय"—यह दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की आगरा कटिहार लाईन पर समस्तीपुर से २२कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त है।

विश्रामस्थल---यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास शान्ति नायक जी की धर्मशाला, व बाजार में हीराशाह जी की धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां से ८कि० मी० की दूरी पर मैथिल कोकिल विद्यापति मन्दिर तथा शकंर भगवान का ऐतिहासिक प्रसिद्ध मदिर है। यहां की गौशाला भी दर्शनीय है।

वस्तु उत्पादन—यहां पर हल्दी, मिर्च लाल, तम्बाकु, अण्डी सरसौं आदि का उत्पादन होता है। यहां पर अनाज की मन्डी है।

बैंक---यहां पर स्टेट, बैंक की शाखा है।

"मधुबनी"—यह दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की दरभंगा जयनगर वाली लाइन पर दरभगा से ३६ कि मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल---यहां पर आर्य समाज मन्दिर, अत्यन्त महीन खादी जोकि अगूंठी में से आर पार हो जाती है यही पर बनती है जोकि सारे भारत में प्रसिद्ध है

वस्तु उत्पादन—यहां पर अलसी, तम्बाकू, मूंग, मखाना, महीन खादी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

रुसेड़ाघाट—यह दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर-मानसी ब्रांच लाईन पर समस्तीपुर से २८ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल---यहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहा नगर में कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें---यहाँ का मुख्य उत्पादन मिर्च, सरसों, लहसुन, अलसी, हल्दी, आलू आदि है। यहाँ पर मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ का कार्य समस्तीपुर के बैंको द्वारा होता है।

लहरिया सराय—यह नगर दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर-नरकटियागंज लाईन पर समस्तीपुर से ३३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में अनेक मन्दिर व गौशाला देखने योग्य हैं। यहां पर अनाज की मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर लालमिर्च, तम्बाकू, चावल, अण्डी, खेसाड़ी, तिल, तुवर, सरसों आदि का उत्पादन होती है।

बैंक—यहाँ पर सैन्ट्रल बैंक की शाखा स्थापित है।

समस्तीपुर—यह नगर दरभंगा जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ११०६ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम के लिये मारवाड़ी धर्मशाला स्टेशन के पास व रामनरायण गयाप्रसाद की धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर, गौशाला, गंदक नदी के किनारे बने मन्दिर व पौराणिकों का प्रसिद्ध 'अहिल्या' नामक स्थान दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जूट, लालमिर्च, तम्बाकू, चना, अण्डी आदि का उत्पादन होता है।

विशेष—यह रेलवे का केन्द्र है यहाँ से चारों ओर को रेलें जाती हैं। यह एक मुख्य व्यापारिक स्थान है। यहां पर प्रत्येक प्रकार की फैक्ट्रियां हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक व सैण्ट्रल बैंक की शाखायें हैं।

जिला धनबाद

(कतरासगढ़ रोड, झारिया, धनबाद)

कतरासगढ़ रोड—यह नगर धनबाद जिले में ई० आर० की धनवाद-चन्द्रपुरा लाईन पर धनबाद से १४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मण्डी है और यहां आर्यसमाज मन्दिर दर्शनीय है।

बैंक—यहाँ बिहार बैंक की शाखा है।

झारिया—यह नगर धनवाद जिले में ई० आर० की धनवाद-पठरडीही वाली लाईन पर धनवाद से ८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा मिलता हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कोयले की खानें, मन्दिर, आर्यसमाज मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर कोयले का उत्पादन होता है व मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ पंजाब नेशनल बैंक, सैण्ट्रल बैंक, बिहार बैंक, झारिया इण्डस्ट्रियल बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक आदि की शाखायें हैं।

धनबाद—यह बिहार प्रान्त का एक प्रमुख जिला है जो कि ई० आर० की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से २५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम करने के लिये यहाँ सेवायें होटल राठौर मैंशन आर्यसमाज आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर केन्द्रीय अनुसंधान संस्था, केन्द्रीय खनिज अनुसंधान केन्द्र हैं जो कि दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कोयले का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। परिणाम स्वरूप कोयले की प्रसिद्ध मन्डी ही है।

बैंक—यहां स्टेट, यूनाईटेड कामर्शियल, सेन्ट्रल, बड़ौदा आदि की शाखायें हैं।

जिला पलामू

(गढ़वा, डाल्टनगंज)

गढ़वा—यह नगर बिहार प्रान्त के पलामू जिले में ई० आर० की गोमोह-डेहरी-ओनसोन लाईन पर गोमोह से ३१७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर स्टेशन से २ कि० मी० की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ की गौशाला व मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुए—यहां पर लाख, कपड़ा, तिल्ली, महुआबीज, चावल, घी, कत्था, बीड़ीपत्ता, लकड़ी, बाँस मकई, मूंगफली, सरसों, रामतिल्ली आदि का उत्पादन होता है व अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ का सारा बैंक सम्बन्धी कार्य डाल्टन गंज के बैंको द्वारा होता है।

डाल्टन गंज—यह नगर पलामू जिले में ई० आर० की गोमोह-डेहरी ओनसोन लाईन पर गोमोह से २८५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को ठहरने हेतु यहां पर स्टेशन से १ कि० मी० की दूरी पर सेठ चुन्नी लाल गनपत लाल राँची वालों की धर्मशाला, रोड पर अन्य धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्यसमाज मन्दिर, श्री राम मन्दिर, श्री महाबीर मन्दिर, श्री दुर्गा मन्दिर, श्री शिव मन्दिर, जैन मन्दिर, शनि मन्दिर, कोमल नदी के

तट पर बने हुए दर्शनीय हैं। बेतला में पलामू फोर्ट, मियांकी में ऋषि फार्म नेशनल पार्क, उत्तरीग्राम में वंशीधर मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें– यहाँ पर वांस, इमारती लकड़ी, महुवा, महुवाबीज, गोंद, लाख आदि का उत्पादन होता है।

विशेष––इस नगर का नाम कर्नल डाल्टन के नाम पर १८६१ में पड़ा।

बैंक––यहां पर स्टेट, पंजाव, विहार बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला पटना

(दानापुर कैण्ट, नालंदा, पटना, बाढ़, बिहार शरीफ, मोकामा, मसौढ़ी, राजगीर, राजगृह, सोनपुर)

दानापुर कैण्ट––यह नगर पटना जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर मुगलसराय से २०३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल––यहाँ से ३ कि० मी० की दूरी पर धर्मशाला व श्री लक्ष्मी नारायण जी की धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल––यहां का आर्य समाज मन्दिर, डी० ए० वी० हाई स्कूल छावनी क्षेत्र में विशाल बना मन्दिर, आर्य अनाथालय आदि स्थल दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें––यहां पर तिलहन, मूंगफली, तेल, अलसी, मसूर, दाल-मसूर, चावल, मक्का, जौ, चना, गेहूँ, गुड़, सरसों आदि का उत्पादन होता है। यहां पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक––यहां पर पंजाव नेशनल बैंक की शाखा है।

नालंदा––यह नगर जिला पटना में पूरब रेलवे की बख्तियारपुर राजगीर वाली लाईन पर राजगीर से १२ कि० मी० व पटना से ९२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल––यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर जैन धर्मशाला (केवल जैनियों के लिये), सनातन धर्मशाला, तिब्बती धर्मशाला तथा विश्राम गृह नालन्दा निरीक्षण आदि हैं।

दर्शनीय स्थल––यहां के पुराने नालन्दा महाविद्यालय के खण्डहर, म्यूजियम, स्तूप, बौद्ध मूर्ति, १६ कि० मी० की दूरी पर विहार शरीफ, ६ कि० मी० की दूरी पर राजगीरी, सूरजपुर वरगोन मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें––यहां पर गेहूं, चना, जौं, अलसी आदि पैदा होती हैं।

पटना (पाटलीपुत्र)––यह विहार का एक प्रसिद्ध जिला व नगर है। यह ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर मुगलसराय से २२१ कि० मी०, कलकत्ता से ५३५ कि० मी० व दिल्ली से ९९० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, सिटीबस, तांगा, टैक्सी आदि की सुविधायें प्राप्त हैं। इस नगर को

१६वीं शताब्दी में शेरशाह ने बनवाया था यह २६ वर्ग कि० मी० के क्षेत्र में बसा हुआ है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां बिरला धर्मशाला, अशोक राज-पथ सब्जी बाग में, गुरु मुखराय सरावगी की धर्मशाला मंगल तालाब पर, ला० अनंत लाल अग्रवाल की चौक में, मारवाड़ी समाज धर्मशाला गुलजार बाग में, किशोरी लाल चौधरी की धर्मशाला तथा जंक्शन के पास जयबाबू की धर्मशाला बनी हुई है।

धर्मशालाओं के अतिरिक्त यहां फ्रेजर रोड पर राजस्थान होटल, मारवाड़ी होटल, श्री प्रकाश होटल, रिस होटल, टूरिस्ट रूम, ग्रांड होटल, नटराज होटल अशोक पथ पर है जिसमें फोन न० २५६६२, २५०२५, २५०२७, २५०२ हैं, गांधी मैदान में पैलेस होटल है जिसके फोन न० २६३६४, २६३६५, २६३६६ हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का म्यूला मन्दिर, हरि मन्दिर, पादरी की हवेली, गाँधी घाट, पत्थर की मस्जिद, शाही मस्जिद, पाटलीपुत्र के खण्डहर, शेरशाह का किला, सदरवत आश्रम, गोल घर, खुदाबक्स, ओरियन्टल लायब्रेरी, गुरु गोविन्द सिंह का जन्म स्थान, हाईकोर्ट, पटना विश्वविद्यालय (स्थापित १६१७) जिसके अन्तर्गत १० कॉलिज आते हैं। आर्य समाज मन्दिर, पटना अजायबघर, दिगम्बर जैन मन्दिर, यहाँ के ६ मन्दिर, यहां सेठ सुदर्शन जी को मोक्ष प्राप्त हुआ था, शुगर मिल शहर के पश्चिम नगर में बाटा शू फैक्ट्री, टेक्सटाईल मिल, बुनाई की मिलें, इन्जिनियरिंग फैक्ट्री, हवाई अड्डा, विधान सभा भवन, श्री कृष्ण गौशाला, सदाम्वाट आश्रम गऊ-शाला आदि दर्शनीय स्थल हैं।

विशेष—यह बिहार की राजधानी है, गुरु गोविन्द सिंह की जन्म भूमि व सिक्खों का तीर्थ स्थल है। ग्रीष्म ऋतु में राजधानी ४ महीने के लिये रांची होती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर आलू, अरहर, दाल, लाल मिर्च, मसूर, सरसों आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक, यूनाईटेड बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, बीकानेर बैंक, बिहार बैंक आदि बैंकों की शाखायें हैं।

बाढ़—यह नगर पटना जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर मुगलसराय से २७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम करने के लिये स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर व अन्य मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर लाल मिर्च, तम्बाकू, सौंफ, मसूर, छोटी चना, अरहर, हल्दी, अरन्डी, दाल, अरहर दाल, मसूर दाल, धनियाँ, आलू आदि का मुख्य उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

बिहार शरीफ—यह नगर पटना जिले में ई० आर० की बख्तियारपुर-राजगीर कुण्ड वाली लाईन पर बख्तियारपुर से ३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के सामने ही धर्मशाला है। यहां से बड़गांव रोड पर ३ कि० मी० की दूरी पर दिगम्बर जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर बिहार शरीफ गौशाला, जैन मन्दिर जिसमें प्रतिमायें बड़ी ही मनोहर हैं। यह बड़ा शहर है और यहां पर कई स्थल दर्शनीय हैं, जिनमें आर्य समाज मन्दिर सुन्दर हैं।

विशेष—यह बिहार प्रान्त का द्वितीय नम्बर का प्रसिद्ध नगर है। यह पालवंश राजाओं की राजधानी रहा है और यह मुसलमानों का धार्मिक केन्द्र है। यह रेशमी, सूती कपड़े बनाने का मुख्य स्थल है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, धान, चावल, आलू, खाण्ड देशी, चीनी, गुड़, मसूर, मक्का, अलसी, मूंगफली आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, बिहार बैंक, सैण्ट्रल बैंक आदि की शाखायें हैं।

मोकामा—यह नगर पटना जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली रेलवे लाईन पर मुगलसराय से ३०१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास भगवानदास बागला की धर्मशाला, बाजार में केड़िया की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर रेल के डिब्बे बनाने का कारखाना, ब्रिटेनिया इन्जिनियरिंग कम्पनी, ८ कि० मी० की दूरी पर पूर्व में 'राजेन्द्र पुल (जो कि उत्तरी व दक्षिणी बिहार को मिलाता है), राजेन्द्र पुल से ३ कि० मी० उत्तर में 'बरौनी थर्मल पावर' इण्डियन आॅयल रिफाइनरी और खाद का कारखाना है। मोकामा कृष्णा गौशाला आदि दर्शनीय स्थान स्थित हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर लाल मिर्च, चना, खेसाड़ी, दाल, छोटी मसूर, अरहर दाल, अण्डी, शकरकंदी आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां पर लाल मिर्च व गल्ले की प्रसिद्ध मण्डी है और यहां तेल का बहुत बड़ा कारखाना है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि की शाखायें हैं।

मसौढ़ी—यह नगर पटना जिले में ई० आर० की पटना-गया वाली लाईन पर पटना से ५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां का तारेगाना रेलवे स्टेशन है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु शहर में व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थल—यहां का विष्णु भगवान का मन्दिर, शिव मन्दिर, फुलवारी तालाब, अस्पताल, आर्य समाज मन्दिर आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मसूर, धान, चावल, रूई, सरसों, आलू, गुड़, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है। यहां पर अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहां के लिये पटना व जहानाबाद में बैंक स्थित हैं।

राजगीर—यह नगर पटना जिले में पूरब रेलवे की बख्तियारपुर-राजगीर वाली लाईन पर बख्तियारपुर से ५४ कि० मी० व पटना से १०२ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहाँ पर रिक्शा, टैक्सी व तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां श्वेताम्बर मन्दिर में भी श्यामवर्णीय मनोहर प्रतिमा दिगम्बर रूप में हैं, यहां से पंचपहाड़ी की वंदना शुरु होती है। विपुलाचल पर्वत पर महावीर भगवान को समवहरण आया था, इस पर्वत पर चार मन्दिर और २ चरण पदुका है, यहां के राजा श्रीणिक ने भगवान से बहुत से प्रश्न कर जीवों को धर्म मार्ग का ज्ञान कराया था। यह क्षेत्र भगवान मुनि सुव्रत नाथ का जन्म स्थान है। यहाँ निर्मल जल से भरे बहुत से कुण्ड हैं। यहां का आर्य समाज मन्दिर राजा गिरी के खण्डहर पीपला की गुफा, स्वर्ण मन्दिर गुफा, सात परनी गुफायें, सोन भंडार गुफायें, चित्रकुट पहाड़ी आजात शत्रु का किला, मनिहार मठ की गुफा, रण भूमि कलैंडा टैंक, विमविसारा जेल, वई भारा का पहाड़, देवदत्त गुफा, जापान का मन्दिर वर्मा का मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां स्टेशन के पास दो धर्मशाला है। यहां दिगम्बर जैन धर्मशाला, श्वेताम्बर जैन धर्मशाला, सिक्ख सनातनी धर्मशाला, वर्मा का मन्दिर व धर्मशाला, जापान का मन्दिर व धर्मशाला, सहकारी धर्मशाला एवं इण्डियन स्टाईल के अन्तर्गत वैनुवल होटल यूथा होटल, व उद्दयान होटल स्थित हैं। यह जैनियों का तीर्थ स्थान है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, चना, जौ आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

राजगृह—यह नगर पटना जिले में पटना से १० कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ पर मन्दिर के पास धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर जैनियों का मन्दिर व गर्म पानी का स्रोत बहुत दर्शनीय हैं।

सोनपुर—यह नगर पटना जिले में ई० आर० की लखनऊ वाली लाईन पर सारन से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हाथियों का बहुत बड़ा मेला लगता है जो कि एक

महीने तक लगता है, यहाँ के अस्पताल, मन्दिर गण्डक पर बना विशाल पुल आदि दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर बाँस का मुख्य उत्पादन होता है।

जिला पूर्णिया

(किशनगज, कटिहार जोगबनी, पूर्णियां, फारबिसगज)

किशनगंज—यह नगर पूर्णिया जिले में एन० एफ० आर० की मनिहारी-घाट-तिनसुविधा वाली लाईन पर मनिहारी घाट से १३४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर स्टेशन से १ फर्लांग पर धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के कई मन्दिर, श्री भूताल गौशाला बहुत ही दर्शनीय माना गया है।

उत्पादित वस्तुएं—यह ""र चना, जूट, धान, तम्बाकू, अदरक, सरसों आदि का मुख्य उत्पादन होता है। यहां अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहां सैन्ट्रल, स्टेट बैंक आदि की शाखा प्राप्त है।

कटिहार—यह नगर पूर्णिया जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार वाली लाईन पर आगरा से १२६७ कि० मी० की दूरी पर मनिहारी घाट मे ४० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां, रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से ४ फर्लांग पर पुरानी धर्मशाला, बड़ा बाजार में नई धर्मशाला स्थित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, श्री कृष्ण गौशाला आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, सुतली आदि का मुख्य उत्पादन होता है

विशेष—यह नेपाल व आसाम के रास्ते में है। नैपाल के साथ यहाँ से व्यापार होता है। यहां रेलवे कालोनी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल बैंक आदि की सुविधायें हैं।

जोगबनी—यह नगर पूर्णिया जिले में एन० एफ० आर० की कटिहार-जोगबनी वाली लाईन पर कटिहार से १०७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा की व्यवस्था है।

विश्राम स्थल—यात्रियों की सुविधा हेतु स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चीनी, धान, चावल, लकड़ी, पहाड़ी आलू, संतरा आदि का मुख्य उत्पादन होता है। यहां पर मण्डी भी है।

बैंक—यहाँ के लिये फारबिसगंज में बैंक हैं।

पूर्णियां—यह बिहार प्रान्त में एक प्रसिद्ध जिला है। यह एन० ई० आर० की कटिहार-विहारी गंज ब्राच लाईन पर कटिहार से २७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधयें उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु शहर व कचहरी बाजार में तथा स्टेशन के पास चौधरायण की धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर, रुई के कारखाने आदि दर्शनीय स्थान हैं।

विशेष—यहां पर जूट का अत्यधिक मात्रा में व्यापार होता है व गुलाब बाग का यहां मेला लगता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, पूर्णियाँ बैंकिंग कार्पोरेशन आदि की शाखा हैं।

फारबिस गंज—यह नगर पूर्णिया जिले में एन० एफ० आर० की कटिहार-जोगवनी वाली लाईन पर कटिहार से ९४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु मारवाड़ी धर्मशाला, जैन धर्मशाला आदि बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, शिव मन्दिर एवं अनेकों मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जूट. धान, सरसों, धनियां, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता ।

विशेष—यह नगर नेपाल की सीमा पर स्थित है, यहां पर गंगा स्नान के बाद बहुत बड़ा मेला लगता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, सैन्ट्रल बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला भागलपुर

(भागलपुर, नौगछिया, नाथ नगर, बाराहाट)

भागलपुर—यह विहार प्रान्त का मुख्य जिला है। यह ई० आर० की क्योल हावड़ा लाईन पर क्यूल से ९९ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है यह रिक्शा, ताँगे आदि की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये हरदेव दास जी की धर्मशाला ठोकामियाँ की धर्मशाला, विवाह धर्मशाला, जैन दिगम्बर धर्मशाला, जैन धर्म श्वेताम्बर धर्मशाला, खिढ़े वाली धर्मशाला, निबोड़ा की धर्मशाला, ब्राह्मण मंडल धर्मशाला, पदुवा धर्मशाला २ फर्लांग पर मारवाड़ी धर्मशाला स्टेशन के पास बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ आर्य समाज मन्दिर, दीप नगर, आर्य समाज मन्दिर, मिरजान हाट, आर्य समाज मन्दिर नाथ नगर, दामपति तालाब मिरजान हाट, आर्य

समाज सुल्तान, बुढ़ानाथ मन्दिर खंजरपुर कुप्पा घाट में श्री मीर कासिम जी द्वारा बनाया हुआ खोह जहाँ श्री स्वामी मेंहिंदास जी महाराज का दर्शनीय संत आश्रम है। भागलपुर नगर से ६५ कि० मी० दूर मंद्राचल पर्वत पर एक जैन मन्दिर है और दो सनातन धर्म के मन्दिर गुफा में दर्शनीय है। भाहैलपुर से १६ कि० मी० उत्तर पूर्व में विक्रम शिला विश्वविद्यालय की खुदाई हुई हैं जोकि दर्शनीय है। यहाँ भागलपुर विश्वविद्यालय (स्थापित १९६०) इसमें कालिज हैं। यहाँ जैनियों का तीर्थ भी दर्शनीय स्थल है। यहां पर रेशम का विशेष उद्योग होता है। यहाँ की महावीर प्रसाद रोड पर गौशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अंडी, सरसों, उड़द, चावल सौंफ, कपड़े आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

विशेष· यहां पर श्री स्वामी दयानन्द जी ने दो बार पदार्पण किया था। यह १६ वीं शताब्दी का मुख्य नगर है। अकबर १५७३-१५७५ में बंगाल पर चढ़ाई करने के लिये यही से गुजरा था, इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। यहाँ से रेल व सड़क व स्टीमर के अच्छे साधन होने के कारण कृषि पदार्थों का विशेषकर गल्ले का बहुत निर्यात होता है। यहाँ मण्डी भी है। यह रेशमी वस्त्र के उद्योग के लिये प्रसिद्ध है।

बैंक—यहाँ पर पंजाब, स्टेट, सैन्ट्रल, इलाहाबाद, हिन्दू कामर्शियल, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक की शाखा स्थापित है।

नौगछिया—यह नगर भागलपुर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर कटिहार से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, ताँगे आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम हेतु मारवाड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर, सत्संग मन्दिर, मरवाड़ी मान्ट सेवा सदन आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ पर मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर उड़द, सरसों, अलसी, मक्का, अरण्डी, मिर्च, जूट आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

नाथ नगर—यह नगर भागलपुर जिले में पूर्वी रेलवे की क्यूल-हावड़ा लाईन पर क्यूल से ९५ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन से १ कि० मी० की दूरी पर दो धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का छोटा सा पहाड़ जिस पर कई मंदिर बने हुए हैं। व स्टेशन से १ कि० मी० दूर प्रसिद्ध मन्दिर है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर गेहूं, जौं, ज्वार, चना आदि की उपज होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

बाराहाट—यह नगर भागलपुर जिले में पूर्वी रेलवे की भागलपुर-मन्दारहिल लाईन पर पुंजवाहा रोड रेलवे स्टेशन से २ कि० मी० तथा भागलपुर से ४० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ यात्रियों को सवारी के लिये रिक्शा और तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्यसमाज मन्दिर, हाई स्कूल आदि दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां र चावल, मक्का, धान, अलसी व गुड़ आदि का उत्पादन होता है।

जिला मुंगेर

(खगड़िया, जमालपुर, जमुई, झाझा, तेघड़ा, बरौनी, बेगू सराय, मुंगेर, लखमीनिया, शेखपुरा)

खगड़िया—यह नगर मुंगेर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से १२२१ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर रिक्शा तांगा आदि वाहन की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के हेतु स्टेशन से २ फर्लांग की दूरी पर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर व अन्य कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादन वस्तुयें—यहां पर मटर, अलसी, राई, अण्डी, मिर्च, धनिया, धान आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहाँ पर मन्डी भी है।

बैंक—यहां पर पंजाब, स्टेट, सैन्ट्रल बैंक आदि की शाखा हैं।

जमालपुर—यह नगर मुंगेर जिले में ई० आर० की क्योल-हावड़ा लाईन पर क्यूल से ४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ स्टेशन से २ फर्लांग पर मारवाड़ी धर्मशाला स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्यसमाज मन्दिर व रेलवे वर्कशाप आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर नमक व तेल का मुख्यरूप से उत्पादन होता है।

बैंक - यहाँ इलाहाबाद, सैन्ट्रल, स्टेट बैंक आदि की शाखायें हैं।

जमुई - यह नगर मुंगेर जिले में ई० आर० की मुगलसराय हावड़ा लाईन पर लक्खीसराय से २९ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पर यात्रियों के सवारी के लिये रिक्शा व तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर जयहिन्द धर्मशाला, महादेव

भगत की धर्मशाला व १० कि० मी० पर नवादा रोड पर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ से १० कि० मी० की दूरी पर पश्चिम में नवादा रोड पर शंकर भगवान का मन्दिर है इसी के पास आर्य समाज मन्दिर बना हुआ है। यहाँ से ८ कि० मी० की दूरी पर लघुवाड़ में जैन मन्दिर, जुमई से १३ कि० मी० पर गिद्धेश्वर पहाड़ है जहाँ जटायू और रावण का युद्ध हुआ था. वहाँ पर शिव का मन्दिर भी है इन सभी के साथ-साथ यहाँ पर कई दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मुख्यरूप से हैण्डलूम कपड़ा, गुड़ आदि का होता है। यहां अनाज की मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

झाझा—यह नगर मुंगेर जिले में पूरब रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से ३६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, तांगे आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये मारवाड़ी धर्मशाला पंचायती धर्मशाला भवन, नदी के किनारे धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर जखराज नामक मन्दिर, शिवजी मन्दिर, हनुमान मन्दिर, ग्राम के बीच में दुर्गाजी का मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन बीड़ी का पत्ता, अण्डी, जूट, आलू, खांर, महुआ व महुवा तेल आदि हैं। इसी कारण यहां बीड़ी व बीड़ी के पत्ते की प्रमुख मण्डी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, पंजाब नैशनल बैंक आदि की शाखायें हैं।

तेघड़ा—यह नगर मुंगेर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-फोर्ट-कटिहार लाईन पर आगरा से ११५२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु कनीराम की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का श्री कनीराम जी का मन्दिर, श्री सत्यनारायण जी का मन्दिर, बरौनी में थर्मल पावर हाऊस, तेल शोधक कारखाना, गंगा पुल, खाद का कारखाना, (निर्मित) आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चना, लाल मिर्च, अण्डी, अरहर आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

बरौनी—यह नगर मुंगेर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-फोर्ट-कटिहार लाईन पर आगरा-फोर्ट से १०८८ कि० मी की दूरी पर स्थित है। यहां से दरभंगा के लिये गाड़ी जाती है। यहां स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर गंगा का पुल दर्शनीय है। परिणामस्वरूप इस नगर का महत्व हो गया है और यह भविष्य में उत्तरी-बिहार का बहुत बड़ा केन्द्र बन जायेगा।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, लाल मिर्च, सिमल रूई, अण्डी, अलसी का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

विशेष—यहां पर तेल शोधक कारखाना है। यह बिहार के उत्तरी भाग में मुख्य स्थान है। इसको सर्वप्रथम १९६१ में शहर के नामों में अंकित किया गया था।

बैंक—यहां पर स्टेट, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक आदि की शाखा हैं।

बेगू सराय—यह नगर मुंगेर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से १७४ किलो मीटर की दूरी पर बसा हुआ है और यहां पर स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ पर मैनासुन्दरी, मारवाड़ी पुरानी धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्यसमाज मन्दिर तथा अन्य कई मंदिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, लाल मिर्च, देशी घी, तम्बाकू, अलसी, सरसों, अण्डी आदि का उत्पादन होता है।

विशेष—यह मुंगेर जिले के उत्तर में उपजाऊ पट्टे में बसा हुआ है यहाँ गल्ले के बहुत से गोदाम हैं। यहां गल्ले का बहुत बड़ा बाजार है और पूर्व-पश्चिम में आमों के बगीचे हैं। यहां पर बाढ़ आती रहती है। यहाँ पर बाढ़ से बचाने के लिये बांध बनाये गये हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक की शाखा है।

मुंगेर—यह बिहार प्रान्त का मुख्य जिला व नगर है। यह ई० आर० की जमालपुर-मुंगेर वाली लाईन पर जमालपुर से १० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा आदि वाहनों की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर नीलम बाजार में जैन धर्मशाला, शिव गया पर बैजू बाबू की धर्मशाला, गोईन की धर्मशाला, छोटी केलावाड़ी की धर्मशाला, मा० दिलीप सिंह की धर्मशाला पुख सराय मंगल बाबू जी की धर्मशाला आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां के बड़े बाजार में आर्य समाज मन्दिर, आर्य अनाथालय चौक में जैन मन्दिर, गुरुद्वारा, सीताकुण्ड का गर्म झरना, चण्डी स्थान कण्टू रणी घाट, ईसाईयों का सी० एम० एस० मिशन और बेपटिस्ट मिशन, किला, श्री कृष्ण सेवा सदन कर्ण चौक, मीरकासिम का किला व सुरंग, दयानन्द कुटी बक छपड़ा घाट, शिव मन्दिर, छोटी केलावाड़ी, खड़गपुर की झील व भीम बांध, कम्पनी गार्डन, पर्यटक सूचना केन्द्र, मुंगेर राज्य रियासत का महल, श्री गौशाला समिति मुंगेर आदि दर्शनीय स्थल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चना, गेहूँ, जौ, ज्वार. बाजरा, अलसी, सरसों, चावल आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

विशेष—यहां मण्डी का गल्ला बाजार बेटरन बाजार के नाम से प्रसिद्ध है। यह रेलवे स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सैन्ट्रल, पंजाब आदि बैंको की शाखायें हैं।

लखमिनिया—यह नगर मुंगेर जिले में पूर्वोत्तर रेलवे की आगरा फोर्ट कटिहार वाली लाईन पर आगरा से ११२० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन पर गोविन्द देव जी के मन्दिर मे स्थान है तथा डाक बगंला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर रानी सती का मन्दिर, श्री गोविन्द देव जी का मन्दिर, बालेश्वर नाथ जी महादेव का मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादति वस्तुयें—यहाँ पर चना, मक्का, मिर्च, गेहूँ, जौ, अरहर, अण्डी, गुड़ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता हैं। यहां मण्डी भी है।

बैंक—यहां की जनता के लिये बेगू-सराय-खगड़िया में बैंक है।

शेखपुरा—यह नगर मुंगेर जिले में पूर्व रेलवे की क्यूल गया लाईन पर क्यूल से २७ किलो मीटर की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर यात्रियों की सुविधा के लिये तांगा, रिक्शा आदि का प्रबन्ध है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बीच बाजार में मारवाड़ी धर्मशाला तथा लाल बाग व स्टेशन रोड पर भी धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, १५०० फुट ऊंचा पहाड़ी पर बना प्राचीन शिव का मन्दिर दर्शनीय है। यहां से २७ किलो मीटर दूर सिकन्दरा ग्राम में एक पुराना जैन मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चना, गेहूं, आलू, तेल-सरसों आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

विशेष—यहां पत्थरों की खान है। पहाड़ो के नीचे ३ किलो मीटर लम्बा बाजार हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

जिला मुजफ्फरपुर

(जनकपुर रोड, बैरागनिया, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, हाजीपुर)

जनकपुर रोड—यह नगर मुजफ्फरपुर जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर नरकटिया गज वाली लाईन पर दरभंगा से ४२ कि० मी० की दूरी पर बसा है। यहां रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के विश्राम के लिये रायबहादुर की धर्मशाला, वलदेव दास जी की धर्मशाला, रामेश्वर प्रसाद की धर्मशाला, मारवाड़ी धर्मशाला वनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का कामेश्वर नाथ जी का मन्दिर व अन्य कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ चावल, अलसी, तिल, सरसों, जूट आदि का उत्पादन अत्यधिक मात्रा में होता है। परिणामस्वरूप मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, पंजाब बैंक की शाखा है।

बैरागनिया—यह नगर मुजफ्फरपुर जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर-नरकटियागंज ब्रांच वाली लाईन पर सीतामढ़ी से २९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहाँ रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु वनवारी लाल की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का गुरूकुल महाविद्यालय, बाबा मनोहर दास जी का मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित बस्तुये—यहां मक्का, अलसी, सरसों, धान, चावल, मसूर, अरहर आदि पदार्थों का मुख्य रूप से उत्पादन होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा भी है।

मुजफ्फरपुर—यह जिला व नगर बिहार प्रान्त में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार वाली लाईन पर आगरा से १०५४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ पर अखाड़ा घाट रोड पर टुनकी सहाय, बलदेव दासजी की धर्मशाला सूती पट्टी, स्टेशन पर श्यामा नन्दन की धर्मशाला पुराने बाजार में लक्ष्मीराम की धर्मशाला, मारवाड़ी धर्मशाला, स्टेशन से २ कि० मी० पर लाल धर्मशाला के नाम से वनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त न्यू बोम्बे लाँजिग एण्ड बोर्डिंग, दीपक होटल आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर के दो भवन, ३५ कि० मी० दूर ऐतिहासिक लिच्छिवियों की राजधानी वैशाली है व अशोक स्तम्भ, प्रोपर टाउन व खासटाउन, कन्धावल गौशाला आदि दर्शनीय हैं। यह एक मंडी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, तिल, अण्डी, तम्बाकु, लाल मिर्च, इमली, महुवा आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, सैन्ट्रल, यूना० कार्मशियल, इलाहाबाद बैंक, आदि की शाखा है।

सीतामढ़ी—यह नगर मुजफ्फरपुर जिले में एन० ई० आर० की समस्तीपुर नर कटियागंज ब्रांच लाईन पर दरभंगा से ६८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर रिक्शा, ताँगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु चतुर्भुज धर्मशाला नई धर्मशाला, खेमका धर्मशाला, श्री लाल की धर्मशाला एवं चार अन्य धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, विश्व प्रसिद्ध जानकी जी का मन्दिर, पुनौरा ग्राम में २ कि. मी. दूर जानकी जी का मन्दिर जिसके बारे में विश्वास किया जाता है कि यही पर सीता जी का जन्म हुआ था और सीता मढी में पालन पोषण हुआ था, यहां से ५० कि० मी० दूर जनकपुर धाम जहां कि राजा जनक ने सीता जी की शादी राम के साथ की थी, एवं यहां से १० कि० मी० की दूरी पर एक सन्त का मठ जो दर्शनीय है। यहां सीता कुण्ड भी अति सुन्दर बने हुए हैं। जो दर्शनीय है। यहां 'आशा स्टोर्स' नाम की एक दुकान है जहां कि प्रत्येक वस्तु मिलती है। यहाँ का कपड़े का मार्केट बहुत सुन्दर हैं और देशी घी भी बहुत मन्दा मिलता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अलसी, धनियां, चावल, तिल, गुड़, चीनी, सरसों आदि का उत्पादन होता है। यह मण्डी भी हैं।

बैंक—यहां पर पंजाब बैंक, स्टेट, सैन्ट्रल बैंक आदि की शाखा हैं।

हाजीपुर—यह नगर मुज्जफरपुर जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार वाली लाईन पर छपरा से ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु तेली धर्मशाला स्टेशन के पास स्थित है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है।

विशेष—यहां से गंधक जक्शन के उत्तर में लगभग ५ कि० मी० पर स्थित प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर केला, सरसों पीली, आलू, आम, लीची, पान आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक की शाखा है।

जिला राँची

(राँची, लोहरदंगा, सिमडेगा, सिल्ली)

राची—यह नगर व जिला बिहार प्राण्त में ई० आर० की गोमाह-डैहरी ओनसोन वाली लाईन पर गोमोह से ६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, ताँगा, टैक्सी आदि वाहनों की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर जोखीराम मूंग राज की धर्मशाला है जोकि उर्दू मदरसा के सामने है अपर बाजार में कन्हैया लाल की धर्मशाला, गौशाला रोड पर रामेश्वर लाल की धर्मशाला, जैन धर्मशाला, ब्राह्मण की धर्मशाला, भीमराव वंशीधर की धर्मशाला, अग्रवाल की धर्मशाला है।

धर्मशालाओं के साथ २ ही यहां पर लाल चौक में आर्य होटल, लाईन टैंक रोड पर आनन्द होटल, मैन रोड पर राँची रैस्ट हाऊस, युवराज होटल, जिसमें निम्न टेलीफोन भी है २४ ०, २४३१, २४३२ रांची कार्ट के पास माऊन्ट होटल, संगम होटल, इण्डियन स्टाईल होटल. मैन रोड पर राज होटल, मारवाड़ी होटल, विनोद आश्रय होटल लालजी विराजी रोड़ पर आदि होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर रांची की झील, मोरव दिया, टैगोर की पहाड़िया, रन्च बांध, जगनाथ मन्दिर, हाथिया वांध, हाथियां फैक्ट्री, वैसिन इन्सटीटयूट, कृषि कालिज और फार्म (८ कि० मी० रामकिशन सैनी टोरियम, महादेवी सैनी टोरियम, इटकी सैनी होरियम, आर्य समाज मन्दिर, हवाई अड्डा, श्रद्धानन्द हिन्दू अनाथालय इण्डियन लैक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, गुरुकुल शान्ति आश्रम मनोहर दंगा, रांची विश्व विद्यालय स्थापित १९६० जिसके अन्तर्गत २०० कालिज हैं। कैन्क मैन्टल होस्पिटल राँची गौशाला आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें – यहां पर मूंग, मंडवा, महुवा, ज्वार चिरौंजी, इमली, की पैदावार होती है। यहां मण्डी भी है।

बैंक—यहां पर स्टेट, यूनाईटीड वेंक आफ इण्डिया, बिहार कोपरेटिव बैंक, इलाहाबाद, पंजाव नेशनल, सेन्ट्रल आदि बैंकों की शाखा हैं।

लोहरदंगा—यह नगर राँची जिले में एस० ई० आर० की पुरुलियां-लोहरदंगा वाली लाईन पर पुरुलिया से १८७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहाँ पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां से २ कि० मी० दूर यात्रियों के लिये धर्मशाला वनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर व मण्डी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चालव, लाही, इमली, आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

सिमडेगा—यह नगर रांची जिले में एस० ई० आर० की पुरुलिया-लोहर-दंगा वाली लाईन पर लोहर डागां से ७८ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहां का रेलवे स्टेशन लोहरदंगा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां के शहर में बने कई मन्दिर व दर्शनीय स्थान प्रसिद्ध माने गये हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन इमली, चिरौजी दाना, महुवा, चावल, आदि का होता है।

बैंक—यहां के कार्य के लिये रांची में बैंक है।

सिल्ली—यह नगर रांची जिले में ई० आर० की रांची पुरुलिया लाइन पर

रांची से ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर ताँगा आदि की सुविधा उपलब्ध है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहां रामकुमार किशोरी लाल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का सत्संग भवन, लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर, इण्डियन एल्मूनियम कम्पनी ५ कि० मी० दूर, जल प्रपात और पर्वत श्रेणियां भी दर्शनीय हैं।

जिला वैशाली

वैशाली—यह नगर व जिला विहार प्रान्त में स्थित है। यहाँ पर रिक्शा ताँगा आदि स्थानीय वाहनों की सुविधा प्राप्त है। यह मुजफ्फरपुर से ३७ कि० मी० की दूरी पर है यहाँ का पास का रेलवे स्टेशन हाजीपुर है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ पर रैस्ट हाऊस, यूथ होस्टिल रेस्ट रोड, टूरिस्ट होटल, रैस्ट हाऊस आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का अशोक स्तम्भ, राजा वैशाली का किला, कमल के फूलों का तालाब, खराऊना पोखर, पुष्क रानी, पावन पोखर मन्दिर, हरिकटोरा मन्दिर, जैन मन्दिर, चौमुखी महादेवा, निरंजी की दरगाह, बुद्ध स्तूप, वैशाली संघ, वैशाल वैशाली म्यूजियम, जैन प्राकृतिक रिसर्च इन्सटीट्यूट आदि स्थान दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर चना, गेहूं, चावल, जौ का उत्पादन होता है।

जिला शाहाबाद

(आरा, डालमिया नगर (देहरी), डेहरी ओन सोन. पीरो, वक्सर, सासाराम)

आरा—यह नगर शाहबाद जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर मुगलसराय से १६३ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रेलवे का जंक्शन है। यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं व सासाराम को लाईटट्रेन आरा से जाती है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु बाबू हर प्रसाद जैन की धर्मशाला मैना सुन्दर भवन, शिवगंज अग्रवाल धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह नगर दर्शनीय स्थलों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर, शंकर जी का मन्दिर, आराय देवी जी का मन्दिर, वुढवा महादेव का मन्दिर, चन्द्राप्रभु जैन मन्दिर, वीर कुंवर सिंह की बनवाई हुई ऐतिहासिक सुरंग है। यह नगर जैन तीर्थ के लिये भारत में प्रसिद्ध है, यहां पर जैन समाज में ४८ मन्दिर हैं, १४ शिखरबन्द जैन मन्दिर और १३ चैतालय हैं जिनमें सोने, चांदी की

प्रतिमा दर्शनीय हैं। यहां जैन महिला आश्रम, बाहुबली भगवान की ११ फुट ऊंची खड़गासन प्रतिमा अत्यन्त सुन्दर हैं। यहां श्री जैन सिद्धान्त भवन, शिव मन्दिर, सनातन धर्म मन्दिर, गुरुद्वारा मशावगढ़, गुरुद्वारा गुरू नानक, दुर्गा माता का दरबार, आरा, गौराक्षणीसरेड आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां चना, धान, चावल, अलसी, मसूर आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बेंक—यहां स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, सैन्ट्रल बैंक, बिहार बैंक आदि की शाखायें हैं।

डालमिया नगर (देहरी)—यह नगर शाहबाद जिले में पूरब रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि यातायात की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के हेतु यहाँ पर डालमियाँ धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर कई फैक्ट्रियाँ, २ शुगर मिल, सीमेंट की २ फैक्ट्री यहां से ३ कि० मी० दूर बनजारी में सीमेन्ट की फैक्ट्री, सोन नदी का पुल कैमीकल फैक्ट्री, कागज बनाने का मिल आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर कागज, कैमिकल, चना, बाजरा, दाल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, यूनिवर्सल आदि बैंक की शाखायें हैं।

डेहरी ओन सोन—यह नगर शाहबाद जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर सासाराम से १७ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां बलदेव रामजी की धर्मशाला स्टेशन के पास, स्टेशन से २ कि० मी० दूर सिनमा के सामने मारवाड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, यूनिवर्सल आदि बैंक की शाखायें हैं।

पीरो—यह नगर शाहाबाद जिले में ई० आर० की आरा-सासाराम वाली लाईन पर आरा से ४२ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है और यहाँ रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर मटर, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, जौं, अलसी आदि दर्शनीय स्थान हैं।

बक्सर—यह नगर शाहाबाद जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली

लाईन पर मुगलसराय से ६५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है और यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर, गौशाला आदि दर्शनीय स्थान हैं। यह व्यापार का मुख्य केन्द्र है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मसूर, सरसों, चावल, चना आदि का मुख्य उत्पादन होता है और यहां देशी खाड व चीनी के कारखाने हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि की शाखा है।

सासाराम—यह नगर शाहाबाद जिले में ई० आर० की आगरा-सासाराम वाली लाईन पर आरा से ९६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहां स्टेशन के पास सेठ केनीराम जानकी दास की धर्मशाला, आलमगंज चौक में आर्य धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नगर से ३ कि० मी० पूर्व में ताराचण्डी का हिन्दुओं का पवित्र धार्मिक मन्दिर है। नगर से २ कि० मी० पूर्व में चन्दनगिरी पर्वत पर अशोक सम्राट के समय का एक विशाल शिला लेख है जो बौद्ध धर्म के उपदेशों से अंकित है। यहां शेरशाह एवं हसन सूरखां का ऐतिहासिक मकबरा है। यहां का आर्य समाज मन्दिर, श्री कृष्ण गौशाला दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन चना, कालाजीरा, कलौंजी, गुड़, मसूर, जौं, चावल आदि हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, यूनियन बैंक आदि की शाखायें हैं।

जिला सिंह भूमि
(चाईबासा, चक्रधरपुर)

"चाई बासा"—यह नगर सिंह भूमि जिले में एस० ई० आर० की राम खिरवे सावन गुआ वाली लाईन पर राजखर सावन से १९ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा तागा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां खेमकरन दास जोखी रामखीखे वाले की धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां का झरना; सिमेन्ट का कारखाना, पहाड़, टाटा, का कार बनाने का कारखाना, शिव मन्दिर, सत्यनारयण मन्दिर, हनुमान मंदिर, गौशाला आदि दर्शनीय स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां मसूर, सरसौं, इमली, महुवा आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, इण्डियन बैंक की शाखा है।

"चक्रधरपुर"—यह नगर सिंह भूम के जिले में एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर लाइन पर हावड़ा से ३१२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा तागां टैक्सी आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल —यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है। यहां का रेलवे स्टेशन व मंडी भी दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अलसी, चना, सरसों, मछुवा, इमली, बीड़ी पत्ता आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट, आदि की शाखा है।

जिला सहरसा

(निर्मली, मधेपुरा, सुपौल, सहरसा, सिंहेश्वर)

निर्मली—यह नगर सहरसा जिले में एन० ई० आर० की दरभंगा निर्मली ब्राच वाली लाइन पर दरभंगा से ७१कि मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा तागां आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहाँपर स्टेशन के पास यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

वस्तु उत्पादन यहाँ पर चावल, मूंग, आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है। यहां पर मन्डी भी है।

बैंक—यहांपर बैंक नहीं हैं।

"मधेपुरा"—यह नगर सहरसा जिले में एन० ई० आर० की सहरसा मुरली गंज वाली लाइन पर सहरसा से २० कि० मी० दूरी पर बसा हुआ है यहाँ पर रिक्शा तागाँ टैक्सी आदि सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां पर शहर में धर्मशालालाएं बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है। यहाँ का रेलवे स्टेशन व मन्डी भी बहुत बड़ी हैं।

वस्तु उत्पादन—यहां पर अलसी, चना, सरसों, मडुवा, इमली, बीड़ी पत्ता आदि का मुख्य उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँपर स्टेट, बैंककी शाखा है।

"सुपौल"—यह नगर सहरसा जिले में एन० ई० आर० की मानसीसुपौल वाली लाइन पर सहरसा से २८ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा तागां टैक्सी आदि की सुविधायें हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये बाबू उदय चंद की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का विशाल शिव मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, (नवरात्रि में मेला

लगता है) दूर-२ तक चारों तरफ अनेक तीर्थ स्थान और दर्शनीय स्थान है। जहाँ ठहरने की भी अच्छी सुविधा है।

उत्पादित वस्तुयें--यहां पर जूट, चना, जौ, गेहूँ मसूर, सरसौं धनिया, घी आदि का उत्पादन होता है।

बैंक--यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

सहरसा-- यह स्वयं एक जिला है एन० ई० आर० की मानसी-सुपील वाली लाइन पर मानसी से ४३कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर रिक्शा ताँगे टैक्सी आदि की सुविधा है।

विश्रामथल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु भिमशेरिया की धर्मशाला स्टेशन से २ फर्लांग पर मारवाड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य धार्मिक मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें---यहाँ पर चना, जूट, मूंग, अलसी, चावल, जौ, मटर, सरसौं, मक्का आदि का उत्पादन मुख्य रुप से होता हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

सिहेश्वर—यह नगर सहरसा जिले में स्थित है। यहां कारेलवे-स्टेशन दौराम मधेपुरा है जो ६कि० मी० दूर है यहां तांगा, रिक्शा की सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल---यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये नगर में व्यवस्था हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां बहुत भव्य एंव विशाल प्राचीन शंकर भगवान का मन्दिर है। शिव रात्रि के दिन यहाँ लाखों आदमी पूजा करने आते हैं।

उत्पादित वस्तु---यहां पर चना जूट, गन्ना आदि का उत्पादन मुख्य रुप से होता है।

जिला सारन

(छपरा, सीवान, सारन,)

छपरा—यह नगर सारन जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार वाली लाइन पर आगरा से ९४१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा तागां टैक्सी आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ पर स्टेशन के पास सुखदेव जी धर्मशाला, साहब गंज में छेदी लाल की धर्मशाला, कटरे में मारवाड़ियों की धर्मशाला, बलदेव दास वंशी लाल की धर्मशाला, है। इसके अतिरिक्त नटराज होटल भगवान बाजार में, आदि होटल व धर्मशालाएं है।

दर्शनीय स्थल—यहां आर्य समाज मन्दिर, गुरूकुल मोहिया, चिरान ऐतिहासिक स्थान, शिविल गंज गौतम ऋषि का स्थान, भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद (भारत-रत्न) का जन्म यहां से ५१कि० मी० पर हुआ था। यह एक

सुप्रसिद्ध व्यापारिक एवं शैक्षणिक केन्द्र भी है। इसके अतिरिक्त बीच के मैदान व गौशाला हैं। व डा० राजेन्द्र प्रसाद जी का मकान भी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर मुख्य रूप से सरसों, लहसन, चना, चीनी आदि का उत्पादन होता है।

विशेष -यह सारन जिले का केन्द्र है। यह ७।। वर्गमील में है यह बाबर के समय में बहुत छोटा गाँव था। व्यापार शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र है। ब्रिटिश व्यापारियों ने शोरा उधोग का मुख्य केन्द्र बरायक्तव से इसने बहुत उन्नति की हैं।

बैंक—यहाँ पर सैन्ट्रल, पंजाब नेशनल, सैण्ट्रल कौपरेटिव बैंक, स्टेट आदि की शाखी हैं।

सीवान—यह नगर सारन जिले में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ८८१ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रेलवे-स्टेशन (जक्शन) भी है। यहां पर रिक्शा-तांगा की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहां पर नये बाजार में मारवाड़ी धर्मशाला, कसेरा टोला में शिव मन्दिर, डी० ए० वी० कालेज के पास ठाकुरवाड़ी धर्मशाला, स्टेशन के सामने श्री गणेश की धर्मशाला, इसके अतिरिक्त सिन्धी होटल मेन रोड पर आदि हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का भावनाथ का मन्दिर, भिवव्रत भाह का मन्दिर, पंच मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, काली मन्दिर, शिव मन्दिर आदि विशेष दर्शनीय हैं इसके अतिरिक्त सीवान से लगभग १८ कि० मी० दक्षिण में बाबा महेन्द्रनाथ का शुभ स्थान है। जहाँ कि वर्ष में दो बार फाल्गुन तथा बैसाख में मेला लगता है जिसमें लाखों लोग एकत्रित होते हैं। यहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर, रेलवे जंक्शन व सड़क हैं एवं व्यापारिक केन्द्र भी है, यहाँ श्री कृष्ण गौशाला भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां जौं, हल्दी, गुड़, चना, अरहर, नमक, अदरक आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां सैन्ट्रल, स्टेट बैंक आदि की शाखायें हैं।

सारन—यह स्वयं एक जिला है यह में एन० ई० आर० की आगरा-कटिहार लाईन पर आगरा से ९३५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा और तांगा मिलते है।

विश्राम स्थल—यात्रियों को विश्राम करने के लिये शहर में स्कूल के पास राम प्रसाद महंगू राम छपरा की धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्यसमाज मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर हल्दी, गुड़, अरहर, चना, नमक, जौं, अदरक, शोरा आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहां स्टेट, सैन्ट्रल, बिहार आदि बैंक हैं।

जिला संथालपरगना

(दुमका, बैद्यनाथ धाम(देवघर), मधुपुर. साहिबगंज)

दुमका—यह नगर संथालपरगना जिले में पूरब रेलवे की रामपुर हाट दुमका लाईन पर मण्डी जामटांडा से ८३ कि० मी० दूर व बैद्यनाथ धाम से ६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रेल नहीं जाती परन्तु स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के मारवाड़ी धर्मशाला, गैस्ट-हाऊस आदि की सुविधा है।

दर्शनीय स्थल—यहां का शिव पहाड़, गौशाला, ठाकुरवाड़ी (बिहार) ठाकुर वाड़ी (मारवाड़ी) स्थित है। यह साहबगंज की राजधानी व मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तयें—यहाँ पर चावल, ज्वार, महुवा आदि की उपज होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक की शाखा है।

बैद्यनाथ धाम (देवघर)—यह नगर संथाल परगना में हावड़ा-पटना लाईन पर हावड़ा से ३३० कि० मी की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों को सवारी के लिये ताँगा आदि मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये हरि किशन दास की धर्मशाला, स्टेशन के पास हजारी मल जगन्नाथ प्रसाद की धर्मशाला, बड़े बाजार में रामचन्द्र गोयेन की धर्मशाला, मन्दिर के पास भूखीराम लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला, चौक में शंकर धर्मशाला, तारा चन्द्र रामनाथ ज्ञानगुजरी की धर्मशाला आदि बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां ५१ शक्तिपीठ में से १ पीठ है। सती की देह से यहाँ उनका हृदय गिरा था, वैद्यनाथ मन्दिर, दवाईयों का कारखाना, गौरी मन्दिर, कीर्तिकेप मन्दिर जिसमें मदनमोहन व कीर्तिकेप की मूर्तियां हैं, गणपथ मन्दिर, ब्रह्मा जी का मन्दिर, सन्धा देवी का मन्दिर, काल भैरव मन्दिर, मन्सादेवी का मन्दिर, सरस्वती मन्दिर, सूर्य मदिर, बगलादेवी का मंदिर, श्री राम मंदिर, गंगा मदिर, हरिगौरी मन्दिर, कालका मन्दिर, अन्नपूर्णा मंदिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, नीलकंठ महादेव, शिव गंगा सरोवर आदि हैं। यहाँ पर तपोवन है–यह वैद्यनाथ से ६ कि० मी० दूर है यहाँ पर शिव मन्दिर है। यहाँ पर शूलकुण्ड नाम का एक कुण्ड है इसे महर्षि बालिम-की कथपूर्ण कहते हैं। यहाँ पर त्रिकूट पर्वत है (यह वैद्यनाथ से १६ कि० मी० दूर पर चिक्रटेश्वर शिव मन्दिर है।) यहीं से म्यूराक्षी नदी निकलती है। यहीं पर दौल मंच, वेजू मन्दिर, मन्दन पर्वत है। यहां का गुरुकुल महाविद्यालय, ज्योतिर्लिंग का मन्दिर (विष्णु भगवान द्वारा स्थापित व रावण द्वारा पूजित ८ लाख वर्ष पुराना और इसकी अर्चना शंकराचार्य ने की थी। शिव मन्दिर (७२ फिट ऊँचा ठोस पत्थर का) शिव गंगा तालाब, अखिल भारतीय विश्वविद्यालय 'हिन्दी विद्यापीठ' रवण

तालाब (जहां रावण ने पेशाब किया था), रामकिशन का भव्य मन्दिर एवं अनेकों ऐतिहासिक मन्दिर दर्शनीय हैं। यहाँ से ४० कि० मी० दूर वासुकी नाथ धाम है। यह हिन्दुओं का उत्तम धार्मिक स्थान माना गया है यहां अनेक बड़ी धर्मशालाएं हैं कहा जाता है यहां मनुष्य की इच्छा पूर्ण होती है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चना, चावल, धान, जौं, अरहर, महुवा, तेल, सरसों आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक यहाँ पर स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक आदि हैं।

मधुपुर—यह नगर संथाल परगना जिले में ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा वाली लाईन पर मुगलसराय से ४६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये यहाँ स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं। यहां अनाज की मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर धान, चावल, गुड़ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर इलाहाबाद बैंक की शाखा है।

साहिबगंज—यह नगर संथाल परगना जिले में ई० आर० की क्योल-हावड़ा वाली लाईन पर क्योल से १७३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां सुन्दरमल सीता प्रसाद की धर्मशाला (स्टेशन के पास), बाजार में मारवाड़ी महेश्वरी-खण्डेलवाल की धर्मशाला, पहाड़ की तरफ फौजीलाल रामलाल की धर्मशाला, पुरानी धर्मशाला स्थापित हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां नगर में आर्य समाज मन्दिर, श्री देवीनाथ गौशाला आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां का मुख्य उत्पादन सन, तिलहन, तेल, जूट, आदि का होता है।

विशेष—इस नगर के उत्तर में गंगा नदी बहती है, दक्षिण में ६० कि० मी० तक पहाड़ हैं।

बैंक—यहां स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक आदि की शाखाएं है।

जिला हजारीबाग

(गिरिडीह, झूमरी तलैया, बैरमो, रामगढ़कैन्ट, शिखरजी, हजारीबाग)

गिरिडीह—यह नगर हजारीबाग जिले में ई० आर० की मधुपुर-गिरिडीह लाईन पर मधुपुर से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा, तांगा आ वाहदिनों की सुविधा है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहाँ पर स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर दर्शनीय है। यहां मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर अबरक, बहेड़ा, इमली, जंगली माल आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाईटेड, यूनाईटेड व कामर्शियल बैंक की शाखाएं है।

झूमरीतलैया—यह नगर हजारीबाग जिले में ई. आर. की हावड़ा-मुगल राय वाली लाईन पर हजारीबाग रोड पर रेलवे स्टेशन से ६७ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ का कोडरमा रेलवे स्टेशन है। यहां के लिये कोडरमा से बस आती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के विश्राम हेतु यहां पर शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां बीड़ी का काम, तालाब, पहाड़ी, आर्य समाज मन्दिर व अन्य मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर आलू, राई, चावल, धान, मटर आदि का उत्पादन होता है। यहां अबरक का व्यापार अधिक मात्रा में होता है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, यूनाईटेड बैंक की शाखा है।

बेरमो—यह नगर हजारीबाग जिले में ई० आर० की गोमोह डेहरी ओनसोन वाली लाईन पर गोमोह से ३४ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास में एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के शहर में बने मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

रामगढ़ केन्ट—यह नगर हजारी बाग जिले में ई० आर० की हजारी बाग-रामगढ़ वाली लाईन पर हजारी बाग से ५१ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहां पर रिक्शा, तांगा आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्य समाज मन्दिर व मण्डी दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चना, बाजरा, आलू, लाख आदि का उत्पादन होता है।

शिखरजी—यह जिला हजारी बाग जिले में बसा हुआ है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने हेतु यहां दिगम्बर जैन धर्मशाला, श्वेताम्बर जैन धर्मशाला आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ के जंगलों में रहने वाले विषम जीव-जन्तु जिन्होंने आज तक कोई हानि नहीं की। शिखर जी पर तीर्थंकारों के मन्दिर बहुत सुन्दर बने हुये हैं और पंचकल्याण महोत्सव भी दर्शनीय है। यह जैनियों का प्रथम तीर्थ स्थान है।

हजारी बाग—यह नगर व जिला बिहार प्रान्त में ई० आर० की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हजारी बाग रोड रेलवे-स्टेशन से ६८ कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। यहां पर बसों द्वारा यातायात होता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने हेतु बड़म बाजार में दिगम्बर जैन धर्मशाला, स्टेशन से ५ कि. मी. दूरी पर एक अन्य धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर नेशनल बाग में जानवर (सम्बर, छब्बेछार हिरन, भौंकने वाला हिरण, नीला बैल, चीता, भालू आदि चिड़िया (मोरहरा, कबूतर बुलबुल, फाख्ता) आदि जैन मन्दिर, जेल, गौशाला आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चना, बाजरा, मूंग, आलू रुई, चावल, मटर आदि का उत्पादन मुख्य रूप से होता है।

विशेष—यहां पर नेताओं ने जेल काटी थीं व कोयले की खान हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट, यूनाइटेड बैंक आदि की शाखायें है।

श्री बीनाजी—यह नगर भागलपुर जिले में एन० आर० पी० की बम्बई दिल्ली वाली लाईन पर बम्बई से ९७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित हैं। यहाँ पर रिक्शा-तांगा आदि की सुविधा प्राप्त है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर तीन प्राचीन मन्दिर, एक शिखर बन्द जैन मन्दिर में शान्ति नाथ जी की प्रतिमा १८ फुट और दो प्रतिमा ऊपर नीचे पद्मासन है। दिसम्बर की छुट्टी का मेला यहाँ का दर्शनीय हैं।

पटना से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

(१०० कि० मी०=६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अन्डाल जं०	३५८	आसन सोल	३३२	क्यूल	१२४
खाना ज०	४२५	गया	९३	चितरंजन	३०७
जहानाबाद	४५	जुमई	१५२	जसीडीह	२२२
झाझा	१७८	दुर्गापुर	३७४	पाना गढ़	३९०
फतुहा	२२	बौधगया	१२२	बक्तियापुर	३७
बाढ़	६३	बढ़हिया	१०८	बर्दवान	४३८
बंडेल जं०	५.५	मोकामा	९०	मुगलसराय	२१२
मधुपुर	२५१	रानीगंज	३५१	लक्खीसराय	१२३
सीतारामपुर	३२३	सेवड़ाफुली	५२२	हाथीदह	९८
हावडा	५४६				

———

बंगाल

यह भूमि वीर, ज्ञानियों की,
नेता सुभाष का गृह विशाल.
रजधानी जिसकी कलकत्ता,
है कितना सुन्दर यह बंगाल.

पश्चिमी बँगाल

यह प्रदेश भारत के पूर्व में स्थित है। इसके उत्तर में सिक्किम और भूटान हैं पूर्व में पूर्वी पाकिस्तान और आसाम, पश्चिम में बिहार तथा दक्षिण में बंगाल की खाड़ी है। इस प्रदेश की भाषा बंगाली है। स्वतन्त्रता के बाद बंगाल दो भागों में—पश्चिम बंगाल और पूर्वी बंगाल विभाजित हो गया। पूर्वी बंगाल पूर्वी पाकिस्तान में है। यहां की प्रायः सभी भूमि नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बनी है। यहां की जलवायु अधिकतर नमी लिये हुए हैं। यहाँ पर धान और पटसन मुख्य पैदावार हैं।

जिला कूचबिहार

कूचबिहार—यह पश्चिम बंगाल का एक जिला है जो उत्तरी भाग में स्थित है। यहां रेलवे स्टेशन है। यह एन० एफ० आर० की अलीपुर द्वार गीतल डाहा लाईन पर अलीपुर द्वार से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह एक प्रसिद्ध मण्डी है और सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलता है यह नगर बहुत ही सुन्दर बना हुआ है।

विश्राम स्थल—स्टेशन से एक फर्लांग की दूरी पर कूच बिहार स्टेड पंथशाला तथा आधा मील की दूरी पर आनन्द मयी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ भव्य एवं विशाल मन्दिर हैं तथा एक शिव मन्दिर भी है इसके अतिरिक्त दीन हाटा से १३ कि० मी० की दूरी पर कामटीश्वरी मन्दिर है। मन्दिर भव्य एवं दर्शनीय हैं। दीनहाटा कस्बे से १८ कि० मी० दूर राज पट है जहां राजा नीलाम्बर का किला है और राजपट के पास राजा खेम की टकसाल स्थित है।

उत्पादित वस्तुयें—जूट, धान, चावल, उड़द, मूंग, सरसों, तम्बाकू आदि का उत्पादन होता है।

बैंक—नगर में यूनाईटेड वैंक, मैट्रोपोलिटन वैंक, कूच बिहार बैंक, वैंक कारपोरेशन आदि वैंक हैं।

जिला कलकत्ता

(कलकत्ता, गंगासागर, त्रिवेणी)

कलकत्ता—यह पश्चिमी बंगाल की राजधानी और भारत का सबसे बड़ा नगर है।। हुगली नदी के बांये किनारे पर बंगाल की खाड़ी और हुगली के संगम से १३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर दो रेलवे स्टेशन हैं:—हावड़ा और सियालदा। यह ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा लाईन पर मुगलमुराय से ७५७ कि० मी० की दूरी पर है। यह पूर्वी भारत का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। हुगली तट पर यह बन्दरगाह लगभग ८ कि० मी० तक फैला हुआ है। यह अत्यन्त व्यस्त नगर है ऐसा कोई क्षण नहीं जिससे शान्त रहा जा सके। बड़ी मात्रा में विदेशों से माल आता है तथा जाता है। नगर में कई गौशालायें हैं। भारतीय परीक्षणात्मक औषध संस्था, बिड़ला औद्योगिक तथा प्रौद्योगिक सग्रहालय तथा इण्डियन साइंस लेबोरेट्री यहां पर बनी हुई हैं।

अब से ढाई सौ वर्ष पूर्व यह एक बहुत ही छोटा गाँव था। १६८६ ई० में जब हिन्दुस्तान में अंग्रेजी भारत की प्रजा की हैसियत से रहते थे तब अंग्रेज सौदागरों ने यहाँ पर रहना प्रारम्भ किया। यह नगर रेल मार्गों तथा सड़कों द्वारा देश के विभिन्न भागों से जुड़ा हुआ है। यह उत्तरी भारत के सघन बसे हुए क्षेत्र का मुख्य व्यापारिक द्वार है।

कलकत्ते के नागरिकों का जीवन अत्यन्त व्यस्त है। यहां पर यातायात के अनेक साधन हैं जैसे :—रिक्शा, तांगा, टैक्सी, सिटीबस, लोकल ट्रेन, ट्राम आदि।

विश्राम स्थल—नगर में हजारों की संख्या में यात्री प्रतिदिन आते और जाते हैं। उनके ठहरने के लिये नगर में अनेक साधन हैं। धर्मशालायें, होटल तथा पर्यटक निवास आदि। जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं :—फूलचन्द मुकीमचन्द जैन की धर्मशाला (कलाकार स्ट्रीट नेहरू पार्क के सामने वड़े बाजार में), बीकानेर वाले डागाजी की धर्मशाला (मधुआ बाजार में) राजा शिव वक्स बागला की धर्मशाला (हावड़ा स्टेशन पर), राय बहादुर सूरजमल की धर्मशाला (मलिक स्ट्रीट पर), बाबू लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला (पाँच बाँस तल्ला), विनायक मिश्र की धर्मशाला (२२६ हरसिन रोड पर), श्यामदेव भूतिका की धर्मशाला (१५० हरसिन रोड पर), बाबूलाल अग्रवाल की धर्मशाला (१६६ हरसिन रोड पर), रामकृष्ण दास गिरधारी लाल की धर्मशाला (१६७ हरसिन रोड पर, धनुसुखराय जेठामल जैन की धर्मशाला (४४ बद्रीदास टेम्पुल स्ट्रीट), बड़ी संगत सिक्ख मन्दिर धर्मशाला (९ कास स्ट्रीट सूत

पट्टी), बीकानेर वाले डागाजी की धर्मशाला (न्यू जगन्नाथ रोड पर), सेठ बासुदेव जेठा भाई मूलचन्द की धर्मशाला (७ ग्रमर तल्ला स्ट्रीट, पुर सुन्दरी धर्मशाला ६/२४ वीड़न स्ट्रीट), जमुनादास टीबड़े वाले की धर्मशाला (१६४ चितरंजन एवेन्यू , दिगम्बर जैन भवन, बागड़ बिल्डिग (दिगम्बर जैन नया मन्दिर के पीछे) ग्रादि यहां पर धर्मशालायें हैं।

अशोका होटल (लोग्रर सर्कल रोड सियादाह फोन न० ३४५५८६), ग्राइडियल होटल (सूरज सैन स्ट्रीट फोन न० ३४१४३६), इण्डियन होटल (सूरज सैन स्ट्रीट फोन न० ३४२०८४), फेयर लान होटल (१३ ए० सदर स्ट्रीट फोन न० २४४४६०), ग्रेट ईस्टर्न होटल (१, २, ३ ग्रोल्ड कोर्ट स्ट्रीट फोन न० २३२३३१, व २२२३११), होटल हिन्दुस्तान (इन्टर नेशनल २३५/१ ग्राचार्य जगदीश चन्द्र बोस रोड फोन न० ४४२३६६) लिटिल होटल (१४ सदर स्ट्रीट फोन न० २३२७६०), न्यू कैनिल वर्थ होटल (१, २, रशल स्ट्रीट फोन न० ४४६६८१ व ४४०४७६) ग्रादि होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—सारा नगर बहुत सुन्दर बना हुआ है। विस्तृत राजमार्ग है। दोनों ग्रोर गगन चुम्बी ग्रट्टालिकाएं हैं। नगर की शोभा देखते ही बनती है। फिर कुछ प्रमुख स्थलों का परिचय दिया जा रहा है—

स्वामी विवेकानन्द की समाधि। हावड़ा ब्रिज, ग्रार्य समाज मन्दिर, लेखकों का भवन, हाई कोर्ट, चौरंघी मैदान, सैन्टपाल का गिरजा घर, नखोड़ा मस्जिद, पारसनाथ जैन मन्दिर, दक्षिणेश्वर मन्दिर, बद्रीनाथ जी का श्वेताम्बर मन्दिर, राम मन्दिर, दाऊ जी का मन्दिर, दे वी का मन्दिर, काली देवी का मन्दिर, वेलूर मठ इसकी स्थापना स्वामी विवेकानन्द जी ने की थी ग्रौर यह राम कृष्ण मिशन का प्रधान कार्यालय है। चावल पट्टी, हैरिसन रोड, पुरानी वाड़ी, हैरिसन रोड, वोटेनिकल गार्डन, सुरेखा गार्डन ग्रौर शिप बिल्डिन्ग, जैन मन्दिर, मारवल राजमहल फोर्ड विलियम, इण्डियन म्यूजियम, विक्टोरिया मैमोरियल, नेशनल लायब्रेरी, जूलोजिकल गार्डन, ढाकूरिया झील, कलकत्ता विश्वविद्यालय (स्थापित १८५७), रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय (१९६२), दमदम का ग्रन्तर्राष्ट्रीय हवाई ग्रड्डा, बिरला प्लेनीटोरियम चांद-तारा घर।

उत्पादित वस्तुयें—यह एक ग्रौद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र हैं। इस बन्दरगाह से कोयला, चाय, दरियाँ, हड्डियाँ, चमड़ा, सनई, जूट, लाख, पैट्रोल, ग्रभ्रक, लोहा, इस्पात, तिलहन, मैंगनीज का निर्यात होता है। विदेशों से इस बन्दरगाह द्वारा ग्रायात की जाने वाली वस्तुग्रों में चावल, गेहूं, मशीनें, नमक, पैट्रोल, शराब, मोटरें, सीमेन्ट, रवड़, तम्बाकू, खादें, दवाएं, रेडियो एवं रासायनिक वस्तुएं हैं। यह जूट व्यवसाय का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहां चावल, सूती कपड़े, चमड़ा, लोहा, इस्पात तथा दियासलाई के कारखाने हैं।

बैंक—प्रायः सभी बैंकों की शाखायें यहां पर है। कुछ बैंकों की एक से अधिक शाखायें हैं।

गंगा सागर—यह जिला कलकत्ते में प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है। यहाँ भारत के कोने कोने से यात्री आते हैं। यह एक द्वीप है जो २४० कि० मी० के लगभग है। मकर संक्रान्ति पर बहुत बड़ा मेला लगता है। मेला पाँच दिन तक रहता है। कलकत्ते से बस द्वारा ६२ कि० मी० के लगभग सफर करके डायमण्ड हारबर तक जाते हैं। वहाँ से नावों अथवा जहाज द्वारा गंगा सागर द्वीप जाते हैं। एक मन्दिर में कपिल मुनि की मूर्ति है। संक्रान्ति के दिन समुद्र से प्रार्थना की जाती है और प्रसाद चढ़ाया जाता है। समुद्र में स्नान होता है। यहां पर लोग श्राद्ध कुण्ड दान भी करते हैं तथा दान देते हैं। यहाँ पर पानी का अभाव है। केवल एक कच्चा सरोवर है जिसमें मीठा पानी है। खारी पानी के सरोवर आस पास में हैं। यहाँ पर कोई आबादी नहीं है। यह कलकत्ते सेसड़क के मार्ग से १४६ कि० मी० है।

विश्राम स्थल—कोई धर्मशाला नहीं हैं।

दर्शनीय स्थल—कपिल मुनि का मन्दिर, विशालाक्षी मन्दिर, संक्रान्ति मेला, समुद्र की प्राकृतिक शोभा आदि।

उत्पादित वस्तुयें—मछली आदि।

त्रिवेणी–यह एक धार्मिक स्थल है। कलकत्ता से ९३ कि० मी० दूर है। पूर्वी रेलवे की हावड़ा बड़हरवा लाईन पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं। जिस प्रकार प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है उसी प्रकार यहां पर वे तीनों नदियाँ अलग अलग हो जाती हैं। इसको मुक्त त्रिवेणी कहते हैं। भागीरथी कलकत्ते होकर गंगा सागर जाती है। सरस्वती सप्तग्राम होती हुई सैक राइल स्थानों में फिर गंगा से मिलती है। यमुना पूर्व की ओर इच्छामती नाम से बहती है। गंगा दशहरा, मकर संक्रान्ति माघ पूर्णिमा तथा सूर्य ग्रहण एवं चन्द्र-ग्रहण के अवसरों पर मेला लगता है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है। एक धर्मशाला मन्दिर के पास है और दूसरी शहर में है।

दर्शनीय स्थल—शिवजी का मन्दिर, हनुमान मन्दिर, लक्ष्मी मन्दिर तथा त्रि-वेणी माधव मन्दिर।

बैंक—स्टेट बैंक है

जिला मोगू

पारसनाथ (मधुबन)—जिला मोगू में यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थान है। यह रेलवे स्टेशन है। मोगू से १८ कि० मी० दूर है। पूर्वी रेलवे की हावड़ा-गया लाईन पर स्थित है। सवारी के लिये यहां रिक्शा तथा टैक्सी मिलते हैं। यह एक पहाड़ी है जो मधुबन से १० कि० मी० है यह एक प्रसिद्ध स्थान माना जाता है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं। श्वेताम्बर जैन धर्मशाला, दिगम्बर जैन धर्मशाला तथा तेरह पंथी जैन धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—अनेकों दर्शनीय धार्मिक स्थान हैं। जैसे गौतम स्वामी की टोक, चन्द्र प्रभु कीं टोक, अभिनन्दन नाथ जी की टोंक, जल मन्दिर, पारसनाथ टोंक जैन मन्दिर।

बैंक—स्टेट बैंक।

जिला चौबीस परगना

यह बंगाल का सबसे बड़ा जिला है। इस जिले में अनेक कारखाने, सुन्दर वन तथा अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा हैं। इस जिले में अनेक स्थान महत्वपूर्ण एवं बहुत दर्शनीय है।

अगर पाड़ा—यह चौबीस परगना जिले में है। रेलवे स्टेशन है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-बानपुर गेडे लाईन पर सियालदा से १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला स्टेशन के पास तथा दूसरी शहर में है।

दर्शनीय स्थल—शिव मन्दिर तथा देवी मन्दिर।

उत्पादित वस्तुयें—जूट, चावल, मूंग, सरसों, आदि। सिगरेट कारखाना तथा जूट मिल भी है।

ईचापुर नबाबगंज—यह रेलवे स्टेशन है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-बानपुर गेड़े लाईन पर सियालदा से २७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यहा सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन ये ४ कि० मी० पर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई देवालय हैं।

उत्पादित वस्तुय—यहां पर बन्दूक बनाने का कारखाना है।

कांचरा पाड़ा—पूर्वी रेलवे का एक स्टेशन है। सियालदा-बानपुर गेडे लाईन पर सियालदा से ४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा मिलते हैं। यहाँ पर गोशाला हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के लिये शिव मन्दिर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शिव मन्दिर, ३ कि० मी० की दूरी पर गंगा बहती है वहाँ पर काली माई का मन्दिर है। गुरुद्वारा, जानवरों का अस्पताल, पूर्वी रेलवे की वर्कशाप है। टी० बी० का सेनिटोरियम है।

उत्पादित वस्तुयें—रेल के इन्जन बनते हैं।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक तथा को-आपरेटिव बैंक।

केनिंगटाउन—यह इस जिले का एक रेलवे स्टेशन है। पूर्वी रेलवे की सियालदा बजबज-केनिंग लाईन पर सियालदा से ४६ कि० मी० की दूरीं पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुएं—मछली, चावल आदि।

काशीनगर—यह जिला चौबीस परगना में है। दक्षिण पूर्वी रेलवे की नवा-पाड़ा-परल की मेडी गुनुपुर लाईन पर हावड़ा से ७६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से एक कि० मी० की दूरी पर धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, जूट, आदि।

खरदहा—पूर्वी रेलवे की सियालदा वानपुर गेड़े लाईन पर स्थित है और सियालदा से १९ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर रिक्शा टैक्सी तांगे सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से दो फर्लांग की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शिव मन्दिर और हनुमान मन्दिर सुन्दर बने हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, मछली आदि।

बैंक—सैन्ट्रल बैंक तथा को-ओपरेटिव बैंक।

गेरिया—पूर्वी रेलने की सियालदा-वजबज के निग लाईन पर सियालदाँ से १३ किलो मीटर की दूरी पर है। यहां पर रिक्शा टैक्सी तथा तांगा मिलते है।

विश्राम स्थल—यात्रियों ठहरने के लिये स्टेशन से चार फर्लांग की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर सुन्दर बने हुये हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल आदि।

गौरीपुर—यह जिला चौबीस परगना का एक एक शहर है। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की फर्करा ग्राम-छवड़ा लाईन पर फर्करा ग्राम से ६० किलो मीटर की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से १ कि० मी० की दूरी पर धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर तथा कई अन्य देवालय हैं।

बैंक—स्टेट बैंक।

गोचरन—पूर्वी रेलवे की लक्ष्मी कान्तपुर-डायमन्ड हार्बर लाईन पर सिया-लदा से ३६ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह चौबीस परगना जिले में है। सवारी के लिये रिक्शा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशान के पास एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—कई छोटे-२ मन्दिर नने हुए हैं।

ठाकुरनगर—यह जिला चौबीस परगना में है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-

दत्तापुर वानगांव जंकशन लाईन पर है सियालदा से इसकी दूरी ६३ किलो मीटर है। सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से दो फर्लांग की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में अनेक मन्दिर हैं। जिनमें शिव मन्दिर और देवी जी का मन्दिर सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—जूट।

बैंक—स्टेट बैंक।

डायमन्ड हार्बर—यह चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की लक्ष्मीकान्त पुर डायमन्ड हार्बर लाईन पर सियालदा से ६० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं कलकत्ते से इसकी दूरी ५१ किलो मीटर तथा डायमन्ड हार्बर से बंगाल की खाड़ी की दूरी ९६ किलो मीटर है यहां से हुगली नदी समुद्र की ओर मुड़ती है। यह घूमने का अच्छा स्थान है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये छोटे-२ बंगले किराये पर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त टूरिस्ट लाज भी है।

दर्शनीय स्थल—शहर में अनेक मन्दिर हैं लाइट हाऊस भी सुन्दर बना हुआ है। यह पिकनिक का बहुत सुन्दर स्थल है। स्टीमर, जहाज सैर करने के लिये मिलते। प्राकृतिक दृश्य अवलोकनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मछली आदि।

बैंक—स्टेट बैंक।

दक्षिणेश्वर—यह सियालदा से १४ किलो मीटर की दूरी पर चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा डकुनी जंकशन लाईन पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला स्टेशन के पास हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक मन्दिर हैं। जिनमें काली मन्दिर, मदन गोपाल मन्दिर, द्वादश महादेव मन्दिर सुन्दर हैं। यह स्वामी विवेकानन्द जी के पूज्य गुरू श्री राम कृष्ण परम हंस की तपस्या स्थली है। यहां पर एक कमरे में श्री राम कृष्ण परम हंसजी का बिस्तर आदि रखे हुए हैं।

बैंक—सैण्ट्रल बैंक तथा को-आपरेटिव बैंक है।

नारायणपुर—यह कटिहार जंक्शन से ८१ किलो मीटर की दूरी पर एन० ई० रेलवे की कटिहार जंकशन मुजफ्फर पुर सोनपर जंक्शन लाईन पर स्थित है। इसका जिला चौबीस परगना है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई सुन्दर मन्दिर हैं।

नैहाटी यह चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा-वानपुर गेड़े

लाइन पर सियालदा से ३८कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नैहाटी रेलवे जकशंन हैं। यहां पर ताँगा तथा टैक्सी रिक्शा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियोंके ठहरने के लिए होटल, धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर तथा देखने योग्य स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—जूट, धान चावल,आदि ।

बैंक—स्टेट बैंक

पनिहाटी—यह चौबीस परगना जिले में है । यहां रेलवे स्टेशन नहीं है। बस द्वारा जाया जाता है। यहाँ बंगोल कैमिकल तथा बंगोल वाटर पुरूफ के कारखाने तथा वासंती कोटन मिल हें ।

दर्शनीय स्थल—रानी रास मनीर का बनवाया हुआ कृष्ण मन्दिर दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें --कैमीकल तथा वाटर पुरूफ आदि उत्पन्न होती हैं।

बाटा नगर—यह चौबीस परगना जिले में है । यहाँ पर रिक्शा तांगा मिलता है। कलकत्ते से बस द्वारा भी जाया जा सकता है। यहां बाटा के जूते बनाने का विशाल कारखाना है।

दर्शनीय स्थल—कई छोटे छोटे मन्दिर हैं। जूतों का कारखाना भी दर्शनीय है। इन्डस्ट्रियल सेनी स्टेशन देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—बाटा के जूते।

बारुपुर--यह चौबीस परगना जिला का पूर्वी रेलवे की लक्ष्मी कान्त-डायमड हार्बर लाइन पर स्थित एक शहर है। सियालदा से इसकी दुरी २५ कि० मी० है यहां पर रिक्शा टैक्सी और ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थलय---त्रियों के ठहरने लिये बगला धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल---शहर में शिव मन्दिर दर्शनीय है।

बैंक—सेन्ट्रल बैंक तथा को-आपरेटिव बैंक।

बारकपुर---यह जिला चौबीस परगना में है। पूर्वी रेलवे की सियालदा वानपुर लाईन पर सियालदा से २३ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर रिक्शा तथा ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल---नगर में एक धर्मशाला है जिसमें यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल---शहर में कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—जूट, धान, चावल आदि।

बैंक—स्टेट बैंक।

बजबज--यह सियालद से २६ कि० मी० की दूरी पर है। इस का जिला चौबीस परगना है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-बजबज के लिन लाईन पर स्थित है। रिक्शा और ताँगा टैक्सी मिलते हैं। यहां पर तेल इकठ्ठा रखने का बहुत बड़ा बन्दरगाह है।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मछली आदि।

बरासत—पूर्वी रेलवे की बरासत जकंशन बसीर हाट-हसनाबाद लाईन पर स्थित हैं। सियालदा से इसकी दूरी २३ कि० मी० है और जिला चौबीस परगना है। सवारी के लिए रिक्शा और टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से दो फर्लांग की दूरी पर होटल और धर्मशाला आदि बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर के मन्दिर देखने योग्य हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, बरासत सेन्ट्रल कूप बैंक आदि।

बसीर हाट—सियालदा से इसकी दूरी ६५ कि० मी० है। पूर्वी रेलवे की बरामत जकंशन-बसीर हाट हसनाबाद लाईन पर स्थित है। इसका जिला चौबीस परगना है। यहाँ सवारी के लिए रिक्शा और तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में अनेकों मन्दिर अवलोकनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ हैन्डलूम की मण्डी है। हैन्डलूम का कपड़ा बड़ी मात्रा में बनाया जाता है।

बैंक—स्टेट बैंक।

बोगांव—चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा-दत्तापुकुर बौगाँव जंक्शन लाईन पर स्थित है। सियालदा ये इसकी दूरी ७७ कि० मी० है। यहां सवारी के लिये रिक्शा मिलती है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शिव मन्दिर तथा काली माता का मन्दिर दर्शनीय है।

बैंक—स्टेट बैंक।

मध्यमग्राम—पूर्वी रेलवे का एक स्टेशन है। जिला चौबीस परगना में सियालदा से १८ कि० मी० की दूरी पर हैं। सियालदा-दत्तापुर वानगांव जंकशन रेलवे लाईन पर स्थित है। यहां टैक्सी, रिक्शा मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहा पर धर्मशाला है जिसमें यात्री ठहरते हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

मथुरापुर—यह चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से ३०६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर होटल व धर्मशालायें है।

दर्शनीय स्थल—कई छोटे मन्दिर नगर में हैं जो देखने योग्य हैं।

रायपुर—यह जिला चौबीस परगना में है। यहां रेल नहीं जाती। बस द्वारा ही यातायात की सुविधा है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगे मिलते हैं। यहां अनाज की मण्डी है।

दर्शनीय स्थल—शहर में बहुत से मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर धान, चावल, चना, उड़द, मूंग मसूर, लाख, गोंद, कत्था, अलसी, तेल, बीड़ी, मूंगफली, ज्वार, बाजरा आदि।

शंकरपुर—हावड़ा से यह ३१४ कि० मी० है। जिला चौबीस परगना में पूर्वी रेलवे की हावड़ा मुगल सराय लाईन पर स्थित है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा और ताँगा मिलती हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला और होटल बने हुये हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई छोटे २ मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, ज्वार, बाजरा आदि।

श्यामनगर—चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा-बानपुर गेडे लाईन पर सियालदा से ३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई सुन्दर मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, ज्वार, बाजरा आदि।

सोडेपुर—जिला चौबीस परगना में पूर्वी रेलवे की सियालदा-बानपुर लाईन पर सियालदा से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर है जिनमें शिव मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, ज्वार, बाजरा आदि है।

सोनारपुर—यह नगर जिला चौबीस परगना में पूर्वी रेलवे की सियालदा-बज-बज केनिंग लाईन पर सियालदा से १७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह रेलवे जंक्शन है और यहाँ सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से तीन फर्लांग की दूरी पर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में अनेक छोटे-छोटे मन्दिर हैं। उनमें काली देवी का मन्दिर विशेष दर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, ज्वार, बाजरा आदि।

रहड़ा—यह चौबीस परगना जिले में है। इसका रेलवे स्टेशन खड़दह है जो कि पूर्वी रेलवे के अन्तर्गत है। यह सियालदा से २५ कि० मी० है। यहां सवारी के लिये रिक्शा और तांगे मिलते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का रामकृष्ण आश्रम देखने योग्य है।

इच्छापुर—यह चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे का एक स्टेशन है और सियालदा से ३२ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ सवारी के लिए रिक्शा और टैक्सी मिलते हैं।

दर्शनीय स्थल— बन्दूक और अन्य लड़ाई का सामान बनाने का कारखाना।

उत्पादित वस्तुयें—लड़ाई का सामान।

खड़दह—चौबीस परगना जिले में पूर्वी रेलवे का यह एक स्टेशन है और सियालदा से २२ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा और टैक्सी मिलते हैं।

दर्शनीय स्थल—रामकृष्ण आश्रम और रामकृष्ण विद्यालय देखने योग्य हैं।

जिला जलपाई गुड़ी

(जलपाई गुड़ी, वीर पाड़ा, बानार हाट)

जलपाई गुड़ी—यह पश्चिमी बंगाल का एक जिला है। यह एन० एफ० आर० की सिलीगुड़ी-हल्दीबाड़ी लाईन पर सिलीगुड़ी से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगा मिलते हैं। यह एक प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिए एक मारवाड़ी धर्मशाला है जिसमें ठहरने का अच्छा प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—आधे के लगभग नगर बाढ़ में बर्बाद हो चुका है। फिर भी शेष भाग देखने योग्य हैं। आर्यसमाज मन्दिर है। हासनी मारा स्टेशन से ६ किलो मीटर की दूरी पर 'जालदा पारा गेम सेन्चरी' है। यहाँ जंगली जानवर जैसे:—चीते, रीछ, हिरन आदि पाये जाते हैं। यहां पर यात्रियों की सुविधा के लिये जलगात विभाग द्वारा विश्राम गृह बनाया गया है। यहां के लिये कलकत्ता से हवाई जहाज द्वारा पहुंचने की व्यवस्था है। 'गरुमारा गेम सैन्चरी' में सुरक्षित जंगली जानवर देखे जा सकते हैं। भूटान घाट अण्डर राईडक रान्ग-राईडक नदी का सुन्दर दृश्य है तथा जंगली खेलों के लिये प्रसिद्ध है। 'बाला पारा अन्डर भोलका राँग' यह प्राकृतिक दृश्यों के लिये प्रसिद्ध है। यह राज्य के पूर्वी सीमा पर स्थित है। मछली पकड़ने के लिये संकोस नदी एक अच्छा स्थान है। यह स्थान जोरई स्टेशन से २३ किलो मीटर की की दूरी पर है।

उत्पादित वस्तुयें—चाय, जूट आदि।

बैंक—सेन्ट्रल बैंक, यूनाईटेड बैंक, स्टेट बैंक, यूनाईटेड कार्मशियल बैंक।

बीर पाड़ा—यह जलपाई गुड़ी जिले में है। यह चाय, तम्बाकू, धान आदि की प्रसिद्ध मण्डी है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चाय, धान, तम्बाकू, जूट, तेल, गुड़, चीनी, दाल, चना गुड़, मटर आदि।

बानर हाट—यह जलपाई गुड़ी में एन० ई० आर० की न्यूमाल जंक्शन-अलीपुर द्वार-गोहाटी लाईन पर स्थित है। यह कटिहार जंक्शन से २८७ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगे मिलते हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये मारवाड़ी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—नगर में हनुमान मन्दिर तथा एक विश्वनाथ मन्दिर है।

जिला थाना

कल्याणी—यह नगर जिला थाना में है। मध्य रेलवे की कलकत्ता-राणाघाट लाईन पर कलकत्ता से ४८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलता है। यहाँ पर मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई सुन्दर मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुयें—उड़द, गुड़, तिल, प्याज आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनियन बैंक, कनारा बैंक, महाराष्ट्र बैंक, कल्याण प्यूपिल्स बैंक, थाना दी को-आपरेटिव बैंक, यूनाईटेड बैंक, वेस्टर्न बैंक।

जिला दार्जिलिग

(दार्जिलिंग, कालिम्पोंग कुर्सियांग, त्रिस्टाब्रिज, सिलीगुड़ी)

दार्जिलिग—पच्छिमी बंगाल का प्रसिद्ध पहाड़ी जिला है। यह एन० एफ० की सिली गुड़ी-दार्जिलिंग लाईन पर सिलीगुड़ी से ८० किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक पहाड़ी स्टेशन है। समुद्र तल से ६८०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह भ्रमण की अच्छी जगह है यहाँ की चाय प्रसिद्ध है। दार्जिलिंग प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। विविध प्रकार के वृक्ष, पशु तथा प्राकृतिक दृश्य पर्यटकों के मन को बरवस आकर्षित कर लेते है। इसकी तुलना में स्वीटजर लैण्ड की शोभा भी फीकी दृष्टि आती है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला, होटल तथा टूरिस्ट निवास हैं। मोहल लाल शिवलाल की धर्मशाला तथा मारवाड़ी धर्मशाला प्रसिद्ध है। सैण्ट्रल बोर्डिंग, राधा होटल एण्ड रेस्टोरैन्ट चौड़ा रास्ता, स्नोव्यू होटल कोर्ट रोड, बोम्बे रोड होटल, जलालपहार, आबराय माउन्ट एवरेस्ट होटल, शैलावास फोन न० ६८४ प्रसिद्ध होटल एवं निवास स्थान हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां प्रकृति अपने सुन्दर तम रूप में विद्यमान हैं। हजारों दृश्य इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। टाईगर पहाड़ी, कँवेन्टर्स फार्म, सकल झील, संकल फोरेस्ट, गूम चट्टान, गूम बुद्धिस्ट मोंस्ट्री लाइड वोटनीकल गार्डन,स्टीम एसाइट नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम, हिमालय माउन्टेनियरिंग इस्टियूट चिड़िया घर, बच्चों की रेल

तिब्बतियों का नृत्य, पहाड़ों पर चढ़ने की शिक्षा देने वाला कालिज, हिमालय जूलोजिकल पार्क, आर्य समाज मन्दिर, देवो मन्दिर, भगवान शंकर की लिंग मूर्ति, जाला पहाड़, बीच पहाड़ी, निरीक्षण पहाड़ी, सेंन्ट पाल स्कूल, जोसेफ पहाड़ी, चाय के बाग की शोभा अवलोकनीय हैं। प्रातः और सायं को सूर्य के उदित होने तथा अस्त होने का दृश्य अपनी अनोखी छटा से दर्शकों को आकर्षित कर लेता है। टाइगर पहाड़ी से एवरेस्ट चोटी देखी जा सकती हैं।

टोगलू—यह दार्जिलिंग से ४५ किलो मीटर की दूरी पर है। यहां से दार्जिलिंग शहर बहुत सुन्दर लगता है। यहाँ यूथ होस्टल तथा डी० आई० फन्ड० बगाल देखने योग्य हैं।

सन्दकफु—यह टोगलू से २३ किलो मीटर तथा दार्जिलिंग से ६८ कि० मी० की दूरी पर है। यह नैपाल सीमा पर है। यह सड़क के किनारे विविध प्रकार के फूलों की शोभा देखने योग्य हैं।

फालुत—सन्दकफु से २३ किलो मीटर पर स्थित है। यहां नेपाल सिक्कम तथा भारत की सीमायें मिलती हैं। यहाँ पर डी० आई० फन्ड का बंगला व युथ होस्टल देखने योग्य हैं।

गूम मोनेस्ट्री—यह दार्जिलिंग से ७ किलो मीटर की दूरी पर है। यहाँ बौद्धों का मठ है जिस पर पच्ची कारी का कार्य अत्यन्त सुन्दर हैं।

सन्चलझील—यह दार्जिलिंग से ग्यारह किलो मीटर की दूरी पर है। भ्रमण का उत्तम स्थान है। दार्जिलिंग का पानी सप्लाई विभाग के पानी का भण्डार भी है।

मज्जीतर ससपेन्शनपुल—यह भारत और सिक्कम को जोड़ता है। दार्जिलिंग से २३ किलो मीटर तथा एक हजार फीट की ऊंचाई पर है। यहां पर एक डाक बंगला है और मछली पकड़ने का सुन्दर स्थान हैं।

व्यू गेइन्ट—यह दार्जिलिंग से २३ किलो मीटर है। टेस्टा और रणजीत नदियों के संगम का दृश्य जो कि २०० फीट की निचाई में है दर्शनीय हैं।

दीविलेज आफ गरुबाउन—यहां की समतल भूमि विस्तृत पहाड़ी क्षेत्र में अपना स्थान रखती है। बन विभाग का विश्राम गृह है और समीपस्थ प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

रिवांग—यह सिली गुड़ी से ३८ किलो मीटर की दूरी पर टैस्टा वाली रोड पर स्थित है। यह मछली पकड़ने का उत्तम स्थान हैं।

सिगला—यह ११०० फीट की ऊंचाई पर है। यहाँ तीन नदियाँ रणजी, ग्रेट रणजीत, रमण का संगम होता है। भ्रमण की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण स्थल है।

वैली आफ रीवर वुलसान एंट नमसु—यहां के लिये अम्बटीया टी स्टेट कुर्सियाँग क्षेत्र से होकर जाना पड़ता है। प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त विस्मयकारी है। शिकारी चिड़िया बहुत पायी जाती हैं। एक डाक बंगला हैं।

उत्पादित वस्तुएं--चाय, बड़ी इलायची, आलू, चावल, पपीता, मजीठ, हल्दी दालचीनी आदि ।

बैंक—स्टेट बैंक, नेशनल एण्ड, ग्रिन्डवे बैंक आदि ।

कालिम्पोंग—यह जिला दार्जिलिंग में है। यह एन० एफ० रेलवे की न्यू जलपाई गुडी-दार्जिलिंग लाईन पर सिलीगुडी रेलवे स्टेशन से ६७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह रेलवे की आउट एजेन्सी है। दार्जिलिंग से इसकी दूरी ५० कि० मी० है। सवारी के लिए रिक्शा, टैक्सी मिलते हैं। यह व्यापार की मण्डी है। यह ४ हजार फिट की ऊंचाई पर है। इसके जगलों में घूमना स्वास्थ्य वर्धक है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिए नगर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—डाक्टर ग्राह्म होम्स, कालिम्पोंग आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स, टिबेटियन मौन्सस्ट्री, कालिम्पोंग मार्केट, डुबीन ड्रा हिल्स, पैडोंग, विकास क्षेत्र।

उत्पादित वस्तुएं—पीपल, दालचीनी आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, बैंक आफ इण्डिया, सैण्ट्रल कूप बैंक आदि हैं।

कुर्सियांग—यह पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की न्यू जलपाई गुड़ी-दार्जिलिंग लाईन पर न्यू जलपाई गुड़ी से ५६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। दार्जिलिंग से इसकी दूरी ३५ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा तथा टैक्सी मिलती हैं। यहाँ की जलवायु बहुत अच्छी है। यह व्यापारिक मन्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला, होटल तथा बंगला हैं। हरदेव दास श्री लाल की धर्मशाला तथा मारवाड़ी धर्मशाला प्रसिद्ध है।

दर्शनीय स्थल—आर्य समाज मन्दिर, डाक बंगला तथा पर्वतीय प्राकृतिक दृश्य अवलोकनीय हैं। इगलग्रेज यहां से भारत के १६० कि० मी० की दूरी पर फैले हुए मैदानों का दृश्य देखने योग्य हैं। दो हिल—यह पिकनिक केन्द्र है। कुर्सियांग से इसकी दूरी तीन मील है। यहां फूलों के बाग हैं।

उत्पादित वस्तुयें—इलायची, चाय, पपीता, फूल, आडू आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, बैंक आफ इण्डिया, गोयनका कामर्शियल बैंक लि०।

त्रिस्टा ब्रिज—यह दार्जिलिंग जिले में है। यहां पर रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती हैं। यह व्यापारिक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में होटल, धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां का पुल देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त दो मन्दिर भी सुन्दर बने हुए हैं।

उत्पादित वस्तुयें—बड़ी इलायची, काली मिर्च तथा अन्य पहाड़ी वस्तुएं।

बैंक—नगर में कोई बैंक नहीं हैं। कारोबार सिलीगुड़ी तथा कालिम्पोंग के बैंकों द्वारा ही चलता है।

सिलीगुड़ी—यह दार्जिलिंग जिले में एन० एफ० रेलवे की मनिहारी घाट-तिनसुकिया लाईन पर मनिहारी घाट से २४२ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर

रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती है। यह आसाम का गेट है। यहां पर गौशाला है। यहां से दार्जिलिंग, नैपाल, भूटान, सिक्किम को रास्ता जाता है। गोहाटी को मोटर तथा रेल मार्ग है।

विश्राम स्थल—स्टेशन से ५ कि० मी० की दूरी पर दो धर्मशालाएं हैं भोपाल धर्मशाला तथा डालमियां धर्मशाला, रणजीत होटल, अमरदीप होटल, दिल्ली होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—महावीर जी का मन्दिर, सत्य नारायण मन्दिर, रानी सती का मन्दिर, काली का मन्दिर रामघाट आश्रम, सिक्खों का गुरुद्वारा, महानदी, मिलट्री केन्द्र, १५ कि० मी० दूर बागडोगरा में हवाई अड्डा आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—चावल, बड़ी इलायची, चाय, जूट, उड़द, ऊन, खाल, तेल, दाल, गुड़ आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, गोयनका कार्मशियल बैंक, यूनाइटेड बैंक आफ इण्डिया।

जिला नदिया

(कल्याणी, कृष्ण नगर, चकदहा, देवाग्राम, नदिया, नवाद्वीप, प्लासी, रानाघाट, शान्तिपुर, बामून पुकुर)

कल्याणी—यह नदिया जिले में है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-बानपुर गेड़े लाईन पर यह एक रेलवे स्टेशन है। सियालदा से ४९ कि० मी० है। यहां पर रिक्शा तथा टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में होटल, धर्मशालाएं हैं।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर हैं। कल्याणी विश्वविद्यालय प्रसिद्ध है। यह राज्य सरकार की विकास योजना का मुख्य केन्द्र है। यहाँ पर यात्रियों के लिये एक टूरिस्ट स्थान है। कृषि कालिज तथा टी० टी० कालिज हैं।

बैंक—स्टेट बैंक है।

कृष्णनगर—यह रेलवे जंकशन है और नदिया जिले में है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-रानाघाट लाल गोला लाईन पर सियालदा से १०० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा व टैक्सी की सवारी मिलती है। जिले का मुख्य नगर है। महाराजा कृष्ण चन्द्र ने यहाँ पर राज्य किया।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—राजबाड़ी, सौ साल पुराना सरकारी कालिज, गुआड़ी बाजार, पूर्वी बाजार, प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय तथा भारत चन्द्र राय गुणा कर के आवास स्थान हैं।

उत्पादित वस्तुयें—मिट्टी के खिलौने, मूर्तियां और शिल्पकारी का सामान संसार में प्रसिद्ध है। यहां की दूध की मिठाइयां प्रसिद्ध हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक, यूनियन बैंक, सैण्ट्रल बैंक, को-आपरेटिव बैंक आदि।

चकदाह—यह नदिया जिले का एक रेलवे स्टेशन है। पूर्वी रेलवे की सियालदा-वानपुर गेड़े लाईन पर ६२ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा तथा टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

देवाग्राम—पूर्वी रेलवे की सियालदा-रानाघाट लाल गोला लाईन पर सियालदा से १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। नदिया जिले का रेलवे स्टेशन है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—शहर में कई मन्दिर है जो देखने योग्य हैं।

नवाद्वीप—यह नदिया जिले में है और रेलवे स्टेशन है। पूर्वी रेलवे की शान्तिपुर जंक्शन कृष्णनगर नवाद्वीपघाट लाईन पर स्थित है। सियालदा से १२१ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगे मिलते हैं। यह संस्कृत का प्राचीन केन्द्र है। स्टेशन नगर से २ कि० मी० की दूरी पर है।

विश्राम स्थल—मोतीराम की धर्मशाला, हेतमपुर महाराज की धर्मशाला तथा रामचन्द्र भजनाश्रम यात्रियों के ठहरने के लिये उपयुक्त स्थल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक मन्दिर हैं। अधिकांश मन्दिर ऐसे हैं जिनमें दर्शनार्थी निश्चित दक्षिणा देकर ही प्रवेश पा सकते हैं। श्री महाप्रभु मन्दिर, गौर, गोविन्द मन्दिर, श्री अद्वैताचार्य मन्दिर, शची माता मन्दिर, जगाई मधाई मन्दिर, श्री गोरांग जन्म लीला, हरि सभा, सिद्धेश्वरी और बूड़े शिव पौड़ा माता का मदिर, दर्शनीय हैं। यह महाप्रभु चैतन्य का लीला क्षेत्र है। नाव द्वारा मायापुर जाते हैं। मायापुर चैतन्य का जन्म स्थान है। यहां पर चैतन्य मठ है। जठुन नगर भी देखने योग्य हैं।

बैंक—स्टेट बैंक है।

प्लासी—नदिया जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा-रानाघाट लाल गोला लाईन पर सियालदा से १५० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा व टैक्सी मिलते हैं। यह इतिहास प्रसिद्ध युद्ध भूमि है। प्लासी रेलवे स्टेशन से ५ कि० मी० की दूरी पर वह मैदान है जहां पर सन् १७५७ में नवाब सराजुद्दौला और लार्ड क्लाइव के बीच युद्ध हुआ था।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिये होटल तथा धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल—शहीदों की स्मृति में विजय स्तम्भ बना हुआ है। आम के बाग बहुत हैं।

रानाघाट—यह रेलवे जंक्शन है। नदिया जिले में पूर्वी रेलवे की सियालदा बानपुर गेडे लाईन पर स्थित है। सियालदा से इसकी दूरी ७४ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा तथा टैक्सी मिलते हैं।

बैंक---स्टेट बैंक, रानाघाट सैण्ट्रल बैंक ।

शान्तिपुर—इसका जिला नदिया है। पूर्वी रेलवे की सियालदा रानाघाट शान्तिपुर लाईन पर एक रेलवे जंकशन है । सियालदा से इसकी दूरी ९४ कि० मीटर है ।

दर्शनीय स्थल – यहां की रास लीला प्रसिद्ध है। गंगा का तट और उसके दृश्य अव- लोकनीय है ।

उत्पादित वस्तुयें—तांत के वस्त्र मशहूर हैं ।

बैंक---स्टेट बैंक ।

बामूनपुकुर—यह नदिया जिले में है। इसका रेलवे स्टेशन नवद्वीप है नव -द्वीप से नाव द्वारा बामून पुकुर जाते हैं ।

विश्राम स्थल---यहाँ से आठ कि० मी० की दूरी पर मायापुर में ठहरने का स्थान है।

दर्शनीथ स्थल---महाराजा वल्लाल सेन का टीला तथा जमीन के अन्दर छिपा हुआ महल है ।

जिला पश्चिमी दीनाजपुर

पश्चिमी दीनाजपुर---यह प० बंगाल प्रान्त में स्वयं जिला है।

दर्शनीय स्थल---महानन्दा घाटी देखने योग्य है ।

बानगढ़---यह बान राजा का निवास स्थान कहा जाता है। यहाँ पर किले के खण्डहर पड़े हुए हैं। यहां का किला सुरक्षित स्थान पर बना हुआ है। बानगढ़ के लिये सड़क कल्याण ज-बालुरघाट रास्ते से जाने योग्य है । गंगारामपुर में होटल व डाक बंगला उपलब्ध हैं। "बख्तियार अली खिलजी का मकबरा" । गंगा राम पुर थाना के पास है। सड़क जीप के योग्य है । कमलवाड़ी यह राजा गणेश की राजधानी है । रामगंज मे १४ कि० मी० की दूरी पर है ।

जिल पुरूलिया

(पुरुलिया, झालदा, रघुनाथपुर)

पुरुलिया–यहां प० बंगाल प्रान्तमें स्वंय जिला हैयर एस० ई० आर० की आद्रा चक्रधररपु लाईन पर आद्रा से ४० कि० मी० की दूरी पर स्थित है । १९५७ से पहले यह विहार प्रदेश में था। सवारी के लिए तागां टैक्सी और रिक्शा, मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल---यह स्वास्थ्य वर्धक स्थानथ्य है । लाख (चपड़ा) कारखाना है। साहब बाँध देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं---चावल, लाख आदि ।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाइटेड बैंक

झालदा—यह पुरुलिया जिले में है। दक्षिण पूर्वी रेलवे का यह एक स्टेशन

है। सवारी के लिए रिक्शा तथा तागां मिलते हैं। पुरुलिया से वसें भी जाती हैं।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने का प्रवन्ध है।

उत्पदित वतुएं—लाख, लोहे, के चाकू दंराती आदि।

रघुनाथपुर—यह पुरुलिया जिले में है। इसका रेलवे स्टेशन आद्रा हैं। दक्षिण पूर्वी रेलवे के अन्तंगत है। सवारी के लिए तांगा मिलता है।

उत्पादित वस्तुएं—रेशम।

जिला वर्दवान

(बर्दवान, आसनसोल, कटवा, कालना, चितरंजन, दुर्गापुर, बर्नपुर, बराकर रानीगंज)

बर्दवान—यह पश्चिमी बंगाल का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण जिला है। यहाँ पर लोहे की खानें हैं। यह पूर्वीरेलवे की हावड़ा-क्योल लूप लाईन पर हावड़ा से ८७ कि० मी० है यह वीरभूम के दक्षिण में वसा है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगा मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शशि भूषण वसु की धर्मशाला तथा मारवाड़ी धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, सर्व मंगला स्थान, १०९ शिव मन्दिर, सोना काली वाड़ी, महन्थ स्थल, यूनियर सीटी, शेर अफगान की कब्र, महाराज का महल आदि देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, जूट, अरहर, गेहूं, चीनी, मिही दाना, सिता भोग मिठाई आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सैन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक व यूनाईटेड बैंक आदि।

आसनसोल—यह एन० ई० आर० की मुगलसराय-हावड़ा लाईन पर मुगलसराय से ४६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। इसका जिला वर्दवान है। यह एक व्यापारिक मण्डी है। कोयले की खाने हैं। गौशाला है। सारा नगर विविध प्रकार के कारखानों से घिरा हुआ है। सवारी के लिए रिक्शा व तांगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालाएं हैं। जिनमें:—आशाराम जहारी मल की धर्मशाला, राम नारायण की धर्मशाला, गंगा विष्णु की धर्मशाला, मन्ना लाल की धर्मशाला, पन्ना लाल की धर्मशाला, हरिचरण लाल की धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, केबिल फैक्टरी, इन्जन बनाने का कारखाना, कोयले की खानें, लोहा, एलमोनियम, साईकिल के कारखाने तथा कपड़े की मिलें। मैथान बांध—यह आसनसोल से २५ कि० मी० की दूरी पर है।

उत्पादित वस्तुयें—कोयला, केला, साईकिल, बिजली के तार आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक, यूनियन बैंक।

कटवा—यह वर्दवान जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-बारहरवा लाईन पर हावड़ा से १४४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा व तांगा मिलता है।

विश्राम स्थल—शहर में ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—नगर में कई मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुए—धान, चावल, जूट, पाट, गुड़ आदि।

बैंक—स्टेट, कटवा सेन्ट्रल कूप आदि बैंक हैं।

कालना—यह जिला वर्दवान में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-धुलियन गंगा लाईन पर हावड़ा से ८२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, ताँगा मिलते हैं।

बैंक—स्टेट, कालना, सैन्ट्रल, कूप आदि बैंक हैं।

चितरंजन—यह वर्दवान जिले में पूर्वी रेलवे की मुगलसराय हावड़ा लाईन पर मुगलसराय से ५२० कि० मी की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलते हैं। यहां रेल के इंजन बनाने का भारत का सबसे बड़ा कारखाना है।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। शहर में धर्मशाला तथा टूरिस्ट बंगला है।

दर्शनीय स्थल—रेल के इंजन बनाने का कारखाना, चितरंजन गैस्ट हाऊस, हिन्दुस्तान केबिल फैक्टरी, मीही जम हाऊस आदि देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—रेल के इंजन, केबिल आदि।

बैंक—स्टेट बैंक।

दुर्गापुर—यह नगर वर्दवान जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से १७१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ की आबादी ५५,-००० है। स्टील की बहुत बड़ी फैक्ट्री है यह नगर मजदूरों एवं इन्जिनियरों का नगर है।

विश्राम स्थल—टूरिस्ट लॉज में ठहरने का उत्तम प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—केन्द्रीय मेकेनिकल इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्था, स्टील-फैक्ट्री, दुर्गापुर बाँध (जिसकी लम्बाई २२७१ फीट है), बिजली बनाने का स्टेशन, पावर हाऊस, पुल, पुराना मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—स्टील।

बैंक—स्टेट, पंजाब नेशनल, सैन्ट्रल आदि बैंक हैं।

बर्नपुर—बर्दवान जिले में दक्षिण पूर्वी रेलवे की आद्रा-आसनसोल लाईन पर आद्रा से ३७ कि० मी० दूर है। सवारी के लिये रिक्शा तथा ताँगा मिलते है।

विश्राम स्थल—बर्नपुर होटल (फोन न० २८१०) में ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—बर्नपुर स्पात का कारखाना।

उत्पादित वस्तुयें—लोहा आदि।

बैंक—स्टेट बैंक ।

बराकर—यह जिला वर्दवान में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से २१६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा, टैक्सी मिलते हैं। यह प्रसिद्ध मण्डी है।

विश्राम स्थल—सागर मल भखरिया की धर्मशाला तथा सर्राफ धर्मशाला।

दर्शनीय स्थल—आर्यसमाज मन्दिर, सरस्वती मन्दिर, सन् ११०० ई० का का बना हुआ शिव मन्दिर इस मन्दिर में चित्रकारी देखने योग्य है, कल्याणेश्वरी का मन्दिर तथा अन्य भी कई स्थान देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान चावल आदि।

बैंक—यूनाईटेड कामर्शियल बैंक।

रानीगंज—यह नगर वर्दवान जिले में पूर्वी रेलवे की मुगलसराय-हावड़ा लाईन पर मुगलसराय से ४७६ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर एक गौशाला है। कोयले की प्रसिद्ध खानें हैं। खानें खोदने वालों की आबादी अधिक है।

उत्पादित वस्तुएं—कोयला।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाईटेड कामर्शियल बैंक।

जिला वीरभूम

(अहमदपुर, इलम बाजार, किरनाहार, चतरा, तारापीठ, रोड दुबराज पुर, नलहाटी, बोलपुर, मोल्लारपुरम, रामपुर हाट, लोहापुर, लाबपुर, सूरी, सैंथिया)

अहमदपुर—इसका जिला वीरभूम है तथा पूर्वी रेलवे की हावड़ा-क्योल लूप लाईन पर एक स्टेशन है। बोलपुर से २० किलो मीटर दूर है। सवारी के लिये रिक्शा है। यहां चावल की मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—शहर में होटल हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, चीनी, आदि।

बैंक—यहां पर बैंक की कोई शाखा नहीं है। सैंथिया बोलपुर तथा सूरी नगरों के बैंकों से कारोबार होता है।

इलमबाजार—यहां रेलवे स्टेशन नहीं है तथा जिला वीरभूम जिले में स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। यहां व्यापारिक मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला तथा होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक प्राचीन मन्दिर हैं। ५०० वर्ष पुराना महाप्रभु का मन्दिर तीन सौ वर्ष पुराने लक्ष्मी मन्दिर तथा गौरी माई का मन्दिर तथा दो सौ वर्ष प्राचीन राधा माधव मन्दिर देखने योग्य हैं। कला की दृष्टि से शिव मूर्ति मन्दिर सुन्दर है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान।

किरनाहार—यह जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की अहमदपुर कटवा लाईन पर स्थित है। कटवा जंकशन से ३० किलो मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। यह अनाज की मण्डी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये होटल है।

दर्शनीय स्थल—कई छोटे-२ मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तु—चावल, जौ, चना।

बैंक—यूनियन बैंक आफ बंगाल।

छतरा—इसका जिला वीरभूम है। पूर्वी रेलवे की हावड़ा क्योल लूप लाईन पर स्थित है। हावड़ा से इसकी दूरी १८३ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। व्यापार की मण्डी है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान, अलसी, तेवड़ा।

तारापीठरोड—यह जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की हावड़ा क्योल लाईन पर स्थित है। हावड़ा से इसकी दूरी २१३ कि० मी० की दूरी पर है। यह मल्लार पुर से ६ कि० मी० है। इसके चारों ओर घने जंगल हैं।

विश्राम स्थल—एक धर्मशाला मन्दिर के पास है तथा दूसरी शहर में है।

दर्शनीय स्थल—स्टेशन से ३ कि० मी० की दूरी पर तारा मां का मन्दिर है। यहाँ दर्शन करने के लिये दूर-२ से यात्री आते हैं।

दुबराजपुर—जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की ओडंल सैंथिया ब्रांच लाईन पर ओड़ंल से ३५ कि० मी० दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। यह मण्डी हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से एक कि० मी० की दूरी पर धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—मामा भाँजे के पहाड़ हैं जो बहुत सुन्दर है। यहां से कुछ दूरी पर शिव मन्दिर है जो वकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर गर्म पानी के कुण्ड हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चना, धान, चावल आदि।

बैंक—सूरी के बैंक हैं। वहीं से यहाँ का कारोबार चलता है।

नलहाटी—जिले वीरभूम में पूर्वी रेलवे की अजीमगंज नलहाटी लूप लाईन पर स्थित है। अजीमगंज से ३९ कि० मी० तथा हावड़ा से २५५ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा मिलते हैं। यहां पर व्यापारिक मण्डी हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन के पास १॥ कि० मी० की दूरी पर धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं। यहां पर राजा नन्द कुमार को फाँसी दी थी। यह स्थान यहाँ से ८ कि० मी० की दूरी पर है। स्टेशन से एक १॥ कि० मी० की दूरी पर भद्र काली मन्दिर, पहाड़ी पर भगवती माता देवी का मन्दिर है। इस मन्दिर की गणना ५२ तीर्थों के अन्तर्गत की जाती है। माताजी ५२ पीठों में से एक पीठ नलहाटी में है। लोटेश्वरी देवी का मन्दिर भी देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें---धान, चावल, खाण्डसारी, आलू आदि।

बैंक—नलहाटी सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक।

बोलपुर—जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-क्योल लूप लाईन पर हावड़ा से १४६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती हैं यहाँ धान, चावल की प्रसिद्ध मण्डी हैं।

विश्राम स्थल---यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व होटल हैं।

विशेष—संसार प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र शान्ति निकेतन यहाँ से ३ कि० मी० की दूरी पर है। यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म स्थान है। शान्तिनिकेतन दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें---चना, धान, चावल आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाइटेड बैंक।

मोल्लारपुर--जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-क्योल लूप लाईन पर सैंथिया से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। यह मण्डी है। यहां पर चावल मिल भी हैं।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये कोई उचित स्थान नहीं हैं।

दर्शनीय स्थल—रेलवे स्टेशन से ६ कि० मी० की दूरी पर तारा देवी का मन्दिर हैं।

उत्पादित वस्तुये—धान, चावल, आदि।

रामपुर हाट—जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की क्योल हावड़ा लाईन पर क्योल से से ३०५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती हैं। यहां मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—कुछ दूरी पर तारा मां का मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, चना, अलसी, आदि।

बैंक---रामपुर हाट सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक।

लोहापुर—इसका जिला वीरभूम है। पूर्वी रेलवे की अजीमगंज नलहाटी लूप लाईन पर स्थित है। अजीमगंज से २७ कि० मी० की दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती हैं। यह मण्डी भी है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल आदि।

लाबपुर—जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की अहमदपुर कटवा लाईन पर स्थित है। कटवा से ४० कि० मी० की दूरी पर है: सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। एक छोटी सी मण्डी भी है।

विश्राम स्थल—ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल---यहां पर फुलेरा माँ का मन्दिर है। माता के ३२ पीठो में से एक पीठ लाबपुर में है। यहां के प्राकृतिक दृश्य अवलोकनीय हैं।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल आदि ।

सूरी–जिला वीरभूम में पूर्वी रेलवे की ओडंल सैंथिया ब्राँच लाईन पर ओडल से ५४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । सवारी के लिये रिक्शा मिलती है । यहां मण्डी भी हैं ।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये नगर में धर्मशाला व होटल हैं ।

दर्शनीय स्थल—शिव मन्दिर देखने योग्य हैं ।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान, आदि ।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाईटेड बैंक ।

सैंथिया– यह जिला वीरभूम है । पूर्वी रेलवे की हावड़ा बयोल लूप लाईन पर हावड़ा से १७८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । सवारी के लिये रिक्शा मिलती है । यहाँ मण्डी भी है ।

दर्शनीय स्थल—कन्हैया लाल झुझंनु वालों की धर्मशाला तथा स्टेशन से दो फलांग पर मारवाड़ी धर्मशाला है ।

दर्शनीय स्थल—नन्दकेश्वरी का मन्दिर, जैन मन्दिर ।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान. खाण्डसारी आलू गेहूं, अलसी आदि ।

बैंक—स्टेट बैंक ।

जिला बांकुरा

(बाँकुरा, विष्णुपुर सोना मुखी)

बांकुरा—यह पंजाब बंगाल प्रान्त में स्वयं जिला है यह एस० ई० रेलवे की हावड़ा गोमोह लाइन पर हावड़ा से २३१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है । इस नगर में गृह ऊघोग धन्धों का काफी विकास हो रहा है । सवारी के लिए रिक्शा मिलती है । गौशाला है ।

विश्राम स्थल—नगर में यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था है ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं । प्राचीन खण्डहर भी महत्वपूर्ण हैं । यहां से थोड़ी दूरी पर जयराम वाटी है । यह शारदा देवी का जन्म स्थान है । यहाँ पर एक सुन्दर मन्दिर है । देश के कोने कोने से यात्री शारदा के जन्मोत्सव पर एकत्रित होते हैं ।

'बेहुलारा' नगर से थोड़ी दूर पर है । यहां पर दसवीं शताब्दी का बना हुआ सिद्धेश्वर मन्दिर बहुत सुन्दर है । कंसावती डेम, सुसुनिया पहाड़, झिली मिली देखने योग्य है ।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, तेल, सरसों, आम, ताँत के वस्त्र रेशम आदि

बैंक–स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक ।

विष्णुपुर—यह बाँकुरा जिले में एस० ई० रेलवे की हावड़ा-गोमोह लाइन पर हावड़ा से २०१ कि० मी० की दूरी पर है । यह एक ऐतिहासिक स्थान है ।

दर्शनीय स्थल—यहां पर अनेक मन्दिर हैं जिनमें मालेश्वरी मन्दिर, लालगिरि मन्दिर, मदन गोपाल मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक।

सोना मुखी—बाँकुरा जिले में एस० ई० रेलवे की बांकुरा-दस्सादेर लाईन पर स्थित है। बांकुरा से यह ४० कि० मी० है। सब सवारी मिलती है।

विश्राम स्थल— यात्रियों के ठहरने के लिए शहर में धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—अनेक सुन्दर मन्दिर हैं। हरिनाथ मन्दिर, सरोवर (मन्दिर के पीछे), शिव मन्दिर, राधाकृष्ण मन्दिर आदि।

ज़िला मालदा

मालदा—यह पश्चिमी बंगाल का एक जिला है। यह नगर एन. एफ. आर: की कटिहार-सिघावाद लाईन पर सिंघावाद से ३० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलती हैं। इस नगर के पश्चिम में गंगा बहती है और पूर्व में पाकिस्तान की सीमा है।

विश्राम स्थल—स्टेशन से १॥ कि० मी० की दूरी पर गाँधी धर्मशाला है। इन्गिलिश बाजार में डाक खाने के पास प्राण नाथ की धर्मशाला है, माल्दा टूरिस्ट लॉज आदि।

दर्शनीय स्थल—यह ऐतिहासिक नगर है। यहां प्राचीन भवन और खण्डहर दर्शनीय है। एक आर्यसमाज मन्दिर है।

इन्गिलिश बाजार से १६ कि० मी० की दूरी पर 'गौर' है यह रायलखन सैन की राजधानी थी। यह प्राचीन भारतीय दस्तकारी में ऊंचा स्थान रखता है। शाह-मीनार, सलामी दरवाजा, कदम रसूल, फतह खाँ का मकबरा, लकचारी दरवाजा, चीका मस्जिद, कोतवाली गेट आदि इमारतें देखने योग्य हैं और ये प्राय: १४वीं तथा १५वीं शताब्दी की निर्मित है।

पांडू—यह इंगलिश बाजार से १७ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पर बीस हजारी मन्दिर, शास हजारी मन्दिर, स्वर्ण मस्जिद आदि देखने योग्य हैं। आदिना मस्जिद १३७४ में सिकन्द्रशाह द्वारा बनवाई गई थी। यह कसौटी पत्थर की बनी हुई है।

फरक्का बैरेज—यह गंगा नदी पर बना हुआ विशाल बाँध है और माल्दा से २६ कि० मी० दूर है। इस पर लगभग ५०० करोड़ रुपये व्यय हुए थे।

यहां का इंगलिश बाजार भी बहुत सुन्दर बना हुआ है जो देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, आम व सेमल (सेमल से कपड़े बनते हैं)।

बैंक—स्टेट बैंक, यूनाईटेड बैंक।

जिला मुर्शिदाबाद

(मुर्शिदाबाद, खगड़ा, जिया गंज, धुलियन, बेलडाग, बरहमपुर, सालार)

मुर्शिदाबाद—यह पूर्वी रेलवे का एक स्टेशन है। कलकत्ता स १९७ कि. मी.

की दूरी पर है यह नवाव सिराजुद्दौला की राजधानी है। तथा गंगा नदी के दक्षिण में है। सवारी के लिए रिक्शा तथा टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—स्टेशन से ३ कि० मी पर नवाव की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर प्राचीन काल के महल, मस्जिद तथा मकबरे हैं। नवाब का बाग तथा हनुमान जी का मन्दिर अति सुन्दर हैं। मुर्शिदावाद से १६ कि० मी० पर चार बगला मन्दिर तथा वारन गोर है। इसको रानी भवानी ने १८वीं शताब्दी के अन्त में बनवाया था। इसकी दीवारों पर महाभारत व रामायण के दृश्यों का सुन्दर चित्रण है।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, जूट, दाल, आम, गेहूँ आदि।

खगड़ा—यह मुर्शिदावाद जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा बड़हरवा लाईन पर हावड़ा से २०२ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिए रिक्शा व टैक्सी मिलते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—गल्ला, जूट, दाल, आम, गेहूं आदि।

बैंक—स्टेट बैंक व यूनाईटेड बैंक।

जियागंज—जिला मुर्शिदाबाद में पूर्वी रेलवे की सियालदा-लाल गोला लाईन पर सियालदा से २०४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है।

विश्राम स्थल—स्टेशन से दो फर्लांग पर एक धर्मशाला है।

उत्पादित वस्तुयें—गल्ला, चना, जूट, मसूर, खाण्डसारी, मटर, अरहर आदि।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया।

धुलियन—यह पूर्वी रेलवे की हावड़ा धुलियन गंगा लाईन पर स्थित है। हावड़ा से २८१ कि० मी० तथा बड़हरवा से २८ कि० मी० को दूरी पर है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है।

उत्पादित वस्तुये—गल्ला, जूट, चावल आदि।

बैंक—स्टेट बैंक तथा सैण्ट्रल बैंक।

बेलडंगा—मुर्शिदावाद जिले में है। पूर्वी रेलवे की कलकत्ता-लाल गोलाघाट लाईन पर स्थित है। कलकत्ता से १६७ कि० मी० दूर है। सवारी के लिये रिक्शा टैक्सी मिलती है।

उत्पादित वस्तुयें—गल्ला, जूट आदि।

बरहमपुर—जिला मुर्शिदाबाद में पूर्वी रेलवे की सियालदा लाल गोला लाईन पर सियालदा से १८६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा व टैक्सी मिलते हैं।

विश्राम स्थल—शहर में यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

दर्शनीय स्थल—बहरमपुर विश्वविद्यालय तथा यहां पर ३२ कि० मी० की दूरी पर बौद्ध मन्दिर दसवीं शताब्दी का बना हुआ है।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, यूनाइटेड बैंक, बरहमपुर बैंक आदि हैं।

सालार—यह प० बंगाल प्रान्त के मुर्शिदाबाद जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-धुलियन लाईन पर हावड़ा से १६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल आदि।

बैंक—यहां पर कोई बैंक नहीं है। कटवा के बैंकों से कारोबार चलता है।

जिला मिदनापुर

(खड़गपुर, झारग्राम, बेलदा बाजार, महिशादल, मिदनापुर)

खड़गपुर—यह जिला मिदनापुर में है। एस० ई० रेलवे की हावड़ा-नागपुर लाईन पर हावड़ा से ११६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह रेलवे का बहुत बड़ा जंक्शन है। टैक्नीकल शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र है। यहां से बम्बई, मद्रास एवं कलकत्ता की ओर रेलें जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये होटल तथा रिटायरिंग रूम हैं।

दर्शनीय स्थल—टैक्नीकल कालिज।

उत्पादित वस्तुयें—धान, चावल, सरसों, मूंग, दाल, अरहर, अनाज, किराना।

बैंक—स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड बैंक, मेट्रोपोलिटन बैंक।

झारग्राम—मिदनापुर जिले में एस० ई० आर० की हावड़ा नागपुर लाईन पर हावड़ा से १५४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। प्राकृतिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य वर्धक जलवायु के लिये यह स्थान उत्तम है।

दर्शनीय स्थल—प्राकृतिक सौन्दर्य।

उत्पादित वस्तुयें—मूंगफली, धान, जूट, तिल, उड़द, मूंग आदि।

बैंक—स्टेट बैंक, मिदनापुर बैंक आदि हैं।

बेलदा बाजार—यह मिदनापुर जिले में है। यह रेलवे स्टेशन नहीं है। इस के पास कोंटाई रेलवे स्टेशन है। सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—चावल, धान, तेल, सरसों आदि।

बैंक—स्टेट बैंक।

महिशादल—यह नगर जिला मिदनापुर में एस० ई० आर० पर है। यहां से ९ कि० मी० की दूरी पर ज्योखाली है। जो कि देखने योग्य है। यह रूप नारायण और हुगली नदियों के संगम पर बसा हुआ है। यात्रियों के ठहरने के लिये एक डाक बंगला बना हुआ है।

मिदनापुर—यह एस० ई० आर० की हावड़ा गोमोह लाईन पर स्थित है। हावड़ा से १२९ कि० मी० की दूरी पर है। यह पश्चिमी बंगाल के दक्षिणी पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यहाँ पर सवारी के लिये रिक्शा और ताँगे मिलते हैं।

उत्पादित वस्तुयें—आम, केला, सफेद जामुन, नारियल आदि।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया, यूनाईटेड बैंक, मिदनापुर बैंक, मिदनापुर सैण्ट्रल को-आपरेटिव बैंक।

जिला हावड़ा

हावड़ा—पूर्वी रेलवे की मुगलसराय हावड़ा लाईन पर मुगलसराय से ७५७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर एक गौशाला है। हुगली नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहां सभी सवारियाँ उपलब्ध हैं। रेलवे का बहुत बड़ा जंकशन है।

विश्राम स्थल—यात्रियों के ठहरने के लिये होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—इंजिनियरिंग कालिज, बोटनीकल गार्डन, स्वामी जी का मन्दिर, संस्कृत और धार्मिक पुस्तकालय, यह श्री राम कृष्ण परमहंस की जन्म भूमि है उनके जन्म दिवस पर हजारों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

विशेष—कलकत्ता-हावड़ा एक ही स्थान पर बसे हैं पेज ४०३ में पढ़िये।

बैंक—स्टेट बैंक, सैण्ट्रल बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाटेड कामर्शियल बैंक, इलाहाबाद बैंक, बड़ौदा बैंक, यूनाइटेड बैंक, हिन्दू कामर्शियल बैंक।

जिला हुगली

(हुगली, चन्दरनगर, चिनसूरा, तारकेश्वर, पंडुआ, बंस बेरिया)

हुगली—यह पूर्वी रेलवे की हावड़ा-दिल्ली लाईन पर हावड़ा से ३८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यह कलकत्ता के निकट है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, तांगा, सिटिबस आदि मिलते है।

दर्शनीय स्थल—वानी का इमामवाड़ा और हुगली कालिज देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—केला, चीनी, जूट।

चन्दर नगर—यह हुगली जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-मुगलसराय लाईन पर हावड़ा से ३२ कि० मी० की दूरी पर है। यह एक ऐतिहासिक नगर है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नन्दलाल के मन्दिर और भुवनेश्वरी मन्दिर देखने योग्य हैं।

चिनसूरा—हुगली जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा बानडेल लाईन पर हावड़ा से ३६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर प्राचीन गिरजाघर देखने योग्य है।

तारकेश्वर—जिला हुगली में पूर्वी रेलवे की हावड़ा-तारकेश्वर ब्रांच लाईन पर स्थित है। हावड़ा से इसकी दूरी ५८ कि० मी० है। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती हैं।

दर्शनीय स्थल—तारकेश्वर का प्रसिद्ध मन्दिर देखने योग्य है। यहां पर हर वर्ष शिव रात्री को चैत्र संक्रान्ति को बहुत बड़ा मेला लगता है।

बैंक—स्टेट बैंक आफ इण्डिया।

पंडुआ—यह हुगली जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा मुगलसराय लाईन पर

स्थित है। हावड़ा से ६१ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा मिलती है।

दर्शनीय स्थल---एक मीनार, दो मस्जिदें तथा एक मकवरा अवलोकनीय हैं।

बसबेरिया---यह हुगली जिले में पूर्वी रेलवे की हावड़ा धुलियन गंगा लाईन पर स्थित है। हावड़ा से इसकी दूरी ४४ कि० मी० तथा बानडेल से ३ कि० मी० है। सवारी के लिये रिक्शा मिलती है। यहां से कुछ मील की दूरी पर डनलप रबड़ फैक्ट्री है।

दर्शनीय स्थल—वासुदेव तथा हंसे सवारी मन्दिर बहुत सुन्दर बने हैं। इन मन्दिरों की दीवारों की चित्रकला देखते ही बनती है।

हावड़ा से कुछ प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में (रेल द्वारा)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
अंडाल	१८७	अगरपाड़ा	१४	आसनसोल	२१३
कटक	४०९	क्यूल	४२१	कँचरापाड़ा	२०
कृष्णानगर	१००	कृष्णपुर	२२६	कालाघाट	५५
खड़गपुर	११६	खुरदारोड	४५६	खाना	१२०
गेडे	११७	गोंडिया	१००१	गोमोंह	३५७
चक्रधरपुर	३१५	चाँया	६६६	चितरंजन	२३८
जसीडीह	३२३	जियागंज	२०८	झाझा	३६७
झारसुगुड्डा	५१५	डानकुजी	२२	डायमण्डहारबर	६०
डोंगरगढ़	९२८	ताता नगर	२५०	तुमसररोड	१०५१
दत्तपुकुर	३०	दमदम	७	दुर्गापुर	१७१
नागपुर	११३१	नौपाड़ा	७०२	नौहाटी	३८
प्लासी	१५०	पार्क सर्कस	३	बक्सर	६६३
बडेल	४०	बज-बज	२६	बनगाँव	७७
बरुईपुर	२५	ब्रह्मपुर (गंजाम)	६०३	बारकपुर	१४
बालीचक	९२	बारासत	२३	बालीगंज	६
बाकुण्डा	२३१	बालासोर	२३२	बिराटी	१४
बेलडांगा	१६८	बेहरमपुरकोर्ट	१८६	भद्रक	२९४
भाद्रा	२८४	भुवनेश्वर	४३७	भोजडीह	३१४
मदनकाटा	२८०	मधुपुर	२९४	मिदनापुर	१२९
मुगल	७५७	रानाघाट	७४	रानीगंज	१९४
राजखरसावा	२९२	रायगढ़	५८६	रायपुर	८२९
राउरकेला	४१३	रुप्सा	२१४	राधा मोहनपुर	८५
लक्ष्मीकांतपुर	६२	वर्दमान	१०४	वाल्टेयर	८७९
विजयानगरम्	८१९	त्रिलासपुर	७१९	सीतारामपुर	२२२
सीनी	२७७	सेवडाकुली	२३	सोनारपुर	१७
हावरा	४५				

आसाम

अनगिन चायों के बाग यहां,
है दृश्य यहाँ सुन्दर सुन्दर.
शिलांग यहाँ की राजधानी,
मुस्काता जीवन हर घर घर.

जिला कछार

(भुवनबाबा, सिलचर)

भुवानबबा—आसाम प्रान्त के जिला कछार में भुवनबासा सिलचर से ६० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां बसें चलती है। टैक्सी व रक्शा यहां कीस्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये तीर्थ स्थानों के पास ही उचित प्रवन्ध है तथा भोजन आदि की भी व्याख्या है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर भुवन बाबा का मन्दिर, सरोवर, मुख्य तीर्थ के पास एक गुफा है जिसमें अंधेरा होने से यात्री प्रवेश नहीं करते हैं लेकिन देखने योग्य मानी जाती है।

सिलचर—आसाम प्रान्त के जिला कछार में सिलचर एन० एफ० आर० की बदरपुर-सिलचर लाईन पर बदरपुर से ३० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियां मिलती हैं। रिक्शा, तांगा व टैक्सी यहां की स्थानीय सवारियां हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये मन्दिर के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर श्री श्याम सुन्दर मन्दिर, श्री नृसिंह अखाड़ा, श्री काली माता का मन्दिर तथा श्री राधा माधव अखाड़ा देखने योग्य हैं।

उत्पादित वतुयें—यहाँ पर चाय, रूई, जूट, चावल, संतरा, सुपारी, तिल, अदरक आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, असम को-आपरेटिव बैंक आदि बैंक हैं।

जिला कामरूप

(कामरूप, गोहाटी नलवाडी, रंगिया, बरपेटा रोड, पाठशालाकामाख्या(गुड़ी)

कामरूप—आसाम प्रान्त में कामरूप स्वयं एक जिला है। यह एन० एफ० आर० की गोहाटी-तिनसुकियां लाइन पर गोहाटी से ४६ कि० मी० की दूरी पर ५१ सिद्ध पीठों में एक सर्वोत्तम पीठ के रूप में बसा हुआ है। लगभग सभी सवारी यहां पर मिलती हैं। रक्शा, ताँगा, टैक्सी यहां की स्थानीय सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास है और दूसरी धर्मशाला शहर में है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर आर्य समाज मन्दिर व अन्य मन्दिर है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चावल, धनियाँ, सरसों, जूट, सुपारी की पैदावार होती है।

गोहाटी—यह असम प्रान्त के कामरूप जिले में गोहाटी पूर्वोत्तर सीमा रेलवें की मनिहारी तिनसुकिया लाईन पर मनिहारी घाट से ६४७ कि० मी० दूरी पर एक मंडी के रूप में स्थित है। यहां हवाई जहाज सहित सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये मारवाडी धर्मशाला स्टेशन से २ फर्लांग पर, सिक्खों की धर्मशाला स्टेशन से २ फर्लांग पर तथा हैप्पी लाँज, स्टेडियम गैस्ट हाऊस, स्ट्रेन्ड होटल, भरालूमुख (फोन न० २९६), कामाख्या होटल, मधुसदन होटल (खाने के लिये बहुत अच्छा है) फयो बाजार, कमर पाटी, आदर्श गृह (पार बाजार फोन न० २९३), अशोका होटल, अशोम होटल (पलटन बाजार), सर्किट हाउस (फोन न० ११४), डाक बगला (फोन १२९), टूरिस्ट बंगला (फोन न० ६०९) आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कामाख्या देवी का विशाल मन्दिर (गोहाटी से ५ कि० मी० दूर) उमानन्द का मन्दिर (डिप्टी कमीश्नर की अदालत के सामने नवगृह) मन्दिर (गोहाटी विश्वविद्यालय, ऐतिहासिक और पुरानी वस्तुओं के सग्रहालय के सम्बन्धी विभाग, राज्य अजायब घर, जिला लायब्रेरी, आल इण्डियां रेडियों, आर्य समाज, मण्डी, शुक्लेश्वर मन्दिर ब्रह्मपुत्र पुल, रेशमी धागों के मिल, सुआल कुची, औद्योगिक राज्य, चन्डूबी झील, दारनगा ८० कि० मी०, राज्य का चिड़िया घर, गोहाटी स्टेडियम, हाईकोर्ट बिल्डिंग, शराई घाट, भुवनेश्वर मन्दिर, गौशाला, तेल शोधक हवाई अड्डा आदि इसके अतिरिक्त १२ कि० मी० दूर 'वशिष्ट आश्रम, (यहाँ विशिष्ट विद्वानों की एक मन्दर कुटिया है जहाँ पर तीन छोटी प्यारी

नदियां संध्या, ललिता, और कान्ता यात्रियों का स्वागत करती है जो देखने योग्य है

इसके अतिरिक्त ८० कि० मी० दूर दाँरग में भूटानियों का मेला बहुत अच्छा लगता है। ये मेला नवम्बर से मार्च तक लगता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर उड़द काला व हरा, जूट, सुपारी, चाय, आलू, तिल चावल, सरसों आदि की पैदावार होती है।

बैंक'—यहाँ पर संण्ट्रल बैंक, आफ इण्डिया, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, यूनाईटिड कार्मशियल बैंक, यूनियन बैंक, असम को आपरेटिव बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि प्रमुख बैंक हैं।

नलवाड़ी—आसाम प्रान्त में जिला कामरूप में नलवाडी पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की मनिहारी घाट तिनसुकिया लाईन पर मनिहारी घाट से ५६७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियाँ मिलती हैं।

वश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये मारवाड़ियों की धर्मशाला स्टेशन पर है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर नारियल, धान, सुपारी, चावल, जूट, उड़द काली आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, व असम को-ओपरेटिव बैंक हैं।

रंगियां—आसाम प्रान्त के जिला कामरूप में रंगियाँ एन० एफ० आर० की मनिहारी घाट-तिनसुकिया लाईन पर मनिहारी घाट से ६२४ कि० मी० की दूरी पर तथा कटिहार से २६४ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्रामस्थल—यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास तथा दूसरी धर्मशाला शहर में है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर यात्रियों को नगर में देखने योग्य अनेकों मन्दिर दर्शनीय हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर चावल, जूट, सरसों, उडद, अण्डी की पैदावार होती है।

गरम पानी—यह गोला घाट में दस मील की दूरी पर गर्म पानी का स्रोत है इसमें से पृथ्वी में से गन्धक का गर्म पानी निकलता है वहां के मनुष्यों का विश्वास है कि गर्म पानी के इस सोते में एक गोता लगाने से त्वचा के अनेक रोग दूर हो जाते हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर मुक्तिनाथ महादेव का मन्दिर, इसके अतिरिक्त इसके बाई ओर विष्णु मन्दिर।

मानस सैन्चरी—यह आसाम प्रान्त में उत्तर पश्चिम के गोहाटी से १७६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये जंगल विभाग के दो विश्राम गृह है। जिनमें खाने पीने का अच्छा प्रवन्ध है।

दर्शनीय स्थल—यहां के दृश्य वहुत ही सुन्दर ही विशेष कर उस स्थान जहां से मानस नदी का पानी आसाम में मैदानों में गिरता है। यहाँ पर जंगली जानवरों के झुंड दर्शनीय है गोल्डन लेगुर भी देखने योग्य है।

कामाख्यागुड़ी—यह असम प्रान्त के जिला कामरूप में पूर्वी रेलवे को कटिहार-तिनसुकिया लाईन पर कटिहार से ६८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां के लिए नार्थ इस्ट्रन रेलवे से अमीन गांव जाना पड़ता है। वहां से ब्रह्मपुत्र नदी को स्टीमर से पार करके २॥ मील आगे चलकर कामाख्यागुड़ी पहुंच जाते हैं। एक रास्ता गोहाटी होकर भी जाता है।

विश्राम स्थल—यहां पर ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर नील पर्वत से उतरकर एक शिव मन्दिर है। यहां नवरात्रि को वहुत वड़ा मेला लगता है। इस मन्दिर के दर्शन करने के लिए नौका द्वारा जाना पड़ता है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, गेहूँ, जूट, उड़द आदि पैदा होती है।

बरपेटा रोड—यह आसाम प्रान्त के जिला कामरूप में एन० एफ० आर० की मनिहारी घाट-तिनसुकिया लाईन पर मनिहारी घाट से ५६० कि० मी० दूर तथा कटिहार से १६६ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ पर सभी सवारियाँ मिलतीं हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यह स्थान सत्रा के लिए प्रसिद्ध है। यह श्री महादेव द्वारा १५वीं शताब्दी मे स्थापित किया गया। इसके अतिरिक्त कीर्तन हाऊस अतिदर्शनीय है।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर जूट, दाल, सरसों, धनिया, कालाजीरा, तिल, खल, चावल, सुपारी, कत्था, सन, माटीकलाई आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट वैंक है।

पाठशाला—यह आसाम प्रान्त के जिला कामरूप में एन० एफ० आर० की मनिहारीघाट-पांडु लाईन पर बरपेटा से २० कि० मी० तथा कटिहार से २२० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सवारी के लिये रिक्शा तथा तांगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के विश्राम के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला तथा दूसरी धर्मशाला बाजार में है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर की पुरानी वस्तुएं देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर उड़द, सरसों, चावल, धनिया, सुपारी, जूट आदि पैदा होती है।

बैंक—बैंक बरपेटा रोड में है।

जिला गोवाल पाड़ा

(कोकड़ा झाड़, धुबड़ी)

कोकड़ाझाड़—यह असम प्रान्त के गोवाल पाड़ा जिले में पूर्वी रेलवे की मनिहारीघाट-तिनसुकिया लाईन पर कटिहार से १२७ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में बसा हुआ है। यहां पर सवारी के लिये रिक्शा, तांगा मिलता हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास रामरत्न कुर्मी की धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर सुपारी, उड़द, जूट, चावल आदि।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक है।

धुबड़ी—यह आसाम प्रान्त के गोवालपाड़ा जिले में पूर्वी रेलवे की फकीराग्राम-धुबड़ी लाईन पर फकीराग्राम से ६७ कि० मी० की दूरी पर एक व्यापारिक मण्डी के रूप में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्टेशन के निकट ही बसी हुई है। यहां पर सभी सवारियाँ उपलब्ध हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों को ठहरने के लिये एक मारवाड़ी धर्मशाला है इसके अतिरिक्त टाऊन होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर व ब्रह्मपुत्र नदी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ धनिया, जूट, उड़द, धान, गेहूं, चावल, मटर आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट, यूनाईटेड व असम को-आपरेटिव बैंक हैं।

जिला डिबरुगढ़

(डिबरुगढ़, रेहाबाड़ी)

डिबरुगढ़—यह आसाम प्रान्त में स्वयं एक जिला है और एन० एफ० आर० की तिनसुकिया-डिब्रुगढ़ लाईन पर तिनसुकिया से ४८ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बसा हुआ है। यहां पर सवारी के लिए रिक्शा व ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है इसके अतिरिक्त गोल्डन होटल व मारवाड़ी होटल हैं।

दर्शनीय स्थल--यहाँ पर विश्वविद्यालय, आर्यसमाज मन्दिर, गौशाला देखने योग्य हैं। इसके अतिरिक्त तेल-शोधक कारखानों का केन्द्र व खाद एवं पेट्रोलियम सम्बन्धी अनेक कारखाने हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चाय, खांड, सरसों आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट, पंजाब नेशनल, यूनाईटेड, असम को-आपरेटिव बैंक व अपेक्स बैंक हैं।

रेहाबाड़ी –यह आसाम प्रान्त के जिला डिबरुगढ़ जिले में स्थित है। यहां रेल नहीं जाती। शहर में रिक्शा, टैक्सी की सवारी मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां यात्रियों के ठहरने के लिये बहुत सी धर्मशालायें हैं।

दर्शनीय स्थल--शहर में शिवजी का पुराना मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ गेहूँ, चावल, धान, अलसी, व सरसों इत्यादि का उत्पादन होता है।

बैंक--कोई नहीं है।

जिला तिनसुकिया

तिनसुकिया—यह असम प्रान्त में स्वय एक जिला है। यह एन. एफ. आर. की मनिहारी घाट-तिनसुकिया लाईन पर पाण्डु से ५३२ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सवारी के लिए रिक्शा, तांगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास मारवाड़ी धर्मशाला तथा पंचायती धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शिव साम में चार मन्दिर एवं बीच में पानी का तालाब है जिसमें शिवजी की प्रतिमा रखी हुई है। जो देखने योग्य है। तथा आर्य समाज मन्दिर भी देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चाय, मक्का, सरसों व धान पैदा होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट, पंजाब नेशनल व यूनाईटेड बैंक हैं।

जिला दारंगा

(रांगापाड़ा, खारुपेटियाघाट, तेजपुर, टांगला)

रांगापाड़ा--असम प्रान्त के जिला दाँरग में राँगापाड़ा पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की रगिया-तेजपुर लाइन पर रगिया से १२४कि० मी० तथा तेजपुर से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर सभी सवारियाँ मिलती हैं रिक्शा व तांगा यहां की स्थानीय सवारियां हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—इस नगर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर चाय अधिक पैदा होती है।

बैंक—यहां तेजपुर के बैंको से काम होता है।

खारेपेटिया घाट—यह असम प्रान्त के जिला दारंग में गोहाटी से तेजपुर रोड पर जूट की एक प्रसिद्ध मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये बसें जाती हैं। तथा स्थानीय सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये हनुमान मन्दिर के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर जैन मन्दिर, महावीर चौबीसवाँ तीर्थांकर, श्री हनुमान मन्दिर तथा ब्रह्मपुत्र नदी की धारा देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर जूट, सरसों, तेल, उड़द, धनिया, लाल मिर्च, सुपारी आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ गोहाटी के बैंको से काम होता है।

तेजपुर—यह असम प्रान्त के जिला दारंग में एन० एफ० आर० की रंगिया-तेजपुर लाईन पर रंगिया से १५० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। सवारी के लिये रिक्शा व ताँगा मिलता है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां की गोशाला बनासुरा के महल के खण्डहर व अन्य कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जूट, खल, चावल, आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ स्टेट, यूनाईटेड, इण्डस्ट्रियल तथा गोहाटी बैंक हैं।

टांगला—आसाम प्रान्त के जिला दांरग में टांगला एन० एफ० आर० की रंगिया तेजपुर लाईन पर रंगिया से ४० कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर स्टेशन के पास एक धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिये है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ नगर के कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर धान, चावल, जूट, सुपारी सरसों आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, असम को-आपरेटिव बैंक व अपेक्स बैंक हैं।

जिला नौगाँग

(नौगांग, होजाई, हैवर गांव)

नौगांग—असम प्रान्त में नौगांग स्वयं एक जिला है। यह एन एफ० आर०

की फुरकटिंग मरियानी लाईन पर फुरकटिंग से ६ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ सभी सवारियां जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ नगर में एक मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जूट, सरसों, चावल, सुपारी, तेल, खल, उड़द, धनिया की अधिक पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, यूनाईटिड बैंक, गोहाटी को-ओपरेटिव बैंक, असम को ओपरेटिव बैंक, तथा अपेक्स बैंक हैं।

होजाई—असम प्रान्त के जिला नौगाँग में होजाई पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की गोहाटी तिनसुकिया लाईन पर गोहाटी से १ ६ कि० मी० तथा पाण्डु से १४५ कि० मीटर की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ के लिये सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये राजस्थान भवन (धर्मशाला) तथा पंचायती मन्दिर धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर पचायती मन्दिर तथा शिव मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर धान, चावल, तेल, सरसों, जूट, खल आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया हैं।

हैबरगांव—असम प्रान्त के जिला नौगांग में हैबरगांव एन० एफ० आर० की छपरमुख सिलघाट टाऊन लाईन पर छपर मुख से २६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ सभी सवारियां उपलब्ध होती हैं।

बिश्राम स्थल— यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर कई छोटे-२ मन्दिर है जो देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहां पर चाय और उड़द की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक व यूनाइटिड बैंक हैं।

प्रान्त मनीपुर

इम्फाल—मनीपुर प्रान्त के जिला इम्फाल स्वयं एक ज़िला है। यह एन० एफ० आर० की बरौनी डिबरूगढ़ की लाईन पर मनीपुर रोड से २१० कि० मी० की दूरी पर मनीपुर स्टेट की राजधानी के रूप में एक सुन्दर नगर बसा हुआ है। यहां रेल नहीं जाती बसें यहां आती-जाती है। रिक्शा, टैक्सी यहां की मुख्य सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये मारवड़ी की धर्मशाला बाजार में हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हिन्दी इण्टर कालिज, आर्य समाज मन्दिर तथा अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर सरसों, गेहूँ, लाल मिर्च, गुड़, मक्का, रूई आदि की पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाइटिड बैंक मनीपुर स्टेट को-ओपरेटिव बैंक हैं।

जिला लखीमपुर

डिगबोई—असम प्रान्त के जिला लखीमपुर में डिगबोई एन० एफ० आर० की डिब्रुगढ़ लैडो लाईन पर डिबरूगढ़ से ८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सभी सवारियाँ जाती हैं। रिक्शा व टैक्सी यहां की मुख्य सवारी हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ नगर के कई छोटे-२ मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर चाय, जूट, सरसों आदि की पैदावार होती हैं।

जिला सिबसागर

(सिबसागर, गोलाघाट, जोरहाट, नजीरा, फुरक टग, टीटाबार)

सिबसागर—असम प्रान्त में सिबसागर स्वयं एक जिला है। यह एन० एफ० आर० की सिमालुगुड़ी मोरनहाट लाईन पर सिमालुगुड़ी से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सभी सवारियां जाती है। स्थानीय सवारी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास तथा दूसरी धर्मशाला बाजार में तथा होटल भी हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर मुक्तिनाथ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर, इसके बाईं ओर विष्णु मन्दिर रंग घर तथा दाईं ओर भगवती मन्दिर है। उत्तर की ओर बड़ा सरोवर है यहा शिव रात्री को मेला लगता है जो देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त गारगाँव में कुछ ही दूरी पर अहोम राजा का ५ मंजिल का किला दर्शनीय हैं।

उत्पदितवस्तुएं—यहां पर गेहूँ, चना, दालें तेल आदि की पैदावार होती हैं।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, असम को-ओपरेरिव बैंक तथा अपेम्स बैंक हैं।

गोलाघाट—असम प्रान्त के जिला सिबसागर में गोलाघाट एन० एफ० आर० की फुरकटिंग मरियानी लाईन पर फुरकटिंग से ८ कि मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ लिये सभी सवारियां मिलती हैं। रिक्शा व ताँगा यहां की स्थानीय सवारियां हैं

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर में कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहाँ पर जूट, चावल, सरसों अधिक पैदा होती है।

बैंक—यहां पर स्टेट बैंक, असम को-ओपरेटिव बैंक व अपेम्स बैंक हैं।

जोरहाट—असम प्रान्त में जिला सिबसागर में जोरहाट एन० एफ० आर० की फुरकटिंग मरियानी लाईन पर फुरकटिंग से ६९ कि० मी० की री पर एक मण्डी

के रुप में स्थित है। यहां सभी सवारियां जाती हैं। टैक्सी रिक्शा व तांगा यहाँ की स्थानीय सवारियाँ हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। इसके अलिरिक्त मारवाड़ी होटल मेन रोड पर आदि है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर शहर के अनेकों मन्दिर तथा प्रादेशिक अनुसंधान शाला देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर धान, जूट, सरसों, सुपारी, उड़द आदि की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटिड बैंक, असम को-ओपरेटिव बैंक व अपेम्स बैंक हैं।

नाजिरा—अमम प्रान्त के जिला सिबसागर में नजीरा एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये शहर में धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर राया का गढ़, शिवजी का मन्दिर, नाथ जी का मन्दिर व चाय के बाग देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुए—यहां चाय की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक आफ इण्डिया है।

फुरकटिंग—असम प्रान्त के जिला सिबसागर में फुरकटिंक एन० एफ० आर० की मनिहारीघाट-तिनसुकिया लाईन पर पाण्डु से ३२८ कि० मी० की दूरी पर एक मण्डी के रूप में स्थित है। यहां सभी सवारियाँ मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यराँ पर यात्रियों के ठहरने के लिसे स्टेशन के पास एक धर्मशाला हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ पर शहर के छोटे-२ कई मन्दिर देखने योग्य है।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल व चाय की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहां के बैंक गौलाघाट में हैं।

टीटाबार—असम प्रान्त के जिला सिबसागर में टीटाबार एन० एफ० आर० की मनिहारीघाट-तिनसुकिया लाइन पर पाण्डु से ३५४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां सभी सवारियां मिलती हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये स्टेशन के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का शहर तथा छोटे-२ मन्दिर देखने योग्य हैं।

उत्पादित नस्तुएं—यहां पर चाय की अधिक पैदावार होती है।

बैंक—यहाँ के बैंक जोरहाट में हैं।

जिला शिलॉंग

शिलांग—यह असम प्रान्त की (शिलाँग) स्वयं एक सुन्दर राजधानी है। यह एन० एफ० आर० की लाईन पर गोहाटी से १०० कि० मी० की दूरी पर एक

बड़ी मण्डी के रूप में स्थित है। यहाँ रेल नहीं जाती लेकिन रेलवे ग्राउट ऐजेन्सी है। यहाँ पर गोहाटी और पाण्डु से बसें चलती हैं स्थानीय सवारी है।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला स्टेशन के पास है। दूसरी धर्मशाला बाजार में है तथा राज हंस होटल, दिल्ली होटल, गोल्डन होटल आदि होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यह भारत के वन्दर पहाड़ी स्थानों में से एक है। यहाँ पर छोटी नदियां, जल प्रपात, गहरी घाटियाँ व बड़ा बाजार आदि स्थान दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त और भी स्थान हैं जैसे—चैरापूंजी यह शिलांग से ५८ कि० मी० की दूरी पर है। यह एक पहाड़ी स्थान है। यह संसार में सबसे अधिक वर्षा होने के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिवर्ष वर्षा का औसत ४५८ होती है। चैरापूंजी के पास मवास्मी संसार के वर्षा होने वाले शहरों में चतुर्थ स्थान रखता हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर जड़ी-बूटियाँ, आलू, असगन्ध, लकड़ी पीपल तेजपात, धान आदि की अधिक पैदावार होती हैं।

बैंक—यहाँ पर स्टेट बैंक, यूनाइटिड बैंक, यूनाइटिड कामर्शियल बैंक, असम को-ओपरेटिव बैंक व अपेम्स बैंक हैं।

नोट:—मेघालय प्रान्त के जिले=गारो हिल्स, संयुक्त के और जे हिल्स, दो जिले है जो आसाम में से हटे हैं।

गोहाटी से कुछ प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में
(१०० किलोमीटर=६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
काजीरंगा	२४७	कामाख्यागुडी	२५६	किशनगंज	५५२
चापरमुख	६२	टीटाबार	३४६	तिनसुकिया	५११
दारंगा	८२	दीमापुर	२५०	नक्सालवाड़ी	४६८
नलवाड़ी	७८	पाठशाला	१०७	फरकाटिंग	३२०
फकीराग्राम	२२०	बारपेटारोड	१२८	बानरहाट	३५८
बोरहाट	४३७	मदारीहाट	३२७	रंगिया	६३
शिलांग	२००	सुआलकूंची	२४	सिलीगुड़ी	४४५
सिमनगुड़ी	४२२	हाजो	२२	होजाई	१३६

नागालैण्ड

जन्म भूमि यह नागाओं को,
मुस्काता पर्वतीय जीवन.
दर्शक के मनको हर लेते,
ऊंचे पर्वत, विस्तृत बन.

जिला नागालैंड

नागालेंड—नागालेंड भारत का पूर्वी सीमावर्ती प्रदेश है। इसकी जनसंख्या लगभग ४००००० (चार लाख) है, और क्षेत्रफल १६४८८ वर्ग कि० मी० (६३६६ वर्ग मील) है। यह समुन्द्र तल से १२०० से २०० फुट ऊंचा है। यहां पर प्रतिवर्ष १०० इन्च वर्षा हो जाती है। दीमापुर के आस-पास पूर्ण प्रदेश पहाड़ी है। नागालेंड अविकसित प्रदेश है। विकास की आवश्यकता है विकास होने पर गर्मियों के लिये एक दर्शनीय स्थान हो जायेगा। यह एक सीमा पृथक दर्शनीय स्थल व शिकारियों के लिये शिकार भूमि है। यहाँ रंग-बिरगे अनोखे पक्षी हैं। ये लोग नृत्य कला में बहुत ही निपुण है, इनकी नृत्य कला नत्य शास्त्रीयों व टूरिस्ट के लिये एक आकर्षण होगी कलकत्ता से हवाई जहाज द्वारा इम्फाल होकर नागालेंड पहुंचा जाता है। रेल व सड़क द्वारा भी यहाँ जा सकते हैं। यहां एक रेलवे स्टेशन दीमापुर है। जो यहाँ के व्यापार का केन्द्र है। यह नेशनल हाई वे न० ३६ पर स्थित हैं। यहां सरकारी बस भी चलती है। दीमापुर में हर प्रदेश के मनुष्य देखने में आते हैं हर किस्म के भोजन की सुविधा है यह नागालेंड का द्वार है यहां से अन्दर प्रदेश में प्रवेश के बसें मिलती हैं। परन्तु अन्दर जाने के लिये सब डिविजनल आफिस दीमापुर से टूरिस्ट लाज है। कोहिमा से ७६ कि० मी० (४६ मील) है।

दर्शनीय स्थल—कोहिमा के लिये रास्ते में मनहोर दृश्य देखने में आते हैं। कोहिमा में एक सरकारी हाई स्कूल है। यहाँ सैकड़ों नये मकान बन गये हैं। सभी संस्यागत भवन आधुनिक ढंग से बनाये गये हैं। यहां ट्यूरिस्ट लाज की बहुत जगह बनाई जायेंगी। कोहिमा से चारों ओर की सड़कें बना दी गई हैं।

मोकौकचंग - यह नागालेंड का दूसरा जिला है। यह कोहिमा से १५३ कि०

मी० दर है। सड़क घने जंगलों से (जहाँ बांस अधिकतर पैदा होता है) गुजराती है, तुली मोकोक चग के पास स्थित है। यहाँ लुग्दी व कागज का मिल वनाया जायेगा।

टयूनसांग—यह नागालैंड का तीसरा जिला है यह नगर मोकोकचंग से ८६ कि० मी० (५४ मील) है रास्ते में दिक्खू नदी पार करनी पड़ती है।

प्रदेश में अब शान्ति स्थापना हो जाने पर तथा आर्थिक व सामाजिक विकास के कारण यहाँ प्रदेश के वाहर से मनुष्यों का यहाँ आना व अदभुत स्थानों को देखने की सुविधा हो गई है। सैलानियों के लिये यह एक वहुत ही मनमोहक प्रदेश है। आगुन्तुक यहां की सुन्दरता को देखकर मोहित हो जाता है

कोहिमा से प्रमुख शहरों की दूरी कि० मी० में

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
दीमापूर	७५	मोकोकचंग	९६	टयूनसाँग	१८२

(इन शहरों की दुरी मालुम नहीं हो सकी) मेरार कोग

अघनाते	चेरी	नकसन	मरियानी
अखलोट्र	चचुयमिलाँग	नमटोला	यगंमा
अमगूरी	चांग टोगिया	नकलाल	लोगखिम
कोहिमा	जवजा	पाईफोमा	लोगलंग
खोनामा	जुलामी	पफस्टरों	लोंगपोगसिहा
खुजाया	जन्हेबोटू	फिक	लोगवा
घास पानी	टनसांग	फरकाटिग	लितमी
चुमुकदीमा	पीपांग	मोन	विसविमा
चकाबामा	तुली	मारुम	लाकचिग
चिवजमी	तस मीन्यू	मनधारी	तोखो
चाजवा	दीमापुर	मीरा पानी	सताखः
सोनारी	सनीष		

———

नेपाल

स्वतन्त्र राज्य नैंपाल यह,
धर्मिष्ठ यहाँ का हर व्यक्ति.
पशुपतिनाथ का मन्दिर विचित्र,
है जिसको जन-जन में भक्ति.

काठमांडू, जनकपुर धाम, जयनगर, मुक्तिनाथ

काठमांडू––यह नैपाल [redacted] में स्वयं एक जिला है। यह नैपाल [redacted] की राजधानी है। यह मुक्तिनाथ के २१० कि० मी० की दूरी पर एक सुन्दर नगर के रूप में चारो ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहां के लिए रक्सौल से बसें जाती हैं। रक्सौल से १९४ कि० मी० की चढ़ाई-उतराई के बाद काठमाँडू आता है।

विश्राम स्थल––यहाँ पर यात्रियों को ठहरने के लिए मारवाड़ी सेवा समिति हरि भवन (आई० सी० एम०) व पशुपति गोशाला धर्मशाला है। इनके अतिरिक्त सोलटी होटल, अन्नपूर्णा होटल, शंकर होटल, स्नोव्यू होटल, कोरोनेशन होटल, पैनोरमा होटल, ग्रीन होटल, पारस होटल, टाइगर होटल व टोपस होटल हैं।

दर्शनीय स्थल—यहां पर हनुमान धोका, सिंह दरबार, नारायण हित दरबार, बालाजू बाटर गार्डन यहां से ८ कि० मी० गोकर्न बन, १३ कि० मी० सुन्दरी जाल, ६ कि० मी० चोबर, ६ कि० मी० कीर्तिपुर, १० कि० मी० बुद्धा नील कंठा, २ कि० मी० नैपाल म्यूजियम, २ कि० मी० स्वयभू, ५ कि० मी० पशुपति नाथ मन्दिर, गोएस्त्ररी मन्दिर, ६ कि० मी० बोद्ध स्टूपा, महेन्द्र नाथ मन्दिर, १ कि० मी० ललितपुर, कृष्णा मन्दिर, जगत नारायण मन्दिर, महा बुद्धा, रुद्रवरना महाबिहार, हिरना महाविहार, कुम्भेश्वर मन्दिर, मिननाथ मन्दिर, अशोका स्टूपा, गोदावरी, रत्न पार्क, मछन्दर नाथ का मन्दिर तथा अन्य पहाड़ों के दृश्य व झरने देखने योग्य हैं।

उत्पादित वस्तुयें—यहां पर चावल, गेहूं, चना, प्याज व आलू की पैंदावार होती है।

विशेष—यहाँ से पश्चिम की ओर लगभग ३ कि० मी० पर वागमति नदी के किनारे पशुपति नाथ का मन्दिर है। नदी के दूसरे किनारे गुजेश्वरी देवी और बाबा गोरख नाथ जी का मन्दिर व धर्मशालायें हैं। यहां पर फाल्गुन बदी चौदस (शिव रात्रि) को विशाल मेला लगता है। यहां पशुपति नाथ को बहुत मानते हैं। यह विशाल मन्दिर सारे भारत में भी प्रसिद्ध है। यहां की जलवायु ठण्डी है। यहां के राजा श्री महेन्द्र वीर जी हैं।

(जनकपुर धाम (नेपाल),—यह नगर नैपाल राज्य में एन० ई० आर० की जयनगर भुतह वाली लाइन पर जयनगर से ३० कि० मी० की दूरी पर बसा हुआ है। स्थानीय यातायात के लिये रिक्शा, टैक्सी आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के हेतु गोपाल धर्मशाला, ददुवा वाली धर्मशाला, रौनियार समाज धर्मशाला बनी हुई हैं।

दर्शनीय स्थल—यहाँ का श्री जानकी मन्दिर, राम मन्दिर,लक्ष्मन मंदिर रगं भूमि, रत्ना सागर मंदिर,दशरथ मंदिर, सीता स्वयंबर आदि दर्शनीय है।
यहाँ पर चावल, मक्का, अरहर लाल, सरसों आलू, तेजपत्ता, बच, लालछड़, जायफल, सतावरी चिरायता, आदि का उत्पादन होता है। यहाँ पर अनाज की मंडी भी है।

बैंक—यहाँ नेपाल राष्ट्र, नेपाल बैंक शाखायें है।

जयनगर—यह नगर नैपाल राज्य में एन० ई० आर० की दरभंगा जयनगर ब्राचं वाली लाइन पर दरभंगा से ६८ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहां पर रिक्शा-टैक्सी आदि की सुविधायें प्राप्त हैं।

विश्राम स्थल—यहां पर यात्रियों के ठहरने हेतु हरिवन्श लक्ष्मी चन्द की की धर्मशाला, श्री दल श्रगांर सिंह की धर्मशाला, स्टेशन रोड पर मारवाड़ी धर्मशाला बनी हुई है।

दर्शनीय स्थल—यहां का श्री सत्य नरायण मंदिर, श्री शिलानाथ धाम आर्य समाज मंदिर गोशाला दर्शनीय है।

वस्तु उत्पादन—यहां पर चावल, तिल, जूट, अलसी, धान आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है।

विशेष—यह बिहार नेपाल का बार्डर है। यहां से जनक पुर (नेपाल) को रेलें जाती है।

बैंक—यहां स्टेट, सैण्ट्रल, पंजाब नेशनल बैंक आदि की आदि की शाखायें है।

मुक्तिनाथ—यह नैपाल प्रान्त में गोरखपुर-काठमाँडू लाईन पर काठमांडू से २२४ कि० मी० की दूरी पर एक धार्मिक स्थल के रूप में स्थित है। यहां के लिये सभी सवारियाँ आती-जाती हैं।

विश्राम स्थल—यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए मन्दिर के पास एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थल—यहां पर मुक्तिनाथ का मन्दिर, नारायनी नदी में गर्म पानी के ७ झरने हैं। इसमें अग्नि कुण्ड नामक झरना एक पर्वत से निकलता है। उसके उद्गम के पास पर्वत में अग्नि ज्वालाएं दिखाई पड़ती हैं।। यहां कई और देव मन्दिर हैं। यहां से २६ कि० मी० दामोदर कुण्ड है। टुकड़ी बाजार से कुली, भोजन व तम्बू साथ ले जाना चाहिए क्योंकि बर्फ पर अनुमान से चलना पड़ता है। दो दिन चलने पर पहले नकली कुण्ड आता है फिर एक दिन और चलने पर असली दामोदर कुण्ड आता है। वहां का रास्ता बहुत कठिन है, ठण्ड बहुत पड़ती है। वहां तक की यात्रा बहुत कम लोग ही कर पाते हैं। इससे आगे मार्ग बन्द हो जाता है।

उत्पादित वस्तुएं—यहाँ पर चावल व गेहूं अधिक पैदा होते हैं।

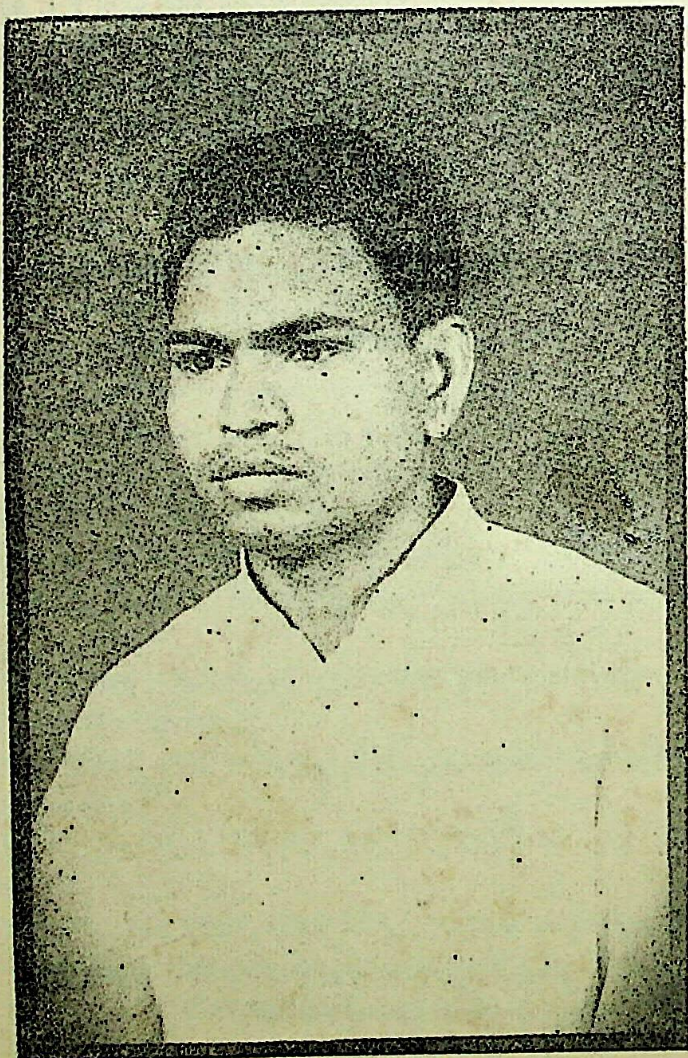
(काठमांडू से प्रमुख नगरों की दूरी कि० मी० में)

(१०० कि० मी० = ६२ मील के लगभग)

नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०	नगर	कि० मी०
ढोल खेल	३२	थानकोट	१३	पशुपतिनाथ	५
पाटन	५	बंशवादी	६	बालाजू	५
बारादेश	८२	बीरगंज	१९४	भक्तपुर	१४
हटौडा	१३९				

———

'ब' खण्ड



दीनबन्धु गुप्ता 'ब' खण्ड के सहयोगी

भारत का अनोखा इतिहास

संसार में सबसे पहला मनुष्य भारत में उत्पन्न हुआ। वह धीरे-धीरे विभिन्न रूप बदलता हुआ प्रकृति द्वारा बना अथवा किसी और लोक से स पृथ्वी पर आया, परन्तु यहीं से मनुष्य ने पृथ्वी के अन्य भागों को बसाया। सभ्यता और संस्कृति का उदय यहीं पर हुआ तथा यहीं से संसार के विभिन्न भागों में उसका विस्तार हुआ। मैं यहां सूक्ष्म रूप में यह बतलाना चाहता हूं कि हमारी परम्परा अनन्त काल से तैल धारावत चली आ रही है और आज भी वह दैवी शक्ति आसुरी शक्तियों से संघर्षरत है।

वर्तमान सृष्टि का आरम्भ जल प्लावन की घटना से होता है। ससार की कोई जाति ऐसी नहीं जिसकी धार्मिक पुस्तकों में इसका उल्लेख न हो। अनुमानतः इसका काल १४००० वर्ष पहले का है। हो सकता है कि इससे भी अधिक समय हुआ हो। हमारा ऐसा विश्वास है कि मनुष्य समाज विकास की ओर नहीं बल्कि पतन की ओर जा रहा है। संसार की सारी जातियां आत्मभू (adam) या ब्रह्मा जी से आरम्भ होकर रूपान्तर को प्राप्त हुई हैं। उनमें से आर्य जाती की परम्परा सुरक्षित है और दूसरी जातियों ने उसका आभास मात्र ही सुरक्षित रखा है। वायु पुराण में प्रलय के विषय में लिखा है कि सूर्य की प्रकाशित होने वाली हजारों रश्मियां सात विभागों में बँटकर एक एक सूर्य के समान प्रचण्ड हो रही थी। ७, ४५, ४६, ५९.

महाभारत के युद्ध में सेनादाह की उपमायें इस प्रलय के समय की अग्नि के दाह से दी गई हैं। इस अग्नि के कारण चारों ओर काल का साम्राज्य हो रहा था। जल सूख रहा था यहां तक कि समुद्र भी सूख रहा था। इस ताप के पश्चात भारी वायु वेग का प्रारम्भ हुआ। इस कुपित वायु ने समुद्रों को और भी सुखाया। यह काल अनावृष्टि का था जो विष्णु पुराण के अनुसार १०० वर्ष तक रहा। सम्पूर्ण स्थावर जंगम प्राणियों के नष्ट हो जाने पर और वायुवेग तथा ताप से समुद्रो के सूख जाने पर जल तथा तृण से रहित यह पृथ्वी कूर्म की पीठ के समान हो गई। तब आकाश में घने मेघ उत्पन्न हुए। लगातार वर्षा होने लगी उल्कापात भी होने लगा। जल इतना गिरा कि समुद्र भर गये पृथ्वी भर गई। समुद्रों ने अपनी सीमायें छोड़ दीं। सारी पृथ्वी जल निमग्ना हो गई। केवल पर्वतों के ऊपरी भाग जल से ऊपर थे। वायु पुराण के अनुसार ही विष्णु ने वराह रूप धारण करके जल निमग्ना पृथ्वी का उद्धार किया। वराह का अर्थ है मेघ अर्थात जल मेघ रूप में ऊपर को उठने लगा। वायु पुराण के अनुसार ही यह वराह दस योजन विस्तीर्ण शत योजन ऊंचा था अतः यह पशु नहीं था मेघ रूपी वराह था। भूमि और जल के मेल से तथा चन्द्र प्रभाव, सूर्य

रश्मियां इन सबने मिल कर बीजों को उत्पन्न किया। प्रत्येक सृष्टि तथा उसकी अवान्तर प्रलयों में यही चक्र चलता रहता है। सर्व प्रथम औषधियां उत्पन्न हुई और तत्पश्चात अन्न, पशु, पक्षी और मनुष्य।

सारी पृथ्वी जल निमग्ना थी उसका थोड़ा सा भाग जल से बाहर था वह जल में कमल के समान था। उस कमलाकार पृथ्वी पर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। अथर्व-वेद में कहा है "प्राणियों में ब्रह्मा पहले उत्पन्न होता है।" महाभारत अनुशासन पर्व में उसे प्रपितामह कहा है। वह आदि मानव था। पुरातन साहित्य में ब्रह्मा के कम कम ५७ नाम मिलते हैं जैसे वेदात्मा, वेदनिधि, पद्मगर्भ, आदि देव, ब्रह्मा, कमल गर्भाभ, पुरुष, योगेश्वर त्रिगुण, चतुर्व्यूह, आत्मा, ऋषि, विष्णु, पर, ओम, सर्वज्ञ, नारायण, हिरण्यगर्भ, आदि देव, अज, प्रजापति, महादेव, ईश्व, भूत, क्षेत्रज्ञ, विभु, स्वयंभू यज्ञ, कवि, आदित्य, प्रजापति, ईशान, जगत प्रभु इत्यादि। जिन महापुरुष का वर्णन रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, महाभारत, पुराण, आयुर्वेद की संहिताओं और ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है वे ब्रह्मा जी कल्पित न थे।

ब्रह्मा जी सर्व ज्ञान मय थे। महाभारत में उन्हें अमित धी, हरिवंश और मत्स्य पुराण में सर्वतोमुख लिखा है। उन्ही की कृपा से वर्तमान सृष्टि में ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। चारों वेदों का ज्ञान देने वाले ब्रह्मा जी थे। सबसे पहले ऋषि ने ब्रह्म विद्या स्वयं भू ब्रह्मा से सीखी। हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने योग विद्या का भी प्रवचन किया। आयुर्वेद का सर्व प्रथम उपदेश ब्रह्मा जी ने किया। इस प्रकार समस्त ज्ञान विज्ञानों का प्रारम्भ ब्रह्मा जी से हुआ।

ब्रह्मा का पुत्र स्वयंभू मनु था। जिसने ब्रह्मा जी से धर्मशास्त्र को ग्रहण किया। यह मनु संसार का सर्व प्रथम राजा था। राजन शब्द का जो अर्थ वर्तमान समय में किया जाता है यद्यपि उस अर्थ में उस समय राजा नहीं था तथापि लोक में न्याय नियम स्थापन करने के कारण वह प्रथम राजा माना जाता है। इसके दो पुत्र उत्तान पाद और प्रियव्रत थे। वीर प्रियव्रत ने प्रजापति कर्दम की पुत्री प्रजावती से विवाह किया। इससे दो कन्यायें और दस पुत्र हुये। राजा प्रियव्रत ने समस्त वसुन्धरा को सात द्वीपों में बाँट कर अपने सात पुत्रों को उनका अधिपति बना दिया। छोटे तीन भाईयों की राज्य करने में प्रवृत्ति न थीं अतः वे तपस्यार्थ योगी हो गये। ये दसों भाई वड़े शूरवीर और पराक्रमी थे। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार इनके तथा द्वीपों के नाथ क्रमशः इस प्रकार थे—जम्बूद्वीप में आग्नीध्र, लक्षद्वीप में मेघातिथि, शाल्मलि द्वीप में वपुष्मान, कुशद्वीप में ज्योतिष्मान, क्रौंचद्वीप में द्युतिमान शाकद्वीप में भव्य तथा पुष्कर द्वीप में सवन। मेधा, अग्निवाहू व मित्र तपस्वी हो गये। इस आदि काल को पितृ युग भी कहते हैं। इसी काल में २१ प्रजापति हुए उनमें कर्दम प्रथम प्रजापति थे। ये प्रजापति पितृ नाम से भी विख्यात है। इसी युग में ब्रह्मा, मनु तथा प्रजापतियों ने सब वस्तुओं के नामकरण मन्त्रों के आधार पर किये। विविध अग्नियों के नामों पर अनेक ऐतिहासिक पुरुषों के नाम, अन्तरिक्ष स्थित द्वीपों, पर्वतों और

नदियों के नामों पर पृथ्वी तल पर होने वाले द्वीपों, पर्वतों और नदियों के नाम तथा अन्तरिक्ष और द्युलोक में होने वाले इन्द्र वरुण आदि देव नामों पर मनुष्यों को भी इन्द्र, वरुण आदि नाम दिये गये। उस काल में मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य क्रतु और वशिष्ठ आदि सप्त ऋषि थे। इन्होंने शत सहस्त्र श्लोक परिमाण का एक शास्त्र रचा जिसमे धर्म अर्थ काम और मोक्ष का वर्णन था। ये ही पुराने संसार के सात बुद्धिमान व्यक्ति थे। आग्नीध्र जम्बूद्वीप का स्वामी था। उसका पुत्र था नाभि। इसके भी आठ भाई थे। इन नौ के लिये आग्नीध्र ने जम्बूद्वीप के नौ विभाग किये। उनमें से हिमालय के दक्षिण का भाग नाभि को दिया गया। नाभि का पुत्र था ऋषभ और ऋषभ का भरत। इस भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा। दुष्यन्त के पुत्र भरत बहुत बाद में हुये। निसन्देह प्राचीनतम काल से यह भूमि भारत वर्ष नाम से प्रसिद्ध रही है। आधुनिक ईसाई यहूदी लेखक और उनका झूठा खाने वाले शिष्य आर्यों को ईसा से लगभग २५०० वर्ष पूर्व बाहर से आया मानकर जो अनेक तर्कहीन कल्पनायें करते हैं उनका मूल्य शून्य है।

भारतवर्ष जम्बू द्वीप का एक भाग है। पहले जम्बू द्वीप पर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण द्वीपों के वसनीय खण्डों पर आर्यों का निवास था। कालान्तर में भाषा में अस्पष्टता आई और मलेच्छ लोग उत्पन्न हुये। आर्य भाषा वाले लोगों का स्थान संकुचित होता गया। वैवस्वत मनु के नौ पुत्र तथा इलानाम की कन्या थी। मनु के पुत्र के राजवंश सूर्यवंश के नाम से पुकारे जाते हैं। और इला का वंश ऐल वंश कह-लाता है। इस काल में बारह देवासुर संग्राम हुये। कश्यप और दिति के पुत्र हिरण्य कश्यप के काल से लेकर बाणासुर के काल तक ये युद्ध हुये। बाल्मीकि ने रामायण और कृष्ण द्वैपायन ने महाभारत में बहुधा इनके दृष्टान्त दिये हैं। इस युग को देवा-सुर संग्राम कहा जा सकता है। देव प्रदेश भारत के उत्तर पूर्व में था। असुर प्रदेश भारत के उत्तर पश्चिम में था। काबुल आदि प्रदेश उसमें थे। इन्हीं देशों में दक्ष की दिति और दनु नामक कन्याओं की सन्तानों ने अपने राज्य स्थापित किये। ये लोग दैत्य दानव या असुर कहाते थे। काव्य और त्रिसिरा आदि विद्वान इन्हीं असुरों में रहते थे। ये मन्त्र दृष्टा थे उन्हीं के कई मंत्रों का विकृत रूप जेन्द अवस्था (पारसियों की धार्मिक पुस्तक) में मिलता है। काव्य उशना असुरों का महा-मंत्री था और आंगिरस ब्रहस्पति देवों का। दोनों आचार्यों ने राजनीतिशास्त्र व अर्थ-शास्त्र की रचना अपने अपने पक्ष वालों के लिये की। भारत युद्ध से १६०० वर्ष पश्चात होने वाले मौर्य महामंत्री कौटिल्य के पास ये अर्थशास्त्र विद्यमान थे। कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में ब्रहस्पति और उशना के प्रमाण प्रायः देता है। व्यास ने महा-भारत में कई स्थानों पर ब्रहस्पति और उशना के श्लोक उद्धत किये हैं।

बाल्मीकि मुनि रामायण में मनु को आदि राजा मानते है। कौटिल्य इसे मनुष्यों का प्रथम राजा स्वीकार करता है। मनु का वंश भारत में बहुत व्यापक हुआ मनु के नौ पुत्रों के नाम पुराणों और महाभारत में कुछ फर्क से हैं। महाभारत में

इनके नाम वेन, कृष्णु नरिष्यन्त, नाभाग, इक्ष्वाकु, करुष, शर्याति पृषध्र नाभागारिष्ट दिये हैं। नाभानेदिष्ट का पुत्र भलन्दन मंत्र दृष्टा ऋषि थे। नाभानेदिष्ट वैश्य हो गया था। चाणक्य के काल तक उस कुल के वैश्य प्रसिद्ध थे। इला का विवाह सोमपुत्र बुद्ध के साथ हुआ था। प्रसिद्ध सम्राट पुरुखा इन्हीं का पुत्र था। उसका मूल स्थान असुर प्रदेश में था। और माता इला की कृपा से उसे प्रतिष्ठान (प्रयाग) का राज्य मिला। पुरुखा राजर्षि, मन्त्रद्रष्टा, ब्रह्मवादी तेजस्वी, सत्यवाक तथा दान, शील था। पुरुखा के रथ का नाम सोमदत्त था। यह उसे अपने पिता से मिला था। पुरुखा ने दानवेन्द्र केशी को पराजित किया। जिससे प्रसन्न होकर सम्राट इन्द्र ने उर्वशी को उसे दे दिया।

मनु पुत्र इक्ष्वाकु कौशल देश का राजा हुआ जिसकी राजधानी अयोध्या थी इसके अनेक पुत्र हुये जो उत्तर और दक्षिण भारत के शासक हुये। पुरुखा इक्ष्वाकु का समकालीन था। उसका पुत्र आयू आयू का पुत्र नहुष, नहुष का ययाति और ययाति के पुरु आदि पांच पुत्र हुये। ययाति सार्वभौम राजा था। ययाति की दो स्त्रियां थी। एक उशना काव्य की दुहिता देवयानी और दूसरी महाराजा वृषपर्वा की कन्या आसुरी शर्मिष्ठा। ययाति ने क्षत्रिय होते हुये भी सम्पूर्ण वेद पढ़ा था। ययाति को रुद्र ने एक दिव्य गुणयुक्त रथ दिया था। जनमेजय द्वितीत तक यही सब कौरवों का रथ था। तब यह वृहदक द्वारा जरासन्ध को मिला। वहां से यह देवकी पुत्र कृष्ण के पास आया। ययाति के पाँच पुत्र थे जिसमें से पुरु को उसने सर्वश्रेष्ठ भाग दिये शेष चार उत्तर पश्चिम और पूर्व में राज्य करने लगे। पुरु के कारण उसका वंश पौरव वंश कहा जाता है। पुरु का पुत्र जन्मेजय प्रथम था जिसके कुल में प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त और भरत हुये।

ययाति का पुत्र यदु था जिसके वंश में शशविन्दु नामक चक्रवर्ती सम्राट हुआ। शशविन्दु ने कई अश्वमेघ यज्ञ किये उसके पास सोने का भारी कोष था। उससे बारह पीढ़ी पश्चात विदर्भ नाम का राजा हुआ उसी के कारण देश का नाम विदर्भ हुआ। शशविन्दु की कन्या मान्धाता की पत्नी थी। मान्धाता सार्वभौम सम्राट था चक्रवर्ती राजा की विजय भारत सीमा में ही होती है। मान्धाता सप्तद्वीप पृथ्वी का विजेता था अतः वह सार्वभौम कहलाता था। महाभारत और पुराणों के अनुसार सूर्योदय प्रदेश से लेकर सूर्यास्त तक का सारा प्रदेश मान्धाता के राज्य में था। दशरथ पुत्र राम अपने पूर्वज मान्धाता की एक कथा वालि को सुनाते हैं। मान्धाता की संतान दो भागों में विभक्त हुई। एक भाग क्षत्रियों का था और दूसरा ब्राह्मणों का था।

मान्धाता का एक पुत्र पुरु कुत्स था। जिसके वंश में चक्रवर्ती सम्राट हरिश्चन्द्र हुये जिन्होंने अनेक देशों को जीता और राजसूय यज्ञ किया। उनसे विजित सब राजा उस यज्ञ में उपस्थित थे।

यदु का एक पुत्र सहस्त्रजित था जिसके वंश में सहस्त्रबाहु अर्जुन पैदा हुआ। इसने सारी पृथ्वी जीती सैकड़ों यज्ञ किये यह दल बल सहित लंका गया और रावण को

बांधकर माहिष्मतीपुरी ले आया। यह रावण राम के समकालीन रावण से बहुत पहले का है। इसकी मृत्यु परशुराम के हाथों हुई। तत्पश्चात परशुराम ने २१ बार क्षत्रिय संहार किया। यह समय सम्राट हरिश्चन्द्र के कुछ बाद का था। हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित ने रोहित नगर बसाया जो वर्तमान काल में बंगाल प्रान्त के शाहबाद जिले का रोहतासपुर कहा जाता है। इसी वंश में बाहू नाम का राजा हुआ जिस पर वृद्धावस्था में अर्जुन के वंशजों ने जो राम से भयभीत होकर हिमालय की ओर चले गये थे, पाँच क्षत्रिय गणों की प्रार्थना से (शक, यवन, पारद, काम्बोज, पल्हव) आक्र· किया। राम इस समय तपस्या करने वन चला गया था। बाहु राज्य छोड़कर वन में चला गया। वहां उसके सगर नामक प्रसिद्ध राजा हुआ। उसने बाल्यावस्था में में ही अपने राज्य अयोध्या को प्राप्त कर लिया। धीरे-२ इसने सभी शत्रुओं को परास्त करके पृथवी को जीत लिया। इसने एक अश्वयेध यज्ञ किया जिसमें कपिल व उसके सभी पुत्रों का नाश हो गया केवल चार बचे जिनसे आगे वंश चला। इन्ही के वंश में राजा दशरथ हुए जिनके पुत्र राम हुए जिनका राज्य आज भी भारतवर्ष में आदर्श माना जाता है। यह काल, त्रेता और द्वापर का संधि युग था। श्री राम के दो पुत्र थे—लव और कुश। लव के वंश में अन्तिम राजा वृहद वर्ल था और कुश के वंश में हिरण्यनाय कौ ल्य। ये दोनों ही राजा महाभारत के काल में विद्यमान थे। वृहदवल तो अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था।

भारत युद्ध के समय भारतवर्ष में १०१ प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश थे उत्तर में वाह्लीक देश, गान्धार, आभीर, मद्रक, केकय, काशमीर इत्यादि। मध्य देश में कुरु-पाँचाल, शूरसेन मत्स्य, कुंती, काशी, उत्कल पश्चिम में अग, वग, प्राग्ज्योतिष पुण्ड्र, विदेह, मगध दक्षिण में मालव भोन, कोसल अवन्ति, केरल, चोल, महाराष्ट्र, कलिंग, आमीर, विदर्भ इत्यादि। इन राज्यों में बड़े-बड़े प्रतापी और प्रसिद्ध राजा हुए। पौखों के वंश में अजमीठ हुआ और इस अजमीठ के वंश में कुरू। इसने कुरुक्षेत्र का प्रदेश कृषि योग्य किया। इसके वंश में प्रतीप और प्रतीप का पुत्र शान्तनु। शान्तनु के तीन पुत्र थे—चित्रांगद, बिचित्र वीर्य, भीष्म। विचित्र वीर्य के घृतराष्ट्र तथा पाण्डु। घृतराष्ट्र के १०० पुत्र थे जिनमें दुर्योधन, दुशासन आदि प्रमुख थे। और पाण्डू के पांच—युधिष्ठर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव। जिनमें महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसका काल लगभग ३०८० विक्रम पूर्व है।

अर्जुन भीम, युयुधान सात्याकि के बाहुबल से तथा श्री कृष्ण की अपार नीति तथा दूरदर्शिता के कारण युधिष्ठर भारत युद्ध में विजयी हुआ। विजय के पश्चात् युधिष्ठर हस्तिनापुर के सिंहासन पर अभिषिक्त हुआ। श्री कृष्ण का देहावसान और यादवों के नाश के कारण युधिष्ठर ने महाँ प्रस्थान का विचार दृढ़ कर लिया। परिक्षित तथा अन्य राजकुमारों को भिन्न-भिन्न प्रदेश सौंप कर युधिष्ठर तथा अन्य बन्धु हिमालय की ओर चले गये। इसी वंश में जनमेजय हुआ जिसने प्रसिद्ध सर्पयज्ञ किया। अधिसीम कृष्ण इस वंश का अन्तिम राजा था। इस समय कोशल राज्य में

जिसका अन्त सम्राट नन्द द्वारा हुआ और इस प्रकार अर्जुन और अभिमन्यु के वंश का अन्त हुआ प्रसेनजित का एक पुत्र विडुडय था जिसने धोके से अपने पिता के राज्य को प्राप्त कर लिया। प्रसेनजित अजात शत्रु से सहायता लेने गया परन्तु मर गया कदाचित विडुडय ने ही इसे मरवा दिया। इस इक्ष्वाकू वंश का अन्तिम राजा सुमित्र था।

मागध वंश के अजात शत्रु का पुत्र दर्शक था। उसका एक पुत्र उदयी था जिसने गंगा के किनारे कुसुम पुरया पाटलिपुत्र नाम का विख्यात नगर बसाया। तत्पश्चात नन्दीवर्धक राजा हुआ और इसके बाद एक महानन्दी। इसकी एक स्त्री थी जिससे महापद् नाम का पुत्र हुआ जो धनशाली था उसके भगवत पुराण में इक्ष्वाकु वंश, मगध में वृहद्रक वंश कृष्ण के समकालीन थे। यह समय लगभग भारत युद्ध से २९० वर्ष बाद का था।

कौशल राज भगवान राम के पश्चात् दो भागों में बट गया था। एक भाग की राजधानी अयोध्या थी और दूसरे भाग की श्रावस्ती। गौतम बुद्ध के काल में कौशल का राजा प्रसेनजित था जो श्रावस्ती में रहता था। दिवाकर और प्रसेनजित के मध्य लगभग ६५० वर्ष का अन्तर है। इस में कौशल में एक ही वंश रहा। भारत युद्ध से मगध के वृहद्रथ वंश के अन्त तक लगभग एक हजार वर्ष हुये। इस वंश का अन्तिम राजा रिपुन्चय अपने सचिव पुलिक द्वारा मारा गया और उसके पुत्र बालक प्रद्योत को राजा बनाया जो प्रद्योत वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शिशुनाग इसी वंश से सम्बन्धित था जिससे इसके आगे का वंश शिशुनाग वंश कहलाया। इसी वंश में बिम्बिसार हुआ जिसका पुत्र अजातशत्रु था। बिम्बिसार के काल में गौतम बुद्ध प्रचार कर रहे थे यह काल भारत युद्ध से लगभग १२०० वर्ष पश्चात् का है। महावीर स्वामी भी महात्मा बुद्ध के समकालीन थे। महात्मा बुद्ध निवृत्ति मार्ग के अनुयायी थे। उनके काल में भारतीय विद्वानों ने विशेष विरोध नहीं किया, बाद में अनेक दार्शनिक बौद्ध मत में सम्मिलित हो गये जिन्होंने सांख्य सिद्धेश्वर का कलेवर बौद्ध मत के अर्पण किया। बहुत काल बाद बौद्धमत में नास्तिकता आ गई तब भारतीय विद्वानों ने इसको परास्त करके भारत से बाहर कर दिया।

महात्मा बुद्ध से लगभग ३०० वर्ष पहले मागध व्रहद्रथ का अन्त हुआ। इसी समय अवन्ती के पुरातन वंश की भी समाप्ति हुई, जिसमें सहस्त्रबाहु अर्जुन हुआ था। अवन्ती की राजधानी उज्जैन थी। जिसे पद्मावती, भौगवती तया हिरण्यवती भी कहा गया है। महात्मा बुद्ध के काल में अवन्ती का राजा प्रसिद्ध महासेन था। उसके पिता का नाम अनन्तनैमो अथवा जयसेन था। यह बड़ा उग्रकर्मा राजा था। इसकी लड़की वासवदत्ता थी जो वत्सराज उदयन को ब्याही थी। उदयन संस्कृत साहित्य का एक विख्यात व्यक्ति है। बाण और कालीदास, भास तथा कौटिल्य तथा श्रीहर्ष द्वारा इसकी प्रशंसा कीर्ति गाई गई है। इसका अन्तिम राजा निरामित्र था।

महापद्‌ पति भी लिखा है क्योंकि उसके पास अगाध धनराशी थी इसे घन नन्द भी लिखा है उसको पुराणों में भार्गव परशुराम भी लिखा है क्योंकि उसने परशु राम की भाति तत्कालीन अनेक राजवंशों को समाप्त किया । पुराणों में पौरव वंशो, इक्ष्वाकु और मागध वंशों के अतिरिक्त, अन्य प्रसिद्ध, राजवंशों तथा उन वंशों में होने वाले राजाओं का भी उल्लेख है जैसे पांचाल, काशेय, कलिंग, अश्मक, मैथिल, शूरसेन हैहय, वितिहोत्र इत्यादि । महानन्द के आठ पुत्र थे नाश कर जो १०० वर्ष तक पृथ्वी को भोगते रहे अन्त में कूटनीति से कौटिल्य ने इस वंश का अन्त कर दिया और मौर्य वंश का प्रारम्भ किया । भारत युद्ध से नन्दों की समाप्ति तक १६०० वर्ष बीते थे ।

मौर्य वंश का प्रथम राजा चन्द्रगुप्त मौर्य था जिसने कौटिल्य की सहायता से यूनानियों को देश के बाहर खदेड़ दिया । विद्रोहियों को दबाया और एक विशाल साम्राज्य की नींव डाली जिसकी सीमायें पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत तक फैली हुई थी । विन्सेट स्मिथ के अनुसार यह भारत वर्ष की वैज्ञानिक सीमा है जिसे अंग्रेज भी प्राप्त नहीं कर सके । मौर्यवंश का सबसे महान राजा अशोक वर्धन हुआ जो बाद में बोद्ध हो गया था । वह एक महान शासक धर्म वेत्ता शान्ति और अहिंसा का पुजारी था । अपने शासन के प्रारम्भिक काल में उसने अपने पूर्वजों की साम्राज्यकाल नीति का अनुसरण किया और उनके द्वारा प्रस्थापित शासन व्यवस्था को चलाता रहा परन्तु कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने अपने शासन के सिद्धान्तों और आदर्शों को बदल दिया कलिंग युद्ध में होने वाले भयानक रक्तपात और अत्याचार को देखकर तलवार कोम्यान में रखने का निश्चय किया और धर्म चक्र ग्रहण किया । इस निश्चय ने भारत तथा सम्पूर्ण विश्व के इतिहास पर बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रभाव डाला । उसने बौद्ध धर्म को विश्व धर्म में बदल दिया । अशोक के धर्म प्रचारक बड़े ही उत्साही और निर्भीक थे उन्होंने मार्ग की कठिनाइयों की चिन्ता न कर वर्मा, तिब्बत, जापान कोरिया तथा पूर्वी द्वीपसमूहों में धर्म का प्रचार किया । एशिया और योरोप में भी उसने अपने धर्म का प्रचार किया । धर्म जो एक संकीर्ण सम्प्रदाय या उसे विश्वव्यापी बना दिया । अशोक के धर्म प्रचारकों ने सभ्यता और संस्कृति का भी बड़ा महत्वपूर्ण प्रसार किया क्योंकि इन लोगों ने ऐसे देशों में प्रवेप किया जो अधिकांशतः बर्बर और अंधविश्वासी थे । प्रत्येक युग और प्रत्येक राष्ट्र इस प्रकार के सम्राट को । उत्पन्न नहीं कर सकता । अशोक अब भी विश्व के समकालीन इतिहास में अद्वितीय है । परन्तु अशोक की अहिंसात्मक नीति और अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण मौर्य वंश समाप्त हो गया और अन्तिम सम्राट वृहद्रथ को मारकर सेनापति पुष्य मित्रशुंग ने राज्य पर अधिकार कर लिया । इस वंशने लगभग ११२वर्ष शासन किया । ७२ ई. पू. में उसके मन्त्री वासुदेव कण्व ने उसका वध करके कण्व वंश की स्थापना की । इस वंश के चार शासकों में कोई योग्य न था । इसके पश्चात् शातवाहन वंश के हाथ में मगध की सत्ता चली गई । गौतम पुत्र शातकर्णी इस वंश का महाप्रतापी शासक था । उसने सम्पूर्ण दक्षिण पथ तथा मध्यभारत पर अपना अधिकार स्थापित कर

लिया। उसने शकों को महाराष्ट्र से बाहर भगाया। उसने १०६ से १३० ई० तक शासन किया। इसकी मृत्यु के पश्चात् महाराष्ट्र पर अमीर वंश और दक्षिण पथ पर इक्ष्वाकू तथा पल्लव वंश ने अधिकार कर लिया। पुराणों के अनुसार अन्य राजा भारत के पश्चिमोत्तर और पूर्व में स्थापित हुए। इनमें आभीर वंश में १०, गर्द भिल में ७, शक १८, यवश ८, तुषार १४, मरुण्ड १३ तथा हूणं वंश में ११ राजा हुये। ये सभी हिन्दू धर्म से पूर्णतः प्रभावित थे तथा आभीर वंश स्वराष्ट्र में था इनमें से बहुत सों ने हिन्दू धर्म अपना लिया था। गुप्त काल के मध्य तक आभीर राजा मांडलिक था। समुद्रगुप्त ने इन्हें हराकर कर प्राप्त किया। गर्दभिल राजा उज्जयिनि में थे उन्हें शक राजा ने हराकर समाप्त कर दिया। पुराणों के अनुसार १६ शक राजा हुए हैं इनका काल लगभग ३०० वर्ष रहा। इनमें चष्टम, रुद्रदाया तथा नहपान राजा बहुत विख्यात हुये। इनको गौतमी पुत्र ने हराया तथा अपना सत्रप बनाया। आठ यवन राजा हुये इसी से लगभग ३०० वर्ष पहले सिकन्दर था। उसने जब आक्रमण किया नैश जनपद में यवन लोग रहते थे। यह सिकन्दर से सैंकड़ों वर्ष पहले भी वहीं थे महाभारत आर्य ग्रन्थों में इन्हें ही यवन कहा गया मालूम होता है। सिकन्दर एक बड़ा विजेता था। उसने अनेक अन्य देश जीते थे। विजय के लिये वह भारत में आया परन्तु पंजाबी वीरों के अदम्य उत्साह पूर्ण युद्धों से भयभीत हुई सेना वाला सिकन्दर आगे न बढ़ सका। सिकन्दर के कुछ वर्ष पश्चात सैल्यूकस ने भारत पर आक्रमण किया जो चन्द्र-गुप्त मौर्य से हारकर वापिस लौट गया।

पुराणों में वर्णित आठ यवन राजाओं की राजधानी शाकिल थी। इनका राज्य ८७ वर्ष तक रहा। चौदह तुषार राजा हुये। तुषार, तुखार, तुरुरक और देवपुत्र इन ार नामों से इस जाति के राजा प्रसिद्ध रहे हैं। पुरातन लखों में खुसन, गुसन, खुशाण और कुसान आदि नाम भी मिलते हैं इनमें कनिष्क एक अति प्रसिद्ध राजा हुआ है। इसका राज्य काश्मीर पर भी था तुषारों ने हिन्दू धर्म अपना लिया था। कडफिसस द्वितीय और वासुदेव दोनों शैव थे। काबुल कश्मीर, पेशावर, तक्षशिला, सारा पंजाब और मथुरा तक का प्रदेश इन कुशानों के अधिकार में था इसी प्रकार १३ मुरून्ड शासक हुये हैं जो शकों की किसी शाखा में से थे। इनका पाटलिपुत्र तथा उज्जियनि पर भी अधिकार था ११ हूण राजा हुये है। तोरमाण और मिहिर-कुल राजाओं के सिक्कों पर अग्निकुन्ड बने हुये हैं। सातवाहन वंश के पश्चात् तथा शक यवन और कुशान आदि वंशों के क्षीण होने पर गुप्त शक्ति का उदय हुआ। इस में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य तथा स्कन्द गुप्त, कुमार गुप्त आदि प्रसिद्ध राजा हुये। चन्द्रगुप्त प्रथम ने कुशाणों की उत्तर भारत से निकाल बाहर किया। समुद्रगुप्त ने सारे देश को जीतकर बड़ा साम्राज्य कायम किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को हराया तथा विक्रम संवत् प्रारम्भ किया। इस काल में हर क्षेत्र में उन्नति हुई इस लिये इस युग को स्वर्ण युग कहकर पुकारा गया है। कला साहित्य विज्ञान सभी की उन्नति हुई। वास्तुकला, मूर्ति निर्माण कला, संगीत कला, शिल्प

कला और चित्र कला के क्षेत्र में गुप्तकालीन कला भारतीय प्रतिभा के चूडान्त विकास की प्रतीक है और इसका प्रभाव सम्पूर्ण एशिया में दीप्तिमान है। अजन्ता की चित्रकारी इसका प्रतीक है। यह युग भारतीयों के व्यापक दृष्टिकोण और विदेशियों को आत्मसात करने का अनुपम युग है। चारों ओर शान्ति और सुव्यास्था थी अतएव साहित्य और दर्शन का भी इस काल में विकास हुआ। अनेक महाकवि, नाटयकार तथा दार्शनिक उत्पन्न हुये। जैसे कालिदास, हरिषेण वसुबंधु, विशाखदत्त वराहमिहिर आदि। आर्यभट्ट इस काल के बहुत बड़े गणितज्ञ और ज्योतिषि थे। चरक और सुश्रुत इस काल के विख्यात वैद्य थे। साम्राज्यवादी गुप्त सम्राटो के काल में विलक्षण प्रतिभा के तथा शक्ति शाली राजाओं ने शासन किया। देश के बहुत बड़े भाग का संगठन कर एक राजनैतिक सूत्र के नीचे ला दिया। यह युग ३५० से ५५० ई० तक रहा। स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद जितने सम्राट हुये वें अयोग्य और शक्तिहीन थे। चारों ओर कुछ समय के लिये अशान्ति फैल गई परन्तु ५० वर्ष बाद श्री हर्ष का थानेश्वर और कन्नौज में उदय हुआ जिसने शीघ्र ही देश में फिर शान्ति और व्यवस्था स्थापित कर दी। हिमालय से नर्वदा नदी के तट तक पूर्व में आसाम और पश्चिम में सौराष्ट्र तक उसका साम्राज्य फैला हुआ था। हर्ष न केवल योग्य साहित्यकारों का उदार आश्रयदाता था बल्कि स्वयं भी एक उच्च कोटि का लेख विशारद तथा सुविख्यात लेखक था। उसने नागा नन्द, रत्नावली प्रिय दर्शिका नामक तीन ग्रन्थों की रचना की। बाणभट्ट उसके दरबार का सबसे बड़ा विद्वान था जिसने हर्ष चरित्र तथा कादम्बरी नामक ग्रन्थों की रचना की। हर्ष के पश्चात देश के विभिन्न भागों में अनेकों छोटे २ राजाओं का उदय हुआ जो अपने २ राज्य के विस्तार के लिये निरन्तर संघर्षरत रहते थे। इस युग की विशेषता थी उच्च साहस, देश भक्ति, स्वामी भक्ति, आत्म सम्मान, अतिथि सत्कार तथा सरलता। इस काल में साहित्य और कल्प की भीं बड़ी उन्नति हुई, धर्म की रक्षा का पूरा प्रयत्न हुआ। असंख्य मन्दिरों का निर्माण हुआ। गुर्जर प्रदेश में प्रतिहार वशं, मिर्जापुर की पहाड़ियों से गहढ़वाल वशं, सांभर प्रदेश में चौहान वशं, बुन्देलखण्ड में चन्देल वशं, मालवा में परमार वशं, गुजरात में चालूक्य वशं, जबलपुर के पास कलचुंरि वशं, बंगाल में पाल तथा सेनवशं दक्षिण भारत में राष्ट्र-कूट, पल्लव, चोलवशं इस समय के प्रमुख वशं कहे जा सकते हैं। इन सभी वशों ने लगभग ६५० वर्ष शासन किया। ६५० में सम्राट हर्ष की मृत्यु हुई और लगभग १२०० में मुसलमानों का शासन भारत में स्थापित हो गया। परन्तु मुसलमानों का भारत पर अधिकार कर लेने का अर्थ यह नहीं था कि देश ने गुलामी की जजींर का चुपचाप पहन लिया। भारत का बहुत कम भाग विदेशी शासकों के हाथ में रहा बाकी सब स्वतन्त्र था जो भाग उनके अधिकार में था उसमें भी बराबर संघर्ष होता रहता था और यह स्थिति उस समय तक रही जब तक कि अंग्रेज ने अपनी बेइमानी और झूटी चालों के द्वारा सम्पूर्ण भारत पर अधिकार न कर लिया। इस काल में हिन्दुओं पर हर प्रकार के अत्यचार हुये, कठोर से कठोर यातनायें दी गई। मन्दिर

तोड़ डाले गये। साहित्य जलाया गया। हर प्रकार से हिन्दु जाति और हिन्दु सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट करने का प्रयत्न किया गया कुछ बादशाहों ने तो कलमा या मौत का नारा बुलन्द किया तथा उसपर अमल किया। मुसलमानों ने लगभग ८०० वर्ष और अंग्रेजों ने १०० वर्ष हम पर शासन किया। हमारे इतिहास को भ्रष्ट किया हमारी भाषा को बदला और हमारे मन्दिर एवं धार्मिक मान्यतायें सबको दूषित किया गया लेकिन वाहरे हिन्दू तू आज भी जीवित है असीम साहस, धैर्य और अपने धर्म में अटूट विश्वास ने अन्त में विजय प्राप्त की और शत्रु को मुंह की खानी पड़ी।

मुसलमानी काल में राणा सांगा, महाराणा प्रताप, हीमू वक्काल, शिवाजी, छत्रशाल, गुरू गोविन्द सिंह, दुर्गा दास राठौर आदि प्रसिद्ध वीर पुरुष हुये जिन्होंने हिन्दू जाति और धर्म की रक्षा की। अंग्रेजों के आने के बाद सन् १८५७ में प्रत्यक्ष रूप से अन्तिम युद्ध हुआ जिसमें रानी झांसी, नाना फड़नवीश, तात्यातोपे आदि विख्यात सेना नायक रहे। तत्पश्चात हमने अपने युद्ध के ढंग को बदला। एक ओर माहात्मा गांधी, तिलक और गोखले के नेतृत्व में अहिंसात्मक युद्ध प्रारम्भ हुआ तो दूसरी ओर सुभाष चन्द्र बोस और भगतसिंह, चन्द्र शेखर आजाद आदि हजारों नवजवानों ने हिंसात्मक, युद्ध में अपनी आहुतियां भारत माँ के चरणों में देनी प्रारम्भ की। सारा देश एक सूत्र में पिरोई गई मणियों की माला के समान मां भारती के गले का हार बनने के लिये मचल उठा और अन्त में १५ अगस्त १९४७ को हम आजाद हो गये।

परन्तु अफसोस अपने ही नेताओं की अदूरदर्शिता और घर और बाहर के शत्रुओ की चालों ने देश का विभाजन कर दिया। मां का अग विच्छेद हुआ। और आज वह पके फोड़े के समान हमारे हृदय में सालता है।

हमें २३ वर्ष हो गये स्वतन्त्र हुये। १००० वर्ष की दासता ने हमारे अन्दर बहुत से कुसंस्कारों को उत्पन्न कर दिया है। हमें आशा थी कि स्वतन्त्र होते ही हम पुनः अपने को बनाने और सवांरने में लग जायेंगे लेकिन दुर्भाग्य वश सत्ता की बागडोर ऐसे हाथों में चली गई जो विदेशी प्रभाव से मुक्त न थे। उनके शरीर स्वतन्त्र हैं लेकिन मस्तिष्क पाश्चात्य रंग रूप और चकाचौंध से चधियायें हुये हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी आये हुये दूषित संस्कारों ने उन्हें अपनो से दूर कर दिया है। वे यह भूल गये हैं कि बाहर की झूठी मुलम्मा चढ़ी हुई वस्तुओं को लोलुप दृष्टि से देखने से पहले अपनी चीजों को भी देख लें। उन्हें यह विस्मरण हो गया है कि हम आज १००० वर्ष की दासता के पश्चात् भी जो जीवित हैं उसके कुछ ठोस कारण हमारे अपने ही अन्दर विद्यमान हैं अन्यथा शत्रु ने हमें नष्ट करने में कोई कसर न रख छोड़ी थी। २००० वर्ष पुरानी ईसाई सभ्यता और १४०० वर्ष पुरानी मुस्लिम सभ्यता के उदय और निर्माण में भी हमारा ही हाथ था। यदि हम दुर्बल होते तो कभी के नष्ट हो गये होते।

यूनान मिश्र रूमा सब मिट गये जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ॥

इस समय आवश्यकता है शक्ति पूजन की; राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण की, हिन्दू जाति के पुनः संगठन और एकता की। आवश्यकता है विदेशी तत्वों के दूषित प्रभाव को धैर्य के साथ अपने अन्दर से निकाल बाहर करने की और अपने विचारों विचारो, संस्थाओं तथा संस्कारों को पुनः जीवित करने की। फिर देखना है कि कौन इस आर्य जाति के सूर्य की ओर देखने की चेष्टा करता है।

ऐ प्राचीन आर्य, ऐ साहस और धैर्य के मूर्तरूप हिन्दू उठ खड़ा हो। मस्तक को ऊंचा उठाकर एक हाथ में गीता और दूसरे हाथ में चक्र सुदर्शन लेकर संसार को शान्ति और सुख का संदेश दे। यही तेरे जीवन का उपयोग है और यही तेरा लक्ष्य है।

मानस की प्रथम चन्द्र यात्रा

ब्रह्माण्ड में प्राप्त वर्तमान नक्षत्रों में चन्द्रमा एक ऐसा नक्षत्र हैं, जिसे पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति प्राचीन काल से ही निहारता चला आ रहा है यह यूनम का पूरा चांद किस के मन को न भाता होगा। यह गोल गोल प्रकाश का पिण्ड देख मानवों के मन में भांति भांति की कल्पनाऐ उदय होती हैं। पृथ्वी पर छिटकी हुई चांदनी से सब दिशाओं को धवलित करते हुए, अन्धकार को चीरते हुये चद्रमा सीढी दर सीढी शिखर के समान आकाश रूपी विशाल पर्वत के मध्य भाग में चढ़ा चला आता हुआ ऐसा मालूम होता है, मानों आकाश मान सरोवर में श्वेत कमल खिल रहा हों और बीच में जो कंलक की कालिमा है वह मानों भौंरे गूंज रहे हो अथवा सौन्दर्य की देवी स्वयं लक्ष्मी के स्नान करने की यह बावड़ी हो। इस प्रकार भांति भांति के अनुमान लगाये जाते हैं और आरम्भ काल से ही इस रहस्य को जानने के लिये मानव लालायित रहा है।

इस नक्षत्र के रहस्य को जानने के लिये सर्वप्रथम एक विद्वान वैज्ञानिक गैलीलियों ने सन् १६०९ ई० में अपने द्वारा निर्मित दूरबीन से चन्द्रतल को निहारा जो ऊबड खाबड रूप में दिखाई दिया। गैलीलियों से प्रेरणा लेकर अनेक विदेशी वैज्ञानिकों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार चन्द्रमा के विषय में जानकारियां एकत्र की। अनेकों बार चन्द्रतल की ओर यानों को भेजा गया परन्तु किसी न किसी अभाव के कारण सफलता हाथ नहीं लगी। इन यानों को भेजने में विशेष रूप से अमेरिका और रूस में एक प्रकार की होड़ सी लगी रही, परन्तु अन्त में इस कार्य में विजय श्री अमेरिका' को ही मिली। सबसे पहले अमेरिका ने ही अपने फ्लोरिडा राज्य में स्थित 'केप कैनेडी' नामक स्थान से अपना 'अपोलों ११' सन् १९६९ मे १६ जौलाई दिन बुद्धवार को चन्द्रतल की ओर छोड़ा जो लाखों मील की दूरी को अपनी अबाध गति से पार करता हुआ लगभग ५ दिनों में चन्द्रतल पर जा पहुंचा।

अमेरिका द्वारा चन्द्रतल की ओर छोड़े जाने वाले यान में कमाण्डर नील ए आर्मस्ट्रॉंग, माइकल कालिन्स और एडविन एल्ड्रिन तीन यात्री थे। ये तीनों यात्री 'अपोलो ११' की उड़ान होने से ढाई घन्टे पहले ही यान के चालक कक्ष में पहुंच गये हालांकि यान का निरीक्षण पहले ही किया जा चुका था, परन्तु उन यात्रियों ने भी उसका पूर्ण निरीक्षण किया। संसार के करोड़ों व्यक्तियों की प्यासी निगाहें उस यान पर लगी हुई थी जो चन्द्रतल की ओर जाने वाला था। निश्चित समय पर एक भयकर आवाज के साथ वायु मण्डल में धुंए का बादल सा छा गया और देखते ही देखते वह 'अपोलों ११' असंख्य व्यक्तियों की दृष्टि से ओझल हो गया। मानव

दृष्टि से तो वह अदृश्य हो गया परन्तु केप कैनेडी 'अन्तरिक्ष नगरी' में स्थित 'नियन्त्रण कक्ष' से बराबर उसका सम्बन्ध बना रहा।

'नियन्त्रण कक्ष' में स्थित वैज्ञानिकों की गणना के अनुसार पहले तो 'चन्द्रयान को गति ३८००० कि० मी० प्रति घण्टा थी, परन्तु बाद में उसे बढ़ाकर ३९२०० कि0 मी0 प्रति घन्टा कर दी गई, परन्तु ज्यों ही इस यान ने 'चन्द्रकक्ष' में प्रवेश किया उसकी गति धीमी कर दी गई और वहां तक पहुंचते पहुंचते कुल ३३६० कि0 मी0 प्रति घण्टा ही रह गई। २० जौलाई की रात को १२ बजकर २० मिनट पर जब यान चण्द्रमा से केवल ११२ कि0 मी१ की दूरी पर रह गया तो उसे मुख्य यान से अलग कर दिया गया और आर्यं स्ट्रांग तथा एलिड्रन दो यात्री चन्द्रयान को लेकर 'चन्द्रतल' की ओर चले तथा तीसरा यात्री कालिन्स मुख्य यान मे ही रहा और ठीक १ घन्टा २९ मिनट अर्थात भारतीय समयानुसार ठीक १ बजकर ०९ मिनट पर दोनों यात्रियों सहित वह चन्द्रयान चन्द्रतल पर उतर गया और सकड़ों वर्षों से इस ओर किये जा रहे प्रयास की सफलता का प्रथम् चरण पूरा हुआ।

मानव की प्रथम चन्द्रयात्रा की सफलता का दूसरा चरण उस समय आरम्भ हुआ जब २१ जौलाई को प्रातः ८ बजकर २६ मिनट पर प्रथम चन्द्रयात्री आर्मस्ट्रांग ने सर्व प्रथम चन्द्रतल पर अपना पाँव रखा। प्रथम यात्री के चन्द्रतल पर उतरने के बाद दूसरे यात्री एलिड्रन उसके कुछ फोटू खींचने के तुरन्त बाद चन्द्रतल पर उतरे। दोनों यात्री कुछ घन्टे चन्द्रतल पर रहे, वहां के कुछ चित्र लिए, वहाँ कुछ ऐसे यन्त्र स्थापित किये जो पृथ्वी पर चित्र व सूचनायें भेजते रहैं, वहां से उन्होंने पृथ्वी को देखा जो बहुत बड़ी चमकीली एवं सुन्दर दिखाई दी, उन्होंने चन्द्रतल की मिट्ठी, ककंड, पत्थर आदि वस्तुए एकत्र कीं, उन्होंने वहां अमेरिका का झण्डा गाड़ा तथा अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन तथा दोनों चन्द्रयात्री के हस्ताक्षरों सहित एक लेख ट्रिका रखी जिस पर जौलाइ १९६९ में चन्द्रमा पर उतरने तथा सारी मानव जाति के लिए शांति की कामना आदि लेख लिखे थे।

पृथ्वी तल पर स्थित नियन्त्रण कक्ष के द्वारा निश्चित किये गये समयानुसार उन चन्द्रयात्रियों ने अपना कार्य पूर्ण करके चन्द्रयान में प्रवेश किया और निश्चित समय पर उड़ान आरम्भ की तथा ठीक समय पर वह चन्द्रयान मुख्य यान 'अपोलो ११ से आ मिला जिसमें तीसरा यात्री कालिन्स उन की प्रतिक्षा कर रहा था। सारा कार्य उचित समय पर पूर्ण हो जाने पर तीनों यात्री शीघ्रता के साथ पृथ्वीतल की ओर वापिस रवाना हुए। पृथ्वी तल से यान के १० हजार फीट ऊंचा रह जाने पर तीनों यात्रियों ने अपने पैराशूट खोले और उनकी सहायता से २४ जौलाई की रात को ११ बजकर १६ मिनट पर प्रशान्त महासागर में सकुशल उतर आये।

तीनों यात्री एक साहसिक यात्रा करके वापिस अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचे परन्तु अन्य वैज्ञानिकों ने उन से किसी व्यक्ति को मिलने नहीं दिया। उन को तीनों

को ही अलग २ स्थान पर रखा। वैज्ञानिकों को भय था कि कहीं चन्द्रतल से उन यात्रियों के साथ किसी रोग के कीटाणु न आ गये हो जो पृथ्वी तल पर अन्य मानवों के लिये हानिकारक सिद्ध हो। उन तीनों यात्रियों की खूब शारीरिक परीक्षा कर लेने के पश्चात उनको सार्वजनिक स्थान पर जाने दिया गया और स्थान २ पर उनका जो भव्य स्वागत किया गया उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

सैकड़ों वर्षों से मनुष्य जिस की कल्पना कर रहा था वह कल्पना यर्थाथ में परिणित हो गई, परन्तु इस कल्पना को सत्य करने में अनेकों वर्ष लगे और लगभग अमेरिका सरकार के भारतीय रुपये के अनुसार लगभग १४४०००० लाख रुपये व्यय हुये जो कि एक धनी देश ही व्यय कर सकता है। इस अभूतपूर्व सफलता से प्रेरित होकर अमेरिका सरकार ने 'चन्द्रयात्रा' कार्यक्रम को और आगे बढ़ाया और तुरन्त घोषणा की गई की १९ नवम्बर १९६९ को चन्द्रयात्रा के लिये दूसरा दल प्रस्थान करेगा। घोषणा साकार हुई निश्चित तिथि पर दो यात्री पुनः चाद पर उतरे। इन्होंने भी वहाँ पर अनेक यन्त्र स्थापित किये हैं जो चन्द्र की सूचनाए आदि को पृथ्वीतल पर भेजते रहेंगे। इन चन्द्र यात्रियों के दोनों दलों द्वारा लाये गये अपने साथ मिट्टी, कंकड व पत्थर का अमेरिका की प्रयोग शालाओं में बैज्ञानिक परीक्षण करने में लगे हुए हैं कि वहाँ की मिट्टी किसी जीव के लिये हानिकारक तो नहीं है।

अमेरिका की इन दो चन्द्रयात्रा से अब अन्तरिक्ष का मार्ग खुल सा गया है। इससे प्रेरित होकर रूस भी दिन रात इसी तैयारी में लगा है कि वह भी संसार में अमेरिका की तरह 'चन्द्रतल' पर अपना झण्डा गाड़ कर नाम पैदा करे। परिणाम स्वरूप रूस में अमेरिका से आगे बढ़ा और बिना मानव वाला 'लूना' चन्द्रतल पर भेजा जो सितम्बर मास में चन्द्रतल के कंकड़, पत्थर व मिट्टी आदि लेकर सफलता पूर्वक वापिस पृथ्वी पर आ गया, जिनका चन्द्रयात्रा के रूस की प्रयोग शालाओं में परीक्षण ले रहा है। दोनों देशों की इस अभूतपूर्व सफलता पर मानव जाति को गर्व है और भविष्य में भी रहेगा क्योंकि दोनों देशों में इस ओर भारी होड़ लगी हुई है।

———

बृह्माण्ड की जानकारी

बृह्माण्ड में पृथ्वी व सूरज और सितारों की जानकारी के बारे में निम्न-लिखित जानकारी इस प्रकार हैं।

सूरज तो पृथ्वी से ९ करोड़ ३० लाख मील की दूरी पर है उसमें १० लाख पृथ्वीयां समा सकती है। इससे अनुमान लगाया जा सकता हैं कि पृथ्वी की अपेक्षा सूरज कितना बड़ा है। लेकिन जहा तक बृह्माण्ड का सम्बन्ध है, उसमें सूरज की स्थिति ऐसी है। जैसे रेगिस्तान में रेत के एक कण की है। ब्रह्माण्ड में हमारे सूरज जैसे अरबों-खरबों सूरज हैं। बृह्माण्ड का वर्णन छोड़ कर हमारी अपनी आकाश गगा से डेढ खरब सितार और १० करोड़ सूरज है, और हर सूरज का हमारे सूरज की तरह अलग-अलग प्रबन्ध है, जिसे हम प्राकृतिक नियम कहते हैं। बृह्माण्ड असीम हैं, और उनमें अरबों-खरबों आकाश गंगायें हैं। दूरबीनों के द्वारा इस समय तक १० करोड़ आका । गगाओं का पता लगाया जा चुका हैं। हिसाब लगाया जा सकता है कि जहां हमारी आकाश गंगा में १० करोड़ सूरज हैं तो अरबों-खरबों आकाश गंगा ओं में कितने सूरज होंगे। हमारी अपनी आकाश गंगा में भी सूरज की साधारण स्थिति है लेकिन वा दूसरे साईस वालों की अपेक्षाकृत हमारे बहुत अधिक पास है। इस लिए हमने उसे सूरज नाम दे दिया है। परन्तु हमारी आकाश गंगा में सूरज से वड़े २ सितारे हैं। जिनकी गर्मी भी सूरज से अधिक हैं और रोशनी भी कोई कोई सितारा सूरज से हजारों गुना बड़ा है। उदाहरण के लिये रीगल नामी सितारें की की रोशनी २० हजार सूरजों की रोशनी से अधिक हैं। लेकिन वह हम से इस प्रकार अधिक दूर है, कि उसका हिसाब नहीं लगा सकते। इसी प्रकार 'अलड़ेवरन' सितारा सूरज की अपेक्षा १६० गुणा प्रकाश देता हैं, और हम उस से सूरज की अपेक्षा में ४ अरब गुनी रोशनी प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी और प्राकृतिक नियम के दूसरे सितारे सूरज के आस पास घूमते हैं, इसी प्रकार सूरज भी हमारी आकाश गंगा के बीचों बीच चक्कर लगाता है। और वह अपना एक चक्कर २५ करोड़ साल में पूरा करता है। हमारी आकाश गंगा किस प्रकार लम्बी चौड़ी हैं, इस बात का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि रोशनी को आकाश गगा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंचने में १००००० वर्ष लगते हैं। रोशनी एक साल में ५८ खरब ६५ अरब मील का फासला तय करती है। अब यह हिसाब लगाना है कि हमारी आकाश गगा किस तरह लम्बी चौड़ी है तो ५८ खरब ६५ मील को १.००० (एक लाख से गुणा करना होगा। एन्ड्रोवेदा नामी आकाश गंगा हमारी आकाश गंगा से ३० गुना अधिक बड़ी हैं और बृह्माण्ड में करोड़ों आकाश गंगा हैं। अब हम अपने

सूरज का वर्णन करते हैं जिससे हमें जिन्दगी मिलती है। वह आकाश गंगा के बीच से २० हजार नूरी साल का मतलब ५८ खरब ६५ लाख मील हैं। अर्थात यह मालूम करने के लिये कि सूरज आकाश गंगा के बीच से कितनी दूर हैं ५८ खरब ६५ अरब को ३० हजार से गुणा देनी होगी। अब एक सवाल पैदा होता है, कि सूरज की गर्मी व रोशनी कहाँ से आती है। साईंस वालों के कहने के अनुसार सूरज की गर्मी उसके गर्भ की आग से पैदा होती है। वे काफी समय तक इससे कुछ अधिक नहीं बता सकें। लेकिन एटमी जमाने में ये गुत्थी (समस्या) हल हो गई हैं अब लैबोरेट्रियों में परिक्षण (प्रयोगों) के वाद साईंस वाले बताने के योग्य हो गये हैं, कि सूरज की गर्मी किस अमल (कारण) से पैदा होती हैं अब वे यह कह सकते हैं, कि सूरज की गर्मी उस समय पैदा होती है, जब सूरज में पाई जाने वाली हाइड्रोजन के एटम (परमाणु) हिलियम के एटमों (परमाणुओं) में वदलते हैं। हम सूरज को एक बहुत बड़ी एटमी (परमाणु) भट्टी कह सकते हैं। लेकिन ये एटमी (परमाणु) भट्टी कव तक जलती रहेगी क्या वह समय तो नहीं आयेगा किये भट्टी सर्द पड़ जायेगी और पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जायेगा। साईंस वालों के कहने के अनुसार सूरज का ४० लाख टन ईंधन हर सैकिण्ड समाप्त होता है। हाइड्रोजन परमाणु हिलियम के परमाणुओं में बदलते हैं। अगर सूरज के ईंधन की आग मौजूदा चाल से जलता रहे तो भी सूरज हम को ३० अरब साल तक गर्मी देता रहेगा। सूरज जो हम से ९ करोड़ ३० लाख मील की दूरी पर है, और उसकी रोशनी हम तक आठ मिनट साढ़े अठारह सैकिण्ड तक पहुंचती है। परन्तु आकाश गंगा में ऐसे सितारे भी है, जिनकी रोशनी हम तक हजारों साल के वाद पहुंचती है। हम दूरबीनों के द्वारा किसी सितारे की जिस रोशनी को देखते हैं वह सैकड़ों साल पहले उस सितारे से चली होगी। बृह्माण्ड की यह जानकारी वड़ी-वड़ी ताकत पर दूरबीनों से की गई है। इस समय में कई ऐसी दूरबीनें तैयार हो चुकी हैं, जो ५० करोड़ नूरी साल की दूरी तक देख सकती हैं। एक लाख छयासी हजार मील हर सैकिण्ड की चाल से चलने वाली रोशनी ५० करोड़ साल में जिस प्रकार फैसला तय करेगी यह दूरबीने इतनी दूर तक देख सकती हैं। यह आम ख्याल पाया जाता है कि पृथ्वी के अलावा किसी भी जगह जीवन नहीं है। लेकिन साईंस से यह ख्याल गलत होता जा रहा हैं। और यह वात तय हो चुकी है। कि हमारी आकाश गंगा में हमारे सूरज जैसे करोड़ों सूरज है, और उनके अलग-अलग प्रबन्ध हैं। अगर इस प्राकृतिक नियम कम से कम एक जगह आवादी हो तो कहा जा सकता है, कि हमारी आकाश गंगा में पृथ्वी की तरह करोड़ों सितारों पर आवादी होगी।

———

'धार्मिक महापुरुषों के जीवन चरित्र'

"स्वामी विरजानन्द"—स्वामीजी का जन्म सम्वत् १८३५ वि० तदनुसार सन् १७७८ ई० में जिला जालंधर के गंगापुर नामक ग्राम में हुआ था। ५ वर्ष की अवस्था में आपके नेत्रों की रोशनी समाप्त हो गई थी। आपने काशी में पं० विद्याधर जी से विद्या प्राप्त की और कनखल में आपने स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास लिया था। स्वामी जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। आपने बहुत शीघ्र शिक्षा प्राप्त की तथा पढ़ाने का कार्य करने लगे। आपकी ख्याति के कारण अलवर नरेश व जयपुर नरेश आपके शिष्य बन गये व अन्य कई धनी व्यक्ति आपकी सहायता करते थे। आप देशाटन करते-करते मथुरा में आकर रहने लगे और वहीं एक पाठशाला खोली। वहीं आकर महर्षि दयानन्द ने आपसे विद्या ग्रहण की। आप ही महर्षि दयानन्द जी के प्रथम गुरु थे तथा १८५७ में लड़े गये स्वतन्त्रता संग्राम के जनक भी आप ही थे। आपके शिष्यों ने उस संग्राम में पर्याप्त भाग लिया। आप सम्वत् १९२५ की आश्विनि वदी त्रयोदशी सोमवार तद्नुसार १८६८ ई० सितम्बर में जीर्णवस्त्र छोड़कर स्वर्ग लोक सिधार गये।

महर्षि दयानन्द— महर्षि का जन्म सम्वत् १८८१ वि० तद्नुसार १८२४ ई० को गुजरात में टकारा नामक ग्राम में एक शैव परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम कर्षण जी तिवाड़ी व माता का नाम यशोदाबाई था। आपके पिता कट्टर शैव थे। आप पर भी उनका प्रभाव पड़ा और चौदह वर्ष की आयु में आपने शिवरात्रि के दिन व्रत रखा। रात्रि में शिवमूर्ति पर चूहों के मिष्ठान भक्षण से आपको मूर्ति से निराशा हुई, कि जो स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह संसार की क्या रक्षा करेगा ? अतः सच्चे शिव की खोज की धुन लग गई। परिणाम स्वरुप आपने घर बार छोड़ा और जंगलों में योग की शिक्षा के लिये घूमे, आपने सन्यास धारण किया और मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से सम्वत् १९६० से १९६३ तक विद्याध्ययन किया। शिक्षा पूर्ण हो जाने पर आपने वेद ज्ञान का प्रचार, मूर्तिपूजा का बहिष्कार अछूतोद्धार, स्त्रीशिक्षा व स्वराज्य प्राप्ति का स्थान पर जाकर प्रचार किया परन्तु उस देव दयानन्द का अधिक दिन जीवित नहीं रहना था। आप एक वेश्या के षडयंत्र के शिकार हुए। आपको विष दिया गया और सम्वत् १९४० वि० में अजमेर में आप ने अपना शरीर त्याग दिया। आप ही सबसे पहले आर्य समाज के संस्थापक थे तथा अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' आप की आर्य जगत को एक अमूल्य देन है।

स्वामी श्रद्धानन्द—स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म पंजाब के जिला जालन्धर के ग्राम तल्वन में फाल्गुन कृष्ण १३ सम्वत् १९१३ वि० में लाला नानक

चन्द जी के परिवार में हुआ था। आपके पिता उ०प्र० में पुलिस में नौकरी करते थे। जन्म के समय आपका नाम मुंशीराम रखा गया और बाद में सम्वत् १९७३ में सन्यास लेने पर आपने अपना नाम श्रद्धानन्द रख लिया। आपके बाल्यकाल और शिक्षा का समय अधिकतर बरेली, बदायूं, बनारस, बाँदा, औंर बलिया बीता। आपके पिता ने आपको शिक्षा के बाद नायब तहसीलदार बनवाया परन्तु आपने ३ माह बाद ही नौकरी छोड़ दी और लाहौर से वकालत पास करके वकालत करने तगे। सम्वत् १९४१ में आर्य समाजी बने। सम्वत् १९५८ में गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना करके संचालन में लग गये। सम्वत् १९४७ में सन्याम लेकर सार्वजनिक सेवाओं में लग गये। मुसल-मानों में प्रबल शुद्धि और हिन्दुओं में अपूर्व जागृति उत्पन्न करने के कार्यों ने ईर्ष्यालु व्यक्तियों के हृदयों को दहला दिया वे गुम नाम से लेखों और पत्रों द्वारा स्वामी जी का खून करने की धमकी देने लगे थे। स्वामी जी ने उन धमकियों पर ध्यान नही दिया। परिणाम स्वरुप २३ दिसम्बर १९२६ ई० को दिन के ४ बजे उनकी निर्बल-छाती में पिस्तौल से ३ गोलियां मार कर उनकी हत्या कर दी गई।

✓ **पं० लेखराम जी**—पण्डित जी का जन्म पंजाब के जेहलम में स्थित सय्यद पुर नामक ग्राम में महता तारा सिंह के घर ति० ८ चैत्र सम्वत् १९१५ वि० शुक्रवार के दिन हुआ था। आप आर्य समाज के उच्चतम कोटि के प्रचारक और लेखक थे। पण्डित जी शुद्धिकार्य के भी बड़े प्रेमी और प्रचारक थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि दुष्ट मनुष्य जो अपनी शुद्धि चाहता था उसने मौका पाकर पण्डित जी की छुरे से हत्या कर दी। ६ मार्च सन् १८९७ की सायंकाल को लाहौर में आपकी आत्मा इस नश्वर शरीर को त्याग कर परलोक सिद्धार गई। आपकी मृत्यु से आर्य जगत के शुद्धि कार्य को बहुत ठेस पहुंची आपके द्वारा किये गये कार्यों से आर्य जगत सदैव ऋणी रहेगा।

✓ **पं० गुरुदत्त विद्यार्थी**—आपका जन्म २६ अप्रैल सन् १८६४ ई० में मुल्तान नामक ग्राम में सरदना नामक कुल में श्री रामकृष्ण जी के परिवार में हुआ था। ८ वर्ष की व्यवस्था में आपको विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। आपने अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और अंग्रेज विद्वानों के आपने अनेक ग्रन्थ पढ़े जिसका फल यह निकला कि ईश्वर के प्रति आपका विश्वास समाप्त हो गया और २० जून १८-८० ई० को आप विधि पूर्वक आर्य समाज में प्रविष्ट हो गये। सर्व प्रथम आपने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया। आप स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त बन गये। सन् १८८३ में जब स्वामी जी की बीमारी का पता चला तो आप तुरन्त अजमेर पहुंचे और वहाँ स्वामी जी की आपने यथाशक्ति सेवा की। स्वामी जी की मृत्यु का आपके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा और उनके मिशन को पूरा करने का प्रण किया परन्तु उनके स्वास्थ ने आपका साथ नहीं दिया तथा १८ मार्च १८९० ई० में रात को १२ बजे आपकी दशा बहुत सोचनीय हो गई और १९ मार्च १८९० को आपका देहान्त हो गया।

भक्त फूलसिंह—आपका जन्म रोहतक जिले के ग्राम माहरा में सम्वत् १९४२ वि० सन् १८८५ में हुआ था। आपके पिता जाट वंश के जमींदार थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद आप महरौली स्थित मिडिल स्कूल में भर्ती करा दिये गये। मिडिल पास करने के बाद आप करनाल में पटवारी हो गये। एक अन्य पटवारी के सत्संग से आप की वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई। सन् १९०८ में पानीपत के आर्य समाज में आपका नियम पूर्वक यज्ञोपवीत हुआ। आपने पटवारी पद छोड़ दिया और आर्य समाज की सेवा में लग गये। आपने १९२० में भेंसवाला में गुरुकुल की स्थापना की आपने हरिजन उद्धार भी किया। इन सब कार्यों को करते हुए सन् १९४१ की श्रावण सुदी द्वितीया को रात के ९॥ बजे अज्ञात व्यक्तियों की गोलियों से आप स्वर्ग सिधार गये।

महाशय राजपालजी—महाशय जी का जन्म असाढ़ सम्वत् १९४२ वि० में एक निर्धन परिवार में हुआ था। आपका नाम आरम्भ में घसीटाराम था। आपके पिता किन्ही कारणों से गृह त्याग कर गये थे। आप आश्रय हीन हो गये। गरीबी में मिडिल पास किया तथा पुस्तकें लिखनी आरम्भ की। आपने १२ रु० मासिक की नौकरी भी की। आपने 'बालक सुधार सभा' की स्थापना की। आप १९०६ में जालन्धर में क्लर्क बन गये। हकीम फतह चन्द के आग्रह से आपने अपना नाम राजपाल रखा। १९११ ई० में आपका विवाह हुआ। प्रकाश पत्र के कार्यालय में उस समय आपको ४० रू० वेतन मिलता था। विवाह पश्चात् और आवश्यकतायें बढ़ जाने पर आपने अनेक वैदिक धर्म से प्रभावित पुस्तकें लिखी और उनको लागत मूल्य पर ही वेचा। अन्त में ६ अप्रैल १९२९ ई० को अपनी दुकान पर हीं बैठे एक युवक के छुरे के वार से आपका स्वर्ग वास हो गया।

पं० तुलसीरामजी—अपाका जन्म पंजाब प्रान्त के जिला गुरदासपुर के डेरा-बबा नानक के समीप रुड़ा नामक ग्राम में हुआ था। १२ वर्ष की अवस्था में ही आप के माता पिता का स्वर्गवास हो गया था। आपने हाईस्कूल परीक्षा पास की और स्टेशन मास्टर बन गये। आपने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार में ही बिताया। आपकाविवाह बटाला में लाजवन्ती देबी के साथ हुआ। सन् १९०३ ई० में ये कहीं जा रहे थे। इनके किसी विरोधी ने लाल मिर्चो के चूरे में बालू रेत मिला कर इनकी आखों में झोंक दिया और न देख सकने की वजह से पेट में छुरा घोंप दिया। इस प्रकार आपका स्वर्गवास हुआ।

पं० बस्तीराम जी—आपका जन्म पंजाब प्रान्त के रोहतक जिले में झज्जर तहसील के सुल्तानपुर खेड़ी नामक ग्राम में सम्वत् १८०८ में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता संस्कृतज्ञ थे। आपको बचपन से गाने का बड़ा शौक था। उन दिनों ऋषि दयानन्द जी घूम-२ कर वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे थे। आपने भी स्वामी जी के विचार सुने तथा उनके साथ १५-१६ दिन रहकर आर्य बस्तीराम

बन गये। ४० वर्ष की अवस्था में आप चेचक की बीमारी में अन्धे हो गये। आपने एक भजन मण्डली बनाकर स्थान-स्थान पर आर्य समाज का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। आपने अनेकों भजन की पुस्तकें भी लिखीं। आपने हजारों परिवारों को आर्य बनाया अनेकों बालकों को गुरुकुल भिजवाया। अन्त में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए झज्जर तहसील के ग्राम में डा० हरफूल सिंह के यहाँ २६ अगस्त को १७ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया।

स्वामी योगानन्द जी—आपका जन्म हिसार जिले की हाँसी तहसील के अन्तर्गत उमरा नामक ग्राम के पास देपली की ढाणी नामक ग्राम में हुआ था। बालकपन में ही आपका विवाह हो गया था, परन्तु बाद में ब्रह्मचर्य पालन की सच्ची लग्न लग गई। घर छोड़कर देहली वेद विद्यालय में पहुंचे वहीं आचार्य भगवान देव भी विद्याध्ययन किया करते थे। भगवान देव जी ने नरेला में आर्य विद्यार्थी आश्रम की स्थापना की। आपने यहीं निवास किया। १९४२ में आचार्य जी ने गुरुकुल झज्जर की स्थापना की। आपने भी यहीं गुरुकुल की सेवा की। एक दिन आप देहली से नरेला रेल द्वारा जा रहे थे गाड़ी में भीड़ होने के कारण डण्डा पकड़कर खड़े हो गये। किन्हीं कारण वश उनका सर सिग्नल से टकरा गया और उनकी मृत्यु हो गई।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी—आपका जन्म लुधियान जिले के मोही नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम भगवान सिंह था। बचपन का आपका नाम केहर सिंह था। आपने स्कूल में मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। २२ वर्ष की अवस्था तक आप साधुओं की संगत में रहे। सन् १९०० में आपने गृह त्याग दिया। १९० में आपने सन्यास की दीक्षा ली साधु लोग आपको स्वतन्त्र कहने लगे। इस प्रकार आप का नाम स्वतन्त्रानन्द पड़ गया। १९०८ में आपके हृदय में आर्य समाज की सेवा करने की भावना उत्पन्न हुई। १९१४ में आप अफ्रीका चले गये तथा वहाँ वैदिक धर्म का प्रचार किया। अन्तिम समय में आपको कैंसर की बीमारी हो जाने पर सम्वत् २०१२ में चैत्रसुदी ११ को बम्बई के एक अस्पताल में आपका देहान्त हो गया।

आचार्य भगवान देव—आपका जन्म नरेला में हुआ था। आपके पिता कनक सिंह थे। आपका नाम प्रारम्भ में भगवान सिंह था। आचार्य राजेन्द्रनाथ ने आपका नाम भगवान देव रखा। आपने ग्राम नरेला में विद्यार्थी आश्रम की स्थापना करके उसे शिक्षा का केन्द्र बनाया। १९३९ में आपने हैदराबाद सत्याग्रह में निजाम की जेल काटी। १९४२ में आपने गुरुकुल झज्जर के आचार्य पद को ग्रहण किया तब से अब तक निरन्तर आप देश सेवा में लगे हुए हैं।

महाशय रामचन्द्र जी—आप कश्मीर में जम्मू नगर के निवासी थे। आप का जन्म सम्वत १९५३ में एक महाजन परिवार में हुआ था। आपको आर्य समाज

से अगाध प्रेम था और उसके प्रचार की बड़ी लगन थी। जब आप जम्मू से अखनूर पहुंचे तो आपने वहां के पास के ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया। आप बुटहरा नामक ग्राम में मेघ बालकों के लिए एक पाठशाला खोलना चाहते थे। उसका उस ग्राम के राजपूतों ने इतना विरोध किया कि मारे डण्डों के उनका शरीरान्त कर डाला। २० जनवरी को यह घटना घटी।

महाशय नाथूराम जी—आपका जन्म २ अप्रैल सन १९०८ ई० को हैदराबाद सिंध में हुआ था। आपके पिता का नाम कीमतराम था। बचपन से ही आपको आर्य समाज से प्रेम था। उन दिनों विद्यार्थियों द्वारा हिन्दू धर्म और संस्कृति का घोर अपमान किया जा रहा था जो नाथूराम जी सहन न कर सके। उन्होंने बदले में वही कार्यवाही की जो विद्यार्थियों को असह्य थी। परिणाम स्वरूप उन पर केस चलाया गया। २० सितम्बर १९३४ को अदालत में उनके केस की सुनवाई थी वहीं पर एक विधर्मी ने उनके छुरा घोंप कर मृत्यु कर डाली इस घटना से सारी अदालत में सन्नाटा छा गया। उनकी मृत्यु से आर्य जगत को बड़ी हानि उठानी पड़ी।

श्री मेघराज जी—आप नारायण गढ़ (इन्दौर) के निवासी थे आपका जन्म सम्वत् १९३८ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गोपाल जी था। श्री विनायक राव जी द्वारा आप आर्य-समाज में दीक्षित हुए। आर्य समाज के प्रचार में आपका भाषण बाजारों में होता था तो विरोधी जनता आपके ऊपर ईंट पत्थर फेंकती थी। आपने अपने जीवन काल में १२ आर्यसमाज स्थापित की। शुद्धि और अछूतोद्धार में आपकी विशेष रूचि थी। मार्च १९३८ में मेघराजजी अछूतों को मन्दिर में प्रवेश कराना चाहते थे कि इन्दौर निवासियों ने उनका विरोध किया और राम-नवमी के एक दिन पहले ७ आदमियों ने मिलकर उनका बध कर दिया।

सेठ जयराम जी—आप जोधपुर के रहने वाले थे। आपको आर्य-समाज से बड़ा प्रेम था। तन मन धन से आप आर्यसमाज की सेवा किया करते थे। हैदराबाद सत्याग्रह के लिये आपका उत्साह और कार्य जोधपुर आर्यसमाज के इतिहास में अमर रहेगा। आप की प्रगतियों से आपके विरोधियों की नींद हराम हो रही थी। २९ मई १९३९ ई० को उम्मेद कन्यापाठशाला में बम्बई सरकार के विरोध में एक सभा हुई। सभा समाप्ति पर आपके घर जाते समय रास्ते में आक्रमण करके आपकी हत्या कर दी गई।

श्री बद्रीशाह जी—आप उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले के रहने वाले थे। आप अपने क्षेत्र के आर्यसमाज के एक बड़े स्तम्भ थे शुद्धि और दलितोद्धार कार्य से आपको बड़ा प्रेम था। ये दोनों कार्य आप बड़े साहस और निर्भीकता के साथ करते थे। आपके विरोधी आपको सदैव धमकी देते रहते थे जिनकी आप परवाह न करते थे। एक दिन आप कहीं से लौट रहे थे। रास्ते में कुछ विरोधियों ने आप पर आक्रमण कर दिया और आप वहीं स्वर्ग सिधार गये।

शहीद खण्डेराव गणपतराव—आप हिन्दू मराठा थे। आपका जन्म २७ मई सन् १८८७ को गुजरात प्रान्त के जिला सूरत में एक ग्राम में हुआ था। आपके पिता जी पुलिस में नौकर थे। आप की प्राइमरी शिक्षा भड़ौच में हुई। १९१० में अध्यापक ट्रेनिंग पास करके अध्यापक का कार्य आरम्भ कर दिया तभी से आपको आर्यसमाज की लगन लगी। हरिजनो की भी आपने सेवा की। आपने १९२८ ई० में भड़ौंच में एक हरिजन स्कूल खोला। ४ मार्च १९३० को एक १७ वर्षीय हिन्दू लड़के को विधर्मियों से बचाने के कारण उन विधर्मियों ने खण्डेराव गणपतराव जी का प्राणान्त कर दिया।

स० घनासिंहजी—आप लुधियान जिला के अन्तर्गत ताहला ग्राम के निवासी थे। आपके पिता का नाम सरदार लक्षमनसिंह था। आप एक उत्साही वैदिक धर्मी थे। आप प्रायः सिक्खों में वैदिक प्रचार किया करते थे। आपका यह वैदिक धर्म प्रचार ही आप की मृत्यु का कारण बना। ११ मई सन् १९३० को एक अकाली सरदार ने किसी अन्य विरोधी व्यक्ति की सहायता लेकर उनको दुकान पर जाते समय पकड़ लिया और घर ले जाकर इतना पीटा कि उनका प्राणान्त कर दिया।

ला० आयारामजी—आप गांव कालूर तहसील ईसाखेल जिला मियावाली के एक प्रसिद्ध जमीदार व साहूकार थे। आपने एक विधर्मी जात की युवती को लाहौर में शुद्धि कराके उससे विवाह किया था, परन्तु उनके इस कार्य से विधर्मी शान्त नहीं बैठे उन्होंने अवसर देखकर उनका बध कर दिया और कुछ समय पश्चात उनकी पत्नी श्रीमती भगवती देवी व उनकी कन्या की भी नृशंस हत्या कर दी गई। इनका वध करने वाले पकड़े गये और उनको दण्ड भी मिला, परन्तु यह आर्य-परिवार समाप्त हो गया।

श्री भैरोंसिंह जी— प बांदा कई जयपुर के समीप पारवर गांव के निवासी महाशय हर भजन जी के पुत्र थे। आपने आर्य समाज द्वारा जाति की सेवा करना प्रारम्भ किया। अनाथों और भोले-भाले हिन्दुओं को विधर्मियों के जाल मे छुड़ाना आपका मुख्य कार्य था। इसके लिये आपने अपना तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर आप सदैव निडर रहते थे। दुर्भाग्यवश आपका अपने अखाड़े के साथियों से भी मत-भेद हो गया और उनकी सहायता से दिन दहाड़े पटना की गलियों में भालों और बर्छियों से आप कों नृशंस हत्या कर दी गई। हत्यारे पकड़े भी गये लेकिन सभी छूट गये।

श्री बृजल ल जी—आप चिचौली जिला बैतूल निवासी एक माल गुजार थे। ता० १२ अक्टूबर सन् १९२८ ई० को दुर्घटना के दिन आपकी आयु केवल ३० वर्ष की ही थी। शुद्धि के कार्य में आपकी अधिक रुचि थी और यही रुचि आपकी हत्या का कारण बनी। एक स्वजातिय महिला जो किन्हीं कारणवश विधर्मी हो गई थी उसकी शुद्धी करने के कारण विधर्मी लोंग आप से नाराज हो गये और दिन दहाड़े आपकी हत्या कर दी गई। आपके हत्यारे को फांसी का दण्ड मिला।

ला० पालामल जी—आप कसूर निवासी एक महाजन थे। आप उत्साही हिन्दू युवक थे। मजहबी बातों पर आप वाद-विवाद बहुत किया करते थे। एक दिन विधर्मियों से किसी बात पर आपका झगड़ा हो गया उन्होंने शोर मचाया कि ला० पालामल विधर्मियों को गालियाँ देता है। इस पर एक विधर्मी युवक ने उनका बध कर डाला। आपका हत्यारा पकड़ा गया और उसको फांसी का दण्ड मिला। जब तक आप जीवित रहे आपने आर्य समाज की तन-मन-धन से पर्याप्त सेवा की।

✓ **स्वामी विवेकानन्द**—स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म ९ जनवरी १८६२ ई० को बंगाल के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री बा विल था। आपने अपने गुरुदेव की शपथ लेकर हिन्दू संस्कृति के उद्धार का बीड़ा उठाया था। आपने रामकृष्ण परमहंस की प्रेरणा से हिन्दू संस्कृति का विश्व भर में प्रकाश फैला दिया। आपने हिन्दू संस्कृति तथा वैदिक धर्म का देश विदेश में घूम-घूम कर प्रचार किया। सन् १९०२ में आपका स्वर्गवास हो गया।

✓ **स्वामी रामतीर्थ**—स्वामी जी का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला गुजरानवाला के म मरारीवाला में १८७२ ई० में हुआ था। आपके पिता का नाम हीरानन्द तथा दादा का नाम रामलाल था, आप फारसी भाषा के विद्वान थे। आपके हृदय में प्राणियों को सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिलाने की इच्छा जागृत हो चुकी थी। उस इच्छा को पूरा करने के लिये आपने अपना सारा जीवन देश सेवा एवं समाज सेवा में लगा दिया। समाज की सेवा करते हुए १७ अक्तूकर सन् १९०९ को आपका स्वर्ग-वास हो गया।

महात्मा नारायण स्वामी—आर्य जगत के महान विद्वान महात्मा नारायण स्वामी जी उ० प्र० के जिला अलीगढ़ में सन् १८६९ ई० को उत्पन्न हुए थे। आप ऋषि दयानन्द के परम भक्त थे और उनके मिशन को पूरा करने में आपने अपना जीवन लगा दिया। मथुरा में श्रीमद् दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव की पूर्ण सफलता का श्रेय आपको ही है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की मृत्यु के पश्चात 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' की बागडोर आपने ही संभाली। जीवन पर्यन्त आर्य समाज की सेवा करते १५ अक्तूबर सन् १९४७ को आपका स्वर्गवास हो गया।

✓ **महात्मा हंसराज**—महात्मा हंसराज जी बजवाड़ा ग्राम में १९ अप्रैल सन् १८६४ ई० में उत्पन्न हुए थे। आपके पिता का नाम ला० चुन्नीलाल जी था। आप अपनी शिक्षा समाप्त करके एक कालिज के प्रधानाचार्य बन गये। तभी से वैदिक धर्म की ओर आपकी रुचि हो गई। आपका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादा था। आप अपने युग के सादे वेश में एक महान विद्वान अकेले थे। आर्य समाज से आपको काफी प्रेम था और देश की सेवा करते हुए १५ नवम्बर सन् १९३८ को आपका स्वर्गवास हो गया।

✓ **स्वामी ब्रह्मानन्द** - स्वामी ब्रह्मानन्द जी का जन्म माघ शुक्ला पंचमी सम्वत् १९२५ वि० में श्री वास्तव कायस्थ कुल में ग्राम डुमरा जिला आरा बिहार प्रान्त में

हुआ था। आपका जन्म का नाम ब्रह्मदत्त था। आपके पिता का नाम श्री रामगुलाम सिंह था। सत्यार्थप्रकाश के बार बार अध्ययन करने से ही आप १६ वर्ष की अवस्था में पक्के आर्य समाजी बन गये थे। आपने १८६० ई० मे 'आर्यवर्त' नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया। लगभग ३॥ वर्ष आप वैदिक मन्त्रालय के मैनेजर के पद पर कार्य करते रहे। आपका लगभग ८० वर्ष की आयु में सन् ४८ के अन्तिम दिनों में देहावसान हो गया।

बंशीलालजी—आपका जन्म हैदराबाद रियासत के जिला बीदर के माणिक नामक नगर में एक ब्राह्मण के घराने में हुआ था। आपके पिताजी का नाम भोला प्रसाद था। आपके पिताजी पूर्ण पौराणिक व पुजारी थे। इस कारण आपकों भी मन्दिर में पूजा के लिये जाना पड़ता था लेकिन आप तो मूर्तियों पर चढ़ाया हुआ प्रसाद खाकर वापिस लौट आते थे। १५ वर्ष की अवस्था में आप के पिता का स्वर्ग-वास हो गया। तब से आप स्वयं अपनी पढ़ाई में लगे और आपने वकालत पास की। वकालत करने के साथ साथ आपके हृदय में आर्य समाज के प्रति लगन भी उत्पन्न हो गई। आप हैदराबाद से निकलने वाले 'वैदिक संदेश' के सम्पादक भी रहे। आप स्थान स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान का प्रचार करते थे और आर्य समाज की सेवा करते हुए ही आपका स्वर्गवास हो गया।

पं० वंशीलाल व्यास—आपका जन्म राजस्थान के नराधना नामक एक छोटे से ग्राम में २ नवम्बर १८६६ ई० में दीपावली के दिन रिजकुल में हुआ था। आपके पिता का नाम चतुर्भुज व्यास था। आप व्यापार करने की दृष्टि से दक्षिणी हैदरा-बाद चले गये। उन दिनों वहाँ आर्य समाज के वेद प्रचारकों का पर्याप्त जोर था। आपने अनेक आर्य विद्वानों के वहाँ भाषण सुने और आर्य समाजी बन गये और आर्य समाज की सेवा में लग गये। सन् १६३८ ई० में हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे पिता की मृत्यु की परवाह न करते हुए पूर्ण भाग लिया। सन् १६५३ में आर्य प्रतिनिधि हैदराबाद के मंत्री चुने गये। जो अन्तिम समय तक रहे। सन् १६५६ में रेल दुर्घटना के कारण आपकी मृत्यु हो गई। आपकी मृत्यु से आर्य जगत की बड़ी हानि हुई।

वेद प्रकाश जी—आपका जन्म का नाम दासप्पा था। आपका जन्म सम्वत् १८२७ में गुंजोटी में हुआ था। आपके पिता का नाम रामप्पा था। आप आरम्भ से ही आर्य समाजी थे। आर्य समाज के प्रत्येक सत्संग में आप अवश्य जाते थे। वैदिक धर्म के आकर्षण ने इन्हें महर्षि दयानन्द का परम भक्त बना दिया था। आर्य समाजी बनकर ही आपका नाम वेद प्रकाश रखा गया। एक दिन स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री के घर पर विद्यार्थियों ने आक्रमण किया। वेद प्रकाश जी को पता चला तो उनकी सहायता के लिये वहाँ पहुंचे। वहां पहुंचते ही विद्यार्थियों ने आपकी हत्या कर दी।

धर्म प्रकाश जी—आपका जन्म कल्याणी में सम्वत् १८३६ में हुआ था। आप का जन्म का नाम नागप्पा था और आपके पिता का नाम सायन्ना था। आप जब आर्य समाजी बने तब से आपका नाम धर्म प्रकाश पड़ गया। कल्याणी में विधर्मियों का बोल बाला था। उनकी रोकथाम में धर्म प्रकाश जी रुचि लेना चाहते थे परन्तु विधर्मियों को इनके कार्यों पर रोष था और इनकी हत्या के षड़यन्त्र में लग गये। एक दिन २७ जून १९३७ ई० की रात को ये आर्य समाज के सत्संग से वापिस आ रहे थे। वहीं रास्ते में आपकी हत्या कर दी गई।

महादेव जी—आप अकोलगा के रहने वाले थे। जब आप कई बार आर्य समाज के सत्संगों में सम्मिलित हुए तो आप पक्के आर्य समाजी बन गये। आपने वैदिक धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया। आपका वैदिक धर्म का प्रचार का कार्य जब प्रगति करने लगा तो विधर्मी आपके अकारण ही शत्रु बन गये। कई बार आप पर आक्रमण किये गये लेकिन १४ जौलाई सन् १९३८ को किया गया आक्रमण खाली न गया और केवल २५ वर्ष की ही अवस्था में आपको सदैव के लिये सुला दिया गया।

श्याम लाल जी—आप सन् १९०३ ई० में भालकी में उत्पन्न हुए। आपके पिता का नाम भोला प्रसाद था। आप एक ब्राह्मण वंश के थे। आरम्भ में आप मूर्ति पूजक थे परन्तु बाद में अन्य आर्य समाजियों से प्रभावित होकर आप भी पक्के आर्य समाजी बन गये। गुलबर्गा में आपके ही प्रयत्नों से आर्य समाज की स्थापना हुई। १ २३ में आप बीमार पड़े और १९२६ में श्रद्धानन्द जी के शहीद हो जाने पर आप पर बहुत प्रभाव पड़ा। १९२८ में आप पर झूठा मुकदमा चलाया गया उसमे आप छूट गये। लेकिन १९३८ में चलाये गये मुकदमे में आपको लम्बी सजा भुगतनी पड़ी और कारावास में ही आपका स्वर्गवास हो गया।

माधवराव सदाशिवराव जी—आप लातूर के रहने वाले थे। आप की आयु केवल ३० वर्ष की होगी जब कि आपने आर्य सत्याग्रह में भाग लिया और गुलबर्गा जेल में बन्द कर दिये गये। २६ मई १९३९ ई० के दिन कड़कती धूप में नंगे पैर कठिन परिश्रम करने से आप बीमार हो गये। चिकित्सा का कोई प्रबन्ध न होने के कारण और निजाम सरकार की क्रूरता के कारण आपका देहावसान हो गया। आपके शव के दर्शन भी अन्य नर नारियों को नहीं करने दिया गया और जेल के अन्दर ही आपके पार्थिव शरीर को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया।

✓ **राधाकृष्ण जी**—आप निजामाबाद के एक राजस्थानी थे। सन् १९०३ ई० में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम जीतमल था। १९३४ ई० में आप आर्य समाजी बने और तभी से इसका प्रचार आरम्भ किया। आपने निजामाबाद में आर्य समाज की स्थापना की इसी कारण आप पुलिस के शत्रु हो गये। २ सितम्बर १९३९ के दिन आप आर्य सत्याग्रह के लिये चन्दा एकत्र करने में जुटे हुये थे कि एक

विधर्मी ने आपको छुरा घोंप कर मार डाला । आपकी हत्या में वहाँ की पुलिस का षड्यन्त्र था ।

शिवचन्द्र जी—आपका जन्म ३ मार्च सन १९१६ को हुआ था । आप का जन्म स्थान दूबलगुण्डी है । आपके पिताजी का नाम अनन्पज्ञप्पा था । १९३५ में आपने मैट्रिक परीक्षा पास की । सरकार की ओर से आपको छात्रवृत्ति भी मिलीते आप एक पाठशाला में अध्यापक हो गये । अध्यापकीय काल में ही आपने आर्य साहित्य का अध्ययन किया और आर्यसमाजी बन एये । आर्य समाज के लिए आपने बड़े उत्म। और श्रद्धा से कार्य किया । सत्याग्रह की मुख्य सूचनाएं आप लाते और बाहर भेजा। थे । ३ मार्च १९४२ई० के दिन होली के जलूस में विधर्मियों ने आप पर आक्रमण कर दिया फलस्वरुप आप शहीद हो गये ।

✓राम कृष्ण जी—आपका जन्म लावसी ग्राम में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था और शहीद होने से केवल दो सप्ताह पूर्व ही आप आर्यसमाजी बने थे । एक दिनह विधर्मियों ने हिन्दुओं के मन्दिर को तोड़ने की घोषणा की थी । अन्य हिन्दु तो डर कर घर में बैठ गये । विधर्मियों की ओर से गोली चली । आप बुरी तरह घायल हुये परन्तु फिर भी आपने उनका मुकावला किया और उनको भगा कर हिन्दू जाति की लाज रखी, परन्तु अधिक रक्त निकल जाने से आप भी वही शहीद हो गये.

अर्जुन सिह जी—आप आर्य समाज के एक नररत्न थे । आप तालुका कन्नड़ (औरंगाबाद) में पैदा हुए थे । बचपन से ही राप हैदराबाद में रहने लगे थे । अपने निष्ठा और उत्साह के कारण आप हैदराबाद दयानन्द मुक्तिदल के सेनापति बनाये गये । सम्वत् १९९१ में किसी यात्रा से लौट समय कुछ विधर्मियों ने उन पर आक्रमण कर दिया उनको घायल अवस्था में हस्पताल में भरती कराया गया लेकिन दुर्भाग्यवश दो दिन पश्चात आप । स्वर्ग सिधार गये ।

पाण्डुरंगजी—आप उसमानाबाद के रहने वाले थे । आर्य सत्याग्रह करने के कारण आप को कारावास का दण्ड दिया गया । गुलबर्गा जिले मे आप रोगग्रस्त हो गये और आपकी चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया । आपकी हालत चिन्ताजनक होती चली गई । २५ मई १९३१ को आपको हस्पताल भेजा गया लेकिन आप वहां भी बच नहीं सके और १७ मई सन् १९३९ ई० को आप का स्वर्गवास हो गया । आप के दर्शन आम जनता को नहीं करने दिये गये और पलिस द्वारा ही आप का दाह संस्कार हुआ ।

✓ हुतात्मा सुनहरा— आप जिला रोहकक ग्राम बुटाना में जाट परिवार में श्री जगराम जी के परिवार में उत्पन्न हुये थे । आप की शिक्षा घर पर ही पूर्ण हुई । जिस दिन सत्याग्रह आरम्भ हुआ वह दिन आपके गोने का था । लेकिन आप गौना छोड़कर सत्याग्रह में भरती होने के लिए हैद्राबाद पहुंच गये । आप ५ जून को सत्याग्रह में गिरफ्तार किये गये । जेल में आप को ज्वर आ गया जो बहुत भयानक सिद्ध हुआ । आप को हस्पताल भेजा गया लेकिन आपकी बगल में निकला हुआ फोड़ा आपकी जान लेकर ही फूटा । ८ जून सुबह ७।। बजे आपका स्वर्गवास हो गया ।

भाई परमानन्द—आप हरिद्वार के रहने वाले थे। आपके पिता का नाम गोकुल प्रसाद था। आप ३० वर्ष के हृष्ट-पुष्ट नवयुक थे। पढ़ते समय सारे परिवार की आशा आप पर ही थी लेकिन उन दिनो सत्याग्रह की लहर बड़े जोरों से चल रही थी जो परमानन्द जी को भी बहाकर ले गई। आप १० सत्याग्रहियों के साथ राजूर में वन्दी बनाये गये। जेल में ही १अप्रैल १९३९ को आप का प्राणान्त हो गया। आपके शव की परीक्षा होने पर आपके शरीर पर घावों का पता चला तथा नाक मुहं से खून भी निकला था।

श्री फकीरचन्द—आपका जन्म जिला करनाल तहसील कैथल में सेरखा जांव में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री बालाराम जी था। आप हरिजन परिवार के थे लेकिन आपका सारा परिवार वैदिक धर्मी था। आर्य सत्याग्रह में जाने के समय आपकी आयु केवल २२ वर्ष की थी। इन को काफी मना किया गया लेकिन ये दौड़ कर सत्याग्रही जत्थे में सम्मिलित हो गये और ५ जून को औरंगाबाद में सत्याग्रह करते हुए पकड़े गये। जेल में आपको उदरपीड़ा हुई और १० जून १९३९ को जेल में ही आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री वैद्यनाथ—आप चम्पारन जिले के नरकटिया गंज के एक सम्पत्ति शाली परिवार के अकेले पुत्र थे। सारे परिवार की दृष्टि आप पर ही लगी हुई थी। आपके पिताजी का नाम धरिद्धनराम था। आपकी अवस्था १९ वर्ष की थी। हैदराबाद के सत्याग्रह की रणभेरी सुन आप भी युद्ध की ओर दौड़ पड़े। घर में नवविवाहिता स्त्री बैठी थी किसी की भी परवाह न करते हुए सत्याग्रह में बन्दी हुए और जेल में ही बीमार हो जाने के कारण २५ जून १९३९ को स्वर्ग सिधार गये।

नन्हूंसिंह—आप बुन्देलखण्ड के निवासी थे। अमरावती में आप मजदूरी करके अपनी गुजर करते थे। आप श्री गणेश सिंह जी के पुत्र थे। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। हैदराबाद के सत्यग्रह ने आप के हृदय को प्रेरणा दी। आप अन्य सत्याग्रही जत्थे ले कर ५२ वर्ष की अवस्था में गिरफ्तार हुए। आप कारावास में बीमार पड़जाने के कारण २९ मई १९३९ को उस्मानिया हस्पताल में निमोनिया से आप स्वर्ग सिधार गये सरकार ने आपकी मृत्यु का पता तक नहीं लगने दिया।

शहीद रमेश—आपका पहला नाम रामसहाय था। आपका जन्म एक आर्य परिवार में ला० बैनीराम के घर फाल्गुन कृष्णा सप्तमी सम्बत १९६७ को हुआ था आपकी शिक्षा पास में ही पूर्ण हुई। आप बाल्य काल से ही श्री दयानन्द सरस्वती के विषय में छोटी २ पुस्तकें लिखा करते थे। प्रातः साय आर्य समाज में संध्या-हवन आप की दिनचर्या थी। स्थान स्थान पर आप आर्य समाज की सेवा करते थे। आप नमक आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुलिस द्वारा बुरी तरह मार लगाने के कारण स्वर्गवासी बने।

श्री रामचन्द्रजी देहलवी—आप का जन्म सन १८८१ ई० के राम नवमी के दिन एक आर्य परिवार में होने के कारण आप आरम्भ से ही आर्य समाज की सेवा

में लग गये। आप जीवन भर विधर्मियों से शास्त्रार्थ करते रहे। आपको 'कुरान शरीफ' भी कण्ठस्थ याद थी और जब आप शास्त्रार्थ करते थे तो दोनों ग्रन्थों का निचोड़ जनता के समक्ष रख देते थे। आपका अधिकाश जीवन उ० प्र० के मेरठ जिले के हापुड़ में ही व्यतीत हुआ आप तर्क देने में भारत में बहुत प्रसिद्ध थे। आपने अनेकों पुस्तकों की रचना भी की थी। आप ३ फरवरी १९६८ ई० में वसन्त पंचमी के दिन स्वर्ग सिधार गये। आप अपने उपदेशों का टेपरिकार्ड जनता की भलाई के लिये छोड़ गये हैं।

कवर सुखलाल—आपका जन्म एक आर्य सामाजिक परिवार में हुआ था। परिवार का प्रभाव आप पर जन्म से ही पड़ा। अतः आप आरम्भ से ही एक आर्य सामाजिक विचार धारा के व्यक्ति रहे हैं। आपने जीवन भर आर्य समाज की सेवा एक भजनो पदेशक के रूप में की है। आजकल आप आर्य समाज के एक बहुत बड़े प्रचारक हैं। आप घूम २ कर भजनों द्वारा व्यक्तियों में सामाजिक विचार धारा भरने का काम करने में लगे हुये हैं। आपने भजनों की अनेकों पुस्तकें भी लिखी हैं। आजकल सभी लोग आपको आर्य पथिक मुसाफिर के नाम से अधिक जानते हैं।

ला० रामगोपाल शाल वाले—आप एक आर्य सामाजिक परिवार में उत्पन्न होने के कारण आरम्भ से ही आप का जीवन आर्य समाज से प्रभावित रहा है आपने आर्य समाज के उत्थान में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। गौहत्या आन्दोलन में आपने खुलकर भाग लिया। आजकल आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी हैं। आर्य सामाजिक जीवन के साथ २ अपने राजनीति में भी पूर्ण भाग लिया। आजकल आप भारतीय संसद के सदस्य भी हैं। आजकल आपका सारा जीवन आर्य समाज एवं देश सेवा में ही व्यतीत होता है।

इन्द्रदेव मेधार्थी—आप का जन्म सन् १९३८ में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आप आरम्भ से ही आर्य सामाजिक मनोवृत्ति के थे। इसी कारण आप वेदों के और व्याकरण तथा दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान हुए। अपनी ज्ञान गरिमा के कारण ही आप लगातार ५ वर्ष गुरूकुल झज्जर के प्रधानाचार्य रहे और 'सुधारक' मासिक पत्रिका का सफलता पूर्वक सम्पादन करते रहे। आप आयुर्वेद के महा पण्डित एवं शास्त्रार्थ महारथी हैं। इस समय आप ३२ वर्ष की अवस्था मे 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रधान है और ७ अप्रैल १९७० को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से संन्यास की दीक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

प्रो० श्यामराव—आर्य जगत के नवयुवक क्रान्तिकारी प्रो० श्यामराव जी का जन्म सन् १९४० में विशाखापट्टनम से हुआ था। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एस० काम०, एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की और कलकत्ते के सुप्रसिद्ध सन्ट जेवियर्स कालेज में कानून के तथा कलकत्ते विश्वविद्यालय में बिजनेस मेनेजमेंट के ५ वर्ष तक अध्यापक रहे। आपने वर्ल्ड बैंक और प्लानिंग कमीशन के ज्वायन्ट रसर्च प्रोजेक्ट पर दो वर्ष कार्य किया। कलकत्ता हाईकोर्ट में कुछ समय तक वकालत

की और स्वीडन के साथ मशीनों का व्यापार भी किया. देश में धर्म और जाति का पतन देखकर देश, धर्म और जाति की सेवा में लग गये। आपने हरयाणा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वहां आर्य युवक परिषद की स्थापना की। आजकल आप केवल ३० वर्ष की अवस्था में ही सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के मन्त्री पद पर कार्य कर रहे हैं। तथा ९ अप्रैल १९७० को सारे सांसारिक सुखों को त्याग कर देवदयानन्द के आदेशानुसार वैदिक धर्म के प्रचार एवं आर्य राष्ट्र की स्थापना के लिये संन्यास की दीक्षा लेकर संन्यासी बन गये हैं।

श्री गुरू नानकदेव—आपका जन्म संम्वत् १५२६ वि० की कार्तिक की पूर्णमासी अर्थात सन् १४६९ ई० में मेहता कल्याणराम वेदी वंश के परिवार में राय पोयेरी तलवण्डी जिला शेकूपुर में हुआ था। वे सिक्ख धर्म के ज्ञानी थे और आप सिक्खों के धर्मगुरु माने जाते थे आप अनेकों कष्ट उठाकर सिक्ख सम्प्रदाय को जीवित रख सके। असोज वदी दशमी सम्वत् १५९६ वि० में पंजाब के करतारपुर नामक ग्राम में आपका देहवसान हो गया।

श्री अंगद देव—आपका जन्म नागे की सराय (मते की सराय) में वैशाख सुदी १ सोमवार को सम्वत् १५६१ में हुआ था। आप गुरु नानक जी के पहले उत्तराधिकारी थे। आपने अपना जीवन सिक्ख सम्प्रदाय के प्रचार में लगा दिया। सम्वत् १६०९ वि० में चैत्र सुदी चौथ बुद्धवार को खंडूर साहब में आप परलोक सिधार गये।

श्री अमर दास—आपका जन्म सम्बत् १५३६ वि० की वैशाख सुदी १४ अर्थात् सन् १४७९ ई० दिन शुक्रवार को पंजाब प्रान्त के जिला अमृतसर के बासर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम तेजभान भल्ला था। आप सर्वत्र धर्म प्रचार में लगे रहे और सिक्ख धर्म का प्रचार करते हुए ही आप सम्वत् १६२१ में अमृतसर के गोविन्द वालपुर में दिन मंगलवार को स्वर्ग सिधार गये।

श्री गुरू रामदास—आपका जन्म सन्वत् १५९१ वि० तदनुसार सन् १५३४ ई० में कार्तिक बदी दूज को श्री हरदास मल सोडी खत्री परिवार में चूना मण्डी लाहौर में हुआ। आप सिक्ख धर्म के अनुरागी थे आपने अपने धर्म के प्रचार में पर्याप्त योग प्रदान किया तथा आपने ही श्री हर मंदर साहब व अमृतसर शहर की बुनियाद रखी जो आज तक सिक्ख धर्म का प्रमुख केन्द्र है। आपका देहावसान सम्बत् १६३८ वि० में गोविन्द बालपुर में भादों सुदी ३ को हो गया।

गुरु अर्जुन देव—आपका जन्म सम्वत् १६२० वि० तदनुसार सन् १५५४ ई० में वैशाख बदी सात दिन मंगलवार को ग्राम गोविन्द वालपुर में गुरु रामदास जी के परिवार में हुआ था। आपने अपना सारा जीवन सिक्ख साहित्य प्रचार में लगा दिया। और हरमंदर साहब जिसे (Golden Temple) कहते हैं को बनवाया और कुश्तियों के तरन-तारन में बस्ती बनवाई। आप अपने धर्म की रक्षा करते हुए स० १६३३ वि० में ज्येष्ठ सुदी ४ को लाहौर में स्वर्ग सिधार गये।

✓ हरगोविन्द साहब—आपका जन्म सम्वत् १६५२ वि० की तद्नुसार सन् १५९६ ई० में आषाढ़ वदी १ को पंजाब प्रान्त के अमृतसर जिले में इतवार के दिन सोढी गुरु अर्जुन के परिवार में हुए थे। आरम्भ से ही आपके हृदय मे सिक्ख समाज के प्रति अगाध प्रेम था। तथा सिक्ख समाज़ को आपने ही शस्त्र ग्रहण करने का आदेश दिया और मुगल शहाजहाँ से चार युद्ध किये और सफलता प्राप्त की। श्री गुरु ग्रन्थ साहब जो सिक्ख धर्म का पवित्र ग्रन्थ हैं उसका आपने ही संग्रह किया और धर्म के लिये शहीद हुए। आप दिन रात अपने धर्म के प्रचार में लगे रहे और अन्त में सम्वत् १७०१ वि० की चैत्र सुदि ५ दिन शुक्रवार को कीर्तपुर में शहीद हो गये।

✓ गुरु हरराय साहब—आपका जन्म सम्वत् १६८७ वि० में माघ सुदी १३ दिन इतवार को कीर्तपुर नामक ग्राम में वावा गुरु दत्ता जी के गृह मे हुआ था ये गुरु गोविन्द सिंह के नाती थे। आपने हथियार बन्द फौज तो रखी लेकिन कोई युद्ध नहीं किया। नावा और पटियाला वंश आर्शीवाद से चला। आपका सारा जीवन सिक्ख धर्म के प्रचार और उसकी उन्नति में ही समाप्त हो गया। इस प्रकार आप सम्वत् १६१८ वि० में कातिक वदी ९ को कीर्तपुर में स्वर्ग सिधार गये।

✓ श्री हरिकिशन जी—आपका जन्म सम्वत् १७१३ वि० में सावन सुदि ९ दिन बुद्धवार को कीर्तपुर नामक स्थान पर गुरु हर सहाय जी के परिवार में हुआ था। आप भी गुरु हर राय जी की तरह धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे और बहुत छोटी उम्र में स्वर्ग सिधार गये। सम्बत् १७७८ के लगभग चैत्र सुदी १४ दिन बुद्धवार को देहली में आपका स्वर्गवास हो गया। इनकी स्मृति में देहली वंगला साहब गुरुद्वारा बनाया गया इनके दर्शन मात्र से शरीर के दुख दूर हो जाते थे।

✓ श्री तेग बहादुर जी—आपका जन्म सम्बत् १६७८ में माघ वदी को अमृतसर में श्री गुरु हर गोविन्द साहब के परिवार में हुआ था। पिता के समान पुत्र भी सिक्ख धर्म को मानने वाले थे और आपने अपना सारा जीवन सिक्ख समाज के उद्धार में लगा दिया। आपने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये देहली में अपना शीश दिया था। शीश गंज गुरु द्वारा और श्री रकाब गंज उन्हीं की यादगार है। सम्वत् १७७२ वि० माघ सुदी ५ दिन गुरुवार को देहली में अपने धर्म की रक्षार्थ अपने शीश का बलिदान दे दिया।

✓ गुरु गोविन्द सिंह—आपका जन्म सम्वत् १७२३ वि० तदनुसार सन् १६६६ ई० में पौष शुदि ७ को गुरु तेग बहादुर साहब के गृह में पटना शहर में हुआ था। आपकी माता का नाम गुंजरी जी था। आप पर अपने माता पिता के धार्मिक विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। आप सिक्ख धर्म के अनुयायी थे। आपने धर्म प्रचार और प्रसार व अपना सारा समस्त वंश कुर्बान किया और तभी खालसा पंथ को जन्म दिया। इस प्रकार सम्वत् १७६५ वि० में हैदराबाद (आन्ध्र) के हजूर साहव नामक

स्थान पर खंजर से शहीद हो गये। अंत समय में गुरु ग्रन्थ साहब को गुरुगद्दी सौंप दी और गुरु प्रथा को समाप्त कर दिया।

जगद् गुरु शंकराचार्य—पूज्यपाद स्वामी जगद्गुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर १००८ श्री स्वामी श्री निरंजन देवतीर्थ जी का जन्म असौज बदी चौदस सम्वत् १६६७ वि० को व्यावर नामक स्थान पर हुआ था। आपका पूरा नाम पूज्य पं० श्री चन्द्र शेखर शास्त्री जी हैं। आप हिन्दू जाति के एक मात्र संरक्षक हैं। हिन्दू जाति को पुनर्जीवित करने में आपने अकथनीय प्रयत्न किये हैं। गऊ माता की रक्षा हेतु तो आप कारागार यात्रा भी कर चुके हैं जो कि हिन्दू जगत के लिए एक प्रेरणा दायक कार्य है। वर्तमान समय में भी आप हिन्दू जाति व गऊमाता की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति तक देने के लिए तत्पर हैं।

प्रमुख क्रान्तिकारियों का जीवन परिचय

नानासाहब पेशवा—भारत में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम संचालक नानासाहब पेशवा ही थे। आप कानपुर के पास बिठूर के राजा बाजीराव पेशवा के गोद लिये हुए पुत्र थे। आपका आरम्भ का नाम नाना धोंदोपन्त था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बाजीराव पेशवा को ८ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन देना तय किया था। सन् १८५१ में बाजीराव की मृत्यु हो जाने पर गवर्नर जनरल डलहौशी ने बाजीराव के बदले में नानासाहब को मिलने वाली पेन्शन बन्द करदी। नानासाहब ने काफी प्रयत्न किये कि पेन्शन जारी रहे परन्तु अन्त में निराश होकर उन्होंने अंग्रेजों से देश को मुक्त कराने का बीड़ा उठाया और देश को स्वतन्त्र कराने में ही अपने शरीर को अर्पण कर दिया।

मंगल पांडे—प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम सन् १८५७ का प्रथम शहीद मंगलपांडे बैरकपुर की एक रेजीमेन्ट का सैनिक था। उन दिनों ईस्ट इन्डिया कम्पनी के विरुद्ध बगावत की पूरी तैयारी चल रही थी। क्योंकि अंग्रेज लोग भारतियों पर हर तरह के अत्याचार कर रहे थे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को चर्बी वाले कारतूस प्रयोग करने के लिये दिये जिनको प्रयोग करने से पहले मुंह से काटना पड़ता था भारतीय सैनिकों को इस बात की जानकारी हो चुकी थी। अतः भारतीय सेना बगवत करना चाहती थी। उसके जोश में आकर और निश्चित तिथि से पहले ही मंगल पांडे ने क्रान्ति छेड़ दी। उसने अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया और स्वयं भी घायल अवस्था में पकड़ा गया। उस पर मुकदमा चला और ८ अप्रैल १८५७ को उसको फाँसी लगादी गई।

रानी लक्ष्मीबाई—महारानी लक्ष्मी बाई का जन्म सन १८३५ में उत्तर प्रदेश के बनारस शहर में हुआ था। आपके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे था। आपका जन्म का नाम मनू बाई था। आरम्भ से ही आप मेधावी एवं चतुर बुद्धि थी। थोड़े से ही समय में आपने युद्ध सम्बन्धी कार्यवाहियां सीख ली थीं। आपका आठ वर्ष की अवस्था में झांसी के राजा गंगाधर के साथ आपका विवाह हो गया था तभी से आप का नाम झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई पड़ गया। १८ वर्ष की अवस्था में आप विधवा हो गयीं। राज का सारा भार आपके कन्धों पर आ पड़ा। उन्हीं दिनों अंग्रेजों की बढ़ती हुई शक्ति झांसी भी पहुंच गई। स्वयं लक्ष्मी बाई ने शस्त्र धारण करके अपनी सेना का नेतृत्व किया और अंग्रेजों से बराबर युद्ध करती हुई वीर गति को प्राप्त हुयीं।

तात्याटोपे—आपका जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के जिला पूना में हुआ था। आप बड़ी कुशाग्र बुद्धि वाले थे। आपको वीर पुरुषों की गाथाएँ पढ़ने में बड़ा आनन्द

आता था। कुछ ही समय में आप एक वीर योद्धा की तरह शस्त्र चलाने लगें। उन दिनों अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम छिड़ा हुआ था। तात्या ने भी अंग्रेजों को मार भगाने का प्रण किया और एक सेना का कुशल संचालन करते हुए अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया स्वयं अपने देश वासी राजा मानसिंह ने उनको ७ अप्रैल १८५९ को सोते हुए अंग्रेजों से पकड़वा दिया। १८ अप्रैल १८५९ को तांत्याटोपे को फाँसी लगा दी गई।

राजा कुंवरसिंह—आपका जन्म सन् १७८२ के लगभग विहार प्रान्त के जिला आरा के एक छोटेसे राज्य जगदीश पुर में हुआ था। आप पढ़े-लिखे तो अधिक नहीं थे लेकिन घुड़सवारी, तलवार चलाना आदि में आप निपुणता प्राप्त कर चुके थे। आपकी ८० वर्ष की अवस्था थी जब डलहोजी ने आपके राज्य को हड़पना चाहा तो आप एक जवान सिंह की तरह अंग्रेजों से बराबर लड़ते रहे और अन्त में अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिये ८१ वर्ष की अवस्था में २४ अप्रैल १८५७ को वीरगति को प्राप्त हुए।

राजा अमर सिंह—राजा कुंवर सिंह की मृत्यु के बाद उन्हीं का भाई शूर-वीर राजा अमर सिंह जगदीश पुर की गद्दी पर बैठे। उन्होंने गद्दी पर बैठते ही एक विशाल सेना लेकर अंग्रेजों के आधीन 'आरा' पर चढ़ाई करदी। लीगैण्ड की सेना को हराया फिर जनरल डगलस की सेना को हराया। इसी प्रकार अपने भाई कुंवर-सिंह की तरह वह बराबर अंग्रेजों से लड़ता रहा। अन्त में राजा अमर सिंह के जग-दीश पुर पर अंग्रेजी सेनाओं ने सात ओर से एक दम चढ़ाई की जिसमें राजा अमर सिंह अन्तिम श्वास तक देश धर्म के लिये लड़ते हुए मारे गये।

राजा हनुमन्त सिंह—काला की राज गद्दी पर बैठते ही राजा हनुमन्त सिंह ने प्रतिज्ञा की थी कि अंग्रेजों को भारत से निकाल कर ही दम लूंगा। अंग्रेजों ने उन की सारी जमीन जायदाद हड़प ली थी। राजा हनुमन्त सिंह सदैव अंग्रेजों को अपने यहाँ संरक्षण देते रहे थे लेकिन जब अंग्रेजों ने उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया तो उन्होंने भी प्रतिज्ञा की और अपनी सेना को लेकर लखनऊ चले गये और बराबर अंग्रेज़ों से युद्ध करते रहने के पश्चात् अवध के एक बहुत बड़े क्षेत्र को अंग्रेजों से स्व-तन्त्र करा लिया। परन्तु इतने पर भी चैन से नहीं बैठे और आगे युद्ध जारी रखा और उसी बीच आप वीर गति को प्राप्त हुए।

नवाब फरूखा बाद—फरूखाबाद के नवाब ने भी स्वतन्त्रता संग्राम में खूब भाग लिया था। उसको अपनी राजधानी फतहगढ़ में अंग्रेजों की तीन सेनाओं ने तीन ओर से आकर घेरा और भयंकर आक्रमण किया। कई दिन तक घमासान युद्ध हुआ। १४ जनवरी १८५८ को अंग्रेजों की विजय हुई और नवाब को कैद कर लिया गया। नीच अंग्रेजों ने इस नवाब को फाँसी देने से पहले उसके सारे शरीर पर उसके धर्म के विरुद्ध सूअर की चर्बी मल दी और फिर उसे फाँसी दी।

नादिरखां—आप नानासाहब के सेनापति थे। नानासाहब के संकेत मात्र पर आप सेना लेकर अंग्रेजों से भिड़ जाते थे। नवाब फरूखाबाद की राजधानी फतहगढ़ पर जब अंग्रेजों ने घेरा डाल दिया तो उसकी रक्षा हेतु नानासाहब ने अपने सेनापति नादिर खाँ को एक बड़ी सेना लेकर भेजा लेकिन दुर्भाग्य वश यहीं पर नादिर खाँ गिरफ्तार कर लिये और उनको भी वहीं फाँसी लगा दी गई। फाँसी पर चढ़ते हुए नादिर खाँ ने भारतीयों को शपथ दिलाई कि अंग्रेजों को भारत से निकालकर ही दम लेना।

मौलमी अहमद खां—आप फैजाबाद प्रान्त उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। लखनऊ नगर में क्रान्ति कारियों के सबसे बड़े नेता आप ही थे। आपके कुशल नेतृत्व की प्रशंसा अंग्रेज भी स्वयं ही करते थे, परन्तु देहली की तरह मौलवी अहमदशाह का उनके सैनिकों में विरोध था इस कारण आपकी आज्ञाओं का यथोचित पालन नहीं होता था। अतः अनुशासन की शिथिलता ही उनके पराजय का कारण बनी। उनके अनेकों बार लखनऊ नगर में अंग्रेजों से घमासान युद्ध हुए। उन्होंने अंग्रेजों को पर्याप्त हानि पहुंचाई परन्तु अन्त में उनके जब बचने की कोई सम्भावना ही रही तो लखनऊ छोड़कर भागना पड़ा।

राजा वेणी माधव— आप शंकरपुर पर राज्य करते थे। अंग्रेजों की तीन विशाल सेनाओं ने आप पर एक साथ भयंकर आक्रमण किया परन्तु आपकी छोटी सी सेना ने अंग्रेजों का कड़ा मुकाबला किया। अंग्रेजों ने राजा को अनेक प्रलोभन दिये और सन्धि पत्र भेजा लेकिन राजा ने उसे ठुकरा दिया और घमासान युद्ध लड़ते हुए अन्त में किला छोड़कर बाहर निकल गये। आप अंग्रेजों की आधीनता स्वीकार करने से भूखों मरजाना अच्छा समझते थे। आप नेपाल के जंगलो में भटकते वीरगति को प्राप्त हुए।

अमर सिह—अमर सिंह सुनारियां ग्राम के निवासी थे। आप एक अंग्रेज डी० सी० मोर के यहाँ चपरासी का कार्य करते थे। वह अग्रेज चरित्र हीन था। अमर सिंह को बुरा लगता था और उन दिनों स्वतन्त्रता का संग्राम भी आरम्भ हो चुका था। मौका पाकर उसने अंग्रेज को कत्ल कर दिया परन्तु उसकी पत्नी को स्त्री समझ कर छोड़ दिया। भागते समय अंग्रेज मैम ने उनको कुत्ते से फड़वाडाला लेकिन वे भागने में फिर भी सफल हो गये और और गांव में चले गये। अंग्रेजों ने सारे गाँव को तोप से उड़वाना चाहा तो अमर सिंह स्वयं आकर उपस्थित हो गये। अंग्रेजों ने उन्हें घोड़े पीछे बंधवाया और शरीर पर दही छिड़क कर उन्हें कुत्तों से फड़वाया।

हुकम चन्द—आप हरियाणा प्रान्त के रहने वाले थे। आपके पिता का नाम दुनी चन्द था। आप कानूनगो के पद पर कार्य करते थे। मुगल बादशाह शाह जाफर के आप विशेष कृपा पात्र थे। जब स्वतन्त्रता संग्राम आरम्भ हुआ तो हुकम चन्द जी ने शाह जफर को अंग्रेजों पर चढ़ाई करने के लिये पत्र लिखा। शाह जफर ने अंग्रेजों

पर चढ़ाई की लेकिन गिरफ्तार हो गये। उनकी फाइलों में हुकम चन्द का वह पत्र पकड़ा गया। तुरन्त अंग्रेजी सरकार ने हिसार डिविजन की सरकार को उनके खिलाफ कार्यवाही करने के लिये सूचना भेजी। अतः सरकार का विरोध करने के अपराध में १९ जनवरी १८५८ को हुकमचन्द को फांसी दे दी गयी।

राजा नाहर सिंह—आप बल्लभगढ़ में राज्य करते थे। अंग्रेजों की हिम्मत आपसे भिड़ने की नहीं होती थी लेकिन सन ५७ के संग्राम को देखते हुए उनसे न रहा गया और वे स्वयं ही अंग्रेजों से भिड़ गये। उनको बहुत नाकों चने चबाए। यह उनकी देश भक्ति का हो परिणाम था। अग्रेजों ने धोका देकर उन्हे सफेद झण्डा दिखाकर बहाने से देहली ले आये और बन्दी बना लिया। अंग्रेजों ने पूर्ण प्रयत्न किये कि राजा नाहर सिंह से मैत्री हो जाये लेकिन जब वे तैयार न हुए तो देहली में फब्वारे पर उन को फाँसी लगा दी गई।

अब्दुर्रहमान खां—सन् १८४५ में अब्दुर्रहमान खां रियासत झज्जर की गद्दी पर बैठे। आपसे पहले रियासत के नवाबों ने रियासत की आम जनता के लिये कुछ भी कार्य नहीं किये थे। इन्होंने सार्वजनिकहित के लिये अनेक भवनों का निर्माण कराया १० मई १८५७ को मेरठ में क्रान्ति आरम्भ हो चुकी थी। अंग्रेज बुरी तरह मारे जा रहे थे। क्रान्ति की लहर मेरठ से देहली होती हुई रोहतक व झज्जर भी पहुंची अंग्रेजों ने नवाब अब्दुर्रमान से अपनी सहायता के लिये फौज व सामग्री की मांग की लेकिन नवाब ने कुछ ध्यान नहीं दिया। अंग्रेजों ने मौका पाकर नवाब को घेर कर देहली ले गये और उन पर राज विद्रोह का मुकदमा चलाकर २३ दिसम्बर १८५७ को देहली में फाँसी लगा दी।

तुलाराम—आप हरियाणा प्रान्त के महान योद्धा थे। १८५७ में जब अंग्रेजों के अत्याचार भारतवासियों पर हो रहे थे जो असह्य थे तो उनको देखकर महान योद्धा राव राजा तुलाराम जी से न रहा गया और एक सेना लेकर अंग्रेजों से लड़ने के लिये देहली की ओर चल पड़े। रास्ते में एक दो अंग्रेजी सेना से उनकी मुठ भेड़ हुई। तुलाराम जी की सेना ने उनको बुरी तरह से प रास्त किया। और अपनी विजय की उमंग में अंग्रेजों को मारते काटते और स्वयं भी मरते कटते देहली तक पहुंच कर विशाल अंग्रेजी सेना से मुकाबला करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

रावकृष्ण गोपाल—राजा तुलाराम के चचेरे भाई राव कृष्ण गोपाल मेरठ में कोतवाल पद पर थे। अंग्रेजों के आधीन उन्हे अनेको घृणित कार्य करने पड़ते थे जिनसे तंग आकर उन्होंने देश की सेवा करने के दृष्टिकोण से सारे कैदखाने के दरवाजे खोलकर सारे नवयुवकों को स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़ने के लिये ललकारा और स्वयं भी उनकी एक विशाल सेना बनाकर अंग्रेजी फौजों को मौत के घाट उतारते हुए वीर गति को प्राप्त हो गये।

लोकमान्य तिलक—आप का जन्म लगभग सन् १८६० में रत्नगिरि जिले के दापोलो तालुके में चिवल नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम गंगाध-

पन्त था। आप हाईस्कूल परीक्षा पास कर १८७६ में आपने बी० ए० की परीक्षा पास करी और वकालत करने लगे साथ ही साधारण जनता में देश भक्ति का प्रचार भी करने लगे। आपने ४ जनवरी १८८१ को दो साप्ताहिक पत्र निकाले जिनमें अंग्रेजी सरकार की कड़ी आलोचना की परिणाम स्वरूप आपको ४ मास का कारावास का दण्ड भुगताना पड़ा इसके पश्चात भी आपको देश सेवा के लिए अनेकों बार जेल यात्रा करनी पड़ी जिससे आपका स्वास्थ्य खराब हो गया और ६० वर्ष की अवस्था में ३१ जौलाई को आपका स्वर्गवास हो गया।

विनायक सावरकर—आपका जन्म सन् १८८३ में महाराष्ट्र में नासिक जिले के भगूर ग्राम में एक चित्यावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता भी एक विद्वान और देश भक्ति की भावना से परिपूर्ण थे। उनका प्रभाव आप पर भी पड़ा और आपने शिक्षा प्राप्त करते समय ही अपने साथियों को देश सेवा का पाठ पढ़ाया करते थे। १९०५ में आपने बी० ए० पास किया उन्हीं दिनों स्वदेशी आन्दोलन चल पड़ा आपने उसमें डट कर भाग लिया। आपने देश विदेश का भ्रमण किया और स्थान स्थान पर आपने अंग्रेजों के विरुद्ध जलसे व जुलुस आयोजित किये। आपने अनेकों उत्साहित ग्रंथ लिखे लेकिन वे सब अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त कर लिये गये। आपने अपने ग्रंथों द्वारा तत्कालीन भारतीयों को १८५७ के गदर की सारी जानकारियाँ कराके फिर से स्वतन्त्रता की चिंगारी पैदा कर दी। आपके भाषण, आपके ग्रन्थ, आपके लेख सभी देश भक्ति पूर्ण थे। देश सेवा में ही आप का शरीर न्योछावर हो गया।

वसुदेव बलवन्त फड़के—आपका जन्म १८४१ के लगभग शिरढापे (महाराष्ट्र) में हुआ था। आप बचपन से ही युद्ध की कहानियां सुना करते थे जिनका प्रभाव आप पर भी पड़ा। न्याय मूर्ति रानाडे का भाषण सुनकर तो आपने निश्चय किया कि अंग्रेजों को भारत से निकालकर ही अपने राज्य की स्थापना करूंगा। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये आपने युद्ध विद्या सीखी। आप अपने घर का ताला लगा कर अंग्रेजों के विरुद्ध षड्यन्त्र में लग गये। अंग्रेजी सरकार ने कई बार इनको पकड़ने का प्रयत्न किया यहां तक कि आपके पकड़े जाने के लिये ४०००) रु० का ईनाम भी रखा और आपके पीछे एक पुलिस दल लगा दिया लेकिन आप हाथ नहीं आये। आप एक दिन एक वृक्ष के नीचे थककर बैठ गये परिणाम स्वरूप निद्रा ने आ दबाया। इतने में ही पुलिस आ गई और उन को गिरफ्तार कर लिया। आप पर मुकदमा चलाया गया और ७ नवम्बर १८७९ को आपको काला पानी की सजा मिली। वहीं आपका देहान्त हो गया।

गोपाल कृष्ण गोखले—आपका जन्म ९ मई सन् १८६६ में महाराष्ट्र में रत्नगिरि जिले के चिपलूणतालके का काटलुक नामक एक छोटे से गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप आरम्भ से ही मेधावी बुद्धि के बालक थे। आपने १८ वर्ष भी अवस्था में ही बी० ए० पास करा लिया। १८९५ में आप पूना में

कांग्रेस अधिवेशन के मन्त्री बने। १९०५ में काशी में कांग्रेस अधिवेशन के सभापति बने। आपने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिये देश विदेशों में अनेकों व्याख्यान दिये आप ब्रिटिश सरकार से भी मिले और उनके दमन चक्र की कड़ी निन्दा की लेकिन उस स्पष्टवादी को हमारे बीच अधिक दिन नहीं रहना था। १९ फरवरी १९१५ ई० को आप ४७ वर्ष की अवस्था में परलोक सिधार गये।

वलवन्त शंकर लिमये—आपका जन्म सन् १८८१ में बीजापुर जिले में भतकुमगी नामक गांव में हुआ था। आप अपनी शिक्षा समाप्त करके पूना पहुंचे और बी० ए० पास करके आप भी अन्य व्यक्तियों की तरह सार्वजनिक कार्य में जुट गये। १९०७ में आपने शोलापुर में 'स्वराज्य' नामक साप्ताहिक पत्र चालू किया। वीर सावर कर का -अभिनव भारत' का मुद्रण जो कोई भी करने के लिये तैयार न था, आपने ही उसका मुद्रण आरम्भ किया। पंडिचेरी में वम का कारखाना भी आपकी ही देखरेख में चला। किसी प्रकार अंग्रेज सरकार को उनके मुद्रणालय का पता चल गया। छापा मारने पर राजद्रोही का ग्रन्थ छापता हुआ। पकड़ा गया। राजद्रोही लेख के अभियोग में आपको ३।। वर्ष का कठोर कारावास हुआ जिसमें आपका स्वास्थ्य खराब हो गया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये निरन्तर प्रयत्न करते हुये स्वर्ग सिधार गये।

विष्णु गणेश पिंगले—आपका जन्म पूना की एक पहाड़ी में हुआ था आपके पिता का नाम गणेश पिंगले था। आप आरम्भ से ही आर्य समाज से प्रभावित थे। आप मित्रों के कहने से इंजीनियरिंग पढ़ने अमेरिका गये। वहां भारतीयों के हृदयों में विप्लव की आग भड़कती देखकर आप भी प्रभावित हो उठे। वहीं से आपने अंग्रेजों का विरोध और अपने देश को स्वतन्त्र कराने का विचार वना लिया। अमेरिका से वापिस लौटने पर घर न जाकर सीधे बंगाल में क्रान्तिकारियों में दाखिल हो गये। ये भारत के मुख्य मुख्य क्रान्तिकारियों के ठीकानों पर बम्ब सप्लाई करने का कार्य करते थे। मेरठ में भी इन्होंने कार्य किया लेकिन आपके ही एक विश्वास-पात्र ने आपको अंग्रेजों के हाथ पकड़वा दिया। आप पर मुकदमा चलाया गया और २६ नवम्बर १९१५ को आपको फांसी लगा दी गई।

लक्ष्मण कान्हेरे—आप रत्नगिरि जिले में खड़े तहसील के अयनी नामक ग्राम के निवासी थे। आप स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के 'अभिनवभारत' के भी सदस्य थे। जब बाबा सावरकार को आजीवन कारावास की सजा सुना दी गई तो नासिक के जिला अधिकारी मि० जैक्सन से बदला लेने के लिये कान्हेरे ने नाटक देखते हुये जिला अधिकारी पर ७ गोलियां चलाकर उसका वही ढेर कर दिया, परन्तु स्वयं भी मौके पर ही पकड़े गये। बम्बई की अदालत में उन्होंने स्पष्ट स्वीकार या जिसके अभियोग में ७ मार्च १९१० को आपको फांसी की सजा दी गई।

श्री वामन नारायण जोशी—आप भी स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की 'अभिनव भारत' के सदस्य थे। जिलाधिकारी जैक्शन की हत्या के बारे में सहायता करने के

अभियोग में श्री जोशी जी को आजीवन कारावास की सजा दी गई। अभियोग की पूछताछ के समय काफी कष्ट सहने पड़े। कष्ट सहने पर भी जोशी के मुख से संगठन के बारे में एक शब्द भी न निकला। जोशी जी को अण्डमान भेजा गया। वहां पर जाने वाले आप ही सब से पहले वीर थे। वहाँ की सजा पूरी कर आप भारत लौटे। आपने अपना सारा जीवन देश सेवा में लगा दिया।

श्री कृष्ण गोपाल कर्वे—आप 'अभिनव भारत' के प्रमुख सदस्य थे। आप २२ वर्ष की अवस्था में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ क्रान्ति का कार्य भी चला रहे थे। बाबाराव सावरकर की सजा से आपको बहुत दुख हुआ। जैक्शन की हत्या के समय आप रिवाल्वर सहित १९ दिसम्बर सन् १९०९ को नासिक के नाटक गृह में आप 'कान्हेरे' की सहायता के लिए वहां उपस्थित थे और वहीं गिरफ्तार भी हुए। आप पर मुकदमा चलाया गया और १९ अप्रैल को ढाके की जेल में आपको फांसी पर लटका दिया गया।

श्री विनायक नारायण पाण्डेय—आप 'अभिनव भारत' के सदस्य थे। आप नासिक की प्रारम्भिक पाठशाला के अध्यापक भी थे। जैक्शन की हत्या करने के लिए 'कान्हेरे' को तैयार करने में आपका बड़ा हाथ था तथा जैक्शन की हत्या कराने के लिए श्री देश पाण्डेय भी 'कान्हेरे' की सहायता के लिये हाथ में पिस्तौल लिए नाटक गृह में ही उपस्थित थे। हत्या के बाद 'कान्हेरे' के साथ आप भी गिरफ्तार किये गये। आप पर भी मुकदमा चला और बम्बई हाईकोर्ट ने आपको फांसी की सजा दी तथा १९ अप्रैल को ढाके की जेल में आप को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

श्री शंकर रामचन्द्र सोमण—आप भी 'अभिनव भारत' के सदस्य थे। क्रान्तिकारी वीर सावरकर की सजा से आप भी बहुत दुखी थे। जैक्शन की हत्या में आप का भी पूरा सहयोग रहा। हत्या की जांच पड़ताल में आपको बड़ी यातनायें सहनी पड़ी। परन्तु आपने किसी प्रकार का भेद नहीं दिया। हत्या के अभियोग में आ०को आजीवन कारावास की सजा दी गई। पेखड़ा जेल में आप सजा भुगत रहे थे। सावरकर जी को आजीवन कारावास तथा अन्य साथियों को जो यन्त्रणायें सहनी पड़ी उनसे उनका दिल घबरा गया जिसके कारण २१ दिसम्बर १९११ में पेखड़ा जेल में ही आप का देहान्त हो गया।

श्री शिवराम राजगुरू—आपका जन्म सन १९०९ में पूना के पास खेड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आप के पिता का नाम श्री हरि नारायण था। राजगुरु आप के वंश का नाम था जो छत्रपति शिवाजी ने उपाधि स्वरूप प्रदान किया था। ६ वर्ष की अवस्था में आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए आपके बड़े भाई ने आपको पढ़ाया लिखाया लेकिन आपका मन पढ़ने लिखने में नहीं लगता। भाई की डाट फटकार पर आप घर छोड़कर बाहर निकल गये। न जाने कितने स्थानों की खाक छानी, न जाने कितने दिन भूखे रहे और पैदल यात्रा करते करते १३० मील

की यात्रा करके नासिक पहुंचे। नासिक से कानपुर पहुंचे वहां से आपके विचारों में परिवर्तन आ गया। आप १६२८ में कानपुर से पंजाब पहुंच गये और वहां सरदार भगत सिंह, सुखदेव व आजाद की पार्टी में सम्मिलित हो गये। पार्टी में सम्मिलित होकर उन्होंने ला० लाजपत राय के हत्यारे 'स्कोट' के बदले में 'सान्डर्स' को गोली से मारा। इसका भी ला० जी की मृत्यु में उतना ही हाथ था जितना स्कोट का था। दूसरा कार्य एसेम्बली में बम्ब फेंकने का आपके द्वारा न हो सका लेकिन आप बड़े इच्छुक थे। इसके बाद पूना में आप पकड़े गये और भगत सिंह, सुखदेव के साथ २३ मार्च १६३१ को आपको भी फाँसी लगा दी गई।

लाला हरदयाल—आप देहली के निवासी थे और बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से एम० ए० पास किया था। उसी समय देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रचार और समय समय पर जलसे जुलुम निकाले जा रहे थे। ला० हरदयाल जी इंगलैण्ड से सन् १६०८ में वापिस आकर देश की स्वतन्त्रता में भाग लेने लगे। अंग्रेजी सरकार आपकी हर कार्यवाही पर निगाह रखती थी। आप के पीछे सी० आई० डी० भी लगी हुई थी। आप अनेकों बार पकड़े गये और जेल गये लेकिन जमानत पर छूटने पर फिर आप देश सेवा में लग जाते। इस प्रकार देश की सेवा में अपना जीवन लगा दिया।

लाला लाजपतराय—आपका जन्म २८ जनवरी सन् १८६५ ई० को फिरोजपुर जिले ढोही ग्राम के एक वैश्य परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम राधाकृष्ण था। आपके पिता एक पक्के आर्य समाजी थे। पिता का प्रभाव आप पर भी पड़ा। आप भी आगे चलकर एक पक्के आर्य समाजी बन गये। सन् १८८० में आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। समाज सेवा के आप धनी थे। १८६६ में पड़े अकाल में आपका सहायता कार्य सराहनीय है। १६१२ में आपने अछूतोद्धार आन्दोलन चलाया। आप २३ वर्ष की अवस्था में कांग्रेस में सम्मिलित हो गये थे। आप उग्र विचारों के व्यक्ति थे। कदम कदम पर आप अंग्रेजों का विरोध करते थे। सरकार ने आपको कई बार गिरफ्तार किया और जेल भेजा लेकिन आपके हृदय में उत्पन्न स्वराज्य की भावना सदैव जागृत रहती थी। महात्मा गांधी के द्वारा चलाये जा रहे अहिंसात्मक आन्दोलन का आपके ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ा। आपने भी आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दिया। भारतवर्ष को स्वतन्त्र किया जाये या नहीं इसकी जांच करने के लिये एक साइमन कमीशन १६२७ में आ रहा था। ला० जी ने इस कमीशन का कड़ा विरोध किया और लाहौर में उस कमीशन के विरोध में अंग्रेजों द्वारा उन पर इतने डण्डे बरसाये गये कि १७ नवम्बर १६२८ को आप की मृत्यु हो गई।

मदनलाल धींगड़ा—आपका जन्म अमृतसर जिले में एक धनी परिवार में हुआ था। आप बी० ए० पास करके इग्लैण्ड पढ़ने गये। वहां पहुंच कर आप 'भारतीय भवन' में आने जाने लगे जहां स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया जाता था परिणाम स्वरुप आप

पूरे क्रान्तिकारी बन गये । वीर सावरक ने आपको हाथ में सुआ मारकर परीक्षा की आप सफल हुए । आप को कार्य सौंप दिया गया । सर्व प्रथम आपने लार्ड कर्जन को मौत के घाट उतारा । आप गिरफ्तार किये गये और मुकदमा जलाया गया जिस में आर को फांसी की सजा मिली । इस प्रकार १६ अगस्त १९०९ को आप को फांसी लगा दी गई ।

मास्टर अमीर चन्द—आप पंजाब के रहने वाले थे । आप देहली के एक स्कूल में अध्यापक थे, परन्तु भारत में क्रान्तिकारी संगठन के प्रथम संगठन कर्ता थे और देहली के विप्लव में आप ही मुख्य नेता थे । उधर लाहौर में लाला हरदयाल विप्ल कारी नेता थे । इन दोनों का परिचय और सहयोग बढ़ता ही जा रहा था । देश में पूरी तरह से खल बली मची हुई थी । गिरफ्तारियां हों रही थी, परन्तु आप अविचलित अपने कार्य में लगे हुए थे । आपसे प्रभावित अनेक व्यक्ति आपके शिष्य हो गये और आप से प्रेरणा लेकर वे भी देश सेवा में लग गये । इस प्रकार सारा जीवन देश सेवा में बीता ।

अवध बिहारी—आप मास्टर अमीर चन्द के साथ रहते थे । बड़ कुशाग्रबुद्धि के थे थोड़े ही समय में आप विप्लव कारी नेता बन गये थे । मास्टर अमीर चन्द। के दल से मिलकर आपने कई स्थानों पर अग्रेंजो को समाप्त करने के लिए वम्व फेंक दीनानाथ नाम के एक डरपोक व्यक्ति के द्वारा ये सारे दल के सथी पकड़े गये । इन पर मुकदमा चलाया गया और ५ अक्टूबर १९१४ का आप को फाँसी का हुक्म हुआ । आपकी अपील भी खरिज कर दी गई । इस प्रकार अन्त में फांसी खा कर शहीद हो गये ।

बालमुकन्द—आपका जन्म लगभग १८८५ ई० में पंजाब प्रान्त के जिला झेलम में चकवाल के निकट किसी ग्राम में हुआ था । आप बी० ए० पास करके ला० लाजपतराय के सम्पर्क में आ गये और देश सेवा की धुन में लग गये । उन दिनों पंजाब में भी विप्पल आरम्भ हो गया था । आपने हरदयाल जी के साथ लगकर कार्य किया । वाद में आप देहली अमीर चन्द के दल में आ गये । आपने १९१२ में लार्ड हार्डिग्ज पर तथा १९१३ में पंजाब के अंग्रेज अधिकारियों पर वम्व फेंके । आ भी कायर दीनानाथ की गवाही के शिकार बने आपको गिरफतार कर आप पर मुकदमा चलाकर फांसी की सजा सुना दी गई । इस प्रकार फाँसी पर चढ़कर आप अमर पद को प्राप्त हुए ।

सती रामरखी—भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वीरों ने ही प्राण दिये हों ऐसी बात नहीं है वीरांगनायें भी उनसे पीछे नहीं है । सती रामरखी के पिता और पति आर्य समाजी थे । १६ वर्ष की व्यवस्था में आपका विवाह हो गया था । आपका विवाह श्री बालमुकन्द जी से हुआ था । शादी के एक वर्ष बाद ही बालमुकन्द जी शहीद हो गये थे और १८ वर्ष की आयु में रामरखी अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित होकर सती हो गई थीं । इस प्रकार दोनों देश सेवा में शहीद हुए ।

परमानन्द—आप सारस्वत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। आपने पंजाब से एम० ए० की परीक्षा पास की। कुछ दिनों आप आर्य समाज के प्रचारक का कार्य करते रहे। देश में चारों ओर उथल पुथल मची हुई थी। आप उस विप्लव में न फंस कर अपना नया धर्म चलाना चाहते थे। आप अमेरिका होते हुए १९१३ में इंग्लैण्ड चले गये वहां से भारत लौटते समय बम्बई बन्दरगाह पर लार्ड हार्डिंग्ज की मौत के षड़यन्त्र में आपको पकड़ लिया गया जबकि आपनिर्दोष थे। आप पर मुकदमा चलाया गया और फांसी की आज्ञा सुना दी गई, परन्तु पंजाब के नेताओं के कहने पर आपको काले पानी की सजा दी गई। इस प्रकार आपका जीवन भी देश सेवा के काम आया।

करतार सिंह—आपका जन्म सन् १८९६ में पंजाब प्रान्त में जिला लुधियाना के ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम सरदार मंगल सिंह था। बालकपन में ही आपके पिता का देहान्त हो गया था। आपके दादा ने आपका पालन पोषण किया। बालकपन से ही आपके अन्दर नेता के गुण दिखाई देते थे। आपके चिन्ता में भी देश भक्ति की लहर उठने लगी थी। आप अमेरिका चले गये वहाँ के स्वतन्त्र जीवन को देखकर चकित रह गये और १९१४ में वापिस भारत लौटे और देश की स्वतन्त्रा के लिये प्रयत्नशील हो गये। स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने के लिये पर्याप्त धन की आवश्यकता थी चन्दे मात्र से कार्य असम्भव था। अतः करतार सिंह का डाका डालने का प्रस्ताव आया अन्य व्यक्तियों ने भी इसे ठीक ही कहा। अतः करतार सिंह स्वयं ने हथियार आदि खरीदने के लिये अनेकों डाके डाले और उस धन से स्वतन्त्रता का युद्ध लड़ा जाता रहा। आपने रेल को पटरी से उतारने और तार काटने आदि का भी कार्य किया इस प्रकार सारा जीवन आपका देश भक्ति में बीता।

हरनाम सिंह—आपका जन्म साहरी ग्राम जिला होशियारपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम लाभ सिंह था। आप हाईस्कूल में पहुंचते ही सेना में भर्ती हो गये। स्वतन्त्रता प्रेम ने आपके हृदय में गुदगुदी पैदा कर दी। आपने देश विदेश का भ्रमण किया। कनेडा में १॥ लाख की लागत से लगाये गये कारखाने का मैनेजर एक अंग्रेज बनाया गया जो बेईमानी करता था। हरनाम सिंह को यह अच्छा न लगा और उसका विरोध करने लगे। कनेडा सरकार ने उनको देश से निकलजाने की आज्ञा देदी। इधर उनके साथी बम केस में पकड़े गये। हरनाम सिंह उनको छुड़वाने में लग गये। परिणाम यह हुआ कि स्वयं भी अंग्रेजों की गिरफ्त में आ गये। आप पर मुकदमा चलाया गया और आप को मृत्युदण्ड मिला। एक दिन ये जेल से भी भाग निकले परन्तु फौरन पकड़े गये और तुरन्त आपको फांसी दे दी गयी।

सोहन लाल पाठक—सन् १९१४ में गदर पार्टी की ओर प्रचार के लिये सदस्यों को बाहर भेजा गया। आपका नम्बर भी आया। उत्तरी भारत में २१ फरवरी १९१४ का दिन विप्लव के लिये नियत किया गया। श्री सोहनलाल पाठक तोपखाने

के अन्दर गदर का प्रचार कर रहे थे कि अचानक उनके ही एक साथी जमादार ने उन को पकड़वा दिया। उस समय उनके पास पिस्तौल भी थी अगर वे चाहते तो उसको मौत के घाट उतार सकते थे लेकिन समझा बुझा कर देखा लेकिन वह नहीं माना और पकड़वा दिया। उन पर मुकदमा चलाया गया। सजा में उनको मृत्युदण्ड दिया गया। लेकिन साथ ही यह भी शर्त थी यदि क्षमा मांगले तो उनको माफ किया जा सकता है लेकिन आप माँफी न मांग कर फाँसी खा शहीद हो गये।

बन्ता सिंह—आपका जन्म १८६० ई० में मगवार नामक गांव जिला जालन्धर में हुआ था। आपके पिता का नाम बूटा सिंह था। समाज सेवा की भावना आप में आरम्भ से ही विद्यमान थी। १६०५ में कांगड़े में पड़े अकाल में आपने दिल-खोलकर समाज सेवा की। आप अमेरिका भी गये वहाँ आपको पग-पग पर दास्ता का अनुभव हुआ। आपने प्रण किया कि देश में ही लौटकर स्वराज्य के लिये प्रयत्न करना चाहिये। आप विप्लव कारियों में सम्मिलित हो गये। पुलिस की निगरानी आप पर होने लगी। एक बार एक पुलिस इन्सपैक्टर को भी इन्होंने मौत के घाट उतार दिया। तब आपके विरूद्ध वारन्ट जारी हो गये। आप काफी प्रयत्न करने पर भी पुलिस के हाथ नहीं आये, परन्तु आप एक अपने सम्बन्धी के कहने में आकर उसके घर रहने लगे। उसने आपके साथ विश्वास घात किया। उसने आपको पुलिस से पकड़वा दिया। आपको लाहौर लाया गया और आप पर मुकदमा चलाकर आपको फांसी का दण्ड दिया गया। इस प्रकार आप फांसी खाकर शहीद हुए।

मथुरा सिंह—आपका जन्म झेलम जिले में ढंढियाल नामक गाँव में सन् १८८३ में हुआ था। आपके पिता का नाम सरदार हरि सिंह था। आप मैट्रिक शिक्षा प्राप्त कर डाक्टरी का कार्य करने लगे। डाक्टरी में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिये आप अमेरिका गये। वहां आपको बहुत अपमान सहने पड़े। आप वापिस पंजाब लौट आये। यहां पर विप्लव का कार्य जोरों पर चल रहा था आपने बम बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया। पुलिस आपको पकड़ने के लिये चक्कर काटने लगी। आप उसकी निगाह से बचकर काबुल चले गये और वहां से स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करते रहे। आप ताशकन्द जाते समय गिरफतार हो गये। आपको भारत लाया गया और मुकदमा चलाया गया। आपको फांसी का दण्ड मिला और २७ मार्च सन् १६१७ ई० को आपको फाँसी लगा दी गई।

भाग सिंह—आपका जन्म भिक्खेविण्ड नामक ग्राम जिला लाहौर में सरदार नारायण सिंह जी के घर १८७८ में हुआ था। आपको गुरुमुखी भाषा का ही ज्ञान था। २० वर्ष की अवस्था में आप फौज में भर्ती हो गये। ५ वर्ष बाद नौकरी छोड़ कर अमेरिका चले गये। वहां भारतीयों के साथ बुरा व्यवहार होता देखकर वहीं भारतवासियों की दशा सुधारने के लिये क्रान्तिकारी कार्य करने लगे। गोरों की सरकार आपसे तंग आ गई। आपको मारने का षड्यन्त्र रचा गया। आपकी जाति के एक

व्यक्ति को लालच देकर गुरुद्वारे में माथा टिकाते समय गोली से मरवा दिया। इस प्रकार आप एक देश द्रोही के हाथों शहीद हुए।

वतनसिंह—आप पटियाला राज्य में कुम्बवाल नामक ग्राम में भगेलसिंह के घर पैदा हुए थे। आप २२ वर्ष की अवस्था में फौज में भर्ती हुए लेकिन मन न लगने के कारण आप कनेडा पहुंच गये वहाँ एक लकड़ी के कारखाने में नौकरी कर ली। वहाँ पर भारतवासियों के साथ गोरे लोग बहुत अत्याचार करते थे। वतनसिंह से यह सहन नहीं हुआ और उनकी रक्षा करने लगे। गोरे शासक उनसे जलने लगे और उन को भी मरवाने का षड्यन्त्र रचने लगे। गोरे शासकों ने उनकी ही जाति के एक व्यक्ति को लोभ लालच देकर उनको गोली से उड़वा दिया।

बलवन्तसिंह—आपका जन्म गांव खुदपुर जिला जालंधर में बुद्धसिंह जी के परिवार में १८८२ में हुआ था। आप मिडिल पास करके सेना में भर्ती हो गये। आपको विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ। आप कनेडा पहुंचकर भागसिंह व वतन-सिंह के साथ अमेरिका सरकार से लड़ते रहे। आप भारत लौटते समय रास्ते में गिरफ्तार कर लिये गये। आपको भारत में लाया गया आप पर केस चला और मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई गई। फांसी वाले दिन आप प्रातःकाल उठकर ईश्वर की वन्दना करके, भारत माता को नमस्कार करके फांसी के तख्ते पर झूल गये।

दिलीपसिंह—आप शहीद होने वाले क्रान्ति कारियों में सबसे छोटी आयु के थे। आपका जन्म धमियाँ कला जिला होशियारपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री लालसिंह था। आप बाल्यकाल से ही क्रान्ति कारियों में भर्ती हो गये और अच्छे २ कार्य करके अंग्रेज सरकार को चकित करने लगे। आप एक दिन पर्चे बांटने जा रहे थे यकायक पुलिस ने घेरा डालकर आपको गिरफ्तार कर लिया। आपको अदालत में पेश किया गया। जज ने आपकी छोटी आयु देखकर आपको छोड़ना चाहा इसलिए आपसे बयान बदलने के लिए कहा लेकिन आप तैयार न हुए। अन्त में आप को फांसी की सजा दी गई। इस प्रकार आप सबसे छोटी अवस्था केवल १७ वर्ष की आयु में शहीद हो गये।

बन्तासिंह धामियां—आपका जन्म १६१० में कला में हुआ था। आप बचपन से ही नटखट स्वभाव के थे। आप कुछ बड़े होकर सेना में भर्ती हो गये। लेकिन भारतवर्ष की गुलामी ने आपको चैन नहीं लेने दिया, आप नौकरी छोड़कर क्रान्ति कारियों में भर्ती हो गये। अंग्रेजों की कड़ी शक्ति का मुकाबला करने के लिये अधिक धन की आवश्यकता थी। आपने एक दल बनाकर डाका डालना आरम्भ किया और उससे प्राप्त रुपया क्रान्तिकारियों को दिया जाने लगा। पुलिस आपके फिकर में लग गई। लेकिन आप अपने ही एक व्यक्ति द्वारा जाल साजी में फँसकर पुलिस के घेरे में आ गये और दोनों ओर से हुए संग्राम में आप वीरगति को प्राप्त हुए।

बर्यामसिंह धुग्गा—आपका जन्म जिला होशियारपुर में धुग्गा ग्राम में हुआ था। आपको सैनिक जीवन प्रिय था, आप सेना में भर्ती हो गये, लेकिन कुछ समय

पश्चात नौकरी छोड़कर वन्तासिंह की पार्टी में सम्मिलित होकर डाके डालने का काम किया। आप भी एक विश्वासघाती के शिकार हुए लेकिन आप उसके चंगुल से निकल गये। आप जंगल में जा रहे थे कि अचानक अंग्रेजी सेना ने आपको चारों ओर से घेर लिया। सेना के अधिकारी आपको जीवित पकड़ना चाहते थे। आपके पास एक कृपाण थी। जो भी आपके पास आता घायल हो जाता। अन्त में मजबूर होकर चारों तरफ से गोली चली और गोली खाकर आप शहीद हुए।

मेवासिंह—आपका जन्म लोपो ग्राम जिला अमृतसर में हुआ था। आप भी भागसिंह की पार्टी के थे। आप कनेडा में स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे। आप भाग सिंह और वतनसिंह की मृत्यु का बदला लेने के लिये अदालत में 'रीड' नाम के अंग्रेज को मारने पहुंचे लेकिन आपकी गोली से 'हांय किसन' मारे गये। आप अदालत से भागे नहीं वहीं आत्म समर्पण कर दिया। आपको फांसी की सजा मिली, आप हंसते-हंसते शहीद हो गये।

गन्धासिंह—आपका जन्म पंजाब में हुआ था। आप अमेरिका की गदर पार्टी के मुख्य नेता थे। आप अमेरिका से भारत लौट आये और क्रान्तिकारियों की आर्थिक सहायता के लिये डाका डालने लगे। २७ नवम्बर को एक स्थान पर डाका डालने जाते समय आप दल के साथ पुलिस के फन्दे में फँस गये। दोनों ओर से डटकर मुकाबला हुआ और आप शहीद हो गये।

पं० काशीराम—आप हरियाणा प्रान्त के अम्बाला जिले के रहने वाले थे। आप अमेरिका में एक बारूद के कारखाने में २००) माहवार पर बम बनाने का कार्य करते थे। आप वापस भारत लौट आये और वह कार्य यहां आरम्भ कर दिया। अंग्रेजी पुलिस आपके पीछे लग गई। जंगल में आपके १३ व्यक्तियों के दल के साथ एक बार मुठभेड़ हुई। आपके काफी साथी मारे गये, आप निकल भागे लेकिन एक विश्वासघाती ने आपको पकड़वा दिया। आप पर केस चला और ८ मार्च १९१६ को आपको फांसी दे दी गई।

वीरसिंह—आपका जन्म बहोलाव जि० होशियारपुर में हुआ था। आप १९०६ में कनेडा चले गये। वहां से आप भारत लौटे तो विप्लवकारियों में भर्ती हो गये। ६ जून १९१५ को आपको अचानक गिरफ्तार कर लिया गया और आप पर डाका डालने का अभियोग चलाकर आपको फांसी पर लटका दिया गया।

रणसिंह—आपका जन्म १८८५ में जालन्धर जिले के खुर्दपुर गांव में हुआ था। आप १९०८ में अमेरिका गये, वहाँ ६ वर्ष रहकर १९१४ में वापिस भारत आ गये और स्वतन्त्रता की आग में कूद पड़े। आपने सरकारी स्थानों को लूटने की योजना बनाई लेकिन आप एक भेदिये के कारण सफल नहीं हो सके और २६ जून सन् १९१५ की रात को आप पकड़ लिये गये। आप पर मुकदमा चलाकर आपको फांसी दे दी गई।

उत्तमसिंह—आपका जन्म हंम ग्राम जि० लुधियाना में हुआ था। अमेरिका से आप १९१४ में कुछ 'गदर' पार्टी के साथियों के साथ भारत में आकर विप्लव का कार्य करने लगे। आप बम्ब बनाना भी जानते थे। आपका विचार सरकारी मैगजीन लूटने का था लेकिन आप पीतल के लोटों के बम्ब बनाने में लग गये। आप १९ दिसम्बर १९४५ को गिरफ्तार कर लिए गये और लाहौर षडयन्त्र में आपको फांसी दे दी गई।

अरुड़सिंह—आपका जन्म सगवाल ग्राम जि० जालन्धर में हुआ था। आप बन्तासिंह के साथी थे। आप गुप्त भेद निकालने में बड़े चतुर थे। आपका वारण्ट निकल जाने पर भी आप थानों से और जेलों से गुप्त बातों का पता लगा लाते थे। एक बार जेल के फाटक पर आप पर सन्देह हो गया। आप गिरफ्तार कर लिये गये और लाहौर षड्यन्त्र में आपको फांसी दे दी गई।

जगतसिंह—आपका जन्म स्थान अज्ञात है। आप अमेरिका से भारत में विप्लव को तेज करने के लिये पहुंचे, परन्तु भारत मे प्रवेश करते ही आप सन्देह मे गिरफ्तार कर लिए गये। आप थाने न जाकर रास्ते में ही रफ़चक्कर हो गये लेकिन नल पर अपनी प्यास बुझाते हुए एक विधर्मी द्वारा पकड़े जाने पर आपको अदालत में पेश किया गया और लाहौर षड्यन्त्र में आपको फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

भानसिंह—आपका जन्म जि० लुधियाना में सुनेत नामक गांव में हुआ था। आप १९१४ में अमेरिका से कलकत्ता स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिये पहुंचे! आपको क्रांतिकारी गीत गाने का बड़ा शौक था। आप २९ अक्टूबर को पकड़ लिये गये। आपको मुकदमे में काले पानी की जेल में रखने की सजा मिली। आप जेल में भी गीत गाते रहते थे। जेलर के मना करने पर भी नहीं माने। वहाँ उनकी इतनी पिटाई की गई कि मुंह में पानी तक नहीं जाता था, अतः कुछ दिन बाद स्वर्ग सिधार गये।

ऊधम सिंह—आपका जन्म अमृतसर जिले के कैसल नामक गाँव में हुआ था। आप युवावस्था में अमेरिका पहुंचे वहां गद्दर पार्टी के सदस्य बन गये। १९२१ में आप वापिस भारत लौट रहे थे कि गिरफ्तार हो गये। आपको मद्रास की जेल में रखा गया, लेकिन एक दिन न जाने किस युक्ति से जेल से निकल कर काबुल पहुंच गये। पुलिस आपकी बड़ी खोज में थी। आप भारत लौट रहे थे कि सीमा पर आप गोली खाकर शहीद हो गये। इनकी अन्य विशेष घटनायें पन्ना नं० ५४२ पर पढ़िये।

खुशीराम—आपका जन्म २७ श्रावण ९०५ पिण्डी सैदपुर जिला झेलम में हुआ था। आप १४ वर्ष की अवस्था से ही स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े १९१९ में सारे देश में हड़ताल हुई लेकिन आपने एक जलूस का आयोजन किया। झंडा आपके हाथ में था जलूस चला जा रहा था कई बार अंग्रेजों की चेतावनी पर भी आप वापिस नहीं लौटे परिणाम स्वरूप गोली चली और ७ गोली खाकर आपने अमर पद प्राप्त किया।

नन्द सिंह—आपका जन्म १८९५ में घुड़ियाल ग्राम जिला जालन्धर में हुआ था। छोटी अवस्था में ही पिता की मृत्यु हो जाने पर आप अकाली दल में सम्मिलित होकर देश सेवा का कार्य करने लगे। आपके ग्राम का सूबेदार आपकी सारी कार्यवाहियों की जानकारी पुलिस को दे देता था। आपने एक दिन उसे मौत के मुंह में झोंक दिया। पुलिस ने आपको गिरफ्तार करके आप पर मुकदमा चलाया और २७ फरवरी १९२६ को लाहौर में आपको फांसी दे दी गई।

सन्ता सिंह—आप लुधियाना जिले के हरयोखुर्द के रहने वाले थे। १९२० में आप सेना में भर्ती हुए। दो वर्ष नौकरी करने के बाद आप अकाली दल में भर्ती हो गये और नन्द सिंह की तरह देश सेवा में लग गये। आपके उद्देश्यों में वाधक समझकर आपने एक जेलदार को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन एक विश्वासघाती के द्वारा आप गिरफ्तार हो गये और आपको भी २७ फरवरी १९२६ को लाहौर की सैण्ट्रल जेल में फांसी पर चढ़ा दिया गया।

किशन सिंह—आपका जन्म जालन्धर जिले के बाडिन्ग नामक गांव में हुआ था। आप सेना की नौकरी छोड़कर देश भक्ति के आन्दोलन में भर्ती हो गये। आप १८५७ के गदर की जैसी योजना बनाने में लगे थे कि आपका सारा राज खुल गया। आप गिरफ्तार कर लिए गये। आपने अभियोग में सारी बातें स्वीकार कर लीं। आप को लाहौर जेल में फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया।

कर्म सिंह—आपका जन्म मनोक नामक ग्राम में एक सुनार परिवार में हुआ था। बड़े होने पर आप स्वतन्त्रता आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। आपने गेन्दा सिंह सूबेदार को मारने में सहायता की थी। अतः आप १२ मई १९२३ को गिरफ्तार हो गये। आपको जेल में बड़े कष्ट दिये गये लेकिन आपने कोई राज नहीं खोला। आप पर मुकदमा चलाया गया और २७ फरवरी १९२६ को लाहौर में अन्य साथियों के साथ फाँसी दे दी गई।

धन्ता सिंह—आपका वाल्यकाल पंजाब में ग्राम बईबालपुर में बीता। आपने बड़े होकर स्वतन्त्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि जो आपको पुलिस का भेदिया दिखाई देता था वह आप से बच नहीं सकता था। आपने जेलदार बिशन सिंह, बूटां सिंह, लाभ सिंह व हजारा सिंह आदि भेदियों को मौत के घाट उतारा। आप २५ अक्टूबर १९२३ को पुलिस के घेरे में आ गये। आप ४० व्यक्तियों का बराबर मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

पं० जगतराम—आपका जन्म हरियाणा प्रान्त में जिला होशियार पुर में हुआ था। आप बड़े होकर अमेरिका चले गये और वहां से अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये वापिस लौटे तो १९१४ में आप सन्देह में पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। आप पर अनेक झूठे मुकदमें चलाकर आपको फांसी की सजा दी गई। आप हंसते हंसते फांसी खाकर शहीद हो गये।

हरिकिशन सिंह—आपका जन्म गल्ताढ़ेर नाभक स्थान पर हुआ था। आपका सारा परिवार देश प्रेमी था। आप पर भी परिवार का प्रभाव पड़ा। आप ने देश भक्ति की पुस्तकें पढ़नी आरम्भ की, परिणाम स्वरूप आप पूर्ण बागी हो गये। सर्वप्रथम आपने पंजाब के गर्वनर पर गोली चलाई किसी कारण वह बच गया लेकिन अन्य व्यक्ति की मृत्यु हो गई। आप गिरफ्तार हुए। ३ जनवरी १९३१ को आप पर मुकदमा चला और फांसी का दण्ड दिया गया। इस प्रकार ९ जून १९३१ को आपको फाँसी दे दी गई।

वीर भगत सिंह—वीरवर भगत सिंह का जन्म आश्विन शुक्ला शनिवार संवत १९६४ में लायलपुर जिले के बागांन नामक ग्राम में हुआ था जो पंजाब में स्थित है। आपका परिवार आर्य समाज जी था। आप पर भी उस का प्रभाव पड़ा। आर्य समाजी होते हुए आपका परिवार देश प्रेमी भी था। आप के अन्दर भी वह भावना जागृत हुई। आप घर से निकल गये और कानपुर पहुंचे वहाँ आपका साथ बटुकेश्वर दत्त से हो गया। आप दोनों ने मिलकर गंगा में आई वाढ़ पीड़ितों की सहायता की। वहां से आप लाहौर पहुंचे उन्ही दिनों ३० अक्टूबर १९२७ को साइमन कमीशन आया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने उसका कड़ा विरोध किया परिणाम स्वरूप उन पर डण्डे पड़े और उनकी मृत्यु का वहुत प्रभाव पड़ा और आपने साइमन कमीशन में जिस अंग्रेज ने डण्डे बरसाये थे उसको मारने का प्रण किया। १७ दिसम्बर १९२८ को उक्त अंग्रेज साण्डर्स को भगत सिंह, राजगुरू और आजाद तीनों के दल ने उसे मौत के घाट उतार दिया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। भगत सिंह को पकड़ने के लिए चारों ओर जाल बिछा दिये गये लेकिन भगत सिंह उनके जाल में कहाँ फंसने वाले थे। उन्होंने इसके साथ ही दूसरा महत्वपूर्ण कार्य ९ अप्रैल १९२९ को एसेम्बली में बम्ब फेंक कर बिल का विरोध किया। वहाँ से आप भागे नहीं बल्कि स्वयं को गिरफ्तार कराया। आप पर मुकदमा चलाया गया और आपको अन्य २ साथियों के साथ २३ मार्च १९३१ की सायं को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

सुखदेव—आपका जन्म मिति फाल्गुन सुदी ७ सम्वत् १८६२ को पंजाब के लायलपुर नामक ग्राम में हुआ था। आपके जन्म से ३ माह पूर्व ही आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए आपका पालन पोषण आपके चाचा द्वारा हुआ। परिवार में आर्य समाज की बहुत मान्यता थी। आप पर उसका प्रभाव पड़ा। १९१९ में आपके चाचा 'मार्शल ला' में पकड़े गये। आपको भी जेल में आने जाने का अवसर मिला। १९१९ में आप गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में लग गये। आप भगत सिंह की पार्टी में मिल गये। एक बार भगत सिंह के घर पर सोते हुए आप पकड़े भी गये लेकिन छूट गये। फिर से आपने अपनी गतिविधि और तेज कर दी अन्त में आप १५ अप्रैल १९२९ को फिर से पकड़े गये और इस बार आप पर मुकदमा चलाकर भगतसिंह के साथ ही २३ मार्च १९३१ को २४ वर्ष की अवस्था में फांसी पर चढ़ा दिया गया।

इन्द्रपाल—आपका पहला नाम भगतराम था। आप कांगड़ा के रहने वाले थे। क्रांतिकारियों में भर्ती होकर आपने अपना नाम इन्द्रपाल रखा। भगतसिंह और सुखदेव के पकड़े जाने पर दल का कार्य करने के लिये भगवती प्रशाद और यश पाल रह गए। आप इनके साथ ही लगकर कार्य करने लगे। आपको वायसराय की रेल उड़ाने का कार्य सौंपा गया। आप इस कार्य को एक साधु वेश में करते रहे लेकिन 'आजाद जी' के मना कर देने पर आप वापिस देहली लौट आये और दूसरी बार वायसराय की गाड़ी उड़ाने का आपने सफल प्रयत्न किया। १९३० में आपके दल में कुछ मतभेद हो गया। आप अलग से कार्य करने लगे। लाहौर के दूसरे षडयन्त्र में आप पकड़े गये। आप पुलिस के रटाये हुए बयान अदालत में देने लगे। जब आपके बयानों को अन्य क्रांतिकारियों ने सुना तो बड़ी चिन्ता हुई, लेकिन अन्तिम दिन आपने बयान बदल दिये। यह सूचना मिलते ही क्रांतिकारियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। आप पर अनेकों झूठे मुकदमे चलाकर और फाँसी का दण्ड तय किया लेकिन अन्य वकीलों की वजह से आपको १४ वर्ष का काले पानी की सजा हुई। वहीं जेल में आप इतने बीमार हो गये कि आपका निधन हो गया।

भगवती चरण—आपके पिता का नाम शिव चरण था। आप गुजरात से आगरा और आगरा से लाहौर आकर बसे। आपके रोम-रोम में देश की स्वतन्त्रता की लहर दौड़ रही थी आपके साथ आपकी पत्नी दुर्गा देवी भी कंधे से कंधा मिलाकर देश के लिये कार्य कर रही थीं। दुर्गा देवी की ही चतुराई से भगत सिंह साण्डर्स की हत्या करके लाहौर से कलकत्ता पहुंचे थे। भगवती चरण यहां पर मौजूद क्रान्तिकारियों का नेतृत्व कर रहे थे। आप बम्ब बनाने का अधिक काम करते थे। एक दिन आप १८ मई १९३० को एक बम्ब बनाकर उसका निरीक्षण करने के लिये रावी नदी के तट पर गये तथा जब बम्ब फेंकने लगे तभी वह हाथों में ही फट गया, आप बुरी तरह घायल हुए। इस प्रकार आप वहीं ४ घण्टे तक तड़प-तड़प कर वीरगति को प्राप्त हुए।

सूफी अम्बा प्रसाद—आपका जन्म सन् १८५८ में मुरादाबाद में हुआ था। आपका जन्म से ही एक हाथ कटा हुआ था। आप कहा करते थे कि हमने १८५७ में लड़ाई लड़ी थी और अब हमारा पुर्न जन्म हुआ है। अतः हाथ कटा का कटा ही चला आया है। आप देश की सेवा में ३४ वर्ष की अवस्था में लगे। १८९० में आपने पत्र पत्रिकाएं लिखनी आरम्भ कर दीं जिनमें क्रान्ति की आग भड़काने वाले लेख निकलते थे। सरकार को भय लगने लगा कि यह आग सर्वत्र न भड़क जाय। अतः अम्बाप्रसाद को पकड़ने में आतुर थे। १९०७ में पंजाब में पकड़-धकड़ आरम्भ थी। एक स्थान पर आप पुलिस के घेर में आ गये। आप पर मुकदमा चलाया गया और तय हुआ कि आपको गोली से उड़ाया जाय, लेकिन उन नापाक हाथ के मारे जाने से पहले ही आपने जेल में योग साधन से प्राणान्त कर लिया।

चन्द्रशेखर आजाद—आपका जन्म अलीपुर राज्य के भांवरा नामक एक छोटे से गांव में २३ जौलाई १९०६ को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सीता राम

तिवारी था। बचपन से ही आजाद बहुत तेज थे। १४ वर्ष की अवस्था में ही आप गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। आप आन्दोलनकारियों के साथ पकड़े गये। आप केवल १८ वर्ष के थे इसलिये आपको १५ बेंत की सजा मिली, परन्तु आप घबराये नहीं। बेंत चुपचाप खाकर हृदय पक्का करके प्रण किया कि इस अंग्रेजी नौकरशाही को समाप्त करके ही दम लूंगा। आपने क्रान्तिकारियों का एक दल संगठित किया। आपने ऐसा अच्छा कार्य करके दिखाया कि आप ही दल के नेता हो गये। आपने पर्चों को बांटने का भी काम किया जो बहुत कठिन था। ९ अगस्त १९२५ को काकोरी के समीप एक चलती हुई रेलगाड़ी को लूटा। आन्दोलन में गिरफ्तार व्यक्तियों को जेल में लेजाने वाली मोटर पर भी आपने धावा बोला लेकिन असफल रहे। आप यू० पी०, झाँसी घूमते हुए आगरा कार्य करने लगे। वहीं से आपने देहली एसेम्बली में भगतसिंह द्वारा बम्ब गिराया। १९२८ में आपने साइमन कमीशन का लाहौर में आकर लाला लाजपतराय के साथ विरोध किया। पुलिस आपके पकड़ने के फिक्र में थी आपकी गिरफ्तारी के लिये १० हजार रुपये का इनाम भी रखा गया था। साण्डर्स की हत्या हो जाने के पश्चात् आप इलाहाबाद में कार्य करने लगे। वहीं एक दिन २७ फरवरी १९३१ को एक पार्क में अपने अंगरक्षकों के साथ बैठे हुए थे कि अचानक पुलिस के घेरे में फिर आ गए। दोनों ओर से घमासान गोली चली और अन्त में आप घायल अवस्था में वीर गति को प्राप्त हुए।

राम प्रसाद बिस्मिल—ग्वालियर राज्य के तोमर घाट में चम्बल नदी के किनारे शाहजानपुरा में ज्येष्ठ शुक्ला ११ सम्वत् १७५४ में आपका जन्म मुरलीधर के परिवार में हुआ था। आप आरम्भ से ही कुरीतियों में फस गये थे, परन्तु स्वामी सोमदेव की कृपा से आपका जीवन बदल गया आप एक आर्यसमाजी के साथ-साथ देश सेवक भी हो गये। आपको पता चल गया कि भारतवासियों की दशा अंग्रेजों की वजह से खराब है अत: इनको बाहर निकालने के लिए क्रान्तिदल में सम्मिलित हो गये। आपको पुस्तकें लिखने का शौक था और उनसे प्राप्त होने वाली रकम से आप क्रान्तिकारियों को हथियार खरीद कर दे देते थे एक बार एक खुफिया के कहने पर हथियार खरीदने उसके साथ चले गये। यह इंसपैक्टर के घर ले जा रहा था जब इनको पता चला ये बच निकले। इनकी पुस्तकों को जप्त कर लिया गया। रुपये की आवश्यकता थी आपने दल की सहायता से डाका डालने का निश्चय किया। अगस्त १९२५ ई० को काकोरी तथा आलम नगर के बीच एक गाड़ी से सरकारी खजाना लूटा। बहुत सा रुपया आपके हाथ लगा। आपने काफी हथियार खरीदकर क्रान्तिकारियों को बांट एक दिन आप निश्चित घर पर सोये हुए थे कि पुलिस ने घेरा डाल दिया आप गिरफ्तार कर लिये गए। आप पर मुकदमा चला और आपको १५ हजार रुपये का लोभ देकर बंगाल की जानकारी चाही, लेकिन आपने रुपये को ठुकरा दिया। अन्त में १९ दिसम्बर १९२७ को आपको ६॥ बजे फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

अशफाक उल्ला खां—आपका जन्म शाहजहांपुरा में हुआ था। आपके अन्दर मुसलमान या हिन्दू में कोई भेद-भाव का विचार नहीं था आप देश के लिये मरमिटने को तैयार थे। एक बार आपने राम प्रसाद विस्मिल का नाभ सुना। आप उनसे मित्रता करने के लिए आतुर हो गए। अन्त में आप दोनो की गाढ़ी मित्रता हो गई। आप पूरे क्रान्तिकारी बन गये। एक बार आपने मुसलमानों से एक आर्यसमाज मन्दिर की भी रक्षा की थी। राम प्रसाद विस्मिल के साथ आप काकोरी रेल लूटने में साथ थे। और तिजोरी का ताला भी आपने ही तोड़ा था। आपका भी वारण्ट हो गया। आप विदेश चले गये लेकिन फिर कार्य करने के लिये वापस लौट आये। आते समय ८ दिसम्बर १९२६ को आप देहली में पकड़ लिए गये। आप पर लखनऊ में मुकदमा चलाया गया और धर्म के नाम पर आपको काफी लालच दिया गया लेकिन आपने लालच छोड़ कर मौत को स्वीकार किया और १९ दिसम्बर १९२७ को प्रातः ६॥ बजे फाँसी पर लटक कर शहीद हो गये।

ठा० रोशनसिंह—आपका जन्म शाहजानपुर जिले के नवादा ग्राम में हुआ था। आप आरम्भ से ही बलिष्ट एवं बन्दूक चलाने में चतुर थे। आपने रामप्रसाद विस्मिल के साथ मिलकर असहयोग आन्दोलन में कार्य आरम्भ कर दिया। काकोरी षड्यन्त्र में आपका पूरा हाथ था, उस षड्यन्त्र में ही आप गिरफ्तार हुए और लखनऊ जेल में रखा गया। आप पर मुकदमा चला और फाँसी की सजा दी गई। इस प्रकार आप फाँसी खाकर शहीद हुए।

मन्मथनाथ गुप्त—आपका जन्म १९०७ में काशी में हुआ था। आरम्भ से ही देश भक्ति में आपकी रुचि थी १९२१ में युवराज के भारत आने पर पूर्ण हड़ताल का निश्चय हुआ। आप नेताओ के साथ पर्चे बांटने में लग गये। उस ससय आपकी अवस्था केवल १४ वर्ष की थी। १९२३ में आपकी भेंट बंगाल में एक कान्तिकारी से हुई। उसके बाद आप सरकार के लिए एक बाधा बन गये। काकोरी षड्यन्त्र के अन्दर आपको २९ दिसम्बर १९२५ को गिरफ्तार कर लिया, परन्तु मौत की सजा न मिलकर १४ वर्ष का कठोर कारावास मिला। इस प्रकार आप सारे जीवन भर देश के लिये कार्य करते रहे।

रामदुलारे त्रिवेदी—आपका जन्म कानपुर जिले में हुआ था। आपने भी असहयोग आन्दोलन में भाग लिया था। आप स्थान-स्थान पर घूम-घूम कर क्रान्तिकारी दलों का गठन किया करते थे। काकोरी षड्यन्त्र में आपको ५ वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड मिला। आपने जेल के अन्दर भी क्रान्तिकारी भावना उत्पन्न कर दी सरकार आपसे परेशान हो गई। आप जेल से बाहर आये लेकिन फिर पकड़े गये। इस प्रकार आपका जीवन देश सेवा में बीता।

विजय कुमार सिन्हा—आपका जन्म कानपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आपका बड़ा भाई काकोरी डकैती में गिरफ्तार हो गया तो आपने भी क्रान्तिदल में अपना नाम लिखाया। पुलिस पहले से ही आप पर नजर रखे हुए थी।

आपको लाहोर षडयन्त्र के अन्तर्गत कैद कर लिया गया और आपको अण्डमान जेल में भेज दिया गया। वहां आपने ५५ दिन का अनशन भी किया। इस प्रकार आपका जीवन देश सेवा में व्यतीत हुआ।

शालिगराम शुक्ल—आप कानपुर के रहने वाले थे। क्रान्तिकारियों में आप प्रमुख नेता थे। पुलिस सदैव आपकों पकड़ने के लिये आपके पीछे लगी रहती थी। एक दिन डी० ए० वी० कालिज में आप को पुलिस ने घेरे में डाल दिया। आपने पिस्तौल से तीन सिपाहियों को घायल किया। दोनों ओर से बराबर गोली चली अन्त में आप गोली खाकर शहीद हो गये।

रामचरण लाल शर्मा—आप जिला ऐटा में नगलाडीह में उत्पन्न हुये थे। आप आरम्भ से ही शिक्षा समाप्त करके क्रान्तिदल में मिल गये। सबसे पहले आप १९०८ में गिरफ्तार किये गये। आप को काले पानी की सजा हुई। जब आप जेल से छूटे तो फिर क्रान्तिपूर्ण भाषण देने आरम्भ किये आप फिर १९१८ में पकडे गये। इस बार आपका पैर पकजाने से उसे कटवाना पड़ा और उसी में आपकी मृत्यु हो गई।

मुकन्दलाल—आप इटावा जिले के औरैया कस्बे के रहने वाले थे। आप गेन्दालाल जी के द्वारा राजनीतिक जीवन में आये। उन दिनों आपको काकोरी षड़यन्त्र में रिफ्तार किया गया और काले पानी की सजा मिली। साथ ही मैनपुरी षड्यन्त्र में ६ वर्ष की सजा बढ़ गई। आप दोनों सजाओं को धैर्य पूर्वक काटते हुये देश सेवा के काम आये।

श्री देव सुमन—आपका जन्म १५ मई १९१५ में टिहरी गढ़वाल के जैन ग्राम में हुआ था। आप में प्रारम्भ से ही एतृत्व के गुण झलकते थे। १५ वर्ष की छोटी आयु में १९३० में तूफानी जमाना आया। आप गाँधी जी के नमक सत्यग्रह में पकड़े गये और १४ दिन की जेल में २१ बेंत रोज कीं आपको खानी पड़ी। सन ३१ में आप कालेज में भर्ती हो गये। १९३७ में आप को टिहरी में नोकरी मिल गई। लेकिन १९३८ में स्वन्त्रंता की आग फिर तेज हो उठी। आपने उस में पूरा भाग लिया १९४२ में आप गिरफ्तार हुए। १९ नवम्बर १९४३ में आप छोड़ दिये गये। लेकिन फिर सरकांर विद्रोही कार्य करने के कारण आप को ३० नवम्बर और पकड़कर जेल में डाल दिया और २ मई १९४४ को ८४ दिन का अनशन करके आप स्वर्ग सिधार गये।

अरविन्द घोष—आपका जन्म १५ अगस्त १८७२ ई० में कलकत्ते में हुआ था ७ वर्ष की अवस्था में आप की शिक्षा का प्रबन्ध इंग्लैंड में किया गया। लेकिन २० वर्ष की आयु में सन १८९३ में आप वापिस भारत आ गये। यहाँ पर आपने भारतीयों की बुरी दशा देखी। उस समय बंगाल में पूरी क्रान्ति मची हुई थी। आप भी क्रान्ति की आग में कूद पड़े। १९०६ में कांग्रेस अधिवेशन में आपने स्वराज्य प्राप्त करने का प्रस्ताव पास कराया। वन्देमातरम् नामक पत्र का सम्पादन किया। अतः

आप गिरफ्तार कर लिये गये। एक वर्ष का कठोर कारावास भुगतने के बाद आप पूरे क्रान्तिकारी बन गये। आपने स्वराज्य के क्षेत्र में १९१० में 'कर्मयोगिन' नामक पत्र का सम्पादन किया। अतः आप पर राजद्रोह का अपराध लगाकर आप को फिर बन्दी बनाने का प्रयत्न किया गया, लेकिन आप अत्याचारियों के हाथ नहीं आये और किसी अज्ञात स्थान पर अपनी योग साधना से अपने शरीर को देश सेवा के लिये अर्पण कर दिया।

चितरंजनदास जी—आप का जन्म ५ नवम्बर १८७० को कलकत्ते में एक प्रख्यात ब्राह्मण वंश में हुआ था। आपके पिता का नाम भुवन मोहनदास था। जो बड़े आजद और विद्रोही स्वभाव के थे। आप में भी स्वातन्त्र्य प्रेम के गहरे बीज जम चुके थे। १८८६ में कलकत्ते से आपने बी० ए० परीक्षा पास की और आई० सी० एस० की परीक्षा के लिये लन्दन पहुंचें। वहाँ आप दादा भाई नौरोजी के चुनाव में लग गये परिणाम स्वरूप परीक्षा में असफल हुए। आप वापिस स्वदेश लौट आये। १९०६ मे आप राजनीति में प्रवेश कर चुके थे। सरकार ने आप पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। आपने पूरी मुकदमे की पैरवी की। १९१८ में माँटेग्यूमिशन के समक्ष निर्भीकता से गवाही देते समय आप लोक मान्य की भाँति एक राष्ट्रवादी नेता माने गये १९१९ मे युग परिवर्तन तूफानी जमाना आया। आपने प्रिंस आफ वेल्स के आगमन का विरोध किया। अतः आप ६ दिसम्बर १९२१ को अन्य नेताओं के साथ पकड़े गये। १९२२ में कारागार से बाहर आये लेकिन १९२५ में बीमार पड़ जाने के कारण आपका स्वर्गवास हो गया।

सुभाषचन्द्र बोस—आपका जन्म २३ फरवरी १८९७ ई० को हुआ था। आप के पिता का नाम जानकी नाथ था। १९०९ में आप कालिज में भर्ती हुए। विद्याध्ययन के साथ-साथ आप गरीबों की सेवा में भी लगे रहते थे। निर्भीकता आप की नस नस में कूट कर भरी थी। अपने एक अग्रेज प्रोफेसर के गाली देने पर उसको एक तमाचा भी लगाया परिणाम स्वरूप आप कालिज से निकाल दिये गये। उसी समय गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन की लड़ाई में उतर पड़े। आप देशबन्धु चित्ररंजनदास के साथ क्रान्तिदल में सम्मिलित हो गये। बंगाल के असहयोग आन्दोलन में आपके अन्दर छिपी क्रान्ति की चिगारी प्रकट हुई साथ ही प्रिंस आफ वेल्स' के स्वागत के बहिष्कार ने सरकार की राह में आपने कांटे बो दिये। दिसम्बर १९२१ में प्रथम बार आपको ६ मास की सजा हुई। जेल से छूटकर आपने फिर अपना कार्य जारी रखा। १९५३ में कलकत्ते कारपोरेशन में आप चुने गये लेकिन आप की क्रान्ति की धारा आबाध गति से प्रवाहित होती रही। २५ अक्टूबर १९२४ को सरकार ने 'बंगाल आर्डनेन्स' के अन्तर्गत आप को बन्दी बना लिया। इस कठोर कारावास में आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ा और १९२६ में आपको बिना शर्त मुक्त कर दिया गया। १९२७ में आप ने फिर कौंसिल का चुनाव लड़ा। २६ जनवरी १९३१ को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में आप पर घुड़सवार पुलिस ने

अकारण मार लगाई और जेल भेज दिया। वीरता सहास एवं देश भक्ति आप की नस नस में कूट कूट कर भरी थी। सन् १९३२ में आपने आजाद हिन्द नाम से एक फौज भी बनाई थी। लगातार जेल में रहने के कारण आप का स्वास्थ्य खराब हो गया और आप बाहर चले जाये इस शर्त पर छोड़ दिये गये। आप विदेशों की यात्रा पर जेल से मुक्त हुए, परन्तु ८ अप्रैल १९३६ को बिना आज्ञा के भारत लौट आये। १९४० में कलकत्ते में हालवेल के विरूद्ध आन्दोलन में आप फिर जेल गये और २३ जनवरी १९४१ को पुलिस की आंख में धुल फोक कर फरार हो गये। आप जापान पहुंचे और कहां जाता है कि रास्ते में दुर्घटना ग्रस्त हो जाने के कारण अगस्त १९४५ में आप इस संसार को छोड़ कर चले गये।

रास बिहारी बोस—आप बंगाल निवासी भारत के वीर आजाद हिन्द सेना के सूत्रधार सुभाषचन्द बोस के बड़े भाई थे। सन १९१२ में देहली मे वायसराय लार्ड हार्डिंगज आये हुए थे आपने योजनानुसार उन पर बम्ब फेंका, जिसमें उनका एक हाथ घायल हुआ और एक चौकीदार मारा गया। आप के वारण्ट हो गये। आप १९१४ में बनारस पहुंच कर अंग्रेजों के विरुद्ध षड्यन्त्र की योजना बनाने लगे। आपको पकड़ने के लिये पहले ७५०० रु० और बाद में १२५०० रु० का पुरस्कार रखा गया। आप आखों में धूल डालते हुये २१ फरवरी १९१५ को पंजाब के क्रान्ति आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। उन्हीं दिनो आपका सम्पर्क रविन्द्रनाथ ठाकुर से हो गया। आप उनके साथ जापान चले गये। इस प्रकार १९४५ में २१ जनवरी को आप ६४ वर्ष की अवस्था में देश सेवा करते हुये स्वर्ग सिधारे।

शचीन्द्रनाथ सान्याल—आप बंगाल निवासी एक क्रान्तिकारी युवक थे। बंग-भंग की घटना से आप के हृदय में काफी क्षोब था। आप का सम्पर्क रासबिहारी बोस से हुआ। उस समय आपकी अवस्था १८–२० वर्ष की थी। बोस ने अपना भीतरी कार्य सान्याल को सोप दिया आपने बड़ी योग्यता से कार्य सम्भाला। एक बार पंजाब में आप सिक्खों के साथ संगठन बनाना चाहते थे। वहीं १९१५ ई० में आपको गिर-फ्तार कर लिया गया और काशी षड्यन्त्र केश में आपको कालेपानी की सजा दी गई इस प्रकार आप का जीवन देश सेवा में बीता।

नलिनी बाबवी—आप वीर भूमि बंगाल के ही निवासी थे। १९१६ में आपने क्रान्ति की शिक्षा लेनी प्रारम्भ कर दी थी। १९१७ में भारत में चारों ओर दमनचक्र बड़े जोरों पर चल रहा था। प्राण दण्ड व फांसी दी जा रही थीं। आप इन अत्या-चारों की नजर से बचकर गोहाटी में रहने लगे और वहीं से स्वतन्त्रता के लिये कार्य करने लगे। अचानक आपको पुलिस ने आ घेरा। दोनों ओर से घमासान गोली चली आप बचकर पहाड़ियों पर भाग निकले लेकिन वहां भी पुलिस के घेरे में फंस गये। अब की बार आप निकल तो गये लेकिन पहाड़ी कीड़े की बीमारी आप को लग गई। आप इतने बीमार पड़े कि ३ दिन तक बोल भी न निकला। सौभाग्य से एक साथी ने आप का ईलाज कराया आप कुछ दिनों में स्वस्थ हो गये। फिर आप दोनो मिल-

कर क्रान्ति की आग में कूद पड़े। १५ जून १९१८ को फिर पुलिस के घेरे में फसे। दोनों-ओर से गोली चली। आपने अपनी गोली से साहब का तोप नीचे गिरा दिया इतने में ही एक गोली आपको लगी और आप धराशायी हो गये।

खुदीराम बोस—आपका जन्म कलकत्ते के पास किसी गांव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। आपके समय में अंग्रेज जज किंग्स फोर्ड विप्लवकारियों को ढूंड ढूंड कर मरवाने का कार्य कर रहा था। विप्लवकारियों ने आपको किंग्स फोर्ड को मारने का कार्य सौंपा। उसी समय फोर्ड का तबादला मुजफ्फरपुर को हो गया। ये खुदीराम भी प्रफुलचन्द्र को साथ लेकर मुजफ्फरपुर पहुंचे और वहां फोर्ड की ताक में लग गये २० अप्रैल को उन्होंने एक कार पर बम्ब फेंका जिसमें २ मैम मारी गई लेकिन वह कार फार्ड की नहीं थी। वह एक वकील की थी लेकिन फोर्ड की कार का और उसका एक ही रंग था। इस विस्फोट से चारों ओर पुलिस का घेरा डाल दिया गया। खुदीराम तो गिरफ्तार हो गये लेकिन प्रफुल्लचन्द भागने में सफल हो गये। खुदीराम ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया इसलिये ११ अगस्त को आपको फांसी लगा दी गई।

कन्हाईलालदत्त जी—आपका जन्म १८८७ ई० में हुआ था। बचपन से ही आपके हृदय में गरीबों के लिये प्रेम और सहायता की भावना थी। आप घर वालों से नौकरी का बहाना करके कलकत्ता चले गये। वहां बंगाल के देश भक्तों के हृदय में आग सुलग रही थी। आप भी उनमें सम्मिलित हो गये। उसी समय एक नरेन्द्र क्रान्तिकारी मुखबिर हो गया। उसको समाप्त करने का काम आपको सौंपा गया। एक बार आप पेट के दर्द के बहाने से अस्पताल में गये हुये थे और उधर एक सत्येन्द्र क्रान्तिकारी भी अस्पताल में इसी लिये आया हुआ था। वह मुखबिर अस्पताल में सत्येन्द्र से मिलने आया। उसने मौका पाकर मुखबिर पर गोली चलाई लेकिन वह बच गया। कन्हाईलाल की गोली का वार खाली नहीं गया और उन्होंने उस मुखबिर को धराशायी कर दिया। जिसके अभियोग में आपको १० नवम्बर सन् १९०८ को फांसी लगा दी गई।

यतीन्द्रनाथदास—आप भगतसिंह और आजम के समान ही क्रान्तिकारी नेता थे। ५ नवम्बर १९२५ को आपको काकोरी केस में गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन जब आप पहचान में न आसके तो आप को बंगाल आर्डिनेन्स के अन्तर्गत बन्द रखा गया। जेल में आप को कठोर यातनायें सहनी पड़ी। एक बार आपका जेल के अधिकारियों से झगड़ा भी हो गया। आपने अनशन आरम्भ कर दिया। जब आपका शरीर मरने योग्य हो गया तो जेल के अधिकारी घबराकर माफी मांगने लगे, परन्तु आप इतने कमजोर हो चुके थे कि १३ सितम्बर १९२९ को आपका स्वर्गवास हो गया।

मणीन्द्रनाथ—आपका जन्म बंगाल में हुआ था। १९२७ ई० में जब भगतसिंह आदि को फांसी दी गई तो आपके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा और आपने युवक

समाज को एक चुनौती समझा। आपने फांसी दिलाने वाले डी० एस० पी० जितेन्द्र बनर्जी को मौत के घाट उतारने का निश्चय किया। उन्होंने मौका पाकर उसपर गोली चलाई परिणाम स्वरूप ३ दिन बाद डी० एम० पी० की मृत्यु हो गई। आप गिरफ्तार कर लिये गये और १० वर्ष की सजा हुई। आपको 'बी' क्लास से 'सी' क्लास में कर दिया गया। जेल में आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया। आपने अनशन आरम्भ कर दिया और उसी बीच आप इस संसार से कूच कर गये।

राजेन्द्रनाथ—आपका जन्म १९०१ में पवना जिले के भटेंगा ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम क्षितिमोहन लाहड़ी था। आपने वंग भंग में काफी भाग लिया था। आपने १९०९ में बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय में प्रवेश लिया और वहां से एम० ए० पास कर अपने जीवन को देश सेवा में लगाने के लिए प्रतिज्ञा वृत्त धारण करके क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गये। आप दक्षिणेश्वर बम्ब केस में गिरफ्तार हुए। उन्हीं दिनों काकोरी केस भी चल रहा था। पुलिस ने आप पर दोनों केस चलाये और आप को फांसी की सजा सुनाई गई। दण्ड को सुनकर आप उछल पड़े। आपको लखनऊ से बाराबंकी जेल में लाया गया, बाद में गोण्डा जेल में ले गये और वहीं १७ दिसम्बर १९८७ को आपको फांसी के फन्दे पर लटका दिया गया आपने वह फन्दा खुशी से स्वीकार किया।

वटुकेश्वरदत्त—आपका जन्म १९०८ में कानपुर में हुआ था। आप बाल्यकाल से ही खिलाड़ी थे। आप पढ़ लिखकर क्रान्तिकारी कार्यों में भाग लेने के लिए १९२४ में वीर भगतसिंह के साथ मिल गये। आपने और भगतसिंह ने १९२४ में में केन्द्रिय विधान सभा में पास होने वाले बिलका विरोध करने के लिए बीड़ा उठाया। आपने उसका विरोध बम्ब फेंक कर करने का विचार किया। ८ अप्रैल १९२९ को बिल पास होना था ये दोनों बम्ब लेकर उपस्थित थे जैसे ही बिल को पढ़ने का समय हुआ पहले भगतसिंह ने और फिर वटुकेश्वर ने बम्ब फेंके साथ ही कुछ पर्चे फेंके और न भाग कर 'इन्कलाव जिन्दाबाद' के नारे लगाये और स्वयं को गिरफ्तार कराया। आप दोनों को जेल में अलग २ रखा गया और कठोर यातनायें दी गई। वटुकेश्वर के विषय में अनेकों प्रचार किये गये लेकिन उन कुचक्रों का विशेष प्रभाव न पड़ा। ७ मई १९२८ को दोनों को अदालत में पेश किया गया। उन्होंने अदालत में भी इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाये। आप पर ३ धारा लगाई गई। आपने सेसन जज की अदालत में बयान देने के लिये कहा। ४ जून १९२९ को देहली में आपको बड़ी देखरेख में लाया गया। आपने अदालत में अपना अपराध स्वीकार किया १२ जून १९२९ को आप दोनों को फांसी की सजा अदालत से सुनाई गई। आप दोनों को अलग २ जेल में रखा गया। आप दोनों ने अनशन आरम्भ कर दिया। भगतसिंह ने ११५ दिन व दत्त ने ७२ दिन का अनशन किया और आप दोनों को लाहौर षड्यन्त्र का अपराधी घोषित करके नियत समय पर फांसी दे दी गई।

राजनारायणमिश्र—सम्वत् १९७९ में वसन्त पंचमी के दिन पं० बलदेव प्रसाद मिश्र के घर आपका जन्म हुआ था। आप बालकपन से ही वीर थे। आपने बचपन में ही ४० वानरों की सेना तैयार करली थी। सरदार भगतसिंह को फांसी पर आपने प्रतिज्ञा की कि जब तक अंग्रेजी हकूमत को जड़ से न उखाड़ फेंकूगा चैन से न बैठूंगा। तभी १९३० में पुलिस कप्तान ने जुल्म आरम्भ कर दिये थे। अतः आपका हृदय बदल गया। आपके हाथ एक रिवाल्वर आ गया और आपने क्रांतिकारियों के साथ रेल की पटरी उखाड़ने, स्टेशनों में आग लगाने, तार काटने का कार्य आरम्भ कर दिया। सरकार की नाक में दम कर दिया। आपको पकड़ने के लिए ४००) रु० का ईनाम रखा गया। आप कानपुर जाते समय दफा १२९ में गिरफ्तार हुए। आपको २ मास की सजा हुई। छूटने पर फिर सरकार का विरोध करने लगे। घूमते घूमते आप मेरठ पहुंचे यहां आप गिरफ्तार कर लिए गये। जेल में आपको बहुत यातनायें सहनी पड़ी और २७ जून १९२९ को आपको भी फांसी के तख्ते पर झूलना पड़ा।

सत्येन्द्रकुमार वसु—आपका जन्म बंगाल प्रान्त में ही हुआ था। मुजफ्फरपुर हत्या काण्ड में आप भी गिरफ्तार हुए थे। आपको पता चला कि नरेन्द्र-स्वामी मुखबिर हो गया है। आप मरीज के बहाने अस्पताल पहुंचे और जब वह मिलने आया तो उसपर गोली से वार किया। आपकी गोली से तो वह बच गया लेकिन कन्हाईलाल की गोली से न बच सका। आप दोनों ही गिरफ्तार किये गये और हत्या के आरोप में फांसी की सजा भुगतनी पड़ी।

गोविन्द सिंह—आपका जन्म बिहार प्रान्त में हुआ था। जब १९४२ में क्रान्ति की लहर सारे भारत में फैल रही थी तो बिहार ही कैसे बचता। गोविन्दसिंह युद्ध की ज्वाला में कूद पड़े। आपने एक दल अंग्रेजों के खिलाफ संगठित किया और जंगलों में सरकार के खिलाफ कार्यवाहियाँ आरम्भ कर दी। एक बार पुलिस के घेरे में आप गिरफ्तार हुए और राजद्रोह का अपराध लगा कर आपको तथा आपके साथियों को फांसी लगा दी गई।

कनकलता—आपका जन्म सन् १९२९ में आसाम प्रान्त में हुआ था। इस १३ वर्ष की कन्या ने १९४२ की अगस्त में क्रान्ति के समय थाने पर झण्डा फहराने का सफल प्रयास किया। एक जलूस का आयोजन किया गया उस जलूस के सबसे आगे कनकलता झण्डा लिए हुए थी। पुलिस वालों ने जलूस को रोका लेकिन कनकलता नहीं रुकी। पुलिस वालों की बन्दूक से एक गोली कनकलता को लगी वह शहीद हो गई। झण्डा फिर मुकन्द नामक युवक ने सम्भाला वह भी शहीद हो गया। इस प्रकार साहस को देखकर पुलिस वाले भाग निकले और थाने पर झण्डा लगा दिया गया।

अब्दुलहमीद—वीर अब्दुल हमीद का जन्म एक जौलाई १९३३ को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के धामपुर गांव में हुआ था। आपके पिता खलीफा

मोहम्मद उस्मान दर्जी का काम करते थे। आप सेना में भर्ती हुये और नायक के पद पर पहुंच कर अपने देश की रक्षा करते हुये १० जून १९६५ को पाकिस्तानी लड़ाई में शहीद हो गये।

भूपेन्द्र सिंह—मेजर भूपेन्द्र सिंह का जन्म २ नवम्बर १९२८ को हुआ था आप के जन्म पर बड़ी खुशियां मनाई गई थी। आप सेना में भर्ती होकर मेजर के पद पर पहुंच गये। १९६५ में भारत-पाक युद्ध में आप अपने देश की रक्षा करते हुये शहीद हो गये।

मेजर आशारम—उ० प्र० के मोदीनगर कस्वे से १ मील दूर फतहपुर नाम के एक गांव में आपका जन्म हुआ था। आपका विवाह २७ जून १९६५ को हुआ था। आप कं पत्नी का नाम कविता था। १९६५ में ही भारत-पाक युद्ध छिड़ गया था। आप सेना में मेजर के पद पर थे। युद्ध में जाने से पूर्व बहिन ने माथे पर तिलक और मां ने बेटे को पद की सौंगध दिलायी कि युद्ध क्षेत्र में पीठ मत दिखाना। युद्ध में आप बुरी तरह घायल हुए। जब हस्पताल में आपको लाया गया तो आपने मरने से पहले अपनी इच्छा प्रकट की कि मुझे एक बार मेरे गांव ले जाया जाय जिससे मेरी मां देखले किमैंने युद्ध में पीठ नहीं दिखाई है छाती पर वार सहे है, लेकिन समय थोड़ा था। उस वीर की इच्छा पूरी न हो सकी और इस प्रकार देश की रक्षा में उसने अपने प्राणों को वलिदान कर दिया।

किरण—आपका जन्म २४ अगस्त १९४२ को हुआ था। आप सेना में भर्ती हो गये और टेंक सेना मे कार्य करते थे। १९६५ में भारत-पाक यूद्ध में आप मोर्चे पर टेंक के अन्दर थे। दुर्भाग्य से टेंक में आग लग गई। आप बुरी तरह घायल हुये। आपको मिलटरी हस्पताल ले जाया गया लेकिन अफसोस कि आप की रास्ते में ही मृत्यु हो गई।

ले० जनरल खुशवन्तसिंह—आप स्कूल की पढ़ई समाप्तकरने के बाद १९६३ में सेना में भर्ती हुए। ट्रेनिंक समाप्त करके आपने १९६४ में कमीशन पद प्राप्त किया और गोरखा राइफल्स में भर्ती हुये। आप अपनी मां से कहा करते थे कि भाग्यवानों को ही रणक्षेत्र में मौत नसीव होती है और मैं तो ऐसी ही मौत चाहता हुं लड़ते २ वीर गति को प्राप्त हुए।

सुरेन्द्र कुमार—उ० प्र० के मेरठ जिले में ५ नवम्बर १९३८ को यह रण-बांकुर उत्पन्न हुआ था। आपके पिता मास्टर तेजराम जी मेरठ जिले के बामनौली गांव के एक जाट हैं। आप सेना में भर्ती हो गये। सन् १९६५ की भारत-पाक लड़ाई में एक बन्दूकची ने निशाना लेकर अपनी बन्दूक का मुंह कु० सुरेन्द्र कुमार की ओर कर दिया जिससे ५ गोलियां निकल कर उनके सीने को आकर वींध गई। उन ५ गोलियों ने उन की विशाल छाती इतनी छलनी कर दी थी कि २३सितम्बर की सुबह ४ बजे उन की आत्मा परमात्मा से जा मिली।

सिपाही राजेन्द्र सिंह—उ० प्र० के मेरठ जिले के पिलखूवा कस्बे के आठ रणबांकुरों में सिपाही राजेन्द्र सिंह का नाम अपनी वीरता तथा बलिदान के लिये सदैव अमर रहेगा। अक्टूबर १९६२ में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो लद्दाख मोर्चे पर रागेन्द्र सिंह भी बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था कि मातृ भूमि की रक्षा करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ।

सिपाही पूर्ण सिंह—जैसलमेर जिले में हाबुर नाम का एक गाँव है। ठाकुर जय सिंह भाटी इस गाँव के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं। पूर्ण सिंह भाटी आप ही के सुपुत्र थे। पूर्ण सिंह हंस पर कहा करते थे कि एक दिन देखना मैं सेना में भर्ती होकर नाम कमाऊंगा। आप २१ वर्ष की अवस्था में सेना में भर्ती हो गये। भार-पाक सीमा पर जैसलमेर जिले में एक भुट्टोवाला नाम की चौकी है। वहाँ पर आप तैनाथ थे। एक पाक टुकड़ी ने धोके से उस चौकी पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण अचानक और जोरदार था। पूर्ण सिंह ने अपने साथियों को ललकारा, भइयों ! पाकिस्तानी सेना को उनकी वदनीयति की सजा देने का अवसर आ गया है, दीखता हैं उन्हें राजपूती तलवार के पानी का पता नहीं है। पूर्ण सिंह ने एक-एक करके लाशें बिछादीं, परन्तु रणचण्डी अपने लाल को लेजाने के लिये उतावली खड़ी थी। अचानक शत्रु की एक गोली पूर्णसिंह के सीने में आकर लगी और वह वीर भारत माँ की रक्षा करता हुआ चिर निद्रा में उस की गोद में लुड़क गया। ग्रामवासियों ने उसके नाम पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये एक समारोह किया और उन्होंने हाबुर गांव का नाम पी बदल कर पूनम नगर रखदियाँ।

———

फाँसी पर चढ़ने वाले क्रान्तिकारी 'भारतीय वीर'

नं०	नाम	जन्मस्थान	अभियोग	दण्ड	तिथि
१	मंगलपाण्डे	उत्तरप्रदेश	कम्पनी के विरुद्ध बगावत	फांसी	८ अप्रैल १८५७
२	राजा कुंवरसिंह	बिहार	डलहौजी हत्या षड्यन्त्र	,,	२४ ,, ,,
३	अब्दुर्रहमान खां	हरियाणा	राजविद्रोह	,,	२३ दिस० ,,
४	हुकमचन्द	,,	सरकार का विरोध	,,	१९ जन० १८५८
५	राजा नाहरसिंह	,,	अंग्रेजों से युद्ध	,,	२१ अप्रैल ,,
६	तात्यांटोपे	महाराष्ट्र	अंग्रेजों की हत्याकाण्ड	,,	१७ ,, १८५९
७	रावसहाव	,,	,, ,, ,,	,,	२० अगस्त १८६२
८	दामोदर चाफेकर	,,	,, ,, ,,	,,	१८ अप्रैल १८९८
९	खुदीराम बोस	बंगाल	किंग्स फोर्ड हत्याकाण्ड	,,	११ अगस्त १९०८
१०	कन्हाइलालदत्त	,,	मुखविर हत्याकाण्ड	,,	१० नवम्बर ,,
११	सत्येन्द्रकुमार वसु	,,	,, ,, ,,	,,	१० ,, ,,
१२	मदनलाल धींगड़ा	पंजाब	लार्डकर्जन हत्याकाण्ड	,,	१६ अगस्त १९०९
१३	लक्ष्मण कान्हेरे	महाराष्ट्र	जैक्शन हत्याकाण्ड	,,	७ मार्च १ १०
१४	कृष्णगोपालकर्वे	,,	,, ,, ,,	,,	१९ अप्रैल ,,
१५	विनायक पाण्डे	,,	,, ,, ,,	,,	१९ ,, ,,
१६	विष्णु पिंगले	,,	अंग्रेजों का विरोध	,,	१६ नवम्बर १९१५
१७	पं० काशीराम	हरियाणा	बम्ब केस	,,	८ मार्च १९१६
१८	गन्धासिंह	पंजाब	थानेदार हत्याकाण्ड	,,	८ ,, ,,
१९	करतारसिंह	,,	रेल विध्वंस षड्यन्त्र	,,	१३ सितम्बर १९१६
२०	प्रणिकचन्द	राजस्थान	महन्त हत्याकाण्ड	,,	२० मार्च १९२३
२१	विरेन्द्र	×	पोस्टमास्टर हत्याकाण्ड	,,	३ अगस्त ,,
२२	गोपीनाथ शाह	×	अंग्रेज अफसर हत्याकांड	,,	१२ जून १९२४
२३	हरिमित्र	×	दक्षिणेश्वर बम केस	,,	,, १९२८
२४	अब्दुलगनी	×	मेन्ना बम केस	,,	,, १९३०
२५	मथुरासिंह	पंजाब	बम केस	,,	२७ मार्च १९१७
२६	सोहनलाल पाठक	,,	गदर का प्रचार	,,	अगस्त १९१५
२७	मेवासिंह	,,	'हांप किसन' हत्याकाण्ड	,,	,, ,,
२८	नन्दसिंह	,,	सूबेदार हत्याकाण्ड	,,	२७ फरवरी १९२६
२९	सन्तासिंह	,,	जेलदार हत्याकाण्ड	,,	,, ,, ,,
३०	कर्मसिंह	,,	सूबेदार हत्याकाण्ड	,,	,, ,, ,,

३१	राम प्र. विस्मिल	उत्तरप्रदेश	काकोरी षड्यन्त्र	फांसी	१९ दिसम्बर १९२७
३२	असफाकउल्लाखां	,,	,, ,,	,,	,, ,, ,,
३३	राजेन्द्रनाथ	बंगाल	बम केस	,,	१७ ,, ,,
३४	प्रमोद चौधरी	×	दक्षिणेश्वर बम केस	,,	१९२८
३५	सज्जनसिंह	पंजाब	लाहौरसर्किट हत्याकाँड	,,	१३ जनवरी १९३१
३६	मो० हवीब	×	वारेन्स हत्याकाण्ड	,,	१७ फरवरी ,,
३७	राजगुरु	महाराष्ट्र	साण्डर्स हत्याकाण्ड	,,	२३ मार्च ,,
३८	भगतसिंह	पंजाब	एसम्बली बम केस	,,	,, ,, ,,
३९	सुखदेव	,,	साण्डर्स हत्याकाण्ड	,,	,, ,, ,,
४०	हरिकिशनसिंह	,,	गवर्नर हत्या षड्यन्त्र	,,	९ जून ,, ,,
४१	रामदेवसिंह	×	रेल डकैती षड्यन्त्र	,,	१८ ,, ,, ,,
४२	रामकृष्ण	×	पु. इ. पै. हत्याकांड	,,	४ अगस्त ,, ,,
४३	वैकुण्ठ शुकल	×	फणिघोष हत्याकांड	,,	१९३२
४४	पुनीत कुमार	×	मिदनापुर हत्याकांड	,,	११ मार्च १९३२
४५	कालीपद मुकर्जी	×	ढाका हत्याकांड	,,	८ दिसम्बर ,,
४६	नवाब फरुखाबाद	उ० प्र०	स्व० संग्राम में भाग	,,	तिथि ज्ञात नहीं है
४७	नादिरखां	,,	अंग्रेजों की सेनाका मु०	,,	,,
४८	ठा० रोशनसिंह	,,	काकोरी षड्यन्त्र	,,	,,
४९	वटुकेश्वरदत्त	,,	एसैम्बली बम केस	,,	,,
५०	अवधबिहारी	पंजाब	लार्ड कर्जन हत्याकांड	,,	,,
५१	बालमुकन्द	,,	लार्ड हार्डिंग्ज बमकेस	,,	,,
५२	हरनामसिंह	,,	बम केस	,,	,,
५३	बलवन्तसिंह	,,	सरकार का विरोध	,,	,,
५४	दिलिपसिंह	,,	,, ,, ,,	,,	,,
५५	वीर सिंह	,,	मैगजीन डकैती षड्यन्त्र	,,	,,
५६	रंगासिंह	,,	,, ,, ,,	,,	,,
५७	बत्तासिंह	पंजाब	इन्सपैक्टर हत्याकांड	,,	,,
५८	उत्तमसिंह	,,	लाहौर षड्यन्त्र	,,	,,
५९	अरुड़सिंह	,,	गुप्त भेदियये का अपराध	,,	,,
६०	किशनसिंह	,,	गुप्त योजना षड्यन्त्र	,,	,,
६१	पं० जगतराम	हरियाणा	सरकार का विरोध	,,	,,
६२	गोविन्द सिंह	बिहार	,, ,,	,,	,,
६३	गोपी मोहनशाह	बंगाल	,, ,,	,,	,,
६४	वासुदेव चाफेकर	महाराष्ट्र	,, ,,	,,	,,
६५	महावीर सिंह	उ० प्र०	,, ,,	,,	,,

६६	वालकृष्ण	महाराष्ट्र	सरकार के	विरुद्ध षड्यंत्र	फांसी	,,
६७	जगतसिंह	पंजाब	,,	,,	,,	,,
६८	अमीरचन्द	×	,,	,,	,,	,,
६९	वसन्त कुमार	×	,,	,,	,,	,,
७०	प्रद्योत कुमार	×	,,	,,	,,	,,

नोट :—फांसी के फन्दे को गले का हार समझने वाले उपरोक्त कुछ भारतीय वीरों के जन्मस्थान व जन्मतिथि ज्ञात नहीं हैं। अतः किसी सज्जन को इनके विषय में या और किसी फांसी पर चढ़ने वाले वीर के विषय में कुछ ज्ञात हो, तो कृपया कार्यालय को सूचित करें। मैं आपके प्रति अत्यन्त आभारी रहूंगा।

तोप द्वारा उड़ाये गये भारतीय वीर

१७ जनवरी सन् १८७२ ई० को मि० कावन की आज्ञा से तोपों से उड़ाये गये भारतीय वीरों के नाम व पते :—

नं०	नाम	पता			
१	स० हरिसिंह गरेवाल	ग्राम सकरौदी,		रियासत पटियाला	
२	स० लहनसिंह गरेवाल	,,	,,	,,	,,
३	श्री अतरसिंह	ग्राम रण		,,	,,
४	,, नत्थासिंह	,,	बरनाला	,,	,,
५	,, अतरसिंह	,,	बालियां	,,	,,
६	,, फतहसिंह	,,	,,	,,	,,
७	,, वरयामसिंह	ग्राम	मूम	,,	,,
८	,, वीरसिंह	,,	,,	,,	,,
९	,, सुजानसिंह	,,	फुलेड़ा	,,	,,
१०	,, कालासिंह	,,	दयालपुरकोटला	,,	,,
११	,, नरायनसिंह	,,	रभियाँ	,,	,,
१२	,, जयमलसिंह	,,	कांझला	,,	,,
१३	,, शेरसिंह	,,	दीवां	,,	,,
१४	,, नन्दसिंह	,,	हडिग्राम	,,	,,
१५	,, कटारसिंह	ग्राम	घतौला,	रियासत	नाभा
१६	,, परसासिंह	,,	गुरुसर	,,	,,
१७	,, ध्यानसिंह	,,	भदलथूहा	,,	,,
१८	,, रत्नसिंह	,,	,,	,,	,,
१९	,, अतरसिंह	,,	दयालगढ़	,,	,,
२०	,, भूपसिंह	,,	,,	,,	,,
२१	,, गुजरसिंह	,,	हरिपुर	,,	,,
२२	,, हरनामसिंह	,,	गिल्ल	,,	,,
२३	,, खड़गसिंह	,,	गगड़पुर,	रियासत	जीन्द
२४	,, प्रेमसिंह	,,	,,	,,	,,
२५	,, हरनामसिंह	,,	मण्डी	,,	,,
२६	,, गुरुमुखसिंह	,,	फरवाही	रियासत	मालेरकोटला
२७	,, भूपसिंह	,,	,,	,,	,,
२८	,, खड़कसिंह	,,	,,	,,	,,

२९	,, वेलसिंह	ग्राम फरवाही रियासत मालेरकोटला
३०	,, नरायणसिंह	,, चुथ ,, ,,
३१	,, ध्यानसिंह	,, चक्क ,, ,,
३२	,, माघासिंह	,, मराज जिला फिरोजपुर
३३	,, ग्रहारसिंह	,, ,, ,, ,,
३४	,, जोफासिंह	,, ,, ,, ,,
३५	,, निधानसिंह	,, ,, ,, ,,
३६	,, हरनामसिंह	,, सादक ,, ,,
३७	,, जगतसिंह	,, ,, ,, ,,
३८	,, देवासिंह गरेवाल	,, गंजी ,, ,,
३९	,, उत्तमसिंह	,, लोहगड़, थानाडेलहोंका जि. लु.
४०	,, चढ़तसिंह	,, रुड़का ,, ,,
४१	,, सुहेलसिंह	,, ,, ,, ,,
४२	,, महासिंह	,, लाहेरा ,, ,,
४३	,, वीरसिंह	,, चाओ, थाना शहवा ,,
४४	,, प्रेमसिंह	,, ,, ,, ,,
४५	,, काहनसिंह	,, पोरदा कोट, था. रायना ,,
४६	,, जीवनसिंह	,, संगोवाल ,, ,,
४७	,, नत्थूसिंह	,, बल्लो, थाना डाहमा ,,
४८	,, वजीरसिंह	,, ? थाना डेहलों ,,
४९	,, ?	,, ,, ,, ,,
५०	,, गुरुमुखसिंह	,, लताला ,, ,,
		,, ,, ,, ,,

१८ जनवरी १८७२ ई० को मि० टी० डी० फोर साहब कमिश्नर अम्बाला डिविजन के हुक्म से तोपों के साथ उड़ाये गये नामधारी सिंहों के नाम व पते :—

न०	नाम	पता
१	स० अनूपसिंह गरेवाल	ग्राम सकरौदी रियासत पटियाला
२	श्री अलबेलसिंह	,, बलिया ,, ,,
३	,, जवाहरसिंह	,, ,, ,, ,,
४	,, भक्तसिंह	,, कांझला ,, ,,
५	,, रूढ़सिंह	,, मलूमाजरा ,, ,,
६	,, श्यामसिंह	,, जोगाका ,, ,,
७	,, हीरासिंह	,, पित्थों रियासत नाभ
८	,, केसरसिंह	,, गिल्ल ,, ,,
९	,, शोभासिंह	,, भदल थूहां ,, ,,

१०	,, हाकिमसिंह	,, झबाल	जि०	अमृतसर
११	,, वरयामसिंह	,, महाराज	जि०	फिरोजपुर
१२	,, सेवासिंह	,, रब्बो	जिला	लुधियाना
१३	,, सुजानसिंह	,, ,,	,,	,,
१४	,, बेलासिंह	,, ,,	,,	,,
१५	,, शोभासिंह	,, ,,	,,	,,
१६	,, बहादुरसिंह	,, छन्ना	,,	,,
१७	,, वरयामसिंह	,, ,,	,,	,,

नोट :—तोप से उड़ाये जाने वाले इन वीरों के अतिरिक्त यदि और कोई वीर आपकी जानकारी में हों तो कृपया कार्यालय को सूचित करे। मैं आपके लिये अत्यन्त आभारी रहूँगा।

———

'राजनैतिक महापुरूषो का संक्षिप्त परिचय'

महाराज मनु—पृथ्वी पर सृष्टि के बाद प्रथम राजा मनु हुए। आपने मनुस्मृति नामक अमर ग्रन्थ की रचना की। आपने इस ग्रन्थ में सभी के लिये आचार संहिता बनाई। सभी मनुष्यों की कर्मानुसार श्रेणी बनाई, दण्ड विधान बनाया जिससे अपराध प्रवृति को रोका जा सके। आज आपको भारतवासी ही नहीं अन्य देश वासी भी याद करते हैं।

राजा हरिश्चन्द्र – आप सतयुग के प्रथम राजा माने जाते हैं। सत्य आप की नस-नस में भरा हुआ था। सत्य मार्ग पर सदैव अडिग रहे। सत्य के लिये अपनी पत्नी और पुत्र को भी बेच डाला। अपने वचन को पूरा करने के लिये सर्वस्व न्यौछावर कर डाला। आपके शासन काल में प्रजा सुखी थी। सत्यवादी राजा हरिशचन्द का नाम जब तक पृथ्वी पर प्राणी उपस्थित रहेंगे तब तक विद्यमान रहेगा।

मर्यादा पुरूषोत्तम राम – आपका जन्म उत्तर प्रदेश की अयोध्या नगरी में आज से हजारों वर्ष पूर्व हुआ था। आपके पिता राजा दशरथ के राज्य में सबसुखी थे। आप राक्षसों का संहार करने के लिये १४ वर्ष वन में रहे। आपके राज्य में प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। आपके जीवन चरित्र के ऊपर महात्मा तुलसीदास ने रामायण काव्य की रचना की। जो आजकल एक धर्म ग्रन्थ की दृष्टि से देखा जाता है। लोग आपको भगवान का अवतार भी मानते हैं।

महापुरूष श्री कृष्ण—आपका जन्म भाद्रकृष्ण अष्टमी दिन बुद्धवार २६४७ ई० पूर्व माता देवकी के उदर से मामा कंस की कारागार में हुआ था। आपने सर्व प्रथम कंस निपात किया और मथुरा की प्रजा को अत्याचारों से बचाया। आपने ज्ञान और कर्मयोग का उपदेश गीता द्वारा दिया। आपकी यह गीता वेदों के बाद सर्वोत्तम ग्रन्थ माना जाता है। आप महान योगी एवं राजनीति के कुशल खिलाड़ी थे। आपको लोग भगवान के अवतार के रूप में भी स्वीकार करते हैं।

वेदव्यास—महर्षि वेदव्यास ने अमर ग्रन्थ महाभारत की रचना की जिसमें कौरव और पाण्डव के युद्ध का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में आपने संसार की सर्वोत्तम शिक्षायें लिखी हैं। यह ग्रन्थ खण्डों में विभाजित है। आपने तत्कालीन राजनीति का चित्र भी इस ग्रन्थ में चित्रित किया है। आपका ग्रन्थ और आपका नाम सदैव अमर रहेगा।

बाल्मीकि—कहते है कि आपका जन्म एक शूद्र परिवार में हुआ था। आरम्भ में आप चोर लुटेटे थे, परन्तु अन्त में आप एक महर्षि कहलाए। आपने अमर ग्रन्थ रामायण की संस्कृत भाषा में रचना की। आपकी रामायण ही प्रामाणिक मानी

जाती है। आपने रामायण में तत्कालीन राजनीति का भी चित्रण किया है। आप एक आदर्श जीवन प्रस्तुत कर संसार में अपना नाम कर गये।

आचार्य चाणक्य—आपका दूसरा नाम कौटिल्य भी है। आपका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप भारतीय इतिहास के महानतम कूटनीतिज्ञ माने जाते हैं। आपने अपने षड्यन्त्रों एवं कुटिल चालों से मगध के राजा महानन्द का सर्वनाश किया और वहां की गद्दी पर चन्द्रगुप्त मौर्य को बिठाकर स्वयं ने मन्त्री पद का कार्य सम्भाला। आप प्रण के पक्के थे जो प्रतिज्ञा कर लेते थे उसे अवश्य पूरी करते थे। आपने कौटिल्य अर्थ-शास्त्र की भी रचना की थी।

छत्रपति शिवाजी—आपका जन्म शाहजी भौंसले के परिवार में स्योनरी के दुर्ग में सन् १६१७ ई० में हुआ था। आप जीवन पर्यन्त अपने देश की रक्षा के लिये मुगलों से युद्ध करते रहे। ३० वर्ष तक निरन्तर शत्रुओं का मुकाबला करने के बाद आपने सारे दक्षिण भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। आपने एक आदर्श हिन्दू राज्य की स्थापना की थी। बीजापुर के राजा ने भी आपकी आधीनता स्वीकार की थी।

महाराणा प्रताप—आपका जन्म सन् १५४० ई० में चित्तौड़ में हुआ था। आपके पिता का नाम महाराणा उदय सिंह था। आप २८ फरबरी १५७२ ई० में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। आप अपने साम्राज्य की मुगलों से रक्षा करने के लिये जीवन भर संघर्ष करते रहे। आपने संसार प्रसिद्ध हल्दी घाटी का युद्ध अकबर के साथ लड़ा आपने अपने मेवाड़ की रक्षा के लिये क्या-क्या कष्ट सहे उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। आप अत्याचार के खिलाफ युद्ध करते हुए १९ जनवरी सन् १५९७ में वीरगति को प्राप्त हुए। आपका नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया।

रवीन्द्रनाथ टैगौर—आपका जन्म पं० बंगाल के कलकत्ता नगर के जोड़ासां नामक मौहल्ले में सन् १८६१ ई० में श्री द्वारकानाथ जी टैगौर के परिवार में हुआ था। आपके हृदय में हिन्दुत्व की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। अतः तत्कालीन हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों के विरोध में आपने अपनी जबान कविता के रुप में खोली थी। आप एक संसार प्रसिद्ध कवि थे। आपकी प्रिय पुस्तक 'गीतान्जली' पर आपको 'नोवल' पुस्कार भी प्राप्त हुआ था। १९४१ ई० में आपका स्वर्गवास हो गया।

महात्मा गांधी—आपका पूरा नाम मोहन दास कर्मचन्द गाँधी था। महात्मा जी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ ई० को काठियावाड़ में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। आपके अथक प्रयत्नों से ही आज हम स्वतन्त्रता के वातावरण में साँस ले रहे हैं इस बात को कौन नहीं जानता ? आप अपने जीवन में बहुत बड़े सफल राजनीतिज्ञ रहे। आप से प्रेरणा लेकर सरदार पटेल सुभाष चन्द बोस व अन्य नेता धन्य हो गये। आपने देश को स्वतन्त्र तो कराया परन्तु उसे जी भर कर देख न सके। आपके विरोधी ने आप पर ३० जनवरी १९४८ ई० की शाम को नाथुराम गोडसे ने ३ गोली चलाकर आपकी हत्या कर दी।

स० वल्लभ भाई पटेल—आपका जन्म गुजरात प्रान्त के कर्मसद ग्राम में सन् १८७५ ई० में झवरेभाई पटेल के परिवार में हुआ था। आपने आरम्भ से ही राजनीति में भाग लिया। महात्मा गांधी जी के साथ आपने कन्धा से कन्धा मिलाकर उनके असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। आप गर्म स्वभाव के व्यक्ति थे। परन्तु शान्त स्वभाव वाले गांधी जी के सामने वो भी नर्म हो जाते थे। आपने अंग्रेजों को देश से निकालने के लिये अत्यन्त कठिनाइयां उठाई। यहां तक कि सारा जीवन देश सेवा में ही वीत गया। १५ दिसम्वर १९५० को आपका स्वर्गवास हो गया।

डा० अम्वेडकर—भीमराव अम्वेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ ई० में महो नामक स्थान पर एक महर परिवार में हुआ था। आप के पिता महर रेजिमैन्ट में सूवेदार थे। आपकी शिक्षा इग्लैण्ड में पूर्ण हुई। आपने पी० एच० डी० व कानून की डिग्री प्राप्त की। देश के स्वतन्त्र हो जाने के वाद आपने एक स्वतन्त्र देश के कानून मन्त्री व देश के संविधान समिति के अध्यक्ष के रूप में भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप जीवन भर राजनीति में लगे रहे। आपने अछूतोद्धार में महत्वपूर्ण कार्य किया। ६ दिसम्वर १९५६ ई० को आपका निधन हो गया।

श्यामा प्रसाद मुकर्जी—आपका जन्म २६ जुलाई १९०१ ई० में कलकत्ते के भवानपुर नामक स्थान पर हुआ था। आपके पिता सर आशुतोष मुकर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुल पति थे। सन् १९२८ में आपने वैरिस्ट्री की परीक्षा पास की १९३९ में आप सक्रिय राजनीति क्षेत्र में प्रवेश कर गये। १९४१ में आपने राजनीति में जिन्ना से टक्कर ली और विजय प्राप्त की। १५ अगस्त १९४७ ई० को देश स्वतन्त्र हुआ। आपको भी मन्त्री मण्डल में शामिल किया गया परन्तु आप वर्तमान ने ाओं से सन्तुष्ट नहीं थे अत: आपने १९५१ में जनसंघ की स्थापना की। काश्मीर वेदी पर आपने अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

डा० राजेन्द्र प्रसाद—आपका जन्म सन् १८८४ ई० में एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था। आप एक आदर्श हिन्दुत्व की साक्षात मूर्ति थे। देश की स्वतन्त्रता में आपने भी पूर्ण सहयोग प्रदान किया था। १५ अगस्त १९४७ को अथक प्रयत्नों द्वारा देश के स्वतन्त्र हो जाने पर आपको सर्वसम्मति से स्वतन्त्र भारत संघ के राष्ट्रपति पद पर नियुक्त किया गया। आप लगभग १५ वर्ष अपने पद पर योग्यता पूर्ण कार्य करते रहे। अपने पद से अवकाश ग्रहण करने के वाद आप वापिस अपने सदाकत आश्रम में रहने लगे। वहीं से आप देश की राजनीति में अपने सुझाव देते रहे। इस प्रकार देश सेवा में आपका सारा जीवन लग गया।

डा० सर्वपल्ली राधा कृष्णन—आपका जन्म सन् १८९७ ई० में हुआ था। आप भारतवर्ष के एक सवसे वड़े विद्वान एवं दार्शनिक हैं। आपकी अधिकांश रचनायें दर्शन शास्त्र से ही सम्वन्धित हैं। आप डा० राजेन्द्र प्रसाद के साथ भारत के उपराष्ट्र-

पति पद पर रहे और उन के पश्चात आपने राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया। आप सफलता पूर्वक अपने पद का भार सम्भालते हुए अवकाश ग्रहण कर अपने निवास स्थान पर चले गये और वही से देश की भलाई में अपने विचारों को प्रदान करते रहे हैं।

लाल बहादुर शास्त्री—आपका जन्म २ अक्टूबर सन् १९०४ ई० को उत्तर प्रदेश प्रान्त में हुआ था। आप एक धनी परिवार से सम्बन्धित नहीं थे परन्तु आपकी तीक्ष्ण बुद्धि ने आपको सदैव उच्च पद पर बनाये रखा। आप आरम्भ में उत्तर प्रदेश प्रान्त के गृहमन्त्री बने। तत्पश्चात आप केन्द्र में रेल मन्त्री बने। कामराज योजना के अन्तर्गत आपने भी पद त्याग दिया। माननीय जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु के पश्चात आपको स्वतन्त्र भारत का द्वितीय प्रधानमन्त्री पद पर नियुक्त किया गया। दुर्भाग्य से उसी समय पाकिस्तान से युद्ध हुआ। आपने युद्ध का संचालन कुशलतापूर्वक किया। आप लगभग १८ माह तक अपने पद पर रहे और ११ जनवरी १९६६ को ताशकन्द में भारत-पाकिस्तान समझौते के अवसर पर आपने अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी।

डा० जाकिर हुसैन—आप डा० राधाकृष्णन के साथ भारत के उपराष्ट्रपति पद पर आसीन थे। उनके अवकाश प्राप्त करने के बाद आप भारत के तृतीय राष्ट्रपति नियुक्त किये गये। आपने अपना कार्य सफलतापूर्वक किया। देश विदेश की आपने यात्रायें की। आप अपने कार्य का सफलतापूर्वक सम्पादन करते हुए अचानक हृदयगति रुक जाने पर आप का निधन हो गया। राष्ट्रीय सम्मान सहित देहली में ही आप की अन्त्येष्टि कार्य सम्पन्न हुआ।

महामहिम डा० वी० वी० गिरि—वर्तमान काल में आप स्वतन्त्र राष्ट्र संघ के चतुर्थ राष्ट्रपति है डा० जाकिर हुसैन के साथ आपने उप राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया था। देश की राजनीति से आपका आरम्भ से ही सम्बन्ध था। डा० जाकिर हुसैन के निधन के बाद आपको ही राष्ट्रपति पद पर नियुक्त किया गया। आजकल आप देश की प्रगति में लगे हुए हैं। आपने अपने पद पर आसीन होते ही 'बैंकों का राष्ट्रीयकरण' व 'राजाओं की मान्यता की समाप्ति' दो बड़े कार्य किए। आशा है भविष्य में भी आप ऐसे ही महान कार्य करते रहेंगे। अतः ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों।

भगिनि निवेदिता—आपका जन्म २८ अक्टूबर सन १८६७ ई० में उत्तरी आयरलैंड के एक छोटे से कस्बे में हुआ था। सन् १८९५ ई० में आप स्वामी विवेकानन्द के सम्पर्क में आने के बाद आप भारतवर्ष चली आई। आपने भारतीय संस्कृति का अध्ययन कर उसे अपना लिया। आपने भारत की आजादी के लिए भारतीय नेताओं के साथ मिलकर कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में आपने महत्वपूर्ण कार्य किये। आप सदैव भारत की उन्नति में लगी रहीं। इस प्रकार देश के लिए ही आपने ४४ वर्ष की अवस्था में अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी।

दीनदयाल उपाध्याय—पं० दीनदयाल उपाध्याय वर्तमान जनसंघ दल के अध्यक्ष थे। आपके सहयोग से राजनीतिक दल जनसंघ खूब फल फूल रहा था। आपने अपने दल को साथ लेकर देश सेवा के अनेकों कार्य किये। देश के बड़े बड़े राजनीतिज्ञों में आपकी गिनती होती थी और बड़े बड़े मसलों पर आप की राय भी ली जाती थी। दुर्भाग्य से आप कहीं यात्रा करते समय रेल में आपकी हत्या कर दी गई। आपके हत्या काण्ड की भारत सरकार द्वारा विशेष जाँच चल रही है।

राजाराम मोहनराय—आप का जन्म १७७४ ई० में हुआ था। आप एक बड़े समाज सुधारक थे। आपने ब्रह्म समाज की भी स्थापना की थी। आपने सती प्रथा के उन्मूलन में पर्याप्त योग दिया था। देश की राजनीति से भी आप का सम्बन्ध रहा आपने देश की स्वतन्त्रता के लिये आरम्भ में प्रयास किये थे। इस प्रकार एक सामाजिक और राजनैतिक जीवन चलाते हुए आप सन १८३३ में स्वर्ग सिधार गये।

गोविन्द बल्लभ पन्थ—आप का जन्म सन् १८८७ ई० में उ० प्र० के जिला अल्मोड़ा में खूट ग्राम में पं० मनोरथ पन्त के परिवार में हुआ था। राजनीति से आप आरम्भ से ही सम्बन्धित रहे। आप आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। इसके बाद मन्त्रीमण्डल में भी आप कार्य करते रहे। अपने जीवन को एक राजनैतिक परिस्थिति से यापन करते हुए आप सन् १९६१ ई० को स्वर्ग सिधार गये।

सरोजनी नायडु—आपका जन्म सन् १८७९ ई० में हैदरावाद में श्री अघीर नाथ जी के परिवार में हुआ था। आपने देश की स्वतन्त्रता में पूरा सहयोग प्रदान किया आप अनेकों वार जेल भी गई और अनेकों यातनायें सहन की लेकिन अपने पथ से विचलित नहीं हुई और देश की राजनीति नें बराबर भाग लेते हुए सन् १९४९ में आपका निधन हो गया।

चक्रवृत्ती राजगोपाला चार्य—आपका जन्म सन १८७६ ई० में हुआ था। आप के पिता का नाक चक्रवृति विजयपराघव आचार्य था। आपने अग्रेजों के साथ देश की स्वतन्त्रता के लिये आजादी की लड़ाई लड़ी। देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद आप राजनैतिक जीवन के साथ २ सामाजिक जीवन चला रहे हैं। आजएल आप एक सामाजिक कार्यकर्त्ता माने जाते हैं।

श्री मति विजय लक्ष्मी पंडित—आप का जन्म सन् १९०० ई० में पं० मोती लाल जी नेहरू के परिवार में हुआ था। आप एक धनी परिवार की पुत्री हैं। और स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की छोटी वहिन हैं। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की। देश की राजनीति से आपका आरम्भ से ही सम्बन्ध रहा। आप भारत की राजदूत भी रहीं। आजकल आप एक सामाजिक जीवन व्यतीत कर रही हैं।

बाबु लक्ष्मी नारायण बी० ए०—बाबू लक्ष्मी नारायण जी उ० प्र० के जिला मेरठ में प्रसिद्ध नगर हापुड़ के रहने वाले हैं। आप के पिता जी कानपुर में

कार्य करते थे। वहीं आप का जन्म सन् १९०० में हुआ था। आपने मेरठ कालिज से अध्ययन छोड़कर 'सिन्ध नेशनल कालिज' हैदराबाद से सन १९२० में राजनीतिक शास्त्र से बी० ए० पास किया। आपने अध्यायन समाप्त कर सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। आप सर्व प्रथम १९१२ में हापुड़ तहसील काँग्रेस कमेटी के प्रधान नियुक्त हुए। निरन्तर १० वर्ष तक सफलता पूर्वक कार्य करने के पश्चात सन १९१३ में आप हापुड़ नगर पालिका के अध्यक्ष चुने गये। दो वर्ष तक कार्य करने के पश्चात सन १९३५ में मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये। सन १९३६ में देहली प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व अखिल भारतीय काँग्रेस कार्य कारिणी समिति के सदस्य तथा उ० प्र० विधान परिषद के सदस्य निर्वाचित हुए। सन १९३९ में आप कौंसिल के निर्विरोध सदस्य चुने गये। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी आपने भाग लिया। सन १९४२ में ब्रिटिश शासन के प्रति वफादारी की शपथ-भंग की ओर मेरठ जिले से आपने आन्दोलन प्रारम्भ किया। सन १९४५ में आपने फिर ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार रहने से इन्कार किया। उस दूषित राजनीति से निकल कर आप सामाजिक क्षेत्र में आये और आपने १९४५ में हापुड़ नगर में श्री सरस्वती विद्या मन्दिर की स्थापना की और तभी से अब तक आप इस नगर की 'शिक्षा प्रसार समिति' के प्रधान पद पर सफलता पूर्वक कार्य करते चले आ रहे हैं।

लाला बाबू राम जी—देश भक्त एवं समाज सेवी ला० बाबूराम जी का जन्म सन १९१० ई० में उ० प्र० प्रान्त के मेरठ जिले में रोहटा नामक ग्राम में एक वैश्य परिवार में हुआ था। आप की आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण सन १९२७ में आप को अपनी जन्म भूमि छोड़नी पड़ी और हापुड़ नगर के पास ग्राम सिमरौली में जीवन यापन करने लगे तथा सन १९३३ से आप परिवार सहित हापुड़ नगर में निवास करने लगे। आरम्भ से ही आप के हृदय में देश सेवा व समाज सेवा की भावनायें भरी हुई थी। परिणाम स्वरूप १९४२ में महात्मा गाँधी जी के 'करो या मरो' नारे पर आप क्रान्तिकारी बने और अपने क्षेत्र के मुख्य क्रान्तिकारी के रूप में प्रथम बार जेल गये। जेल से मुक्त होने के बाद भी आप स्वतन्त्रता आन्दोलन में बराबर भाग लेते रहे। सन १९४६ में देश के विभाजन के समय गढ़ मुक्तेश्वर के प्रसिद्ध गंगा मेले पर हिन्दू-मुसलमानों में मची मारकाट में आपने असंख्य प्राणियों की जान बचाई। सन १९४७ में देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात आपने सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश किया और सर्व प्रथम सन १९४७ में देहली में यमुना नदी में आई बाढ़ से बाढ़ पीड़ितों की रक्षा की। सन १९५५ में फिर देहली शाहदरा में आई बाढ़ व १९५८ में रोहतक में आई बाढ़ में आपने प्रशंसनीय कार्य किये। १९६० में आप गुड़ सत्याग्रह में जेल गये और १९६६ में गौहत्या बन्द आन्दोलन के अवसर पर दो बार आप बड़े २ जत्थे लेकर गिरफ्तार हुए। आपने आरम्भ से ही अपने हापुड़ नगर की सारी सामाजिक, एवं धार्मिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण योग दिया। आप कर्मठ एक आर्य

समाजी होते हुये अन्य धर्मों की बराबर सेवा और रक्षा करते रहे हैं। आपने अपने सत्कर्मों द्वारा थोड़े ही समय में हापुड़ नगर में ही नहीं, पूरे जिले में लोक प्रियता प्राप्त की। सन १९५७ में आप हापुड़ में म्युनिसिपल कमिश्नर भी चुने गये। वर्तमान समय में नगर की कोई ऐसी सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्था नहीं है जिसके आप कर्मठ सदस्य न हों। आज कल आप लाला बाबूराम सिमरौली वाले के नाम से प्रसिद्ध हैं। विधर्मियों को शुद्ध करना आपका प्रमुख कार्य रहा है।

ला० लेखराम भक्त—आपका जन्म उत्तर प्रदेश प्रान्त के जिले के विज वाड़ा ग्राम में १८९२ ई० को ला० झन्डु मल जी के यहां वैश्य परिवार में हुआ था। आपने अपने जीवन में होश संभालते ही कार्य पूरी लग्न से किया। बाद में आप सनातन धर्मी बन गये। वैसे तो आपकी हर कार्य में रुचि थी परन्तु विधर्मियों को शुद्ध करना व गऊ शालाए खुलवाना एवं धर्म प्रचार के लिए अपने घर के कार्य को भी छोड़कर पहले ईश्वरीय कार्य किया। आप के इस कार्य में ला० मंशालाल जी फजलपुर (सुन्दर नगर) निवासी भी सहयोगी रहे। सन् १९५७ ई० को दौराला ग्राम में राम नाम रटते हुए स्वर्ग सिधार गये।

डा० भगवत प्रसाद—डाक्टर साहब का जन्म सन १८९८ ई० के लगभग हुआ था। आप की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में पूर्ण हुई और वहीं से आपने वैद्यक परीक्षा पास की तथा दन्त चिकित्सा में प्रवीणता प्राप्त कर अपने कार्य में सफलता प्राप्त की। आप का कार्य क्षेत्र मेरठ शहर ही था। आपकी सेवाओं से मेरठ जिला बहुत प्रभावित था आप की भी प्रर्याप्त प्रसिद्धि थी। आप आर्य समाजी विचार धारा के व्यक्ति थे। आप सदैव यथाशक्ति दीन दुखियों की सहायता के लिये तत्पर रहते थे। आप का जीवन सादा एवं स्नेहपूर्ण था। आपका स्वभाव साँसारिक चमक, दमक के प्रतिकूल था। आपका प्रभाव आप की धर्म पत्नी श्रीमती शकुन्तला गोयल पर भी पड़ा। उन्हीं की वजह से वे आजकल आर्य समाज के क्षेत्र में अपना मुख्य स्थान रखती हैं। डाक्टर साहब ७२ वर्ष की आयु में ५ मार्च १९७० को स्वर्ग सिधार गये।

———

'प्रमुख वैज्ञानिक एंव उनके आविष्कार'

गैलिलियो—आधुनिक युग के वैज्ञानिकों में गैलिलियो का एक महत्वपूर्ण स्थान है। आप का जन्म १५६४ ई० में इटली के पीसा नगर में हुआ था। इन्होने "दूरबीन" का आविष्कार किया था। जिस के द्वारा आपने यह ज्ञात किया कि 'उपग्रह' 'ग्रहों' की परिक्रमा करते हैं। सन् १६४३ई० में आप का स्वर्गवास हो गया।

न्यूटन—'आइ जक न्यूटन' का जन्म सन् १६४२ ई० में हुआ था। आप गणित के बहुत बड़े विद्वान थे, जिसके आधार पर आपने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत से आविष्कार किये। २० मार्च सन् १७२७ ई० में आपका स्वर्गवास हो गया।

विलियमहर्शेल—'विलियमहर्शेल' जर्मनी के हनोवर प्रान्त के निवासी थे। आप का जन्म सन् १७३८ में एक साधारण यहूदी परिवार में हुआ था। आपने भी 'दूरवीन' का आविष्कार किया था। आप का देहांत सन् १८२२ में हुआ था।

हेनरी बेसीमर—आप का जन्म १८३३ ई० में इंग्लैण्ड के हर्ट फोडशायर प्रान्त के चार्लटन मामक गांव में हुआ था। आपने स्पात को ढालने का प्रयत्न किया था +और ,वेसीमर' विधि को ढूंड निकाला था। 'स्पात' को ढालने में 'वेसीमर' विधि का प्रयोग अच्छा रहता है क्योंकि यह विधि अच्छी और सस्ती पड़ती है।

हारग्रीव्ज—आपका जन्म इंग्लैड के ब्लैकवर्न नगर के समीप स्टैनहिल नाम के छोटे से गांव में रहने वाले एक गरीब व अशिक्षित जुलाहे के परिवार में हुआ था आपने सन् १७७७ में एक 'चर्खे' का आविष्कार किया जिसमें ३० तकुएं एक साथ ३० सूत के धागे निकालते थे।

आर्कराइट—आप का जन्म सन् १७३२ में इंग्लैण्ड के प्रेस्टन नामक स्थान में हुआ था। आपने सूत कातने की कला का आविष्कार किया। आजकल ये ही कलें कारखानों में सूत कातने के काम में लाई जाती हैं।

क्राम्पटन—'सेमुअल क्राम्पटन' का जन्म लंकाशायर के वोल्टन नगर के समीप सन् १.५३ ई० में हुआ था। आपने भी आर्कराइट की तरह से ही सून कातने की कलों का आविष्कार किया तथा आर्कराइट की वनाई हुई कलों में भी सुधार किये, जिससे मजबूत व बारीक सूत काता जा सकता था।

कार्टराइट—आप का जन्म नाटिंघन के एक सम्पन्न परिवार में सन् १७४६ ई० में हुआ था। आपने ऐसे कलपुर्जों का आविष्कार किया जो बिना मनुष्य के हाथ लगाये ही बुनाई का कार्य कर सकते थे।

गिलबर्ट—डा० गिलबर्ट का जन्न सन् १५०४ ई० में कोलचस्टर में हुआ था। डा० गिलबर्ट ने अपने प्रयोगों द्वारा विजली उत्पन्न करने का आविष्कार किया।

वोल्टा—'मेलेजेण्ड्रो वोल्टा का' जन्म इटली के कोमो नामक स्थान में एक बहुत ही प्रतिष्ठिता परिवार में हुआ। वोल्टा ने 'विद्युत-बैट्री' का आविष्कार किया था। आपकी मृत्यु ८२ वर्ष की अवस्था में हुई थी।

फॅरेड—,माइकेल फॅरेड' का जन्म सन् १७९१ में इंग्लैण्ड में न्युइंग्टन नामक स्थान में एक लुहार के परिवार में हुआ था आपने जल शक्ति द्वारा बिजली उत्पादित करने का आविष्कार किया आपका जीवन सादा था वे दिखावट पसन्द नहीं करते थे। आप की मृत्यु सन् १८६७ ई० में हुई थी।

सेमुअल मोर्स—सेमुअल एफ० बी० मोर्स एक अमेरिका के निवासी थे। आपका जन्म अमेरिका के चार्ल्स टाउन नाम के स्थान में सन् १७९१ में हुआ था। आपने तार द्वारा संदेश भेजने का आविष्कार किया था।

लार्डकेल्विन—'लार्ड केल्विन' का नाम पहले विलियम टाम्सन था। आप का जन्म सन् १८२४ में आयर लैण्ड के वेल्फास्ट नगर में हुआ था। आपने समुद्र की सतह में तार बिछाने का आविष्कार किया था। आपने समुन्द्र की गहराई नापने के यन्त्र और दिग्दर्शक यन्त्रों में सुधार तथा पृथ्वी की आयु भी ज्ञात की थी। सन १९०७ में आप की मृत्यु हो गई।

चार्ल्स डार्विन—आपका पूरा नाम चार्ल्स रावर्ट डार्विन था। आपका जन्म इंग्लैण्ड के श्रुजवरी गाँव में १२ फरवरी १८०९ ई० को हुआ था। आपने भूगर्भ विज्ञान का अध्ययन किया तथा अपने अनुभवों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि जीवों की जितनी जातियाँ इस समय पाई जाती हैं उन सब की सृष्टि एक साथ नहीं हुई। आपने १८५९ ई० में 'जातियों की उत्पत्ति' नामक एक पुस्तक का सम्पादन किया और अपना सिद्धान्त लोगों के सम्मुख रखा। सन् १८७८ ई० में आपने 'मनुष्य की उत्पत्ति' नामक दूसरी पुस्तक प्रकाशित की। सन् १८८२ में आपकी मृत्यु हो गई।

लुईपास्चुर—आप एक महान वैज्ञानिक फ्राँस देश में डोल नामक स्थान में २७ दिसम्बर सन् १८२२ ई० को एक साधारण परिवार में उत्पन्न हुए थे। आपने खमीर बनने की क्रिया तथा रेशम के कीड़ों के बचाव के लिये दवाओं का आविष्कार किया था। तथा अन्य जानवरों के विष प्रभाव को मिटाने की दवाओं का भी अविष्कार किया था। आपकी दवाओं से लाखों मनुष्यों के प्राणों की रक्षा हुई। २८ सितम्बर १ ८५ में आपकी मृत्यु हो गई।

लाप्लास—आपका जन्म सन् १७४९ ई० में फ्राँस के नार्मंडी प्रान्त में होंफ-लुए नामक स्थान में हुआ था। आपने अगम्य विश्व का रहस्य भेद कर संसारवासियों की ज्ञान पिपासा को तृप्त करने में सहायता प्रदान की अर्थात आपने चन्द्र, सूर्य, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र इत्यादि के बारे में प्रयोग किये तथा उनके माप दण्ड की अवधि का पता भी लगाया।

बुनसन—"राबर्ट विल्हेल्म बुनसन" का जन्म जर्मनी देश में गोटिंजन नामक

स्थान में सन् १८११ ई० में हुआ था। आपने ताराओं की गति का ज्ञान किया था। तथा यह प्रमाणित किया कि आकाश की सभी दृश्यमान वस्तुओं में वही सब तत्व विद्यमान हैं जो हमारे भूमण्डल में हैं, परन्तु सूर्य में कोई नया तत्व है। आपकी मृत्यु ८९ वर्ष की अवस्था में हुई।

किरशाफ—आपका जन्म जर्म देश में कोनिग्सवर्ग नामक स्थान में हुआ था। आपने भों बुनसन के साथ ही वैज्ञानिक खोजें की थीं। आपकी मृत्यु ६३ वर्ष की अवस्था में हुई।

श्रीमति क्यूरी—श्रीमति क्यूरी का पूरा नाम 'मेरी स्क्लोडाउस्का' था। आप का जन्म सन् १८६७ ई० में वार्सा में हुआ था। आप डा० स्कलोडाउस्का की पुत्री थीं। आपने रेडियम की खोज की थी। आपकी मृत्यु ४ जोलाई १९३४ में हुई थी।

एलैकजेण्डर ग्राह्मबेल—आपका जन्म सन् १८४७ ई० में स्काटलैंड के एडिनबरा नगर में हुआ था। आपने ? का अविष्कार किया था।

टाम्स एलवा एडिसन—आपका जन्म सन् १८४७ में अमेरिका के ओहियों प्रान्त के मिलन नगर में हुआ था। आपने ग्रामोफोन का अविष्कार किया था।

पेपिन—आपने सन् १६८८ में एक ऐसा इन्जिन बनाया था जो न्यूजिन के इन्जिन की भाँति ही था लेकिन उसमें बारूद की जगह भाप से वायु शून्य स्थान बना कर काम चलाया। इस प्रकार पेपिन ने भाप के इन्जिन का अविष्कार किया।

न्यूकमेन—आपका जन्म डर्बीशायर के डार्टमाऊथ नाम के गाँव में सन् १६६३ ई० में हुआ था। आपने पत्थर के कोयले की खानों से पानी उलीचने के लिये पम्प को भाप के इन्जिन से चलाने का अविष्कार किया था।

जेम्सवाट—जेम्सवाट का जन्म क्लाइट नदी के तट पर स्थित ग्रीनक नामक गांव के एक साधारण परिवार में सन १७३९ ई० में हुआ था। जेम्सवाट ने अपने समय के पहले बनाये हुए वाष्प इन्जिन में सुधार करके उसमें नवीन सुधार किये। इस प्रकार जेम्सवाट ने एक और नवीन वाष्प इन्जिन का अविष्कार किया।

गालवानी—गालवानी का जन्म इटली के बोलोना नगर में हुआ था। आपने जन्तुओं के द्वारा बिजली उत्पन्न करने का अविष्कार किया था। आपकी मृत्यु सन् १७९८ ई० में हुई थी।

ओयर्स्टेड—आपका जन्म डेनमार्क में लैंजलैंड के द्वीप में एक दवाफरोश के परिवार में हुआ था। आपने बिजली तथा चुम्बक के संयोग से अविष्कार किया था। इसी के द्वारा ही सन्देश भेजने का साधन अविष्कृत हो सका था।

मारकोनी—गुगलिलमो मारकोनी का जन्म इटली के बोलोंमा नगर के समीप एक छोटे से गाँव में सन् १८७४ ई० में हुआ था। आपने "बेतार का तार" नामक यन्त्र का अविष्कार किया था।

जगदीश चन्द्र वसु—आचार्य जगदीश चन्द्र वसु का जन्म बंगाल के ढाका जिले में विक्रमपुर नामक ग्राम में सन् १८५८ ई० को हुआ था। आपने प्रयोगों द्वारा

यह सिद्ध किया कि जीव-जन्तु भी अन्य प्राणियों की तरह ही जीव हैं। आपकी मृत्यु नवम्बर मास सन् १९३७ में हुई।

रदरफोर्ड—आपका जन्म दक्षिणी गोलार्द्ध में न्यूजीलैण्ड द्वीप के नेलसन नामक नगर में सन् १८७१ ई० को हुआ था। आपने अपने प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि परमाणु विभाज्य है। आपका देहान्त सन् १९.७ में हुआ।

चन्द्रशेखर वेंकटरमन—आपका जन्म दक्षिणी भारत में त्रिचनापल्ली नामक नगर में ७ नवम्बर सन् १८८८ ई० में हुआ था। आपने प्रकाश बिखेरने के सम्बन्ध में खोज की थी।

ऐलेक्जेण्डर फ्लैमिंग—आप आस्ट्रेलिया निवासी थे। आप सन् १९२१ में एक वैज्ञानिक के रूप से इंग्लैण्ड आये थे। आपने पैन्सिलिन का आविष्कार किया था।

फ्रेंकह्विटल—फ्रेंक ह्विटल का जन्म लीमिंगर नामक नगर में हुआ था। आप ने जैट वायुयान का अविष्कार किया था।

डा० भावा—आपका जन्म १९०९ में भारतवर्ष में हुआ था। आप बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। सन् १९४८ से ही आप भारतीय परमाणु विभाग के अध्यक्ष थे आपने 'आदम्स' व 'होपकिल्स' पुरुस्कार भी जीते थे। १९५४ में आप पद्मविभूषण की पदवि से विभूषित किये गए। हवाई जहाज दुर्घटना में २४ जनवरी १९६६ को आप का स्वर्गवास हो गया। आपने अनेकों आविष्कार किये।

———

ऊधम सिंह की घटनायें

विवरण		तारीख
(१)	लन्दन में ऊधमसिंह ने जनरल डायर को गोली मारी	१९४० ई०
(२)	अमृतसर में ऊधमसिंह को गिरफ्तार किय।	३१ अगस्त १९४७ ,,
(३)	भारत के प्रमुख काम से लौटे	१९३६ ई०
(४)	अमरीका से लौटे	१९२ ई०
(५)	पुन: अमरीका वापस लौटे	१९३० ई०
(६)	इंग्लैंड जाना	१९३८ ई०
(७)	दूसरे युद्ध के आरम्भ के समय लन्दन चले गये	१९४० ई०
(८)	ऊधमसिंह जी को फाँसी का हुक्म	जून १९४० ई०
(९)	ऊधमसिंह जी को लन्दन में फाँसी देदी गई प्रात: ९ बजे ३१ जौ०	१९४० ई०
(१०)	प्रथम विश्व युद्ध यूरोप में शुरु हुआ	१९१४ ई०
(११)	प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ	१९१९ ई०
(१२)	डा० सत्यपाल व किचलू को देश निकाला	१० अप्रैल-१९१९ ई०
(१३)	जलियां वाले बाग में १६५० गोली चलीं	१३ अप्रैल १९१९ ई०

१६५० गोली चलने पर ३७९ व्यक्ति मरे, ११३७ व्यक्ति जख्मी हुए,

जनता की रिपोर्ट से मरने वालों की संख्या १०००, २९८ व्यक्तियों पर निर्दोष आरोप लगाया, ५१ व्यक्तियों को फाँसी, ७९ व्यक्तियों को ७-७ साल की जेल ४९ व्यक्तियों को देश निकाला।

भारत के पुल

	पुल का नाम	लम्बाई फिटों में
(१)	स्टोन (पत्थर) पुल	१०,०५२
(२)	गोदावरी पुल	९,०९६
(३)	महानदी पुल	६,९१२
(४)	डुफेरिन पुल (बनारस १८८७)	३,५७८
(५)	कर्जन पुल (इलाहाबाद १९०५)	३,२००
(६)	विवेकानन्द पुल (कलकत्ता)	२,६१०
(७)	हावड़ा पुल (१९४३)	२,१५०
(८)	जुबली पुल (नैहाती)	१,२१३
(९)	टापटी पुल (१८७२)	२,५५६
(१०)	नैनी पुल (इलाहाबाद १८६५)	३,२३५

(११)	इजात पुल (इलाहाबाद १९१२)	६,८३०
(१२)	गंगा का पुल (मोकामाह)	६,०७८
(१३)	रवि का पुल (पठानकोट-जम्मू)	२,८००
(१४)	जमुना पुल (देहली १८६६)	२,६४०
(१५)	मालवीय पुल (बनारस १८८७)	
(१६)	सुतलेज पुल	४,२१०
(१७)	एलेकजेन्ड्रा (केनाब)	९,०८८
(१८)	नरबावा पुल (१८८१)	४,६८७
(१९)	हुगली पुल	१,२१३
(२०)	सारीघाट पुल (ब्रह्मपुत्र १९६३)	४,२५८
(२१)	गढ़मुक्तेश्वरपुल	

पहाड़ी स्टेशन

	स्थान का नाम	समुंद्र से ऊंचाई फिटों में
(१)	अलमोड़ा (उत्तर प्रदेश)	५,५००
(२)	बंगलौर (मैसूर)	३,०००
(३)	भौवाली (उत्तर प्रदेश)	५,५००
(४)	चकरौता (उत्तर प्रदेश)	७,०००
(५)	चेरा पूंजी (आसाम)	४,५००
(६)	कूनूर (मद्रास)	६,७४०
(७)	डलहौजी (हिमाचल प्रदेश)	७,८६७
(८)	दार्जिलिंग (प० बंगाल)	७,१६८
(९)	गुलमर्ग (काश्मीर)	८,८००
(१०)	कालीम पौन्गा (प० बंगाल)	४,०००
(११)	कसौली (पंजाब)	६,२००
(१२)	कोडायकानाल (मद्रास)	७,०००
(१३)	कुल्लु घाटी (पंजाब)	५,०००
(१४)	लैन्सडाउन (उत्तर प्रदेश)	६,०६०
(१५)	महाबलेश्वर (महाराष्ट्र)	४,५००
(१६)	मथेरान (महाराष्ट्र)	२,६५०
(१७)	आबू पर्वत (राजस्थान)	४,५००
(१८)	मंसूरी (उत्तर प्रदेश)	६,५८०
(१९)	नैनिताल (उत्तर प्रदेश)	६,४००
(२०)	उटकमण्ड (मद्रास)	७,५००

(२१) पहलगाँव (काश्मीर)	७,२००
(२२) पंचमढ़ी (मध्य प्रदेश)	४,५००
(२३) रानीखेत (उत्तर प्रदेश)	६,०००
(२४) राँची (बिहार)	२,१००
(२५) शिलाँग (आसाम)	४,६८०
(२६) शिमला (हिमाचल प्रदेश)	७,२३५

भारत में अजायबघर

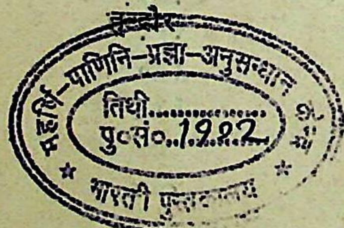
नाम	स्थान
(१) सालारगंज	हैदराबाद
(२) आर्च्योलोजिकल	हैदराबाद
(३) तलेश्वरम	हैदराबाद
(४) नेशनल म्यूजियम	देहली
(५) नेशनल आर्ट गैलरी	देहली
(६) देहली फोर्ट म्यूजियम	देहली
(७) वार मेमोरियल म्यूजियम	देहली
(८) अर्च्योलोजिकल	ग्वालियर
(९) सैन्ट्रल म्यूजियम	जयपुर
(१०) अजमेर म्यूजियम	अजमेर
(११) अलवर म्यूजियम	अलवर
(१२) कोटा म्यूजियम	कोटा
(१३) भरतपुर म्यूजियम	भरतपुर
(१४) जोधपुर म्यूजियम	जोधपुर
(१५) विक्टोरियाहाल म्यूजियम	उदयपुर
(१६) गंगा म्यूजियम	बिकानेर
(१७) प्रतापसिंह म्यूजियम	श्री नगर
(१८) नगरपालिका म्यूजियम	इलाहाबाद
(१९) स्टेट (राज्य) म्यूजियम	लखनऊ
(२०) भारतकला भवन म्यूजियम	बनारस
(२१) सारनाथ म्यूजियम	बनारस
(२२) प्रिन्स आफ वैल्स म्यूजियम	बम्बई
(२३) विक्टोरिया और अलवर	बम्बई
(२४) बड़ौदा म्यूजियम	बड़ौदा

(२५)	फतहसिंह म्यूजियम	बड़ौदा
(२६)	म्यूनिसिपल म्यूजियम	अहमदाबाद
(२७)	जूनागढ़ म्यूजियम	जूनागढ़
(२८)	भावनगर म्यूजियम	भावनगर
(२९)	जामनगर म्यूजियम	जामनगर
(३०)	वाटसन म्यूजियम	राजकोट
(३१)	इन्दौर म्यूजियम	इन्दौर
(३२)	भोपाल म्यूजियम	भोपाल
(३३,	साँची म्यूजियम	साँची (म० प्र०)
(३४)	सैन्ट्रल म्यूजियम	नागपुर
(३५)	गवर्मेन्ट म्यूजियम	मद्रास
(३६)	गवर्मेन्ट म्यूजियम	बंगलोर
(३७)	चमाराजेन्द्र आर्ट गैलेरी	मैसूर
(३८)	इण्डियन मयूजियम	कलकत्ता
(३९)	विक्टोरिया मैमोरियल हाल	कलकत्ता
(४०)	आसुतोष म्यूजियम	कलकत्ता
(४१)	आर्ट इण्डस्ट्रीज म्यूजियम	कलकत्ता
(४२)	बंग सहित्य परिषद म्यूजियम	कलकत्ता
(४३)	एशियटिक सोसायटी म्यूजियम	कलकत्ता
(४४)	नेशनल लायब्रेरी म्यूजियम	कलकत्ता
(४५)	पटना म्यूजियम	पटना
(४६)	नालन्दा म्यूजियम	नालन्दा (बिहार)
(४७)	वैशाली म्यूजियम	वैशाली (बिहार)
(४८)	बुद्ध गया म्यूजियम	बिहार
(४९)	नेशनल हिस्टोरीकल म्यूजियम	दार्जिलिंग
(५०)	उड़ीसा स्टेट म्यूजियम	भुवनेश्वर
(५१)	गाँधी मैमोरियल म्यूजियम	मदुराई
(५२)	सरस्वती महल लायब्रेरी म्यूजियम	तंजौर

———

(ख)

(ग)


पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी
पु०सं० 1922

———


महर्षि पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी.........
पु०सं०...1902
भारती पुस्तकालय